~

विशद
जिनवाणी संग्रह

रचयिता/संकलन

प.पू. आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज

कृति - **विशद जिनवाणी संग्रह**

कृतिकार - प.पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति
आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज

संस्करण - प्रथम-2012 ● प्रतियाँ :1000

संकलन - मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज

सहयोग - क्षुल्लक श्री 105 विसोमसागरजी महाराज

संपादन - ब्र.ज्योति दीदी 9829076085,आस्था दीदी9660996425,
सपना दीदी 9829127533

संयोजन - किरण, आरती दीदी

प्राप्ति स्थल - 1 जैन सरोवर समिति, निर्मलकुमार गोधा,
2142, निर्मल निकुंज, रेडियो मार्केट
मनिहारों का रास्ता, जयपुर

9414812008

14016566

ा जैनपुरी
416882301

.)

_wDH$:amOy J‹m{\$H$ AmQ>© , जयपुर ● फोन: 2313339, मो: 9829050791

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विवरण	पृष्ठ संख्या
	प्रथम खण्ड	
1	श्री चौबीस तीर्थंकरों परिचय	
2	दर्शन पाठ (हिन्दी/संस्कृत)	
3	देव स्तुति (प्रभु पतित...)	
4	मंगलाष्टक (हिन्दी/संस्कृत)	
5	झण्डारोहण/दिग्बंधन	
6	अंगन्यास	
7	सिद्ध मंत्र/ सिद्ध भक्ति (प्राकृत)	
8	अभिषेक पाठ (संस्कृत/हिन्दी)	
9	शांतिधारा (लघु/वृहद्)	
10	अभिषेक समय की आरती	
11	विनय पाठ	
12	पूजा पीठिका (संस्कृत/हिन्दी)	
13	स्वस्ति मंगल विधान	
14	देव-शास्त्र-गुरु पूजन (द्यानतराय)	
15	अर्घ्यावली	
16	शांतिपाठ, विसर्जन	
17	जिन स्तुति (मैं तुम....)	
	द्वितीय खण्ड (पूजन)	
1	समुच्चय पूजा (सच्चिानंद कृत)	
2	समुच्चय पूजन (आचार्य श्री विशदसागरजी)	
3	श्री नवदेवता पूजन	
4	श्री पंच परमेष्ठी समुच्चय पूजन	
5	श्री चौबीस तीर्थंकर समुच्चय पूजन	
6	विद्यमान बीस तीर्थंकर की पूजन	
7	पंच बालयति जिन पूजा	
8	श्री बाहुबली पूजा	
9	श्री रविव्रत पूजा	
10	महामंत्र णमोकार पूजा	
11	सहस्रनाम पूजन	
12	तत्त्वार्थसूत्र पूजन	
13	सर्वग्रहअरिष्ट निवारक श्री चौबीसी पूजा	
14	सरस्वती पूजा	
15	समुच्चय मानस्तम्भ पूजा	
16	श्री अहिक्षेत्र पार्श्वनाथ पूजा	
17	निर्वाण क्षेत्र पूजन	
18	श्री अरहंत पूजा	
19	श्री सिद्ध पूजा	
20	आचार्य परमेष्ठी की पूजन	
21	उपाध्याय परमेष्ठी की पूजन	
22	सर्व साधु पूजन	
23	श्री सिद्ध यंत्र पूजा (विनायक यंत्र)	
24	श्री सम्मेदशिखर पूजन	

क्र.सं.	विवरण	पृष्ठ संख्या
	तृतीय खण्ड (पूजन)	
1	श्री आदिनाथ जिन पूजा	
2	श्री अजितनाथ पूजा	
3	श्री संभवनाथ पूजा	
4	श्री अभिनन्दननाथ पूजा	
5	श्री सुमतिनाथ पूजा	
6	श्री पद्मप्रभु पूजा	
7	श्री सुपार्श्वनाथ पूजा	
8	श्री चन्द्रप्रभु पूजा	
9	श्री पुष्पदन्त पूजा	
10	श्री शीतलनाथ पूजा	
11	श्री श्रेयांसनाथ पूजा	
12	श्री वासुपूज्य पूजा	
13	श्री विमलनाथ जिन पूजा	
14	श्री अनन्तनाथ जिन पूजा	
15	श्री धर्मनाथ जिन पूजा	
16	श्री शांतिनाथ पूजा	
17	श्री कुंथुनाथ जिन पूजा	
18	श्री अरहनाथ जिन पूजा	
19	श्री मल्लिनाथ जिन पूजा	
20	श्री मुनिसुव्रतनाथ जिन पूजा	
21	श्री नमिनाथ जिन पूजा	
22	श्री नेमिनाथ जिन पूजा	
23	श्री पार्श्वनाथ जिन पूजा	
24	श्री महावीर स्वामी जिन पूजा	
	चतुर्थ खण्ड (पर्व पूजन)	
1	सोलहकारण भावना पूजा	
2	पंचमेरु पूजा (द्यानतराय)	
3	श्री नंदीश्वर द्वीप पूजा	
4	दशलक्षण पूजा	
5	रत्नत्रय पूजा	
6	सम्यक् दर्शन पूजा	
7	सम्यक् ज्ञान पूजा	
8	सम्यक् चारित्र पूजा	
9	क्षमावाणी पूजा	
10	रक्षाबंधन पर्व पूजा	
11	दीपावली पूजा	
12	सुगंध दशमी पूजा	
13	श्रुत पञ्चमी पूजा	
14	अक्षय तृतीया पूजा	
15	मोक्ष सप्तमी पूजा	
16	सप्तऋषि पूजा	
17	रोहिणी व्रत	
18	जिनगुण सम्पत्ति पूजा	
19	चारित्र शुद्धि व्रत पूजा	
20	अनन्त व्रत पूजा	
21	प.पू. आचार्य श्री विशदसागरजी की पूजन	

क्र.सं.	विवरण	पृष्ठ संख्या

पंचम खण्ड (चालीसा)

1 श्री णमोकार चालीसा
2 श्री आदिनाथ चालीसा
3 श्री सम्भवनाथ चालीसा
4 श्री सुमतिनाथ चालीसा
5 श्री मल्लिनाथ चालीसा
6 श्री नेमीनाथ चालीसा
7 श्री पदमप्रभु चालीसा
8 श्री चन्द्रप्रभु चालीसा
9 श्री शीतलनाथ चालीसा
10 श्री वासुपूज्य चालीसा
11 श्री पुष्पदन्त चालीसा
12 श्री मुनिसुव्रतनाथ चालीसा
13 श्री नेमीनाथ चालीसा
14 श्री पार्श्वनाथ चालीसा
15 श्री अभिनन्दननाथ चालीसा
16 श्री सुपार्श्वनाथ चालीसा
17 श्री विमलनाथ चालीसा
18 श्री अनन्तनाथ चालीसा
19 श्री धर्मनाथ चालीसा
20 श्री कुन्थुनाथ चालीसा
21 श्री नमिनाथ चालीसा
22 श्री गिरनारजी चालीसा
23 श्री शांतिनाथ चालीसा
24 श्री महावीर चालीसा
25 आचार्य श्री विशदसागरजी चालीसा

क्र.सं.	विवरण	पृष्ठ संख्या

षष्ठम खण्ड़ (स्तोत्र)

1 सुप्रभात स्तोत्रम्
2 श्री उपसर्गहर पार्श्वनाथ स्तोत्र
3 श्री महावीराष्टक स्तोत्रम्
4 तत्त्वार्थसूत्र स्त्रोत
5 श्री जिनसहस्रनाम स्तोत्रम्
6 कल्याण मंदिर स्तोत्र भाषा
7 लघु स्वयंभू स्तोत्र
8 चैत्यालयाष्टक
9 एकीभाव स्तोत्र
10 विषापहार स्तोत्र भाषा
11 विषापहार स्तोत्र विधान प्रारम्भ
12 श्री नवदेवता स्तोत्रम्-मंगलाष्टकम्
13 नवदेवता स्तोत्र
14 अथ नवग्रह शांति स्तोत्रम्
15 श्री सरस्वती स्तोत्रम्
16 श्री सरस्वती नाम स्तोत्रम्
17 पार्श्वनाथ स्तोत्र

सप्तम खण्ड़ (अन्य)

1 आध्यात्म शयन गीतिका
2 बारह भावना
3 दर्शन स्तुति
4 स्तुति
5 गुरु स्तुति
6 निर्वाण काण्ड भाषा
7 आचार्य वंदना

क्र.सं.	विवरण	पृष्ठ संख्या

8 मेरी भावना
9 सोलहकारण भावना
10 बारह भावना
11 वैराग्य भावना
12 आलोचना पाठ
13 भक्तामर स्तोत्रम्
14 सामायिक पाठ
15 समाधिमरण (भाषा/बड़ा)
16 दु:खहरण विनती
17 भक्तामर महिमा
18 लघु प्रतिक्रमण
19 क्षमा वंदना
20 जाप्य मन्त्र
21 शास्त्र स्तुति

अष्टम खण्ड़ (आरती)

1 णमोकार मंत्र की आरती
2 पंच परमेष्ठी की आरती
3 सहस्रनाम की आरती
4 चौबीस जिन की आरती
5 श्री आदिनाथ भगवान की आरती
6 श्री पुष्पदंत भगवान की आरती
7 श्री वासुपूज्य भगवान की आरती
8 श्री वासुपूज्य जिन की आरती
9 श्री विमलनाथ भगवान की आरती
10 श्री अनन्तनाथ भगवान की आरती
11 श्री धर्मनाथ भगवान की आरती
12 श्री मल्लिनाथ की आरती
13 श्री मुनिसुव्रतनाथ की आरती

क्र.सं.	विवरण	पृष्ठ संख्या

14 श्री मुनिसुव्रतनाथ की आरती
15 श्री अजितनाथ की आरती
16 श्री संभवनाथ की आरती
17 श्री अभिनन्दन की आरती
18 श्री सुमतिनाथ की आरती
19 श्री पद्मप्रभ की आरती
20 श्री सुपार्श्वनाथ की आरती
21 श्री नमिनाथ की आरती
22 श्री नेमिनाथ की आरती
23 श्री चन्द्रप्रभु की आरती
24 श्री शीतलनाथ की आरती
25 श्री श्रेयांसनाथ की आरती
26 श्री शांतिनाथ की आरती
27 श्री कुन्थुनाथ की आरती
28 श्री अरहनाथ की आरती
29 श्री पार्श्वनाथ की आरती
30 श्री महावीर की आरती
31 समवशरण की आरती
32 चौबीस की आरती (ग्रह निवारक)
33 नवदेवताओं की आरती
34 बाहुबली स्वामी की आरती
35 जिनवर की आरती
36 निर्वाण क्षेत्र की आरती
37 पञ्चमेरु की आरती
38 नन्दीश्वर की आरती
39 पंच बालयति जिन की आरती
40 गुरुवर की आरती
41 आचार्य श्री विशदजी की आरती

परम पूज्य आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज का
संक्षिप्त जीवन परिचय

पूर्व नाम	–	रमेशचन्द जैन
पिता का नाम	–	स्व. श्री नाथूराम जैन
माता का नाम	–	श्रीमती इन्दरदेवी जैन
जन्म तिथि	–	चैत्र कृष्ण चतुर्दशी, 11 अप्रैल, 1964
जन्म स्थान	–	ग्राम–कुपी, जिला–छतरपुर (मध्यप्रदेश)
लौकिक शिक्षा	–	एम.ए. पूर्वार्ध
संयम मार्ग पर प्रवेश	–	प.पू. वात्सल्य रत्नाकर आचार्य 108 श्री विमलसागरजी महाराज से सन् 1993 में श्री सम्मेदशिखरजी में 2 प्रतिमा के व्रत धारण किये
ऐलक दीक्षा	–	प.पू. गणाचार्य श्री 108 विरागसागरजी महाराज से मार्गशीर्ष शुक्ल पंचमी, 18 दिसम्बर, 1993 में
दीक्षा स्थान	–	श्रेयांसगिरि (पन्ना), मध्यप्रदेश
मुनि दीक्षा	–	फाल्गुन कृष्ण चतुर्थी, दिनांक 8 फरवरी, 1996
दीक्षा स्थान	–	द्रोणगिरी (छतरपुर)
मुनि दीक्षा गुरु	–	प.पू. गणाचार्य श्री 108 विरागसागरजी महाराज
आचार्य पद	–	बसंत पंचमी, दिनांक 13 फरवरी, 2005 मालपुरा, जिला–टोंक (राज.)
आचार्य पद प्रदाता	–	प.पू. मर्यादा शिष्योत्तम आचार्य श्री 108 भरतसागरजी महाराज
रूचि	–	ध्यान, चिंतन, मनन, लेखन कार्य
विशेष	–	प.पू. गणाचार्य श्री 108 विरागसागरजी महाराज के आशीर्वाद से प.पू. मर्यादा शिष्योत्तम आचार्य श्री 108 श्री भरतसागरजी महाराज ने 27 पिच्छीधारियों त्यागी–व्रतियों के ससंघ सान्निध्य में दिनांक 13 फरवरी, 2005 को मालपुरा, जिला–टोंक (राज.) की धरती पर भारी जन–समुदाय की उपस्थिति में मुनि श्री विशदसागरजी महाराज को अपने हाथों से आचार्य पद के योग्य संस्कारों से संस्कारित कर ''आचार्य पद'' पर सुशोभित किया व उसी समय आचार्य श्री विरागसागरजी महाराज व आचार्य श्री भरतसागरजी महाराज की अनुमति से नव–दीक्षित आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज ने एक मुनि व दो क्षुल्लक दीक्षाएँ प्रदान की।

श्री चौबीस तीर्थंकरों का विविध परिचय

क्र.	तीर्थंकरों के नाम	चिह्न	जन्म स्थान	काया	पितृ नाम	मातृ नाम	आयुष्य	गर्भ	जन्म	तप	केवलज्ञान	मोक्ष	मोक्ष स्थल
1.	वृषभनाथ	बैल	अयोध्या	500 धनुष्य	नाभिराजा	मरुदेवी	84 लाख पूर्वायुष्य	आषाढ़ वदी 2	चैत्र वदी 9	चैत्र वदी 9	फाल्गुन वदी 11	माघ वदी 14	कैलाश पर्वत
2.	अजितनाथ	गज	अयोध्या	450 धनुष्य	जितशत्रु	विजयसेना	72 लाख पूर्वायुष्य	ज्येष्ठ वदी 30	माघ सुदी 10	माघ सुदी 10	पौष सुदी 11	चैत्र सुदी 5	सम्मेदशिखर
3.	सम्भवनाथ	घोड़ा	श्रावस्ती	400 धनुष्य	जितारी	सुसेना	60 लाख पूर्वायुष्य	फाल्गुन सुदी 8	कार्तिक सुदी 15	आश्विन सुदी 15	कार्तिक वदी 4	चैत्र सुदी 6	सम्मेदशिखर
4.	अभिनन्दनाथ	बन्दर	अयोध्या	350 धनुष्य	संवर	सिद्धार्था	50 लाख पूर्वायुष्य	वैशाख सुदी 6	माघ सुदी 12	माघ सुदी 12	पौष सुदी 14	वैशाख सुदी 6	सम्मेदशिखर
5.	सुमतिनाथ	चकवा	अयोध्या	300 धनुष्य	मेघप्रभु	मंगला	40 लाख पूर्वायुष्य	श्रावण सुदी 2	चैत्र सुदी 11	चैत्र सुदी 11	चैत्र सुदी 11	चैत्र सुदी 11	सम्मेदशिखर
6.	पद्मप्रभनाथ	कमल	कौशाम्बी	250 धनुष्य	धारण	सुशीमा	30 लाख पूर्वायुष्य	माघ वदी 6	कार्तिक सुदी 13	कार्तिक सुदी 13	चैत्र सुदी 15	फाल्गुन वदी 4	सम्मेदशिखर
7.	सुपार्श्वनाथ	साँथिया	बनारस	200 धनुष्य	प्रतिष्ठित	पृथ्वी	20 लाख पूर्वायुष्य	भाद्रपद सुदी 6	ज्येष्ठ सुदी 12	ज्येष्ठ सुदी 12	फाल्गुन वदी 6	फाल्गुन वदी 7	सम्मेदशिखर
8.	चन्द्रप्रभनाथ	चन्द्रमा	चन्द्रपुरी	150 धनुष्य	महासेन	सुलक्षणा	10 लाख पूर्वायुष्य	चैत्र वदी 5	पौष वदी 11	पौष वदी 11	फाल्गुन वदी 7	फाल्गुन सुदी 7	सम्मेदशिखर
9.	पुष्पदन्तनाथ	मगर	काकन्दी	100 धनुष्य	सुग्रीव	रमा	2 लाख पूर्वायुष्य	फाल्गुन वदी 9	मगसिर सुदी 1	मगसिर सुदी 1	कार्तिक सुदी 2	आश्विन सुदी 8	सम्मेदशिखर
10.	शीतलनाथ	कल्पवृक्ष	महिलपुर	90 धनुष्य	दृढ़रथ	सुनन्दा	1 लाख पूर्वायुष्य	चैत्र वदी 8	माघ वदी 12	माघ वदी 12	पोष वदी 14	आश्विन सुदी 8	सम्मेदशिखर
11.	श्रेयांसनाथ	गेण्डा	सिंहपुर	80 धनुष्य	विमल	विमला	84 लाख पूर्वायुष्य	ज्येष्ठ वदी 8	फाल्गुन वदी 11	फाल्गुन वदी 11	माघ वदी 30	श्रावण सुदी 15	सम्मेदशिखर
12.	वासुपूज्यनाथ	भैंसा	चम्पापुरी	70 धनुष्य	वसुपूज्य	विजया	72 लाख पूर्वायुष्य	आषाढ़ वदी 6	फाल्गुन वदी 14	फाल्गुन वदी 14	भादो सुदी 2	भादो सुदी 14	चम्पापुरी
13.	विमलनाथ	सूकर	कम्पिला	60 धनुष्य	सुव्रतवर्मा	श्यामा	60 लाख पूर्वायुष्य	ज्येष्ठ वदी 10	माघ सुदी 4	माघ सुदी 4	माघ सुदी 6	आषाढ़ वदी 6	सम्मेदशिखर
14.	अनन्तनाथ	सेही	अयोध्या	50 धनुष्य	हरिषेण	सुरजा	50 लाख पूर्वायुष्य	कार्तिक वदी 1	ज्येष्ठ वदी 12	ज्येष्ठ वदी 12	चैत्र वदी 30	चैत्र वदी 30	सम्मेदशिखर
15.	धर्मनाथ	वज्र	रत्नपुर	45 धनुष्य	भानु	सुव्रता	10 लाख पूर्वायुष्य	वैशाख सुदी 8	माघ सुदी 13	माघ सुदी 13	पौष सुदी 15	ज्येष्ठ सुदी 4	सम्मेदशिखर
16.	शान्तिनाथ	हिरण	हस्तिनापुर	40 धनुष्य	विश्वसेन	ऐरा	1 लाख पूर्वायुष्य	भाद्र सुदी 7	ज्येष्ठ वदी 14	ज्येष्ठ वदी 14	पौष सुदी 10	ज्येष्ठ वदी 14	सम्मेदशिखर
17.	कुन्थुनाथ	बकरा	हस्तिनापुर	35 धनुष्य	शूरराजा	श्रीमती	95 हजार वर्षायुष्य	श्रावण वदी 10	वैशाख सुदी 1	वैशाख सुदी 1	चैत्र सुदी 3	वैशाख सुदी 1	सम्मेदशिखर
18.	अरनाथ	मच्छ	हस्तिनापुर	30 धनुष्य	सुदर्शन	मित्रा	80 हजार वर्षायुष्य	फाल्गुन सुदी 3	मगसिर सुदी 14	मगसिर सुदी 10	कार्तिक सुदी 12	चैत्र वदी 30	सम्मेदशिखर
19.	मल्लिनाथ	कलश	मिथिला	25 धनुष्य	कुंभ	प्रजावती	55 हजार वर्षायुष्य	चैत्र सुदी 1	मगसिर सुदी 11	मगसिर सुदी 11	पौष सुदी 2	फाल्गुन सुदी 5	सम्मेदशिखर
20.	मुनिसुव्रतनाथ	कछुआ	राजगृह	20 धनुष्य	सुमित्र	श्यामा	30 हजार वर्षायुष्य	श्रावण वदी 2	वैशाख वदी 10	वैशाख वदी 10	वैशाख वदी 9	फाल्गुन वदी 12	सम्मेदशिखर
21.	नमिनाथ	नीलकमल	मिथिला	15 धनुष्य	विजयरथ	विपुला	10 हजार वर्षायुष्य	आश्विन वदी 2	आषाढ़ वदी 10	आषाढ़ वदी 10	मगसिर सुदी 11	वैशाख वदी 14	सम्मेदशिखर
22.	नेमिनाथ	शंख	शौरीपुर	10 धनुष्य	समुद्रविजय	शिवादेवी	1 हजार वर्षायुष्य	कार्तिक सुदी 6	श्रावण सुदी 6	श्रावण सुदी 6	आश्विन सुदी 1	आषाढ़ सुदी 8	गिरनार पर्वत
23.	पार्श्वनाथ	सर्प	बनारस	9 हाथ	अश्वसेन	वामादेवी	100 वर्षायुष्य	वैशाख वदी 2	पौष वदी 11	पौष वदी 11	चैत्र वदी 4	श्रावण सुदी 7	सम्मेदशिखर
24.	महावीर	सिंह	कुण्डलपुर	7 हाथ	सिद्धार्थ	त्रिशला	72 वर्षायुष्य	आषाढ़ सुदी 6	चैत्र सुदी 13	मगसिर वदी 10	वैशाख सुदी 10	कार्तिक सुदी 10	पावापुरी

पञ्चकल्याणक तिथियों के लिये **''वर्तमान चतुर्विंशति जिनपूजा''** रचियता कविवर श्री वृंदावनजी को आधार माना गया है।

दर्शन पाठ

(तर्ज : दिन रात मेरे स्वामी...)

यह भावना हमारी, प्रभु दर्श तेरे पाऊँ।
पल–पल प्रसन्न मन से, नवकार मंत्र ध्याऊँ।।
चउ घातिया करम का, जिसने किया सफाया।
अपने हृदय कमल पर, अर्हंत को बसाऊँ।। यह भावना...

नो कर्म भाव द्रव्य से, जो मुक्त हो गये हैं।
उन शुद्ध सिद्ध जिन को, मैं शीष पर बिठाऊँ।। यह भावना...

आचार पाँच पालें, पालन कराएँ सबको।
आचार्य परम गुरु को, मैं कंठ में सजाऊँ।। यह भावना...

जो अंग पूर्वधारी, पढ़ते मुनि पढ़ाते।
मुख के कमल बिठाकर, उनके गुणों को गाऊँ।। यह भावना...

सद्ज्ञान ध्यान तप में, खोये सदैव रहते।
उन सर्वसाधुओं को, नाभि कमल में ध्याऊँ ।। यह भावना...

श्रद्धान, ज्ञान, चारित, सद्धर्म ये रतन हैं।
अहिंसा मयी धरम के, धारण में लौ लगाऊँ।। यह भावना...

वाणी जिनेन्द्र की शुभ, हितकारणी कही है।
जिनदेव की सुवाणी करके, श्रवण कराऊँ।। यह भावना...

जिन का स्वरूप जिनके, प्रतिबिम्ब में झलकता।
जिन तीर्थ वंदना कर, नित चैत्य दर्श पाऊँ।। यह भावना...

त्रैलोक्य में विराजित, जिन चैत्य अरु जिनालय।
तन, मन 'विशद' वचन से, मैं वंदना को जाऊँ।। यह भावना...

दर्शन पाठ

दर्शनं देव देवस्य, दर्शनं पापनाशनम्।
दर्शनं स्वर्गसोपानं, दर्शनं मोक्षसाधनम्।।
दर्शनेन जिनेन्द्राणां, साधूनां वन्दनेन च।
न तिष्ठति चिरं पापं, छिद्रहस्ते यथोदकम्।।
वीतरागमुखं दृष्ट्वा, पद्मरागसमप्रभम्।
नैकजन्मकृतं पापं, दर्शनेन विनश्यति।।
दर्शनं जिनसूर्यस्य, संसारध्वान्तनाशनम्।
बोधनं चित्तपद्मस्य, समस्तार्थप्रकाशनम्।।
दर्शनं जिन चन्द्रस्य, सद्धर्मामृतवर्षणम्।
जन्मदाहविनाशाय, वर्धनं सुखवारिधेः।।
जीवादितत्त्वप्रतिपादकाय, सम्यक्त्व मुख्याष्टगुणार्णवाय।
प्रशान्तरूपाय दिगम्बराय, देवाधिदेवाय नमो जिनाय।।
चिदानन्दैकरूपाय, जिनाय परमात्मने।
परमात्मप्रकाशाय, नित्यं सिद्धात्मने नमः।।
अन्यथा शरणं नास्ति, त्वमेव शरणं मम।
तस्मात् कारुण्याभावेन, रक्ष रक्ष जिनेश्वर।।
नहि त्राता नहि त्राता, नहि त्राता जगत्त्रये।
वीतरागात् परो देवो, न भूतो न भविष्यति।।
जिनेभक्तिर्जिनेभक्ति, र्जिनेभक्ति र्दिनेदिने।
सदामेऽस्तु सदामेऽस्तु, सदामेऽस्तु भवे भवे।।
जिनधर्मविनिर्मुक्तो, मा भूवं चक्रवर्त्यपि।
स्याच्चेटोऽपिदरिद्रोऽपि, जिन धर्मानुवासितः।।
जन्मजन्मकृतं पापं, जन्मकोटिमुपार्जितम्।
जन्ममृत्युजरारोगो, हन्यते जिनदर्शनात्।।

अद्या- भवत् सफलता नयन- द्वयस्य,
देव ! त्वदीय चरणाम्बुज- वीक्षणेन।
अद्य त्रिलोक- तिलक ! प्रतिभासते मे,
संसार- वारिधि- रयं चुलुक- प्रमाणम्।।

देव स्तुति

प्रभु पतित पावन–मैं अपावन, चरण आयो शरण जी।
यों विरद आप निहार स्वामी, मेट जामन–मरण जी।।

तुम ना पिछान्यो आन मान्यो, देव विविध प्रकार जी।
या बुद्धि सेती निज न जान्यो, भ्रम गिन्यो हितकार जी।।

भव विकट वन में कर्म बैरी, ज्ञान–धन मेरो हर्यो।
सब इष्ट भूल्यो भ्रष्ट होय, अनिष्ट गति धरतो फिर्यो।।

धन घड़ी यों धन दिवस, यों धन्य जनम मेरो भयो।
अब भाग्य मेरो उदय आयो, दरश प्रभु को लख लयो।।

छवि वीतरागी नग्न मुद्रा, दृष्टि नासा पै धरै।
वसु प्रातिहार्य अनन्त गुण जुत, कोटि रवि छवि को हरै।।

मिट गयो तिमिर मिथ्यात्व मेरो, उदय रवि आतम भयो।
मो उर हर्ष ऐसो भयो, मनु रङ्क चिन्तामणि लयो।।

दो हाथ जोड़ नवाऊँ मस्तक, वीनऊँ तुम चरण जी।
सर्वोत्कृष्ट त्रिलोकपति जिन, सुनहुँ तारण तरण जी।।

जाचूँ नहीं सुरवास पुनि, नर–राज परिजन साथ जी।
'बुध' जाँचहूँ तुम भक्ति भव भव, दीजिये शिव नाथ जी।।

मंगलाष्टक

रचयिता : प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज

पूजनीय इन्द्रों से अर्हत्, सिद्ध क्षेत्र सिद्धी स्वामी।
जिन शासन को उन्नत करते, सूरी मुक्ती पथगामी।।
उपाध्याय हैं ज्ञान प्रदायक, साधु रत्नत्रय धारी।
परमेष्ठी प्रतिदिन पापों के, नाशक हों मंगलकारी।।1।।

नमित सुरासुर के मुकुटों की, मणिमय कांति शुभ्र महान्।
प्रवचन सागर की वृद्धि को, प्रभु पद नख हैं चंद्र समान।।
योगी जिनकी स्तुति करते, गुण के सागर अनगारी।
परमेष्ठी प्रतिदिन पापों के, नाशक हों मंगलकारी।।2।।

सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण युत, निर्मल रत्नत्रयधारी।
मोक्ष नगर के स्वामी श्री जिन, मोक्ष प्रदाता उपकारी।।
जिन आगम जिन चैत्य हमारे, जिन चैत्यालय सुखकारी।
धर्म चतुर्विध पंच पाप के, नाशक हों मंगलकारी।।3।।

तीन लोक में ख्यात हुए हैं, ऋषभादि चौबिस जिनदेव।
श्रीयुत द्वादश चक्रवर्ति हैं, नारायण नव हैं बलदेव।।
प्रति नारायण सहित तिरेसठ, महापुरुष महिमाधारी।
पुरुष शलाका पंच पाप के, नाशक हों मंगलकारी।।4।।

जया आदि हैं अष्ट देवियाँ, सोलह विद्यादिक हैं देव।
श्रीयुत तीर्थंकर के मात–पिता यक्ष–यक्षी भी एव।।
देवों के स्वामी बत्तिस वसु, दिक् कन्याएँ मनहारी।
दश दिक्पाल सहित विघ्नों के, नाशक हों मंगलकारी।।5।।

सुतप वृद्धि करके सर्वौषधि, ऋद्धी पाई पञ्च प्रकार।
वसु विधि महा निमित् के ज्ञाता, वसुविधि चारण ऋद्धीधार।।
पंच ज्ञान तिय बल भी पाये, सप्त बुद्धि ऋद्धीधारी।
ये सब गण नायक पापों के, नाशक हों मंगलकारी।।6।।

आदिनाथ स्वामी अष्टापद, वासुपूज्य चंपापुर जी।
नेमिनाथ गिरनार गिरि से, महावीर पावापुर जी।।
बीस जिनेश सम्मेदशिखर से, मोक्ष विभव अतिशयकारी।
सिद्ध क्षेत्र पांचों पापों के, नाशक हों मंगलकारी।।7।।

व्यंतर भवन विमान ज्योतिषी, मेरु कुलाचल इष्वाकार।
जंबू शाल्मलि चैत्य वृक्ष की, शाखा नंदीश्वर वक्षार।।
रूप्यादि कुण्डल मनुजोत्तर, में जिनग्रह अतिशयकारी।
वे सब ही पांचों पापों के, नाशक हों मंगलकारी।।8।।

तीर्थंकर जिन भगवंतों को, गर्भ जन्म के उत्सव में।
दीक्षा केवलज्ञान विभव अरु, मोक्ष प्रवेश महोत्सव में।।
कल्याणक को प्राप्त हुए तब, देव किए अतिशय भारी।
कल्याणक पांचों पापों के, नाशक हों मंगलकारी।।9।।

धन वैभव सौभाग्य प्रदायक, जिन मंगल अष्टक धारा।
सुप्रभात कल्याण महोत्सव, में सुनते-पढ़ते न्यारा।।
धर्म अर्थ अरु काम समन्वित, लक्ष्मी हो आश्रयकारी।
मोक्ष लक्ष्मी 'विशद' प्राप्त कर, होते हैं मंगलकारी।।10।।

।। इति मंगलाष्टकम् ।।

मंगलाष्टकम्

अर्हन्तो भगवन्त इन्द्र – महिताः सिद्धाश्च सिद्धीश्वराः।
आचार्या जिनशासनोन्नतिकराः पूज्या उपाध्यायकाः।।
श्रीसिद्धान्त – सुपाठका मुनिवरा रत्नत्रयाराधकाः।
पञ्चैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं कुर्वन्तु (ते) वो मंगलम्।।

श्रीमन्नम्र – सुरा – सुरेन्द्र – मुकुट, प्रद्योत – रत्नप्रभा–
भास्वत्पाद–नखेन्दवः प्रवचनाम्भोधीन्दवः स्थायिनः।
ये सर्वे जिन–सिद्ध–सूर्यनुगतास्ते पाठकाः साधवः,
स्तुत्या योगिजनैश्च पञ्चगुरूवः कुर्वन्तु ते (वो) मंगलम्।।1।।

सम्यग्दर्शन – बोध – वृत्तममलं रत्नत्रयं पावनं,
मुक्ति – श्री – नगराधिनाथ – जिनपत्युक्तोऽपवर्गप्रदः।
धर्मः सूक्तिसुधा च चैत्यमखिलं चैत्यालयं श्रयालयं,
प्रोक्तं च त्रिविधं चतुर्विधममी कुर्वन्तु ते (वो) मंगलम्।।2।।

नाभेयादि जिनाःप्रशस्त–वदना, ख्याताश्चतुर्विंशतिः,
श्रीमन्तो भरतेश्वरप्रभृतयो ये चक्रिणो द्वादश।
ये विष्णु–प्रतिविष्णु–लांगलधराः सप्तोत्तरा विंशतिस्ः
त्रैकाल्ये प्रथितास्त्रिषष्टिपुरुषाः कुर्वन्तु ते (वो) मंगलम्।।3।।

ये सर्वौषधऋद्धयः सुतपसो वृद्धिंगताः पञ्च ये,
ये चाष्टांग – महानिमित्त – कुशलाश्, चाष्टौ वियच्चारिणः।
पञ्चज्ञानधरास्त्रयोऽपि बलिनो ये बुद्धि ऋद्धीश्वराः,
सप्तैते सकलार्चिता गणभृतः कुर्वन्तु ते (वो) मंगलम्।।4।।

ज्योतिर्व्यन्तर – भावनामरगृहे मेरौ कुलाद्रौ स्थिताः,
जम्बू शाल्मलि – चैत्य – शाखिषुतथा वक्षार – रूप्याद्रिषु।
इष्वाकारगिरौ च कुण्डलनगे द्वीपे च नन्दीश्वरे,
शैले ये मनुजोत्तरे जिनगृहाः कुर्वन्तु ते (वो) मंगलम्।।5।।

कैलाशे वृषभस्य निर्वृतिमही वीरस्य पावापुरे,
चम्पायां वसुपूज्यसज्जिनपतेः सम्मेदशैलेऽर्हताम्।
शेषाणामपि चोर्जयन्तशिखरे नेमीश्वरस्यार्हतो,
निर्वाणावनयः प्रसिद्धविभवाः कुर्वन्तु ते (वो) मंगलम्।।6।।

देव्योऽष्टौ च जयादिका द्विगुणिता विद्यादिका देवता,
श्रीतीर्थंकर मातृकाश्च जनका यक्षाश्च यक्ष्यस्तथा।
द्वात्रिंशत् त्रिदशाऽधिपास्तिथिसुरा दिक्कन्यकाश्चाष्टधा,
दिक्पाला दश चैत्यमी सुरगणाः कुर्वन्तु ते (वो) मंगलम्।।7।।

यो गर्भाऽवतरोत्सवो भगवतां जन्माऽभिषेकोत्सवो,
यो जातः परिनिष्क्रमेण विभवो यः केवलज्ञानभाक्।
यः कैवल्य पुर प्रवेश महिमा संभावितः स्वर्गिभिः,
कल्याणानि च तानि पञ्च सततं कुर्वन्तु ते (वो) मंगलम्।।8।।

इत्थं श्रीजिनमंगलाष्टकमिदं सौभाग्य – संपत्प्रदं,
कल्याणेषु महोत्सवेषु सुधियस्तीर्थंकराणामुषः।
ये श्रृण्वन्ति पठन्ति तैश्च सुजनैर्धर्मार्थ कामान्विता,
लक्ष्मीराश्रयते व्यापाय रहिता निर्वाण लक्ष्मीरपि।।9।।

।। इति मंगलाष्टकम्।।

झण्डारोहण

ॐ ह्रीं क्ष्वीं भूः स्वाहा। (जल से शुद्धि) (विनायक यंत्र पूजन करें)

ॐ ह्रीं अर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्योऽर्घ्यम्। (अर्घ चढ़ावें)

ॐ परम ब्रह्मणे नमोनमः स्वस्ति स्वस्ति नंद नंद वर्धस्व वर्धस्व विजस्व विजस्व पुनीहि पुनीहि पुण्याह पुण्याह मांगल्यं मांगल्यं वर्धयेत् वर्धयेत् जय जय।

ॐ ह्रीं सर्वोषधिद्वारा ध्वजदण्ड शुद्धि करोमि।

ॐ ह्रीं श्रीं नमोऽर्हते पवित्रजलेन ध्वजदण्ड शुद्धिं करोमि।

ॐ ह्रीं त्रिवर्ण सूत्रेण ध्वजदण्डं परिवेष्टयामि। ॐ णमो अरहंताणं स्वाहा।

रत्नत्रयात्मकतयाऽभिमतेऽत्रदण्डे, लोकत्रये प्रकृत केवलबोधरूपम्।
संकल्प्य पूजितमिदं ध्वजमर्च्य लग्ने, स्वारोपयामि सन् मंगल वाद्य घोषे।।

ॐ णमो अरहंताणं स्वस्ति भद्रं भवतु सर्वलोकस्य शांतिर्भवतु स्वाहा तथा ॐ ह्रीं अर्हं जिनशासन पताके सदोच्छिता तिष्ठ तिष्ठ भव भव वषट् स्वाहा।

ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः। यहाँ पर अपने दोनों हाथों के अंगूठों को जोड़कर मस्तक से लगाना है।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः। यहाँ पर अपने दोनों हाथों की तर्जनी अंगुलियों को मस्तक से लगाना है।

ॐ ह्रूँ णमो आयरियाणं ह्रूँ मध्यमाभ्यां नमः। यहाँ पर अपने दोनों हाथों की मध्यमा (बीच) की अँगुलियों को मस्तक से लगाना है।

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं, अनामिकाभ्यां नमः। यहाँ पर अपने दोनों हाथों की अनामिका अंगुलियों को मस्तक से लगाना है।

ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं ह्रः कनिष्ठकाभ्यां नमः। यहाँ पर दोनों हाथों को कनिष्ठा अँगुलियों को मस्तक से लगाना है।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः करतलाभ्यां नमः। यहाँ दोनों गदियों को मस्तक से लगाना है।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः करपृष्ठाभ्यां नमः। यहाँ पर दोनों हाथों की हथेलियों को मस्तक से लगाना है।

ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं ह्रां मम् शीर्षं रक्ष रक्ष स्वाहा। यहाँ पर दाहिने हाथ से अपने सिर को स्पर्श करें।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं मम् वदनं रक्ष रक्ष स्वाहा। यहाँ पर दाहिने हाथ से मुख का स्पर्श करना है।

ॐ ह्रूँ णमो आयरियाणं ह्रूँ मम् हृदयं रक्ष रक्ष स्वाहा। यहाँ पर दाहिने हाथ से हृदय स्पर्श करें।

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं मम् नाभिं रक्ष रक्ष स्वाहा। यहाँ पर दाहिने हाथ से नाभि का स्पर्श करें।

ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं ह्रः मम् पादौ रक्ष रक्ष स्वाहा। यहाँ पर दाहिने हाथ से दोनों पैरों का स्पर्श करें।

ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं ह्रां मम् गात्रे रक्ष रक्ष स्वाहा। यहाँ पर अपने शरीर का स्पर्श करना है।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं मम् वस्त्रं रक्ष रक्ष स्वाहा। यहाँ पर अपने वस्त्रों का स्पर्श करना है।

ॐ ह्रूँ णमो आयरियाणं ह्रूँ मम् पूजा द्रव्यं रक्ष रक्ष स्वाहा। अब अपनी पूजा की थाली का स्पर्श करें।

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं मम् स्थलं रक्ष रक्ष स्वाहा। अपने आसन को देखकर मार्जन करें।

ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं ह्रः सर्व जगत् रक्ष रक्ष स्वाहा। अपनी अंजली में जल लेकर चारों ओर फेंके।

ॐ ह्रीं अमृते अमृतोद्भवे अमृत वर्षिणि अमृतं स्रावय स्रावय सं सं क्लीं क्लीं ब्लूं ब्लूं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय ठः ठः ह्रीं स्वाहा।

अब अपनी अंजली में जल लेकर अपने सिर पर छोड़ें।

रक्षा सूत्र बंधन मंत्र

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा सर्वोपद्रव शांतिं कुरु कुरु ॐ नमोऽर्हते भगवते तीर्थंकर परमेश्वराय कर पल्लवे रक्षा बंधनं करोमि एतस्य समृद्धिरस्तु। ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं नमः स्वाहा।

तिलक करण मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं अ सि आ उ सा अनाहत पराक्रमाय ते भवतु। यहाँ पर सभी नौ स्थानों पर चंदन लगाएँ– मस्तक, माथा, दोनों कान, दोनों भुजायें, दोनों कलाई, हृदय एवं नाभि पर।

दिग्बंधन मंत्र

ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं ह्रां पूर्व दिशा समागतान् विघ्नान् निवारय निवारय एतान् रक्ष रक्ष स्वाहा।

यहाँ पर सौधर्म इंद्र अपने दाहिने हाथ से पूर्व दिशा में पुष्प छोड़ें।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं दक्षिण दिशा समागतान् विघ्नान् निवारय निवारय एतान् रक्ष रक्ष स्वाहा।

अब दक्षिण दिशा में सभी इन्द्र पुष्प क्षेपण करें।

ॐ ह्रूँ णमो आयरियाणं ह्रूँ पश्चिम दिशा समागतान् विघ्नान् निवारय निवारय एतान् रक्ष रक्ष स्वाहा।

अब पश्चिम दिशा में सभी पुष्प या पीली सरसों क्षेपण करें।

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं उत्तर दिशा समागतान् विघ्नान् निवारय निवारय एतान् रक्ष रक्ष स्वाहा।

अब उत्तर दिशा में सभी लोग पीली सरसों या पुष्प क्षेपण करें।

ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं ह्रः सर्व दिशा समागतान् विघ्नान् निवारय निवारय एतान् रक्ष रक्ष स्वाहा।

अब सभी समस्त एवं उर्ध्वलोक, अधोलोक, मध्यलोक में पीली सरसों क्षेपण करें।

परिणाम शुद्धि मंत्र

विधि विधातुं यजनोत्सवेऽगेहादिमूर्च्छामपनोद अनन्यचित्ता कृतिमादधामि स्वर्गादि लक्ष्मीमपि हापयामि।

अब सभी लोग अपने-अपने गृहकार्यों को छोड़ दें। जब तक यह विधान चलेगा तब तक के लिए अपने गृह संबंधी सभी कार्यों से निवृत्ति होकर यह विधान करूँगा/करूँगी। मैं मन, वचन, काय से प्रतिज्ञा करता हूँ/करती हूँ।

रक्षा मंत्र

ॐ णमो अर्हते सर्व रक्ष रक्ष हूँ फट स्वाहा।

यहाँ पर पंड़ितजी सभी पात्रों पर पीली सरसों को सात बार मंत्रित करें।

शांति मंत्र

ॐ क्षूं हूँ फट किरीटिं किरीटिं घातक-घातक पर विघ्नान स्फोटय स्फोटय सहस्र खण्डान कुरु कुरु पर मुद्रां छिन्द छिन्द पर मंत्रान् भिन्द भिन्द क्षां क्षं वः फट् स्वाहा।

पुष्प लेकर इस मंत्र को तीन बार पढ़कर सभी पात्रों पर पुष्प क्षेपण करें।

यज्ञोपवीत धारण मंत्र

ॐ नमः परम शांताय शांति कराय पवित्री करणायाहं रत्नत्रय चिह्न यज्ञोपवीतं दधामि मम गात्रं पवित्रं भवतु अर्हं नमः स्वाहा।

यहाँ पर सभी पात्रों को यज्ञोपवीत (जनेऊ) पहनावें (शादी-शुदा को दो जनेऊ पहनावें।)

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं हः ऐतेषां पात्र शुद्धि मंत्र सर्वांग शुद्धिः भवतु।

यहाँ पर पात्रों पर जल छिड़ककर पात्रों की अंतिम शुद्धि करें।

सिद्ध भक्ति (प्राकृत)

असरीरा जीवघणा, उवजुता दंसणेय पाणेय।
सायार मणायारा, लक्खणमेयं तु सिद्धाणं।।

मूलोत्तर- पयडीणं, बंधोदयसत्त-कम्म उम्मुक्का।
मंगलभूदा सिद्धा, अट्ठगुणा तीद संसारा।।

अट्ठ वियकम्म वियला सीदीभूदा णिरंजणा णिच्चा।
अट्ठ गुणा किदकिच्चा, लोयग्गणिवासिणो सिद्धा।।

सिद्धा णट्ठट्ठ मला विसुद्ध बुद्धीय लद्धि सब्भावा।
तिहुअणसिर-सेहरया, पसियंत्तु भडारया सव्वे।।

गमणागमण विमुक्के विहडियकम्मपयडि संघारा।
सासह सुह संपत्ते ते सिद्धा वंदियो णिच्चं।।

जय मंगल भूदाणं, विमलाणं णाणदंसणमयाणं।
तइलोइसेहराणं, णमो सदा सव्व सिद्धाणं।।

सम्मत्त - णाणदंसण-वीरिय सुहुमं तहेव अवग्गहणं।
अगुरुलघु अव्वावाहं, अट्ठगुणा होंति सिद्धाणं।।

तवसिद्धे णयसिद्धे, संजमसिद्धे चरित्रसिद्धे य।
णाणम्मि दंसणम्मि य, सिद्धे सिरसा णमस्सामि।।

इच्छामि भंते ! सिद्ध भत्ति काउस्सग्गोकओ तस्सालोचेऊं सम्मणाण सम्मदंसण सम्मचरित्त जुत्ताणं अट्ठविह कम्म-विप्पमुक्काणं, अट्ठगुणसंपण्णाणं उड्ढ-लोयमत्थम्मि पयट्ठियाणं, तवसिद्धाणं णयसिद्धाणं संजमसिद्धाणं चरित्तसिद्धाणं अतीताणागदवट्टमाणकालत्तय सिद्धाणं सव्वसिद्धाणं णिच्चकालं अंचेभि पुज्जेमि वंदामि णमंसामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बेहिलाओ सुगइगमणं समाहिमरणं जिणगुणसंपत्ति होदु मज्झं।

जिनेन्द्र–स्नपन–विधि (अभिषेक पाठ)

(हाथ में जल लेकर शुद्धि करें)

शोधये सर्वपात्राणि पूजार्थानऽपि वारिभि:।
समाहितौ यथाम्नाय करोमि सकली क्रियाम्।।

(नीचे लिखा श्लोक पढ़कर जिनेन्द्रदेव के चरणों में पुष्पांजलि क्षेपण करना।)

श्रीमज् जिनेन्द्र – मभि – वन्द्य जगत् त्र्येशं,
स्याद्वाद – नायक – मनन्त – चतुष्टयार्हम्।
श्री – मूलसंघ – सुदृशां सुकृतैक – हेतुर्,
जैनेन्द्र – यज्ञ – विधि – रेष मयाभ्य– धायि।।1।।

ॐ ह्रीं क्ष्वीं भूः स्वाहा स्नपन प्रस्तावनाय पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

(निम्नलिखित श्लोक पढ़कर यज्ञोपवीत, माला, मुदरी, कंगन और मुकुट धारण करना।)

श्रीमन्मन्दर–सुन्दरे शुचि– जलै– र्धौतैः सदर्भाक्षतैः,
पीठे मुक्तिवरं निधाय रचितं त्वत् पाद– पद्म– स्रजः।
इन्द्रोऽहं निज– भूषणार्थक– मिदं यज्ञोपवीतं दधे,
मुद्रा–कङ्कण–शेखराण्यपि तथा जैनाभिषेकोत्सवे।।2।।

ॐ नमो परम शान्ताय शान्तिकराय पवित्रीकृतायाहं रत्नत्रय– स्वरूपं यज्ञोपवीतं दधामि। मम गात्रं पवित्रं भवतु अर्हं नमः स्वाहा।

(अग्रलिखित श्लोक पढ़कर अनामिका अंगुली से नौ स्थानों (मस्तक, ललाट, कर्ण, कण्ठ, हृदय, नाभि, भुजा, कलाई और पीठ) पर तिलक करें।)

सौगन्ध्य – संगत – मधुव्रत – झङ्कृतेन,
संवर्ण्य – मान – मिव गंध – मनिन्द्य – मादौ।
आरोप – यामि विबु – धेश्वर – वृन्द – वन्द्य–
पादारविन्द – मभिवन्द्य जिनोत् – तमानाम्।।3।।

ॐ ह्रीं परम–पवित्राय नमः नवांगेषु चन्दनानुलेपनं करोमि स्वाहा।

(निम्नलिखित श्लोक पढ़कर भूमि शुद्धि करें)

ये सन्ति केचि– दिह दिव्य कुल प्रसूता,
नागाः प्रभूत– बल– दर्पयुता विबोधाः।
संरक्ष–णार्थ– ममृतेन शुभेन तेषां,
प्रक्षाल– यामि पुरतः स्नपनस्य भूमिम्।।4।।

ॐ ह्रीं जलेन भूमिशुद्धिं करोमि स्वाहा।

(निम्नलिखित श्लोक पढ़कर पीठ/सिंहासन का प्रक्षालन करना।)

क्षीरार्णवस्य पयसां शुचिभिः प्रवाहैः,
प्रक्षालितं सुरवरैर्–यदनेक– वारम्।
अत्युद्ध– मुद्यत– महं जिन– पादपीठं,
प्रक्षाल– यामि भव–सम्भव– तापहारि।।5।।

ॐ ह्राँ ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतरजलेन पीठ–प्रक्षालनं करोमि स्वाहा।

(निम्नलिखित श्लोक पढ़कर सिंहासन पर श्री लिखें।)

श्री– शारदा– सुमुख– निर्गत बीजवर्णं,
श्रीमङ्गलीक– वर– सर्व जनस्य नित्यम्।
श्रीमत् स्वयं क्षयति तस्य विनाश्य– विघ्नं,
श्रीकार– वर्ण– लिखितं जिन– भद्रपीठे।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीकार– लेखनं करोमि स्वाहा।

(निम्नलिखित श्लोक पढ़कर पीठिका पर श्रीजी विराजमान करें।)

यं पाण्डुकामल– शिलागत– मादिदेव–
मस्नापयन् सुरवराः सुर– शैल– मूर्ध्नि।
कल्याण– मीप्सु– रह– मक्षत– तोय– पुष्पैः,
सम्भावयामि पुर एव तदीय बिम्बम्।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री धर्मतीर्थाधिनाथ! भगवन्निह पाण्डुक शिला–पीठे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा। जगतः सर्वशान्तिं करोतु।

(निम्नलिखित श्लोक पढ़कर पल्लवों से सुशोभित मुख वाले स्वस्तिक सहित चार सुन्दर कलश सिंहासन के चारों कोनों पर स्थापित करें।)

सत्पल्ल–वार्चित–मुखान् कलधौत–रौप्य–ताम्रार–कूट–घटितान् पयसा सुपूर्णान्।
संवाह्यतामिव गताश्चतुरः समुद्रान्, संस्थापयामि कलशाज्जिन– वेदिकांते।।8।।

ॐ ह्रीं स्वस्तये पूर्ण– कलशोद्धरणं करोमि स्वाहा।

(निम्नलिखित श्लोक पढ़कर अभिषेक करें।)

दूरावनम्र सुरनाथ किरीट कोटी–संलग्न– रत्न– किरणच्छवि– धूस– राध्रिम्।
प्रस्वेद– ताप– मल–मुक्तमपि प्रकृष्टैर्–भक्त्या जलै– र्जिनपतिं बहुधाभिषिञ्चे।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीमन्तं भगवन्तं कृपालसन्तं वृषभादि– वर्धमानपर्यन्तं– चतुर्विंशति– तीर्थंकर– परमदेवं आद्यानां आद्ये जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे आर्यखण्डे...... देशे.. प्रान्ते... नाम्नि नगरे श्री 1008.. जिन चैत्यालयमध्ये वीर निर्वाण सं. ... मासोत्तममासे.... पक्षे.. तिथौ... वासरे... पौर्वाह्निक समये मुन्यार्यिका– श्रावक–श्राविकानां सकल– कर्म– क्षयार्थं जलेनाभिषिञ्चे नमः।

(चारों कलशों से अभिषेक करें।)

इष्टै – र्मनोरथ – शतैरिव भव्य – पुंसां,
पूर्णैः सुवर्ण – कलशै – र्निखिला – वसानैः।
संसार – सागर – विलंघन – हेतु – सेतु–
माप्लावये त्रिभुवनैक – पतिं जिनेन्द्रम्।।10।।

अभिषेक मंत्रह ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं क्ष्वीं क्ष्वीं इ्वीं इ्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतर जलेन जिनाभिषेचयामि स्वाहा। (यह पढ़कर अभिषेक करें।)

हमने संसार सरोवर में, अब तक प्रभु गोते खाए हैं।
अब कर्म मैल के धोने को, जलधारा करने आए हैं।।

द्रव्यै–रनल्प–घनसार–चतुः समाद्यै–रामोद–वासित–समस्त–दिगन्तरालैः।
मिश्री–कृतेन पयसा जिन–पुङ्गवानां, त्रैलोक्य पावनमहं स्नपनं करोमि।।11।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं .... सुगन्धित जलेन जिनाभिषेचयामि स्वाहा।

अभिषेक पाठ भाषा

–आचार्य विशदसागरजी

श्रीमत् जिनवर वन्दनीय हैं, तीन लोक में मंगलकार।
स्याद्वाद के नायक अनुपम, अनन्त चतुष्टय अतिशयकार।।
मूल संघ अनुसार विधि युत, श्री जिनेन्द्र की शुभ पूजन।
पुण्य प्रदायक सद्दृष्टि को, करने वाली कर्म शमन।।1।।

ॐ ह्रीं क्ष्वीं भूः स्वाहा स्नपन प्रस्तावनाय पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्रीमत् मेरू के दर्भाक्षत, युक्त नीर से धो आसन।
मोक्ष लक्ष्मी के नायक जिन, का शुभ करके स्थापन।।
मैं हूँ इन्द्र प्रतिज्ञा कर शुभ, धारण करके आभूषण।
यज्ञोपवीत मुद्रा कंकण अरु, माला मुकुट करूँ धारण।।2।।

ॐ ह्रीं नमो परमशान्ताय शांतिकराय पवित्रीकृतायाहं रत्नत्रय स्वरूपं यज्ञोपवीत धारयामि।

हे विबुधेश्वर ! वृन्दों द्वारा, वन्दनीय श्री जिन के बिम्ब।
चरण कमल का वन्दन करके, अभिषेकोत्सव कर प्रारम्भ।।
स्वयं सुगन्धी से आये ज्यों, भ्रमर समूहों का गुंजन।
गंध अनिन्द्य प्रवासित अनुपम, का मैं करता आरोपण।।3।।

ॐ ह्रीं परम पवित्राय नमः नवांगेषु चंदनानुलेपनं करोमि।

जो प्रभूत इस लोक में अनुपम, दर्प और बल युक्त सदैव।
बुद्धीशाली दिव्य कुलों में, जन्मे जो नागों के देव।।
मैं समक्ष उनके शुभ अनुपम, करने हेतु संरक्षण।
स्नपन भूमि का करता हूँ, अमृत जल से प्रच्छालन।।4।।

ॐ ह्रीं जलेन भूमि शुद्धिं करोमि स्वाहा।

इन्द्र क्षीर सागर के निर्मल, जल प्रवाह वाला शुभ नीर।
हरता है संसार ताप को, काल अनादि जो गम्भीर।।
जिनवर के शुभ पाद पीठ का, प्रच्छालन करता कई बार।
हुआ उपस्थित उसी पीठ को, प्रच्छालित मैं करूँ सम्हार।।5।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतरजलेन पीठ–प्रक्षालनं करोमि स्वाहा।

श्री सम्पन्न शारदा के मुख, से निकले जो अतिशयकार।
विघ्नों का नाशक करता है, सदा सभी का मंगलकार।।
स्वयं आप शोभा से शोभित, वर्ण रहा पावन श्रीकार।
श्री जिनेन्द्र के भद्रपीठ पर, लिखता हूँ मैं अपरम्पार।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीकार लेखनं करोमिं स्वाहा।

गिरि सुमेरु के अग्रभाग में, पाण्डुक शिला का है स्थान।
श्री आदि जिन का पहले ही, इन्द्र किए अभिषेक महान्।।
कल्याणक का इच्छुक मैं भी, जिन प्रतिमा का स्थापन।
अक्षत जल पुष्पों से पूजा, भाव सहित करता अर्चन।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्रीवर्णे प्रतिमास्थापनं करोमि स्वाहा।

(चौकी पर चारों दिशा में चार कलश स्थापित करें।)

उत्तमोत्तम पल्लव से अर्चित, कहे गये जो महति महान्।
स्वर्ण और चाँदी ताँबे अरु, रांगा निर्मित कलश महान्।।
चार कलश चारों कोणों पर, जल पूरित ज्यों चउ सागर।
ऐसा मान करूँ स्थापन, भक्ति से मैं अभ्यन्तर।।

ॐ ह्रीं स्वस्त्ये चतुः कोणेषु चतुः कलश स्थापनं करोमि स्वाहा।

(जल से अभिषेक करें)

श्री जिनेन्द्र के चरण दूर से, नम्र हुए इन्द्रों के भाल।
मुकुट मणी में लगे रत्न की, किरणच्छवि से धूसर लाल।।
जो प्रस्वेद ताप मल से हैं, मुक्त पूर्ण श्री जिन भगवान।
भक्ति सहित प्रकृष्ट नीर से, मैं करता अभिषेक महान।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐ अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं झ्वीं झ्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतरजलेन जिनमभिषेचयामि स्वाहा।

(चार कलश से अभिषेक करें)

इष्ट मनोरथ रहे सैकड़ों, उनकी शोभा धारे जीव।
पूर्ण सुवर्ण कलशा लेकर शुभ, लाए अनुपम श्रेष्ठ अतीव।।
भव समुद्र के पार हेतु हैं, सेतु रूप त्रिभुवन स्वामी।
करता हूँ अभिषेक भाव से, श्री जिनेन्द्र का शिवगामी।।

ॐ ह्रीं श्रीमंतं भगवंतं कृपालसंतं वृषभादि वर्धमानांतंचतुर्विंशति तीर्थंकरपरमदेवं आद्यानां आद्ये जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे आर्यखंडे .... देशे ... नाम नगरे एतद् ... जिनचैत्यालये वीर नि. सं. ... मासोत्तममासे ... मासे ... पक्षे ... तिथौ ... वासरे प्रशस्त ग्रहलग्न होरायां मुनिआर्यिका–श्रावक–श्राविकाणाम् सकलकर्मक्षयार्थं जलेनाभिषेकं करोमि स्वाहा। इति जलस्नपनम्।

(सुगंधित कलशाभिषेक करें)

जिनके शुभ आमोद के द्वारा, अन्तराल भी भली प्रकार।
चतुर्दिशा का परम सुवासित, हो जाता है शुभ मनहार।।
चार प्रकार कर्पूर बहुल शुभ, मिश्रित द्रव्य सुगन्धीवान।
तीन लोक में पावन जिन का, करता मैं अभिषेक महान्।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं झ्वीं झ्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतर पूर्णसुगंधितकलशाभिषेकेन जिनमभिषेचयामि स्वाहा।

इत्याशीर्वादः

शांतिधारा

ॐ नमः सिद्धेभ्यः श्री वीतरागाय नमः

ॐ ह्रीं णमो अरहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं णमो उवज्झायाणं णमो लोएसव्वसाहूणं।

चत्तारि मंगलं अरिहंता मंगलं सिद्धा मंगलं साहू मंगलं केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं।

चत्तारि लोगुत्तमा अरिहंता लोगुत्तमा सिद्धा लोगुत्तमा साहू लोगुत्तमा केवलिपण्णतो धम्मो लोगत्तमो।

चत्तारि सरणं पव्वज्जामि अरिहंते सरणं पव्वज्जामि सिद्धेसरणं पव्वज्जामि साहू सरणं पव्वज्जामि केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि। ॐ ह्रीं अनादि मूल मंत्रेभ्यो नमः सर्व शान्ति तुष्टिं पुष्टिं च कुरु कुरु।

ॐ नमोर्हते भगवते प्रक्षीणाशेष दोष कल्मषाय दिव्य तेजो मूर्तये नमः श्री शान्तिनाथ शान्ति कराय सर्व विघ्न प्रणाशनाय सर्व रोगापमृत्यु विनाशनाय सर्व पर कृच्छुद्रोपद्र विनाशनाय सर्व क्षामडामर विघ्न विनाशनाय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः सर्व शान्ति तुष्टिं पुष्टिं च कुरु कुरु।

ॐ ह्रूं क्ष्रूं किरिटिं किरिटिं घातय घातय पर विघ्नान स्फोटय स्फोटय सहस्र खण्डान् कुरु कुरु पर मुद्रां छिन्द छिन्द पर मंत्रान् भिन्द भिन्द क्षाः क्षः वाः वः हूं फट् सर्व शान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं अ सि आ उ सा अनाहत विद्यायै णमो अरिहन्ताणं ह्रौं सर्व विघ्न शान्तिं कुरु कुरु।

ॐ अ ह्रां सि ह्रीं आ ह्रूं उ ह्रौं सा ह्रः जगदातप विनाशाय ह्रीं शान्तिनाथाय नमः सर्व शान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय अशोक तरु सत्प्रातिहार्य मण्डिताय अशोकतरु सत्प्रातिहार्य शोभन पद प्रदाय ह्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रवशान्ति कराय नमः सर्व शान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय सुर पुष्पवृष्टि सत्प्रातिहार्य मण्डिताय सुर पुष्पवृष्टि सत्प्रातिहार्य शोभन पद प्रदाय भ्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रवशान्ति कराय नमः सर्व शान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय दिव्यध्वनि सत्प्रातिहार्य मण्डिताय दिव्यध्वनि सत्प्रातिहार्य शोभन पद प्रदाय म्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रवशान्ति कराय नमः सर्व शान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय चामरोज्ज्वल सत्प्रातिहार्य मण्डिताय चामरोज्ज्वल सत्प्रातिहार्य शोभन पद प्रदाय र्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रवशान्ति कराय नमः सर्व शान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय सिंहासन सत्प्रातिहार्य मण्डिताय सिंहासन सत्प्रातिहार्य शोभन पद प्रदाय घ्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रवशान्ति कराय नमः सर्व शान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय दुन्दुभि सत्प्रातिहार्य मण्डिताय दुन्दुभि सत्प्रातिहार्य शोभन पद प्रदाय झ्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रवशान्ति कराय नमः सर्व शान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय छत्रत्रय सत्प्रातिहार्य मण्डिताय छत्रत्रय सत्प्रातिहार्य शोभन पद प्रदाय स्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रवशान्ति कराय नमः सर्व शान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय भामण्डल सत्प्रातिहार्य मण्डिताय भामण्डल सत्प्रातिहार्य शोभन पद प्रदाय ख्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रवशान्ति कराय नमः सर्व शान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय प्रतिहार्याष्ट सहिताय बीजाष्ट मंडन मण्डिताय सर्व विघ्न शान्तिकराय नमः सर्व शान्तिं कुरु कुरु।

तव भक्ति प्रसादालक्ष्मीपुर राज्यगेह पदभ्रष्टोपद्रव दारिद्र्योद्भवोपद्रव स्वचक्र परचक्रोद्भयोपद्रव प्रचंड पवनालन जलोद्भयोपद्रव शाकिनी डाकिनी भूत पिशाच कृतोपद्रव दुर्भिक्षव्यापार वृद्धिरहितोपद्रवाणां विनाशनं भवतु।

श्री शान्तिरस्तु शिवमस्तु जयोस्तु नित्यमारोग्यमस्तु सर्वेषां पुष्टिरस्तु तुष्टिरस्तु समृद्धिरस्तु कल्याणमस्तु सुखमस्तु अभिवृद्धिरस्तु कुलगोत्रधनधान्यं सदास्तु श्री सद्धर्मवलायुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्धि रस्तु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो संपूर्ण कल्याण मंगल रूप मोक्ष पुरुषार्थश्च भवतु।

इत्याशीर्वादः

लघु शान्तिधारा

ॐ नमः सिद्धेभ्यः। श्री वीतरागाय नमः। ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पार्श्वतीर्थङ्कराय द्वादशगणपरिवेष्टिकाय, शुक्ल ध्यान पवित्राय, सर्वज्ञाय, स्वयं भुवे, सिद्धाय, बुद्धाय, परमात्मने, परम सुखाय, त्रैलोक्य महीव्याप्ताय, अनन्त संसार चक्रपरिमर्दनाय, अनन्त दर्शनाय, अनन्त ज्ञानाय, अनन्त वीर्याय, अनन्त सुखाय, सिद्धाय, बुद्धाय, त्रैलोक्यवशङ्कराय, सत्यज्ञानाय, सत्यब्रह्मणे, धरणेन्द्र फणामंडल मण्डिताय, ऋष्यार्यिका-श्रावक-श्राविका प्रमुख चतुस्संघोपसर्ग विनाशनाय, घातिकर्म विनाशनाय, अघातिकर्म विनाशनाय, **अपवायं अस्माकं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **मृत्युं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **अतिकामं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **रतिकामं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **क्रोधं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **अग्निभयं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वशत्रुं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वोपसर्गं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वविघ्नं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वभयं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वराजभयं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वचौरभयं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वदुष्टभयं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वमृगभयं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वात्मचक्रभयं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वपरमंत्र** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वशूल रोगं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वक्षय रोगं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वकुष्ठ रोगं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वक्रूर रोगं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वनरमारीं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वगजमारीं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वाश्वमारीं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वगोमारीं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वमहिषमारीं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वधान्यमारीं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्ववृक्षमारीं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वगुल्ममारीं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वपत्रमारीं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वपुष्पमारीं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वफलमारीं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वराष्ट्र मारीं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्व देशमारीं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्व विषमारीं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्ववेताल शाकिनी** भयं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्ववेदनीयं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वमोहनीयं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वकर्माष्टकं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद।

ॐ सुदर्शन-महाराज-मम-चक्र विक्रम-तेजो-बल शौर्य-वीर्य शान्तिं कुरु-कुरु। **सर्व जनानन्दनं** कुरु-कुरु। **सर्वं भव्यानंदनं** कुरु-कुरु। **सर्व गोकुलानन्दनं** कुरु-कुरु। **सर्व ग्राम नगर खेट कर्वट मटंब पत्तन द्रोणमुख संवाहनन्दनं** कुरु-कुरु। **सर्व लोकानन्दनं** कुरु-कुरु। **सर्व देशानंदनं** कुरु-कुरु। **सर्व यजमानन्दनं** कुरु-कुरु। **सर्व दुःख हन-हन, दह-दह, पच-पच, कुट-कुट, शीघ्रं-शीघ्रं।**

यत्सुखं त्रिषु लोकेषु व्याधि-व्यसन-वर्जितं।
अभयं क्षेम-मारोग्यं स्वस्ति-रस्तु विधीयते।।

श्री शांति-मस्तु! कुल-गोत्र-धन-धान्यं सदास्तु। चन्द्रप्रभ-वासुपूज्य-मल्लि-वर्द्धमान-पुष्पदंत-शीतल-मुनिसुव्रतस्त-नेमिनाथ-पार्श्वनाथ-इत्येभ्यो नमः।

इत्यनेन मंत्रेण नवग्रहाणां शान्त्यर्थं गंधोदक धारा-वर्षणम्।

शांति मंत्र- ॐ नमोर्हते भगवते प्रक्षीणाशेष दोष कल्मषाय दिव्य तेजो मूर्तये नमः। श्री शान्तिनाथ शान्ति कराय सर्व विघ्न प्रणाशनाय सर्व रोगापमृत्यु विनाशनाय सर्व पर कृच्छुद्रोपद्र विनाशनाय सर्व क्षामडामर विघ्न विनाशनाय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः मम सर्व देशस्य सर्व राष्ट्रस्य सर्व संघस्य तथैव सर्व शान्ति तुष्टिं पुष्टिं च कुरु कुरु।

शांति शिरोधृत जिनेश्वर शासनानां।
शांतिः निरन्तर तपोभव भावितानां।।
शांतिः कषाय जय जृम्भित वैभवानां।
शांतिः स्वभाव महिमान मुपागतानां।।
संपूजकानां प्रतिपालकानां यतीन्द्र सामान्य तपोधनानां।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः करोतु शांतिं भगवान जिनेन्द्रः।।
अज्ञान महातम के कारण, हम व्यर्थ कर्म कर लेते हैं।
अब अष्ट कर्म के नाश हेतु, प्रभु जल की धारा देते हैं।।
अर्घह्रह्न उदक चन्दन....... जिन-नाथ-महं यजे।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं त्रिभुवनपते शान्तिधारां करोमि नमोऽर्हते स्वाहा।

अभिषेक समय की आरती

(तर्ज : आनन्द अपार है...)

जिनवर का दरवार है, भक्ति अपरम्पार है।
जिनबम्बों की आज यहाँ पर, होती जय–जयकार है।।

(1) दीप जलाकर आरति लाए, जिनवर तुमरे द्वार जी।
भाव सहित हम गुण गाते है, हो जाए उद्धार जी।।

(2) मिथ्या मोह कषायों के वश, भव सागर भटकाए हैं।
होकर के असहाय प्रभु जी, द्वार आपके हम आए हैं।।

(3) शांति पाने श्री जिनवर का, हमने न्हवन कराया जी।
तारण तरण जानकर तुमको, आज शरण में आया जी।।

(4) हम भी आज शरण में आकर, भक्ति से गुण गाते है।
भव्य जीव जो गुण गाते वह, अजर अमर पद पाते है।।

(5) नैया पार लगा दो भगवन्, तव चरणों सिर नाते हैं।
विशद मोक्ष पद पाने हेतु, सादर शीश झुकाते हैं।।

जिनवर का... !

विनय पाठ

रचयिता : प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज

पूजा विधि के आदि में, विनय भाव के साथ।
श्री जिनेन्द्र के पद युगल, झुका रहे हम माथ।।
कर्मघातिया नाशकर, पाया केवलज्ञान।
अनन्त चतुष्टय के धनी, जग में हुए महान् ।।
दुखहारी त्रयलोक में, सुखकर हैं भगवान।
सुर–नर–किन्नर देव तव, करें विशद गुणगान।।
अघहारी इस लोक में, तारण तरण जहाज।
निज गुण पाने के लिए, आए तव पद आज।।
समवशरण में शोभते, अखिल विश्व के ईश।
ॐकारमय देशना, देते जिन आधीश।।
निर्मल भावों से प्रभु, आए तुम्हारे पास।
अष्टकर्म का नाश हो, होवे ज्ञान प्रकाश।।
भवि जीवों को आप ही, करते भव से पार।
शिव नगरी के नाथ तुम, विशद मोक्ष के द्वार ।।
करके तव पद अर्चना, विघ्न रोग हों नाश।
जन–जन से मैत्री बढ़े, होवे धर्म प्रकाश।।
इन्द्र चक्रवर्ती तथा, खगधर काम कुमार।
अर्हत् पदवी प्राप्त कर, बनते शिव भरतार।।
निराधार आधार तुम, अशरण शरण महान्।
भक्त मानकर हे प्रभु ! करते स्वयं समान।।

अन्य देव भाते नहीं, तुम्हें छोड़ जिनदेव ।
जब तक मम जीवन रहे, ध्याऊँ तुम्हें सदैव ।।
परमेष्ठी की वन्दना, तीनों योग सम्हाल।
जैनागम जिनधर्म को, पूजें तीनों काल।।
जिन चैत्यालय चैत्य शुभ, ध्यायें मुक्ति धाम।
चौबीसों जिनराज को, करते विशद प्रणाम।।

मंगल पाठ

परमेष्ठी त्रय लोक में, मंगलमयी महान।
हरें अमंगल विश्व का, क्षण भर में भगवान।।1।।

मंगलमय अरहंतजी, मंगलमय जिन सिद्ध।
मंगलमय मंगल परम, तीनों लोक प्रसिद्ध।।2।।

मंगलमय आचार्य हैं, मंगल गुरु उवझाय।
सर्व साधु मंगल परम, पूजें योग लगाय।।3।।

मंगल जैनागम रहा, मंगलमय जिन धर्म।
मंगलमय जिन चैत्य शुभ, हरें जीव के कर्म।।4।।

मंगल चैत्यालय परम, पूज्य रहे नवदेव।
श्रेष्ठ अनादिनन्त शुभ, पद यह रहे सदैव।।5।।

इनकी अर्चा वन्दना, जग में मंगलकार।
समृद्धि सौभाग्य मय, भव दधि तारण हार।।6।।

मंगलमय जिन तीर्थ हैं, सिद्ध क्षेत्र निर्वाण।
रत्नत्रय मंगल कहा, वीतराग विज्ञान।।7।।

विनय पाठ

दोहा

इह विधि ठाडो होयके, प्रथम पढ़ै जो पाठ।
धन्य जिनेश्वर देव तुम, नाशे कर्म जु आठ।।1।।

अनन्त चतुष्टय के धनी, तुम ही हो सिरताज।
मुक्ति-वधू के कंत तुम, तीन भुवन के राज।।2।।

तिहुँ जग की पीड़ा हरन, भवदधि शोषणहार।
ज्ञायक हो तुम विश्व के, शिव सुख के करतार।।3।।

हरता अघ-अंधियार के करता धर्म प्रकाश।
थिरता पद दातार हो, धरता निज गुण राश।।4।।

धर्मामृत उर जलधि सो, ज्ञान भानु तुम रूप।
तुमरे चरण सरोज को, नावत तिहुँ जग भूप।।5।।

मैं वन्दौं जिनदेव को, कर अति निर्मल भाव।
कर्मबंध के छेदने, और न कछू उपाय।।6।।

भविजन को भवकूप तैं, तुम ही काढ़नहार।
दीनदयाल अनाथपति, आतम गुण भंडार।।7।।

चिदानंद निर्मल कियो, धोय कर्म रज मैल।
सरल करी या जगत में, भविजन को शिव गैल।।8।।

तुम पद पङ्कज पूजते, विघ्न रोग टर जाय।
शत्रु मित्रता को धरै, विष निरविषता थाय।।9।।

चक्री खगधर इन्द्रपद, मिलै आपतै आप।
अनुक्रम कर शिवपद लहैं, नेम सकल हनि पाप ।।10।।

तुम बिन मैं व्याकुल भयो, जैसे जल बिन मीन।
जन्म जरा मेरी हरो, करो मोहि स्वाधीन ।।11।।

पतित बहुत पावन किये, गिनती कौन करेय।
अंजन से तारे प्रभु, जय जय जय जिनदेव ।।12।।

थकी नाव भवदधि विषैं, तुम प्रभु पार करे।
खेवटिया तुम हो प्रभु, जय जय जय जिनदेव ।।13।।

राग सहित जगमें रुल्यो, मिले सरागी देव।
वीतराग भेट्यो अबै, मेटो राग कुटेव ।।14।।

कित निगोद कित नारकी, कित तिर्यंच अज्ञान।
आज धन्य मानुष भयो, पायो जिनवर थान ।।15।।

तुमको पूजैं सुरपति, अहिपति नरपति देव।
धन्य भाग्य मेरो भयो, करन लग्यो तुम सेव ।।16।।

अशरण के तुम शरण हो, निराधार आधार।
मैं डूबत भव सिंधु में, खेय लगाओ पार ।।17।।

इन्द्रादिक गणपति थकी, कर विनती भगवान।
अपनो विरद निहारके, कीजे आप समान ।।18।।

तुमरी नेक सुदृष्टि तैं, जग उतरत हैं पार।
हा हा डूब्यो जात हों, नेक निहार निकार ।।19।।

जो मैं कह हूँ और सों, तो न मिटे उरझार।
मेरी तो तोसों बनी, तातैं करौं पुकार ।।20।।

वन्दौं पांचों परम गुरु, सुर गुरु वन्दत जास।
विघन हरन मंगल करण, पूरन परम प्रकाश ।।21।।

चौबीसों जिनपद नमों, नमों शारदा माय।
शिवमग साधक साधु नमि, रच्यो पाठ सुखदाय ।।22।।

मंगल मूर्ति परम पद, पंच धरौं नित ध्यान।
हरो अमंगल विश्व का, मंगलमय भगवान ।।23।।

मंगल जिनवर पद नमों, मंगल अर्हंत देव।
मंगलकारी सिद्धपद, सो वंदौं स्वयमेव ।।24।।

मंगल आचारज मुनि, मंगल गुरु उवझाय।
सर्व साधु मंगल करो, वंदौं मन वच काय ।।25।।

मंगल सरस्वती मात का, मंगल जिनवर धर्म।
मंगलमय मंगल करों, हरों असाता कर्म ।।26।।

या विधि मंगल करन से, जग में मंगल होत।
मंगल 'नाथूराम' यह, भव सागर दृढ़ पोत ।।27।।

अथ् अर्हत पूजा प्रतिज्ञायां... *।। पुष्पांजलि क्षिपामि ।।*

(यहाँ पर नौ बार णमोकार मंत्र जपना एवं पूजन की प्रतिज्ञा करनी चाहिए।)

(जो शरीर पर वस्त्र एवं आभूषण हैं या जो भी परिग्रह है, इसके अलावा परिग्रह का त्याग एवं मंदिर से बाहर जाने का त्याग जब तक पूजन करेंगे तब तक के लिए करें।)

इत्याशीर्वाद :

पूजा पीठिका (संस्कृत)

ॐ जय जय जय नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु ।
णमो अरिहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आयरियाणं ।
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्व साहूणं ।
ॐ ह्रीं अनादि मूल मंत्रेभ्यो नमः पुष्पांजलि क्षिपामि ।

चत्तारि मंगलम् अरिहंता मंगलम् सिद्धा मंगलम् साहू मंगलम् केवलि पण्णतो धम्मो मंगलम्।
चत्तारि लोगुत्तमा अरिहंता लोगुत्तमा सिद्धा लोगुत्तमा साहू लोगुत्तमा केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा। चत्तारि सरणं पव्वज्ञामि अरिहंते सरणं पव्वज्जामि।
सिद्धे सरणं पव्वज्ञामि साहू सरणं पव्वज्ञामि केवलि पण्णत्तं धम्मं शरणं पव्वज्जामि।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा (परि पुष्पांजलि क्षिपामि)।

अपवित्रः पवित्रो वा सुस्थितो दुस्थितोपि वा।
ध्यायेत पंच नमस्कारं सर्व पापैः प्रमुच्यते ।।1 ।।

अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थाम् गतोऽपिवा।
यः स्मरेत परमात्मानम् सःवाह्याभ्यंतरे शुचिः ।।2 ।।

अपराजित मंत्रोयम्-सर्व विघ्न विनाशनः।
मंगलेषु च सर्वेषु प्रथमम् मंगलं मताः ।।3 ।।

एसो पंच-णमो-यारो सव्व-पावप्पणासणो ।
मंगलाणं च सव्वेसिं पढ़मं हवइ मंगलं ।।4 ।।

अर्ह-मित्यक्षरम ब्रह्म-बाचकं परमेष्ठिनः।
सिद्ध चक्रस्य सद् बीजं सर्वतः प्रणमाभ्यहम् ।।5 ।।

कर्माष्टक-विनिर्मुक्तं मोक्ष लक्ष्मी निकेतनम्।
सम्यक्त्वादि गुणोपेतम् सिद्ध चक्रम् नमाम्यहम् ।।6 ।।

विघ्नौघाः प्रलयं यांति-शाकिनी-भूत-पन्नगाः।
विषं निर्विषतां याति स्तूयमाने जिनेश्वरः ।।7 ।

(इति पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

उदक चंदन तंदुल पुष्पकै चरू सुदीप सुधूप फलार्घकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले जिन गृहे जिननाथ महंयजे ।।

ॐ ह्रीं भगवतो-गर्भ-जन्म-तप-ज्ञान निर्वाण पंचकल्याणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उदक चंदन तंदुल पुष्पकै चरू सुदीप सुधूप फलार्घकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले जिन गृहे जिननाथ महंयजे ।।

ॐ ह्रीं श्री अरिहन्तसिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु पंच परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

उदक चंदन तंदुल पुष्पकै चरू सुदीप सुधूप फलार्घकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले जिन गृहे जिननाथ महंयजे ।।

ॐ ह्रीं भगवत् जिन अष्टोत्तर सहस्त्र नामेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उदक चंदन-तंदुल पुष्पकै चरू सुदीप सुधूप फलार्घकैः।
धवल मंगल ज्ञान रवाकुले जिन गृहे जिन नाथ महंयजे ।।

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्राणितत्त्वार्थ सूत्र दशाध्याय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भक्तामरः - प्रणत - मौलि - मणि - प्रभाणा-
मुद्योतकं दलित - पाप - तमो - वितानम्।
सम्यक् प्रणम्य जिने - पाद युगं युगादा-
वालम्बनं भव - जले पततां जनानाम् ।।1 ।।

स्तोत्रस्रजं तव जिनेन्द्र ! गुणै - र्निबद्धां।
भक्त्या मया रुचिर - वर्ण - विचित्र - पुष्पाम् ।।
धत्ते जनो य इह कण्ठ - गतामजस्रं।
तं मानतुंङ्गमवशा समुपैति लक्ष्मीः ।। 2 ।।

ॐ ह्रीं मानतुंगाचार्यकृत भक्तामर स्तोत्र काव्यम् अर्घ्यं निर्वापामीति स्वाहाः।

• • •

पूजा पीठिका (हिन्दी भाषा)

ॐ जय जय जय नमोस्तु, नमोस्तु, नमोस्तु

अरहन्तों को नमन् हमारा, सिद्धों को करते वन्दन।
आचार्यों को नमस्कार हो, उपाध्याय का है अर्चन।।
सर्वलोक के सर्व साधुओं, के चरणों शत्शत् वन्दन।
पञ्च परम परमेष्ठी के पद, मेरा बारम्बार नमन्।।

ॐ ह्रीं अनादि मूलमंत्रेभ्यो नमः। (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

मंगल चार-चार हैं उत्तम, चार शरण हैं जगत् प्रसिद्ध।
इनको प्राप्त करें जो जग में, वह बन जाते प्राणी सिद्ध।।
श्री अरहंत जगत् में मंगल, सिद्ध प्रभु जग में मंगल।
सर्व साधु जग में मंगल हैं, जिनवर कथित धर्म मंगल।।
श्री अरहंत लोक में उत्तम, परम सिद्ध होते उत्तम।
सर्व साधु उत्तम हैं जग में, जिनवर कथित धर्म उत्तम।।
अरहंतों की शरण को पाएँ, सिद्ध शरण में हम जाएँ।
सर्व साधु की शरण केवली, कथित धर्म शरणा पाएँ।।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा। (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(चाल टप्पा)

अपवित्र या हो पवित्र कोई, सुस्थित दुस्थित होवे।
पंच नमस्कार ध्याने वाला, सर्व पाप को खोवे।।

अपवित्र या हो पवित्र नर, सर्व अवस्था पावें।
बाह्याभ्यन्तर से शुचि हैं वह, परमातम को ध्यावें।।

अपराजित यह मंत्र कहा है, सब विघ्नों का नाशी।
सर्व मंगलों में मंगल यह, प्रथम कहा अविनाशी।।

पञ्च नमस्कारक यह अनुपम, सब पापों का नाशी।
सर्व मंगलों में मंगल यह, प्रथम कहा अविनाशी।।

परं ब्रह्म परमेष्ठी वाचक, अर्हं अक्षर माया।
बीजाक्षर है सिद्ध संघ का, जिसको शीश झुकाया।।

मोक्ष लक्ष्मी के मंदिर हैं, अष्ट कर्म के नाशी।
सम्यक्त्वादि गुण के धारी, सिद्ध नमूँ अविनाशी।।

विघ्न प्रलय हों और शाकिनी, भूत पिशाच भग जावें।
विष निर्विष हो जाते क्षण में, जिन स्तुति जो गावें।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

पंचकल्याणक का अर्घ्य

जल चन्दन अक्षत पुष्प चरु ले, दीप धूप फल अर्घ्य महान्।
जिन गृह में कल्याण हेतु मैं, अर्चा करता मंगलगान।।

ॐ ह्रीं भगवतो गर्भजन्मतपज्ञाननिर्वाणपंचकल्याणकेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच परमेष्ठी का अर्घ्य

जल चन्दन अक्षत पुष्प चरु ले, दीप धूप फल अर्घ्य महान्।
जिन गृह में कल्याण हेतु मैं, अर्चा करता मंगलगान।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधुभ्योर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनसहस्रनाम अर्घ्य

जल चन्दन अक्षत पुष्प चरु ले, दीप धूप फल अर्घ्य महान्।
जिन गृह में कल्याण हेतु मैं, अर्चा करता मंगलगान।।

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिन अष्टोत्तरसहस्रनामेभ्योअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवाणी का अर्घ्य

जल चन्दन अक्षत पुष्प चरू ले, दीप धूप फल अर्घ्य महान्।
जिन गृह में कल्याण हेतु मैं, अर्चा करता मंगलगान।।

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्दर्शन ज्ञान चारित्राणि तत्त्वार्थ सूत्र दशाध्याय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

स्वस्ति मंगल विधान

(शम्भू छन्द)

तीन लोक के स्वामी विद्या, स्याद्वाद के नायक हैं।
अनन्त चतुष्टय श्री के धारी, अनेकान्त प्रगटायक हैं।।
मूल संघ में सम्यक् दृष्टि, पुरुषों के जो पुण्य निधान।
भाव सहित जिनवर की पूजा, विधि सहित करते गुणगान।।1।।

जिन पुंगव त्रैलोक्य गुरू के, लिए 'विशद' होवे कल्याण।
स्वाभाविक महिमा में तिष्ठे, जिनवर का हो मंगलगान।।
केवल दर्शन ज्ञान प्रकाशी, श्री जिन होवें क्षेम निधान।
उज्ज्वल सुन्दर वैभवधारी, मंगलकारी हो भगवान।।2।।

विमल उछलते बोधामृत के, धारी जिन पावें कल्याण।
जिन स्वभाव परभाव प्रकाशक, मंगलकारी हों भगवान।।
तीनों लोकों के ज्ञाता जिन, पावें अतिशय क्षेम निधान।
तीन लोकवर्ति द्रव्यों में, विस्तृत ज्ञानी हैं भगवान।।3।।

परम भाव शुद्धी पाने का, अभिलाषी होकर हम नाथ।
देश काल जल चन्दनादि की, शुद्धि भी रखकर के साथ।।
जिन स्तवन जिन बिम्ब का दर्शन, ध्यानादि का आलम्बन।
पाकर पूज्य अरहन्तादि की, करते हम पूजन अर्चन।।4।।

हे अर्हन्त ! पुराण पुरुष हे !, हे पुरुषोत्तम यह पावन।
सर्व जलादि द्रव्यों का शुभ, पाया हमने आलम्बन।।
अति दैदीप्यमान है निर्मल, केवल ज्ञान रूपी पावन।
अग्नि में एकाग्र चित्त हो, सर्व पुण्य का करें हवन।।5।।

ॐ ह्रीं विधियज्ञ-प्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

(दोहा छन्द)

श्री ऋषभ मंगल करें, मंगल श्री अजितेश।
श्री संभव मंगल करें, अभिनंदन तीर्थेश।।
श्री सुमति मंगल करें, मंगल श्री पद्मेश।
श्री सुपार्श्व मंगल करें, चन्द्रप्रभु तीर्थेश।
श्री सुविधि मंगल करें, शीतलनाथ जिनेश।
श्री श्रेयांस मंगल करें, वासुपूज्य तीर्थेश।।
श्री विमल मंगल करें, मंगलानन्त जिनेश।
श्री धर्म मंगल करें, शांतिनाथ तीर्थेश।।
श्री कुन्थु मंगल करें, मंगल अरह जिनेश।
श्री मल्लि मंगल करें, मुनिसुव्रत तीर्थेश।।
श्री नमि मंगल करें, मंगल नेमि जिनेश।
श्री पार्श्व मंगल करें, महावीर तीर्थेश।।

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(छन्द ताटंक)

महत् अचल अद्भुत अविनाशी, केवल ज्ञानी संत महान्।
शुभ दैदीप्यमान मनः पर्यय, दिव्य अवधि ज्ञानी गुणवान।।
दिव्य अवधि शुभ ज्ञान के बल से, श्रेष्ठ महाऋद्धीधारी।
ऋषी करें कल्याण हमारा, मुनिवर जो हैं अनगारी।।1।।

(यहाँ से प्रत्येक श्लोक के अन्त में पुष्पाञ्जलि क्षेपण करना चाहिये।)

जो कोष्ठस्थ श्रेष्ठ धान्योपम, एक बीज सम्भिन्न महान्।
शुभ संश्रोतृ पदानुसारिणी, चउ विधि बुद्धि ऋद्धीवान।।

शक्ति तप से अर्जित करते, श्रेष्ठ महा ऋद्धी धारी।
ऋषि करें कल्याण हमारा, मुनिवर जो हैं अनगारी।।2।।

श्रेष्ठ दिव्य मतिज्ञान के बल से, दूर से ही हो स्पर्शन।
श्रवण और आस्वादन अनुपम, गंध ग्रहण हो अवलोकन।।
पंचेन्द्रिय के विषय ग्राही, श्रेष्ठ महा ऋद्धीधारी।
ऋषि करें कल्याण हमारा, मुनिवर जो हैं अनगारी।।3।।

प्रज्ञा श्रमण प्रत्येक बुद्ध शुभ, अभिन्न दशम पूरवधारी।
चौदह पूर्व प्रवाद ऋद्धि शुभ, अष्टांग निमित्त ऋद्धीधारी।।शक्ति...।।4।।

जंघा अग्नि शिखा श्रेणी फल, जल तन्तु हों पुष्प महान्।
बीज और अंकुर पर चलते, गगन गमन करते गुणवान।।शक्ति...।।5।।

अणिमा महिमा लघिमा गरिमा, ऋद्धीधारी कुशल महान्।
मन बल वचन काय बल ऋद्धी, धारण करते जो गुणवान।।शक्ति...।।6।।

जो ईशत्व वशित्व प्राकम्पी, कामरूपिणी अन्तर्धान।
अप्रतिघाती और आप्ती, ऋद्धी पाते हैं गुणवान।।शक्ति...।।7।।

दीप्त तप्त अरू महा उग्र तप, घोर पराक्रम ऋद्धी घोर।
अघोर ब्रह्मचर्य ऋद्धिधारी, करते मन को भाव विभोर।।शक्ति...।।8।।

आमर्ष अरू सर्वौषधि ऋद्धी, आशीर्विष दृष्टि विषवान।
क्ष्वेलौषधि जल्लौषधि ऋद्धी, विडौषधी मल्लौषधि जान।।शक्ति...।।9।।

क्षीर और घृतस्रावी ऋद्धी, मधु अमृतस्रावी गुणवान।
अक्षीण संवास अक्षीण महानस, ऋद्धीधारी श्रेष्ठ महान्।।।।शक्ति...10।।

(इति परम-ऋषिस्वस्ति मंगल विधानम्) इति पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

देव-शास्त्र-गुरु पूजा

(द्यानतरायजी कृत)

अडिल्ल छंद

प्रथम देव अरिहन्त सुश्रुत सिद्धांत जू।
गुरु निर्ग्रन्थ महन्त मुकतिपुर-पंथ जू।।
तीन रतन जग माहिं सो ये भवि ध्याइये।
तिनकी भक्ति-प्रसाद परम पद पाइये।।1।।

दोहा – पूजों पद अरहंत के, पूजों गुरुपद सार।
पूजों देवी सरस्वती, नित प्रति अष्ट प्रकार।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु समूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु समूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु समूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

(हरिगीतिका एवं दोहा)

सुरपति उरग नरनाथ तिनकरि, वन्दनीक सुपदप्रभा।
अति शोभनीक सुवरण उज्ज्वल, देख छवि मोहित सभा।।
वर नीर क्षीर-समुद्र घट भरि, अग्र तसु बहुविधि नचूँ।
अरहन्त श्रुत-सिद्धांत गुरु, निर्ग्रन्थ नित पूजा रचूँ।।

दोहा – मलिन वस्तु हर लेत सब, जल-स्वभाव मल छीन।
जासों पूजों परम पद, देव-शास्त्र-गुरु तीन।।1।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जे त्रिजग उदर मझार प्राणी, तपत अति दुद्धर खरे।
तिन अहित-हरन सुवचन जिनके, परम शीतलता भरे।।
तसु भ्रमर-लोभित घ्राण पावन, सरस चन्दन घसि सचूँ।
अरहन्त श्रुत सिद्धांत गुरु, निर्ग्रन्थ नित पूजा रचूँ।।

दोहा – **चन्दन शीतलता करे, तपत वस्तु परवीन।**
जासों पूजों परम पद, देव–शास्त्र–गुरु तीन।।2।।

ॐ ह्रीं श्री देव–शास्त्र–गुरुभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

यह भव–समुद्र अपार तारण, के निमित्त सुविधि ठई।
अति दृढ़ परम–पावन जथारथ, भक्ति वर नौका सही।।
उज्ज्वल अखंडित सालि तंदुल, पुञ्ज धरि त्रयगुण जचूँ।
अरहन्त श्रुत–सिद्धांत गुरु, निर्ग्रन्थ नित पूजा रचूँ।।

दोहा – **तंदुल सालि सुगंध अति, परम अखंडित बीन।**
जासों पूजों परम पद, देव–शास्त्र–गुरु तीन।।3।।

ॐ ह्रीं श्री देव–शास्त्र–गुरुभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

जे विनयवंत सुभव्य उर, अम्बुज प्रकाशन भान हैं।
जे एक मुख चारित्र भाषत, त्रिजग माँहि प्रधान हैं।।
लहि कुंद–कमलादिक पहुप, भव–भव कुवेदन सो बचूँ।
अरहन्त श्रुत–सिद्धांत गुरु, निर्ग्रन्थ नित पूजा रचूँ।।

दोहा – **विविध भाँति परिमल सुमन, भ्रमर जास आधीन।**
जासों पूजों परम पद, देव–शास्त्र–गुरु तीन।।4।।

ॐ ह्रीं श्री देव–शास्त्र–गुरुभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

अति सबल मद कंदर्प जाको, क्षुधा–उरग अमान हैं।
दुस्सह भयानक तासु नाशन को, सु गरुड़ समान हैं।।
उत्तम छहों रस युक्त नित, नैवेद्य करि घृत में पचूँ।
अरहन्त श्रुत–सिद्धांत गुरु, निर्ग्रन्थ नित पूजा रचूँ।।

दोहा – **नानाविधि संयुक्त रस, व्यञ्जन सरस नवीन।**
जासों पूजों परम पद, देव–शास्त्र–गुरु तीन।।5।।

ॐ ह्रीं श्री देव–शास्त्र–गुरुभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जे त्रिजग–उद्यम नाश किने, मोह–तिमिर महाबली।
तिहिं कर्मघाती ज्ञानदीप, प्रकाश ज्योति प्रभावली।।
इह भाँति दीप प्रजाल, कंचन के सुभाजन में खचूँ।
अरहन्त श्रुत–सिद्धांत गुरु, निर्ग्रन्थ नित पूजा रचूँ।।

दोहा – **स्व–पर प्रकाशक ज्योति अति, दीपक तमकरि हीन।**
जासों पूजों परम पद, देव–शास्त्र–गुरु तीन।।6।।

ॐ ह्रीं श्री देव–शास्त्र–गुरुभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

जो कर्म–ईंधन दहन अग्नि, समूह सम उद्धत लसै।
वर धूप तासु सुगंधता करि, सकल परिमलता हँसै।।
इह भाँति धूप चढ़ाय नित, भव–ज्वलन माहीं नहीं पचूँ।
अरहन्त श्रुत–सिद्धांत गुरु, निर्ग्रन्थ नित पूजा रचूँ।।

दोहा – **अग्नि माँहिं परिमल दहन, चन्दनादि गुणलीन।**
जासों पूजों परम पद, देव–शास्त्र–गुरु तीन।।7।।

ॐ ह्रीं श्री देव–शास्त्र–गुरुभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

लोचन सुरसना घ्राण उर, उत्साह के करतार है।
मोपै न उपमा जाय वरणी, सकल फल गुणसार है।।
सो फल चढ़ावत अर्थपूरन, परम अमृतरस सचूँ।
अरहन्त श्रुत–सिद्धांत गुरु, निर्ग्रन्थ नित पूजा रचूँ।।

दोहा – **जे प्रधान फलफल विषैं, पञ्चकरण रसलीन।**
जासों पूजों परम पद, देव–शास्त्र–गुरु तीन।।8।।

ॐ ह्रीं श्री देव–शास्त्र–गुरुभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल परम उज्ज्वल गन्ध अक्षत, पुष्प चरु दीपक धरूँ।
वर धूप निर्मल फल विविध, बहु जनम के पातक हरूँ।।
इहि भाँति अर्घ चढ़ाय नित भवि, करत शिव पंकति मचूँ।
अरहन्त श्रुत–सिद्धांत गुरु, निर्ग्रन्थ नित पूजा रचूँ।।

दोहा – **वसुविधि अर्घ संजोय कै, अति उछाह मन कीन।**
जासों पूजों परम पद, देव–शास्त्र–गुरु तीन।।9।।

ॐ ह्रीं श्री देव–शास्त्र–गुरुभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा – **देव–शास्त्र–गुरु रतन शुभ, तीन रतन करतार।**
भिन्न–भिन्न कहूँ आरती, अल्प सुगुण विस्तार।।1।।

।। पद्धरि छन्द।।

चउ कर्म सु त्रेसठ प्रकृति नाशि, जीते अष्टादश दोषराशि।
जे परम सुगुण हैं अनंत धीर, कहवत के छ्यालिस गुणगंभीर।।2।।

शुभ समवशरण शोभा अपार, शत इन्द्र नमत कर शीश धार।
देवाधिदेव अरहंत देव, वन्दौं मन–वच–तन कर सुसेव।।3।।

जिनकी धुनि है ओंकाररूप, निर–अक्षरमय महिमा अनूप।
दश–अष्ट महाभाषा समेत, लघु भाषा सात शतक सुचेत।।4।।

सो स्याद्वादमय सप्तभंग, गणधर गूँथे बारह सुअंग।
रवि–शशि न हरै सो तम हराय, सो शास्त्र नमों बहु प्रीति ल्याय।।5।।

गुरु आचारज उवझाय साधु, तन नगन रत्नत्रय निधि अगाध।
संसार देह वैराग्य धार, निरवांछितपैं शिवपद निहार।।6।।

गुण छत्तिस पच्चिस आठ–बीस, भव–तारण–तरन जिहाज ईस।
गुरु की महिमा वरनी न जाय, गुरुनाम जपो मन–वचन–काय।।7।।

सोरठा– **कीजै शक्ति प्रमान, शक्ति बिना सरधा धरै।**
'द्यानत' सरधावान, अजर–अमर पद भोगवै।।

ॐ ह्रीं श्री देव–शास्त्र–गुरुभ्यो: अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इत्याशीर्वाद: पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

अर्घ्यावली

विद्यमान बीस तीर्थंकरों का अर्घ्य

जलफल आठों दर्व अरघ कर प्रीति धरी है,
गणधर इन्द्र निहू–तैं थुति पूरी न करी है।
द्यानत सेवक जान के हो जगतें लेहु निकार,
सीमन्धर जिन आदि दे बीस विदेह मँझार।
श्री जिनराज हो भव तारण तरण जहाज।।

ॐ ह्रीं श्री सीमन्धरादिविद्यमान विंशतितीर्थंकरेभ्योऽनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अकृत्रिम जिनबिम्बों का अर्घ

कृत्माकृत्रिमचारुचैत्यनिलयान्, नित्यं त्रिलोकीगतान्,
वन्दे भावन–व्यन्तरान् द्युतिवरान्, कल्पामरा–वासगान्।।
सद्–गन्धाक्षत–पुष्पदामचरुकै: सद्दीपधूपै: फलैर्,
नीराद्यैश्च यजे प्रणम्य शिरसा, दुष्कर्मणां शान्तये।।

सात करोड़ बहत्तर लाख, सु–भवन जिन पाताल में।
मध्यलोक में चार सौ अट्ठावन, जजों अघमल टाल के।।
अब लख चौरासी सहस सत्यावन, अधिक तेईस रु कहे।
बिन संख ज्योतिष व्यन्तरालय, सब जजों मन वच ठहे।।

ॐ ह्रीं कृतिअकृत्रिमकृत्रिमजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध भगवान का अर्घ्य

गन्धाढ्यं सुपयो मधुव्रत–गणै:, सङ्गं वरं चन्दनं,
पुष्पौघं विमलं सदक्षत–चयं, रम्यं चरुं दीपकम्।

धूपं गन्धयुतं ददामि विविधं, श्रेष्ठं फलं लब्धये,
सिद्धानां युगपत्क्रमाय विमलं, सेनोत्तरं वाञ्छितम् ।।

ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री आदिनाथ भगवान का अर्घ्यं

शुचि निर्मल नीरं गंध सुअक्षत, पुष्प चरु ले मन हरषाय।
दीप धूप फल अर्घ सु लेकर, नाचत ताल मृदंग बजाय।
श्री आदिनाथजी के चरण कमल पर, बलि बलि जाऊँ मन वच काय।
हे ! करुणानिधि भव दुःख मेटो, यातैं मैं पूजों प्रभु पाय।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री चन्द्रप्रभ भगवान का अर्घ्यं

सजि आठों दरब पुनीत, आठों अंग नमों।
पूजों अष्टम जिन मीत, अष्टम अवनि गमों।
श्री चन्द्रनाथ दुति चन्द्र, चरनन चंद्र लगै,
मन- वच- तन जजत अमंद, आतम जोति जगै।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री वासुपूज्य भगवान का अर्घ्यं

जल फलदरब मिलाय गाय गुन, आठों अंग नमाई।
शिवपदराज हेत हे श्रीपति! निकट धरों यह लाई।।
वासुपूज्य वसुपूज- तनुज पद, वासव सेवत आई।
बालब्रह्मचारी लखि जिनको, शिवतिय सनमुख धाई।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री शांतिनाथ भगवान का अर्घ्यं

वसु द्रव्य सँवारी, तुम ढिंग धारी, आनंदकारी दृग प्यारी।
तुम हो भवतारी, करुणाधारी, यातै थारी शरनारी।।

श्री शान्ति जिनेशं, नुतचक्रेशं वृषचक्रेशं, चक्रेशं।
हनि अरि चक्रेशं हे ! गुणधेशं, दयामृतेशं मक्रेशं।।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री पार्श्वनाथजी का अर्घ्यं

पथ की प्रत्येक विषमता को मैं, समता से स्वीकार करूँ।
जीवन विकास के प्रिय पथ की, बाधाओं का परिहार करूँ।।
मैं अष्ट कर्म आवरणों का, प्रभुवर आतंक हटाने को।
वसुद्रव्य संजोकर लाया हूँ, चरणों में नाथ चढ़ाने को।।

ॐ ह्रीं श्री चिंतामणि पार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री महावीर भगवान का अर्घ्यं

जल फल वसु सजि हिम थार, तन मन मोद धरों।
गुण गाऊँ भवदधितार, पूजत पाप हरों।।
श्री वीर महा अतिवीर, सन्मति नायक हो।
जय वर्द्धमान गुणधीर, सन्मतिदायक हो।।

ॐ ह्रीं श्री वर्द्धमान जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समुच्चय चौबीसी भगवान का अर्घ्यं

जल फल आठों शुचिसार, ताको अर्घ करों,
तुमको अरपों भवतार, भवतरि मोक्ष वरों।
चौबीसों श्री जिनचंद, आनंद कंद सही,
पद जजत हरत भव फंद, पावत मोक्ष मही।।

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्त चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच बालयति का अर्घ्यं

सजि वसुविधि द्रव्य मनोज्ञ, अरघ बनावत हैं।
वसुकर्म अनादि संयोग, ताहि नशावत हैं।।
श्री वासुपूज्य मलि नेम, पारस वीर यती।
नमूँ मन-वच-तन धरि प्रेम, पाँचों बालयति।।

ॐ ह्रीं श्री पंच बालयति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री बाहुबली स्वामी का अर्घ्यं

हूँ शुद्ध निराकुल सिद्धों सम, भव लोक हमारा वासा ना।
रिपु रागरु द्वेष लगे पीछे, यातें शिवपद को पाया ना।।
निज के गुण निज में पाने को, प्रभु अर्घ संजोकर लाया हूँ।
हे ! बाहुबली तुम चरणों में, सुख सन्मति पाने आया हूँ।।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोलहकारण का अर्घ्यं

जल फल आठों दरब चढ़ाय, द्यानत विरत करों मन लाय।
परम गुरु हो!, जय जय नाथ परम गुरु हो!।।
दरश विशुद्धि भावना भाय, सोलह तीर्थंकर पद पाय।
परम गुरु हो!, जय जय नाथ परम गुरु हो!।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धयादिषोडशकारणेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचमेरु का अर्घ्यं

आठ दरब मय अरघ बनाय, द्यानत पूजौं श्री जिनराय।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय।।
पाँचों मेरु असी जिनधाम, सब प्रतिमा जी को करो प्रणाम।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय।।

ॐ ह्रीं पंचमेरु संबंधी अशीति जिन चैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नंदीश्वरद्वीप का अर्घ्यं

यह अरघ कियो निज हेत, तुमको अरपतु हों।
द्यानत कीज्यो शिव खेत, भूमि समरपतु हों।।
नंदीश्वर श्री जिनधाम, बावन पुंज करों।
वसुदिन प्रतिमा अभिराम, आनंद भाव धरों।।
नंदीश्वर द्वीप महान्, चारों दिशि सोहें।
बावन जिन मंदिर जान, सुर नर मन मोहें।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वरद्वीपे पूर्वपश्चिमोत्तरदक्षिण द्विपंचाशज्-जिनालयस्थ जिनप्रतिमाभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशलक्षण का अर्घ्यं

आठों दरब संवार, द्यानत अधिक उछाह सों।
भव-आताप निवार, दस लच्छन पूजों सदा।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्मांङ्गाय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नत्रय का अर्घ्यं

आठ दरब निरधार, उत्तम सो उत्तम लिये।
जनम रोग निरवार, सम्यक् रत्नत्रय भजूँ।।

ॐ ह्रीं सम्यक्रत्नत्रयाय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्वाण क्षेत्र अर्घ्यं

जल गंध अच्छत फूल चरु फल धूप दीपायन धरौं।
'द्यानत' करो निरभय जगत तैं जोर कर विनती करौं।।
सम्मेदगढ़ गिरनार चम्पा पावापुर कैलाश कौं।
पूजों सदा चौबीस जिन निर्वाण भूमि निवास कौं।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थङ्करनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस्वती का अर्घ्यं

जल चंदन अक्षत फूल चरु, दीप धूप अति फल लावै।
पूजा को ठानत जो तुम जानत, सो नर द्यानत सुख पावै।।
तीर्थंकर की ध्वनि, गणधर ने सुनि, अंग रचे चुनि ज्ञान मई।
सो जिनवर वानी, शिवसुखदानी, त्रिभुवन मानी पूज्य भई।।

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भवसरस्वती देव्यै: अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सप्तर्षि का अर्घ्यं

जल गंध अक्षत पुष्प चरुवर, दीप धूप सु लावना।
फल ललित आठों द्रव्य मिश्रित, अर्घ कीजे पावना।।
मन्वादि चारण-ऋद्धि धारक, मुनिन की पूजा करूँ।
ता करें पातक हरें सारे, सकल आनंद विस्तरूँ।।

ॐ ह्रीं श्री मन्वादिसप्तर्षिभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चा.च. प.पू. आचार्य 108 श्री शांतिसागरजी महाराज का अर्घ्यं

पद अनर्घ्य की प्राप्ती हेतु, अर्घ्य बनाकर लाये हैं।
गुरुवर दो सामर्थ्य हमें हम, चरण शरण में आये हैं।।
शांति सिन्धु दो शांति हमें, हम शांति पाने आये हैं।
विशद भाव से पद पंकज में, अपना शीष झुकाये हैं।।

ॐ हूँ श्री चा.च. आचार्य 108 श्री शांतिसागर यतिवरेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आचार्य 108 श्री विमलसागरजी महाराज का अर्घ्यं

हे ज्ञान मूर्ति ! करुणा निधान, हे धर्म दिवाकर ! करुणा कर ।
हे तेज पुञ्ज ! हे तपोमूर्ति !, सन्मार्ग दिवाकर रत्नाकर।।

विमल सिंधु के विमल चरण से, करुणा के झरने झरते ।
गुरु अष्ट गुणों की सिद्धि हेतु, यह अर्घ्य समर्पण हम करते ।।

ॐ हूँ श्री सन्मार्ग दिवाकर वात्सल्य रत्नाकर धर्म प्रणेता आचार्य श्री विमलसागर यतिवरेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आचार्य 108 श्री विरागसागरजी महाराज का अर्घ्यं

जल चन्दन के कलश थाल में अक्षत पुष्प सजाये हैं।
चरुवर दीप धूप फल लेकर अर्घ चढ़ाने आये हैं ।।
मन मंदिर में मेरे गुरुवर हमने तुम्हें बसाया है।
विराग सिन्धु के श्री चरणों में अपना शीश झुकाया है।।

ॐ हूँ श्री प्रज्ञा श्रमण बालयति प.पू. आचार्य श्री विरागसागर यतिवरेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आचार्य 108 श्री भरतसागरजी महाराज का अर्घ्यं

जल चन्दन के कलश मनोहर अक्षत पुष्प चरु लाये।
दीप धूप अरु फल को लेकर अर्घ्य चढ़ाने हम आये।।
हृदय कमल में राजें गुरुवर सुन्दर सुमन बिछाते है।
भरत सिंधु के श्री चरणों में सादर शीष झुकाते हैं।।

ॐ हूँ श्री बालयोगी प्रशान्त मूर्ति आचार्य 108 श्री भरतसागर यतिवरेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आचार्य 108 श्री विशदसागरजी महाराज का अर्घ्यं

प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर थाल सजाकर लाये हैं।
महाव्रतों को धारण कर ले मन में भाव बनाये हैं।।
विशद सिंधु के श्री चरणों में अर्घ समर्पित करते हैं।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें गुरु चरणों में सिर धरते हैं।।

ॐ हूँ श्री क्षमामूर्ति आचार्य 108 श्री विशदसागरजी यतिवरेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समुच्चय महार्घ्य

मैं देव श्री अर्हंत पूजूँ, सिद्ध पूजूँ चाव सों।
आचार्य श्री उवझाय पूजूँ, साधु पूजूँ भाव सों।।1।।

अर्हन्त-भाषित बैन पूजूँ, द्वादशांग रची गनी।
पूजूँ दिगम्बर गुरु चरन, शिव हेतु सब आशा हनी।।2।।

सर्वज्ञ भाषित धर्म दशविधि, दया-मय पूजूँ सदा।
जजुँ भावना षोडश रत्नत्रय, जा बिना शिव नहिं कदा।।3।।

त्रैलोक्य के कृत्रिम अकृत्रिम, चैत्य चैत्यालय जजूँ।
पंचमेरु नंदीश्वर जिनालय, खचर सुर पूजत भजूँ।।4।।

कैलाश श्री सम्मेद श्री, गिरनार गिरि पूजूँ सदा।
चम्पापुरी पावापुरी पुनि और तीरथ सर्वदा।।5।।

चौबीस श्री जिनराज पूजूँ, बीस क्षेत्र विदेह के।
नामावली इक सहस-वसुजयि, होय पति शिव गेह के।।6।।

दोहा

जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल लाय।
सर्व पूज्य पद पूजहूँ, बहुविधि भक्ति बढ़ाय।।7।।

ॐ ह्रीं श्री द्रव्यपूजा, भावपूजा, भाववंदना, त्रिकालपूजा, त्रिकालवंदना करै करावैं भावना भावैं श्री अरहंतजी, सिद्धजी, आचार्यजी, उपाध्यायजी, सर्वसाधुजी, पंचपरमेष्ठिभ्यो नमः प्रथमानुयोग-करणानुयोग-चरणानुयोग-द्रव्यानुयोगेभ्यो नमः। दर्शन-विशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्यो नमः। उत्तम क्षमादि दशलक्षण धर्मेभ्यो नमः। सम्यग्दर्शन-सम्यग्ज्ञान-सम्यक्चारित्रेभ्यो नमः।

जल के विषै, थल के विषै, आकाश के विषै, गुफा के विषै, पहाड़ के विषै, नगर-नगरी विषै, ऊर्ध्व लोक, मध्य लोक, पाताल लोक विषै विराजमान कृत्रिम अकृत्रिम जिन चैत्यालय जिनबिम्बेभ्यो नमः। विदेहक्षेत्रे विद्यमान बीस तीर्थंकरेभ्यो नमः। पाँच भरत, पाँच ऐरावत, दश क्षेत्र संबंधी तीस चौबीसी के सात सौ बीस जिनबिम्बेभ्यो नमः। नंदीश्वर द्वीप संबंधी बावन जिनचैत्यालयेभ्यो नमः। पंचमेरु संबंधी अस्सी जिन चैत्यालयेभ्यो नमः। सम्मेदशिखर, कैलाश, चंपापुर, पावापुर, गिरनार, सोनागिर, राजगृही, मथुरा आदि सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः। जैनबद्री, मूढ़बद्री, हस्तिनापुर, चंदेरी, पपोरा, अयोध्या, शत्रुञ्जय, तारङ्गा, चमत्कारजी, महावीरजी, पद्मपुरी, तिजारा, विराटनगर, नागफणी, खजुराहो, श्रेयांशगिरि, मक्सी पार्श्वनाथ, चंवलेश्वर, मालपुरा आदिनाथ आदि अतिशय क्षेत्रेभ्यो नमः, श्री चारण ऋद्धिधारी सप्तपरमर्षिभ्यो नमः।

ॐ ह्रीं श्रीमन्तं भगवन्तं कृपालसंतं श्री वृषभादि महावीर पर्यंत चतुर्विंशतितीर्थंकर परमदेवं आद्यानां आद्ये जम्बूद्वीपे भरत क्षेत्रे आर्य खंडे .... देशे................ प्रान्ते............. नाम्नि नगरे............. मासानामुत्तमे .... मासे शुभ पक्षे .... तिथौ .... वासरे .... मुनि आर्यिकानां श्रावक-श्राविकानां सकल कर्मक्षयार्थं अनर्घ पद प्राप्तये संपूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतिपाठ (भाषा)

(शांतिपाठ बोलते समय पुष्प क्षेपण करते रहना चाहिये)

शांतिनाथ मुख शशि उनहारी, शील गुणव्रत संयमधारी।
लखन एकसो आठ विराजे, निरखत नयन कमलदल लाजै।।1।।

पंचम चक्रवर्ति पदधारी, सोलम तीर्थंकर सुखकारी।
इन्द्र नरेन्द्र पूज्य जिननायक, नमो शांतिहित शांतिविधायक ।।2 ।।

दिव्य विटप पहुपन की बरषा, दुन्दुभि आसन वाणी सरसा।
छत्र चमर भामण्डल भारी, ये तव प्रातिहार्य मनहारी ।।3 ।।

शांति जिनेश शांति सुखदाई, जगत पूज्य पूजों शिरनाई।
परम शांति दीजै हम सबको, पढ़ें तिन्हें पुनि चार संघको ।।4 ।।

बसंत तिलका

पूजें जिन्हें मुकुट हार किरीट लाके, इन्द्रादि देव अरु पूज्य पदाब्ज जाके।
सो शांतिनाथ वरवंश जगत्प्रदीप, मेरे लिये करहि शांति सदा अनूप ।।5 ।।

इन्द्रवज्रा

संपूजकों को प्रतिपालकों को, यतीनकों को यतिनायकों को।
राजा-प्रजा राष्ट्रसुदेश को ले, कीजे सुखी हे जिन ! शांति को दे ।।6 ।।

स्त्रग्धरा छन्द

होवे सारी प्रजा को सुखबल युत धर्मधारी नरेशा।
होवे वर्षा समे पे तिलभर न रहे व्याधियों का अन्देशा ।।
होवे चोरी न जारी सुसमय वरते हो न दुष्काल भारी।
सारे ही देश धारै जिनवर वृषको जो सदा सौख्यकारी ।।7 ।।

दोहा - घातिकर्म जिन नाश करि, पायो केवलराज।
शांति करो सब जगत में, वृषभादिक जिनराज ।।8 ।।

अथेष्टक प्रार्थना

शास्त्रों का हो पठन सुखदा, लाभ सत्संगती का।
सद्वृत्तों का सुजस कहके, दोष ढांकु सभी का ।।

बोलूँ प्यारे वचन हितके, आपका रूप ध्याऊं।
तोलों सेऊं चरण जिनके, मोक्ष जौलों न पाऊं ।।1 ।।

आर्या छन्द

तब पद मेरे हियमें, मम् हिय तेरे पुनीत चरणों में।
तबलों लीन रहों प्रभु, जबलों पाया न मुक्ति पद मैंने ।।10 ।।

अक्षर पद मात्रा से दूषित, जो कछु कहा गया मुझसे।
क्षमा करो प्रभु सो सब, करुणा करि पुनि छुड़ाहु भवदुःख से ।।11 ।।

हे जगबन्धु ! जिनेश्वर, पाऊं तव चरण शरण बलिहारी।
मरण समाधि सुदुर्लभ कर्मों का, क्षय हो सुबोध सुखकारी ।।12 ।।

(परिपुष्पांजलि क्षिपेत्) यहाँ पर नौ बार णमोकार मंत्र जपना चाहिए।

इति शान्त्ये शांतिधारा, इति शान्त्ये शांतिधारा, इति शान्त्ये शांतिधारा

चौपाई

मैं तुम चरण कमल गुणगाय, बहुविधि भक्ति करों मनलाय।
जनम जनम प्रभु पाऊं तोहि, यह सेवा फल दीजे मोहि ।।

कृपा तिहारी ऐसी होय, जामन मरन मिटावो मोय।
बार बार मैं विनती करूं, तुम सेवा भवसागर तरुं ।।

नाम लेत सब दुःख मिट जाय, तुम दर्शन देख्यो प्रभु आय।
तुम हो प्रभु देवन के देव, मैं तो करूँ चरण तब सेव ।।

जिनपूजा तैं सब सुख होय, जिनपूजा सम और न कोय।
जिनपूजा तैं स्वर्ग विमान, अनुक्रमतैं पावे निर्वाण ।।

मैं आयो पूजन के काज, मेरे जन्म सफल भयो आज।
पूजा करके नवाऊं शीश, मुझ अपराध क्षमहु जगदीश ।।

दोहा - सुख देना दुःख मेटना, यही आपकी बान।
मो गरीब की विनती, सुन लिज्यो भगवान ।।

पूजन करते देव की, आदि मध्य अवसान।
सुरगन के सुख भोगकर, पावे मोक्ष निदान।।
जैसी महिमा तुम विषें, और धरे नहिं कोय।
जो सूरज में ज्योति है, नहिं तारगण होय।।
नाथ तिहारे नामते, अघ छिनमांहि पलाय।
ज्यों दिनकर प्रकाशतें, अन्धकार विनशाय।।
बहुत प्रशंसा क्या करूँ, मैं प्रभु बहुत अज्ञान।
पूजाविधि जानूं नहीं, शरण राखो भगवान।।
इस अपार संसार में, शरण नाहिं प्रभु कोय।
यातैं तव पद भक्तको, भक्ति सहाई होय।।

विसर्जन

बिन जाने वा जानके, रही टूट जो कोई।
तुम प्रसाद ते परमगुरु, सो सब पूरण होय।।1।।

पूजनविधि जानूँ नहीं, नहीं जानूँ आह्वान।
और विसर्जन हूँ नहीं, क्षमा करहु भगवान।।2।।

मंत्रहीन धनहीन हूँ, क्रियाहीन जिनदेव।
क्षमा करहु राखहु मुझे, देहु चरण की सेव।।3।।

आये जो-जो देवगण, पूजे भक्ति प्रमाण।
ते सब मेरे मन बसो, चौबीसों भगवान।।4।।

इत्याशीर्वादः।

आशिका लेना

श्रीजिनवर की आशिका, लीजै शीश चढ़ाय।
भव-भव के पातक कटे, दुःख दूर हो जाय।।1।।

जिन स्तुति

मैं तुम चरण कमल गुण गाय, बहुविधि भक्ति करों मनलाय।
जनम-जनम प्रभु पाऊँ तोहि, यह सेवाफल दीजे मोहि।।

कृपा तिहारी ऐसी होय, जामन मरन मिटावो मोय।
बार-बार मैं विनती करूँ, तुम सेवा भवसागर तरूँ।।

नाम लेत सब दुःख मिट जाय, तुम दर्शन देख्यो प्रभु आय।
तुम हो प्रभु देवन के देव, मैं तो करूँ चरण तव सेव।।

जिन पूजा तैं सब सुख होय, जिन पूजा सम अवर न कोय।
जिन पूजा तैं स्वर्ग विमान, अनुक्रम तैं पावै निर्वाण।।

मैं आयो पूजन के काज, मेरो जनम सफल भयो आज।
पूजा करके नवाऊँ शीश, मम अपराध क्षमहु जगदीश।।

सुख देना दुख मेटना, यही तुम्हारी बान।
मो गरीब की वीनती, सुन लीज्यो भगवान।।

पूजन करते देव का, आदि मध्य अवसान।
सुरगन के सुख भोगकर, पावै मोक्ष निदान।।

जैसी महिमा तुम विषैं, और धरैं नहिं कोय।
जो सूरज में जोति है, नहिं तघागरागण होय।।

नाथ तिहारे नाम तैं, अघ छिनमाहि पलाय।
ज्यों दिनकर प्रकाश तैं, अन्धकार विनशाय।।

बहुत प्रशंसा क्या करूँ, मैं प्रभु बहुत अज्ञान।
पूजा विधि जानूँ नही, शरण राखि भगवान।।

देव स्तुति

प्रभु पतित-पावन - मैं अपावन, चरण आयो शरण जी।
यों विरद आप निहार स्वामी, मेट जामन-मरण जी।।

तुम ना पिछान्यो आन मान्यो, देव विविध प्रकार जी।
या बुद्धि सेती निज न जान्यो, भ्रम गिन्यो हितकार जी।।

भव विकट वन में कर्म बैरी, ज्ञान-धन मेरो हर्यो।
सब इष्ट भूल्यो भ्रष्ट होय, अनिष्ट गति धरतो फिर्यो।।

धन घड़ी यों धन दिवस, यों धन्य जनम मेरो भयो।
अब भाग्य मेरो उदय आयो, दरश प्रभु को लख लयो।।

छवि वीतरागी नग्न मुद्रा, दृष्टि नासा पै धरै।
वसु प्रातिहार्य अनन्त गुण जुत कोटि रवि छवि को हरै।।

मिट गयो तिमिर मिथ्यात्व मेरो, उदय रवि आतम भयो।
मो उर हर्ष ऐसो भयो, मनु रङ्क चिन्तामणि लयो।।

मैं हाथ जोड़ नवाऊँ मस्तक, वीनऊँ तुम चरण जी।
सर्वोत्कृष्ट त्रिलोकपति जिन, सुनहुँ तारण तरण जी।।

जाचूँ नहीं सुरवास पुनि, नर-राज परिजन साथ जी।
'बुध' जाँचहूँ तुम भक्ति भव भव, दीजिये शिव नाथ जी।।

***

समुच्चय पूजा

देव शास्त्र गुरु नमन करि, बीस तीर्थंकर ध्याय।
सिद्ध शुद्ध राजत सदा, नमूं चित हुलसाय।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु समूह ! श्री विद्यमान विंशति तीर्थंकर समूह ! अनन्तानन्त-सिद्ध-परमेष्ठि समूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अनादिकाल से जग में स्वामिन्, जल से शुचिता को माना।
शुद्ध निजातम सम्यक्रत्नत्रय, निधि को नहीं पहिचाना।।
अब निर्मल रत्नत्रय-जल ले, श्री देव-शास्त्र-गुरु को ध्याऊँ।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध प्रभु के गुण गाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो अनन्तानन्तसिद्ध-परमेष्ठिभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भव-आताप मिटावन की, निज में ही क्षमता समता है।
अनजाने अब तक मैंने, पर में की झूठी ममता है।।
चन्दन सम शीतलता पाने, श्री देव-शास्त्र-गुरु को ध्याऊँ।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध प्रभु के गुण गाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो अनन्तानन्तसिद्ध-परमेष्ठिभ्य संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय पद के बिना फिरा, जगत की लख चौरासी योनी में।
अष्ट कर्म के नाश करन को, अक्षत तुम ढ़िंग लाया मैं।।
अक्षय निधि निज की पाने अब, श्री देव-शास्त्र-गुरु को ध्याऊँ।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध प्रभु के गुण गाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो अनन्तानन्तसिद्ध-परमेष्ठिभ्योऽक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प सुगुन्धी से आतम ने, शील स्वभाव नशाया है।
मन्मथ बाणों से बिन्ध करके, चहुँ गति में दुःख उपजाया है।।
स्थिरता निज में पाने को, श्री देव-शास्त्र-गुरु को ध्याऊँ।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध प्रभु के गुण गाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो अनन्तानन्तसिद्ध-परमेष्ठिभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

षट् रस-मिश्रित भोजन से, ये भूख न मेरी शान्त हुई।
आतम रस अनुपम चखने से, इन्द्रिय-मन इच्छा शमन हुई।।
सर्वथा भूख के मेटन को, श्री देव-शास्त्र-गुरु को ध्याऊँ।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध प्रभु के गुण गाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो अनन्तानन्तसिद्ध-परमेष्ठिभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जड़-दीप विनश्वर को अब तक, समझा था मैंने उजियारा।
निज-गुण दरशायक ज्ञानदीप से, मिटा मोह का अंधियारा।
ये दीप समर्पित करके मैं, श्री देव-शास्त्र-गुरु को ध्याऊँ।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध प्रभु के गुण गाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो अनन्तानन्तसिद्ध-परमेष्ठिभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

ये धूप अनल में खेने से, कर्मों को नहीं जलायेगी।
निज में निज की शक्ति ज्वाला, जो राग द्वेष नशायेगी।।

उस शक्ति दहन प्रगटाने को, श्री देव-शास्त्र-गुरु को ध्याऊँ।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध प्रभु के गुण गाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो अनन्तानन्तसिद्ध-परमेष्ठिभ्योऽष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

पिस्ता बदाम श्रीफल लवंग, चरणन तुम ढिंग मैं ले आया।
आतमरस भीने निज गुणफल, मम मन अब उनमें ललचाया।।
अब मोक्ष महाफल पाने को, श्री देव-शास्त्र-गुरु को ध्याऊँ।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध प्रभु के गुण गाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो अनन्तानन्तसिद्ध-परमेष्ठिभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टम वसुधा पाने को, कर में ये आठों द्रव्य लिये।
सहज शुद्ध स्वाभाविकता से, निज में निजगुण प्रकट किये।।
ये अर्घ समर्पण करके मैं, श्री देव-शास्त्र-गुरु को ध्याऊँ।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध प्रभु के गुण गाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो अनन्तानन्तसिद्ध-परमेष्ठिभ्योऽनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

देव शास्त्र गुरु बीस तीर्थंकर, सिद्ध प्रभु भगवान।
अब वरणूँ जय मालिका, करूँ स्तवन गुणगान।।

नशे घातिया कर्म जु अर्हन्त देवा, करे सुर- असुर- नर- मुनि नित्य सेवा।
दरश-ज्ञान-सुख-बल अनन्तों के स्वामी, छियालीस गुण युत महा ईश नामी।।1।।

तेरी दिव्य -वाणी सदा भव्य मानी, महा- मोह विध्वंसिनी मोक्ष-दानी।
अनेकान्तमय द्वादशांगी बखानी, नमो लोक माता श्री जिनवाणी।।2।।

विरागी अचारज उवज्झाय साधू, दरस- ज्ञान भण्डार समता अराधू।
नगन वेशधारी सु एका विहारी, निजानन्द मंडित मुकति पथ प्रचारी।।3।।

विदेहक्षेत्र में तीर्थंकर बीस राजें, विरहमान बन्दूँ सभी पाप भाजें।
नमूँ सिद्ध निर्भय निरामय सुधामी, अनाकुल समाधान सहजाभिरामी।।4।।

देव-शास्त्र-गुरु बीस तीर्थंकर, सिद्ध हृदय बिच धर ले रे।
पूजन ध्यान गान गुण करके, भवसागर जिय तर ले रे।।5।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो श्री अनन्तानन्तसिद्ध परमेष्ठिभ्योऽनर्घ पदप्राप्तये महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भूत भविष्यत् वर्तमान की, तीस चौबीसी मैं ध्याऊँ।
चैत्य चैत्यालय कृत्रिमाकृत्रिम, तीन लोक के मन लाऊँ।।

ॐ ह्रीं त्रिकाल सम्बन्धी तीस चौबीसी के त्रिलोक सम्बन्धी कृत्रिमाकृत्रिम चैत्यालयेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत्य भक्ति आलोचन चाहूँ, कायोत्सर्ग अघ नाशन हेत।
कृत्रिमाकृत्रिम तीन लोक में, राजत हैं जिन बिम्ब अनेक।।
चतुर निकाय के देव जजे लें, अष्ट द्रव्य निज भक्ति समेत।
निज शक्ति अनुसार जजूँ मैं, कर समाधि पाऊँ शिवखेत।।

ॐ ह्रीं कृत्रिमाकृत्रिमचैत्यालयसम्बन्धिजिनबिम्बेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्व मध्य अपराह्न की बेला, पूर्वाचार्यों के अनुसार।
देव वन्दना करूँ भाव से, सकल कर्म की नाशन हार।।
पंच महा गुरु सुमरन करके, कायोत्सर्ग करूँ सुखकार।
सहज स्वभाव शुद्ध लख अपना, जाऊँगा अब मैं भव पार।।

।। परिपुष्पांजलि क्षिपेत् ।। (नौ बार णमोकार मंत्र जपें)

श्री देव शास्त्र गुरु पूजन (समुच्चय)

स्थापना

देवशास्त्र गुरु के चरणों, हम सादर शीश झुकाते हैं।
कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य-चैत्यालय, सिद्ध प्रभु को ध्याते हैं।।
श्री बीस जिनेन्द्र विदेहों के, अरु सिद्ध क्षेत्र जग के सारे।
हम विशद भाव से गुण गाते, ये मंगलमय तारण हारे।।
हमने प्रमुदित शुभ भावों से, तुमको हे नाथ ! पुकारा है।
मम् डूब रही भव नौका को, जग में बस एक सहारा है।।
हे करुणा कर ! करुणा करके, भव सागर से अब पार करो।
मम् हृदय कमल में आ तिष्ठो, बस इतना सा उपकार करो।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु, कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय, अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी, विद्यमान विंशति तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र समूह अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वानन।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु, कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय, अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी, विद्यमान विंशति तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु, कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय, अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी, विद्यमान विंशति तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र समूह अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

हम प्रासुक जल लेकर आये, निज अन्तर्मन निर्मल करने।
अपने अन्तर के भावों को, शुभ सरल भावना से भरने।।
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य-चैत्यालय को ध्यायें।
हम विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।1।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्योः, कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय, अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी, विद्यमान विंशति तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र समूह जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ ! शरण में आयें हैं, भव के सन्ताप सताए हैं।
हम परम सुगन्धित चंदन ले, प्रभु चरण शरण में आये हैं।।
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य–चैत्यालय को ध्यायें।
हम विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।2।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो:, कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य–चैत्यालय, अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी, विद्यमान विंशति तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र समूह भव ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

हम अक्षय निधि को भूल रहे, प्रभु अक्षय निधी प्रदान करो।
हम अक्षत लाए चरणों में, प्रभु अक्षय निधि का दान करो।।
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य–चैत्यालय को ध्यायें।
हम विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।3।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो:, कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य–चैत्यालय, अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान विंशति तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र समूह अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

यद्यपि पंकज की शोभा भी, मानस मधुकर को हर्षाए।
हम काम कलंक नशाने को, मनहर कुसुमांजलि ले लाए।।
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य–चैत्यालय को ध्यायें।
हम विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।4।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो:, कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य–चैत्यालय, अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी, विद्यमान विंशति तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र समूह काम बाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

ये षट् रस व्यंजन नाथ हमें, सन्तुष्ट कभी न कर पाये।
चेतन की क्षुधा मिटाने को, नैवेद्य चरण में हम लाए।।
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य–चैत्यालय को ध्यायें।
हम विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।5।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो:, कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य–चैत्यालय, अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी, विद्यमान विंशति तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र समूह क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक के विविध समूहों से, अज्ञान तिमिर न मिट पाए।
अब मोह तिमिर के नाश हेतु, हम दीप जलाकर ले आए।।
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य–चैत्यालय को ध्यायें।
हम विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।6।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो:, कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य–चैत्यालय, अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी, विद्यमान विंशति तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र समूह मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

ये परम सुगंधित धूप प्रभु, चेतन के गुण न महकाए।
अब अष्ट कर्म के नाश हेतु, हम धूप जलाने को आए।।
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य–चैत्यालय को ध्यायें।
हम विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।7।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो:, कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य–चैत्यालय, अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान विंशति तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र समूह अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

जीवन तरु में फल खाए कई, लेकिन वे सब निष्फल पाए।
अब 'विशद' मोक्ष फल पाने को, श्री चरणों में श्री फल लाए।।
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य–चैत्यालय को ध्यायें।
हम विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।8।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो:, कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य–चैत्यालय, अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान विंशति तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र समूह मोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम अष्ट कर्म आवरणों के, आतंक से बहुत सताए हैं।
वसु कर्मों का हो नाश प्रभु, वसु द्रव्य संजोकर लाए हैं।।
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य–चैत्यालय को ध्यायें।
हम विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।9।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो:, कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य–चैत्यालय, अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी, विद्यमान विंशति तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र समूह अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

श्री देव शास्त्र गुरु मंगलमय हैं, अरु मंगल श्री सिद्ध महन्त।
बीस विदेह के जिनवर मंगल, मंगलमय हैं तीर्थं अनन्त।।

(छन्द तोटक)

जय अरि नाशक अरिहंत जिनं, श्री जिनवर छियालीस मूल गुणं।
जय महा मदन मद मान हनं, भवि भ्रमर सरोजन कुंज वनं।।
जय कर्म चतुष्टय चूर करं, दृग ज्ञान वीर्य सुख नन्त वरं।
जय मोह महारिपु नाशकरं, जय केवल ज्ञान प्रकाश करं।।1।।

जय कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य जिनं, जय अकृत्रिम शुभ चैत्य वनं।
जय ऊर्ध्व अधो के जिन चैत्यं, इनको हम ध्याते हैं नित्यं।।
जय स्वर्ग लोक के सर्व देव, जय भावन व्यन्तर ज्योतिषेव।
जय भाव सहित पूजे सु एव, हम पूज रहे जिन को स्वयमेव।।2।।

श्री जिनवाणी ओंकार रूप, शुभ मंगलमय पावन अनूप।
जो अनेकान्तमय गुणधारी, अरु स्याद्वाद शैली प्यारी।।
है सम्यक् ज्ञान प्रमाण युक्त, एकान्तवाद से पूर्ण मुक्त।
जो नयावली युत सजल विमल, श्री जैनागम है पूर्ण अमल।।3।।

जय रत्नत्रय युत गुरूवरं, जय ज्ञान दिवाकर सूरि परं।
जय गुप्ति समिती शील धरं, जय शिष्य अनुग्रह पूर्ण करं।।

गुरु पञ्चाचार के धारी हो, तुम जग–जन के उपकारी हो।
गुरु आतम ब्रह्म बिहारी हो, तुम मोह रहित अविकारी हो।।4।।

जय सर्व कर्म विध्वंश करं, जय सिद्ध शिला पे वास करं।
जिनके प्रगटे है आठ गुणं, जय द्रव्य भाव नो कर्महनं।।
जय नित्य निरंजन विमल अमल, जय लीन सुखामृत अटल अचल।
जय शुद्ध बुद्ध अविकार परं, जय चित् चैतन्य सु देह हरं।।5।।

जय विद्यमान जिनराज परं, सीमंधर आदी ज्ञान करं।
जिन कोटि पूर्व सब आयु वरं, जिन धनुष पांच सौ देह परं।।
जो पंच विदेहों में राजे, जय बीस जिनेश्वर सुख साजे।
जिनको शत् इन्द्र सदा ध्यावें, उनका यश मंगलमय गावें।।6।।

जय अष्टापद आदीश जिनं, जय उर्जयन्त श्री नेमि जिनं।
जय वासुपूज्य चम्पापुर जी, श्री वीर प्रभु पावापुरजी।।
श्री बीस जिनेश सम्मेदगिरी, अरु सिद्ध क्षेत्र भूमि सगरी।
इनकी रज को सिर नावत हैं, इनको यश मंगल गावत हैं।।7।।

ॐ ह्रीं श्री देव–शास्त्र–गुरुभ्यो:, कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य–चैत्यालय, अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी, विद्यमान विंशति तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र समूह अनर्घ पद प्राप्ताय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **तीन लोक तिहूँ काल के, नमूँ सर्व अरहंत।**
अष्ट द्रव्य से पूजकर, पाऊँ भव का अन्त।।

ॐ ह्रीं श्री त्रिलोक एवं त्रिकाल वर्ती तीर्थंकर जिनेन्द्रेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्वाचार्य कथित देवों को, सम्यक् वन्दन करें त्रिकाल।
पञ्च गुरू जिन धर्म चैत्य श्रुत, चैत्यालय को है नत भाल।।

पुष्पांजलिं क्षिपेत्

श्री नवदेवता पूजा

स्थापना

हे लोक पूज्य अरिहंत नमन् !, हे कर्म विनाशक सिद्ध नमन् !
आचार्य देव के चरण नमन् अरु, उपाध्याय को शत् वन्दन ।।
हे सर्वसाधु है तुम्हें नमन् ! हे जिनवाणी माँ तुम्हें नमन् !
शुभ जैनधर्म को करूँ नमन्, जिनबिम्ब जिनालय को वन्दन ।।
नवदेव जगत् में पूज्य 'विशद', है मंगलमय इनका दर्शन ।
नवकोटि शुद्ध हो करते हैं, हम नव देवों का आह्वानन ।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिनधर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालय समूह अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिनचैत्य चैत्यालय समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिनधर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालय समूह अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

हम तो अनादि से रोगी हैं, भव बाधा हरने आये हैं।
हे प्रभु ! अन्तर तम साफ करो, हम प्रासुक जल भर लाये हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती से सारे कर्म धुलें।
हे नाथ ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।1 ।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिनधर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: जन्म, जरा, मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार ताप में जलकर हमने, अगणित अति दुख पाये हैं।
हम परम सुगंधित चंदन ले, संताप नशाने आये हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती से भव संताप गलें।
हे नाथ ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।2 ।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिनधर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

यह जग वैभव क्षण भंगुर है, उसको पाकर हम अकुलाए ।
अब अक्षय पद के हेतु प्रभू, हम अक्षत चरणों में लाए ।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चाकर अक्षय शांति मिले।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।3 ।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिनधर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

बहु काम व्यथा से घायल हो, भव सागर में गोते खाये।
हे प्रभु! आपके चरणों में, हम सुमन सुकोमल ले आये।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चाकर अनुपम फूल खिलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।4 ।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिनधर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो:कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हम क्षुधा रोग से अति व्याकुल,होकर के प्रभु अकुलाए हैं।
यह क्षुधा मेटने हेतु चरण, नैवेद्य सुसुन्दर लाए हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती कर सारे रोग टलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।5।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिनधर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु मोह तिमिर ने सदियों से, हमको जग में भरमाया है।
उस मोह अन्ध के नाश हेतु, मणिमय शुभ दीप जलाया है।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चा कर ज्ञान के दीप जलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।6 ।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हसिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिनधर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

भव वन में ज्वाला धधक रही, कर्मों के नाथ सतायें हैं।
हों द्रव्य भाव नो कर्म नाश, अग्नी में धूप जलायें हैं।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, पूजा करके वसु कर्म जलें ।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।7।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिनधर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सारे जग के फल खाकर भी, हम तृप्त नहीं हो पाए हैं।
अब मोक्ष महाफल दो स्वामी, हम श्रीफल लेकर आए हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ति कर हमको मोक्ष मिले।
हे नाथ ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।8 ।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिनधर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हमने संसार सरोवर में, सदियों से गोते खाये हैं।
अक्षय अनर्घ पद पाने को, वसु द्रव्य संजोकर लाये हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों के, वन्दन से सारे विघ्न टलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।3।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिनधर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घत्तानंद छन्द

नव देव हमारे, जगत सहारे, चरणों देते जल धारा।
मन वच तन ध्याते, जिन गुण गाते, मंगलमय हो जग सारा।।

शांतये शांति धारा करोमि।

ले सुमन मनोहर अंजलि में भर, पुष्पांजलि दे हर्षाएँ।
शिवमग के दाता ज्ञानप्रदाता, नव देवों के गुण गाएँ।।

दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य (9, 27 या 108 बार)

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिनधर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा – **मंगलमय नव देवता, मंगल करें त्रिकाल।**
मंगलमय मंगल परम, गाते हैं जयमाल।।

(चाल टप्पा)

अर्हन्तों ने कर्म घातिया, नाश किए भाई।
दर्शन ज्ञान अनन्तवीर्य सुख, प्रभु ने प्रगटाई ।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटी से, पूजों हो भाई। जि...

सर्वकर्म का नाश किया है, सिद्ध दशा पाई।
अष्टगुणों की सिद्धि पाकर, सिद्ध शिला जाई ।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटी से, पूजों हो भाई। जि...

पञ्चाचार का पालन करते, गुण छत्तिस पाई।
शिक्षा दीक्षा देने वाले, जैनाचार्य भाई ।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

उपाध्याय है ज्ञान सरोवर, गुण पच्चिस पाई।
रत्नत्रय को पाने वाले, शिक्षा दें भाई ।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई ।। जि...

ज्ञान ध्यान तप में रत रहते, जैन मुनी भाई।
वीतराग मय जिन शासन की, महिमा दिखलाई।

जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई ।। जि...

सम्यक्‌दर्शन ज्ञान चरितमय, जैन धर्म भाई।
परम अहिंसा की महिमा युत, क्षमा आदि पाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई ।। जि...

श्री जिनेन्द्र की ओम्‌कार मय, वाणी सुखदाई।
लोकालोक प्रकाशक कारण, जैनागम भाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई ।। जि...

वीतराग जिनबिम्ब मनोहर, भविजन सुखदाई।।
वीतराग अरु जैन धर्म की, महिमा प्रगटाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई ।। जि...

घंटा तोरण सहित मनोहर, चैत्यालय भाई।
वेदी पर जिनबिम्ब विराजित, जिन महिमा गाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई ।। जि...

दोहा– नव देवों को पूजकर, पाऊँ मुक्ती धाम।
''विशद'' भाव से कर रहे, शत्‌–शत्‌ बार प्रणाम्‌।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा – भक्ति भाव के साथ, जो पूजें नव देवता।
पावे मुक्ति वास, अजर अमर पद को लहें।।

इत्याशीर्वाद :

श्री पंच परमेष्ठी समुच्चय पूजन

स्थापना

अर्हन्तों के वंदन से, उर में निर्मलता आती है ।
श्री सिद्ध प्रभु के चरणों में, सारी जगती झुक जाती है ।।
आचार्य श्री जग जीवों को, शुभ पञ्चाचार प्रदान करें ।
गुरु उपाध्याय करुणा करके, सद्दर्शन ज्ञान का दान करें ।।
हैं साधु रत्नत्रय धारी, उनके चरणों शत्‌–शत्‌ वंदन ।
हे पञ्च महाप्रभु! विशद हृदय में, करते हैं हम आह्वानन्‌ ।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्व साधु पंच परमेष्ठिभ्यो अत्र अवतर–अवतर संवौषट्‌ आह्वाननं । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्‌ सन्निधिकरणं ।

निर्मल सरिता का प्रासुक जल, हम शुद्ध भाव से लाये हैं ।
हो जन्म जरादि नाश प्रभु, तव चरण शरण में आये हैं ।।
अर्हन्त सिद्ध आचार्य उपाध्याय, सर्व साधु को ध्याते हैं ।
हों पञ्च परम पद प्राप्त हमें, हम सादर शीश झुकाते हैं ।।1।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हद्‌सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्वसाधु पंचपरमेष्ठिभ्यो जन्म–जरा, मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतलता पाने को पावन, चंदन घिसकर के लाये हैं ।
हम भव सन्ताप नशाने को प्रभु, चरण शरण में आये हैं ।।
अर्हन्त सिद्ध आचार्य उपाध्याय, सर्व साधु को ध्याते हैं ।
हों पञ्च परम पद प्राप्त हमें, हम सादर शीश झुकाते हैं ।।2।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हद्‌सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्वसाधु पंचपरमेष्ठिभ्यो संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वच्छ अखंडित उज्ज्वल तंदुल, श्री चरणों में लाये हैं ।
अनुपम अक्षय पद पाने को, चरण शरण में आये हैं ।।

अर्हन्त सिद्ध आचार्य उपाध्याय, सर्व साधु को ध्याते हैं ।
हों पञ्च परम पद प्राप्त हमें, हम सादर शीश झुकाते हैं ।।3।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हद्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्वसाधु पंचपरमेष्ठिभ्यो अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

निज भावों के पुष्प मनोहर, परम सुगंधित लाये हैं ।
काम शत्रु के नाश हेतु प्रभु, चरण शरण में आये हैं ।।
अर्हन्त सिद्ध आचार्य उपाध्याय, सर्व साधु को ध्याते हैं ।
हों पञ्च परम पद प्राप्त हमें, हम सादर शीश झुकाते हैं ।।4।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हद्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्वसाधु पंचपरमेष्ठिभ्यो कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

परम शुद्ध नैवेद्य मनोहर, आज बनाकर लाये हैं ।
क्षुधा रोग का मूल नशाने, चरण शरण में आये हैं ।।
अर्हन्त सिद्ध आचार्य उपाध्याय, सर्व साधु को ध्याते हैं ।
हों पञ्च परम पद प्राप्त हमें, हम सादर शीश झुकाते हैं ।।5।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हद्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्वसाधु पंचपरमेष्ठिभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंतर दीप प्रज्ज्वलित करने, मणिमय दीपक लाये हैं ।
मोह तिमिर हो नाश हमारा, चरण शरण में आये हैं ।।
अर्हन्त सिद्ध आचार्य उपाध्याय, सर्व साधु को ध्याते हैं ।
हों पञ्च परम पद प्राप्त हमें, हम सादर शीश झुकाते हैं ।।6।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हद्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्वसाधु पंचपरमेष्ठिभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दश धर्मों की प्राप्ति हेतु हम, धूप दशांगी लाये हैं ।
अष्ट कर्म का नाश होय मम्, चरण शरण में आये हैं ।।
अर्हन्त सिद्ध आचार्य उपाध्याय, सर्व साधु को ध्याते हैं ।
हों पञ्च परम पद प्राप्त हमें, हम सादर शीश झुकाते हैं ।।7।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हद्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्वसाधु पंचपरमेष्ठिभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस पक्व निर्मल फल उत्तम, तव चरणों में लाये हैं ।
परम मोक्ष फल शिव सुख पाने, चरण शरण में आये हैं ।।
अर्हन्त सिद्ध आचार्य उपाध्याय, सर्व साधु को ध्याते हैं ।
हों पञ्च परम पद प्राप्त हमें, हम सादर शीश झुकाते हैं ।।8।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हद्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्वसाधु पंचपरमेष्ठिभ्यो मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टम वसुधा पाने को यह, अर्घ्य मनोहर लाये हैं ।
निज अनर्घ पद पाने हेतु, चरण शरण में आये हैं ।।
अर्हन्त सिद्ध आचार्य उपाध्याय, सर्व साधु को ध्याते हैं ।
हों पञ्च परम पद प्राप्त हमें, हम सादर शीश झुकाते हैं ।।9।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हद्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्वसाधु पंचपरमेष्ठिभ्यो अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– जिन परमेष्ठी पाँच की, महिमा अपरम्पार ।
गाते हैं जयमालिका, करके जय–जयकार ।।

(छन्द ताटंक)

जय जिनवर केवलज्ञान धार, सर्वज्ञ प्रभु को करें नमन ।
जय दोष अठारह रहित देव, अर्हन्तों के पद में वंदन ।।
जय नित्य निरंजन अविकारी, अविचल अविनाशी निराधार ।
जय शुद्ध बुद्ध चैतन्यरूप, श्री सिद्ध प्रभु को नमस्कार ।।
जय छत्तिस गुण को हृदयधार, जय मोक्षमार्ग में करें गमन ।
जय शिक्षा दीक्षा के दाता, आचार्य गुरु को विशद नमन ।।
जय पच्चिस गुणधारी गुरुवर, जय रत्नत्रय को हृदय धार ।
जय द्वादशांग पाठी महान्, श्री उपाध्याय को नमस्कार ।।
जय मुनि संघ आरम्भहीन, जय तीर्थंकर के लघुनंदन ।

जय ज्ञान ध्यान वैराग्यवान, श्री सर्वसाधु को सतत नमन् ।।
जय वीतराग सर्वज्ञ प्रभो !, श्री जिनवाणी जग में मंगल ।
जय गुरु पूर्ण निर्ग्रन्थ रूप, जो हरते हैं सारा कलमल ।।
इनका वंदन हम करें नित्य, हो जाए सफल मेरा जीवन ।
हम भाव सुमन लेकर आये, चरणों में करने को अर्चन ।।
प्रभु भटक रहे हम सदियों से, मिल सकी न हमको चरण शरण ।
अतएव अनादि से भगवन्, पाए हमने कई जनम-मरण ।।
अब जागा मम् सौभाग्य प्रभु, तुमको हमने पहिचान लिया ।
सच्चे स्वरूप का दर्शन कर, जो समीचीन श्रद्धान किया ।।
है अर्ज हमारी चरणों में प्रभु, हमको यह वरदान मिले ।
हम रहें चरण के दास बने, जब तक मेरी यह श्वाँस चले ।।
तुम पूज्य पुजारी चरणों में, यह द्रव्य संजोकर लाये हूँ ।
हो भाव समाधि मरण अहा !, यह विनती करने आये हूँ ।।
क्योंकि दर्शन करके हमने, सच्चे पद को पहिचान लिया ।
हम पायेंगे उस पदवी को, अपने मन में यह ठान लिया ।।
अनुक्रम से सिद्ध दशा पाना, अन्तिम यह लक्ष्य हमारा है ।
उस पद को पाने का केवल, जिनभक्ती एक सहारा है ।।
जिनभक्ती कर जिन बनने की, मेरे मन में शुभ लगन रहे।
जब तक मुक्ती न मिल पाए, शुभ 'विशद' धर्म की धार बहे ।।

दोहा- अर्हत् सिद्धाचार्य जिन, उपाध्याय अरु संत ।
इनकी पूजा भक्ति से, होय कर्म का अन्त ।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हद्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्वसाधु पंचपरमेष्ठिभ्यो अनर्घपदप्राप्ताय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा- परमेष्ठी का दर्श कर, हृदय जगे श्रद्धान ।
पूजा अर्चा से बने, जीवन सुखद महान् ।।

इत्याशीर्वादः (पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

श्री चौबीस तीर्थंकर समुच्चय पूजन

(स्थापना)

वर्तमान की भरत क्षेत्र में, चौबीसी है सर्व महान्।
वृषभादि महावीर प्रभु का, करते भाव सहित गुणगान।।
भक्ति भाव से नमस्कार कर, विनय सहित करते पूजन।
हृदय कमल पर आ तिष्ठो मम्, करते हैं हम आह्वानन्।।
जिस पथ पर चलकर के भगवन्, तुमने स्व पद पाया है।
उस पथ पर बढ़ने का पावन, हमने लक्ष्य बनाया है।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन्।
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छंद)

पाप कर्म के कारण प्राणी, जग में कई दुःख पाते हैं।
पाकर जन्म मरण भव-भव में, तीन लोक भटकाते हैं।।
जन्म जरा के नाश हेतु प्रभु, निर्मल नीर चढ़ाते हैं।
हम भरत क्षेत्र की चौबीसी को, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

पुण्य कर्म के प्रबल योग से, जग का वैभव पाते हैं।
भोग पूर्ण न होने से हम, मन में बहु अकुलाते हैं।।
संसार वास के नाश हेतु, सुरभित यह गंध चढ़ाते हैं।
हम भरत क्षेत्र की चौबीसी को, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

है जीव तत्त्व अक्षय अखण्ड, हम उसे जान न पाते हैं।
फसकर मिथ्यात्व कषायों में, हम चतुर्गती भटकाते हैं।।
अक्षय अखण्ड पद पाने को, हम अक्षत धवल चढ़ाते हैं।
हम भरत क्षेत्र की चौबीसी को, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

हैं भिन्न तत्त्व हमसे अजीव, वह जग में भ्रमण कराते हैं।
सहयोगी बनकर विषयों में, वह लालच दे बहलाते हैं।।
हो कामवासना नाश प्रभु, यह पुष्पित पुष्प चढ़ाते हैं।
हम भरत क्षेत्र की चौबीसी को, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

आस्रव के कारण से प्राणी, इस जग में नाच नचाते हैं।
वह क्षुधा व्याधि से हो व्याकुल, मन में प्राणी अकुलाते हैं।।
हम क्षुधा व्याधि के नाश हेतु, चरणों नैवेद्य चढ़ाते हैं।
हम भरत क्षेत्र की चौबीसी को, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षीर नीर सम बंध तत्त्व ने, आतम में बंधन डाला।
सहस्र रश्मिवत् पूर्ण प्रकाशित, चेतन को कीन्हा काला।।
बंध तत्त्व के नाश हेतु हम, घृत का दीप जलाते हैं।
हम भरत क्षेत्र की चौबीसी को, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

गुप्ति समीति व्रताभाव में, संवर कभी न कर पाए।
कर्मों ने भटकाया जग में, उनसे छूट नहीं पाए।।
अष्ट कर्म के नाश हेतु हम, सुरभित धूप जलाते हैं।
हम भरत क्षेत्र की चौबीसी को, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म निर्जरा न कर पाए, सम्यक् तप से हीन रहे।
जग भोगों के फल पाने में, हमने अगणित कष्ट सहे।।
मोक्ष महाफल पाने को हम, श्रीफल यहाँ चढ़ाते हैं।
हम भरत क्षेत्र की चौबीसी को, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पुण्य पाप के फल हैं निष्फल, उसमें हम भरमाए हैं।
आस्रव बंध के कारण हमने, जग के बहु दुख पाए हैं।।
पद अनर्घ को पाने हेतू, अनुपम अर्घ्य चढ़ाते हैं।
हम भरत क्षेत्र की चौबीसी को, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा – जल चंदन अक्षत सुमन, चरु ले दीप प्रजाल।
फल पाने अतिशय विशद, गाते हम जयमाल।।

ऋषभ चिन्ह लख वृषभनाथ पद, 'विशद' भाव से करें नमन्।
गज लक्षण है अजितनाथ का, उनके चरणों नित वंदन।।
अश्व चिन्ह संभव जिनवर का, नृप जितारि के प्रभु नंदन।
मर्कट चिन्ह चरण अंकित है, अभिनंदन को शत् वंदन।।
सुमति जिनेश्वर के पद चकवा, जिन का करते अभिवंदन।
पद्म चिन्ह है पद्मप्रभु पद, लेकर पद्म करें अर्चन।।
स्वस्तिक चिन्ह सुपार्श्वनाथ का, दर्शन कर नित करें भजन।
चन्द्र चिन्ह चंदा प्रभु वंदौ, करूँ निजातम का दर्शन।।

मगर चिन्ह श्री सुविधि नाथ पद, पुष्पदंत उपनाम शुभम्।
कल्पवृक्ष शीतल जिन स्वामी, मुद्रा जिनकी शांत परम।।
गेंडा चिन्ह चरण में लख के, श्रेयांस नाथ को करें नमन्।
भैंसा चिन्ह श्री वासुपूज्य पद, देख करें शत्–शत् वंदन।।
विमलनाथ का चिन्ह है सूकर, विमल रहे मेरे भगवन्।
सेही चिन्ह है अनंतनाथ पद, उनको सादर करें नमन्।।
वज्र चिन्ह प्रभु धर्मनाथ पद, नमन करें हो धर्म गमन।
शांतिनाथ का हिरण चिन्ह शुभ, शांति दो मेरे भगवन्।।
कुंथुनाथ अज चरण देखकर, पाएँ हम सम्यक् दर्शन।
अरहनाथ का चिन्ह मीन है, वीतराग जिन को वन्दन।।
कलश चिन्ह लख मल्लिनाथ को, बंदू पाएँ ज्ञान सघन।
कछुआ चिन्ह मुनीसुव्रत का, वन्दन कर हो जाएँ मगन।।
चरण पखारें नमीनाथ के, लखकर नीलकमल लक्षण।
शंख चिन्ह पद नेमिनाथ के, इन्द्रिय का जो किए दमन।।
चिन्ह सर्प का पार्श्वनाथ पद, लखकर करें चरण वंदन।
वर्धमान पद सिंह देखकर, करें चरण का अभिनंदन।।
वृषभादि महावीर प्रभु की, करें नित्य सविनय पूजन।
चौबीसों तीर्थंकर प्रभु के, चरणों में शत्–शत् वंदन।।

दोहा – चौबीसों जिनराज की, भक्ति करें जो लोग।
नवग्रह शांति कर 'विशद', शिव का पावें योग।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्रेभ्यो अनर्घ्य पद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा – चौबीसों जिनदेव, मंगलमय मंगलपरम।
मंगल करें सदैव, सुख शांति आनन्द हो।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

विद्यमान बीस तीर्थंकर की पूजन

स्थापना

हे लोकपूज्य ! हे महाबली !, हे परम ब्रह्म ! हे तीर्थंकर !
हे ज्ञानदिवाकर धर्मपोत !, हे परमवीर ! हे करुणाकर !
हे महामति ! हे महाप्रज्ञ !, हे महानंद ! हे चतुरानन !
हे विद्यमान तीर्थंकर जिन !, हम करते उर में आह्वानन्।।
हे नाथ ! दया करके उर में, प्रभु मेरा भी उद्धार करो।
यह भक्त आपके हैं साही, हे दयासिन्धु ! उपकार करो।।

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्य विद्यमान विंशति तीर्थंकर समूह ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

तर्ज–विद्यमान.. बीस तीर्थंकर पूजा..

जन्मादि के रोगों ने, भव भ्रमण कराया।
कर्म बंध करके हमने, संसार बढ़ाया।।
श्री जिनेन्द्र पद दे रहे, प्रासुक जल की धार।
पूजा करते भाव से, पाने को भव पार।।
मोक्षदातार जी, तुम हो दीनदयाल परम शिवकार जी।।1।।

ॐ ह्रीं विदेह क्षेत्रस्य विंशति तीर्थंकरेभ्यो जन्म–जरा–मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भव आताप में जलते, जग के जीव हैं।
राग–द्वेष कर बाँधे, कर्म अतीव हैं।।
चरणों चर्चित कर रहे, चंदन केसर गार।
पूजा करते भाव से, पाने को भव पार।।
मोक्ष दातार जी, तुम हो दीनदयाल परम शिवकार जी।।2।।

ॐ ह्रीं विदेह क्षेत्रस्य विंशति तीर्थंकरेभ्यो संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

अक्षय पद के हेतु, नहीं पुरुषार्थ किए हैं।
भव अनेक पाकर, यों हमने गवाँ दिए हैं।।
चढ़ा रहे अक्षत धवल, अक्षय विविध प्रकार।
पूजा करते भाव से, पाने को भव पार।।
मोक्ष दातार जी, तुम हो दीनदयाल परम शिवकार जी।।3।।

ॐ ह्रीं विदेह क्षेत्रस्य विंशति तीर्थंकरेभ्यो अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

कामवासना में फंसकर, प्राणी भरमाया।
कामबली ने वश में कर, जग में भटकाया।।
पुष्प चढ़ाते भाव से, महके अपरम्पार।
पूजा करते भाव से, पाने को भव पार।।
मोक्ष दातार जी, तुम हो दीनदयाल परम शिवकार जी।।4।।

ॐ ह्रीं विदेह क्षेत्रस्य विंशति तीर्थंकरेभ्यो कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

क्षुधा रोग के द्वारा, जग के जीव सताए।
करके सर्वाहार, नहीं वह तृप्ती पाए।।
यह नैवेद्य बनाए हैं, हमने शुभ रसदार।
पूजा करते भाव से, पाने को भव पार।।
मोक्ष दातार जी, तुम हो दीनदयाल परम शिवकार जी।।5।।

ॐ ह्रीं विदेह क्षेत्रस्य विंशति तीर्थंकरेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

मोह अंध के कारण, जग में भटक रहे हैं।
पर पदार्थ पाकर कई, हमने कष्ट सहे हैं।।
दीप जलाकर लाए हैं, मणिमय मंगलकार।
पूजा करते भाव से, पाने को भव पार।।
मोक्षदातार जी, तुम हो दीनदयाल परम शिवकार जी।।6।।

ॐ ह्रीं विदेह क्षेत्रस्य विंशति तीर्थंकरेभ्यो मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

अष्ट कर्म ने हमको, जग में बहुत सताया।
कष्ट सहे सदियों से, उनका अन्त न आया।।
धूप सुगन्धित अग्नि में, खेते अपरम्पार।
पूजा करते भाव से, पाने को भव पार।।
मोक्ष दातार जी, तुम हो दीनदयाल परम शिवकार जी।।7।।

ॐ ह्रीं विदेह क्षेत्रस्य विंशति तीर्थंकरेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

रहे भटकते फल की, आशा में हम भारी।
अतः नहीं बन सके मोक्ष, के हम अधिकारी।।
चढ़ा रहे हम भाव से, फल यह विविध प्रकार।
पूजा करते भाव से, पाने को भव पार।।
मोक्ष दातार जी, तुम हो दीनदयाल परम शिवकार जी।।8।।

ॐ ह्रीं विदेह क्षेत्रस्य विंशति तीर्थंकरेभ्यो मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पद अनर्घ पाने का, मन में भाव न आया।
पञ्च परावर्तन करके, बहु संसार बढ़ाया।।
अर्घ्य चढ़ाते चरण में, पाने को शिवद्वार।
पूजा करते भाव से, पाने को भव पार।।
मोक्ष दातार जी, तुम हो दीनदयाल परम शिवकार जी।।9।।

ॐ ह्रीं विदेह क्षेत्रस्य विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपदप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– शाश्वत रहे विदेह में, जिन तीर्थंकर बीस।
गाते हैं जयमालिका, चरण झुकाते शीश।।

पद्धरि छन्द

शाश्वत यह लोकालोक जान, शुभ मध्यलोक जिसमें महान्।
है जम्बूद्वीप मध्य पावन, जिसमें मेरू है मन भावन।

जिसके पूरब पश्चिम विदेह, जिससे प्राणी करते स्नेह।
हैं क्षेत्र पञ्च पावन महान्, शत् एक षष्टि उपक्षेत्र जान।
शाश्वत तीर्थंकर जहाँ बीस, सेवा में तत्पर रहें ईश।
यह शाश्वत होते बीस नाम, जिनके चरणों करते प्रणाम।
जिनवर होते कभी प्रति क्षेत्र, वह पाते केवलज्ञान नेत्र।
संख्या होती शत एक साठ, जो करें नष्ट सब कर्म काठ।
जिन की भक्ति है सौख्यकार, प्राणी हों भव से शीघ्र पार।
जो चरण–शरण पाते महान्, जिन पद में करते भक्तिगान।
उन सब जीवों की बढ़े शान, वह पाते प्रभु से ज्ञानदान।
हम भी पा जाएँ शरण नाथ, विनती करते हैं जोड़ हाथ।
सौभाग्य जगे मेरा जिनेश, हम रहें शरण में ही हमेश।
तव दर्शन कर हों सफल नेत्र, हम रहें कहीं भी किसी क्षेत्र।
मन में प्रभु जागी यही चाह, मुक्ति की हमको मिले राह।
न पड़े मार्ग में कोई रोध, जागे मम् अंतर में सुबोध।
हम चातक बनकर खड़े नाथ, रख के माथे पर दोय हाथ।
बरसो स्वाती की बूँद रूप, जागे अंतर में निज स्वरूप।
बन आओ प्रभु मेरे सुमीत, प्रभु आप निभाओ सही प्रीत।
तुमसे प्रभु मेरी लगी आश, मेरे जीवन का हो विकास।

छंद–घत्तानंद

बीसों तीर्थंकर, हैं करुणाकर, शुभ विदेह के उपकारी।
महिमा हम गाते, शीश झुकाते, सर्वलोक मंगलकारी।।

ॐ ह्रीं विदेह क्षेत्रस्य विंशति तीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– जिनवर बीस विदेह के, करते कृपा महान्।
मुक्ती पद के भाव से, करते हम गुणगान।।

इत्याशीर्वादः (पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

पंच बालयति जिन पूजा

स्थापना

वासुपूज्य अरु मल्लि नेमि जिन, पार्श्वनाथ, वीर जिनेश।
राज त्याग वैराग्य लिए प्रभु, धारा आप दिगम्बर भेष।।
पांचों बालयति कहलाए, तीर्थंकर पद के धारी।
चरणों शीश झुकाते भविजन, आप रहे मंगलकारी।।
पंच प्रभु का आह्वानन् है, पंचम गति में जाने को।
"विशद" भाव से वन्दन करते, मोक्ष परम पद पाने को।।

ॐ ह्रीं श्री पंच बालयति वासुपूज्य, मल्लि, नेमि, पार्श्व, वीर जिनेन्द्र! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र–तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।।

(वीर छन्द)

कर्मों से आवर्णित आतम, जल से शुद्ध न होती है।
जन्म–जन्म से मोह में फंसकर, अपनी शक्ती खोती है।।
प्रासुक निर्मल जल भर लाए, चरणों में करते अर्पण।
वासुपूज्य अरु मल्लि नेमि जिन, पार्श्व वीर पद में वन्दन।।1।।

ॐ ह्रीं श्री पंच बालयति वासुपूज्य, मल्लि, नेमि, पार्श्व, वीर जिनेन्द्राय जन्म मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चिन्ताएँ चिता समान रहीं, चतन की शक्ती खोती हैं।
क्रोधादि कषाएँ ईर्ष्या की, क्षण–क्षण विपदाएँ बोती हैं।।
हम भव आताप के नाश हेतु, प्रभु निर्मल गंध करें अर्पण।
वासुपूज्य अरु मल्लि नेमि जिन, पार्श्व वीर पद में वन्दन।। 2।।

ॐ ह्रीं श्री पंच बालयति वासुपूज्य, मल्लि, नेमि, पार्श्व, वीर जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

हमने नश्वर पद पाये कई, पर शाश्वत पद न मिला कहीं।
शायद अक्षय पद पाने का, पुरुषार्थ कभी भी किया नहीं।।
हम अक्षय पद पाने हेतू, चरणों अक्षत करते अर्पण।
वासुपूज्य अरु मल्लि नेमि जिन, पार्श्व वीर पद में वन्दन।।3।।

ॐ ह्रीं श्री पंच बालयति वासुपूज्य, मल्लि, नेमि, पार्श्व, वीर जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

विषयों से विषयों की आशा, न पूर्ण कभी हो पाती है।
क्या अग्नी में ईंधन पड़कर, वह शांत कभी हो जाती है।।
मम काम वासना नश जावे, हम पुष्प करें पद में अर्पण।
वासुपूज्य अरु मल्लि नेमि जिन, पार्श्व वीर पद में वन्दन।।4।।

ॐ ह्रीं श्री पंच बालयति वासुपूज्य, मल्लि, नेमि, पार्श्व, वीर जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

भोजन सदियों से किया मगर, यह पेट नहीं भर पाता है।
कितना ही खिलाया जाय उसे, पर खाली पाया जाता है।।
हम क्षुधा वेदना नाश हेतु, नैवेद्य सरस करते अर्पण।
वासुपूज्य अरु मल्लि नेमि जिन, पार्श्व वीर पद में वन्दन।।5।।

ॐ ह्रीं श्री पंच बालयति वासुपूज्य, मल्लि, नेमि, पार्श्व, वीर जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुख दुख कर्मों की माया है, हम अब तक जान न पाए हैं।
करने अन्तर तम नाश प्रभु, अब दीप जलाने आए हैं।।
निज ज्ञान दीप की ज्योति जगे, यह दीप करें पद में अर्पण।
वासुपूज्य अरु मल्लि नेमि जिन, पार्श्व वीर पद में वन्दन।।6।।

ॐ ह्रीं श्री पंच बालयति वासुपूज्य, मल्लि, नेमि, पार्श्व, वीर जिनेन्द्राय महामोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों का जाल बना करके, उसमें ही फँसते जाते हैं।
भवसागर के गहरे दलदल में, हम उलझे गोते खाते हैं।।
हम अष्ट कर्म के नाश हेतु, अग्नि में धूप करें अर्पण।
वासुपूज्य अरु मल्लि नेमि जिन, पार्श्व वीर पद में वन्दन।।7।।

ॐ ह्रीं श्री पंच बालयति वासुपूज्य, मल्लि, नेमि, पार्श्व, वीर जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सुख दुःख है पुण्य पाप का फल, यह तो निष्फल हो जाता है।
जो कर्म शक्ति निष्फल करता, वह मोक्ष महाफल पाता है।।
हम मोक्ष महाफल पाने को, यह प्रासुक फल करते अर्पण।
वासुपूज्य अरु मल्लि नेमि जिन, पार्श्व वीर पद में वन्दन।।8।।

ॐ ह्रीं श्री पंच बालयति वासुपूज्य, मल्लि, नेमि, पार्श्व, वीर जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों का घोर तिमिर छाया, मिथ्यात्व जाल फैलाए है।
हम भूल गये सद्राह प्रभो!, न पार उसे कर पाए हैं।।
हम पद अनर्घ पाने हेतू, यह अर्घ्य करें पद में अर्पण।
वासुपूज्य अरु मल्लि नेमि जिन, पार्श्व वीर पद में वन्दन।।9।।

ॐ ह्रीं श्री पंच बालयति वासुपूज्य, मल्लि, नेमि, पार्श्व, वीर जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

t;ekyk

दोहा – पंच बालयति बन गये, पंचम गति के नाथ।
पंचम गति का भाव ले, झुका चरण में माथ।।

जब प्रबल पुण्य का योग जगे, तब तीर्थंकर का दर्श मिले।
ॐकार मयी वाणी सुनकर, श्रृद्धा का उर में फूल खिले।।

तत्वों का बोध जगे उर में शुभ, सम्यक् ज्ञान के दीप जलें।
तब परम पवित्र मोक्ष पथ पर, जग में रहकर जीव चलें।।
चम्पापुर में वासुपूज्य जिन, पंच कल्याणक पाए हैं।
तीन लोक के इन्द्र सभी मिल, महिमा गाने आए हैं।।
क्षण भंगुर माना इस जग को, जग भोगों में नहीं फंसे।
श्री वासुपूज्य प्रभु ने संयम धर, अपने सारे कर्म नशे।।
बाल ब्रह्मचारी रहकर भी, रत्नत्रय को पाए नाथ!।
शत् इन्द्रों ने प्रभु चरणों में, आकर स्वयं झुकाया माथ।।
वासुपूज्य जग हुए पूज्य तब, भव्यों के हो गये आराध्य।
भवसागर से पार हुए प्रभु, स्वयं सिद्ध कर लीन्हे साध्य।।
द्वितिय बाल ब्रह्मचारी प्रभु, मल्लिनाथजी हुए महान्।
मोह मल्ल पर विजय प्राप्त की, उनका कौन करे गुणगान।।
जन्म लिया मिथला नगरी में, मात पिता को धन्य किया।
गिरि सम्मेद शिखर के ऊपर, जाकर प्रभु निर्वाण लिया।।
जन्म लिया था सौरीपुर में, नेमिनाथ जी कहलाए।
यदुवंशी नृप समुद्र विजय के, गृह में अति मंगल छाए।।
राजमति को ब्याहन हेतु, दूल्हा बनकर चले कुमार।
राग छोड़कर बने विरागी, पशुओं की सुन करुण पुकार।।
ध्यान मग्न गिरनार गिरि पर, चेतन तत्त्व प्रकाश किए।
कर्म नाशकर अपने सारे, मोक्ष महल में वास किए।।
उत्तर प्रदेश काशी नगरी में, अश्वसेन नृप के दरबार।
वामा देवी की कुक्षि से, जन्म लिए प्रभु पार्श्व कुमार।।

नाग युगल को जलते देखा, मंत्र दिया उनको नवकार।
पद्मावति धरणेन्द्र हुए वह, प्रभु ने लीन्हा संयम धार।।
ध्यान अवस्था में बैरी ने, प्रभु पर किया घोर उपसर्ग।
आतम रस में लीन हुए प्रभु, कर्म नाश पाए अपवर्ग।।
कुण्डलपुर में नृप सिद्धारथ के, गृह जन्मे वीर कुमार।
पाण्डुकशिला पर न्हवन कराया, देवों ने बोला जयकार।।
चिन्तन कर संसार दशा का, धार लिया वैराग्य महान्।
कर्म नाश कर अपने सारे, पाया प्रभु ने पद निर्वाण।।
पंच बालयति तीर्थंकर यह, संदेश नया लेकर आए।
उनकी महिमा को जान कई, नव यौवन में दीक्षा पाए।।
हम बालयति हैं बालक हैं, हम पर भी कृपा प्रदान करो।
हमको मुक्ति के मारग पर, बढ़ने का साहस दान करो।।
हम छोड़ जगत के वैभव को, प्रभु शिवपुर पदवी को पाएँ।
हम 'विशद' ज्ञान को प्राप्त करें, अरु सिद्ध शिला पर रम जाएँ।।

दोहा– **पाँचों तीर्थंकर हुए, सिद्ध शिला के नाथ।**
सिद्धि का वर दीजिए, चरण झुकाएँ माथ ।।

ॐ ह्रीं श्री पंच बालयति वासुपूज्य मल्लि, नेमि, पार्श्व, वीर जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा – **वासुपूज्य अरु मल्लिजिन, नेमी पारस वीर।**
भटक रहा संसार में, आन बँधाओं धीर।।

।। इत्याशीर्वाद पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

श्री बाहुबली पूजा

स्थापना

कर्म घातिया नाशे स्वामी, बने मोक्षपथ के अनुगामी।
एक वर्ष का ध्यान लगाया, अतिशय केवलज्ञान जगाया।।
बाहुबली बाहूबलधारी, बने विशद क्षण में अविकारी।
उनकी महिमा को हम गाते, पद में सादर शीश झुकाते।
सिंहासन निज हृदय बनाया, जिस पर प्रभुजी को पधराया।
हमने निर्मल भाव बनाए, आह्वानन करने हम आए।।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्र ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

ताटंक छंद

काल अनादि से इस जग में, मोहित होकर किया भ्रमण।
जन्म–जरा के नाश हेतु हम, करते हैं यह जल अर्पण।।
एक वर्ष का ध्यान लगाकर, निज स्वभाव में किया रमण।
बाहुबली के श्री चरणों में, मेरा बारम्बार नमन्।।1 ।।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय जन्म–जरा–मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रिय भोगों में रच–पचकर, भवसागर में किया भ्रमण।
भवआताप मिटाने को हम, करते हैं चंदन अर्पण।।
एक वर्ष का ध्यान लगाकर, निज स्वभाव में किया रमण।
बाहुबली के श्री चरणों में, मेरा बारम्बार नमन्।।2 ।।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

मिथ्या अविरति योग कषायों, से कर्मों का किया सृजन।
अक्षय अविचल पद पाने को, अक्षत यह करते अर्पण।।
एक वर्ष का ध्यान लगाकर, निज स्वभाव में किया रमण।
बाहुबली के श्री चरणों में, मेरा बारम्बार नमन्।।3।।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

काम कषायों ने भव–भव में, कीन्हा है भारी कर्षण।
कामबाण विध्वंश हेतु हम, सहस्र पुष्प करते अर्पण।।
एक वर्ष का ध्यान लगाकर, निज स्वभाव में किया रमण।
बाहुबली के श्री चरणों में, मेरा बारम्बार नमन्।।4।।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

विषय भोग की आकांक्षा से, सर्व जगत् में किया भ्रमण ।
क्षुधा रोग के नाश हेतु, नैवेद्य सरस करते अर्पण।।
एक वर्ष का ध्यान लगाकर, निज स्वभाव में किया रमण।
बाहुबली के श्री चरणों में, मेरा बारम्बार नमन्।।5 ।।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मिथ्यादी मोह कषायों से, ना प्रकट हुआ सम्यक्दर्शन।
अब निज परिणति में रमण हेतु, यह दीप ज्योति करते अर्पण।।
एक वर्ष का ध्यान लगाकर, निज स्वभाव में किया रमण।
बाहुबली के श्री चरणों में, मेरा बारम्बार नमन्।।6।।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों कर्मों की ज्वाला, हम कभी नहीं कर सके शमन।
अब नाश हेतु उन कर्मों के, यह धूप सुगंधित है अर्पण।।

एक वर्ष का ध्यान लगाकर, निज स्वभाव में किया रमण।
बाहुबली के श्री चरणों में, मेरा बारम्बार नमन्।।7।।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों के फल को फल माना, अरु पुण्य पाप में किया रमण।
अब महामोक्षफल पाने को, यह फल करते पद में अर्पण।।
एक वर्ष का ध्यान लगाकर, निज स्वभाव में किया रमण।
बाहुबली के श्री चरणों में, मेरा बारम्बार नमन्।।8।।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्त फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हमने जग के सब द्रव्यों को, पाकर के कीन्हा जन्म-मरण।
अब पद अनर्घ हेतु प्रभुवर, यह अर्घ्य श्रेष्ठ करते अर्पण।।
एक वर्ष का ध्यान लगाकर, निज स्वभाव में किया रमण।
बाहुबली के श्री चरणों में, मेरा बारम्बार नमन्।।9।।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बाहुबली का बाहुबल, जग में रहा महान्।
जलधारा देते चरण, पाने पद निर्वाण।।

(शांतये शांतिधारा)

पुष्पांजलि करने चरण, भाव पुष्प ले हाथ।
अर्पित करते भाव से, झुका रहे पद माथ।।

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

जयमाला

दोहा– सप्त तत्त्व छह द्रव्य शुभ, लोकालोक त्रिकाल।
दर्शायक वाणी विमल, की गाते जयमाल।।

(शंभू छन्द)

सुर-असुर-खगाधिप योगीश्वर, मुनि जिन की महिमा गाते हैं।
हे बाहुबली ! तव चरणों में, हम सादर शीश झुकाते हैं।।
तुम महाबली हो कर्मदली, चक्री का मान गलाया है।
संसार असार जानकर के, तुमने संयम अपनाया है।।
तुमने तन-चेतन के अंतर, को जान स्वभाव जगाया है।
तन से ममत्व का त्याग किया, यह भेद ज्ञान प्रगटाया है।
तुम मात सुनंदा से जन्मे, प्रभु आदिनाथ के पुत्र कहे।
प्रभु कामदेव थे प्रथम श्रेष्ठ, शुभ चक्रवर्ती के भ्रात रहे।।
सवा पाँच सौ धनुष देह शुभ, हरित वर्ण से शोभामान।
नील कुलाचल सम स्थिर प्रभु, नील गिरि सम आभावान।।
विशद तेज परमाणु जग के, जिनसे रचा शरीर महान्।
अतुल वज्र सम धीरज नीरज, वीरबली अतिशय बलवान।।
बाल्यावस्था में वृद्धि कर, बने श्रेष्ठ गुण के आधार।
बल बुद्धि वैभव के धारी, बने जहाँ में अपरम्पार।।
पोदनपुर के राजा का पद, बाहुबली को दिए जिनेश।
नगर अयोध्या का स्वामी पद, भरतेश्वर को दिया विशेष।।
चक्ररत्न पाये भरतेश्वर, पुण्योदय से अपरंपार।
षट् खंडों पर विजयश्री में, वर्ष बिताए साठ हजार।।
बाहुबली ने हार न मानी, युद्ध हुए तब उनसे तीन।
दृष्टि मल्ल जल युद्ध का निर्णय, कीन्हें मंत्री ज्ञान प्रवीण।।
दृष्टि युद्ध अरु नीर युद्ध में, चक्रवर्ती ने मानी हार।
मल्ल युद्ध करने फिर दोनों, उसी समय हो गये तैयार।।
बाहुबली ने भरतेश्वर को, अधर उठाया अपने हाथ।
शक्तिहीन हुआ भरतेश्वर, जो था छह खण्डों का नाथ।।

चक्रवर्ति ने चक्र चलाया, विफल हुआ उसका भी वार।
बाहुबली ने सोचा तब ही, है अनित्य सारा संसार।।
राज्य सौंपकर भरतेश्वर को, अष्टापद पर गये कुमार।
महाव्रतों को धारण करके, ध्यान किया होकर अविकार।।
खड़ा हुआ मैं जिस धरती पर, भरत का है उस पर अधिकार।
यह विकल्प आता था मन में, बाहुबली को बारंबार।।
वामी बनी चरण में अतिशय, तन पर बेलें चढ़ी महान्।
क्रूर जंतुओं ने अंगों पर, बना लिया अपना स्थान।।
सिर के केश बढ़े थे भारी, उनमें पक्षी बसे अपार।
कानों में भी बना घौंसला, पक्षी करते थे किलकार।।
धन्य-धन्य इस अचल ध्यान का, धन्य हुए मुनिवर अविकार।
वीतराग गुरुओं की महिमा, कही गई है अपरम्पार।।
कर्म नाशकर आदि प्रभु से, पहले कीन्हें मोक्ष प्रयाण।
सिद्धशिला पर बना लिए प्रभु, अपना स्थाई स्थान।।
यही भावना रही हमारी, चरणों रहे हमारा ध्यान।
संयम को पाकर के हम भी, इस भव से पावें निर्वाण।।

चौपाई– श्रवणबेलगोला में जानो, विंध्यगिरि अनुपम पहिचानो।
प्रतिमा सत्तावन फुट भाई, है प्रसिद्ध जग में सुखदाई।।
खड्गासन है अतिशयकारी, दिखती है अतिशय मनहारी।
अर्घ्य चढ़ाकर महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोह– बाहुबली भगवान की, महिमा अपरम्पार।
पूजा अर्चा कर मिले, जग में सौख्य अपार।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

श्री रविव्रत पूजा

स्थापना

हे पार्श्वनाथ ! करुणा निधान, तुमने करुणा का दान दिया।
जो दीन दुःखी हैं इस जग में, उनको शिव सौख्य प्रदान किया।।
इक श्रेष्ठी रत्न मतीसागर ने, भक्ति का फल पाया है।
रवीवार का व्रत करके शुभ, निज सौभाग्य जगाया है।।
हम भाव सहित प्रभु गुण गाते, अरु पद में करते हैं अर्चन।
निज हृदय कमल में तिष्ठाने, प्रभु करते हैं तव आह्वानन्।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

दोहा– जल की धारा दे रहे, चरणों में हे नाथ ! ।
जन्म-जरादि नाश हो, चरण झुकाते माथ।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन चरणों चर्चने, आए हम हे नाथ !
भव आताप विनाश हो, चरण झुकाते माथ।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय अक्षत के प्रभु, भर लाए हम थाल।
अक्षय पद पाने चरण, पूजा करें त्रिकाल।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

परम सुगन्धित पुष्प यह, लेकर आए साथ।
कामबाण विध्वंश हों, तव चरणों में माथ।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत के शुभ नैवेद्य यह, चढ़ा रहे हम नाथ।
क्षुधा रोग विध्वंश हो, चरण झुकाते माथ।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत का अनुपम दीप यह, हाथों लिए प्रजाल।
मोह अंध का नाश हो, चरण झुकाते भाल।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट गंधमय धूप यह, खेते अपरम्पार।
अष्ट कर्म का नाश हो, वन्दन बारम्बार।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

चढ़ा रहे हम भाव से, ताजे फल रसदार।
मोक्ष महाफल प्राप्त हो, भवदधि पावैं पार।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य चढ़ाते भाव से, लेकर द्रव्य अनेक।
पद अनर्घ्य हो प्राप्त शुभ, यही भावना एक।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रविवार व्रत के दिना, करें पार्श्व गुणगान।
जलधारा देते चरण, पाने सौख्य महान्।। *(शांतये शांतिधारा)*

अर्पित करते चरण में, पुष्पों का यह हार।
गुण गाने से पार्श्व के, मिले मोक्ष उपहार।। *(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)*

जयमाला

दोहा– अर्चा के शुभ भाव से, वन्दन करें त्रिकाल।
रविव्रत पूजा की यहाँ, गाते हम जयमाल।।

(शंभू छन्द)

उपसर्ग परीषह में तुमने, अतिशय समता को धारा है।
अतएव पार्श्व प्रभु भव्यों ने, तुमको हे नाथ ! पुकारा है।।
ओले शोले पत्थर पानी, दुष्टों ने तुम पर बरसाए।
तव श्रेष्ठ तपस्या के आगे, सारे शत्रू पद सिरनाए।।
तुमने तन चेतन का अन्तर, प्रत्यक्ष रूप से दिखलाया।
नश्वर शरीर का मोह त्याग, निश्चय स्वरूप प्रभु ने पाया।।
यह संयम की शक्ति मानो, उपसर्ग प्रभुजी झेले हैं।
जो ध्यान शक्ति की ढाल लिए, हर बाधाओं से खेले हैं।।
सब राग–द्वेष तुमसे हारे, उन पर तुमने जय पाई है।
हम समता रस का पान करें, मन में यह आन समाई है।।
तुम सर्व शक्ति के धारी प्रभु, जीवों को निज सम करते हो।
जो दीन–दुःखी द्वारे आते, उनके सारे दुख हरते हो।।
इक सेठ मतीसागर जानो, जो मन से अति दुखयारा था।
जो अशुभ कर्म के कारण से, निज सुत वियोग का मारा था।।
पा पुत्र एक शुभ होनहार, जो परदेशों में भटका था।
सुधि भूल गया था निज गृह की, जो माया–मोह में अटका था।।
तब सेठ ने रविव्रत पूजा कर, शुभ पुण्य सुफल को पाया था।
वह पुत्र प्राप्त करके अपना, अतिशय सौभाग्य जगाया था।।
जो शरण प्रभु की पाते हैं, अतिशय शुभ पुण्य कमाते हैं।
व्रत धारण करके पूजा कर, बहु सौख्य सम्पदा पाते हैं।।
जो पूजा करने आते हैं, वह खाली हाथ न जाते हैं।
वह अर्चा करके भाव सहित, सब मनवांछित फल पाते हैं।।
उपसर्ग कमठ ने कीन्हा जब, धरणेन्द्र स्वर्ग से आया था।
फण फैलाया था पद्मावति ने, प्रभु को उस पर बैठाया था।।

फण का शुभ छत्र बनाकर के, क्षण में उपसर्ग नशाया था।
भक्तों ने भक्ती वश होकर, अपना कर्त्तव्य निभाया था।।
था अन्जन चोर अधम पापी, उसने जिनवर को ध्याया था।
ऋद्धी उसने पाई अतिशय, फिर स्वर्ग सुपद को पाया था।।
सीता की अग्नि परीक्षा में, अग्नि को कमल बनाया था।
सूली का सेठ सुदर्शन ने, अतिशय सिंहासन पाया था।।
जब नाग-नागिनी दुखी हुए, तब प्रभु ने संकट हारा था।
द्रोपदी के चीरहरण को भी, जिनवर ने शीघ्र सम्हारा था।।
होकर अधीर प्रभु चरणों में, यह पूजा करने आए हैं।
अपने भावों के उपवन से, यह भाव सुमन शुभ लाए हैं।।
जिस पद को तुमने पाया है, वह अनुपम श्रेष्ठ निराला है।
जो भवि जीवों के लिए शीघ्र, शुभ पदवी देने वाला है।।

दोहा- रविव्रत को जिन पार्श्व की, पूजा करें विशेष।
सौख्य सम्पदा प्राप्त कर, पावें जिन स्वदेश।।
रविव्रत के दिन पार्श्व को, पूजें जो भी लोग।
सुख शांति आनन्द पा, पावें शिव का योग।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शिखरणी छंद (महावीर स्वामी....)

रविव्रत के दिन को, करें जो पूजा भाव से।
श्री पारस जिन को, सदा ही ध्यावें चाव से।।
बने ज्ञानी ध्यानी, जगे सौख्य तिनके।
बने पारस वह भी, जजैं पद पार्श्व जिनके।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

(नोट- रविव्रत उद्यापन के अवसर पर श्री विघ्नहर पारसनाथ विधान अवश्य कीजिए।)

महामंत्र णमोकार पूजा

स्थापना

णमोकार महामंत्र जगत में, सब मंत्रों से न्यारा है।
ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य प्रदायक, अतिशय प्यारा प्यारा है।।
श्रद्धा भक्ति से जो प्राणी, महामंत्र को ध्याते हैं।
सुख-शांति आनन्द प्राप्त कर, शिव पदवी को पाते हैं।।
सब मंत्रों का मूल मंत्र है, करते हम उसका अर्चन।
विशद हृदय में आह्वानन कर, करते हैं शत् शत् वन्दन।।

ॐ ह्रीं श्री पंचनमस्कार मंत्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(छंद-मोतियादाम)

हमने इस तन को धो-धोकर, सदियों से स्वच्छ बनाया है।
किन्तु क्रोधादि कषायों ने, चेतन में दाग लगाया है।।
अब चित् के निर्मल करने को, यह नीर चढ़ाने लाए हैं।
हम महामंत्र की पूजा कर, सौभाग्य जगाने आए हैं।।

ॐ ह्रीं श्री पंच नमस्कार महामंत्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चेतन का काल अनादि से, पुद्गल से गहरा नाता है।
कर्मों की अग्नि धधक रही, संताप उसी से आता है।।
अब शीतल चंदन अर्पित कर, संताप नशाने आए हैं।
हम महामंत्र की पूजा कर, सौभाग्य जगाने आए हैं।।

ॐ ह्रीं श्री पंच नमस्कार महामंत्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय अखण्ड आतम अनुपम, खण्डित पद में रम जाती है।
स्पर्श गंध रस रूप मिले, उनसे मिलकर भटकाती है।

अब अक्षय अक्षत चढ़ा रहे, अक्षय पद पाने आये हैं।
हम महामंत्र की पूजा कर, सौभाग्य जगाने आए हैं।।
ॐ ह्रीं श्री पंच नमस्कार महामंत्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

मन काम वासना से वासित, तन कारागृह में रहता है।
आयु के बन्धन में बंधकर, जो दुःख अनेकों सहता है।।
अब काम वासना नाश हेतु, यह पुष्प चढ़ाने लाए हैं।
हम महामंत्र की पूजा कर, सौभाग्य जगाने आए हैं।।
ॐ ह्रीं श्री पंच नमस्कार महामंत्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सदियों से भोजन किया मगर, नित प्रति भूखे हो जाते हैं।
चेतन की क्षुधा मिटाने को, न ज्ञानामृत हम पाते हैं।।
अब क्षुधा व्याधि के नाश हेतु, नैवेद्य चढ़ाने लाए हैं।
हम महामंत्र की पूजा कर, सौभाग्य जगाने आए हैं।।
ॐ ह्रीं श्री पंच नमस्कार महामंत्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चेतन की आभा के आगे, दिनकर भी शरमा जाता है।
आवरण पड़ा वसु कर्मों का, स्वरूप नहीं दिख पाता है।।
अब मोह अन्ध के नाश हेतु, यह दीप जलाकर लाए हैं।
हम महामंत्र की पूजा कर, सौभाग्य जगाने आए हैं।।
ॐ ह्रीं श्री पंच नमस्कार महामंत्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हो तीव्रोदय जब कर्मों का, पुरुषार्थ हीन पड़ जाता है।
यह जीव शुभाशुभ कर्मों के, फल से सुख-दुःख बहु पाता है।।
अब अष्ट कर्म का यह ईंधन, शुभ आज बनाकर लाए हैं।
हम महामंत्र की पूजा कर, सौभाग्य जगाने आए हैं।।
ॐ ह्रीं श्री पंच नमस्कार महामंत्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

नर गति में जन्म हुआ मेरा, यह पूर्व पुण्य की माया है।
इसमें भी पाप कमाया है, न मोक्ष महाफल पाया है।।

अब मोक्ष महाफल पाने को, यह सरस-सरस फल लाए हैं।
हम महामंत्र की पूजा कर, सौभाग्य जगाने आए हैं।।
ॐ ह्रीं श्री पंच नमस्कार महामंत्राय महामोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं आठ कर्म के ठाठ महा, जीवों को दास बनाते हैं।
मोहित करके सारे जग को, वह बारम्बार नचाते हैं।।
हो पद अनर्घ शुभ प्राप्त हमें, यह अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।
हम महामंत्र की पूजा कर, सौभाग्य जगाने आए हैं।।
ॐ ह्रीं श्री पंच नमस्कार महामंत्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- मंत्रित कर महामंत्र से, प्रासुक नीर महान्।
शांतिधारा दे रहे, करके हम गुण गान।।

शांतये शांतिधारा...

दोहा- पुष्पांजलि को पुष्प यह, पुष्पित लिए महान्।
महामंत्र का जाप कर, करने को गुणगान।।

दिव्य पुष्पांजलि क्षिपेत्

जयमाला

दोहा- परमेष्ठी की वन्दना, प्राणी करें त्रिकाल।
महामंत्र नवकार की, गाते हम जयमाल।।

(चाल छन्द)

हम महामंत्र को गायें, उसमें ही ध्यान लगाएँ।
निज हृदय कमल में ध्यायें, फिर सादर शीश झुकाएँ।।
शुभ पाँच सुपद हैं भाई, पैंतीस अक्षर सुखदायी।
हैं अट्ठावन मात्राएँ, बनती हैं कई विधाएँ।।
प्राकृत भाषा में जानों, बहु अतिशयकारी मानो।
पाँचों परमेष्ठी ध्याते, उनके चरणों सिर नाते।।

पहले अर्हत् को ध्याते, जो केवल ज्ञान जगाते।
फिर सिद्धों के गुण गाते, जो अष्ट गुणों को पाते।।
जो रत्नत्रय के धारी, हैं जन–जन के उपकारी।
हम आचार्यों को ध्याते, जो छत्तिस गुण को पाते।।
जो पच्चिस गुण के धारी, हैं जन–जन के उपकारी।
सब साधु ध्यान लगाते, निज आतम ज्ञान जगाते।।
जो परमेष्ठी को ध्याते, वह परमेष्ठी बन जाते।
फिर कर्म निर्जरा करते, अपने कर्मों को हरते।।
कई अर्हत् पदवी पाते, वह तीर्थंकर बन जाते।
फिर केवल ज्ञान जगाते, कई देव शरण में आते।।
वह समवशरण बनवाते, सब दिव्य देशना पाते।
हे भाई ! श्रद्धा धारो, अपना श्रद्धान सम्हारो।।
हम यही भावना भाते, जिन पद में शीश झुकाते।
नित परमेष्ठी को ध्यायें, हम भाव सहित गुण गायें।।
अनुक्रम से मुक्ति पावें, भवसागर से तिर जावें।
हम शिव सुख में रम जावें, इस भव का भ्रमण नशावें।।

दोहा– महामंत्र के जाप से, नशते हैं सब पाप।
कर्मों का भी नाश हो, मिट जाए संताप।।

ॐ ह्रीं श्री अनादि अनिधन पंच नमस्कार महामंत्रेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा – परमेष्ठी जिन पाँच के, चरण झुकाते शीश।
पुष्पांजलि कर पूजते, सुर नर इन्द्र मुनीश।।

(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपेत्)

(नोट– णमोकार मंत्र व्रत के उद्यापन में श्री णमोकार महामण्डल विधान अवश्य कीजिए।)

सहस्त्रनाम पूजन

स्थापना

हे तीर्थ प्रवर्तक तीर्थंकर !, हे सहस्र आठ गुण के धारी।
हे विश्व पूज्य ! हे समदृष्टा !, सर्वज्ञ देव मंगलकारी।।
हे ज्ञानसूर्य ! हे तेज पुञ्ज !, आनन्द कन्द हे त्रिपुरारी ! ।
हे धर्मसुधाकर चिदानन्द !, करुणा निधान हे दुःखहारी !।।
आह्वानन करके आज तुम्हें, उर में अपने बैठाते हैं।
शुभ सहस्रनाम के द्वारा हम, प्रभु गीत आपके गाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर अष्टोत्तर सहस्रनाम समूह ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

शुभ जल के कलशा प्रासुक कर, हम पूजन करने आये हैं।
त्रय रोग नशाने हे भगवन् !, त्रयधार कराने लाये हैं।।
ये सहस्रनाम पावन जग में, जग जीवों का हितकारी है।
हम सहस्रनाम को प्राप्त करें, यह इच्छा विशद हमारी है।।1।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर अष्टोत्तर सहस्रनाम समूहेभ्यो जन्म–जरा–मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भव वन में घूम रहे हैं हम, पर साता कहीं न पाई है।
यह सुरभित गंध सुगन्धित ले, शुभ पद में आन चढ़ाई है।।
ये सहस्रनाम पावन जग में, जग जीवों का हितकारी है।
हम सहस्रनाम को प्राप्त करें, यह इच्छा विशद हमारी है।।2।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर अष्टोत्तर सहस्रनाम समूहेभ्यो संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

निज निधि को भूल रहे हैं हम, अक्षय पद हमने न पाया।
यह अक्षत लाये आज चरण, उस पद को मम मन ललचाया।।
ये सहस्रनाम पावन जग में, जग जीवों का हितकारी है।
हम सहस्रनाम को प्राप्त करें, यह इच्छा विशद हमारी है।।3।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर अष्टोत्तर सहस्रनाम समूहेभ्यो अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

घातक है जग में प्रबल काम, सबके मन में विकृति लाए।
हो कामवासना पूर्ण नाश, यह पुष्प मनोहर हम लाए।।
ये सहस्रनाम पावन जग में, जग जीवों का हितकारी है।
हम सहस्रनाम को प्राप्त करें, यह इच्छा विशद हमारी है।।4।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर अष्टोत्तर सहस्रनाम समूहेभ्यो कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हम कर्म असाता के कारण, सदियों से जग में भटकाए।
अब क्षुधा वेदना नाश हेतु, नैवेद्य चरण में हम लाए।।
ये सहस्रनाम पावन जग में, जग जीवों का हितकारी है।
हम सहस्रनाम को प्राप्त करें, यह इच्छा विशद हमारी है।।5।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर अष्टोत्तर सहस्रनाम समूहेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम ज्ञान बिना इस भव वन में, दर-दर की ठोकर खाए हैं।
अब मोह अंध के नाश हेतु, यह दीप जलाकर लाए हैं।।
ये सहस्रनाम पावन जग में, जग जीवों का हितकारी है।
हम सहस्रनाम को प्राप्त करें, यह इच्छा विशद हमारी है।।6।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर अष्टोत्तर सहस्रनाम समूहेभ्यो मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

वसुकर्म आत्मा को मलीन, सदियों से करते आए हैं।
निज वैभव पाने हेतु अमल, दश गन्ध जलाने लाए हैं।।
ये सहस्रनाम पावन जग में, जग जीवों का हितकारी है।
हम सहस्रनाम को प्राप्त करें, यह इच्छा विशद हमारी है।।7।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर अष्टोत्तर सहस्रनाम समूहेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

इस जग के सारे फल खाए, पर शिवफल प्राप्त न कर पाए।
अब मोक्ष महाफल पाने को, हम श्रीफल चरणों में लाए।।

ये सहस्रनाम पावन जग में, जग जीवों का हितकारी है।
हम सहस्रनाम को प्राप्त करें, यह इच्छा विशद हमारी है।।8।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर अष्टोत्तर सहस्रनाम समूहेभ्यो मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों कर्मों के कारण से, मम अष्ट सुगुण न प्रकट हुए।
अब पद अनर्घ्य हो प्राप्त हमें, हम पद में आये अर्घ्य लिए।।
ये सहस्रनाम पावन जग में, जग जीवों का हितकारी है।
हम सहस्रनाम को प्राप्त करें, यह इच्छा विशद हमारी है।।9।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर अष्टोत्तर सहस्रनाम समूहेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **प्रासुक लेकर नीर से, देते शांतीधार।**
पुष्पाञ्जलि करते परम, पाने शिव उपहार।। शान्तये शांतिधारा...

दोहा– **श्रेष्ठ सुगन्धित पुष्प यह, लेकर दोनों हाथ।**
पुष्पाञ्जलि करते परम, पाने शिवपद नाथ !।। *पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्*

जयमाला

दोहा– जिनवर तीनों लोक में, होते पूज्य त्रिकाल।
सहस्रनाम की गा रहे, भाव सहित जयमाल।।

चौपाई

जय-जय तीन लोक के स्वामी, त्रिभुवनपति हे अन्तर्यामी।
पूर्व भवों में पुण्य कमाया, पुण्योदय से नरभव पाया।।
तन निरोग पाकर के भाई, सुकुल प्राप्त कीन्हा सुखदाई।
तुमने उर में ज्ञान जगाया, अतिशय सम्यक् दर्शन पाया।।
भाव सहित संयम अपनाए, भव्य भावना सोलह भाए।
तीर्थंकर प्रकृति शुभ पाई, स्वर्गों के सुख भोगे भाई।।
गर्भादि कल्याणक पाए, रत्न इन्द्र भारी बरषाए।
छह महीने पहले से भाई, देवों ने नगरी सजवाई।।

जन्म कल्याणक प्रभु जी पाये, सहस्राष्ट शुभ गुण प्रगटाए।
गुणानुरूप नाम भी पाए, सहस्र आठ संख्या में गाए।।
नाम सभी सार्थक हैं भाई, सहस्रनाम की महिमा गाई।
तीर्थंकर पदवी के धारी, नामों के होते अधिकारी।।
मंत्र सभी यह नाम कहाए, मंत्रों को श्रद्धा से गाए।
ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाए, जो भी इनका ध्यान लगाए।।
महिमा का न पार है भाई, श्री जिनेन्द्र की है प्रभुताई।
जगत प्रकाशी जिन कहलाए, ज्ञानादर्श सुगुण प्रभु पाए।।
श्री जिनेन्द्र रत्नत्रय पाए, अनंत चतुष्टय प्रभु प्रगटाए।
धर्म चक्र शुभ प्रभु जी धारे, समवशरणयुत किए विहारे।।
समवशरण शुभ देव बनाते, श्री जिनवर की महिमा गाते।
प्राणी अतिशय पुण्य कमाते, पूजा अर्चा कर हर्षाते।।
जय-जयकार लगाते भाई, यह है जिनवर की प्रभुताई।
पुरुषोत्तम यह नाम कहाए, उनकी यह शुभ माल बनाए।।
अर्पित करते तव पद स्वामी, करते हम तव चरण नमामी।
नाथ ! प्रार्थना यही हमारी, दो आशीष हमें त्रिपुरारी।।
रत्नत्रय की निधि हम पाएँ, शिवपथ के राही बन जाएँ।
शिव स्वरूप हम भी प्रगटाएँ, शिवपुर जाकर शिवसुख पाएँ।।

दोहा- सहस्रनाम का कंठ में, धारें कंठाहार।
'विशद' गुणों को प्राप्त कर, पावें शिव का द्वार।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर अष्टोत्तर सहस्रनाम समूहेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- जिन गुण के अनुपम सुमन, जग में रहे महान्।
पुष्पाञ्जलि कर पूजते, पाने पद निर्वाण।।

।। इत्याशीर्वाद: पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।। (इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(नोट- सहस्रनाम व्रत के उद्यापन में श्री सहस्रनाम विधान अवश्य कीजिए।)

तत्त्वार्थसूत्र पूजन

स्थापना

ॐकारमय श्री जिनेन्द्र की, वाणी है जग में पावन।
परम्परा से आचार्यों ने, किया तत्त्व का दिग्दर्शन।।
मोक्ष शास्त्र तत्त्वार्थ सूत्र में, मोक्ष मार्ग का है वर्णन।
उमास्वामी आचार्यवर्य ने, सप्त तत्त्व का किया कथन।।
मोक्ष मार्ग पर बढ़ने हेतु, मोक्ष शास्त्र का आह्वानन्।
विशद भाव से अभिनन्दन कर, करते हैं शत् शत् वंदन।।

ॐ ह्रीं मोक्षमार्ग प्रकाशक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थसूत्र समूह अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। तत्त्वार्थसूत्र समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। तत्त्वार्थसूत्र समूह अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरण्।

अगणित सागर के जल से भी, तृषा शांत न हो पाई।
अनुपम शीतल जल समता का, उसकी याद नहीं आई।।
हृदय कलश में श्रद्धा का जल, हम भरकर के लाये हैं।
अब मोक्ष शास्त्र की पूजा करने, भाव बनाकर आये हैं।।1।।

ॐ ह्रीं मोक्षमार्ग प्रकाशक तत्त्वार्थसूत्र ग्रन्थाय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व.स्वाहा।

सागर में लहरों की भाँती, ज्वार कषायों का आया।
पश्चात्ताप किया हमने पर, मन से छूट नहीं पाया।।
क्रोधादी के नाश हेतु, यह शीतल चंदन लाये हैं।
अब मोक्ष शास्त्र की पूजा करने, भाव बनाकर आये हैं।।2।।

ॐ ह्रीं मोक्षमार्ग प्रकाशक तत्त्वार्थसूत्र ग्रन्थाय संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

अक्षय अनंत हैं गुण मेरे यह, अब तक जान नहीं पाया।
इसलिए कर्म के चक्कर से, चारों गतियों में भटकाया।।
हम अक्षय पद पाने हेतू, यह अक्षय अक्षत लाये हैं।
अब मोक्ष शास्त्र की पूजा करने, भाव बनाकर आये हैं।।3।।

ॐ ह्रीं मोक्षमार्ग प्रकाशक तत्त्वार्थसूत्र ग्रन्थायऽक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व.स्वाहा।

पुष्पों की गंध मनोहर है, उसमें सदियों से भरमाया।
भँवरे की भाँती भ्रमण किया, नहिं आतम ज्ञान जगा पाया।।
हम काम वासना नाश हेतु, यह पुष्प सुगन्धित लाये हैं।
अब मोक्ष शास्त्र की पूजा करने, भाव बनाकर आये हैं।।4।।

ॐ ह्रीं मोक्षमार्ग प्रकाशक तत्त्वार्थसूत्र ग्रन्थाय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्व.स्वाहा।

न अन्त है इच्छा सागर का, इच्छाएँ पूर्ण न हो पातीं।
जितनी इच्छाएँ पूर्ण करूँ, उतनी-उतनी बढ़ती जातीं।।
चेतन की भूख मिटे स्वामी, नैवेद्य चरण में लाये हैं।
अब मोक्ष शास्त्र की पूजा करने, भाव बनाकर आये हैं।।5।।

ॐ ह्रीं मोक्षमार्ग प्रकाशक तत्त्वार्थसूत्र ग्रन्थाय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व.स्वाहा।

करता है नाश दीप तम का, पर अन्तर तम न मिट पाया।
सदियों से तीनों लोकों में, अज्ञान तिमिर में भटकाया।।
अंतर का तिमिर मिटाने को, यह दीप जलाकर लाये हैं।
अब मोक्ष शास्त्र की पूजा करने, भाव बनाकर आये हैं।।6।।

ॐ ह्रीं मोक्षमार्ग प्रकाशक तत्त्वार्थसूत्र ग्रन्थाय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

ज्यों तप अग्नी में रहता है, त्यों चेतन में सद्ज्ञान रहे।
कर्मों के घात से लोहे की, अग्नी सम चेतन मार सहे ।।
हम कर्मेन्धन के दहन हेतु, यह धूप सुगन्धित लाये हैं।
अब मोक्ष शास्त्र की पूजा करने, भाव बनाकर आये हैं।।7।।

ॐ ह्रीं मोक्षमार्ग प्रकाशक तत्त्वार्थसूत्र ग्रन्थायऽष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों की आँधी तीव्र चली, पुरुषार्थ सफल न हो पाया।
कर्त्तव्य हुआ निष्फल मेरा, यह रही कर्म की ही माया।।
हम ज्ञान ध्यान का फल पाने, यह श्रीफल लेकर आये हैं।
अब मोक्ष शास्त्र की पूजा करने, भाव बनाकर आये हैं।।8।।

ॐ ह्रीं मोक्षमार्ग प्रकाशक तत्त्वार्थसूत्र ग्रन्थाय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पथ मिला हमें बाधाओं का, हम लक्ष्य प्राप्त न कर पाए।
जग की झंझट में उलझ गये, भव सागर में गोते खाए।।
अब पद अनर्घ पाने हेतू, हम अर्घ्य बनाकर लाये हैं।
अब मोक्ष शास्त्र की पूजा करने, भाव बनाकर आये हैं।।9।।

ॐ ह्रीं मोक्षमार्ग प्रकाशक तत्त्वार्थसूत्र ग्रन्थाय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– मोक्ष शास्त्र में मोक्ष का, वर्णन रहा विशाल।
पूजा करके भाव से, गाते हम जयमाल।।

(छन्द ताटंक)

तत्त्वार्थ सूत्र में तत्त्वों का, विस्तार पूर्वक कथन किया।
आचार्य उमास्वामी गुरुवर ने, जिनश्रुत का शुभ मथन किया।।
महावीर प्रभु की वाणी को, गौतम गणधर ने झेला था।
उस समय सभा में जिनवर की, भवि जीवों का शुभ मेला था।।
सौधर्म इन्द्र धरणेन्द्र तथा, नर इन्द्र पशु भी आये थे।
तब ऋषी मुनी गणधर चरणों, भक्ति से शीश झुकाए थे।।
जिनवर की दिव्य ध्वनि खिरती, शुभ अर्धमागधी भाषा में।
मागध जाति के देव सभी, समझाते सब परिभाषा में।।
महावीर की दिव्य देशना, तीस वर्ष तक चली महान्।
इन्द्रभूति गौतम ने गणधर, बनकर जिसका किया बखान।।
कार्तिक कृष्ण अमावस्या को, प्रभु ने पाया पद निर्वाण।
इन्द्रभूति गौतम स्वामी ने, पाया सायं केवलज्ञान।।
दिव्य देशना भवि जीवों को, बारह वर्ष सुनाई थी।
अष्ट कर्म का नाश किए फिर, प्रभु ने मुक्ति पाई थी।।
श्री सुधर्माचार्य गुरू ने, पाया केवलज्ञान महान्।
बारह वर्ष जगत् जीवों को, कीन्हा प्रभु ने ज्ञान प्रदान।।
उनके मोक्ष प्राप्त करते ही, जम्बू स्वामी पाए ज्ञान।

अड़तिस वर्ष किया स्वामी ने, दिव्य देशना का व्याख्यान।।
श्रुत केवली पंच हुए फिर, पाए द्रव्य भावश्रुत ज्ञान।
सौ वर्षों तक किए देशना, देकर कीन्हा जग कल्याण।।
परम्परा से दिव्य देशना, आचार्यों ने समझाई।
अनुक्रम से वह दिव्य देशना, उमास्वामी ने भी पाई।।
द्वयाक श्रेष्ठी के निमित्त से, ग्रन्थराज यह लिखा गया।
उमास्वामी आचार्यवर्य से, बना एक इतिहास नया।।
दशाध्याय में मोक्षमार्ग का, विशद भाव से किया कथन।
जीवादिक सातों तत्त्वों का, जिसमें है सुन्दर वर्णन।।
प्रथम चार अध्यायों में है, जीव तत्त्व का श्रेष्ठ कथन।
पंचम में कीन्हा अजीव का, भेद सहित पूरा वर्णन।।
षष्टम सप्तम में आस्रव का, कीन्हा है गुरु ने व्याख्यान।
बन्ध तत्त्व का अष्टम में शुभ, किया गया प्यारा गुणगान।।
संवर और निर्जरा का शुभ नवम् खण्ड में किया कथन।
दशम खण्ड में मोक्ष तत्त्व का, कीन्हा है संक्षेप कथन।।
चारों ही अनुयोग समाहित, करके रचना हुई विशाल।
ऐसे गुरुवर और ग्रन्थ को, वंदन करते हैं नत भाल।।
मोक्ष शास्त्र तत्त्वार्थ सूत्र में, तत्त्वों का है सरल कथन।
उसको पाने हेतु करते, विशद भाव से शत् वंदन।।

दोहा– उमास्वामि कृत ग्रन्थ यह, मोक्ष शास्त्र है नाम।
जयमाला गाकर यहाँ, करते 'विशद' प्रमाण

ॐ ह्रीं मोक्षमार्ग प्रकाशक तत्त्वार्थसूत्र ग्रन्थाय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– मोक्ष शास्त्र में दिया है, जैनागम का सार।
मोक्षमार्ग को प्राप्त कर, पाऊँ भव से पार।।

(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपेत्)

(नोट– तत्त्वार्थसूत्र व्रत के उद्यापन में श्री तत्त्वार्थसूत्र विधान अवश्य कीजिए।)

सर्वग्रहअरिष्ट निवारक श्री चौबीसी पूजा

(स्थापना)

कर्मों ने काल अनादि से, हमको जग में भरमाया है।
मिलकर कर्मों के साथ सभी, नवग्रहों ने हमें सताया है।।
अब सूर्य चंद्र बुध भौम-गुरु, अरु शुक्र शनि राहू केतु।
आह्वानन करते जिनवर का, हम नवग्रह की शांति हेतु।।
तुमने कर्मों का अन्त किया, फिर अर्हत् पद को पाया है।
प्रभु उभयलोक की शांति हेतु, मेरा भी मन ललचाया है।।

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनाः ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरण्।

(गीता छंद)

हम जन्म मृत्यु अरु जरा के, रोग से दुख पाये हैं।
उत्तम क्षमादि धर्म पाने, नीर निर्मल लाये हैं।।
नवकोटि से वृषभादि जिन की, कर रहे शुभ अर्चना।
ग्रह शांति से परमार्थ सिद्धि, हेतु पद में वंदना।।1।।

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्राय पंचकल्याणक प्राप्ताय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार के संताप से, मन में बहुत अकुलाए हैं।
अब भव भ्रमण से पार पाने, चरण चंदन लाए हैं।।
नवकोटि से वृषभादि जिन की, कर रहे शुभ अर्चना।
ग्रह शांति से परमार्थ सिद्धि, हेतु पद में वंदना।।2।।

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्राय पंचकल्याणक प्राप्ताय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

भटके बहुत अटके जगत में, पार पाने आए हैं।
अक्षय निधि दो नाथ हमको, अक्षत चढ़ाने लाए हैं।।

नवकोटि से वृषभादि जिन की, कर रहे शुभ अर्चना।
ग्रह शांति से परमार्थ सिद्धि, हेतु पद में वंदना।।3।।

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्राय पंचकल्याणक प्राप्ताय अक्षयपदप्राप्ताय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

हम विषय तृष्णा के भँवर में, जानकर उलझाए हैं।
ना काम का हो वास उर में, पुष्प लेकर आए हैं।।
नवकोटि से वृषभादि जिन की, कर रहे शुभ अर्चना।
ग्रह शांति से परमार्थ सिद्धि, हेतु पद में वंदना।।4।।

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्राय पंचकल्याणक प्राप्ताय कामबाणविध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

(शम्भू छंद)

मन की इच्छाओं को प्रभुवर, हम पूर्ण नहीं कर पाए हैं।
हम क्षुधा रोग को शांत करें, यह व्यंजन षट्रस लाए हैं।।
नव कोटी से वृषभादिजिन, के पद में हम वन्दन करते।
नवग्रह की शांति हेतु प्रभु, माथा तव चरणों में धरते।।5।।

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्राय पंचकल्याणक प्राप्ताय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु दीपक की शुभ ज्वाला से, अंतर का तिमिर न मिट पाए।
अब मोह अंध के नाश हेतु, यह दीप जलाकर हम लाए।।
नव कोटी से वृषभादिजिन, के पद में हम वन्दन करते।
नवग्रह की शांति हेतु प्रभु, माथा तव चरणों में धरते।।6।।

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्राय पंचकल्याणक प्राप्ताय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

यह धूप सुगंधित द्रव्यमयी, इस सारे जग को महकाए।
अब अष्ट कर्म के नाश हेतु, यह धूप जलाने हम आए।।
नव कोटी से वृषभादिजिन, के पद में हम वन्दन करते।
नवग्रह की शांति हेतु प्रभु, माथा तव चरणों में धरते।।7।।

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्राय पंचकल्याणक प्राप्ताय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु लौकिक फल की इच्छा कर, वह लौकिक फल सारे पाए।
अब मोक्ष महाफल पाने को, तव चरण श्रीफल ले आए।।
नव कोटी से वृषभादिजिन, के पद में हम वन्दन करते।
नवग्रह की शांति हेतु प्रभु, माथा तव चरणों में धरते।।8।।

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्राय पंचकल्याणक प्राप्ताय मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन अक्षत पुष्प चरु, अरु दीप धूप फल ले आए।
वसु द्रव्य मिलाकर इसीलिए, यह अर्घ्य चरण में हम लाए।।
नव कोटी से वृषभादिजिन, के पद में हम वन्दन करते।
नवग्रह की शांति हेतु प्रभु, माथा तव चरणों में धरते।।9।।

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्राय पंचकल्याणक प्राप्ताय अनर्घपदप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **जलधारा देते शुभम्, पूजाकर हे नाथ !**
नवग्रह मेरे शांत हों, चरण झुकाएँ माथ।। शांतये शांतिधारा

दोहा– **जगत पूज्य तुम हो प्रभो ! जगती पति जगदीश।**
पुष्पाञ्जलि कर पूजते, चरण झुकाते शीश।। दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

नवग्रह अरिष्ट निवारक अर्घ्य

(चौपाई)

ग्रहारिष्ट रवि शांति पाए, पद्म प्रभु पद शीश झुकाएँ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, सुख–शान्ति सौभाग्य जगाएँ।।1।।

ॐ ह्रीं रवि अरिष्ट निवारक श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ग्रहारिष्ट चन्द्र जिन स्वामी, शांति किए होके शिवगामी।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, सुख–शान्ति सौभाग्य जगाएँ।।2।।

ॐ ह्रीं चन्द्रारिष्ट निवारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नहीं भौम ग्रह भी रह पाए, वासुपूज्य को पूज रचाए।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, सुख-शान्ति सौभाग्य जगाएँ।।3।।

ॐ ह्रीं भौमारिष्ट निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विमलादी वसु जिन को ध्यायें, ग्रहारिष्ट बुध पूर्ण नशाएँ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, सुख-शान्ति सौभाग्य जगाएँ।।4।।

ॐ ह्रीं बुधग्रहारिष्ट निवारक श्री विमल, अनंत, धर्म, शांति, कुन्थु, अरह, नमि, वर्धमान अष्ट जिनेन्द्रेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषभादी वसु जिन शिवकारी, ग्रहारिष्ट गुरु नाशनहारी।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, सुख-शान्ति सौभाग्य जगाएँ।।5।।

ॐ ह्रीं सुरगुरुदोष निवारक श्री ऋषभ, अजित, संभव, अभिनन्दन, सुमति, सुपारस, शीतल, श्रेयांस अष्ट जिनवरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुक्रारिष्ट निवारक गाए, पुष्पदन्त स्वामी मन भाए।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, सुख-शान्ति सौभाग्य जगाएँ।।6।।

ॐ ह्रीं शुक्रारिष्ट निवारक श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिसुव्रत की महिमा गाए, शनि अरिष्ट ग्रह ना रह पाए।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, सुख-शान्ति सौभाग्य जगाएँ।।7।।

ॐ ह्रीं शनिग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा सर्व ग्रहारिष्ट शांतिं कुरु-कुरु स्वाहा।

जयमाला

दोहा- **गगन मध्य में ग्रहों का, फैला भारी जाल।**
ग्रह शांति के हेतु हम, गाते हैं जयमाल।।

ऋषभ चिह्न लख वृषभनाथ पद, 'विशद' भाव से करूँ नमन्।
गज लक्षण है अजितनाथ का, उनके चरणों नित वंदन।।
अश्व चिह्न संभव जिनवर का, नृप जितारि के प्रभु नंदन।
मर्कट चिह्न चरण अंकित है, अभिनंदन को शत् वंदन।।
सुमति जिनेश्वर के पद चकवा, जिन का करते अभिनंदन।

पदम चिह्न है पदमप्रभु पद, लेकर पदम करूँ अर्चन।।
स्वस्तिक चिह्न सुपार्श्वनाथ का, दर्शन कर नित करूँ भजन।
चन्द्र चिह्न चंदा प्रभु वंदौ, करूँ निजातम का दर्शन।।
मगर चिह्न श्री सुविधिनाथ पद, पुष्पदंत उपनाम शुभम्।
कल्पवृक्ष शीतल जिन स्वामी, मुद्रा जिनकी शांत परम।।
गेंडा चिह्न चरण में लख के, श्रेयांसनाथ को करूँ नमन।
भैंसा चिह्न श्री वासुपूज्य पद, देख करूँ शत्-शत् वंदन।।
विमलनाथ का चिह्न है सूकर, विमल रहे मेरे भगवन्।
सेही चिह्न है अनंतनाथ पद, उनको सादर करूँ नमन्।।
वज्र चिह्न प्रभु धर्मनाथ पद, नमन करूँ हो धर्म गमन।
शांतिनाथ का हिरण चिह्न शुभ, शांति दो मेरे भगवन्।।
कुंथुनाथ अज चरण देखकर, पाऊँ मैं सम्यग्दर्शन।
अरहनाथ का चिह्न मीन है, वीतराग जिन को वन्दन।।
कलश चिह्न लख मल्लिनाथ को, वंदूँ पाऊँ ज्ञान सघन।
कछुवा चिह्न मुनिसुव्रत जिन का, वन्दन कर हो जाऊँ मगन।।
चरण पखारूँ नमिनाथ के, लखकर नीलकमल लक्षण।
शंख चिह्न पद नेमिनाथ के, इन्द्रिय का जो किए दमन।।
चिह्न सर्प का पार्श्वनाथ पद, लखकर करूँ चरण वंदन।
वर्धमान पद सिंह देखकर, करूँ चरण का अभिनंदन।।
वृषभादि महावीर प्रभु की, करूँ नित्य सविनय पूजन।
चौबीसों तीर्थंकर प्रभु के, चरणों में शत्-शत् वंदन।।

दोहा- **चौबीसों जिन राज की, भक्ति करें जो लोग।**
नवग्रह शांति कर 'विशद', शिव का पावें योग।।

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्रेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्ताय पूर्णार्घ्यं निर्व.स्वाहा।

सोरठा- **चौबीसों जिनदेव, मंगलमय मंगल परम।**
मंगल करें सदैव, नवग्रह बाधा शांत हो।।

इति पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

सरस्वती पूजन

(दोहा)

जनम-जरा-मुतु छय करै, हरै कुनय जड़रीति।
भवसागर सों ले तिरै, पूजै जिन वच प्रीति।।

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भवसरस्वतिवाग्वादिनि ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

(त्रिभंगी)

क्षोरीदधिगंगा, विमल तरंगा, सलिल अभंगा सुखसंगा।
भरि कंचन झारी, धार निकारी, तृषा निवारी हितचंगा।।
तीर्थंकर की ध्वनि, गणधर ने सुनि, अंग रचे चुनि ज्ञानमई।
सो जिनवर वानी, शिवसुखदानी, त्रिभुवन मानी पूज्य भई।।

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भवसरस्वतिदेव्यै जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

करपूर मंगाया, चंदन आया, केशर लाया रंग भरी।
शारदपद वंदों, मन अभिनंदों पाप निकंदों दाह हरी।। तीर्थं.।।

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भवसरस्वतिदेव्यै संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

सुखदास कमोदं, धारकमोदं अति अनुमोदं चंदसमं।
बहुभक्ति बढ़ाई, कीरति गाई, होहु सहाई मात ममं।।तीर्थं.।।

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भवसरस्वतिदेव्यै अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

बहुफूल सुवासं, विमल प्रकाशं, आनन्दरासं लाय धरे।।
ममकाममिटाओ, शीलबढ़ाओ, सुखउपजायोदोषहरे।।तीर्थं.।।

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भवसरस्वतिदेव्यै कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पकवान बनाया, बहु घृत लाया, सब विधि भाया मिष्ट महा।
पूजूँ थुति गाऊँ प्रीति बढ़ाऊँ क्षुधा नशाऊँ हर्ष लहा।।तीर्थं.।।

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भवसरस्वतिदेव्यै क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करि दीपक जोतं, तमछय होतं, ज्योति उदोतं तुमहिं चढ़ै।
तुमहोपरकाशक भरमविनाशकहमघटभासकज्ञान बढ़ै।।तीर्थं.।।

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भवसरस्वतिदेव्यै मोहान्धकारविध्वंसनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभगंध दशों कर, पावक में धर, धूप मनोहर खेवत हैं।
सबपापजलावैं, पुण्य कमावैं, दास कहावैं सेवत हैं।।तीर्थं.।।

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भवसरस्वतिदेव्यै अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

बादाम छुहारी, लोंग सुपारी, श्रीफल भारी ल्यावत हैं।
मनवांछितदाता, मेटअसाता तुम गुन माता ध्यावत हैं।।तीर्थं.।।

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भवसरस्वतिदेव्यै मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नयनन सुखकारी, मृदुगुणधारी, उज्ज्वल भारी, मोल धरैं।
शुभगंधसम्हारा, वसननिहारा, तुमतनधारा ज्ञान करैं।।तीर्थं.।।

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भवसरस्वतिदेव्यै दिव्यज्ञानप्राप्तये वस्त्रं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन अच्छत, फूल चरु अरु, दीप धूप अति फल लावैं।
पूजा को ठानत, जो तुम जानत, सो नर द्यानत सुख पावैं।।तीर्थं.।।

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भवसरस्वतिदेव्यै अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(सोरठा)

ओंकार ध्वनिसार, द्वादशांगवाणी विमल।
नमों भक्ति उरधार, ज्ञान करै जड़ता हरै।।

(चौपाई)

पहलो आचारांग बखानो, पद अष्टादश सहस प्रमानो।
दूजो सूत्रकृतं अभिलाषं, पद छत्तीस सहस गुरु भाषं।।
तीजो ठाना अंग सु जानं, सहस बियालिस पद सरधानं
चौथो समवायांग निहारं चौसठ सहस लाख इक धारं।।
पंचम व्याख्या पज्ञप्ति दरसं, दोय लाख अट्ठाइस सहसं।
छट्ठो ज्ञातृकथा विस्तारं पाँच लाख छप्पन हजारं।।
सप्तम उपासकाध्ययनंगं सत्त सहस ग्यारलख भंगं।
अष्टम अन्तकृत दश ईसं, सहस अट्ठाइस लाख तेईसं।।
नवम अनुत्तरदश सुविशालं, लाख बानवै सहस चवालं।
दशम प्रश्न व्याकरण विचारं लाख तिरानवै सोलह हजारं।।
ग्यारम सूत्रविपाक सु भाखं एक कोड़ि चौरासी लाखं।
चार कोड़ि अरु पन्द्रह लाखं दो हजार सब पद गुरुशाखं।।
द्वादश दृष्टिवाद पनभेदं, इकसौ आठ कोड़िपनवेदं।
अड़सठ लाख सहस छप्पन हैं, सहित पंचपद मिथ्याहन हैं।।
इकसौ बारह कोड़ि बखानो, लाख तिरासी ऊपर जानो।
ठावन सहस पंच अधिकाने, द्वादश अंग सर्वपद माने।।
कोड़ि इकावन आठ हि लाखं, सहस चुरासी छह सौ भाखं।
साढ़े इक्कीस श्लोक बताये, एक-एक पद के ये गाये।।

दोहा- जा वानी के ज्ञान तै, सूझै लोक-अलोक।
'द्यानत' जग जयवन्त हो, सदा देत हों धोक।।

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भवसरस्वतिदेव्यै महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

।। पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

समुच्चय मानस्तम्भ पूजा

(स्थापना)

धूलिसाल के मध्य सुमणिमय, चउदिश सुन्दर वीथी जान।
वीथी मध्य सुमानस्तम्भ है, समवशरण में आभावान।।
मानस्तम्भों के दर्शन से, मान गलित क्षण में हो जाय।
मानस्तम्भ जिनबिम्ब अर्चना, किए कर्म शत्रु नश जाय।।

दोहा- पूज रहे हम भाव से, अनुपम मानस्तम्भ।
सम्यक् श्रद्धा प्राप्त हो, नशे मान छल दम्भ।।

ॐ ह्रीं मानस्तम्भ स्थित चतुर्दिक जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन्।
ॐ ह्रीं मानस्तम्भ स्थित चतुर्दिक जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं मानस्तम्भ स्थित चतुर्दिक जिनेन्द्र ! अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(गीता छन्द)

मोह में फँसकर प्रभो ! नित, किया कितना पाप है।
कर्म का बंधन पड़ा यह, पाप का अभिशाप है।।
जन्म-मृत्यु अरु जरा का, रोग हरने आये हैं।
स्वर्ण झारी में मनोहर, नीर निर्मल लाये हैं।।1।।

ॐ ह्रीं मानस्तम्भ स्थित चतुर्दिक जिनेन्द्रेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा।

पाप के संताप से बहु, कर्म का अर्जन किया।
देव पूजा और भक्ती, नहीं जिन अर्चन किया।।
विभव का संताप हरने, शरण में हम आये हैं।
मलयगिरि का श्रेष्ठ चन्दन, सरस घिसकर लाये हैं।।2।।

ॐ ह्रीं मानस्तम्भ स्थित चतुर्दिक जिनेन्द्रेभ्यो चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

प्राप्त करके पद अनेकों, कर्म से बँधते रहे।
उन पदों को प्राप्त करने, में अनेकों दुख सहे।।
सुपद अक्षय प्राप्त करने, हम शरण में आये हैं।
धवल अक्षत थाल में धर, हम चढ़ाने लाये हैं।।3।।

ॐ ह्रीं मानस्तम्भ स्थित चतुर्दिक जिनेन्द्रेभ्यो अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

काम की ही कामना हम, नित्य प्रति करते रहे।
विषय भोगों में रमे अरु, व्यर्थ भव धरते रहे।।
काम बाधा नाश करने, हम शरण में आये हैं।
पुष्प ले पुष्पित मनोहर, हम चढ़ाने लाये हैं।।4।।

ॐ ह्रीं मानस्तम्भ स्थित चतुर्दिक जिनेन्द्रेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षुधा बाधायें हमेशा, जीव को व्याकुल करें।
व्यथित मन को नित करें जो, सर्व सुख–शांती हरें।।
क्षुधा रोग विनाश करने, हम शरण में आये हैं।
नैवेद्य यह चरणों चढ़ाने, थाल में भर लाये हैं।।5।।

ॐ ह्रीं मानस्तम्भ स्थित चतुर्दिक जिनेन्द्रेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान की शुभ रोशनी से, मोहतम का नाश हो।
कर्म का आस्रव कराए, चतुर्गति में वास हो।।
मोहतम का नाश करने, हम शरण में आये हैं।
दीप यह अनुपम जलाकर, हम चढ़ाने लाये हैं।।6।।

ॐ ह्रीं मानस्तम्भ स्थित चतुर्दिक जिनेन्द्रेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट कर्मों ने हमेशा, घात चेतन का किया।
आत्मा की शक्ति का न, भान होने ही दिया।।
अष्ट कर्मों को नशाने, हम शरण में आये हैं।
धूप अग्नि में जलाने, हेतु हम यह लाये हैं।।7।।

ॐ ह्रीं मानस्तम्भ स्थित चतुर्दिक जिनेन्द्रेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल अनेकों खाये निष्फल, हो गये हैं वह सभी।
मोक्ष फल की भावना, हमने नहीं भाई कभी।।
प्राप्त करने मोक्षफल शुभ, हम शरण में आये हैं।
फल अनेकों थाल में भर, हम चढ़ाने लाये हैं।।8।।

ॐ ह्रीं मानस्तम्भ स्थित चतुर्दिक जिनेन्द्रेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पद कोई शाश्वत रहे न, प्राप्त हमने जो किये।
इन पदों को प्राप्त करके, लोक में हम भी जिये।।
पद रहा शाश्वत जहाँ में, प्राप्त करने आये हैं।
अष्ट द्रव्यों का मनोहर, अर्घ्य देने लाये हैं।।9।।

ॐ ह्रीं मानस्तम्भ चतुर्दिक स्थित जिनेन्द्रेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– समवशरण में चतुर्दिश, बने मानस्तम्भ।
गाते हम जयमालिका, उनमें जो जिनबिम्ब।।

(चौपाई)

जय–जय समवशरण मनहारी, शोभा जिसकी अतिशयकारी।
मानस्तम्भ हैं विस्मयकारी, चतुर्दिशा में मंगलकारी।।
दर्शन चतुर्दिशा में होवें, सबके मन का कालुष खोवें।
प्रतिमाएँ अतिशय शुभकारी, वीतरागमय हैं अविकारी।।
गलित मान मानी का होवे, अज्ञानी की जड़ता खोवे।
जिनवर की है जो ऊँचाई, बारहगुणी हैं उसमें भाई।।
बारह योजन से दिख जाते, बीस योजन प्रकाश फैलाते।
तिय कोटों से घिरे हैं भाई, गोपुर चार बने सुखदाई।।
अभ्यन्तर बावड़ियाँ जानो, उपवन देव सहित पहिचानो।
वरुण कुबेर सोम यह भाई, लोकपाल चऊदिक् सुखदाई।।
कटनी तीन बीच में जानो, वैडूर्य स्वर्ण रत्नमय मानो।
द्वय कटनी पर द्रव्य सजाते, मंगल द्रव्य ध्वजादी पाते।।
मानस्तम्भ तीजी पर जानो, मूल भाग वज्रमय मानो।
मूल भाग चौकोर कहाया, ऊपर गोलाकार बताया।।
पहलू दो हजार कहलाए, मनहर चमकदार बतलाए।
छत्र चँवर घंटा किंकणियाँ, रत्नहार शोभित हैं मणियाँ।।
प्रातिहार्य सोहें वसु भाई, जिनकी महिमा कही न जाई।

चतुर्दिशा में दर्शन मिलते, हृदय कमल भव्यों के खिलते।।
क्षीरोदधि से जल भर लाते, बिम्बों का अभिषेक कराते।
सुर-नर अष्ट द्रव्य ले आवें, पूजा करके नाचें-गावें।।
बावड़िया पूरब में जानो, नन्दीमति नन्दोत्तर मानो।
नंदी नन्दीघोषा भाई, कमल कुमुदमय हैं सुखदाई।।
दक्षिण मानस्तम्भ में जानो, विजय और वैजयन्त भी मानो।
जय अरु अपराजित भी सोहें, जो भव्यों के मन को मोहें।।
पश्चिम में बावड़ियाँ भाई, सुप्रबुद्ध कुमुदा कहलाई।
अरु पुण्डरीक अशोका जानो, निर्मल नीर कुमुदयुत मानो।।
प्रभंकरा उत्तर में जानो, सुप्रतिबद्धा भी पहिचानो।
वापी है महानन्दा भाई, हृदया-नन्दी भी सुखदाई।।
मणिमय सीढ़ी इनमें जानो, द्वय बाजू द्वय कुण्ड बखानो।
सुर-नर-पशु कुण्डों में जावें, पग धूली धो शुद्धि पावें।।
बावड़िया सोलह ये जानो, महिमा अतिशय इनकी मानो।
सारस हंस बतख कई भाई, कलरव करते हैं सुखदाई।।
फूल खिले हैं अतिशयकारी, श्रेष्ठ रहे हैं जो मनहारी।
धन्य घड़ी दिवस है न्यारा, जागा है सौभाग्य हमारा।।
मिले प्रभु का दर्शन प्यारा, चरण-शरण का मिले सहारा।

दोहा- समवशरण जिनदेव के, आगे मानस्तम्भ।
दर्शन करके नाश हों, 'विशद' मान छल दम्भ।।

ॐ ह्रीं चतुर्दिक्सम्बन्धि मानस्तम्भ स्थित जिन प्रतिमाभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व.स्वाहा।

भव्य जीव जो भक्ति भाव से, समवशरण पूजा करते।
पुण्य योग से भव-भव के वह, अपने सारे दुख हरते।।
गर्भ जन्म तप ज्ञान मोक्ष यह, कल्याणक पाँचों पाते।
'विशद' ज्ञान को पाने वाले, अनुक्रम से शिवपुर जाते।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलि क्षिपेत् ।।

श्री अहिछेत्र पार्श्वनाथ पूजा

(स्थापना)

हे पार्श्वनाथ करुणा निधान, महिमा महान् मंगलकारी।
शिव भर्तारी सुख भंडारी, सर्वज्ञ सुखारी त्रिपुरारी।।
तुम धर्मसेत करुणानिकेत, आनन्द हेत अतिशय धारी।
तुम चिदानन्द आनन्द कन्द, दुख-द्वन्द फन्द संकटहारी।।
आवाह्न करके आज तुम्हें, अपने मन में पधराऊँगा।
अपने उर के सिंहासन पर, गद-गद हो तुम्हें बिठाऊँगा।
मेरा निर्मल मन टेर रहा, हे नाथ ! हृदय में आ जाओ।
मेरे सूने मन मन्दिर में, पारस भगवान समा जाओ।।

ॐ ह्रीं श्री अहिच्छत्रपार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

भव वन में भटक रहा हूँ मैं, भर सकी न तृष्णा की खाई।
भव सागर के अथाह दुख में, सुख की जल बिन्दु नहीं पाई।।
जिस भांति आपने तृष्णा पर, जय पाकर तृषा बुझाई है।
अपनी अतृप्ति पर अब, तुमसे जय पाने की सुधि आई है।।

ॐ ह्रीं श्रीअहिच्छत्रपार्श्वनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोधित हो क्रूर कमठ ने जब, नभ से ज्वाला बरसाई थी।
उस आत्मध्यान की मुद्रा में, आकुलता तनिक न आई थी।।
विघ्नों पर बैर-विरोधों पर, मैं साम्यभाव धर जय पाऊँ।
मन की आकुलता मिट जाये, ऐसी शीतलता पा जाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्रीअहिच्छत्रपार्श्वनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

तुमने कर्मों पर जय पाकर, मोती सा जीवन पाया है।
यह निर्मलता मैं भी पाऊँ, मेरे मन यही समाया है।।

यह मेरा अस्तव्यस्त जीवन, इसमें सुख कहीं न पाता हूँ।
मैं भी अक्षय पद पाने को, शुभ अक्षत तुम्हें चढ़ाता हूँ।।

ॐ ह्रीं श्रीअहिच्छत्रपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

अध्यात्मवाद के पुष्पों से, जीवन फुलवारी महकाई।
जितना जितना उपसर्ग सहा, उतनी उतनी दृढ़ता आई।।
मैं इन पुष्पों से वञ्चित हूँ, अब इनको पाने आया हूँ।
चरणों पर अर्पित करने को, कुछ पुष्प संजोकर लाया हूँ।।

ॐ ह्रीं श्रीअहिच्छत्रपार्श्वनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

जय पाकर चपल इन्द्रियों पर, अन्तर की क्षुधा मिटा डाली।
अपरिग्रह की आलोक शक्ति, अपने अन्दर ही प्रगटा ली।।
भटकाती फिरती क्षुधा मुझे, मैं तृप्त नहीं हो पाया हूँ।
इच्छाओं पर जय पाने को, मैं शरण तुम्हारी आया हूँ।।

ॐ ह्रीं श्रीअहिच्छत्रपार्श्वनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अपने अज्ञान अंधेरे में वह, कमठ फिरा मारा मारा।
व्यन्तर विमानधारी था पर, तप के उजियारे से हारा।।
मैं अंधकार में भटक रहा, उजियारा पाने आया हूँ।
जो ज्योति आप में दर्शित है, वह ज्योति जगाने आया हूँ।।

ॐ ह्रीं श्रीअहिच्छत्रपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

तुमने तपके दावानल में, कर्मों की धूप जलाई है।
जो सिद्ध शिला तक आ पहुंची, वह निर्मल गंध उड़ाई है।।
मैं कर्म बन्धनों में जकड़ा, भव बन्धन से घबराया हूँ।
वसु–कर्म दहन के लिये, तुम्हें मैं धूप चढ़ाने आया हूँ।।

ॐ ह्रीं श्रीअहिच्छत्रपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम महा तपस्वी शान्ति मूर्ति, उपसर्ग तुम्हें न डिगा पाये।

तप के फल ने पद्मावति के, इन्द्रों के आसन कम्पाये।।
ऐसे उत्तम फल की आशा मैं, मन में उमड़ी पाता हूँ।
ऐसा शिव सुख फल पाने को, फल की शुभ भेंट चढ़ाता हूँ।।

ॐ ह्रीं श्रीअहिच्छत्रपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

संघर्षों में उपसर्गों में, तुमने समता का भाव धरा।
आदर्श तुम्हारा अमृत–बन, भक्तों के जीवन में बिखरा।।
मैं अष्ट द्रव्य से पूजा का, शुभ थाल सजा कर लाया हूँ।
जो पदवी तुमने पाई है, मैं भी उस पर ललचाया हूँ।।

ॐ ह्रीं श्रीअहिच्छत्रपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक

वैशाख कृष्ण दुतिया के दिन तुम, वामा के उर में आये।
श्री अश्वसेन नृप के घर में, आनन्द भरे मंगल छाये।।

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णद्वितीयायां गर्भमंगलमण्डिताय श्रीअहिच्छत्रपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब पौष कृष्ण एकादशि को, धरती पर नया प्रसून खिला।
भूले भटके भ्रमते जग को, आत्मोन्नति का आलोक मिला।।

ॐ ह्रीं पौष कृष्णैकादश्यां जन्ममंगलमण्डिताय श्रीअहिच्छत्रपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एकादशि पौष कृष्ण के दिन, तुमने संसार अथिर पाया।
दीक्षा लेकर आध्यात्मिक पथ, तुमने तप द्वारा अपनाया।।

ॐ ह्रीं पौष कृष्णा एकादशी दिने तपोमंगलमण्डिताय श्रीअहिच्छत्रपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अहिच्छत्र धरा पर जी भर कर, की क्रूर कमठ ने मनमानी।
तब कृष्णा चैत्र चतुर्थी को, पद प्राप्त किया केवलज्ञानी।।

यह वन्दनीय हो गई धरा, दश भव का बैरी पछताया।
देवों ने जय जयकारों से, सारा भूमण्डल गुञ्जाया।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णचतुर्थीदिवसे श्रीअहिच्छत्रतीर्थे ज्ञानसाम्राज्यप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

श्रावण शुक्ला सप्तमि के दिन, सम्मेदशिखर ने यश पाया।
'सुवरणगिर' भद्रकूट से जब, शिव मुक्तिरमा को परिणाया।।

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लासप्तम्यां सम्मेदशिखरस्य सुवरणभद्रकूटाद् मोक्षमंगलमण्डिताय श्रीअहिच्छत्रपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

जयमाला

(शम्भू छन्द)

सुरनर किन्नर गणधर फणधर, योगीजन ध्यान लगाते हैं।
भगवान तुम्हारी महिमा का, यशगान मुनीवर गाते हैं।।
जो ध्यान तुम्हारा ध्याते हैं, दुख उनके पास न आते हैं।
जो शरण तुम्हारी रहते हैं, उनके संकट कट जाते हैं।।
तुम कर्मदली तुम महाबली, इन्द्रियसुख पर जय पाई है।
मैं भी तुम जैसा बन जाऊँ, मन में यह आज समाई है।।
तुमने शरीर औ आत्मा के, अंतर स्वभाव को जाना है।
नश्वर शरीर का मोह तजा, निश्चय स्वरूप पहिचाना है।।
तुम द्रव्य मोह, औ भाव मोह, इन दोनों से न्यारे न्यारे।
जो पुद्गल के निमित्त कारण, वे रागद्वेष तुमसे हारे।।
तुम पर निर्जन वन में बरसे, ओले-शोले पत्थर पानी।
आलोक तपस्या के आगे, चल सकी न शठ की मनमानी।।
यह सहन शक्तियों का बल है, जो तप के द्वारा आया था।
जिसने स्वर्गों में देवों के, सिंहासन को कम्पाया था।।
'अहि' का स्वरूप धरकर तत्क्षण, धरणेन्द्र स्वर्ग से आया था।

ध्यानस्थ आप के ऊपर प्रभु, फण-मण्डप बनकर छाया था।।
उपसर्ग कमठ का नष्ट किया, मस्तक पर फणमण्डप रचकर।
पद्मादेवी ने उठा लिया, तुमको सिर के सिंहासन पर।।
तप के प्रभाव से देवों ने, व्यंतर की माया विनशाई।
पर प्रभो आपकी मुद्रा में, तिलमात्र न आकुलता आई।।
उपसर्गों का आतंक तुम्हें, हे प्रभु ! तिलभर न डिगा पाया।
अपनी विडम्बना पर बैरी, असफल हो मन में पछताया।।
शठ कमठ बैर के वशीभूत, भौतिक बल पर बौराया था।
अध्यात्म आत्मबल का गौरव, यह मूरख समझ न पाया था।
दश भव तक जिसने बैर किया, पीड़ायें देकर मनमानी।
फिर हार मानकर चरणों में, झुक गया स्वयं वह अभिमानी।।
यह बैर महा दुखदायी है, यह बैर न बैर मिटाता है।
यह बैर निरन्तर प्राणी को, भवसागर में भटकाता है।।
जिनको भव सुख की चाह नहीं, दुख से न जरा भय खाते हैं।
वे सर्व-सिद्धियों को पाकर, भव सागर से तिर जाते हैं।।
जिसने भी शुद्ध मनोबल से, ये कठिन परीषह झेली हैं।
सब ऋद्धि-सिद्धियाँ नत होकर, उनके चरणों पर खेली हैं।।
जो निर्विकल्प चैतन्य रूप, शिव का स्वरूप तुमने पाया।
ऐसा पवित्र पद पाने को, मेरा अन्तर मन ललचाया।।
कार्माण वर्गणायें मिलकर, भव वन में भ्रमण कराती हैं।
जो शरण तुम्हारी आते हैं, ये उनके पास न आती हैं।।
तुमने सब बैर विरोधों पर, समदर्शी बन जय पाई है।
मैं भी ऐसी समता पाऊँ, यह मेरी हृदय समाई है।।
अपने समान ही तुम सबका, जीवन विशाल कर देते हो।
तुम हो तिखाल वाले बाबा, जग को निहाल कर देते हो।।

तुम हो त्रिकालदर्शी तुमने, तीर्थंकर का पद पाया है।
तुम हो महान अतिशयधारी, तुम में आनन्द समाया है।।
चिन्मूरति आप अनंतगुणी, रागादि न तुमको छू पाये।
इस पर भी हर शरणागत पर, मनमाने सुख साधन आये।।
तुम रागद्वेष से दूर दूर, इनसे न तुम्हारा नाता है।
स्वयमेव वृक्ष के नीचे जग, शीतल छाया पा जाता है।।
अपनी सुगन्ध क्या फूल कहीं, घर घर आकर बिखराते हैं।
सूरज की किरणों को छूकर, सुमन स्वयम् खिल जाते हैं।।
भौतिक पारसमणि तो केवल, लोहे को स्वर्ण बनाती है।
हे पार्श्व ! प्रभो तुमको छूकर, आत्मा कुन्दन बन जाती है।।
तुम सर्व शक्ति धारी हो प्रभु, ऐसा बल मैं भी पाऊँगा।
यदि यह बल मुझको भी दे दो, फिर कुछ न मांगने आऊँगा।।
कह रहा भक्ति के वशीभूत, हे दया सिन्धु ! स्वीकारो तुम।
जैसे तुम जग से पार हुये, मुझको भी पार उतारो तुम।।
जिसने भी शरण तुम्हारी ली, वह खाली हाथ न आया है।
अपनी अपनी आशाओं का, सबने वांछित फल पाया है।।
बहुमूल्य सम्पदायें सारी, ध्याने वालों ने पाई हैं।
पारस के भक्तों पर निधियाँ, स्वयमेव सिमट कर आई हैं।।
जो मन से पूजा करते हैं, पूजा उनको फल देती है।
प्रभु-पूजा भक्त पुजारी के, सारे संकट हर लेती है।।
जो पथ तुमने अपनाया है, वह सीधा शिव को जाता है।
जो इस पथ का अनुयायी है, वह परम मोक्ष पद पाता है।।

ॐ ह्रीं श्रीअहिच्छत्रपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पार्श्वनाथ भगवान को, जो पूजे धर ध्यान।
उसे लोक परलोक के, मिलें सकल वरदान।।

।। पुष्पांजलि क्षिपेत्।।

निर्वाण क्षेत्र पूजन

पारस पूज्य चौबीस, जिहँ जिहँ थानक शिव गये।
सिद्धभूमि निश-दीस, मन-वच-तन पूजा करौं।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्राणि ! अत्र अवतर अवतर संवौषट्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरण ।

(गीता)

शुचि क्षीर-दधि-सम नीर निरमल, कनक-झारी मैं भरौं।
संसार पार उतार स्वामी, जोर कर विनती करौं।।
सम्मेदगढ़, गिरनार चम्पा, पावापुरि कैलाशकों।
पूजों सदा चौबीस जिन, निर्वाणभूमि निवासकों।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा।

केशर कपूर सुगन्ध चन्दन, सलिल शीतल विस्तरौं।
भव-तापकौ सन्ताप मेटो, जोर कर विनती करौं।।सम्मेद.।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मोती-समान अखण्ड तन्दुल, अमल आनन्द धरि तरौं।
औगुनहरौ गुनकरौ हमको, जोर कर विनती करौं।।सम्मेद.।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ फूल-रास सुवास-वासित, खेद सब मन को हरौं।
दुखधामकाम विनाश मेरो, जोर कर विनती करौं।।सम्मेद.।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नेवज अनेक प्रकार जोग, मनोग धरि भय परिहरौं।
मम भूखदूखनटार प्रभूजी, जोर कर विनती करौं।।सम्मेद.।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक-प्रकाश उजास उज्ज्वल, तिमिरसेती नहिं डरौं।
संशयविमोहविभरमतमहर, जोर कर विनती करौं।।सम्मेद.।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ धूप परम अनूप पावन, भाव पावन आचरौं।
सब पुञ्जजलायदीज्यौ, जोर कर विनती करौं।।सम्मेद.।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

बहु फल मँगाय चढ़ाय उत्तम, चार गतिसों निरवरौं।
निहचै मुकतिफल देहु मोको, जोर कर विनती करौं।।सम्मेद.।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

श्री चौबीस जिनेश, गिरि कैलाशादिक नमों।
तीरथ महाप्रदेश महापुरुष निरवाणतैं।।

(चौपाई)

नमों ऋषभ कैलाश पहारं, नेमिनाथ गिरनार निहारं।
वासुपूज्य चम्पापुर वन्दौं, सन्मति पावापुर अभिनन्दौं।।
वन्दौं अजित-अजित पददाता, वन्दौं, सम्भव भवदुःख घाता।
वन्दौं अभिनन्दन गुणनायक, वन्दौं सुमति सुमति के दायक।।
वन्दौं पदम मुकति-पदमाकर, वन्दौं सुपास आश-पासाहर।
वन्दौं चन्द्रप्रभ प्रभु चन्दा, वन्दौं सुविधि सुविधिनिधि-कन्दा।।
वन्दौं शीतल अघ-तप-शीतल, वन्दौं श्रेयांस श्रेयांस महीतल।
वन्दौं विमल-विमल उपयोगी, वन्दौं अनन्त अनन्त सुखभोगी।।
वन्दौं धर्म धर्म विस्तारा, वन्दौं शान्ति शान्ति मनधारा।
वन्दौं कुन्थु कुन्थु रखवालं, वन्दौं अर अरि हर गुणमालं।।
वन्दौं मल्लि काम मल चूरन, वन्दौं मुनिसुव्रत व्रत पूरन।
वन्दौं नमि जिन नमित सुरासुर, वन्दौं पास-पास भ्रम जगहर।।
बीसों सिद्धभूमि जा ऊपर, शिखर सम्मेद महागिरि भूपर।
भावसहित बन्दे जो कोई, ताहि नरक पशुगति नहिं होई।।
नरपतिनृप सुर शक्र कहावै, तिहुँ जग भोग भोगि शिव पावै।
विघन विनाशन मंगलकारी, गुण-विलास वन्दौं भवतारी।।

दोहा- **जो तीरथ जावै, पाप मिटावै, ध्यावै गावै, भगति करै।**
ताको जस कहिये, संपति लहिये, गिरि के गुण को, बुध उचरै।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकर निर्वाणक्षेत्रेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये महार्घ्यं निर्वापामीति स्वाहा।

।। पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री अरहंत पूजा

स्थापना

हे परमेष्ठी! हे परमातम! सर्वज्ञ प्रभु केवल ज्ञानी।
हे तीन लोक के अधिनायक! हे धर्म सुधामृत के दानी।।
हे परम शांत जिन वीतराग! प्रभु सर्व चराचर उपकारी।
हे चिदानन्द आनन्द कन्द! अरहन्त प्रभु संकट हारी।।
हे कृपा सिन्धु करुणा निधान! बश इतना सा उपकार करो।
मम् हृदय कमल में आ तिष्ठो! अब मेरा भी उद्धार करो।।

ॐ ह्रीं घातिकर्म विनाशक श्री अरहंत जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं घातिकर्म विनाशक श्री अरहंत जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं घातिकर्म विनाशक श्री अरहंत जिनेन्द्र! अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(वीर छन्द)

भव-भव में जल पीते-पीते, हम तृषा शान्त न कर पाए।
अब जिन पद की गंगा का जल, पाने प्रभु आज चरण आए।।
श्री अरहन्त सकल परमातम, कर्म घातिया नाश किए।
जिन चरणों शीश झुकाते हैं, जो केवल ज्ञान प्रकाश किए।।1।।

ॐ ह्रीं श्री अरहंत जिनेन्द्राय जन्म, जरा, मृत्यु विनाशनाय जलम् निर्वपामीति स्वाहा।

जग के वैभव की चाह दाह, जग में ही भ्रमण कराती है।
प्रभु पद की राह शीघ्रता से, क्षण में भव भ्रमण नशाती है।।
श्री अरहन्त सकल परमातम, कर्म घातिया नाश किए।
जिन चरणों शीश झुकाते हैं, जो केवल ज्ञान प्रकाश किए।।2।।

ॐ ह्रीं श्री अरहंत जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

निज के कृत कर्म निजातम को, इस भव वन में भटकाते हैं।
अक्षत ले पूजन करने से, अक्षय पद में पहुँचाते हैं।।

श्री अरहन्त सकल परमातम, कर्म घातिया नाश किए।
जिन चरणों शीश झुकाते हैं, जो केवल ज्ञान प्रकाश किए ।।3।।

ॐ ह्रीं श्री अरहंत जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

हे नाथ! आपकी पूजा शुभ, मन को नित निर्मल करती है।
श्रद्धा के सुमन चढ़ाने से, भव काम वासना हरती है।।
श्री अरहन्त सकल परमातम, कर्म घातिया नाश किए।
जिन चरणों शीश झुकाते हैं, जो केवल ज्ञान प्रकाश किए।।4।।

ॐ ह्रीं श्री अरहंत जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

व्यंजन तज अनशन करके प्रभु, निज आतमबल प्रगटाए हैं।
नैवेद्य करूँ अर्पित पद में, प्रभु क्षुधा नशाने आए हैं।।
श्री अरहन्त सकल परमातम, कर्म घातिया नाश किए।
जिन चरणों शीश झुकाते हैं, जो केवल ज्ञान प्रकाश किए ।।5।।

ॐ ह्रीं श्री अरहंत जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ये दीप शिखा जगमग करती, होता बाहर में उजियारा।
अब अन्तर ज्ञान का दीप जले, नश जाए मोह का अंधियारा।।
श्री अरहन्त सकल परमातम, कर्म घातिया नाश किए।
जिन चरणों शीश झुकाते हैं, जो केवल ज्ञान प्रकाश किए।।6।।

ॐ ह्रीं श्री अरहंत जिनेन्द्राय महामोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों अंगों में अष्टकर्म, प्रभु मेरे बन्धन डाले हैं।
हम कर्म नशाने हेतु प्रभु, शुभ गंध जलाने वाले हैं।।
श्री अरहन्त सकल परमातम, कर्म घातिया नाश किए।
जिन चरणों शीश झुकाते हैं, जो केवल ज्ञान प्रकाश किए।।7।।

ॐ ह्रीं श्री अरहंत जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नत्रय निधि पाने हेतु प्रभु, शरण हम आपकी आए हैं।
भव भ्रमण नाश मुक्ति पाएँ, इस हेतु विविध फल लाए हैं।।

श्री अरहन्त सकल परमातम, कर्म घातिया नाश किए।
जिन चरणों शीश झुकाते हैं, जो केवल ज्ञान प्रकाश किए ।।8।।

ॐ ह्रीं श्री अरहंत जिनेन्द्राय मोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

यह विविध कर्म के पुÄज प्रभु, सदियों से सताते आए हैं।
हम अष्ट कर्म के नाश हेतु, वसु द्रव्य सजाकर लाए हैं।।
श्री अरहन्त सकल परमातम, कर्म घातिया नाश किए।
जिन चरणों शीश झुकाते हैं, जो केवल ज्ञान प्रकाश किए।।9।।

ॐ ह्रीं श्री अरहंत जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– **कर्म घातिया नाशकर, पावें पद अरहंत ।**
शीश झुकाते चरण में, सुर नर मुनि सब संत ।।

तुम जग जीवन के युग दृष्टा, सद्ज्ञान प्रदाता अर्हन्त देव।
हे धर्म ! तीर्थ के उन्नायक, पुरूषार्थ साध्य साधन सुदेव।।
हे तीर्थंकर ! तब वाणी का, सर्वत्र गूँजता जयकारा।
हे रत्नत्रय! के सूत्र धार, तुमने जग से जग को तारा।।
हे अरिनाशक अरिहंत प्रभु !, कई होते चरणों चमत्कार।
सद् भक्त आपके द्वारे पर, वन्दन करते हैं बार–बार।।
हे तीन लोक के नाथ प्रभु!, सर्वज्ञ देव जिन वीतराग।
हे मानवता के मुक्ति दूत!, न तुमको जग से रहा राग।।
हित मित प्रिय वचनों को जिनेश, यह नियति सदा दोहराएगी।
हे परम पिता ! हे जगत ईश !, प्रकृति भी तव गुण गाएगी।।
तव दर्शन करने से जग के, सारे संकट कट जाते हैं।
जो चरण शरण में आते है, वह मन वांछित फल पाते हैं।।
जो ध्यान प्रभु का करते हैं, दुःख उनके पास न आते हैं।
वह भी अर्हत् बन जाते हैं, जो अर्हन्तों को ध्याते हैं।।

जो सम्यक् दर्शन ज्ञान चरण, अरु सम्यक् तप को पाते हैं।
वह पञ्च महाव्रत समिति पञ्च, अरु इन्द्रिय जय भी पाते हैं।।
मन को स्थिर कर गुप्ती से, षट्आवश्यक पालन करते।
निज हाथों करते केश लुंच, शुभ वीतरागता को धरते।।
करते हैं अतिशय भव्य कई, चरणों में शीश झुकाते हैं।
तब देवलोक से देव कई, जिन भक्ती करने आते हैं।।
प्रभु दर्शन ज्ञान अनन्त वीर्य, सुख अनन्त चतुष्टय पाते हैं।
फिर केवल ज्ञान प्रगट होता, वसु प्रातिहार्य प्रगटाते हैं।।
सब ऋद्धि सिद्धियाँ नत होकर, जिनके चरणों में आतीं हैं।
जो शरणागत बनकर पद में, नत होकर के झुक जाती हैं।।
ऐसा निर्मल पावन पवित्र, जो पद प्रभु तुमने पाया है।
उस पद को पाने हेतु प्रभु, मन मेरा भी ललचाया है।।
जो चलें प्रभु के कदमों पर, वह भी अर्हत् हो जाएगा।
वह कर्म नाशकर अपने सारे, मुक्ति वधु को पाएगा।।
हे धर्म ! ध्वजा के अधिनायक! हे विशद ज्ञान ज्योति ललाम!।
हे कृपा! सिन्धु करुणा निधान! चरणों में हो शत्–शत् प्रणाम।

(छन्द घत्तानंद)

श्री जिनवर स्वामी, अन्तर्यामी, कोटि नमामि जगगाता।
हे जगत् उपाशक, पाप विनाशक, अर्हत् प्रभु जग के ज्ञाता।।

ॐ ह्रीं श्री अरहंत परमेष्ठी जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(कवित्त रूपक)

संयम रतन विभूषण भूषित, नाशक दूषण श्री जिनराज।
सुमति रमा रंजन भव भंजन, तीन लोक के प्रभु सरताज।।
अमल अखण्डित सकल सुमंगल, भव तारक अघ हरन जहाज।
तारण तरण श्री जिन चरणों, आए भाव सुमन ले आज।।

।। इत्याशीर्वाद (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)।।

श्री सिद्ध पूजा

स्थापना

अधिपति हैं प्रभू धवल वन के, स्वर्णिम सौन्दर्य विमल पावन।
अक्षय हैं अनुपम अविनाशी, प्रभु शौर्य आपका मन भावन।।
हे सिद्ध शिला के अधिनायक ! शुभ ज्ञान मूर्ति चैतन्य धाम।
मम् हृदय कमल में आ तिष्ठो, हे चिर ज्योति! अमृत ललाम।।
ये भक्त खड़े हैं चरणों में, इनकी विनती स्वीकार करो।
तुम अहो पतित पावन प्रभुवर, अब मेरा भी उद्धार करो।।

ॐ ह्रीं सर्व कर्म विनाशक सिद्धचक्राधिपते श्री सिद्ध परमेष्ठिन् अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वानन्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(वीर छन्द)

हे प्रभु! हमारे मन के सब, कलुषित भावों को निर्मल कर दो।
हम आया निर्मल नीर लिए, प्रभु सरल भावना से भर दो।।
हे सिद्ध! सनातन अविकारी, मेरे अन्तर में वास करो।
चरणों में दास खड़े भगवन्, जीवन में धर्म प्रकाश भरो।।1।।

ॐ ह्रीं सर्व कर्म विनाशक सिद्धचक्राधिपते श्री सिद्ध परमेष्ठिने जन्म–जरा–मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम भटक रहे हैं सदियों से, संसार ताप का नाश करो।
यह सुरभित चंदन लाये प्रभु, मम् हृदय में ज्ञान सुवास भरो।।
हे सिद्ध! सनातन अविकारी, मेरे अन्तर में वास करो।
चरणों में दास खड़े भगवन्, जीवन में धर्म प्रकाश भरो।।2।।

ॐ ह्रीं सर्व कर्म विनाशक श्री सिद्धचक्राधिपते सिद्धपरमेष्ठिने संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय तंदुल कर में लाये, अक्षय विश्वास लिए उर में।
हम भाव सहित गुणगान करें, भक्ति के गीत भरो स्वर में।।

हे सिद्ध! सनातन अविकारी, मेरे अन्तर में वास करो।
चरणों में दास खड़े भगवन्, जीवन में धर्म प्रकाश भरो।।3।।

ॐ ह्रीं सर्व कर्म विनाशक सिद्धचक्राधिपते श्री सिद्धपरमेष्ठिने अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

विषयों की ज्वाला हे भगवन् ! हम आये आज नशाने को।
श्रद्धा के सुन्दर सुमन लिए, अब आये नाथ चढ़ाने को।।
हे सिद्ध! सनातन अविकारी, मेरे अन्तर में वास करो।
चरणों में दास खड़े भगवन्, जीवन में धर्म प्रकाश भरो।।4।।

ॐ ह्रीं सर्व कर्म विनाशक सिद्धचक्राधिपते श्री सिद्धपरमेष्ठिने कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

अगणित व्यंजन खाए लेकिन, मिट सकी न मन की अभिलाषा।
नैवेद्य चरण में लाये हैं, मिट जाए भोजन की आशा।।
हे सिद्ध! सनातन अविकारी, मेरे अन्तर में वास करो।
चरणों में दास खड़े भगवन्, जीवन में धर्म प्रकाश भरो।।5।।

ॐ ह्रीं सर्व कर्म विनाशक सिद्धचक्राधिपते श्री सिद्धपरमेष्ठिने क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अन्तर में मोह तिमिर छाया, इसने जग में भरमाया है।
अब मोह अंध के नाश हेतु, भावों का दीप जलाया है।।
हे सिद्ध! सनातन अविकारी, मेरे अन्तर में वास करो।
चरणों में दास खड़े भगवन्, जीवन में धर्म प्रकाश भरो।।6।।

ॐ ह्रीं सर्व कर्म विनाशक सिद्धचक्राधिपते श्री सिद्धपरमेष्ठिने महामोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

फंस कर के जग मिथ्यामति में, सारे जग को अपनाये हैं।
अब धूप दहन करके भगवन्, भव कर्म जलाने आए हैं।।
हे सिद्ध! सनातन अविकारी, मेरे अन्तर में वास करो।
चरणों में दास खड़े भगवन्, जीवन में धर्म प्रकाश भरो।।7।।

ॐ ह्रीं सर्व कर्म विनाशक सिद्धचक्राधिपते श्री सिद्धपरमेष्ठिने अष्ट कर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

भोगों में मानस रमता है, पर तृप्त कभी न हो पाए।
अब मोक्ष महाफल पाने को, यह भाव सहित फल ले आए।।
हे सिद्ध! सनातन अविकारी, मेरे अन्तर में वास करो।
चरणों में दास खड़े भगवन्, जीवन में धर्म प्रकाश भरो।।8।।

ॐ ह्रीं सर्व कर्म विनाशक सिद्ध चक्राधिपते श्री सिद्धपरमेष्ठिने मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

होगा अनन्त सुख प्राप्त हमें, यह भाव बनाकर लाये हैं।
हम अष्ट गुणों की सिद्धि हेतु, यह अर्घ्यं बनाकर आये हैं।।
हे सिद्ध! सनातन अविकारी, मेरे अन्तर में वास करो।
चरणों में दास खड़े भगवन्, जीवन में धर्म प्रकाश भरो।।9।।

ॐ ह्रीं सर्व कर्म विनाशक सिद्धचक्राधिपते श्री सिद्धपरमेष्ठिने अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– **सिद्ध अनन्तानन्त पद, वन्दन करें त्रिकाल ।**
अष्ट मूलगुण प्राप्त जिन, की गाएँ जयमाल ।।

पद्धडि छंद

जय–जय अखण्ड चैतन्य रूप, तुम ज्ञान मात्र ज्ञायक स्वरूप।
रागादि विकारी भाव हीन, तुम हो चित् चेतन ज्ञान लीन।।
निर्द्वन्द निराकुल निर्विकार, निर्मम निर्मल हो निराधार।
कर राग द्वेष नो कर्म नाश, स्वभाविक गुण में किए वास।।
जय शिव वनिता के हृदय हार, प्रभु नित्य निरंजन निराकार।
कर निज परिणति का सत्य भान, सद्धर्म रूप शुभ तत्त्व ज्ञान।।
प्रभु अशरीरी चैतन्यराज, अविरूद्ध शुद्ध शिव सुख समाज।
सम्यक्त्व सुदर्शन ज्ञानवान, सूक्ष्मत्व अगुरुलघु सुगुण खान।।

अवगाह वीर्य सुख निराबाध, प्रभु धर्म सरोवर हैं अगाध।
प्रभु अशुभ कर्म को मान हेय, माना चित् चेतन उपादेय।।
रागादि रहित निर्मल निरोग, स्वाश्रित शाश्वत् शुभ सुखद भोग।
कुल गोत्र रहित निश्कुल निश्छल, मायादि रहित निश्चल अविकल।।
चैतन्य पिण्ड निष्कर्म साध्य, तुम हो प्रभु भविजन के आराध्य।
मनसिज ज्ञायक प्रतिभाष रूप, हे स्वयं सिद्ध! चैतन्य भूप।।
चैतन्य विलासी द्रव प्रमाण, नाशे प्रभु सारे कर्म बाण।
प्रभु जान के हम तुम्हें आज, हो गये सफल सम्पूर्ण काज।।
प्रगट्यो मम् उर में भेद ज्ञान, न तुम सम है कोई महान।
तुम पर के कर्त्ता नहीं नाथ, हम जोड़ प्रार्थना करें हाथ।।
तुम ज्ञाता सबके एक साथ, तव चरणों में झुक गया माथ।
ये भक्त खड़े हैं विनयवन्त, प्रभु करो शीघ्र भव का सुअन्त।।
अब हमने भी यह लिया जान, तुम करते सबको निज समान।
जय वीतराग चैतन्य वान, जय-जय अनन्त गुण के निधान।।
तुममें पर का कुछ नहीं लेश, तुम हो जग के ज्ञायक जिनेश।
जो करें आपका 'विशद' ध्यान, वह पाते हैं कैवल्य ज्ञान।।
फिर करें कर्म का पूर्ण अन्त, हो जाएँ क्षण में श्री संत।
तब सिद्ध सिला पर हो विश्राम, निज पद ही हो आनन्द धाम।।
मेरे मन आवें यही देव, बन जाएँ हम भी विशद एव।
मिट जाए आवागमन नाथ, वह पद पाने पद झुका माथ।।

(छन्द घत्तानन्द)

श्री सिद्ध अनन्ता, शिव तिय कन्ता, वीतराग विज्ञान परं।
जय जग उद्धारं शिव दातारं, सर्व मनोहर सौंख्य करं।।

ॐ ह्रीं सर्व कर्म विनाशक अनन्तानन्त श्री सिद्ध परिमेष्ठिभ्यो अनर्घ पद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा – चिदानन्द चिद् ब्रह्म में, चिर निमग्न चैतन्य।
चित् चिन्तन चिद्रूप हो, चिन्मय चेतन जन्य।।

इत्याशीर्वादः (पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

आचार्य परमेष्ठी की पूजन

स्थापना

हे विश्व वंद्य! हे करुणानिधि! वात्सल्य मूर्ति हे रत्नाकर !
हे युग प्रधान! हे वर्धमान! हे सौम्यमूर्ति ! हे करुणाकर ।।
त्रैलोक्य पूज्य हे समदृष्टा! हे पुण्य-पुंज ! ऋषिवर प्रधान।
हे ज्ञान सूर्य! आचार्य प्रवर, तव 'विशद' हृदय में आह्वानन्।।
हे गुरुवर ! गुरु गुण के धारी, हमको सद् राह दिखा दीजे।
हे मोक्ष मार्ग के अधिनायक !, हमको गुरु चरण-शरण लीजे।।

ॐ ह्रूँ श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वानन् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

कर्म कलंक पंक मल धोने, निर्मल जल भर लाये हैं।
जन्म जरा मृतु रोग नशाने, गुरु चरणों में आये हैं।।
भाव सहित हम विशद योग से, चरणों शीश झुकाये हैं।
भव सागर से पार करो गुरु, तव चरणों में आये हैं।।1।।

ॐ ह्रूँ श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो जन्म, जरा, मृत्यु, विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

चमक-दमक मय महक मनोहर, मंगल चंदन लाये हैं।
पाप शाप संताप मिटाने, गुरु गुण गाने आये हैं।।
भाव सहित हम विशद योग से, चरणों शीश झुकाये हैं।
भव सागर से पार करो गुरु, तव चरणों में आये हैं।।2।।

ॐ ह्रूँ श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।

अक्षय अक्षत अनुपम सुन्दर, अंजलि भरकर लाये हैं।
अक्षय पद हो प्राप्त हमें गुरु, चरण शरण में आये हैं।।

भाव सहित हम विशद योग से, चरणों शीश झुकाये हैं।
भव सागर से पार करो गुरु, तव चरणों में आये हैं।।3।।

ॐ ह्रूँ श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन से रंजित अक्षत हम, फूल मानकर लाये हैं।
काम वासना नाश करो गुरु, पद में सुमन चढ़ाये हैं।।
भाव सहित हम विशद योग से, चरणों शीश झुकाये हैं।
भव सागर से पार करो गुरु, तव चरणों में आये हैं।।4।।

ॐ ह्रूँ श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ नैवेद्य श्रीफल द्वारा, श्रेष्ठ बनाकर लाये हैं।
क्षुधा वेदना शान्त करो गुरु, तव चरणों को ध्याये हैं।।
भाव सहित हम विशद योग से, चरणों शीश झुकाये हैं।
भव सागर से पार करो गुरु, तव चरणों में आये हैं।।5।।

ॐ ह्रूँ श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्न जड़ित शुभ दीप सुमंगल, आरती करने लाये हैं।
निशा नाश हो मोह तिमिर की, तुम सा बनने आये हैं।।
भाव सहित हम विशद योग से, चरणों शीश झुकाये हैं।
भव सागर से पार करो गुरु, तव चरणों में आये हैं।।6।।

ॐ ह्रूँ श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

महकें दशों दिशायें जिससे, धूप दशांगी लाये हैं।
अष्ट कर्म का दमन करो गुरु, कर्म शमन को आये हैं।।
भाव सहित हम विशद योग से, चरणों शीश झुकाये हैं।
भव सागर से पार करो गुरु, तव चरणों में आये हैं।।7।।

ॐ ह्रूँ श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ऐला केला आम सुपाड़ी, लोंग श्रीफल लाये हैं।
मोक्ष महाफल पाने को शुभ, भाव बनाकर आये हैं।।
भाव सहित हम विशद योग से, चरणों शीश झुकाये हैं।
भव सागर से पार करो गुरु, तव चरणों में आये हैं।।8।।

ॐ ह्रूँ श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल फलादि वसु द्रव्य सु सुंदर, थाल संजोकर लाये हैं।
पद अनर्घ पाने को गुरुवर, अर्घ्य चढ़ाने आये हैं।।
भाव सहित हम विशद योग से, चरणों शीश झुकाये हैं।
भव सागर से पार करो गुरु, तव चरणों में आये हैं।।9।।

ॐ ह्रूँ श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– भरा हुआ जिनके हृदय, जीवों से अनुराग।
मुक्ति के राही परम, नहीं किसी से राग ।।
भरत भूमि को धन्य कर, लिया आप अवतार।
मात पिता जननी सभी, मान रहे उपकार।।

तर्ज – भक्तामर की (वीर छंद)

सम्यक् श्रद्धा की गुण मणियाँ, मोह तिमिर की हैं नाशक।
चित् स्वरूप चेतन के गुण की, दिनकर सम हैं जो भासक।।
सम्यक् श्रद्धा हम पा जायें, गुरुवर दो हमको आशीष।
श्री आचार्य प्रवर के चरणों, झुका रहे हम अपना शीश।।
लोकालोक प्रकाशित करता, भव्य जनों को सम्यक् ज्ञान।
चेतन और अचेतन का तब, स्वयं आप हो जाता भान।।
सम्यक् ज्ञान निधि देने को, गुरुवर बन जाओ आदीष।
श्री आचार्य प्रवर के चरणों, झुका रहे हम अपना शीश ।।

कर्म कालिमा का नाशक है, पृथ्वी तल पर सदाचरण।
सत् संयम पालन करने को, संतों की है श्रेष्ठ शरण।।
सम्यक् चारित पाने हेतू, चरणों में झुकते आधीष।
श्री आचार्य प्रवर के चरणों, झुका रहे हम अपना शीश।।
शीतल आभा से विकसित है, जैसे नभ से चन्द्र किरण।
चेतन को कुंदन करता है, जग में सम्यक् तपश्चरण।।
सम्यक् तप की अभिलाषा है, चरण शरण दो हमें मुनीश।
श्री आचार्य प्रवर के चरणों, झुका रहे हम अपना शीश।।
निज शक्ती को नहीं छिपाकर, पालन करते वीर्याचार।
शुभ भावों से स्वयं शुद्ध हो, हो जाते हैं भव से पार।।
वीर्याचार करूँ मैं पालन, गुरुवर ऐसा दो आशीष।
श्री आचार्य प्रवर के चरणों, झुका रहे हम अपना शीश।।
पंच महाव्रत समिति गुप्ति तिय, षट् आवश्यक पाल रहे।
पंचेन्द्रियों पर विजय प्राप्त कर, पंचाचार संभाल रहे।।
वाणी से वचनामृत देते, भव्यजनों को हे वागीश !
श्री आचार्य प्रवर के चरणों, झुका रहे हम अपना शीश।।
उत्तम क्षमा आदि धर्मो का, पालन करते जो निर्दोष।
द्वादश अनुप्रेक्षा के चिंतक, गुरुवर रत्नत्रय के कोष।।
रत्नत्रय का दान हमें दो, 'विशद' योग से हे योगीश!।
श्री आचार्य प्रवर के चरणों, झुका रहे हम अपना शीश।।

दोहा – छत्तिस गुण धारी परम, करते तुम्हें प्रणाम।
चरण शरण के दास की, भक्ति फले अविराम।।

ॐ हूँ श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो अनर्घ पद प्राप्ताय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– चरण शरण के दास की, लगी है मन में आश।
ज्ञान ध्यान तप शील का, नित प्रति होय विकास।।

इत्याशीर्वादः (पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

उपाध्याय परमेष्ठी की पूजन

स्थापना

ग्यारह अंग पूर्व चौदह के, धारी जो ज्ञाता विद्वान।
रत्नत्रय का पालन करते, उपाध्याय हैं सर्व महान्।।
वीतराग, निर्ग्रन्थ दिगम्बर, निर्विकार अविकारी हैं।
मोक्षमार्ग के अधिनायक गुरु, जग में मंगलकारी हैं।।
करते ज्ञानाभ्यास निरन्तर, संतों को करवाते हैं।
उपाध्याय का आह्वानन् कर, अपने हृदय बसाते हैं।।

ॐ ह्रीं रत्नत्रय धारक श्री उपाध्याय परमेष्ठिन्! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्, अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

सहज सुनिर्मल जल के अनुपम, कलश भरें मंगलकारी।
त्रिविधि रोग का नाश होय मम्, पद पाएँ हम अविकारी।।
उपाध्याय की चरण वन्दना, करके पाएँ सम्यक् ज्ञान।
मोक्ष मार्ग पर चलें हमेशा, पाएँ हम पद निर्वाण ।।1।।

ॐ ह्रीं श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलम् निर्व.स्वाहा।

सम्यक् ज्ञान का शीतल चंदन, भव आतप का करता नाश।
मोह महातम हरता है जो, करता ज्ञान स्वरूप प्रकाश।।
उपाध्याय की चरण वन्दना, करके पाएँ सम्यक् ज्ञान।
मोक्ष मार्ग पर चलें हमेशा, पाएँ हम पद निर्वाण।।2।।

ॐ ह्रीं श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो संसार ताप विनाशनाय चंदनम् निर्वपामीति स्वाहा।

पावन सहज भाव के अक्षत, अक्षय पद प्रगटाते हैं।
पुण्य पाप आस्रव के कारण, उनका नाश कराते है।।

उपाध्याय की चरण वन्दना, करके पाएँ सम्यक् ज्ञान।
मोक्ष मार्ग पर चलूँ हमेशा, पा जाएँ हम पद निर्वाण।।3।।

ॐ ह्रौं श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक् ज्ञान के पुष्पों की शुभ, गंध परम सुखदायी है।
काम बाण की नाशक है जो, महाशील शिवदायी है।।
उपाध्याय की चरण वन्दना, करके पाएँ सम्यक् ज्ञान।
मोक्ष मार्ग पर चलूँ हमेशा, पा जाएँ हम पद निर्वाण।।4।।

ॐ ह्रौं श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो कामबाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षुधा अग्नि से बहुत दुखी हम, तृप्त नहीं हो पाते हैं।
परम तृप्ति दायक समभावी, चरुवर परम चढ़ाते हैं।।
उपाध्याय की चरण वन्दना, करके पाएँ सम्यक् ज्ञान।
मोक्ष मार्ग पर चलूँ हमेशा, पा जाएँ हम पद निर्वाण।।5।।

ॐ ह्रौं श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम विशद ज्ञान के दीपक, मोह महातम नाशक हैं।
मिथ्यातम के पूर्ण विनाशक, लोकालोक प्रकाशक हैं।।
उपाध्याय की चरण वन्दना, करके पाएँ सम्यक् ज्ञान।
मोक्ष मार्ग पर चलूँ हमेशा, पा जाएँ हम पद निर्वाण।।6।।

ॐ ह्रौं श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो महामोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

केवलज्ञान की धूप मनोहर, अष्ट कर्म की नाशक है।
नित्य निरन्जन शिव सुखदायी, आतम ध्यान विकाशक है।।
उपाध्याय की चरण वन्दना, करके पाएँ सम्यक् ज्ञान।
मोक्ष मार्ग पर चलूँ हमेशा, पा जाएँ हम पद निर्वाण।।7।।

ॐ ह्रौं श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सहज स्वभावी आत्म ध्यान के, रसमय फल सुखदायक हैं।
रत्नत्रय के पावन फल ही, मोक्ष मार्ग दर्शायक हैं।।
उपाध्याय की चरण वन्दना, करके पाएँ सम्यक् ज्ञान।
मोक्ष मार्ग पर चलूँ हमेशा, पा जाएँ हम पद निर्वाण।।8।।

ॐ ह्रौं श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो महामोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम अष्ट द्रव्य का पावन, अर्घ्य परम आनन्द मयी।
पद अनर्घ अपवर्ग रूप है, मंगलमय त्रैलोक्य जयी।।
उपाध्याय की चरण वन्दना, करके पाएँ सम्यक् ज्ञान।
मोक्ष मार्ग पर चलूँ हमेशा, पा जाएँ हम पद निर्वाण।।9।।

ॐ ह्रौं श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा – उपाध्याय की वन्दना, करते रहें त्रिकाल ।
विशद भाव से गा रहे, तिन गुण की जयमाल ।।

(पद्धडि छन्द)

जय उपाध्याय मुनिवर महान्, जय ज्ञान ध्यान चारित्रवान।
जय नग्न दिगम्बर रूप धार, शुभ वीतराग मय निर्विकार।।
जय मिथ्यातम नाशक मुनीश, तव चरण झुकावे शीश ईश।
जय आर्त्त रौद्र द्वय ध्यान हीन, जय धर्म शुक्ल में हुए लीन।।
जय मोह सुभट का नाश कीन, जय आत्म ज्ञान गत गुण प्रवीण।
जय आतापन आदि योग धार, जो करते हैं निज में विहार।।
जय सम्यक् दर्शन ज्ञान पाय, जय सम्यक् चारित्र उर वसाय।
जय विषय भोग का कर विनाश, जय त्याग किए सब जगत आश।।

जय विद्वत रत्न कहे मुनीश, कई भक्त झुकाते चरण शीश।
नित प्राप्त करें सम्यक् सुज्ञान, शिष्यों को दे सद् ज्ञान दान।।
जय करें जगत कुज्ञान नाश, जय करें धर्म का सद् प्रकाश।
जाय काम कषाएँ किए क्षीण, जय तत्त्व देशना में प्रवीण।।
जय अंग सु एकादश प्रमाण, जय चौदह पूरव लिए जान।
हो गये आप इनके सुनाथ, तव चरण झुकावें भक्त माथ।।
जय धर्म अहिंसा लिए धार, जय गमन करें पग-पग विचार।
जय सौम्य मूर्ति हैं परम शांत, मुद्रा दिखती है अति प्रशांत।।
जय-जय गुण गरिमा जग प्रधान, जय भव्य कमल विज्ञान वान।
जय-जय परमेष्ठी हुए आप, जय भव्य भ्रमर तव करें जाप।।
जय-जय करुणाकर कृपावन्त, तब हुए जगत् में सकल संत।
आध्यात्म रसिक हो सुगुण खान, जय ज्ञानामृत का करें पान।।
तुम पाए गुण जग में अपार, तव चरणों करते नमस्कार।
हमको गुरु भव से करो पार, हमको भी दो गुरु तत्त्व सार।।

(छन्द घत्तानन्द)

जय सम्यक् ज्ञानी, विद्या दानी, उपाध्याय के गुण गाएँ।
भव ताप निवारी, बहुगुण धारी, ज्ञान पुजारी को ध्याएँ।।

ॐ ह्रीं पंचविंशतिगुण प्राप्त श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

दोहा – **उपाध्याय को पूजकर, पाते ज्ञान निधान।**
सुख शांति को प्राप्त कर, पाएँ पद निर्वाण।।

।। इत्याशीर्वाद ।। (पुष्पांजलिं क्षिपामि)

सर्व साधु पूजन

स्थापना

जो पंच भरत ऐरावत में, रहते हैं बीस विदेहों में।
कम तीन कोटि नव संत विशद, फँसते न गेह सनेहों में।।
जिन संतों के सद्गुण पाने, हम उनके गुण को गाते हैं।
हम भाव सहित पूजा करते, चरणों में शीश झुकाते हैं।।
जो रत्नत्रय के धारी हैं, हम करते उनका आह्वानन्।
चरणों में सर्व साधुओं के, शत् शत् वन्दन शत्-शत् वन्दन।।

ॐ ह्रः अष्टाविंशति मूलगुण प्राप्त श्री सर्व साधु परमेष्ठिभ्यो अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वानन्, अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं, अत्र मम् सन्निहितौ भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(गीता छंद)

तजें मिथ्या मोह मद को, भाव समकित से भरें ।
ज्ञान का निर्मल सलिल ले, चरण में अर्पित करें ।।
विषय आशा को तजें हम, करें शिवसुख का यतन।
लोकवर्ती साधुओं के, चरण में शत्-शत् नमन्।।1।।

ॐ ह्रः अष्टाविंशति मूलगुण प्राप्त श्री सर्व साधु परमेष्ठिभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भूलकर निज को हमारा, बढ़ रहा संसार है।
चरण चन्दन में चढ़ाएँ, पाना भव से पार है।।
विषय आशा को तजें हम, करें शिवसुख का यतन।
लोकवर्ती साधुओं के, चरण में शत्-शत् नमन्।।2।।

ॐ ह्रः अष्टविंशति मूलगुण प्राप्त श्री सर्व साधु परमेष्ठिभ्यो संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

भव भ्रमण का नाश हो मम्, विषय भावों को ततें।
धवल अक्षत हम चढ़ाएँ, साम्यभावों से सजें।।

विषय आशा को तजें हम, करें शिवसुख का यतन।
लोकवर्ती साधुओं के, चरण में शत्-शत् नमन्।।3।।

ॐ ह्रः अष्टाविंशति मूलगुण प्राप्त श्री सर्व साधु परमेष्ठिभ्यो अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

चित्त विचलित कर रहा यह, प्रबल कारी काम है।
पुष्प अर्पित करें पद में, कई जिनके नाम हैं।।
विषय आशा को तजें हम, करें शिवसुख का यतन।
लोकवर्ती साधुओं के, चरण में शत्-शत् नमन् ।।4।।

ॐ ह्रः अष्टाविंशति मूलगुण सहित सर्व साधु परमेष्ठिभ्यो कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षुधा की पीड़ा सताती, पूर्ण न होवे कभी।
सरस व्यंजन हम चढ़ाएँ, करें अर्पित हम सभी।।
विषय आशा को तजें हम, करें शिवसुख का यतन।
लोकवर्ती साधुओं के, चरण में शत्-शत् नमन्।।5।।

ॐ ह्रः अष्टाविंशति मूलगुण सहित सर्वसाधु परमेष्ठिभ्यो क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तम घना मिथ्यात्व का है, नाश उसका हम करें।
ज्ञान के दीपक जलाकर, तिमिर को भी परि हरें।।
विषय आशा को तजें हम, करें शिवसुख का यतन।
लोकवर्ती साधुओं के, चरण में शत्-शत् नमन्।।6।।

ॐ ह्रः अष्टाविंशति मूलगुण सहित सर्व साधु परमेष्ठिभ्यो मोह अन्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

भ्रमण करते फिर रहे हैं, हम अनादि से विभो!
अष्ट कर्मो को जलाएँ, धूप अग्नि में प्रभो!

विषय आशा को तजें हम, करें शिवसुख का यतन ।
लोकवर्ती साधुओं के, चरण में शत्-शत् नमन्।।7।।

ॐ ह्रः अष्टाविंशति मूलगुण सहित सर्व साधु परमेष्ठिभ्यो अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल अनेकों पाए लेकिन, हुए सारे ही विफल।
हम विविध फल चरण लाये, प्राप्त हो अब मोक्षफल।।
विषय आशा को तजें हम, करें शिवसुख का यतन।
लोकवर्ती साधुओं के, चरण में शत्-शत् नमन् ।।8।।

ॐ ह्रः अष्टविंशति मूलगुण सहित सर्व साधु परमेष्ठिभ्यो मोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट द्रव्य का अर्घ्य लेकर, करें हम अर्पित चरण।
महाव्रतादि प्राप्त करके, पाएँ हम पण्ड़ित मरण।।
विषय आशा को तजें हम, करें शिवसुख का यतन।
लोकवर्ती साधुओं के, चरण में शत्-शत् नमन्।।9।।

ॐ ह्रः अष्टविंशति मूलगुण सहित सर्व साधु परमेष्ठिभ्यो अनर्घ पद प्राप्ताय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा – विषयाशा का त्याग कर, पालें गुण अठबीस।
तिन गुण की जयमाल कर, 'विशद' झुकाएँ शीश ।।

जय वीतरागधारी मुनीश, तव पद में वन्दन करें ईश।
जय पंच महाव्रत लिए धार, जो समिति पालते कर विचार।।
जय-मन इन्द्रिय को वश करेय, फिर षट् आवश्यक चित्त देय।
मुनि क्षिति शयन गुण रहे पाल, निज हाथों नोचे स्वयं बाल।।
जय वस्त्राभूषण किए त्याग, जिनको तन से न रहा राग।
जय स्थित होकर लें आहार, जो लघु भोजन लें एक बार।।

जय न्हवन आदि छोड़ें मुनीश, तिनके चरणों मम् झुका शीश ।
जय दातुन मंजन दिए छोड़, भोगों से नाता लिए तोड़।।
सब जीवों के रक्षक मुनीश, जय सत्य महाव्रत धार ईश।
जय व्रत के धारी हैं अचौर्य, जय ब्रह्मचर्य का लेय शौर्य।।
जय परिग्रह चौबीस त्यागहीन, जो वीतराग मय ध्यान लीन।
जय चार हाथ भूमि विहार, शुभ देखभाल करते निहार।।
जय वचन बोलते कर विचार, अरु भूमि शोध करते निहार।
जय देख शोध लेवें अहार, जो वस्तु रख लेवें विचार।।
व्युत्सर्ग समिति में प्रवीण, वीतराग मय ध्यान लीन।
जय स्पर्शन को लिए जीत, जो रसना के न हुए मीत।।
जय गंध दोय जीते मुनीश, चक्षु इन्द्रिय के बने ईश।
जय कर्णेन्द्रिय के विषय जीत, सब त्याग किए हैं बाद्य गीत।।
मुनि अट्ठाईस गुण रहे पाल, वह त्याग किए सब जगत् जाल।
हम करते वन्दन जोड़ हाथ, उनके चरणों यह झुका माथ।।
हम लेकर आए द्रव्य साथ, अब करो कर्म का गुरु घात।
यह भक्त खड़े हैं लिए आस, अब दीजे हमको मुक्तिवास।।

(छन्द घत्तानन्द)

मुनि अविकारी, संयम धारी, रत्नत्रय के कोष महान्।
मंगलकारी, ज्ञान पुजारी, वीतरागता के विज्ञान।।

ॐ ह्रीं अष्टाविंशति गुण सहित श्री साधु परमेष्ठिभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा – रत्नत्रय को पालते, सर्व साधु निर्ग्रन्थ।
उनके गुण हम पा सकें, होय कर्म का अन्त।।

।। इत्याशीर्वादः।। पुष्पांजलिं क्षिपेत्

श्री सिद्ध यंत्र (विनायक यंत्र) पूजा

स्थापना

दोहा– परमेष्ठी जिन पाँच हे !, मंगल आदि तीन।
अत्र तिष्ठ मम् हृदय में, करो विघ्न सब क्षीण।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्वसाधु परमेष्ठिन् मंगल लोकोत्तम शरण भूत ! अत्रावतर संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्वसाधु परमेष्ठिन् मंगल लोकोत्तम शरण भूत ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्वसाधु परमेष्ठिन् मंगल लोकोत्तम शरण भूत ! अत्र मम् सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणं।

स्वच्छ जल यह तीर्थ का हम, अर्चना को लाए हैं।
जन्म, मृत्यु अरु जरा को, नाश करने आए हैं।।
पञ्च परमेष्ठी जगत् में, चार मंगल हैं महा।
चार उत्तम लोक में शुभ, शरण पाऊँ मैं अहा।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्वसाधु परमेष्ठिन् मंगल लोकोत्तम शरणेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ चन्दन यह सुगन्धित, परम शीतल लाए हैं।
नाश हो भव ताप निर्मल, चित्त से हम आए हैं।।
पञ्च परमेष्ठी जगत् में, चार मंगल हैं महा।
चार उत्तम लोक में शुभ, शरण पाऊँ मैं अहा।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्वसाधु परमेष्ठिन् मंगल लोकोत्तम शरणेभ्यो चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

धवल अक्षत मोतियों सम, स्वच्छ धोकर लाए हैं।
मिले अक्षय पद हमें अब, कर्म से घबड़ाए हैं।।

पञ्च परमेष्ठी जगत् में, चार मंगल हैं महा।
चार उत्तम लोक में शुभ, शरण पाऊँ मैं अहा।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्वसाधु परमेष्ठिन् मंगल लोकोत्तम शरणेभ्यो अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

विविध वर्णों के सरस शुभ, फूल जो महकाए हैं।
नाश हो मम् काम बाधा, हम चढ़ाने लाए हैं।।
पञ्च परमेष्ठी जगत् में, चार मंगल हैं महा।
चार उत्तम लोक में शुभ, शरण पाऊँ मैं अहा।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्वसाधु परमेष्ठिन् मंगल लोकोत्तम शरणेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

शर्करा घृत का मनोहर, शुद्ध चरुवर लाए हैं।
क्षुधा बाधा नाश हेतु, हम चढ़ाने आए है।।
पञ्च परमेष्ठी जगत् में, चार मंगल हैं महा।
चार उत्तम लोक में शुभ, शरण पाऊँ मैं अहा।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्वसाधु परमेष्ठिन् मंगल लोकोत्तम शरणेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्ण रत्नों से सुसज्जित, दीप मनहर लाए हैं।
मोह का तम नाश करके, ज्ञान पाने आए हैं।।
पञ्च परमेष्ठी जगत् में, चार मंगल हैं महा।
चार उत्तम लोक में शुभ, शरण पाऊँ मैं अहा।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्वसाधु परमेष्ठिन् मंगल लोकोत्तम शरणेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप अग्नि में जलाने, यह दशांगी लाए हैं।
कर्म आठों नाश करने, हम शरण में आए हैं।।

पञ्च परमेष्ठी जगत् में, चार मंगल हैं महा।
चार उत्तम लोक में शुभ, शरण पाऊँ मैं अहा।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्वसाधु परमेष्ठिन् मंगल लोकोत्तम शरणेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

विविध अनुपम सरस फल यह, हम चढ़ाने लाए हैं।
मोक्ष पद हो प्राप्त हमको, भाव से हम आए हैं।।
पञ्च परमेष्ठी जगत् में, चार मंगल हैं महा।
चार उत्तम लोक में शुभ, शरण पाऊँ मैं अहा।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्वसाधु परमेष्ठिन् मंगल लोकोत्तम शरणेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट द्रव्यों से बनाकर, अर्घ्य हम यह लाए हैं।
पद हमें हो प्राप्त अनुपम, वन्दना को आए हैं।।
पञ्च परमेष्ठी जगत् में, चार मंगल हैं महा।
चार उत्तम लोक में शुभ, शरण पाऊँ मैं अहा।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्वसाधु परमेष्ठिन् मंगल लोकोत्तम शरणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शम्भू छन्द)

हे जिनेन्द्र! तुमने अनादि की, भव सन्तति का नाश किया।
अर्हत् पदवी को पाकर के, केवलज्ञान प्रकाश किया।।
चरण कमल में प्रभो! आपके, भाव सहित करते अर्चन।
मोक्षमार्ग के परम प्रकाशक, करते हम शत् शत् वन्दन।।

ॐ ह्रीं अनन्तचतुष्टय समवशरण लक्ष्मी विभ्रतेऽर्हत्परमेष्ठिनेऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट कर्म का नाश किए प्रभु, भाव कर्म का किए विनाश।
चित् चैतन्य स्वरूप निरत हो, निज स्वभाव में कीन्हे वास।।

जिन त्रैकालिक सिद्ध प्रभु को, भाव सहित करते अर्चन।
चरण कमल में विशद भाव से, करते हैं शत् शत् वन्दन।।

ॐ ह्रीं अष्टकर्म काष्ठगणं भस्मीकुर्वर्त सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्चाचार परायण हैं जो, शिक्षा–दीक्षा के दाता।
सप्त तत्व छह द्रव्य धर्म अरु, नय प्रमाण के हैं ज्ञाता।।
जैनाचार्य लोक में पूजित, का हम करते हैं अर्चन।
चरण कमल में विशद भाव से, करते हैं शत् शत् वन्दन।।

ॐ ह्रीं पञ्चाचार परायणाचार्य परमेष्ठिने अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रव्य अर्थ श्रुत तत्त्व बोध के, ज्ञाता मुनिवर लोक महान्।
अध्ययन अध्यापन में रत जो, उपाध्याय सद्गुण की खान।।
द्वादशांग श्रुत को करते हैं, भाव सहित हम भी अर्चन।
चरण कमल में विशद भाव से, करते हैं शत् शत् वन्दन।।

ॐ ह्रीं द्वादशांगपठन पाठनोद्यतायोपाध्याय परमेष्ठिनेऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मरूप पर्वत के भेत्ता, द्वय प्रकार तप के धारी।
शैय्याशन जिनकी विविक्त है, निर्विकार हैं अविकारी।।
रत्नत्रय रत सर्व साधु का, भाव सहित करते अर्चन।
चरण कमल में विशद भाव से, करते हैं शत् शत् वन्दन।।

ॐ ह्रीं त्रयोदश प्रकार चारित्राराधक साधु परमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(जोगीरासा छन्द)

सुरनर विद्याधर से पूजित, अर्हत् मंगल गाये।
जल फल आदि अष्ट द्रव्य ले, हम पूजा को आये।।

मंगलमय जीवन हो मेरा, विशद भावना भाते।
तीन योग से चरण कमल में, सादर शीष झुकाते।।

ॐ ह्रीं सर्व विघ्न शांतिकर अर्हन्मंगलार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

ध्रौव्योत्पाद विनाश रूप जो, अखिल वस्तु को जाने।
परम सिद्ध परमेष्ठी को, हम मंगलमय पहिचाने।।
मंगलमय जीवन हो मेरा, विशद भावना भाते।
तीन योग से चरण कमल में, सादर शीष झुकाते।।

ॐ ह्रीं सर्व विघ्न शांतिकर सिद्धमंगलायार्घं निर्वापामीति स्वाहा।

सद्दर्शन कृत वैभव पाए, सर्व साधु अविकारी।
रोग उपद्रव मृग मृगेन्द्र सम, दूर भागते भारी।।
मंगलमय जीवन हो मेरा, विशद भावना भाते।
तीन योग से चरण कमल में, सादर शीष झुकाते।।

ॐ ह्रीं सर्व विघ्न शांतिकर साधुमंगलायार्घं निर्वापामीति स्वाहा।

केवलज्ञानी द्वारा भव शत, जैन धर्म को जानो।
सर्व लोक में मंगलमय सु, मंगलकारी मानो।।
मंगलमय जीवन हो मेरा, विशद भावना भाते।
तीन योग से चरण कमल में, सादर शीष झुकाते।।

ॐ ह्रीं सर्व विघ्न शांतिकर केवलिप्रज्ञप्त धर्मायार्घं निर्वापामीति स्वाहा।

(गीता छन्द)

लोकोत्तम जिनराज पदाम्बुज, की सेवा सुखकारी।
ऋद्धि सिद्धी प्रदायक उत्तम, दोष नाशनहारी।।

जल फल आदि अष्ट द्रव्य ले, भाव सहित करते अर्चन।
अर्हत् गुण भागी बन जाऊँ, करता मैं शत् शत् वन्दन।।
ॐ ह्रीं सर्व विघ्न शांतिकर अर्हल्लोकोत्तमायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वदोष से च्युत होकर के, सिद्ध शिला पर कीन्हे वास।
सिद्ध लोक में उत्तम हैं जो, करते लोकालोक प्रकाश।।
जल फल आदि अष्ट द्रव्य ले, भाव सहित करते अर्चन।
अर्हत् गुण भागी बन जाऊँ, करता मैं शत् शत् वन्दन।।
ॐ ह्रीं सर्व विघ्न शांतिकर सिद्धलोकोत्तमायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्र नरेन्द्र सुरेन्द्रादि से, अर्चित संयम तपधारी।
सर्वसाधु लोकोत्तम जग में, सर्व जगत् मंगलकारी।।
जल फल आदि अष्ट द्रव्य ले, भाव सहित करते अर्चन।
अर्हत् गुण भागी बन जाऊँ, करता मैं शत् शत् वन्दन।।
ॐ ह्रीं सर्व विघ्न शांतिकर साधुलोकोत्तमायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

राग–द्वेष आदि पिशाच का, जिससे होता है मर्दन।
परम केवली कथित धर्म की, भाव सहित करते पूजन।।
जल फल आदि अष्ट द्रव्य ले, भाव सहित करते अर्चन।
अर्हत् गुण भागी बन जाऊँ, करता मैं शत् शत् वन्दन।।
ॐ ह्रीं सर्व विघ्न शांतिकर केवलि प्रज्ञप्तधर्मायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हन्तों की शरण लोक में, अर्चनीय जिन श्रेष्ठ कही।
भव भयहारी अष्ट कर्म की, नाशन हारी पूर्ण रही।।
अष्ट कर्म हों शांत हमारे, अष्ट द्रव्य से कर अर्चन।
पञ्च प्रभु की शरण प्राप्त हो, करते हम शत् शत् वन्दन।।
ॐ ह्रीं सर्व विघ्न शांतिकर अर्हत शरणायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अव्याबाध आदि गुणधारी, चिदानन्द हैं अमृत रूप।
शरण प्राप्त हो सिद्ध प्रभु की, जो पा जाते आत्म स्वरूप।।
अष्ट कर्म हों शांत हमारे, अष्ट द्रव्य से कर अर्चन।
पञ्च प्रभु की शरण प्राप्त हो, करते हम शत् शत् वन्दन।।
ॐ ह्रीं सर्व विघ्न शांतिकर सिद्ध शरणायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

लौकिक सर्व प्रयोजन तजकर, सर्व साधु की मिले शरण।
सर्व चराचर द्रव्य छोड़कर, वीतरागता करूँ वरण।।
अष्ट कर्म हों शांत हमारे, अष्ट द्रव्य से कर अर्चन।
पञ्च प्रभु की शरण प्राप्त हो, करते हम शत् शत् वन्दन।।
ॐ ह्रीं सर्व विघ्न शांतिकर साधु शरणयार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

परम केवली के मुखोद्गत, धर्म जीव का हितकारी।
जैन धर्म की शरण प्राप्त हो, सर्व जगत् मंगलकारी।।
अष्ट कर्म हों शांत हमारे, अष्ट द्रव्य से कर अर्चन।
पञ्च प्रभु की शरण प्राप्त हो, करते हम शत् शत् वन्दन।।
ॐ ह्रीं सर्व विघ्न शांतिकर केवलि प्रज्ञप्त धर्म शरणायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जो संसार दुःखों के नाशी, कहे अनादि और अनन्त।
परमेष्ठी मंगल लोगोत्तम शरण, चार कहते भगवन्त।।
भक्तिभाव से पूजा करते, भक्ति के यह हैं आधार।।
सुख शान्ति के हेतु विनय से, करते वन्दन बारम्बार।।
ॐ ह्रीं अर्हदादिसप्तदशमन्त्रेभ्यः समुदायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– **परमेष्ठी जिन पञ्च हैं, मंगल उत्तम चार।**
शरण चार हैं भक्ति के, परम पूज्य आधार।।

(छन्द चौपाई)

विघ्न विनाशी आप कहाए, नर सुर के स्वामी कहलाए।
अग्रेसर जिनवर को जानो, इष्ट सभी जीवों को मानो।।
अनाद्यानन्त कहा जो भाई, जग में फैली है प्रभुताई।
मम् विघ्नों का वारण कीजे, विनती मेरी यह सुन लीजे।।
मुनियों के आधीश कहाए, गणाधीष इस जग में गाए।
स्तुति जिनकी मंगलकारी, सब विघ्नों की नाशनहारी।।
शांति प्रदायक जग में भाई, जिनवर की स्तुति अधिकाई।
कलुषित कली काल के प्राणी, मिथ्यावादी है अति मानी।।
भव्य जीव सद्दर्शन पावें, ज्ञान सुधारस सम हो जावें।
पाप पुञ्ज नश जाए सारा, जीवन मंगलमय हो प्यारा।।
यही मान्य गणराज कहाए, जिनकी भक्ति शान्ति दिलाए।
विनय आपकी जो भी धारे, वह सब दोषों को परिहारे।।
नाम आपका जो भी ध्यावे, श्रेष्ठ गुणों को वह पा जावे।
इष्ट सिद्धि हो जावे भाई, यह जिन भक्ति की प्रभुताई।।
जय-जय हो जिनराज तुम्हारी, सर्व गुणों के तुम अधिकारी।
सुर-गुरु कोटि वर्ष तक गावें, तो भी पूर्ण नहीं कह पावें।।
'विशद' अल्प बुद्धि के धारी, वह गुण क्या तुमरे कह पावें।

सोरठा- तुम हो सर्व महान्, हम दोषों के कोष हैं।
किया अल्प गुणगान, अल्पबुद्धि से आपका।।

ॐ ह्रीं अर्हदादि सप्तदश मन्त्रेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा- बुद्धि अनाकुल होय, धर्म प्रीति जागे परम।
मोक्ष प्राप्त हो सोय, जैन धर्म को धारकर।।

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

श्री सम्मेदशिखर पूजन

स्थापना

हे तीर्थराज ! हे सिद्ध भूमि !, हे मंगलकारी ! मोक्षधाम।
हे भव बाधा हर पुण्य तीर्थ !, हे प्राची के दिनकर ललाम ! ।।
त्रैलोक्य पूज्य त्रैकालिक शुभ, भवि जीवों के पावन आधार।
श्री सिद्ध क्षेत्र सम्मेद शिखर की, बोलो भाई जय-जयकार।।
आह्वानन् करके अंतर में, जो जिन सिद्धों को ध्याते हैं।
वे सिद्ध क्षेत्र की पूजा कर, यह जीवन सफल बनाते हैं।।

ॐ ह्रीं शाश्वत तीर्थराज श्री सम्मेदशिखर सिद्ध क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिन् अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(अष्टक)

क्षीर सागर सा समुज्ज्वल, धवल जल लेकर अमल।
शत् इन्द्र करते वंदना शुभ, गीत भी गाते विमल।।
भव्याम्बुजों को नित प्रफुल्लित, सूर्य सम जो कर रहा।
जो जन्म मृत्यु के दुःखों से, मुक्त करता है अहा।।1।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

अगुरु पंकज तुल्य सुरभित, सरस चंदन हाथ ले।
परम उज्ज्वल श्रेष्ठ केसर, अर्चना को साथ ले।।
भव्याम्बुजों को नित प्रफुल्लित, सूर्य सम जो कर रहा।
भव ताप नाशक सर्व दुख से, मुक्त जो करता अहा।।2।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्यो संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

पूर्णिमा की चांदनी सम, पूर्ण अक्षत ले अमल।
रमणीयता वरती उन्हें जो, अर्चना करते विमल।।
भव्याम्बुजों को नित प्रफुल्लित, सूर्य सम जो कर रहा।
शाश्वत सुपद दायक परम है, मुक्त जो करता अहा।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्योऽक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

विश्व के कल्याण की, मंगलमयी आराधना।
चित्त को आनंददायी, हो परम पुष्पार्चना।।
भव्याम्बुजों को नित प्रफुल्लित, सूर्य सम जो कर रहा।
काम दाहक सर्व दुख से, मुक्त जो करता अहा।।4।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्यो काम बाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

कल्पद्रुप सम फल प्रदात्री, सर्वदा हितकारिणी।
आराधना चउ सरस युत शुभ, भव्य मनसिज हारिणी।।
भव्याम्बुजों को नित प्रफुल्लित, सूर्य सम जो कर रहा।
क्षुधा की बाधा विनाशक, मुक्त जो करता अहा।।5।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्यो क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

है अलौकिक दिव्य मनहर, दीप की अनुपम प्रभा।
देखकर होती प्रफुल्लित, देव नर पशु की सभा।।
भव्याम्बुजों को नित प्रफुल्लित, सूर्य सम जो कर रहा।
मोहतम हो नाश क्षण में, मुक्त जो करता अहा।।6।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्यो मोहाधंकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

कर्पूर चंदन आदि उत्तम, परम आनन्द कारणी।
वाचस्पति सम धूप पावन, विशद प्रतिभा दायिनी।।
भव्याम्बुजों को नित प्रफुल्लित, सूर्य सम जो कर रहा।
कर्म को करके तिरोहित, मुक्त जो करता अहा।।7।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्योऽष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

कल्पद्रुप सम फल मनोहर, हैं समर्पित भाव से।
कर रहे आराधना हम, आनंद अतिशय चाव से।।
भव्याम्बुजों को नित प्रफुल्लित, सूर्य सम जो कर रहा।
मोक्षपद से हो विभूषित, मुक्त जो करता अहा।।8।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्यो मोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट द्रव्यों की विनाशक, द्रव्य आठों ले परम।
विश्व में कल्याणकारी, कल्पद्रुप सम है शुभम्।।
भव्याम्बुजों को नित प्रफुल्लित, सूर्य सम जो कर रहा।
सर्वार्थ सिद्धि का प्रदायक, मुक्त जो करता अहा।।9।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्योऽनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा – सब तीर्थों में श्रेष्ठ है, पावन तीरथ राज।
गाते हैं जयमालिका, मिलकर सकल समाज।।

(तर्ज – जाने वाले एक संदेशा ...)

गिरि सम्मेद शिखर का वंदन, करने को जो भी जाते।
अक्षय पुण्य कमाने वाले, अक्षय पदवी को पाते।।
शाश्वत तीर्थराज है अनुपम, कण–कण जिसका है पावन।
हरे भरे वृक्षों के ऊपर, पुष्प खिले हैं मन भावन।।
दूर–दूर से आशा लेकर, श्रावक वंदन को आते।
अक्षय पुण्य ...।।1।।

तीर्थ वंदना करने वाले, किस्मत वाले होते हैं।
भाव सहित वंदन करके शुभ, बीज पुण्य के बोते हैं।।
श्रावक आकर भक्तिभाव से, गीत भक्ति के शुभ गाते ।
अक्षय पुण्य ... ।।2 ।।

पूर्व भवों के पुण्योदय से, अंतर में श्रद्धा जागे।
वीतराग जिनधर्म सुकुल जिन, भक्ति में भी मन लागे।।
भव्य भक्त भक्ति करने को, भाव पुष्प कर में लाते।
अक्षय पुण्य ... ।।3 ।।

तीर्थ नाम पर हम सदियों से, धोखे खाते आए हैं।
चतुर्गति में भटके लेकिन, फिर भी समझ न पाए हैं।
पहले समझ न पाते प्राणी, अन्त समय में पछताते ।।
अक्षय पुण्य ... ।।4 ।।

मन में यह विश्वास हमारा, हम वंदन को जाएँगे।
तीर्थ वंदना करके हम भी, तीर्थ रूप हो जाएँगे।।
सिद्धों के गुण पाने की हम, विशद भावना शुभ भाते।
अक्षय पुण्य ... ।।5 ।।

(छंद – घत्तानंद)

जय महिमाधारी, जग हितकारी, सर्व जगत् मंगलकारी।
कण–कण है पावन, अतिमन भावन, भवि जीवों को सुखकारी।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सोरठा – पूजा करें महान्, शाश्वत तीरथराज की।
होय जगत् कल्याण, सर्व सौख्य मुक्ति मिले।।

(इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

श्री आदिनाथ जिन पूजन

(स्थापना)

हे ज्ञानमूर्ति करुणा निधान !, हे धर्म दिवाकर करुणाकर !
हे तेजपुंज ! हे तपोमूर्ति !, सन्मार्ग दिवाकर रत्नाकर।।
हे धर्म प्रवर्तक आदिनाथ, तव चरणों में करते वंदन।
यह भक्तशरण में आकर के, प्रभु करते उर से आह्वानन्।।
हम भव सागर में भटक रहे, अब तो मेरा उद्धार करो।
श्री वीतराग सर्वज्ञ महाप्रभु, भव समुद्र से पार करो।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानन।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छन्द)

क्षीर नीर सम जल अति निर्मल, रत्न कलश भर लाए हैं।
जन्म मृत्यु का रोग नशाने, तव चरणों में आए हैं।
हृदय कमल में आन विराजो, सुरभित सुमन बिछाते हैं।
आदिनाथ प्रभु के चरणों हम, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

दिव्यध्वनि की गंध मनोहर, मन मयूर प्रमुदित करती।
भव आताप निवारण करके, सरल भावना से भरती।।
हृदय कमल में आन विराजो, सुरभित सुमन बिछाते हैं।
आदिनाथ प्रभु के चरणों हम, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

आदिनाथ जी अष्टापद से, अक्षय निधि को पाए हैं।
अक्षय निधि को पाने हेतु, अक्षय अक्षत लाए हैं।।

हृदय कमल में आन विराजो, सुरभित सुमन बिछाते हैं।
आदिनाथ प्रभु के चरणों हम, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

क्षणभंगुर जीवन की कलिका, क्षण-क्षण में मुरझाती है।
काम वेदना नशते मन की, चंचलता रुक जाती है।
हृदय कमल में आन विराजो, सुरभित सुमन बिछाते हैं।
आदिनाथ प्रभु के चरणों हम, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर श्री आदि प्रभु ने, एक वर्ष उपवास किए।
त्याग किए नैवेद्य सभी वह, क्षुधा वेदना नाश किए।।
हृदय कमल में आन विराजो, सुरभित सुमन बिछाते हैं।
आदिनाथ प्रभु के चरणों हम, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत का दीपक जगमग जलकर, बाहर का तम हरता है।
ज्ञान दीप जलकर मानव को, पूर्ण प्रकाशित करता है।।
हृदय कमल में आन विराजो, सुरभित सुमन बिछाते हैं।
आदिनाथ प्रभु के चरणों हम, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों की ज्वाला में जलकर, बहु संसार बढ़ाया है।
प्रभु तप अग्नि में कर्मों की, शुभ धूप से धूम उड़ाया है।।
हृदय कमल में आन विराजो, सुरभित सुमन बिछाते हैं।
आदिनाथ प्रभु के चरणों हम, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

महा मोक्ष सुख से हम वंचित, मोक्ष महाफल दान करो।
श्री फल अर्पित करते हैं प्रभु, शिव पद हमें प्रदान करो।।
हृदय कमल में आन विराजो, सुरभित सुमन बिछाते हैं।
आदिनाथ प्रभु के चरणों हम, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट कर्म का नाश करो प्रभु, अष्ट गुणों को पाना है।
अर्घ्य समर्पित करते हैं प्रभु, अष्टम भूपर जाना है।।
हृदय कमल में आन विराजो, सुरभित सुमन बिछाते हैं।
आदिनाथ प्रभु के चरणों हम, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

(शम्भू छन्द)

दूज कृष्ण आषाढ़ माह की, मरुदेवी उर अवतारे।
रत्नवृष्टि छह माह पूर्व कर, इन्द्र किए शुभ जयकारे।।
आदिनाथ स्वामी के चरणों, अर्घ्य चढ़ाएँ शुभकारी।
मुक्ति पथ पर बढ़ें हमेशा, सर्व जगत् मंगलकारी।।1।।

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णा द्वितीयायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत्र कृष्ण नौमी को प्रभु ने, नगर अयोध्या जन्म लिया।
नाभिराय के गृह इन्द्रों ने, आनंदोत्सव महत् किया।।
आदिनाथ स्वामी के चरणों, अर्घ्य चढ़ाएँ शुभकारी।
मुक्ति पथ पर बढ़ें हमेशा, सर्व जगत् मंगलकारी।।2।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्ण नवम्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चैत्र कृष्ण नौमी को प्रभु ने, राग त्याग वैराग्य लिया।
संबोधन करके देवों ने, भाव सहित जयकार किया।।
आदिनाथ स्वामी के चरणों, अर्घ्य चढ़ाएँ शुभकारी।
मुक्ति पथ पर बढ़ें हमेशा, सर्व जगत् मंगलकारी।।3।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णा नवम्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

फाल्गुन वदि एकादशी को प्रभु, कर्म घातिया नाश किए।
लोकोत्तर त्रिभुवन के स्वामी, केवलज्ञान प्रकाश किए।।
आदिनाथ स्वामी के चरणों, अर्घ्य चढ़ाएँ शुभकारी।
मुक्ति पथ पर बढ़ें हमेशा, सर्व जगत् मंगलकारी।।4।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा एकादश्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माघ कृष्ण की चतुर्दशी को, प्रभु ने पाया पद निर्वाण।
सुर नर किन्नर विद्याधर ने, आकर किया विशद गुणगान।।
आदिनाथ स्वामी के चरणों, अर्घ्य चढ़ाएँ शुभकारी।
मुक्ति पथ पर बढ़ें हमेशा, सर्व जगत् मंगलकारी।।5।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णा चतुर्दश्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जयमाला

दोहा

धर्म प्रवर्तक आदि जिन, मैटे भव जञ्जाल।
ऋद्धि सिद्धि सौभाग्य के, हेतु करें जयमाल।।

सुर नर पशु अनगार मुनि यति, गणधर जिनको ध्याते हैं।
श्री आदिनाथ भगवान आपकी, महिमा भक्तामर गाते हैं।।

जो चरण वंदना करते हैं, वह सुख शांति को पाते हैं।
जो पूजा करते भाव सहित, उनके संकट कट जाते हैं।।
तुमने कलिकाल के आदि में, तीर्थंकर बन अवतार लिया।
इस भरत भूमि की धरती का, आकर तुमने उपकार किया।।
जब भोगभूमि का अंत हुआ, लोगों को यह आदेश दिया।
षट्कर्म करो औ कष्ट हरो, जीवों को यह संदेश दिया।।
तुमने शरीर निज आतम के, शाश्वत स्वभाव को जाना है।
नश्वर शरीर का मोह त्याग, चेतन स्वरूप पहिचाना है।।
तुमने संयम को धारण कर, छह माह का ध्यान लगाया है।
ले दीक्षा चार सहस्र भूप, उनको भी वन में पाया है।।
जब क्षुधा तृषा से अकुलाए, फल फूल तोड़ने लगे भूप।
तब हुई गगन से दिव्य गूंज, यह नहीं चले निर्ग्रंथ रूप।।
फिर छाल पात कई भूपों ने, अपने ही तन पर लपटाईं।
तब खाने पीने की विधियाँ, उन लोगों ने कई अपनाईं।।
जब चर्या को निकले भगवन्, तब विधि किसी ने न जानी।
छह सात माह तक रहे घूमते, आदिनाथ मुनिवर ज्ञानी।।
राजा श्रेयांस ने पूर्वाभास से, साधु चर्या को जान लिया।
पड़गाहन करके आदिराज को, इच्छुरस का दान दिया।।
विधि दिखाकर आदि प्रभु ने, मुनि चर्या के संदेश दिए।
अक्षय हो गई अक्षय तृतिया, देवों ने पंचाश्चर्य किए।।
प्रभुवर ने शुद्ध मनोबल से, निज आतम ध्यान लगाया है।
चउ कर्म घातिया नाश किए, शुभ केवलज्ञान जगाया है।।

देवों ने प्रमुदित भावों से, शुभ समवशरण था बनवाया।
सौधर्म इन्द्र परिवार सहित, प्रभु पूजन करने को आया।।
सुर नर पशुओं ने जिनवर की, शुभ वाणी का रसपान किया।
श्रद्धान ज्ञान चारित पाकर, जीवों ने स्वपर कल्याण किया।।
कैलाश गिरि पर योग निरोध कर, सब कर्मों का नाश किया।
फिर माघ कृष्ण चौदस को प्रभु ने, मोक्ष महल में वास किया।।
तब निर्विकल्प चैतन्य रूप, शिव का स्वरूप प्रभु ने पाया।
अब उस पद को पाने हेतु, प्रभु विशद भाव मन में आया।।
जो शरण आपकी आता है, वह खाली हाथ न जाता है।
जो भक्तिभाव से गुण गाता है, वह इच्छित फल को पाता है।।
हे दीनानाथ ! अनाथों के, हम पर भी कृपा प्रदान करो।
तुमने मुक्ति पद को पाया, वह 'विशद' मोक्ष फल दान करो।।

(आर्या छन्द)

हे आदिनाथ ! तुमको प्रणाम, हे ज्ञानसरोवर ! मुक्ति धाम।
हे धर्म प्रवर्तक ! तीर्थंकर, शिवपद दाता तुमको प्रणाम।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा

आदिनाथ को आदि में, कोटि-कोटि प्रणाम।
'विशद' सिंधु भव सिंधु से, पाएँ हम शिवधाम।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

(नोट- आदिनाथ भगवान के पंचकल्याणक पर ''श्री आदिनाथ विधान'' करें।)

श्री अजितनाथ पूजन

(स्थापना)

हे अजितनाथ ! तव चरण माथ, हम झुका रहे जग के प्राणी।
तुम तीन लोक में पूज्य हुए, प्रभु भवि जीवों के कल्याणी।।
मम हृदय कमल पर आ तिष्ठो, हे करुणाकर करुणाकारी।
तव चरणों में वन्दन करते, हे मोक्ष महल के अधिकारी।।
हे नाथ ! कृपा करके मेरे, अन्तर में आन समा जाओ।
तुम राह दिखाओ मुक्ति की, हे करुणाकर उर में आओ।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन।
ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छन्द)

सागर का जल पीकर भी हम, तृषा शांत न कर पाए।
जन्मादि जरा के रोग मैटने, प्रासुक जल भरकर लाए।
श्री अजित नाथ जी साथ निभाओ, मोक्ष महल में जाने का।
दो आशीष हमें हे भगवन् ! मुक्ति वधु को पाने का।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन के वन में रहकर भी, ताप शांत न कर पाए।
संताप नशाने भव-भव का, शुभ गंध चढ़ाने हम लाए।
अजित नाथ जी साथ निभाओ, मोक्ष महल में जाने का।
दो आशीष हमें हे भगवन् ! मुक्ति वधु को पाने का।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु अक्षय पद पाने हेतु हम, सदा तरसते आए हैं।
अब अक्षय पद पाने को भगवन्, अक्षय अक्षत लाए हैं।।

अजित नाथ जी साथ निभाओ, मोक्ष महल में जाने का।
दो आशीष हमें हे भगवन् ! मुक्ति वधु को पाने का।।
ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

व्याकुल होकर कामवासना, से हम बहु अकुलाए हैं।
अब काम बाण के नाश हेतु, यह पुष्प चढ़ाने लाए हैं।।
अजित नाथ जी साथ निभाओ, मोक्ष महल में जाने का।
दो आशीष हमें हे भगवन् ! मुक्ति वधु को पाने का।।
ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

जग के सब जीव रहे व्याकुल, जो क्षुधा से बहु अकुलाए हैं।
हो क्षुधा वेदना नाश प्रभो !, नैवेद्य चढ़ाने लाए हैं।।
अजित नाथ जी साथ निभाओ, मोक्ष महल में जाने का।
दो आशीष हमें हे भगवन् ! मुक्ति वधु को पाने का।।
ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोहित करता है मोह महा, उसके सब जीव सताए हैं।
हम मोह तिमिर के नाश हेतु, यह अतिशय दीपक लाए हैं।।
अजित नाथ जी साथ निभाओ, मोक्ष महल में जाने का।
दो आशीष हमें हे भगवन् ! मुक्ति वधु को पाने का।।
ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों के तीव्र सघन वन से, यह धूप जलाने लाए हैं।
हो अष्ट कर्म का शीघ्र नाश, हम साता पाने आए हैं।।
अजित नाथ जी साथ निभाओ, मोक्ष महल में जाने का।
दो आशीष हमें हे भगवन् ! मुक्ति वधु को पाने का।।
ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल की चाहत में सदियों से, सारे जग में हम भटकाए ।
हो मोक्ष महाफल प्राप्त हमें, अत एव चढ़ाने फल लाए।।
अजित नाथ जी साथ निभाओ, मोक्ष महल में जाने का।
दो आशीष हमें हे भगवन् ! मुक्ति वधु को पाने का।।
ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन आदि अष्ट द्रव्य, हम श्रेष्ठ चढ़ाने लाए हैं।
हो पद अनर्घ शुभ प्राप्त हमें, हम चरण शरण में आए हैं।।
अजित नाथ जी साथ निभाओ, मोक्ष महल में जाने का।
दो आशीष हमें हे भगवन् ! मुक्ति वधु को पाने का।।
ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

ज्येष्ठ माह की तिथि अमावस, अजितनाथ लीन्हें अवतार।
धन्य हुई विजया माताश्री, गृह में हुए मंगलाचार।।
अर्घ्य चढ़ाते विशद भाव से, बोल रहे हम जय-जयकार।
शीश झुकाकर वंदन करते, प्रभु के चरणों बारम्बार।।
ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाऽमावस्यायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री अजितनाथदेवाय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

माघ कृष्ण दशमी को जन्मे, जिनवर अजितनाथ तीर्थेश।
पाण्डुक शिला पर न्हवन कराए, इन्द्र सभी मिलकर अवशेष।।
अर्घ्य चढ़ाते विशद भाव से, बोल रहे हम जय-जयकार।
शीश झुकाकर वंदन करते, प्रभु के चरणों बारम्बार।।
ॐ ह्रीं माघकृष्णा दशम्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री अजितनाथदेवाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दशमी शुभ माघ बदी पावन, अजितेश तपस्या धारी है।
इस जग का मोह हटाया है, यह संयम की बलिहारी है।।

हम चरणों में वन्दन करते, मम जीवन यह मंगलमय हो।
प्रभु गुण गाते हम भाव सहित, अब मेरे कर्मों का क्षय हो।।
ॐ ह्रीं माघकृष्णा दशम्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री अजितनाथदेवाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(चौपाई)

पौष शुक्ल एकादशी आई, केवलज्ञान जगाए भाई।
तीर्थंकर अजितेश कहाए, सुर-नर वंदन करने आए।।
जिसपद को प्रभु तुमने पाया, पाने का वह भाव बनाया।
भाव सहित हम भी गुण गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।
ॐ ह्रीं पौषशुक्ला एकादश्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री अजितनाथदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुदि चैत्र पञ्चमी जानो, सम्मेद शिखर से मानो।
अजितेश जिनेश्वर भाई, शुभ घड़ी में मुक्ति पाई।।
प्रभु चरणों अर्घ्य चढ़ाते, शुभभाव से महिमा गाते।
हम मोक्ष कल्याणक पाएँ, बस यही भावना भाएँ।।
ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला पंचम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री अजितनाथदेवाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जयमाला

दोहा – जिन पूजा के भाव से, कटे कर्म का जाल।
अजित नाथ जिनराज की, गाते हम जयमाल।।

(छन्द मोतियादाम)

जय लोक हितंकर देव जिनेन्द्र, सुरासुर पूजे इन्द्र नरेन्द्र।
करें अर्चन कर जोर महेन्द्र, करें पद वन्दन देव शतेन्द्र।।
प्रभु हैं जग में सर्व महान्, करें हम भाव सहित गुणगान।
सुगर्भ के पूरव से छह मास, बने सुर इन्द्र प्रभु के दास।।

करें रत्नों की वृष्टि अपार, करें पद वन्दन बारम्बार।
मनाते गर्भ कल्याणक आन, करें नित भाव सहित गुणगान।।
प्रभु का होवे जन्म कल्याण, करें पूजा तब देव महान्।
ऐरावत लावे इन्द्र प्रधान, करें गुणगान सुरासुर आन।।
करें अभिषेक सभी मिल देव, सुमेरु गिरि के ऊपर एव।
बढ़े जग में आनन्द अपार, रही महिमा कुछ अपरम्पार।।
रहे जग में बन के नर नाथ, झुकाते चरणों में सब माथ।
मिले जब प्रभु को कोई निमित्त, लगे तब संयम में शुभ चित्त।।
गिरी कन्दर शिखरों पर घोर, सुतप धारें अति भाव विभोर।
जगे फिर प्रभु को केवलज्ञान, करें सुर नर पद में गुणगान।।
करें उपदेश प्रभु जी महान्, करें सुन के प्राणी कल्याण।
करें प्रभु जी फिर कर्म विनाश, प्रभु करते शिवपुर में वास।।
बने अविकार अखण्ड विशुद्ध, अजरामर होते पूर्ण प्रबुद्ध।
जगी मन में मेरे यह चाह, मिले हमको प्रभु सम्यक् राह।।

(छन्द घत्तानंद)

जय-जय उपकारी संयमधारी, मोक्ष महल के अधिकारी।
सद्गुण के धारी जिन अविकारी, सर्व दोष के परिहारी।
ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यं पद प्राप्ताय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

अजितनाथ से नाथ का, कौन करे गुणगान।
चरण वन्दना कर मिले, उभय लोक सम्मान।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

(नोट– अजितनाथ भगवान के पंचकल्याणक पर ''श्री विघ्नविनाशक अजितनाथ विधान'' करें।)

श्री संभवनाथ पूजन

(स्थापना)

विशद भाव से पूजा करने, जिन मंदिर में आते हैं।
सम्भव जिन की पूजा करके, जीवन सफल बनाते हैं।।
जिनपद का आराधन करके, अतिशय पुण्य कमाते हैं।
आह्वानन करके निज उर में, सादर शीश झुकाते हैं।।
हे नाथ कृपाकर भक्तों पर, मुक्ति का मार्ग दिखा जाओ।
हम भव सागर में डूब रहे, अब पार कराने को आओ।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्र ! अत्र-अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन्।
ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(वेसरी छन्द)

प्रासुक जल के कलश भराए, चरण चढ़ाने को हम लाए।
जन्म जरा मृत्यू भयकारी, नाश होय प्रभु शीघ्र हमारी।।
प्रभु हो तीन लोक के त्राता, भवि जीवों को ज्ञान प्रदाता।
तीर्थंकर पदवी के धारी, सम्भव जिन पद ढोक हमारी।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन केसर घिसकर लाए, चरण शरण में हम भी आए।
विशद भावना हम यह भाए, भव संताप नाश हो जाए।।
प्रभु हो तीन लोक के त्राता, भवि जीवों को ज्ञान प्रदाता।
तीर्थंकर पदवी के धारी, सम्भव जिन पद ढोक हमारी।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धोकर अक्षत थाल भराए, जिन अर्चा को हम ले आए।
हम भी अक्षय पद पा जाएँ, चतुर्गति में न भटकाएँ।।
प्रभु हो तीन लोक के त्राता, भवि जीवों को ज्ञान प्रदाता।
तीर्थंकर पदवी के धारी, सम्भव जिन पद ढोक हमारी।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

चावल रंग कर पुष्प बनाए, हमको जरा नहीं वह भाए।
यहाँ चढ़ाने को हम लाए, काम वासना मम नश जाए।।
प्रभु हो तीन लोक के त्राता, भवि जीवों को ज्ञान प्रदाता।
तीर्थंकर पदवी के धारी, सम्भव जिन पद ढोक हमारी।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

षट्रस यह नैवेद्य बनाए, बार-बार खाके पछताए।
क्षुधा शांत न हुई हमारी, नाश करो तुम हे ! त्रिपुरारी।।
प्रभु हो तीन लोक के त्राता, भवि जीवों को ज्ञान प्रदाता।
तीर्थंकर पदवी के धारी, सम्भव जिन पद ढोक हमारी।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मणिमय घृत के दीप जलाए, यहाँ आरती करने लाए।
छाया मोह महातम भारी, उससे मुक्ती होय हमारी।।
प्रभु हो तीन लोक के त्राता, भवि जीवों को ज्ञान प्रदाता।
तीर्थंकर पदवी के धारी, सम्भव जिन पद ढोक हमारी।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मबन्ध करते हम आए, भव-भव में कई दुःख उठाए।
धूप जलाने को हम लाए, कर्म नाश करने अब आए।।
प्रभु हो तीन लोक के त्राता, भवि जीवों को ज्ञान प्रदाता।
तीर्थंकर पदवी के धारी, सम्भव जिन पद ढोक हमारी।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नत्रय हमने न पाया, तीन लोक में भ्रमण कराया।
सरस चढ़ाने को फल लाए, मोक्ष महाफल पाने आए।।
प्रभु हो तीन लोक के त्राता, भवि जीवों को ज्ञान प्रदाता।
तीर्थंकर पदवी के धारी, सम्भव जिन पद ढोक हमारी।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म विशद है मंगलकारी, हम भी उसके हैं अधिकारी।
पद अनर्घ पाने को आए, अर्घ्य चढ़ाने को हम लाए।।
प्रभु हो तीन लोक के त्राता, भवि जीवों को ज्ञान प्रदाता।
तीर्थंकर पदवी के धारी, सम्भव जिन पद ढोक हमारी।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

फाल्गुन शुक्ल अष्टमी को प्रभु, सम्भव जिन अवतार लिये।
मात सुसेना के उर आए, जग-जन का उपकार किये।।
अर्घ्य चढ़ाते विशद भाव से, बोल रहे हम जय-जयकार।
शीश झुकाकर वंदन करते, प्रभु के चरणों बारम्बार।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्ला अष्टम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा को प्रभु, जन्मे सम्भव जिन तीर्थेश।
न्हवन और पूजन करवाये, इन्द्र सभी मिलकर अवशेष।।
अर्घ्य चढ़ाते विशद भाव से, बोल रहे हम जय-जयकार।
शीश झुकाकर वंदन करते, प्रभु के चरणों बारम्बार।।

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्ला पूर्णिमायां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मंगसिर सुदी पूर्णमासी को, संभव जिन वैराग्य लिए।
निज स्वजन और परिजन सारे, वैभव से नाता तोड़ दिए।।
हम चरणों में वन्दन करते, मम् जीवन यह मंगलमय हो।
प्रभु गुण गाते हम भाव सहित, अब मेरे कर्मों का क्षय हो।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्ला पूर्णिमायां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(चौपाई)

चौथ कृष्ण कार्तिक की जानो, संभवनाथ जिनेश्वर मानो।
केवलज्ञान प्रभु प्रगटाए, सुर-नर वंदन करने आए।।
जिस पद को प्रभु तुमने पाया, पाने का वह भाव बनाया।
भाव सहित हम भी गुण गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णा चतुर्थ्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

षष्ठी सुदि चैत्र की आई, गिरि सम्मेद शिखर से भाई।
संभव जिनवर मुक्ति पाए, हम चरणों शीश झुकाए।।
प्रभु चरणों हम अर्घ्य चढ़ाते, शुभभावों से महिमा गाते।
हम भी मोक्ष कल्याणक पाएँ, अन्तिम यही भावना भाएँ।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला षष्ठम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जयमाला

दोहा – सम्भव नाथ जिनेन्द्र के, चरणों में चितधार।
जयमाला गाते विशद, पाने भव से पार।।

(छन्द चामर)

पूर्व पुण्य का सुफल, जिनेन्द्र देव धारते।
तीर्थंकर श्रेष्ठ पद, आप जो सम्हालते।।
पुष्प वृष्टि देव आन, करते हैं भाव से।
जन्म समय इन्द्र सभी, न्हवन करें चाव से।।
चिन्ह देख इन्द्र पग, नाम जो उच्चारते।
जय जय की ध्वनि तब, इन्द्र गण पुकारते।।
क्षुद्र सा निमित्त पाय, संयम प्रभु धारते।
चेतन का चिन्तन शुभ, चित्त से विचारते।।
विश्व वन्दनीय जो, पाप शेष नाशते।
ॐकार रूप दिव्य देशना प्रकाशते।।
श्री जिनेन्द्र ज्ञान ज्ञेय, सर्व लोक जानते।
द्रव्य तत्त्व पुण्य पाप, धर्म को बखानते।।
सर्व दोष भागते हैं, दूर-दूर आपसे।
सर्व दुःख दूर हों, आप नाम जाप से।।

आप सर्व लोक में, अनाथ के भी नाथ हो।
ध्यान करे आपका उन सबके तुम साथ हो।।
इन्द्र और नरेन्द्र और गणेन्द्र आपको भजैं।
सर्वलोक वर्ति जीव, चरण आपके जजैं।।
आपके चरणारविन्द में, करूँ ये प्रार्थना।
तीन काल आपकी, प्राप्त हो आराधना।।
हे जिनेन्द्र ध्यान दो, ज्ञान दो वरदान दो।
कर रहे हम प्रार्थना, प्रार्थना पे ध्यान दो।।
लोक यह अनन्त है, अनन्त का न अन्त है।
जीव ज्ञानवन्त है, शक्ति से भगवन्त है।।
ज्ञान का प्रकाश हो, मोह तिमिर नाश हो।
स्वस्वरूप प्राप्त हो, स्वयं में निवास हो।।
धर्म शुक्ल ध्यान हो, आत्मा का भान हो।
सर्व कर्म हान हो, स्वयं की पहचान हो।।
घातिया हों कर्म नाश, होय ज्ञान का प्रकाश।
अष्ट गुण प्राप्त कर, शिवपुर में होय वास।।
भावना है यह जिनेश, और नहीं कोई शेष।
धर्म जैन है विशेष, सब अधर्म है अशेष।।

(छन्द घत्तानन्द)

सम्भव जिन स्वामी, अन्तर्यामी, मोक्ष मार्ग के पथगामी।
शिवपुर के वासी, ज्ञान प्रकाशी,त्रिभुवन पति हे जगनामी !।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय जयमाला अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा – पुष्प समर्पित कर रहे, जिनवर के पदमूल।
मोक्ष महल की राह में, साधक जो अनुकूल।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलि क्षिपेत् ।।

श्री अभिनन्दननाथ पूजन

स्थापना

जय–जय जिन अभिनन्दन स्वामी, जय–जय मुक्ति वधु के स्वामी।
पावन परम कहे सुखकारी, तीन लोक में मंगलकारी।
अतिशय कहे गये जो पावन, जिनकी महिमा है मनभावन।
भाव सहित हम करते वन्दन, करते हैं उर में आह्वानन।
यही भावना रही हमारी, पूर्ण करो तुम हे त्रिपुरारी।
तुम हो तीन लोक के स्वामी, मंगलमय हो अन्तर्यामी।

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्र ! अत्र–अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानन।
ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(अष्टक)

बन्धु सब मिल करो अर्चना, अभिनन्दन भगवान की।
प्रगटित होती जिन पूजा से, ज्योति केवल ज्ञान की।।वन्दे...

क्षीर नीर के कलश मनोहर, भरकर के हम लाए हैं।
जन्म मरण के नाश हेतु हम, पूजा करने आए हैं।
भव की तृषा मिटाने वाली, अर्चा है भगवान की।
प्रगटित होती जिन पूजा से, ज्योति केवल ज्ञान की।।वन्दे...

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय जन्मजरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

बन्धु सब मिल करो अर्चना, अभिनन्दन भगवान की।
प्रगटित होती जिन पूजा से, ज्योति केवल ज्ञान की।।वन्दे...
कश्मीरी केसर में चन्दन, हमने श्रेष्ठ घिसाया है।
जिसकी परम सुगन्धि द्वारा, मन मधुकर हर्षाया है।

भव आताप नशाने वाली अर्चा है, भगवान की।
प्रगटित होती जिन पूजा से, ज्योति केवल ज्ञान की।।वन्दे...
ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

बन्धु सब मिल करो अर्चना, अभिनन्दन भगवान की।
प्रगटित होती जिन पूजा से, ज्योति केवल ज्ञान की।।वन्दे...
कर्म बन्ध के कारण प्राणी, जग के सब दुःख पाते हैं।
जन्म जरा मृत्यु को पाकर, भव सागर भटकाते हैं।
अक्षय पद देने वाली है, अर्चा जिन भगवान की।
प्रगटित होती जिन पूजा से, ज्योति केवल ज्ञान की।।वन्दे...
ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

बन्धु सब मिल करो अर्चना, अभिनन्दन भगवान की।
प्रगटित होती जिन पूजा से, ज्योति केवल ज्ञान की।।वन्दे...
काम वासना में सदियों से, तीन लोक भटकाए हैं।
पुष्प सुगन्धित लेकर चरणों, मुक्ति पाने आए हैं।
श्री जिनेन्द्र की पूजा पावन, आतम के कल्याण की।
प्रगटित होती जिन पूजा से, ज्योति केवल ज्ञान की।।वन्दे...
ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

बन्धु सब मिल करो अर्चना, अभिनन्दन भगवान की।
प्रगटित होती जिन पूजा से, ज्योति केवल ज्ञान की।।वन्दे...
क्षुधा रोग की बाधाओं से, जग में बहुत सताए हैं।
नाश हेतु हम बाधाओं के, नैवेद्य चढ़ाने लाए हैं।
क्षुधा नाश करने वाली है, पूजा श्री भगवान की।
प्रगटित होती जिन पूजा से, ज्योति केवल ज्ञान की।।वन्दे...

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बन्धु सब मिल करो अर्चना, अभिनन्दन भगवान की।
प्रगटित होती जिन पूजा से, ज्योति केवल ज्ञान की।।वन्दे...
मोह तिमिर में फँसकर हमने, जीवन कई बिताए हैं।
मोह महातम नाश होय मम्, दीप जलाने लाए हैं।
मम अन्तर में होय प्रकाशित, ज्योति सम्यक् ज्ञान की।।
प्रगटित होती जिन पूजा से, ज्योति केवल ज्ञान की।।वन्दे...
ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

बन्धु सब मिल करो अर्चना, अभिनन्दन भगवान की।
प्रगटित होती जिन पूजा से, ज्योति केवल ज्ञान की।।वन्दे...
इन्द्रिय के विषयों में फंसकर, निजानन्द सुख छोड़ दिया।
आत्मध्यान करने से हमने, अपने मुख को मोड़ लिया।
अष्ट कर्म की नाशक होती, अर्चा जिन भगवान की।।
प्रगटित होती जिन पूजा से, ज्योति केवल ज्ञान की।।वन्दे...
ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

बन्धु सब मिल करो अर्चना, अभिनन्दन भगवान की।
प्रगटित होती जिन पूजा से, ज्योति केवल ज्ञान की।।वन्दे...
कर्म शुभाशुभ जो भी करते, उसके फल को पाते हैं।
भेद ज्ञान के द्वारा प्राणी, आतम ज्ञान जगाते हैं।
मोक्ष महाफल देने वाली, पूजा है भगवान की।
प्रगटित होती जिन पूजा से, ज्योति केवल ज्ञान की।।वन्दे...
ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

बन्धु सब मिल करो अर्चना, अभिनन्दन भगवान की।
प्रगटित होती जिन पूजा से, ज्योति केवल ज्ञान की।।वन्दे...
लोकालोक अनादि शाश्वत, पर द्रव्यों से युक्त कहा।
सप्त तत्त्व अरु पुण्य पाप की, श्रद्धा के बिन बना रहा।
पद अनर्घ देने वाली है, अर्चा जिन भगवान की।
प्रगटित होती जिन पूजा से, ज्योति केवल ज्ञान की।।वन्दे...

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य *(शम्भू छन्द)*

छठी शुक्ल वैशाख माह का, शुभ दिन आया मंगलकार।
माँ सिद्धार्था के उर श्री जिन, अभिनंदन लीन्हें अवतार।।
अर्घ्य चढ़ाते विशद भाव से, बोल रहे हम जय-जयकार।
शीष झुकाकर वंदन करते, प्रभु के चरणों बारम्बार।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्ल षष्ठ्म्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री अभिनंदननाथ अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

माघ शुक्ल चौदश को जग में, अतिशय हुआ था मंगलगान।
जन्म लिए अभिनन्दन स्वामी, इन्द्र किए तब प्रभु गुणगान।।
अर्घ्य चढ़ाते विशद भाव से, बोल रहे हम जय-जयकार।
शीष झुकाकर वंदन करते, प्रभु के चरणों बारम्बार।।

ॐ ह्रीं माघशुक्ला चतुर्दश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री अभिनदंननाथ अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

द्वादशी शुभम् थी माघ सुदी, प्रभु अभिनंदन संयम धारे।
ले चले पालकी में नर-सुर, वह सब बोले जय-जयकारे।।
हम वन्दन करते चरणों में, मम जीवन यह मंगलमय हो।
प्रभु गुण गाते हम भाव सहित, अब मेरे कर्मों का क्षय हो।।

ॐ ह्रीं माघशुक्ला द्वादश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री अभिनदंननाथ अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(चौपाई)

चौदस सुदी पौष की आई, अभिनंदन तीर्थंकर भाई।
पावन केवलज्ञान जगाए, सुर-नर वंदन करने आए।।
जिस पद को प्रभु तुमने पाया, पाने का वह भाव बनाया।
भाव सहित हम भी गुण गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।

ॐ ह्रीं पौषशुक्ला चतुर्दश्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री अभिनदंननाथ अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

षष्ठी शुक्ल वैशाख पिछानो, सम्मेदाचल गिरि से मानो।
अभिनंदन जिन मुक्ति पाए, कर्म नाशकर मोक्ष सिधाए।।
हम भी मुक्ति वधु को पाऐं, पद में सादर शीश झुकाए।
अर्घ्य चढ़ाते मंगलकारी, बनने को शिवपद के धारी।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्ला षष्ठम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री अभिनदंननाथ अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जयमाला

दोहा - अभिनन्दन वन्दन करूँ, भाव सहित नतभाल।
मंगलमय मंगल परम, गाते हैं जयमाल।।

(सखी छन्द)

जय अभिनन्दन त्रिपुरारी, जय-जय हो मंगलकारी।
तुम जग के संकटहारी, जय-जय जिनेश अविकारी।।
प्रभु अष्टकर्म विनसाए, अष्टम वसुधा को पाए।
तव चरण शरण को पाएँ, भव बन्धन से बच जाएँ।।
हमने भव-भव दुख पाए, अब उनसे हम घबड़ाए।
तुम भव बाधा के नाशी, हो केवल ज्ञान प्रकाशी।।
तव गुण का पार नहीं है, तुम सम न कोई कहीं है।
भव-भव में शरणा पाई, पर आप शरण न भाई।।

यह थे दुर्भाग्य हमारे, जो तुम सम तारणहारे।
मन में मेरे न भाए, अतएव जगत भरमाए।।
अब जागे भाग्य हमारे, जो आए द्वार तुम्हारे।
तव श्रेष्ठ गुणों को गाएँ, न छोड़ कहीं अब जाएँ।।
अर्चा कर ध्यान लगाएँ, तुमको निज हृदय सजाएँ।
तव चरणों में रम जाएँ, जब तक न मुक्ति पाएँ।।
है विनती यही हमारी, हे त्रिभुवन के अधिकारी।
वश यही भावना भाते, प्रभु सादर शीश झुकाते।।
भक्तों पर करुणा कीजे, अब और सजा न दीजे।
हम सेवक बन कर आए, अपनी यह अर्ज सुनाए।।
कई जीव प्रभु तुम तारे, भव सागर पार उतारे।
हे त्रिभुवन ! के सुख दाता, हे जिनवर ! भाग्य विधाता।।
हे मोक्ष महल के स्वामी ! त्रिभुवन के अन्तर्यामी।
तुमने शिव पद को पाया, यह रही धर्म की माया।।

(छन्द घत्तानन्द)

हे जिन ! अभिनन्दन, पद में वन्दन, करने हम द्वारे आये।
मेटो भव क्रन्दन, पाप निकन्दन, अर्घ्य चढ़ाने हम लाए।

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा – भाव सहित वन्दन करूँ, अभिनन्दन जिन देव।
पुष्पाञ्जलि करके विशद, पूजों तुम्हें सदैव।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

(नोट– अभिनंदन भगवान के पंचकल्याणक पर ''श्री अभिनन्दननाथ विधान'' अवश्य कीजिए।)

श्री सुमतिनाथ पूजा

(स्थापना)

सुर नर किन्नर से अर्चित हैं, तीर्थंकर के चरण कमल।
शरणागत की रक्षा करते, बनकर रक्षा मंत्र धवल।
सुमतिनाथ पद माथ झुकाकर, उर में करते आह्वानन।
विशद भाव से शीश झुकाकर, करते हम शत्-शत् वन्दन।
मम उर में तिष्ठो हे भगवन् ! हमको सुमति प्रदान करो।
संयम समता मय जीवन हो, हे प्रभु ! समता का दान करो।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र-अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन।
ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

मोक्ष मार्ग के अनुपम नेता, करते हैं जग का कल्याण।
तीन लोक में मंगलकारी, जिनका गाते सब यशगान।
प्रासुक निर्मल जल के द्वारा, करते हम उनका अर्चन।
जन्म जरा के नाश हेतु हम, भाव सहित करते वन्दन।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जन्मजरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

अखिल विश्व में सर्वद्रव्य के, ज्ञाता श्री जिन देव कहे।
विशद विनय के साथ चरण में, वन्दन करते भक्त रहे।
परम सुगन्धित चन्दन द्वारा, करते हम प्रभु का अर्चन।
भव संताप नाश करने को, भाव सहित करते वन्दन।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि मुनी गणधर विद्याधर, का जो करते आराधन।
मुक्ति पाने हेतू करते, मूलगुणों का जो पालन।

ललित मनोहर अक्षय अक्षत, से करते प्रभु का अर्चन।
अक्षय पद को पाने हेतु, भाव सहित करते वन्दन।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

भव सागर से पार लगाने, हेतू अनुपम पोत कहे।
विशद मोक्ष के पथ पर जिसने, अथक काम के बाण सहे।
वकुल कमल कुन्दादि पुष्प से, करते हम उनका अर्चन।
काम बाण विध्वंश हेतु हम, करते हैं शत्-शत् वन्दन।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनके ध्यान और चिन्तन से, मिटती भव की पीड़ाएँ।
भूत प्रेत नर पशु शांत हो, करते मनहर क्रीड़ाएँ।।
बावर फैनी मोदक आदि, से जिनका करते अर्चन।
क्षुधा वेदना नाश होय मम, करते हम शत्-शत वन्दन।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विशद ज्ञान उद्योतित करते, मोह तिमिर हरने वाले।
मोक्ष मार्ग के राही चरणों, गुण गाते हो मतवाले।
घृत के दीप जलाकर करते, जिनवर के पद में अर्चन।
मोह तिमिर के नाश हेतु हम, करते हैं शत्-शत् वन्दन।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्मोही होकर के प्रभु ने, मोह पास का नाश किया।
काल अनादि से कर्मों का, बन्धन पूर्ण विनाश किया।
अगर तगर की धूप बनाकर, करते हम जिनका अर्चन।
अष्ट कर्म के नाश हेतु हम, करते हैं शत्-शत् वन्दन।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नत्रय की श्रेष्ठ साधना, कर उत्तम फल पाया है।
चतुगर्ति का भ्रमण त्यागकर, शिवपुर धाम बनाया है।
श्री फल, केला, लौंग, इलायची, से करते प्रभु का अर्चन।
मोक्ष महाफल प्राप्त हमें हो, करते हम शत्-शत् वन्दन।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध शिला पर वास हेतु प्रभु, अष्ट कर्म का नाश किए।
क्षायिक ज्ञान प्रकट कर अनुपम, पद अनर्घ में वास किए।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, करता मैं सम्यक् अर्चन।
पद अनर्घ की प्राप्ति हेतु हम, करते हैं शत्-शत् वन्दन।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

द्वितिया शुक्ल माह श्रावण की, मात मंगला उर आए।
सुमतिनाथ की भक्ति में रत, देव सभी मंगल गाए।।
अर्घ्य चढ़ाते विशद भाव से, बोल रहे हम जय-जयकार।
शीश झुकाकर वंदन करते, प्रभु के चरणों बारम्बार।।

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्ला द्वितीयायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री सुमतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत शुक्ल एकादशि को प्रभु, जन्में सुमतिनाथ भगवान।
जय जयगान हुआ धरती पर, इन्द्र किए अभिषेक महान्।।
अर्घ्य चढ़ाते विशद भाव से, बोल रहे हम जय-जयकार।
शीश झुकाकर वंदन करते, प्रभु के चरणों बारम्बार।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला एकादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री सुमतिनाथाय जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैशाख सुदी नौमी पावन, श्री सुमतिनाथ दीक्षाधारी।
श्री शिवसुख देने वाली है शुभ, सर्व जगत् मंगलकारी।।

हम चरणों में वन्दन करते, मम जीवन यह मंगलमय हो।
प्रभु गुण गाते हम भाव सहित, अब मेरे कर्मों का क्षय हो।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्ला नवम्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री सुमतिनाथाय जिनेन्द्राय अर्घ्यं।

(चौपाई)

चैत शुक्ल एकादशी जानो, सुमतिनाथ तीर्थंकर मानो।
केवलज्ञान प्रभु जी पाये, समवशरण सुर नाथ रचाए।।
जिस पद को प्रभु तुमने पाया, पाने का वह भाव बनाया।
भाव सहित हम भी गुण गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला एकादश्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री सुमतिनाथाय जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत सुदी एकादशी आई, गिरि सम्मेद शिखर से भाई।
सुमतिनाथ जी मोक्ष सिधाए, कर्म नाशकर मुक्ती पाए।।
हम भी मुक्तिवधु को पाएँ, पद में सादर शीश झुकाएँ।
अर्घ्य चढ़ाते मंगलकारी, बनने को शिवपद के धारी।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला एकादश्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री सुमतिनाथाय जिनेन्द्राय अर्घ्यं।

जयमाला

दोहा – मति सुमति करके प्रभु, हो गये आप निहाल।
सुमतिनाथ भगवान की, गाते हम जयमाल।।

(सखी छन्द)

जय सुमतिनाथ जिन स्वामी, तुम हो प्रभु अन्तर्यामी।
तुम हो मुक्ति पथगामी, तुम सर्व लोक में स्वामी।।

प्रभु हो प्रबोध के दाता, जग में जन–जन के त्राता।
तुम सम्यक् ज्ञान प्रदाता, इस जग में आप विधाता।।

है समवशरण सुखकारी, भविजन को आनन्द कारी।
शुभ देवों की बलिहारी, करते हैं अतिशय भारी।।

वह प्रतिहार्य प्रगटाते, भक्ति कर मोद मनाते।
परिवार सहित सब आते, अर्चा करके हर्षाते।।

सुनते जिनवर की वाणी, जो जन–जन की कल्याणी।
प्रभु वीतराग विज्ञानी, आनन्द सुधामृत दानी।।

तुमरी महिमा हम गाते, प्रभु सादर शीश झुकाते।
हम चरण–शरण में आते, आशीष आपका पाते।।

जब से तव दर्शन पाया, प्रभु जी श्रद्धान जगाया।
फिर भेद ज्ञान को पाया, हमने यह लक्ष्य बनाया।।

हम भी सौभाग्य जगाएँ, प्रभु मोक्ष मार्ग अपनाएँ।
तव चरणों शीश झुकाएँ, रत्नत्रय निधि पा जाएँ।।

बनके सम्यक् तपधारी, हो जावें हम अविकारी।
हम बने प्रभु अनगारी, है विशद भावना भारी।।

प्रभु कर्म निर्जरा होवे, अघ कर्म हमारे खोवे।
मम आतम भी शुचि होवे, सब कर्म कालिमा धोवे।।

प्रभु अनन्त चतुष्ट पावें, तव केवल ज्ञान जगावें।
फिर शिवपुर को हम जावें, अरू मुक्ति वधु को पावें।।

हम यही भावना भाते, प्रभु चरणों शीश झुकाते।
हम भाव सहित गुण गाते, प्रभु द्वार आपके आते।।

(छन्द घत्तानन्द)

तुम हो हितकारी, सब दुखहारी, सुमतिनाथ जिनअविकारी।
हे समताधारी ! ज्ञान पुजारी, मोक्ष महल के अधिकारी।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा – सर्व कर्म को नाशकर, बने मोक्ष के ईश।
'विशद' ज्ञान पाने प्रभु, चरण झुकाऊँ शीश।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

(नोट– सुमतिनाथ भगवान के पंचकल्याणक पर ''श्री सुमतिनाथ विधान'' अवश्य कीजिए।)

श्री पदमप्रभु पूजा

(स्थापना)

हे त्याग मूर्ति करुणा निधान ! हे धर्म दिवाकर तीर्थंकर !
हे ज्ञान सुधाकर तेज पुंज ! सन्मार्ग दिवाकर करुणाकर।।
हे परमब्रह्म ! हे पद्मप्रभ ! हे भूप ! श्रीधर के नन्दन।
ग्रह रवि अरिष्ट नाशक जिन का, हम करते उर में आह्वानन्।।
हे नाथ ! हमारे अंतर में, आकर के धीर बँधा जाओ।
हम भूले भटके भक्तों को, प्रभुवर सन्मार्ग दिखा जाओ।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्र ! अत्र-अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन्।
ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

निर्मल जल को प्रासुक करके, अनुपम सुन्दर कलश भराय।
जन्मादि के दुःख मैटन को, श्री जिनवर के चरण चढ़ाय।।
रवि अरिष्ट ग्रह की शांति को, पद्मप्रभ पद शीश झुकाय।
हे करुणाकर ! भव दुख हर्ता, चरण पूजते मन वच काय।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिर का चन्दन शीतल, कंचन झारी में भर ल्याय।
भव आताप मिटावन कारण, श्री जिनवर के चरण चढ़ाय।।
रवि अरिष्ट ग्रह की शांति को, पद्मप्रभ पद शीश झुकाय।
हे करुणाकर ! भव दुख हर्ता, चरण पूजते मन वच काय।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चदनं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रासुक जल से धोकर तन्दुल, परम सुगन्धित थाल भराय।
अक्षय पद को पाने हेतु, श्री जिनवर के चरण चढ़ाय।।

रवि अरिष्ट ग्रह की शांति को, पद्मप्रभ पद शीश झुकाय।
हे करुणाकर ! भव दुख हर्ता, चरण पूजते मन वच काय।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सुन्दर सुरभित और मनोहर, भाँति-भाँति के पुष्प मँगाय।
कामबाण विध्वंश करन को, श्री जिनवर के चरण चढ़ाय।।
रवि अरिष्ट ग्रह की शांति को, पद्मप्रभ पद शीश झुकाय।
हे करुणाकर ! भव दुख हर्ता, चरण पूजते मन वच काय।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत से पूरित परम सुगन्धित, शुद्ध सरस नैवेद्य बनाय।
क्षुधा नाश का भाव बनाकर, श्री जिनवर के चरण चढ़ाय।।
रवि अरिष्ट ग्रह की शांति को, पद्मप्रभ पद शीश झुकाय।
हे करुणाकर ! भव दुख हर्ता, चरण पूजते मन वच काय।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्न जड़ित ले दीप मालिका, घृत कपूर की ज्योति जलाय।
मोह तिमिर के नाशन हेतु, श्री जिनवर के चरण चढ़ाय।।
रवि अरिष्ट ग्रह की शांति को, पद्मप्रभ पद शीश झुकाय।
हे करुणाकर ! भव दुख हर्ता, चरण पूजते मन वच काय।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दस प्रकार के द्रव्य सुगंधित, सर्व मिलाकर धूप बनाय।
अष्टकर्म चउगति नाशन को, श्री जिनवर के चरण चढ़ाय।।
रवि अरिष्ट ग्रह की शांति को, पद्मप्रभ पद शीश झुकाय।
हे करुणाकर ! भव दुख हर्ता, चरण पूजते मन वच काय।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ऐला केला और सुपारी, आम अनार श्री फल लाय।
पाने हेतु मोक्ष महाफल, श्री जिनवर के चरण चढ़ाय।।
रवि अरिष्ट ग्रह की शांति को, पद्मप्रभ पद शीश झुकाय।
हे करुणाकर ! भव दुख हर्ता, चरण पूजते मन वच काय।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

प्रासुक नीर सुगंध सुअक्षत, पुष्प चरु ले दीप जलाय।
धूप और फल अष्ट द्रव्य ले, श्री जिनवर के चरण चढ़ाय।।
रवि अरिष्ट ग्रह की शांति को, पद्मप्रभ पद शीश झुकाय।
हे करुणाकर ! भव दुख हर्ता, चरण पूजते मन वच काय।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

माघ कृष्ण की षष्ठी तिथि को, पद्मप्रभु अवतार लिए।
मात सुसीमा के उर आए, जग में मंगलकार किए।।
अर्घ्य चढ़ाते विशद भाव से, बोल रहे हम जय-जयकार।
शीश झुकाकर वंदन करते, प्रभु के चरणों बारम्बार।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णा षष्ठम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कार्तिक कृष्णा त्रयोदशी को, पृथ्वी पर नव सुमन खिला।
भूले भटके नर-नारी को, शुभम् एक आधार मिला।।
जन्म कल्याणक की पूजा, हम करके भाग्य जगाते हैं।
मोक्षलक्ष्मी हमें प्राप्त हो, यही भावना भाते हैं।।

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णा त्रयोदश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रयोदशी कार्तिक वदि पावन, जग से नाता तोड़ चले।
पद्मप्रभु स्वजन परिजन धन, सबकी आशा छोड़ चले।।

हम भाव सहित वन्दन करते, मम् जीवन यह मंगलमय हो।
प्रभु गुण गाते हम भाव सहित, अब मेरे कर्मों का क्षय हो।।

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णा त्रयोदश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

पूनम चैत्र शुक्ल की आई, पद्मप्रभु तीर्थंकर भाई।
सारे कर्म घातिया नाशे, क्षण में केवलज्ञान प्रकाशे।।
जिस पद को प्रभु तुमने पाया, पाने का वह भाव बनाया।
भाव सहित हम भी गुण गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला पूर्णिमायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फाल्गुन कृष्ण चतुर्थी जानो, गिरि सम्मेद शिखर से मानो।
पद्मप्रभु जी मोक्ष सिधाए, कर्म नाशकर मुक्ति पाए।।
हम भी मुक्तिवधु को पाएँ, पद में सादर शीश झुकाए।
अर्घ्य चढ़ाते मंगलकारी, बनने को शिव पद के धारी।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा चतुर्थ्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा – पद्मप्रभ के चरण में, होती पूरण आस।
कल्मश होंगे दूर सब, है पूरा विश्वास।।
तीन योग से प्रभु पद, वन्दन करूँ त्रिकाल।
पूजा करके भाव से, गाता हूँ जयमाल।।

जय पद्मनाथ पद माथ नमस्ते, जोड़-जोड़ द्वय हाथ नमस्ते।
ज्ञान ध्यान विज्ञान नमस्ते, गुण अनन्त की खान नमस्ते।।

भव भय नाशक देव नमस्ते, सुर–नर कृत पद सेव नमस्ते।
पद्मप्रभ भगवान नमस्ते, गुण अनन्त की खान नमस्ते।।
आतम ब्रह्म प्रकाश नमस्ते, सर्व चराचर भास नमस्ते।
पद झुकते शत् इन्द्र नमस्ते, ज्ञान पयोदधि चन्द्र नमस्ते।।
भवि नयनों के नूर नमस्ते, धर्म सुधारस पूर नमस्ते।
धर्म धुरन्धर धीर नमस्ते, जय–जय गुण गम्भीर नमस्ते।।
भव्य पयोदधि तार नमस्ते, जन–जन के आधार नमस्ते।
रागद्वेष मद हनन नमस्ते, गगनाङ्गण में गमन नमस्ते।।
जय अम्बुज कृत पाद नमस्ते, भरत क्षेत्र उपपाद नमस्ते।
मुक्ति रमापति वीर नमस्ते, कामजयी महावीर नमस्ते।।
विघ्न विनाशक देव नमस्ते, देव करें पद सेव नमस्ते।
सिद्ध शिला के कंत नमस्ते, तीर्थंकर भगवन्त नमस्ते।।
वाणी सर्व हिताय नमस्ते, ज्ञाता गुण पर्याय नमस्ते।
वीतराग अविकार नमस्ते, मंगलमय सुखकार नमस्ते।।

(छंद घत्तानन्द)

जय जय हितकारी, करुणाधारी, जग उपकारी जगत् विभु।
जय नित्य निरंजन, भव भय भंजन, पाप निकन्दन पद्मप्रभु।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा

पद्म प्रभ के चरण में, झुका भाव से माथ।
रोग शोक भय दूर हों, कृपा करो हे नाथ ! ।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

(नोट– पद्प्रभु भगवान के पंचकल्याणक पर ''श्री पद्मप्रभ विधान'' अवश्य कीजिए ।)

श्री सुपार्श्वनाथ पूजा

(स्थापना)

हे सुपार्श्व ! तुम लोक में, बने श्री के नाथ।
आह्वानन करते प्रभो, आये खाली हाथ।
झुका चरण में आपके, मेरा भी यह माथ।
तव चरणों के भक्त हम, ले लो अपने साथ।
करते हैं हम प्रार्थना, करो प्रभु स्वीकार।
भव सागर से भक्त को, शीघ्र लगाओ पार।।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र–अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

हम जन्म जन्म के प्यासे हैं, जल से निज प्यास बुझाई है।
मम् प्यास शांत न हो पाई, अत एव शरण तव पाई है।।
न जन्म मरण होवे फिर–फिर, हम यही भावना भाते हैं।
अत एव चरण में जिन सुपार्श्व, यह निर्मल नीर चढ़ाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जन्मजरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार ताप से तप्त हुए, चन्दन से शीतलता पाई।
आताप शांत न हुआ प्रभो, अत एव शरण हमने पाई।।
हो भव आताप का नाश प्रभो, हम यही भावना भाते हैं।
अव एव चरण में जिन सुपार्श्व, यह पावन गंध चढ़ाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चदनं निर्वपामीति स्वाहा।

भव–भव में पद की लालच से, अपना पुरुषार्थ गंवाया है।
पर अक्षय शुभ अविनाशी पद, न हमें कभी मिल पाया है।।

अब अक्षय पद हो प्राप्त हमें, हम यही भावना भाते हैं।
अत एव चरण में जिन सुपार्श्व, यह अक्षत धवल चढ़ाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

हम काम अग्नि की ज्वाला में, सदियों से जलते आये हैं।
न काम वासना शांत हुई, हमने कई जन्म गंवाएँ हैं।।
हो काम बाण विध्वंश प्रभो, हम यही भावना भाते हैं।
अत एव चरण में जिन सुपार्श्व, यह पुष्पित पुष्प चढ़ाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

भोजन हमने दिन रात किया, न क्षुधा शांत हो पाई है।
पुद्गल ने पुद्गल को जोड़ा, न चेतन की सुधि आई है।
हो क्षुधा रोग का नाश प्रभो, हम यही भावना भाते हैं।
अत एव चरण में जिन सुपार्श्व, ताजा नैवेद्य चढ़ाते हैं।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम मोह जाल में अटक रहे, न मुक्ति उससे मिल पाई।
इस तन के साज सम्हालों में, न आतम की निधि खिल पाई।
हो मोह अंध का नाश प्रभो, हम यही भावना भाते हैं।
अत एव चरण में जिन सुपार्श्व, यह पावन दीप जलाते हैं।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों के बन्धन से अब तक, स्वाधीन नहीं हो पाए हैं।
हमने संसार सरोवर में, फिर-फिर कर गोते खाए हैं।
हो अष्ट कर्म का नाश प्रभो, हम यही भावना भाते हैं।
अत एव चरण में जिन सुपार्श्व, यह मनहर धूप जलाते हैं।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु मोक्ष महाफल न पाया, फल और सभी हमने पाए।
हम सर्व लोक में भटक लिए, अब नाथ शरण में हम आए।
हो मोक्ष महाफल प्राप्त हमें, हम यही भावना भाते हैं।
अत एव चरण में जिन सुपार्श्व, हम फल यह विविध चढ़ाते हैं।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

संसार सुखों की चाहत में, मन मेरा बहु ललचाया है।
हम भ्रमर बने भटके दर-दर, पर पद अनर्घ न पाया है।
अब प्राप्त हमें हो पद अनर्घ, हम यही भावना भाते हैं।
अत एव चरण में जिन सुपार्श्व, यह पावन अर्घ्य चढ़ाते हैं।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

शुक्ल पक्ष भादव की षष्ठी, हुई लोक में मंगलकार।
श्री सुपार्श्व माता वसुन्धरा, के उर आ कीन्हें उपकार।।
अर्घ्य चढ़ाते विशद भाव से, बोल रहे हम जय-जयकार।
शीश झुकाकर वंदन करते, प्रभु के चरणों बारम्बार।।

ॐ ह्रीं भाद्रपक्षशुक्ला षष्ठम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

ज्येष्ठ सुदी द्वादशी तिथि को, श्री सुपार्श्व जी जन्म लिए।
सुप्रतिष्ठ नृप माता पृथ्वी, को आकर प्रभु धन्य किए।।
जन्म कल्याणक की पूजा हम, करके भाग्य जगाते हैं।
मोक्षलक्ष्मी हमें प्राप्त हो, यही भावना भाते हैं।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्ला द्वादशां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

ज्येष्ठ सुदी द्वादशी सुहावन, श्री सुपार्श्वनाथ तीर्थेश।
केशलोंच कर दीक्षा धारे, प्रभु ने धरा दिगम्बर भेष।।
हम चरणों में वन्दन करते, मम् जीवन मंगलमय हो।
प्रभु गुण गाते हम भाव सहित, अब मेरे कर्मों का क्षय हो।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्ला द्वादश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

षष्ठी फाल्गुन की अंधियारी, चार घातिया कर्म निवारी।
जिन सुपार्श्व ने ज्ञान जगाया, इस जग को संदेश सुनाया।।
जिस पद को प्रभु तुमने पाया, पाने का वह भाव बनाया।
भाव सहित हम भी गुण गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा षष्ठम्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ कृष्ण फाल्गुन सप्तमी को, जिन सुपारसनाथ जी।
मोक्ष गिरि सम्मेद गिरि से, पाए मुनि कई साथ जी।।
हम कर रहे पूजा प्रभु की, श्रेष्ठ भक्ति भाव से।
मस्तक झुकाते जोड़ कर द्वय, प्रभु पद में चाव से।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा सप्तम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा – जिन सुपार्श्व की अब यहाँ, गाने को जयमाल।
भक्त चरण में आए हैं, मिलकर बालाबाल।।

(काव्य छन्द)

श्री सुपार्श्व जिनराज, सर्व दुखों के हर्त्ता।
भक्तों के सरताज, सौख्य समृद्धि कर्त्ता।।
भव रोगों से तृप्त, जीव के हैं प्रभु त्राता।
जिन अनाथ के नाथ, जगत को देते साता।
नृप प्रतिष्ठ के लाल, पृथ्वी देवी माता।
नगर बनारस जन्म, लिए जिन भाग्य विधाता।
षष्ठी भादव शुक्ल, गर्भ में आये स्वामी।

अन्तिम पाये गर्भ, मोक्ष के हो अनुगामी।
ज्येष्ठ शुक्ल बारस को, जन्मे श्री जिन देवा।
करते सह परिवार, इन्द्र जिनवर की सेवा।
स्वर्गों से सौधर्म इन्द्र, ऐरावत लाया।
पाण्डुक शिला पे जाके, प्रभु का न्हवन कराया।
स्वस्तिक देखा चिन्ह, इन्द्र ने दांये पग में।
जिन सुपार्श्व का जयकारा, गूंजा इस जग में।
ज्येष्ठ शुक्ल बारस को, जिनवर संयम धारे।
केशों का लुन्चन करके, प्रभु वस्त्र उतारे।
छठी कृष्ण फाल्गुन को, घाती कर्म नशाए।
अक्षय अनुपम अविनाशी, प्रभु ज्ञान जगाए।
सातें कृष्ण फाल्गुन को, प्रभु जी मोक्ष सिधाए।
तीर्थराज सम्मेद शिखर से, मुक्ति पाए।
हे सुपार्श्व ! तव चरणों में, हम शीश झुकाते।
विशद मोक्ष हो प्राप्त हमें, हम तव गुण गाते।

दोहा – **पार्श्वमणि सम हैं प्रभु, जिन सुपार्श्व है नाम।**
हमको भी निज सम करो, शत्–शत् बार प्रणाम।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(अडिल्य छन्द)

जिन सुपार्श्व हमको मुक्तिवर दीजिए,
भव बाधा मेरी जिनवर हर लीजिए।
चरण कमल में करते हैं हम अर्चना,
तीन योग से पद में करते वन्दना।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

श्री चन्द्रप्रभु पूजा

(स्थापना)

हे चन्द्रप्रभु ! हे चन्द्रानन ! महिमा महान् मंगलकारी।
तुम चिदानन्द आनन्द कंद, दुःख द्वन्द फंद संकटहारी।।
हे वीतराग ! जिनराज परम ! हे परमेश्वर ! जग के त्राता।
हे मोक्ष महल के अधिनायक ! हे स्वर्ग मोक्ष सुख के दाता।।
मेरे मन के इस मंदिर में, हे नाथ ! कृपा कर आ जाओ।
आह्वानन करता हूँ प्रभुवर, मुझको सद् राह दिखा जाओ।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र-अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(गीता छन्द)

भव सिन्धु में भटके फिरे, अब पार पाने के लिए।
क्षीरोदधि का जल ले आये, हम चढ़ाने के लिए।।
श्री चन्द्रप्रभु के चरण की, शुभ वंदना से हो चमन।
हम सिर झुकाकर विशद पद में, कर रहे शत् शत् नमन्।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हमने चतुर्गति में भ्रमण कर, दुःख अति ही पाए हैं।
हम चउ गति से छूट जाएँ, गंध सुरभित लाए हैं।।
श्री चन्द्रप्रभु के चरण की, शुभ वंदना से हो चमन।
हम सिर झुकाकर विशद पद में, कर रहे शत् शत् नमन्।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

भटके जगत् में कर्म के वश, दुःख से अकुलाए हैं।
अब धाम अक्षय प्राप्ति हेतु, धवल अक्षत लाए हैं।।
श्री चन्द्रप्रभु के चरण की, शुभ वंदना से हो चमन।
हम सिर झुकाकर विशद पद में, कर रहे शत् शत् नमन्।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

भव भोग से उद्विग्न हो, कई दुःख हमने पाए हैं।
अब छूटने को भव दुखों से, पुष्प चरणों लाए हैं।।
श्री चन्द्रप्रभु के चरण की, शुभ वंदना से हो चमन।
हम सिर झुकाकर विशद पद में, कर रहे शत् शत् नमन्।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा।

मन की इच्छाएँ मिटी न, चरु अनेकों खाए हैं।
अब क्षुधा व्याधी नाश हेतु, सरस व्यंजन लाए हैं।।
श्री चन्द्रप्रभु के चरण की, शुभ वंदना से हो चमन।
हम सिर झुकाकर विशद पद में, कर रहे शत् शत् नमन्।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मिथ्यात्व अरु अज्ञान से, हम जगत में भरमाए हैं।
अब ज्ञान ज्योती उर जले, शुभ रत्न दीप जलाए हैं।।
श्री चन्द्रप्रभु के चरण की, शुभ वंदना से हो चमन।
हम सिर झुकाकर विशद पद में, कर रहे शत् शत् नमन्।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय महामोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अघ कर्म के आतंक से, भयभीत हो घबराए हैं।
वसु कर्म के आघात को, अग्नि में धूप जलाए हैं।।
श्री चन्द्रप्रभु के चरण की, शुभ वंदना से हो चमन।
हम सिर झुकाकर विशद पद में, कर रहे शत् शत् नमन्।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

लौकिक सभी फल खाए लेकिन, मोक्ष फल न पाए हैं।
अब मोक्षफल की भावना से, चरण श्री फल लाए हैं।।
श्री चन्द्रप्रभु के चरण की, शुभ वंदना से हो चमन।
हम सिर झुकाकर विशद पद में, कर रहे शत् शत् नमन्।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंध आदिक द्रव्य वसु ले, अर्घ्य शुभम् बनाए हैं।
शाश्वत सुखों की प्राप्ति हेतू, थाल भरकर लाए हैं।।
श्री चन्द्रप्रभु के चरण की, शुभ वंदना से हो चमन।
हम सिर झुकाकर विशद पद में, कर रहे शत् शत् नमन्।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

सोलह स्वप्न देखती माता, हर्षित होती भाव विभोर।
रत्न वृष्टि करते हैं सुरगण, सौ योजन में चारों ओर।।
चैत वदी पंचम तिथि प्यारी, गर्भ में प्रभुजी आये थे।
चन्द्रपुरी नगरी को, सुन्दर, आकर देव सजाए थे।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णा पंचम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पौष कृष्ण एकादशि पावन, महासेन नृप के दरबार।
जन्म हुआ था चन्द्रप्रभु का, होने लगी थी जय-जयकार।।
बालक को सौधर्म इन्द्र ने, ऐरावत पर बैठाया।
पाण्डुक शिला पे न्हवन कराया, मन मयूर तब हर्षाया।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णा एकादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

पौष वदी ग्यारस को प्रभु ने, राज्य त्याग वैराग्य लिया।
पञ्चमुष्टि से केश लुञ्च कर, महाव्रतों को ग्रहण किया।।
आत्मध्यान में लीन हुए प्रभु, निज में तन्मय रहते थे।
उपसर्ग परीषह बाधाओं को, शांतभाव से सहते थे।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णा एकादश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

फाल्गुन वदी सप्तमी के दिन, कर्म घातिया नाश किए।
निज आतम में रमण किया अरु, केवल ज्ञान प्रकाश किए।।
अर्ध अधिक वसु योजन परिमित, समवशरण था मंगलकार।
इन्द्र नरेन्द्र सभी मिल करते, चन्द्रप्रभु की जय-जयकार।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा सप्तम्यां ज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

ललितकूट सम्मेदशिखर पर, फाल्गुन शुक्ल सप्तमी वार।
वसुकर्मों का नाश किया अरु, नर जीवन का पाया सार।।
निर्वाण महोत्सव किया इन्द्र ने, देवों ने बोला जयकार।
चन्द्रप्रभु ने चन्द्र समुज्ज्वल, सिद्धशिला पर किया विहार।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्ला सप्तम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

जयमाला

दोहा – चन्द्रप्रभु के चरण में, करता हैं नत भाल।
गुणमणि माला हेतु हम, गाते हैं जयमाल।।

(शंभू छन्द)

ऋषि मुनि यतिगण सुरगण मिलकर, जिनका ध्यान लगाते हैं।
वह सर्व सिद्धियों को पाकर, भवसागर से तिर जाते हैं।।
जो ध्यान प्रभु का करते हैं, दुख उनके पास न आते हैं।
जो चरण शरण में रहते हैं, उनके संकट कट जाते हैं।।
अघ कर्म अनादि से मिलकर, भव वन में भ्रमण कराते हैं।
जो चरण शरण प्रभु की पाते, वह उनके पास न आते हैं।।
अध्यात्म आत्मबल का गौरव, उनका स्वमेव वृद्धि पाता।
श्रद्धान ज्ञान आचरण सुतप, आराधन में मन रम जाता।।
तुमने सब बैर विरोधों में, समता का ही रस पान किया।
उस समता रस को पाने हेतु, मैंने प्रभु का गुणगान किया।।
तुम हो जग में सच्चे स्वामी, सबको समान कर लेते हो।
तुम हो त्रिकालदर्शी भगवन्, सबको निहाल कर देते हो।।
तुमने भी तीर्थ प्रवर्तन कर, तीर्थंकर पद को पाया है।
तुम हो महान् अतिशयकारी, तुममें विज्ञान समाया है।।
तुम गुण अनन्त के धारी हो, चिन्मूरत हो जग के स्वामी।
तुम शरणागत को शरणरूप, अन्तर ज्ञाता अन्तर्यामी।।
तुम दूर विकारी भावों से, न राग द्वेष से नाता है।
जो शरण आपकी आ जाए, मन में विकार न लाता है।।

सूरज की किरणों को पाकर ज्यों, फूल स्वयं खिल जाते हैं।
फूलों की खूशबू को पाने, मधुकर मधु पाने आते हैं।।
हे चन्द्रप्रभु ! तुम चंदन हो, जग को शीतल कर देते हो।
चन्दन तो रहा अचेतन जड़, तुम पर की जड़ता हर लेते हो।।
सुनते हैं चन्द्र के दर्शन से, रात्रि में कुमुदनी खिल जाती।
पर चन्द्र प्रभु के दर्शन से, चित्त चेतन की निधि मिल जाती।।
तुम सर्व शांति के धारी हो, मेरी विनती स्वीकार करो।
जैसे तुम भव से पार हुए, मुझको भी भव से पार करो।।
जो शरण आपकी आता है, मन वांछित फल को पाता है।
ज्यों दानवीर के द्वारे से, कोइ खाली हाथ न आता है।।
जिसने भी आपका ध्यान किया, बहुमूल्य सम्पदा पाई है।
भगवान आपके भक्तों में, सुख साता आन समाई है।।
जो भाव सहित पूजा करते, पूजा उनको फल देती है।
पूजा की पुण्य निधि आकर, संकट सारे हर लेती है।।
जिस पथ को तुमने पाया है, वह पथ शिवपुर को जाता है।
उस पथ का जो अनुगामी है, वह परम मोक्ष पद पाता है।।
यह अनुपम और अलौकिक है, इसका कोई उपमान नहीं।
वह जीव अलौकिक शुद्ध रहे, जग में कोई और समान नहीं।।

(छन्द घत्तानन्द)

जय-जय जिन चन्दा, पाप निकन्दा, आनन्द कन्दा सुखकारी।
जय करुणाधारी, जग हितकारी, मंगलकारी अवतारी।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा – शिवमग के राही परम, शिव नगरी के नाथ।
शिवसुख को पाने 'विशद', चरण झुकाते माथ।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

श्री पुष्पदन्त पूजा

(स्थापना)

सुर नर किन्नर विद्याधर भी, पुष्पदंत को ध्याते हैं।
महिमा जिनकी जग में अनुपम, उनके गुण को गाते हैं।।
पुष्पदंत हैं कन्त मोक्ष के, उनके चरणों में वंदन।
'विशद' भाव से करते हैं हम, श्री जिनवर का आह्वानन्।।
हे जिनेन्द्र ! करुणा करके, मेरे अन्तर में आ जाओ।
हे पुष्पदंत ! हे कृपावन्त !, प्रभु हमको दर्श दिखा जाओ।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्र ! अत्र-अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन्।
ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

कर्मोंदय के कारण हमने, विषयों का व्यापार किया।
मिथ्या और कषायों के वश, हेय तत्त्व से प्यार किया।।
जन्म जरादि नाश हेतु हम, चरणों नीर चढ़ाते हैं।
परम पूज्य जिन पुष्पदन्त को, विशद भाव से ध्याते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

योगों की चंचलता द्वारा, कर्मों का आस्रव होता।
अशुभ कर्म के कारण प्राणी, जग में खाता है गोता।।
भव आतप के नाश हेतु हम, चंदन चरण चढ़ाते हैं।
परम पूज्य जिन पुष्पदंत को, विशद भाव से ध्याते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चदनं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रिय विषय रहे क्षणभंगुर, बिजली सम अस्थिर रहते।
पुण्य के फल से मिल पाते हैं, पापी कई इक दुःख सहते।।

पद अखंड अक्षय पाने को, अक्षत चरण चढ़ाते हैं।
परम पूज्य जिन पुष्पदंत को, विशद भाव से ध्याते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

शील विनय जप तप व्रत संयम, प्राप्त नहीं कर पाया है।
मोह महामद में फंसकर के, जीवन व्यर्थ गंवाया है।।
काम बाण के नाश हेतु हम, चरणों पुष्प चढ़ाते हैं।
परम पूज्य जिन पुष्पदंत को, विशद भाव से ध्याते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

भोगों की मृग तृष्णा में ही, सारे जग में भ्रमण किया।
विषयों की ज्वाला में जलकर, जन्म लिया अरु मरण किया।।
क्षुधा व्याधि के नाश हेतु हम, व्यंजन सरस चढ़ाते हैं।
परम पूज्य जिन पुष्पदंत को, विशद भाव से ध्याते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव शास्त्र गुरु सप्त तत्त्व में, जिसको भी श्रद्धान नहीं।
भवसागर में रहे भटकता, उसका हो निर्वाण नहीं।।
मोह तिमिर के नाश हेतु हम, मणिमय दीप जलाते हैं।
परम पूज्य जिन पुष्पदंत को, विशद भाव से ध्याते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टकर्म का फल है दुष्फल, निष्फल जो पुरुषार्थ करे।
अष्ट गुणों को हरने वाले, प्राणी का परमार्थ हरे।।
अष्ट कर्म के नाश हेतु हम, अनुपम धूप जलाते हैं।
परम पूज्य जिन पुष्पदंत को, विशद भाव से ध्याते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ कर्मों के फल से जग के, सारे फल हमने पाए।
मोक्ष महाफल नहीं मिला यह, फल खाकर के पछताए।।
मोक्ष महाफल प्राप्ति हेतु हम, श्रीफल चरण चढ़ाते हैं।
परम पूज्य जिन पुष्पदंत को, विशद भाव से ध्याते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

निर्मल जल सम शुद्ध हृदय, चंदन सम मनहर शीतलता।
अक्षत सम अक्षय भाव रहे, है सुमन समान सुकोमलता।।
हैं मिष्ठ वचन मोदक जैसे, दीपक सम ज्ञान प्रकाश रहा।
यश धूप समान सुविकसित कर, फल श्रीफल जैसे सुफल अहा।।
अपने मन के शुभ भावों का, यह चरणों अर्घ्य चढ़ाते हैं।
हम परम पूज्य जिन पुष्पदंत को, विशद भाव से ध्याते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

फाल्गुन कृष्ण पक्ष की नौमी, काकंदीपुर में भगवान।
पुष्पदंत अवतार लिए हैं, रमा मात के उर में आन।।
अर्घ्य चढ़ाते विशद भाव से, बोल रहे हम जय-जयकार।
शीश झुकाकर वंदन करते, प्रभु के चरणों बारम्बार।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा नवम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री पुष्पदन्त जिनाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अगहन शुक्ला प्रतिपदा को, जन्में पुष्पदंत भगवान।
नृप सुग्रीव रमा माता के, गृह में हुआ था मंगलगान।।
अर्घ्य चढ़ाते विशद भाव से, बोल रहे हम जय-जयकार।
शीश झुकाकर वंदन करते, प्रभु के चरणों बारम्बार।।

ॐ ह्रीं अगहन शुक्लाप्रतिपदायां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री पुष्पदंत जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अगहन माह शुक्ल की एकम्, दीक्षा धारे जिन तीर्थेश।
पुष्पदंतजी हुए विरागी, राग रहा न मन में लेश।।
हम चरणों में वन्दन करते, मम जीवन यह मंगलमय हो।
प्रभु गुण गाते हम भाव सहित, अब मेरे कर्मों का क्षय हो।।

ॐ ह्रीं अगहन शुक्ला प्रतिपदायां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री पुष्पदंतनाथ जिनाय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

(चौपाई)

कार्तिक शुक्ल दोज पहिचानो, पुष्पदंत तीर्थंकर मानो।
केवलज्ञान प्रभु प्रगटाए, समवशरण तब इन्द्र बनाए।।
जिस पद को प्रभु तुमने पाया, पाने का वह भाव बनाया।
भाव सहित हम भी गुण गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्ला द्वितीयायां ज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री पुष्पदंतनाथ जिनाय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

(गीता छन्द)

अष्टमी शुभ आश्विन शुक्ला, सम्मेदगिरि से ध्यान कर।
पुष्पदंत जिन मोक्ष पहुँचे, जगत् का कल्याण कर।।
हम कर रहे पूजा प्रभु की, श्रेष्ठ भक्ति भाव से।
मस्तक झुकाते जोड़ कर द्रव्य, प्रभु पद में चाव से।।

ॐ ह्रीं आश्विनशुक्लाऽष्टम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री पुष्पदंतनाथ जिनाय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

जयमाला

दोहा – मुक्ति वधू के कंत तुम, पुष्पदंत भगवान।
गुण गाएँ जयमाल कर, पाएँ मोक्ष निधान।।

(पद्धडि छन्द)

जय-जय जिनवर श्री पुष्पदंत, तुम मुक्ति वधु के हुए कंत।
जय शीश झुकाते चरण संत, जय भवसागर का किए अंत।।

जय फाल्गुन वदि नौमी सुजान, सुरपति कीन्हे प्रभु गर्भ कल्याण।
जय मगसिर वदि एकम् सुकाल, जय जन्म लिया प्रभु प्रात:काल।।

जय जन्म महोत्सव इन्द्र देव, खुश होकर करते हैं सदैव।
जय ऐरावत सौधर्म लाय, जय मेरू गिरि अभिषेक कराय।।

जय वज्रवृषभ नाराच देह, जय सहस आठ लक्षण सुगेह।
प्रभु दीर्घकाल तक राज कीन, मगसिर सित एकम् सुपथ लीन।।

जय पुष्पक वन पहुँचे सुजाय, प्रभु सालिवृक्ष ढिग ध्यान पाय।
जय कर्म घातिया किए नाश, निज आतम शक्ति कर प्रकाश।।
जय कार्तिक सुदि द्वितिया महान्, प्रभु पाये केवलज्ञान भान।
जय-जय भविजन उपदेश पाय, प्रभु के चरणों में शीश नाय।।

प्रभु दीजे जग को ज्ञानदान, पाते कई प्राणी दृढ़ श्रद्धान।
कई ज्ञान सहित चारित्रधार, करुणाकर जग जन जलधिसार।।

जय भादों सुदि आठें प्रसिद्ध, प्रभु कर्म नाश कर हुए सिद्ध।
जय-जय जगदीश्वर जगत् ईश, तव चरणों में नत नराधीश।।

जय द्रव्यभाव नो कर्म नाश, जय सिद्ध शिला पर किए वास।
जय ज्ञान मात्र ज्ञायक स्वरूप, तुम हो अनंत चैतन्य रूप।।

निर्द्वन्द्व निराकुल निराधार, निर्मल निष्कल प्रभु निराकार।
श्री जिन के गुण का नहीं पार, भक्तों के हो प्रभु कर्ण धार।।

दोहा – आलोकित प्रभु लोक में, तव परमात्म प्रकाश।
आनंदामृत पानकर, मिटे आस की प्यास।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सोरठा – पुष्पदंत भगवान, ज्ञान सुमन प्रभु दीजिए।
पुष्पांजलि अर्पित विशद, नाथ क्लेश हर लीजिए।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

श्री शीतलनाथ पूजा

(स्थापना)

शीतलनाथ अनाथों के हैं, स्वामी अनुपम अविकारी।
शांति प्रदायक सब सुखकर्त्ता, ग्रह अरिष्ट पीड़ाहारी।।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा अनुपम, करे कर्म का पूर्ण शमन।
भाव सहित हम करतें प्रभु का, हृदय कमल में आह्वानन्।।
यह भक्त खड़े हैं आश लिए, उनकी विनती स्वीकार करो।
तुम हृदय कमल पर आ तिष्ठो, वश इतना सा उपकार करो।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्र ! अत्र-अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन।
ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(तर्ज – सोलहकारण की)

चरण चढ़ाएँ निर्मल नीर, त्रयधारा देकर गंभीर।
परम सुखकार, प्रभु पद वन्दन बारम्बार।।
जन्मादि का रोग नशाय, कर्म नाश मुक्ति पद पाय।
परम सुखकार, प्रभु पद वन्दन बारम्बार।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

घिसकर के चन्दन गोशीर, मैटे जो भव-भव की पीर।
परम सुखकार, प्रभु पद वन्दन बारम्बार।।
प्राणी का भव ताप नशाय, अतिशयकारी सौख्य दिलाय।
परम सुखकार, प्रभु पद वन्दन बारम्बार।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय अमल अखण्ड़ महान्, पद पाएँ हम हे भगवान!
परम सुखकार, प्रभु पद वन्दन बारम्बार।।

सुरभित अक्षत धोकर लाय, प्रभु चरणों में दिए चढ़ाय।
परम सुखकार, प्रभु पद वन्दन बारम्बार।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प सुगन्धित ले मनहार, रंग बिरंगे विविध प्रकार।
परम सुखकार, प्रभु पद वन्दन बारम्बार।।
काम बाण का रोग नशाय, चेतन की शक्ति खिल जाय।
परम सुखकार, प्रभु पद वन्दन बारम्बार।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत के ताजे ले पकवान, चढ़ा रहे करके गुणगान।
परम सुखकार, प्रभु पद वन्दन बारम्बार।।
क्षुधा रोग मेरा नश जाय, तव चरणों की भक्ति पाय।
परम सुखकार, प्रभु पद वन्दन बारम्बार।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह तिमिर का होय विनाश, पाएँ सम्यक् ज्ञान प्रकाश।
परम सुखकार, प्रभु पद वन्दन बारम्बार।।
रत्नमयी शुभ दीप जलाय, प्रभु के चरणों दिए चढ़ाय।
परम सुखकार, प्रभु पद वन्दन बारम्बार।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट गंध युत धूप महान्, करने अष्ट कर्म की हान।
परम सुखकार, प्रभु पद वन्दन बारम्बार।।
अष्ट कर्म को पूर्ण नशाय, सिद्ध शिला हमको मिल जाय।
परम सुखकार, प्रभु पद वन्दन बारम्बार।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री फल केला आम अनार, भांति-भांति के ले मनहार।
परम सुखकार, प्रभु पद वन्दन बारम्बार।।

श्री जिनेन्द्र के चरण चढ़ाय, मोक्ष सुफल पाने को भाय।
परम सुखकार, प्रभु पद वन्दन बारम्बार।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट द्रव्य ले मंगलकार, अर्घ्य चढ़ाए अपरम्पार।
परम सुखकार, प्रभु पद वन्दन बारम्बार।।
पद अनर्घ हमको मिल जाय, रत्नत्रय पा मुक्ति पाय।
परम सुखकार, प्रभु पद वन्दन बारम्बार।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

चैत वदी आठें शीतल जिन, मात सुनंदा उर धारे।
रत्नवृष्टि करके इन्द्रों ने, बोले प्रभु के जयकारे।।
अर्घ्य चढ़ाते विशद भाव से, बोल रहे हम जय-जयकार।
शीश झुकाकर वंदन करते, प्रभु के चरणों बारम्बार।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णा अष्टम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री शीतलनाथाय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

माघ वदी द्वादशी सुहावन, भद्दलपुर में शीतलनाथ।
मात सुनंदा के गृह जन्मे, जिनके चरण झुकाऊँ माथ।।
अर्घ्य चढ़ाते विशद भाव से, बोल रहे हम जय-जयकार।
शीश झुकाकर वंदन करते, प्रभु के चरणों बारम्बार।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णा द्वादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री शीतलनाथाय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

माघ कृष्ण द्वादशी सुहावन, जिनवर श्री शीतल स्वामी।
जैन दिगम्बर दीक्षा धारे, बने मोक्ष के अनुगामी।।
हम चरणों में वन्दन करते, मम जीवन यह मंगलमय हो।
प्रभु गुण गाते हम भाव सहित, अब मेरे कर्मों का क्षय हो।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णा द्वादश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री शीतलनाथाय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

पौष कृष्ण की चौदश आई, शीतलनाथ जिनेश्वर भाई।
बने उसी दिन केवलज्ञानी, ज्ञान सुधामृत के वरदानी।।
जिस पद को प्रभु तुमने पाया, पाने का वह भाव बनाया।
भाव सहित हम भी गुण गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णा चतुर्दश्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री शीतलनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अश्विन शुक्ला अष्टमी, जिन श्री शीतलनाथ जी।
मोक्ष गिरि सम्मेद से, पाए कई मुनि साथ जी।।
हम कर रहे पूजा प्रभु की, श्रेष्ठ भक्ति भाव से।
मस्तक झुकाते जोड़ कर द्वय, प्रभु पद में चाव से।।

ॐ ह्रीं आश्विनशुक्लाऽष्टम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री शीतलनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा – तीन लोक में पूज्य हैं, शीतल नाथ त्रिकाल।
विशद भाव से गा रहे, उनकी हम जयमाल।।

(पद्धरि छन्द)

जय शीतलनाथ सुधीर धीर, जय ज्ञान सुधामृत धरणधीर।
जय धर्म शिरोमणि परम वीर, जय भव सागर के श्रेष्ठ तीर।।

जय भद्दलपुर में जन्म लीन, जय दृढ़रथ नृप शुभ राज कीन।
जय मात सुनन्दा गर्भ पाय, सपने सोलह देखे सुखाय।।

जय चैत कृष्ण आठे जिनेश, जिन गर्भ प्राप्त कीन्हें विशेष।
जय माघ बदी बारस सुजान, प्रभु जन्म लिए जग में महान्।।

खुशियाँ छाई जग में अपार, वन्दन कीन्हें सुर बार-बार।
सौधर्म इन्द्र तव चरण आय, ऐरावत अपने साथ लाय।।

आई थी उसके शची साथ, लीन्हा बालक को स्वयं हाथ।
पाण्डुक वन को चल दिया इन्द्र, थे साथ वहाँ पर कई सुरेन्द्र ।।

फिर न्हवन किए प्रभु का अपार, महिमा का जिसकी नहीं पार।
तव कल्पवृक्ष लक्षण सुजान, भक्ति कीन्हीं प्रभु की महान् ।।

चरणों में सब कीन्हें प्रणाम, प्रभु का शीतल जिन दिए नाम।
फिर माघ वदी बारस सुजान, प्रभु तप धारे जग में महान ।।

कीन्हें जिन आतम का सुध्यान, फिर पाए केवल ज्ञान भान।
तिथि पौष बदी चौदस जिनेश, शत् इन्द्र किए भक्ति विशेष ।।

तव समवशरण रचना महान्, सुरगण मिलकर कीन्हें प्रधान।
फिर दिव्य देशना दिए नाथ, गणधर झेले तब झुका माथ ।।

तब भव्य जीव पाए सुज्ञान, संयम धारे कई जीव आन।
फिर अश्विन सुदि आठे जिनेश, जिन कर्म नाश कीन्हे अशेष ।।

सम्मेद शिखर से मुक्ति पाय, फिर सिद्ध शिला पहुँचे जिनाय।
शिवपुर का कीन्हे प्रभु राज, जिन पर हम करते सभी नाज ।।

दोहा – शीतल नाथ जिनेन्द्र के, चरण झुकाएँ माथ।
मोक्ष मार्ग में दीजिए, हम सबका प्रभु साथ ।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा – भाव सहित वन्दन करें, चरणों में हे ईश।
विशद भाव से पाद में, झुका रहे हम शीश ।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

(नोट– शीतलनाथ भगवान के 'पंचकल्याणक और सुगंध दशमी व्रत' के उद्यापन में श्री शीतलनाथ विधान कीजिए।)

श्री श्रेयांसनाथ पूजा

(स्थापना)

रवि केवल ज्ञान का शुभ अनुपम, अन्तर में जिनके चमक रहा।
भव्यों को रत्नत्रय द्वारा, जो पहुँचाते हैं मोक्ष अहा।
संयम तप के पथ पर चलकर, जो पहुँच गये हैं शिवपुर में
वह तीर्थंकर श्रेयांस जिनेश्वर, आन पधारें मम उर में।
हमने अपनाए मार्ग कई, पर हमें मिला न मार्ग सही।
प्रभु बढ़े आप जिस मारग पर, हम भी अपनाएँ मार्ग वही ।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्र ! अत्र–अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चाल छन्द)

जन्मादि जरा से हारे, इस जग के प्राणी सारे।
हम उससे बचने आये, ये नीर चढ़ाने लाए ।।
जय–जय श्रेयांस अविकारी, हम पूजा करें तुम्हारी।
हम भाव सहित गुण गाते, चरणों में शीश झुकाते ।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भाई संसार असारा, सन्तप्त जगत है सारा।
हम चन्दन श्रेष्ठ घिसाते, चरणों में नाथ चढ़ाते ।।
जय–जय श्रेयांस अविकारी, हम पूजा करें तुम्हारी।
हम भाव सहित गुण गाते, चरणों में शीश झुकाते ।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय पद कभी न पाया, प्राणी जग में भटकाया।
यह अक्षत श्रेष्ठ धुलाए, प्रभु यहाँ चढ़ाने लाए ।।
जय–जय श्रेयांस अविकारी, हम पूजा करें तुम्हारी।
हम भाव सहित गुण गाते, चरणों में शीश झुकाते ।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अक्षयतान् पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

है काम वासना भाई, सारे जग में दुखदाई।
हम उससे बचने आए, प्रभु पुष्प चढ़ाने लाए।।
जय-जय श्रेयांस अविकारी, हम पूजा करें तुम्हारी।
हम भाव सहित गुण गाते, चरणों में शीश झुकाते।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सब क्षुधा रोग के रोगी, हैं साधु योगी भोगी।
अब मैटो भूख हमारी, नैवेद्य चढ़ाते भारी।।
जय-जय श्रेयांस अविकारी, हम पूजा करें तुम्हारी।
हम भाव सहित गुण गाते, चरणों में शीश झुकाते।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है मोह महातम भारी, मोहित है दुनियाँ सारी।
हम मोह नशाने आए, प्रभु दीप जलाकर लाए।।
जय-जय श्रेयांस अविकारी, हम पूजा करें तुम्हारी।
हम भाव सहित गुण गाते, चरणों में शीश झुकाते।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

चेतन को दिया हवाला, कर्मों ने घेरा डाला।
हम कर्म नशाने आये, यह सुरभित गंध जलाए।।
जय-जय श्रेयांस अविकारी, हम पूजा करें तुम्हारी।
हम भाव सहित गुण गाते, चरणों में शीश झुकाते।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हम मोक्ष महाफल पाएँ, भव बाधा पूर्ण नशाएँ।
यह फल ताजे हम लाए, चरणों में श्रेष्ठ चढ़ाए।।
जय-जय श्रेयांस अविकारी, हम पूजा करें तुम्हारी।
हम भाव सहित गुण गाते, चरणों में शीश झुकाते।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु पद अनर्घ को पाये, हम अनुपम थाल भराये।
यह आठों द्रव्य मिलाते, प्रभु चरणों श्रेष्ठ चढ़ाते।।
जय-जय श्रेयांस अविकारी, हम पूजा करें तुम्हारी।
हम भाव सहित गुण गाते, चरणों में शीश झुकाते।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

ज्येष्ठ वदी षष्ठी है पावन, सिंहपुरी नगरी में आन।
गर्भकल्याण प्राप्त किए शुभ, श्री श्रेयांसनाथ भगवान।।
अर्घ्य चढ़ाते विशद भाव से, बोल रहे हम जय-जयकार।
शीश झुकाकर वंदन करते, प्रभु के चरणों बारम्बार।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णा षष्ठम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

फाल्गुन वदी तिथि ग्यारस को, पाए जन्म श्रेयांस कुमार।
विमलराज रानी विमला के, गृह में हुआ मंगलाचार।।
जन्म कल्याणक की पूजा हम, करते भक्ति भाव से।
मोक्षलक्ष्मी हमें प्राप्त हो, रत्नत्रय की नाव से।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा एकादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

एकादशी फाल्गुन कृष्णा की, श्री श्रेयांसनाथ भगवान।
राग-द्वेष तज दीक्षा धारे, सर्व लोक में हुए महान्।।
हम चरणों में वन्दन करते, मम जीवन यह मंगलमय हो।
प्रभु गुण गाते हम भाव सहित, अब मेरे कर्मों का क्षय हो।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा एकादश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री श्रेयासंनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

(छन्द चामर)

माघ कृष्ण की अमावस, प्राप्त किए मंगलम्।
श्री श्रेयांस तीर्थेश, आप हुए सुमंगलम्।।

कर्म चार नाश आप, ज्ञान पाए मंगलम्।
दिव्यध्वनि आप दिए, सौख्यकार मंगलम्।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णाऽमावस्यायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

पूर्णमासी माह श्रावण, सम्मेदगिरि से ध्यान कर।
श्रेय जिन स्वधाम पहुँचे, जगत् का कल्याण कर।।
हम कर रहे पूजा प्रभु की, श्रेष्ठ भक्ति भाव से।
मस्तक झुकाते जोड़ कर द्रव्य, प्रभु पद में चाव से।।

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्ला पूर्णिमायां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जयमाला

दोहा – इन्द्र सुरासुर चरण में, झुकते हैं भूपाल।
श्री श्रेयांस जिनराज की, गाते हम जयमाल।।

(काव्य छन्द)

जय-जय श्रेयांसनाथ, प्रभु आप कहाए।
जय-जय जिनेन्द्र आप, तीर्थेश पद पाए।।
प्रभु सिंहपुरी नगरी में, जन्म लिया है।
विमला श्री माता को, प्रभु धन्य किया है।।
राजा विमल प्रभु के, प्रभु लाल कहाए।
शुभ ज्येष्ठ कृष्ण, अष्टमी को गर्भ में आए।।
फाल्गुन बदी ग्यारस, प्रभु जन्म पाए हैं।
सौधर्म आदि इन्द्र, चरण सिर झुकाए हैं।।
पाण्डुक शिला पे जाके, अभिषेक कराया।
गेण्डा का चिन्ह देख, सारे जग को बताया।।
श्रेयांस नाथ जिनवर का, नाम तब दिया।
आके शची ने प्रभु का, श्रृंगार शुभ किया।।
इक्कीस लाख वर्ष का, कुमार काल है।
युवराज सुपद पाया, प्रभु ने विशाल है।।

अस्सी धनुष की जिनवर, शुभ देह पाए हैं।
आयु चौरासी लाख वर्ष की गिनाए हैं।।
श्री का विनाश देख, वैराग्य धर लिया।
फाल्गुन वदी सुग्यारस, प्रभु ध्यान शुभ किया।।
जाके मनोहर वन में, तेला किए प्रभो।
फिर घातिया विनाश करके, हो गये विभो।।
शुभ माघ की अमावस का, दिन शुभम् रहा।
कैवल्य ज्ञान पाये, श्रेयांस जिन अहा।।
रचना समवशरण की, तब देव शुभ किए।
प्रभु के चरण में ढोक आके, देव सब दिए।।
ॐकार रूप दिव्य ध्वनि, दीन्हे प्रभु अहा।
जीवों के लिए धर्म का, साधन महा रहा।।
धर्मादि सात सत्तर, गणधर थे पास में।
जो दिव्य देशना की, रहते थे आस में।।
करके विहार जिनवर, सम्मेद गिरि गये।
आश्चर्य वहाँ देवों ने, किए कुछ नये।।
श्रावण की पूर्णिमा को, सब कर्म नशाए।
फिर सिद्ध शिला पर, अपना धाम बनाए।।
शाश्वत अखण्ड सुख फिर, पाए प्रभु अहा।
वह सौख्य प्राप्त करने का, भाव मम् रहा।।

दोहा– श्री श्रेयांस जिनदेव जी, करो श्रेय का दान।
दाता तीनों लोक के, श्रेयस् करो प्रदान।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा– जो पद पाया आपने, शाश्वत रहा महान।
वह पद पाने के लिए, किया 'विशद' गुणगान।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

(नोट– श्रेयांसनाथ भगवान के पंचकल्याणक पर ''श्री श्रेयांसनाथ विधान'' अवश्य कीजिए।)

श्री वासुपूज्य पूजा

(स्थापना)

हे वासुपूज्य ! तुम जगत् पूज्य, सर्वज्ञ देव करुणाधारी।
मंगल अरिष्ट शांतिदायक, महिमा महान् मंगलकारी।।
मेरे उर के सिंहासन पर, प्रभु आन पधारो त्रिपुरारी।
तुम चिदानंद आनंद कंद, करुणा निधान संकटहारी।।
जिन वासुपूज्य तुम लोक पूज्य, तुमको हम भक्त पुकार रहे।
दो हमको शुभ आशीष परम, मम् उर से करुणा स्रोत बहे।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छन्द)

हम काल अनादी से जग में, कर्मों के नाथ सताए हैं।
तुम सम निर्मलता पाने को, प्रभु निर्मल जल भर लाए हैं।।
हम नाश करें मृतु जन्म जरा, हे जिनवर ! वासुपूज्य स्वामी।
हमको प्रभु ऐसी शक्ती दो, बन जाएँ हम अन्तर्यामी।।1।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रिय के विषय भोग सारे, हमने भव-भव में पाए हैं।
हम स्वयं भोग हो गये मगर, न भोग पूर्ण कर पाए हैं।।
हम भव तापों का नाश करें, हे जिनवर ! वासुपूज्य स्वामी।
हमको प्रभु ऐसी शक्ती दो, बन जाएँ हम अन्तर्यामी।।2।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्मल अनंत अक्षय अखंड, अविनाशी पद प्रभु पाए हैं।
स्वाधीन सफल अविचल अनुपम, पद पाने अक्षत लाए हैं।।

अक्षय स्वरूप हो प्राप्त हमें, हे जिनवर ! वासुपूज्य स्वामी।
हमको प्रभु ऐसी शक्ती दो, बन जाएँ हम अन्तर्यामी।।3।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

जग में बलशाली प्रबल काम, उस काम को आप हराए हैं।
प्रमुदित मन विकसित पुष्प प्रभु, चरणों में लेकर आए हैं।।
हम काम शत्रु विध्वंस करें, हे जिनवर ! वासुपूज्य स्वामी।
हमको प्रभु ऐसी शक्ती दो, बन जाएँ हम अन्तर्यामी।।4।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रिय विषयों की लालच से, चारों गति में भटकाए हैं।
यह क्षुधा रोग न मैट सके, अब क्षुधा मैटने आये हैं।।
नैवेद्य समर्पित करते हम, हे वासुपूज्य ! जिनवर स्वामी।
हमको प्रभु ऐसी शक्ती दो, बन जाएँ हम अन्तर्यामी।।5।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन मोह महा मिथ्या कलंक, आदि सब दोष नशाए हैं।
त्रिभुवन दर्शायक ज्ञान विशद, प्रभु अविनाशी पद पाए हैं।।
मोहांधकार क्षय हो मेरा, हे वासुपूज्य ! जिनवर स्वामी।
हमको प्रभु ऐसी शक्ती दो, बन जाएँ हम अन्तर्यामी।।6।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

है कर्म जगत् में महाबली, उसको भी आप हराए हैं।
गुप्ति आदि तप करके क्षय, कर्मों का करने आये हैं।।
हम धूप अनल में खेते हैं, हे वासुपूज्य ! जिनवर स्वामी।
हमको प्रभु ऐसी शक्ती दो, बन जाएँ हम अन्तर्यामी।।7।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

जग से अति भिन्न अलौकिक फल, निर्वाण महाफल पाये हैं।
हम आकुल व्याकुलता तजने, यह श्री फल लेकर आये हैं।।
हम मोक्ष महाफल पा जाएँ, हे वासुपूज्य ! जिनवर स्वामी।
हमको प्रभु ऐसी शक्ती दो, बन जाएँ हम अन्तर्यामी।।8।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जग में सद् असद् द्रव्य जो हैं, उन सबके अर्घ बताए हैं।
अब पद अनर्घ की प्राप्ति हेतु, हम अर्घ बनाकर लाए हैं।।
हम पद अनर्घ को पा जाएँ, हे वासुपूज्य ! जिनवर स्वामी।
हमको प्रभु ऐसी शक्ती दो, बन जाएँ हम अन्तर्यामी।।9।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

छटवीं कृष्ण अषाढ़ की, हुआ गर्भ कल्याण।
सुर नर किन्नर भाव से, करते प्रभु गुणगान।।1।।

ॐ ह्रीं आषाढ़ कृष्ण षष्ठीयां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री वासुपूज्य जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फाल्गुन कृष्णा चतुर्दशी, जन्मे श्री भगवान।
सुर नर वंदन कर रहे, वासुपूज्य पद आन।।2।।

ॐ ह्रीं फाल्गुन कृष्ण चतुर्दश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री वासुपूज्य जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फाल्गुन कृष्णा चतुर्दशी, तप धारे अभिराम।
सुर नर इन्द्र महेन्द्र सब, करते चरण प्रणाम।।3।।

ॐ ह्रीं फाल्गुन कृष्ण चतुर्दश्यां तपकल्याणक प्राप्त श्री वासुपूज्य जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भादों कृष्ण द्वितिया तिथि, पाये केवलज्ञान।
समवशरण में पूजते, सुर नर ऋषि महान्।।4।।

ॐ ह्रीं भाद्रपद कृष्ण द्वितीयायां ज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री वासुपूज्य जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भादों शुक्ला चतुर्दशी, प्रभु पाए निर्वाण।
पाँचों कल्याणक हुए, चंपापुर में आन।।5।।

ॐ ह्रीं भाद्रपद शुक्ल चतुर्दश्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री वासुपूज्य जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– **वासुपूज्य वसुपूज्य सुत, जयावती के लाल।**
वसु द्रव्यों से पूजकर, करें विशद जयमाल।।

(छंद मोतियादाम)

प्रभु प्रगटाए दर्शन ज्ञान, अनंत सुखामृत वीर्य महान्।
प्रभु पद आये इन्द्र नरेन्द्र, प्रभु पद पूजें देव शतेन्द्र।।
प्रभु सब छोड़ दिए जग राग, जगा अंतर में भाव विराग।
लख्यो प्रभु लोकालोक स्वरूप, झुके कई आन प्रभु पद भूप।।
तज्यो गज राज समाज सुराज, बने प्रभु संयम के सरताज।
अनित्य शरीर धरा धन धाम, तजे प्रभु मोह कषाय अरु काम।।
ये लोक कहा क्षणभंगुर देव, नशे क्षण में जल बुद–बुद एव।
अनेक प्रकार धरी यह देह, किए जग जीवन मांहि सनेह।।
अपावन सात कुधातु समेत, ठगे बहु भांति सदा दुख देत।
करे तन से जिय राग सनेह, बंधे वसु कर्म जिये प्रति येह।।

धरें जब गुप्ति समिति सुधर्म, तबै हो संवर निर्जर कर्म।
किए जब कर्म कलंक विनाश, लहे तब सिद्ध शिला पर वास।।
रहा अति दुर्लभ आतम ज्ञान, किए तिय काल नहीं गुणगान।
भ्रमे जग में हम बोध विहीन, रहे मिथ्यात्व कुतत्त्व प्रवीण।।
तज्यो जिन आगम संयम भाव, रहा निज में श्रद्धान अभाव।
सुदुर्लभ द्रव्य सुक्षेत्र सुकाल, सुभाव मिले नहिं तीनों काल।।
जग्यो सब योग सुपुण्य विशाल, लियो तब मन में योग सम्हाल।
विचारत योग लौकांतिक आय, चरण पद पंकज पुष्प चढ़ाय।।
प्रभु तब धन्य किए सुविचार, प्रभु तप हेतु किए सुविहार।
तबै सौधर्म 'सु शिविका' लाय, चले शिविका चढ़ि आप जिनाय।।
धरे तप केश सुलौंच कराय, प्रभु निज आतम ध्यान लगाय।
भयो तब केवल ज्ञान प्रकाश, किए तब सारे कर्म विनाश।।
दियो प्रभु भव्य जगत उपदेश, धरो फिर प्रभु ने योग विशेष।
तभी प्रभु मोक्ष महाफल पाय, हुए करुणानिधि अनंत सुखाय।।
रचें हम पूजा सुभाव विभोर, करें नित वंदन द्वयकर जोर।
मिले हमको शिवपुर की राह, 'विशद' जीवन में ये ही चाह।।

(छंद घत्तानंद)

जय-जय जिनदेवं, हरिकृत सेवं, सुरकृत वंदित, शीलधरं।
भव भय हरतारं, शिव कर्त्तारं, शीलागारं नाथ परं।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- चम्पापुर में ही प्रभु, पाए पंच कल्याण।
गर्भ जन्म तप ज्ञान शुभ, पाए पद निर्वाण।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

श्री विमलनाथ जिन पूजा

(स्थापना)

विमलनाथ के चरण कमल में, सादर हम करते वन्दन।
पुष्पाञ्जलि करके चरणों में, करते हैं हम अभिनन्दन।।
विमल गुणों के धारी जिन प्रभु, भाव सहित करते अर्चन।
हृदय कमल के सिंहासन पर, करते हम प्रभु आह्वानन।
चरण कमल में आए हम, प्रभु तुमसे है कुछ अपनापन।
प्रभु तीन योग से तीन काल में, करते हम शत् बार नमन।।

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्र ! अत्र-अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन्।
ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(तर्ज – चौबीसी पूजन की)

होवे जन्मादि विनाश, निर्मल जल लाए।
चरणों में तव हे नाथ ! चढ़ाने को आए।।
हे विमलनाथ ! भगवान, विमल गुण के धारी।
करुणा प्रभु करो प्रदान, हे करुणाकारी।।

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हो भव आताप विनाश, चन्दन घिस लाए।
तव पद चर्चन को नाथ, चरणों में आए।।
हे विमलनाथ ! भगवान, विमल गुण के धारी।
करुणा प्रभु करो प्रदान, हे करुणाकारी।।

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय पद पाने हेतु, प्रभु चरणों आए।
यह उत्तम अक्षत नाथ ! चढ़ाने को लाए।।
हे विमलनाथ ! भगवान, विमल गुण के धारी।
करुणा प्रभु करो प्रदान, हे करुणाकारी।।

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

हो काम वासना नाश, भावना हम भाए।
यह पुष्प सुगन्धित नाथ, चढ़ाने को लाए।।
हे विमलनाथ ! भगवान, विमल गुण के धारी।
करुणा प्रभु करो प्रदान, हे करुणाकारी।।

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हो क्षुधा व्याधि का नाश, चरणों सिर नाए।
लेकर ताजे नैवेद्य, चढ़ाने को आए।।
हे विमलनाथ ! भगवान, विमल गुण के धारी।
करुणा प्रभु करो प्रदान, हे करुणाकारी।।

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो मोह तिमिर का नाश, चरणों हम आए।
यह घृत के पावन दीप, जलाकर हम लाए।।
हे विमलनाथ ! भगवान, विमल गुण के धारी।
करुणा प्रभु करो प्रदान, हे करुणाकारी।।

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हो वसु कर्मों का नाश, शरण में हम आए।
यह अष्ट गंध शुभ साथ, जलाने को लाए।।
हे विमलनाथ ! भगवान, विमल गुण के धारी।
करुणा प्रभु करो प्रदान, हे करुणाकारी।।

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हो मोक्ष महल में वास, चढ़ाने फल लाए।
राखो प्रभु मेरी लाज, भक्त चरणों आए।।
हे विमलनाथ ! भगवान, विमल गुण के धारी।
करुणा प्रभु करो प्रदान, हे करुणाकारी।।

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

पाएँ हम सुपद अनर्घ, अर्घ्य देने लाए।
होवे सिद्धों में वास, भावना यह भाए।।

हे विमलनाथ ! भगवान, विमल गुण के धारी।
करुणा प्रभु करो प्रदान, हे करुणाकारी।।

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

ज्येष्ठ वदी दशमी प्रभु, सुश्यामा उर आन।
नगर कम्पिला अवतरे, विमलनाथ भगवान।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य यह, चढ़ा रहे हम नाथ।
भक्ति का फल प्राप्त हो, चरण झुकाते माथ।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णा दशम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

माघ वदी द्वादशी को, विमलनाथ भगवान।
नगर कम्पिला जन्म से, हो गया सर्व महान्।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य यह, चढ़ा रहे हम नाथ।
भक्ति का फल प्राप्त हो, चरण झुकाते माथ।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णा द्वादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(रोला छन्द)

सुदि माघ चौथ विमलेश, जिन दीक्षा धारी।
पाए प्रभु सुगुण विशेष, जगत् मंगलकारी।।
हम चरणों आए नाथ, अर्घ्य चढ़ाते हैं।
महिमा तव अपरम्पार, फिर भी गाते हैं।।

ॐ ह्रीं माघशुक्ल चतुर्थ्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(चामर छन्द)

आषाढ़ माह शुक्ल पक्ष, तिथि षष्ठी मंगलम्।
श्री जिनेन्द्र विमलनाथ, ज्ञान रूप मंगलम्।।
कर्म चार नाश आप, ज्ञान पाए मंगलम्।
दिव्यध्वनि आप दिए, सौख्यकार मंगलम्।।

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्ण षष्ठम्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

(शम्भू छन्द)

विमलनाथ सम्मेदाचल से, मोक्ष गये मुनियों के साथ।
कृष्ण पक्ष आठें आषाढ़ की, बने आप शिवपुर के नाथ।।
अष्ट गुणों की सिद्धि पाकर, बने प्रभु अंतर्यामी।
हमको मुक्ति पथ दर्शाओ, बनो प्रभु मम् पथगामी।।

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णाऽष्टम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

जयमाला

दोहा – विमल गुणों के कोष हैं, विमल नाथ भगवान।
गाते हैं जयमालिका, करने निज कल्याण।।

(काव्य छन्द)

विमल नाथ जी विमल गुणों के धारी रे।
तीर्थंकर पदवी के जो अधिकारी रे।।
महिमा जिनकी इस जग से है न्यारी रे।
सर्व जगत में जिनवर मंगलकारी रे।।
दर्शन ज्ञान अनन्त वीर्य के धारी रे।
सुख अनन्त के होते जिन अधिकारी रे।।
तीर्थंकर जिन होते हैं अविकारी रे।
महिमा जिनकी होती विस्मयकारी रे।।
समवशरण होता है महिमाशाली रे।
भवि जीवों को देता है खुशहाली रे।।
अष्ट भूमियाँ जिसमें सुन्दरआली रे।
गंधकुटी है तीन पीठिका वाली रे।।
तीन गति के जीव सभा में भाई रे।
पूजा का सौभाग्य जगाते भाई रे।।
मुनि आर्यिका देव देवियां भाई रे।
नर पशु के सब इन्द्र मिले सुखदायी रे।।

देव कई अतिशय दिखलाते भाई रे।
करते है गुणगान ह्रदय हर्षाई रे।।
प्रातिहार्य वसु प्रगटित होते भाई रे।
तरू अशोक है शोक निवारी भाई रे।।
भामण्डल सिंहासन अनुपम भाई रे।
देव दुन्दुभि बजती है सुखदायी रे।।
चौसठ चँवर ढौरते सुरपति भाई रे।
गंधोदक की वृष्टि हो सुखदायी रे।।
छत्र त्रय की शोभा कही न जाई रे।
दिव्य देशना खिरती जग सुखदायी रे।।
कमलाशन पर अधर विराजे भाई रे।
जग में अनुपम है प्रभु की प्रभुताई रे।।
सर्व कर्म का नाश किए जिनराई रे।
सिद्ध शिला पर वास किए तब भाई रे।।
जिनकी महिमा जिनवाणी में गाई रे।
सौख्य अनन्तानन्त प्रभु उपजाई रे।।
हमने भी यह शुभम् भावना भाई रे।
मुक्ति वधु को हम भी पाएँ भाई रे।।
मोक्ष मार्ग की विधि, श्रेष्ठ अपनाई रे।
आज परम यह श्रेष्ठ घड़ी शुभ आई रे।।

दोहा – विमल नाथ के चरण में, पूरी होगी आस।
मोक्ष महल को पाएँगे, है पूरा विश्वास।।

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा – तव चरणों में आए हम, विमल गुणों के नाथ।
विमल नाथ तव चरण में, 'विशद' झुकाते माथ।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री अनन्तनाथ जिन पूजा

(स्थापना)

प्रभु अनन्त गुण पाने वाले, जिन अनन्त कहलाए हैं।
ध्यान योग के द्वारा प्रभु जी, अनन्त चतुष्टय पाए हैं।
हे अनन्त ! भगवन्त आपके, चरणों हम करते अर्चन।
मोक्ष महल का पंथ दिखाओ, करते उर में आह्वानन्।
मिला और न कोइ हमको, शुभ मोक्ष मार्ग का राही नाथ।
आकर हमको मार्ग दिखाओ, नाथ निभाओ मेरा साथ।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्र ! अत्र-अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन।
ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चाल नन्दीश्वर)

यह प्रासुक निर्मल नीर, कलशा पूर्ण भरें।
पाऊँ भवदधि का तीर, धारा तीन करें।।
जय-जय अनन्त भगवान, जग के त्राता हो।
भव्यों के तुम हे नाथ !, भाग्य विधाता हो।।

ॐ ह्रीं श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय जन्मजरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन ले केसर गार, कंचन पात्र भरें।
चरणों में चर्चूं नाथ !, भव संताप हरें।।
जय-जय अनन्त भगवान, जग के त्राता हो।
भव्यों के तुम हे नाथ !, भाग्य विधाता हो।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चदनं निर्वपामीति स्वाहा।

ले तन्दुल अमल अखण्ड, अनुपम थाल भरें।
पाऊँ अक्षय पद नाथ !, चरणों पुञ्ज धरें।।

जय-जय अनन्त भगवान, जग के त्राता हो।
भव्यों के तुम हे नाथ !, भाग्य विधाता हो।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

यह परम सुगन्धित पुष्प, चढ़ाकर हर्षाए।
करने भव ताप विनाश, चरणों हम आए।।
जय-जय अनन्त भगवान, जग के त्राता हो।
भव्यों के तुम हे नाथ ! भाग्य विधाता हो।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजे घृत के नैवेद्य, थाली भर लाए।
हो क्षुधा रोग का नाश, चढ़ाने को आए।।
जय-जय अनन्त भगवान, जग के त्राता हो।
भव्यों के तुम हे नाथ !, भाग्य विधाता हो।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक की ज्योति प्रजाल, अग्नि में जारी।
हो मोह ताप का नाश, मिथ्या तमहारी।।
जय-जय अनन्त भगवान, जग के त्राता हो।
भव्यों के तुम हे नाथ !, भाग्य विधाता हो।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नि में खेऊँ धूप, सुरभित मनहारी।
करके कर्मों का नाश, होऊँ अविकारी।।
जय-जय अनन्त भगवान, जग के त्राता हो।
भव्यों के तुम हे नाथ !, भाग्य विधाता हो।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजे फल ले रसदार, थाली भर लाए।
पाने मुक्ति फल सार, चढ़ाने को आए।।

जय–जय अनन्त भगवान, जग के त्राता हो।
भव्यों के तुम हे नाथ !, भाग्य विधाता हो।।
ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

जल चन्दन आदि मिलाय, अर्घ्य बनाते हैं।
पद पाने हेतु अनर्घ, श्रेष्ठ चढ़ाते हैं।
जय–जय अनन्त भगवान, जग के त्राता हो।
भव्यों के तुम हे नाथ !, भाग्य विधाता हो।।
ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

अनंतनाथ भगवान का, हुआ गर्भ कल्याण।
एकम् कार्तिक कृष्ण की, जयश्यामा उर आन।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य यह, चढ़ा रहे हम नाथ।
भक्ति का फल प्राप्त हो, चरण झुकाते माथ।।
ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णा प्रतिपदायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री अनन्तनाथ जिनाय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

ज्येष्ठ कृष्ण की द्वादशी, सिंहसेन दरबार।
जन्मे प्रभो अनंत जिन, हुआ मंगलाचार।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य यह, चढ़ा रहे हम नाथ।
भक्ति का फल प्राप्त हो, चरण झुकाते माथ।।
ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णा द्वादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री अनंतनाथ जिनाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(रोला छन्द)

बारस बदि ज्येष्ठ महान्, हुए प्रभु अविकारी।
श्री अनंतनाथ भगवान, बने थे अनगारी।।
हम चरणों आए नाथ, अर्घ्य चढ़ाते हैं।
महिमा तव अपरम्पार, फिर भी गाते हैं।।
ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णा द्वादश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री अनंतनाथ जिनाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(छन्द चामर)

चैत कृष्ण की अमावस, प्राप्त किए मंगलम्।
श्री जिनेन्द्र अनंतनाथ, ज्ञान रूप मंगलम्।।
कर्म चार नाश आप, ज्ञान पाए मंगलम्।
दिव्यध्वनि आप दिए, सौख्यकार मंगलम्।।
ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णाऽमावस्यायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री अनंतनाथ जिनाय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

श्री अनंत जिन चैत अमावस, मोक्ष कई मुनियों के साथ।
गिरि सम्मेद शिखर से भगवन्, बने आप शिवपुर के नाथ।।
अष्ट गुणों की सिद्धी पाकर, बने प्रभु अंतर्यामी।
हमको मुक्ति पथ दर्शाओ, बनो प्रभु मम् पथगामी।।
ॐ ह्रीं चैत्र कृष्णाऽमावस्यायां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री अनंतनाथ जिनाय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

जयमाला

दोहा – चिन्मय चिंतामणि प्रभु, गुण अनन्त की खान।
गाते हम जय मालिका, हे अनन्त ! भगवान।।

(छन्द चामर)

दर्श करके आपका, यह कमाल हो गया।
अर्च के पादारविन्द, मैं निहाल हो गया।।
धन्य यह घड़ी हुई, व धन्य जन्म हो गया।
धन्य नेत्र हो गये, प्रभु धन्य शीश हो गया।।
पूज्य नाथ आप हैं, मैं पुजारी हो गया।
देशना से आपकी, मोह दूर हो गया।।
धन्य आत्म तत्त्व का भी, ज्ञान प्राप्त हो गया।
मोह व मिथ्यात्व नाथ, आज मेरा खो गया ।।
आत्मा अनन्त है, अनन्त दीप्तिमान है।
गुण अनन्त की निधान, आत्म कीर्तिमान है।।

दर्शज्ञान वीर्य शुभ, अनन्त सौख्यवान है।
निर्विकार चेतना स्वरूप की निधान है।।
आत्मज्ञान ध्यान से, सर्व कर्म नाश हो।
एक आत्म ज्ञान से, राग का विनाश हो।।
आत्म ज्ञान हीन जीव, लोक में भ्रमाएगा।
साम्यभाव हीन कभी, मोक्ष नहीं पाएगा।।
मोक्ष धाम दे यही, कोइ अन्य से न पाएगा।
स्वात्म ज्ञान ध्यान हीन, ठोकरें ही खाएगा।।
सौख्य दु:ख जन्म मृत्यु, शत्रु कोई मित्र हो।
लाभ या अलाभ में भी, साम्यता पवित्र हो।।
साम्य भाव प्राप्त हो, न राग न विकार हो।
कोई भी उपसर्ग हो, शत्रु का प्रहार हो।।
नाथ आप पादमूल, एक ही है चाहना।
मोक्ष मार्ग प्राप्त हो बस, और कोई चाह ना।।
कर रहे हैं आप से हम, नाथ यही प्रार्थना।
अष्ट द्रव्य साथ ले प्रभु, कर रहे हम अर्चना।।
बार-बार हाथ जोड़, कर रहे हम वन्दना।
अष्ट कर्म का प्रभु अब, होय कभी बन्ध ना।।

दोहा – ब्रह्मा तुम विष्णु तुम्हीं, नारायण तुम राम।
तुम ही शिव जिनवर-तुम्हीं, चरणों 'विशद' प्रणाम।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(आडिल्य छन्द)

जिन अनन्त भगवान आपका नाम है।
चरणों प्रभु अनन्तानन्त प्रणाम है।।
तव गुण पाने आए हैं हम भाव से।
पूजा अर्चा वन्दन करते चाव से।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री धर्मनाथ जिन पूजा

स्थापना *(वीर छन्द)*

हे धर्मनाथ ! हे धर्मतीर्थ !, तुम धर्म ध्वजा को फहराओ।
तुम मोक्ष मार्ग के नेता हो, प्रभु राह दिखाने को आओ।।
तुमने मुक्ती पद वरण किया, तव चरणों हम करते अर्चन।
हृदय कमल के बीच कर्णिका, में आकर तिष्ठो भगवन्।।
भक्तों ने भाव सहित भगवन्, भक्ति के हेतु पुकारा है।
न देर करो उर में आओ, यह तो अधिकार हमारा है।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्र ! अत्र-अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(सखी छन्द)

हम निर्मल जल भर लाएँ, चरणों में धार कराएँ।
जन्मादी रोग नशाएँ, भव सागर से तिर जाएँ।
जय धर्मनाथ जिन स्वामी, तुम हो प्रभु अन्तर्यामी।
तव चरण शरण को पाते, प्रभु चरणों शीश झुकाते।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन यह श्रेष्ठ घिसाए, पद में अर्चन को लाए।
संसार ताप विनशाएँ, भव सागर से तिर जाएँ।।
जय धर्मनाथ जिन स्वामी, तुम हो प्रभु अन्तर्यामी।
तव चरण शरण को पाते, प्रभु चरणों शीश झुकाते।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चदनं निर्वपामीति स्वाहा।

हम अक्षय अक्षत लाए, अक्षय पद पाने आए।
प्रभु अक्षय पदवी पाएँ, भव सागर से तिर जाएँ।।

जय धर्मनाथ जिन स्वामी, तुम हो प्रभु अन्तर्यामी।
तव चरण शरण को पाते, प्रभु चरणों शीश झुकाते।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

उपवन के पुष्प मँगाए, प्रभु यहाँ चढ़ाने लाए।
प्रभु काम बाण नश जाए, भव से मुक्ती मिल जाए।।
जय धर्मनाथ जिन स्वामी, तुम हो प्रभु अन्तर्यामी।
तव चरण शरण को पाते, प्रभु चरणों शीश झुकाते।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजे नैवेद्य बनाए, हम क्षुधा नशाने आये।
प्रभु क्षुधा रोग नश जाए, भव से मुक्ती मिल जाए।।
जय धर्मनाथ जिन स्वामी, तुम हो प्रभु अन्तर्यामी।
तव चरण शरण को पाते, प्रभु चरणों शीश झुकाते।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम मोह नशाने आए, अनुपम यह दीप जलाए।
प्रभु मोह नाश हो जाए, भव से मुक्ती मिल जाये।।
जय धर्मनाथ जिन स्वामी, तुम हो प्रभु अन्तर्यामी।
तव चरण शरण को पाते, प्रभु चरणों शीश झुकाते।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजी यह धूप बनाए, अग्नि से धूम उड़ाएँ।
प्रभु कर्म नाश हो जाएँ, भव सागर से तिर जाएँ।।
जय धर्मनाथ जिन स्वामी, तुम हो प्रभु अन्तर्यामी।
तव चरण शरण को पाते, प्रभु चरणों शीश झुकाते।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु विविध सरस फल लाए, ताजे हमने मँगवाए।
हम मोक्ष महाफल पाएँ, भव सागर से तिर जाएँ।।
जय धर्मनाथ जिन स्वामी, तुम हो प्रभु अन्तर्यामी।
तव चरण शरण को पाते, प्रभु चरणों शीश झुकाते।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आठों द्रव्य मिलाए, यह पावन अर्घ्य बनाए।
हम पद अनर्घ पा जाएँ, भव सागर से तिर जाएँ।।
जय धर्मनाथ जिन स्वामी, तुम हो प्रभु अन्तर्यामी।
तव चरण शरण को पाते, प्रभु चरणों शीश झुकाते।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

तेरस शुक्ल वैशाख की, मात सुव्रता जान।
जिनके उर में अवतरे, धर्मनाथ भगवान।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य यह, चढ़ा रहे हम नाथ।
भक्ति का फल प्राप्त हो, चरण झुकाते माथ।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्ला त्रयोदश्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

माघ सुदी तेरस तिथि, जन्मे धर्म जिनेन्द्र।
करते हैं अभिषेक सब, सुर-नर-इन्द्र महेन्द्र।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य यह, चढ़ा रहे हम नाथ।
भक्ति का फल प्राप्त हो, चरण झुकाते माथ।।

ॐ ह्रीं माघशुक्ला त्रयोदश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(रोला छन्द)

तेरस सुदि माघ महान्, प्रभो दीक्षा धारे।
श्री धर्मनाथ भगवान, बने मुनिवर प्यारे।।
हम चरणों आए नाथ, अर्घ्य चढ़ाते हैं।
महिमा तव अपरम्पार, फिर भी गाते हैं।।

ॐ ह्रीं माघशुक्ला त्रयोदश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(हरिगीता छन्द)

पौष शुक्ला पूर्णिमा को, हुए मंगलकार हैं।
धर्म जिन तीर्थेश ज्ञानी, कर्म घाते चार हैं।।

जिन प्रभु की वंदना को, हम शरण में आए हैं।
अर्घ्य यह प्रासुक बनाकर, हम चढ़ाने लाए हैं।।

ॐ ह्रीं पौषशुक्ला पूर्णिमायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

ज्येष्ठ चतुर्थी शुक्ल पक्ष की, धर्मनाथ जिनवर स्वामी।
गिरि सम्मेद शिखर से जिनवर, बने मोक्ष के अनुगामी।।
अष्ट गुणों की सिद्धि पाकर, बने प्रभु अंतर्यामी।
हमको मुक्तिपथ दर्शाओ, बनो प्रभु मम् पथगामी।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्ला चतुर्थ्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जयमाला

दोहा – पूजा कर जिन राज की, जीवन हुआ निहाल।
धर्मनाथ भगवान की, गाते अब जयमाल।।

(तर्ज – भक्ति बेकरार है)

धर्मनाथ भगवान हैं, गुण अनन्त की खान हैं।
दिव्य देशना देकर प्रभु जी, करते जग कल्याण हैं।।
सर्वार्थ–सिद्धि से चय करके, रत्नपुरी में आये जी।
मात सुव्रता भानू नृप के, गृह में मंगल छाये जी।।
धर्मनाथ भगवान ...

रत्नपुरी में देवों ने कई, रत्न श्रेष्ठ वर्षाए जी।
दिव्य सर्व सामग्री लाकर, नगरी खूब सजाए जी।।
धर्मनाथ भगवान ...

चौथ कृष्ण की ज्येष्ठ माह में, सारे कर्म नशाए जी।
यह संसार असार छोड़कर, शिवपुर पदवी पाए जी।।
धर्मनाथ भगवान ...

हम भी शिव पद पाने की शुभ, विशद भावना भाते जी।
तीन योग से प्रभु चरणों में, सादर शीश झुकाते जी।।
धर्मनाथ भगवान ...

त्रयोदशी शुभ माघ शुक्ल की, जन्मोत्सव प्रभु पायाजी।
पाण्डुक वन में इन्द्रों द्वारा, शुभ अभिषेक कराया जी।।
धर्मनाथ भगवान ...

वज्र दण्ड लख दांये पग में, नामकरण शुभ इन्द्र किया।
धर्म ध्वजा के धारी अनुपम, धर्मनाथ शुभ नाम दिया।।
धर्मनाथ भगवान ...

अष्ट वर्ष की उम्र प्राप्त कर, देशव्रतों को धारा जी।
युवा अवस्था में राजा पद, प्रभु ने श्रेष्ठ सम्हारा जी।।
धर्मनाथ भगवान ...

त्रयोदशी को माघ शुक्ल की, संयम पथ अपनाया जी।
पंच मुष्ठि से केश लुंचकर, रत्नत्रय शुभ पाया जी।।
धर्मनाथ भगवान ...

उभय परिग्रह त्याग प्रभु ने, आतम ध्यान लगाया जी।
धर्म ध्यान कर शुक्ल ध्यान का, अनुपम शुभ फल पाया जी।।
धर्मनाथ भगवान ...

चार घातिया कर्मनाश कर, केवल ज्ञान जगाया जी।
रत्नमयी शुभ समवशरण तब, इन्द्रों ने बनवाया जी।।
धर्मनाथ भगवान ...

गंध कुटी में कमलासन पर, प्रभु ने आसन पाया जी।
दिव्य देशना देकर प्रभु ने, सब का मन हर्षाया जी।।
धर्मनाथ भगवान ...

दोहा – धर्मनाथ जी धर्म का, हमें दिखाओ पंथ।
रत्नत्रय को प्राप्त कर, होय कर्म का अंत।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा – रत्नत्रय की नाव से, पार करें संसार।
'विशद' भावना बस यही, पावें भव से पार।।

।। इत्याशीर्वाद: पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री शांतिनाथ पूजा

(स्थापना)

हे शांतिनाथ ! हे विश्वसेन सुत, ऐरादेवी के नन्दन।
हे कामदेव ! हे चक्रवर्ति ! है तीर्थंकर पद अभिनन्दन।।
हो शांति हमारे जीवन में, यह सारा जग शांतिमय हो।
वसु कर्म सताते हैं हमको, हे नाथ ! शीघ्र उनका क्षय हो।।
यह शीश झुकाते चरणों में, आशीष आपका पाने को।
हम पूजा करते भाव सहित, अपना सौभाग्य जगाने को।।
तुम पूज्य हुए सारे जग में, हम पूजा करने आए हैं।
आह्वानन् करने हेतु नाथ !, यह पुष्प मनोहर लाए हैं।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वानन्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(शम्भू छन्द)

हे नाथ ! नीर को पीकर हम, इस तन की प्यास बुझाते हैं।
किन्तु कुछ क्षण के बाद पुनः, फिर से प्यासे हो जाते हैं।।
है जन्म जरा मृत्यु दुखकर, अब पूर्ण रूप इसका क्षय हो।
हम नीर चढ़ाते चरणों में, मम् जीवन भी शांतीमय हो।।1।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ ! हमारे इस तन को, चन्दन शीतल कर देता है।
आता है मोह उदय में तो, सारी शांती हर लेता है।।
हम भव आतप से तप्त हुए, हे नाथ ! पूर्ण इसका क्षय हो।
यह चन्दन अर्पित करते हैं, मम् जीवन भी शांतीमय हो।।2।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ ! लोक में क्षयकारी, सारे पद हमने पाए हैं।
न प्राप्त हुआ है शाश्वत पद, उसको पाने हम आए हैं।।

हम पूजा करते भाव सहित, इस पूजा का फल अक्षय हो।
शुभ अक्षत चरण चढ़ाते हैं, मम् जीवन भी शांतीमय हो।।3।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ ! सुगन्धी पुष्पों की, मन के मधुकर को महकाए।
किन्तु सुगन्ध यह क्षयकारी, जो हमको तृप्त न कर पाए।।
है काम वासना दुखकारी, अब पूर्ण रूप इसका क्षय हो।
हम पुष्प चढ़ाते हैं पुष्पित, मम् जीवन भी शांतीमय हो।।4।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय काम बाण विध्वंशनाय पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा।

षट् रस व्यंजन से नाथ सदा, हम क्षुधा शांत करते आए।
किन्तु हम काल अनादि से, न तृप्त अभी तक हो पाए।।
यह क्षुधा रोग करता व्याकुल, इसका हे नाथ ! शीघ्र क्षय हो।
नैवेद्य समर्पित करते हैं, मम् जीवन भी शांतीमय हो।।5।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक से हुई रोशनी तो, खोती है बाह्य तिमिर सारा।
छाया जो मोह तिमिर जग में, वह रोके ज्ञान का उजियारा।।
मोहित करता है मोह महा, यह मोह नाथ मेरा क्षय हो।
हम दीप जलाकर लाए हैं, मम् जीवन भी शांतीमय हो।।6।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नि में गंध जलाने से, महकाए चारों ओर गगन।
किन्तु कर्मों का कभी नहीं, हो पाया उससे पूर्ण शमन।।
हैं अष्ट कर्म जग में दुखकर, उनका अब नाथ मेरे क्षय हो।
हम धूप जलाने आए हैं, मम् जीवन भी शांतीमय हो।।7।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अष्ट कर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ फल को पाने भटक रहे, जग के सब फल निष्फल पाए।
हम भटक रहे हैं सदियों से, वह फल पाने को हम आए।।
दो श्रेष्ठ महाफल मोक्ष हमें, हे नाथ ! आपकी जय जय हो।
हैं विविध भांति के फल अर्पित, मम् जीवन भी शांतीमय हो।।8।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

यह अष्ट द्रव्य हम लाए हैं, हमने शुभ अर्घ्य बनाया है।
पाने अनर्घ पद प्राप्त प्रभु, यह अनुपम अर्घ्य चढ़ाया है।।
हमको डर लगता कर्मों से, हे नाथ ! दूर मेरा भय हो।
हम अर्घ्य चढ़ाते भाव सहित, मम् जीवन भी शांतीमय हो।।9।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

(शम्भू छन्द)

माह भाद्र पद कृष्ण पक्ष की, तिथि सप्तमी रही महान्।
चय कीन्हे सर्वार्थसिद्धि से, पाए आप गर्भ कल्याण।।
स्वर्ग लोक से पृथ्वी तल तक, गगन गूंजता रहा अपार।
भवि जीवों ने मिलकर बोला, शांति नाथ का जय-जय कार।।1।।

ॐ ह्रीं भाद्र पद कृष्ण सप्तम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

ज्येष्ठ माह के कृष्ण पक्ष में, चतुर्दशी है सुखकारी।
तीन लोक में शांति प्रदाता, जन्म लिए मंगलकारी।।
स्वर्ग लोक से पृथ्वी तल तक, गगन गूँजता रहा अपार।
भवि जीवों ने मिलकर बोला, शांति नाथ का जय-जय कार।।2।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री शान्तिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

ज्येष्ठ माह में कृष्ण पक्ष की, चतुर्दशी शुभ रही महान् ।
केश लुंच कर दीक्षाधारी, हुआ आपका तप कल्याण।।
स्वर्ग लोक से पृथ्वी तल तक, गगन गूँजता रहा अपार।
भवि जीवों ने मिलकर बोला, शांति नाथ का जय-जय कार।।3।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दश्यां तपोकल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पौष माह में शुक्ल पक्ष की, दशमी हुई है महिमावान।
चार घातिया कर्म विनाशी, प्रभु ने पाया केवल ज्ञान।।
स्वर्ग लोक से पृथ्वी तल तक, गगन गूँजता रहा अपार।
भवि जीवों ने मिलकर बोला, शांति नाथ का जय-जय कार।।4।।

ॐ ह्रीं पौष शुक्ल दशम्यां केवल ज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

ज्येष्ठ माह में कृष्ण पक्ष की, चतुर्दशी मंगलकारी।
गिरि सम्मेद शिखर से अनुपम, मोक्ष गये जिन त्रिपुरारी।।
स्वर्ग लोक से पृथ्वी तल तक, गगन गूँजता रहा अपार।
भवि जीवों ने मिलकर बोला, शांति नाथ का जय जय कार।।5।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दश्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जयमाला

दोहा – **शान्तिनाथ की भक्ति से, शान्ति होय त्रिकाल।**
वन्दन करते भाव से, गाते हैं जयमाल ।।

(तर्ज – मेरे मन मंदिर में आन पधारो ...)

मेरे हृदय कमल पर आन, विराजो शांतिनाथ भगवान।
सुर नर मुनिवर जिनको ध्याते, इन्द्र नरेन्द्र भी महिमा गाते ।।
जिनका करते निशदिन ध्यान – विराजो ...।
प्रभु सर्वार्थ सिद्धि से आए, देवों ने तब हर्ष मनाए ।
भारी किया गया यशगान – विराजो ... ।।
प्रभु का जन्म हुआ मन भावन, रत्न वृष्टि तब हुई सुहावन ।
जग में हुआ सुमंगल गान – विराजो ... ।।
पाण्डुक शिला पे न्हवन कराया, देवों ने उत्सव करवाया ।
मिलकर हस्तिनागपुर आन – विराजो ... ।।
काम देव पद तुमने पाया, छह खण्डों पर राज्य चलाया ।
पाई चक्रवर्ति की शान – विराजो ... ।।
यह सब भोग जिन्हें न भाए, सभी त्याग जिन दीक्षा पाए ।
जाकर वन में कीन्हा ध्यान – विराजो ... ।।
तीर्थंकर पदवी के धारी, महिमा जिनकी जग से न्यारी ।
तुमने पाए पञ्चकल्याण – विराजो ... ।।

तुमने कर्म घातिया नाशे, क्षण में लोकालोक प्रकाशे ।
पाये क्षायिक केवल ज्ञान – विराजो... ।।
ॐकार मय जिनकी वाणी, जन–जन की जो है कल्याणी ।
सारे जग में रही महान् – विराजो ... ।।
शेष कर्म भी न रह पाए, पूर्ण नाश कर मोक्ष सिधाए ।
पाए प्रभु मोक्ष कल्याण – विराजो ... ।।
जो भी शरणागत बन आया, उसको प्रभु ने पार लगाया ।
प्रभु जी देते जीवन दान – विराजो ... ।।
शांति नाथ शांति के दाता, अखिल विश्व के आप विधाता ।
सारा जग गाये यशगान – विराजो ... ।।
शरणागत बन शरण में आए, तव चरणों में शीष झुकाए ।
करलो हमको स्वयं समान – विराजो ... ।।
रोम–रोम में वास तुम्हारा, ऋणी रहेगा तव जग सारा ।
तुम हो जग में कृपा निधान – विराजो ... ।।
प्रभु जग मंगल करने वाले, दुखियों के दुख हरने वाले ।
तुमने किया जगत कल्याण – विराजो ... ।।
सारा जग है झूठा सपना, व्यर्थ करे जग अपना–अपना ।
प्राणी दो दिन का मेहमान – विराजो ... ।।
शांतिनाथ हैं शांति सरोवर, शांति का बहता शुभ निर्झर ।
तुमसे यह जग ज्योर्तिमान – विराजो ... ।।

आर्या छन्द

शांतीनाथ अनाथों के हैं, 'विशद' जगत में शिवकारी।
चरण शरण को पाने वाले, होते जग मंगलकारी।।

ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशक परम शान्ति प्रदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय महार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सोरठा – शांती मिले विशेष, पूजा कर जिनराज की।
रहे कोई न शेष, दुख दारिद्र सब दूर हों।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

श्री कुन्थुनाथ जिन पूजा

(स्थापना)

कुन्थु जिन की अर्चना को, भाव से हम आए हैं।
पुष्प यह अनुपम सुगन्धित, साथ अपने लाए हैं।
कामदेव चक्री जिनेश्वर, तीन पद के नाथ हैं।
जोड़कर द्वय हाथ अपने, पद झुकाते माथ हैं।
हे नाथ ! हमको मोक्ष पथ का, मार्ग शुभ दर्शाइये।
प्रभु करुण होकर हृदय में, आज मेरे आईये।।

ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्र ! अत्र–अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानन्।
ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चौबोला छन्द)

छान के निर्मल जल भर लाए, उसको गरम कराते हैं।
जन्म मृत्यु का रोग नशाने, जिन पद श्रेष्ठ चढ़ाते है।।
कुन्थु नाथ की अर्चा करके, प्राणी सब हर्षाते हैं।
विनय भाव से वन्दन करके, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिर का पावन चंदन, केसर संग घिसा लाए।
भव आताप मिटाने हेतु, चरण चढ़ाने हम आए।।
कुन्थु नाथ की अर्चा करके, प्राणी सब हर्षाते हैं।
विनय भाव से वन्दन करके, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चदनं निर्वपामीति स्वाहा।

वासमती के अक्षय अक्षत, श्रेष्ठ चढ़ाने लाए हैं।
अक्षय पद पाने को भगवन्, चरण शरण में आए हैं।।

कुन्थु नाथ की अर्चा करके, प्राणी सब हर्षाते हैं।
विनय भाव से वन्दन करके, सादर शीश झुकाते हैं।।
ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

उपवन से शुभ पुष्प सुगन्धित, चुनकर के हम लाए हैं।
काम बाण की महावेदना, शीघ्र नशाने आए हैं।।
कुन्थु नाथ की अर्चा करके, प्राणी सब हर्षाते हैं।
विनय भाव से वन्दन करके, सादर शीश झुकाते हैं।।
ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजे यह नैवेद्य मनोहर, श्रेष्ठ बनाकर लाए हैं।
क्षुधा वेदना नाश हेतु प्रभु, यहाँ चढ़ाने लाए हैं।।
कुन्थु नाथ की अर्चा करके, प्राणी सब हर्षाते हैं।
विनय भाव से वन्दन करके, सादर शीश झुकाते हैं।।
ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मणिमय घृत के दीप मनोहर, अतिशय यहाँ जलाते हैं।
मोह महातम नाश हेतु हम, जिनवर के गुण गाते हैं।।
कुन्थु नाथ की अर्चा करके, प्राणी सब हर्षाते हैं।
विनय भाव से वन्दन करके, सादर शीश झुकाते हैं।।
ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट गंध मय धूप जलाकर, पूजा यहाँ रचाते हैं।
अष्ट कर्म के नाश हेतु हम, चरण शरण को पाते हैं।।
कुन्थु नाथ की अर्चा करके, प्राणी सब हर्षाते हैं।
विनय भाव से वन्दन करके, सादर शीश झुकाते हैं।।
ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म विनाशनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजे-ताजे श्रेष्ठ सरस फल, यहाँ चढ़ाने लाए हैं।
मोक्ष महाफल पाने हेतु, भाव सहित गुण गाए हैं।

कुन्थु नाथ की अर्चा करके, प्राणी सब हर्षाते हैं।
विनय भाव से वन्दन करके, सादर शीश झुकाते हैं।।
ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

जल चन्दन अक्षत पुष्पादि, चरुवर दीप जलाते हैं।
धूप और फल साथ मिलाकर, अनुपम अर्घ्य चढ़ाते हैं।
कुन्थु नाथ की अर्चा करके, प्राणी सब हर्षाते हैं।
विनय भाव से वन्दन करके, सादर शीश झुकाते हैं।।
ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

श्रीमती के गर्भ में, कुंथुनाथ भगवान।
सावन दशमी कृष्ण की, पाए गर्भ कल्याण।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य यह, चढ़ा रहे हम नाथ।
भक्ति का फल प्राप्त हो, चरण झुकाते माथ।।
ॐ ह्रीं श्रावणकृष्णा दशम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

एकम् सुदी वैशाख माह में, कुंथुनाथ जी जन्म लिए।
मात श्रीमती से जन्मे प्रभु, हस्तिनागपुर धन्य किए।।
चरण कमल की अर्चा करते, अष्ट द्रव्य से अतिशयकार।
कल्याणक हो हमें प्राप्त शुभ, चरणों वन्दन बारम्बार।।
ॐ ह्रीं वैशाखशुक्ला प्रतिपदायां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

वैशाख सुदी एकम् तिथि पाय, दीक्षा पाए कुंथु जिनाय।
हुए स्वात्म रस में लवलीन, कर्म किए प्रभु क्षण में क्षीण।।
तीन लोक में सर्व महान्, प्रभु ने पाया तप कल्याण।
पाएँ हम भव से विश्राम, पद में करते विशद प्रणाम।।
ॐ ह्रीं वैशाखशुक्ला प्रतिपदायां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(हरिगीता छन्द)

चैत्र शुक्ला तीज स्वामी, कुंथु जिन तीर्थेश जी।
ज्ञान केवल प्राप्त कीन्हें, दिए शुभ संदेश जी।।
जिन प्रभु की वंदना को, हम शरण में आए हैं।
अर्घ्य यह प्रासुक बनाकर, हम चढ़ाने लाए हैं।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला तृतीयायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कुंथुनाथ सम्मेदाचल से, मोक्ष गये मुनियों के साथ।
एकम् सुदी वैशाख माह को, बने आप शिवपुर के नाथ।।
अष्ट गुणों की सिद्धी पाकर, बने प्रभु अंतर्यामी।
हमको मुक्ति पथ दर्शाओ, बनो प्रभु मम् पथगामी।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्ला प्रतिपदायां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जयमाला

दोहा – गुण गाते जिनदेव के, गुण पाने मनहार।
जयमाला गाते यहाँ, प्रभु की बारम्बार।।

(वेसरी छन्द)

कुन्थुनाथ तीर्थंकर स्वामी, केवल ज्ञानी अंतर्यामी।
उनकी हम जयमाला गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।
सर्वार्थ–सिद्धि से चय कर आये, नगर हस्तिनापुर उपजाए।
माता श्रीमती को जानो, सूर्यसेन नृप पितु पहिचानो।।
प्रभु ने अतिशय पुण्य कमाया, तीर्थंकर पदवी को पाया।
कामदेव की पदवी पाई, चक्रवर्ति पद पाए भाई।।
तप्त स्वर्ण सम तन था प्यारा, मोहित जो करता था न्यारा।
चक्ररत्न प्रभु ने प्रगटाया, छह खण्डों पर राज्य चलाया।।
होकर नव निधियों के स्वामी, बने मोक्ष पथ के अनुगामी।

चौदह रत्न आपने पाए, त्याग सभी संयम अपनाए।।
तृण की भांति सब कुछ छोड़ा, सारे जग से नाता तोड़ा।
भोगों में जो नहीं लुभाए, परिजन उन्हें रोक न पाए।।
केश लौंचकर दीक्षाधारी, संयम धार बने अनगारी।
निज आतम का ध्यान लगाए, संवर और निर्जरा पाए।।
कर्म घातिया प्रभु ने नाशे, अनुपम केवल ज्ञान प्रकाशे।
समवशरण तब देव बनाए, भक्ति करके वह हर्षाए।।
पाँच हजार धनुष ऊँचाई, समवशरण की जानो भाई।
बीस हजार सीढ़ियाँ जानों, अष्ट भूमि या अतिशय मानो।।
कमलासन पर जिन को जानो, अधर विराजें ऐसा मानो।
दिव्य देशना प्रभु सुनाए, जन–जन के मन तब हर्षाए।।
प्रातिहार्य तब प्रगटे भाई, यह है जिन प्रभु की प्रभुताई।
कोई सद्श्रद्धान जगाते, कोई संयम को पा जाते।।
लगें सभाएँ बारह भाई, जिनकी महिमा कही न जाई।
मुनि आर्यिका गणधर आवें, देव देवियाँ भाग्य जगावें।।
मानव और पशु भी आते, भाव सहित प्रभु के गुण गाते।
योग निरोध प्रभु जी कीन्हें, कर्म नाश शिव पदवी लीन्हें।।

दोहा – भाते हैं यह भावना, शिव नगरी के नाथ।
तव पद पाने के लिए, चरण झुकाते माथ।।

ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा – चक्री काम कुमार जी, तीर्थंकर जिनदेव।
यही भावना है 'विशद', अर्चा करें सदैव।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री अरहनाथ जिन पूजा

(स्थापना)

अरहनाथ जिन त्रय पदधारी, संयम धार बने अनगारी।
कामदेव चक्री कहलाए, तीर्थंकर की पदवी पाए।।
आप हुए त्रिभुवन के स्वामी, केवल ज्ञानी अन्तर्यामी।
हृदय कमल में मेरे आओ, मोक्ष महल का मार्ग दिखाओ।।
चरण प्रार्थना यही हमारी, दो आशीष हमें त्रिपुरारी।
विशद भावना हम यह भाते, तव चरणों में शीश झुकाते।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्र ! अत्र-अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन।
ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(छन्द - भुजंग प्रयात)

प्रभो ! नीर निर्मल ये प्रासुक कराके।
चढ़ाने को लाये हैं कलशा भरके।।
प्रभु आपके हम गुणगान गाते।
अरहनाथ तव पाद में सर झुकाते।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय जन्मजरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो ! गंध केशर घिसा के हम लाए।
भवताप के नाश हेतु हम आए।।
प्रभु आपके हम गुणगान गाते।
अरहनाथ तव पाद में सर झुकाते।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चदनं निर्वपामीति स्वाहा।

परम थाल तन्दुल के हमने भराए।
विशद भाव अक्षय सुपद के बनाए।।
प्रभु आपके हम गुणगान गाते।
अरहनाथ तव पाद में सर झुकाते।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सलौने सुगन्धित खिले फूल लाए।
प्रभो ! काम बाधा नशाने को आए।।
प्रभु आपके हम गुणगान गाते।
अरहनाथ तव पाद में सर झुकाते।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य हमने सरस ये बनाए।
क्षुधा रोग के नाश हेतु चढ़ाए।।
प्रभु आपके हम गुणगान गाते।
अरहनाथ तव पाद में सर झुकाते।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो ! दीप घृत के मनोहर जलाए।
महामोह तम नाश करने को आए।।
प्रभु आपके हम गुणगान गाते।
अरहनाथ तव पाद में सर झुकाते।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो ! धूप हमने दशांगी जलाई।
सुधी नाश कर्मों की मन में जगाई।।
प्रभु आपके हम गुणगान गाते।
अरहनाथ तव पाद में सर झुकाते।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो ! श्रेष्ठ ताजे सरस फल मँगाए।
महामोक्ष फल प्राप्त करने को आए।।
प्रभु आपके हम गुणगान गाते।
अरहनाथ तव पाद में सर झुकाते।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

मिलाके सभी द्रव्य का अर्घ्य लाए।
परम श्रेष्ठ शाश्वत सुपद पाने आए।।
प्रभु आपके हम गुणगान गाते।
अरहनाथ तव पाद में सर झुकाते।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

फाल्गुन शुक्ला तीज को, अरहनाथ भगवान।
मात मित्रसेना वती, उर अवतारे आन।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य यह, चढ़ा रहे हम नाथ।
भक्ति का फल प्राप्त हो, चरण झुकाते माथ।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्ला तृतीयायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री अरहनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अगहन शुक्ला चतुर्दशी को, भूप सुदर्शन के दरबार।
हस्तिनागपुर अरहनाथ जी, जन्म लिए हैं मंगलकार।।
चरण कमल की अर्चा करते, अष्ट द्रव्य से अतिशयकार।
कल्याणक हो हमें प्राप्त शुभ, चरणों वन्दन बारम्बार।।

ॐ ह्रीं अगहनशुक्ला चतुर्दश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री अरहनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अगहन सुदी दशमी जिनराज, धारे प्रभु संयम का ताज।
भेष दिगम्बर धारे नाथ, जिनके चरण झुकाएँ माथ।।
तीन लोक में सर्व महान्, प्रभु ने पाया तप कल्याण।
पाएँ हम भव से विश्राम, पद में करते विशद प्रणाम।।

ॐ ह्रीं अगहनशुक्ला दशम्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री अरहनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(हरिगीता छन्द)

द्वादशी कार्तिक सुदी की, कर्म नाशे चार हैं।
जिन अरह तीर्थेश ज्ञानी, हुए मंगलकार हैं।।
जिन प्रभु की वंदना को, हम शरण में आए हैं।
अर्घ्य यह प्रासुक बनाकर, हम चढ़ाने लाए हैं।।

ॐ ह्रीं कार्तिक शुक्लाद्वादश्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत कृष्ण की तिथि अमावस, गिरि सम्मेदशिखर शुभ धाम।
अरहनाथ जिन मोक्ष पधारे, तिनके चरणों करें प्रणाम।।
अष्ट गुणों की सिद्धी पाकर, बने प्रभु अंतर्यामी।
हमको मुक्ति पथ दर्शाओ, बनो प्रभु मम् पथगामी।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णाऽमावस्यायां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा – **जयमाला गाते परम, भाव सहित हे नाथ!**
तव पद पाने के लिए, चरण झुकाते माथ।।

(चाल टप्पा)

काम देव चक्री पद पाया, बने मोक्ष गामी।
तीर्थंकर की पदवी पाए, कुन्थुनाथ स्वामी।।
जिनेश्वर हैं अन्तर्यामी।

तीन योग से वन्दन करते, हे त्रिभुवन नामी–जिनेश्वर ... ।।

फाल्गुन कृष्ण तीज अवतारे, हस्तिनापुर स्वामी।
मात सुमित्रा के उर आये, अपराजित गामी।। जिनेश्वर ... ।

मगसिर शुक्ला चौदस तिथि को, जन्म लिए स्वामी।
इन्द्रों ने अभिषेक कराया, जिनवर का नामी।। जिनेश्वर ... ।

कार्तिक शुक्ल द्वादशी तिथि को, बने विशद ज्ञानी।
समवशरण में कमलासन पर, अधर हुए स्वामी।। जिनेश्वर ... ।

चैत्र कृष्ण की तिथि अमावस, बने मोक्ष गामी।
अक्षय अनुपम सुख पाये तब, शिवपुर के स्वामी।। जिनेश्वर ... ।

गिरि सम्मेद शिखर से मुक्ति, पाये जिन स्वामी।
सिद्ध शुद्ध चैतन्य स्वरूपी, सिद्ध बने नामी।। जिनेश्वर ... ।

जिस पदवी को तुमने पाया, वह पावें स्वामी।
रत्नत्रय को पाकर हम भी, बने मोक्ष गामी।। जिनेश्वर ... ।

संयम त्याग तपस्या करना, कठिन रहा स्वामी।
फिर भी हमने लक्ष्य बनाया, बन के अनुगामी।। जिनेश्वर ... ।

(छन्द घत्तानन्द)

जय–जय हितकारी, संयमधारी, गुण अनन्त के अधिकारी।
तुम हो अविकारी, ज्ञान पुजारी, सिद्ध सनातन अविकारी।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा – अरहनाथ के साथ में, हुए जीव कई सिद्ध।
सिद्ध दशा हमको मिले, जो है जगत् प्रसिद्ध।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

श्री मल्लिनाथ जिन पूजा

(स्थापना)

मोह मल्ल को जीतकर, बने धर्म के ईश।
चरण शरण के दास तव, गणधर बने ऋषीश।।
अनन्त चतुष्टय प्राप्त कर, पाए केवल ज्ञान।
मल्लिनाथ जिन का हृदय, करते हम आह्वान।।
भक्त पुकारें भाव से, हृदय पधारो नाथ!
पुष्प समर्पित कर चरण, झुका रहे हैं माथ।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र-अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम् सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छन्द)

इन्द्रिय के विषयों की आशा, हम पूर्ण नहीं कर पाए हैं।
हे नाथ ! अतीन्द्रिय सुख पाने, यह नीर चढ़ाने लाए हैं।।
श्री मल्लिनाथ जिनवर का दर्शन, जग में मंगलकारी है।
विशद भाव से प्रभु चरणों में, अतिशय ढोक हमारी है।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भवभोगों में फंसे रहे हम, मुक्त नहीं हो पाए हैं।
भव आताप से मुक्ती पाने, चन्दन घिसकर लाए हैं।।
श्री मल्लिनाथ जिनवर का दर्शन, जग में मंगलकारी है।
विशद भाव से प्रभु चरणों में, अतिशय ढोक हमारी है।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चदनं निर्वपामीति स्वाहा।

भटके तीनों लोको में पर, स्वपद प्राप्त न कर पाए।
प्रभु अक्षय पद पाने हेतु यह, अक्षय अक्षत हम लाए।।

श्री मल्लिनाथ जिनवर का दर्शन, जग में मंगलकारी है।
विशद भाव से प्रभु चरणों में, अतिशय ढोक हमारी है।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पीड़ित हो काम व्यथा से कई, हम जन्म गंवाते आए हैं।
हो काम वासना नाश प्रभो, हम पुष्प चढ़ाने लाए हैं।।
श्री मल्लिनाथ जिनवर का दर्शन, जग में मंगलकारी है।
विशद भाव से प्रभु चरणों में, अतिशय ढोक हमारी है।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हम क्षुधा वेदना से व्याकुल, भव-भव में होते आए हैं।
अब क्षुधा व्याधि के नाश हेतु, नैवेद्य चढ़ाने लाए हैं।।
श्री मल्लिनाथ जिनवर का दर्शन, जग में मंगलकारी है।
विशद भाव से प्रभु चरणों में, अतिशय ढोक हमारी है।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोहित करता है मोह कर्म, हम उसके नाथ सताए हैं।
अब नाश हेतु इस शत्रु के, यह दीप जलाने लाए हैं।।
श्री मल्लिनाथ जिनवर का दर्शन, जग में मंगलकारी है।
विशद भाव से प्रभु चरणों में, अतिशय ढोक हमारी है।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हम अष्ट कर्म के बन्धन में, बँधकर जग में भटकाए हैं।
अब नाश हेतु उन कर्मों के, यह धूप जलाने लाए हैं।।
श्री मल्लिनाथ जिनवर का दर्शन, जग में मंगलकारी है।
विशद भाव से प्रभु चरणों में, अतिशय ढोक हमारी है।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल हैं कितने सारे जग में, गिनती भी न कर पाए हैं।
वह त्याग मोक्ष फल पाने को, यह फल अर्पण को लाए हैं।।

श्री मल्लिनाथ जिनवर का दर्शन, जग में मंगलकारी है।
विशद भाव से प्रभु चरणों में, अतिशय ढोक हमारी है।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

संसार वास दुखकारी है, हम इससे अब घबराए हैं।
पाने अनर्घ पद नाथ परम, यह अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।।
श्री मल्लिनाथ जिनवर का दर्शन, जग में मंगलकारी है।
विशद भाव से प्रभु चरणों में, अतिशय ढोक हमारी है।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

प्रभावती के गर्भ में, मल्लिनाथ भगवान।
चैत शुक्ल की प्रतिपदा, हुआ गर्भ कल्याण।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला प्रतिपदायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री मल्लिनाथाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अगहन शुक्ला ग्यारस को प्रभु, जन्में मल्लिनाथ भगवान।
प्रभावति माँ कुंम्भराज के, गृह में हुआ था मंगलगान।।
चरण कमल की अर्चा करते, अष्ट द्रव्य से अतिशयकार।
कल्याणक हों हमें प्राप्त शुभ, चरणों वन्दन बारम्बार।।

ॐ ह्रीं अगहनशुक्ला एकादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री मल्लिनाथाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मगसिर सुदी ग्यारस जिनदेव, मल्लिनाथ तप धारे एव।
केशलुंच कर तप को धार, छोड़ दिया सारा आगार।।
तीन लोक में सर्व महान्, प्रभु ने पाया तप कल्याण।
पाएँ हम भव से विश्राम, पद में करते विशद प्रणाम।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्ला एकादश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री मल्लिनाथाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(हरिगीता छन्द)

पौष कृष्णा दूज मल्लि, नाथ जिनवर ने अहा।
कर्मघाती नाश करके, ज्ञान पाया है महा।।

जिन प्रभु की वंदना को, हम शरण में आए हैं।
अर्घ्य यह प्रासुक बनाकर, हम चढ़ाने लाए हैं।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णा द्वितीयायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री मल्लिनाथाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(चाल टप्पा)

फाल्गुन शुक्ला तिथि पञ्चमी, मल्लिनाथ स्वामी।
गिरि सम्मेदशिखर से जिनवर, बने मोक्षगामी।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, चरणों में लाए।
भक्ति भाव से हर्षित होकर, वंदन को आए।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्ला पंचम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री मल्लिनाथाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जयमाला

दोहा – आतम के हित में प्रभु, छोड़ दिए जग जाल।
मल्लिनाथ भगवान की, गातें हम जयमाल।।

(शम्भू छन्द)

जय-जय तीर्थंकर मल्लिनाथ, जय-जय शिव पदवी के धारी।
जय रत्नत्रय के सूत्र धार, जय मोक्ष महल के अधिकारी।।
तुम अपराजित से चय करके, मिथिलापुर नगरी में आए।
नृप कुम्भराज माँ प्रभावति, के गृह में बहु खुशियाँ लाए।।
सुदि चैत माह की तिथि एकम्, अश्विनी नक्षत्र जानो पावन।
प्रभु गर्भ में आए इसी समय, वह घड़ी हुई शुभ मनभावन।।
नव माह गर्भ में रहे प्रभु, शचियाँ कई सेवा को आईं।
हर्षित होकर प्रभु भक्ति में, कई दिव्य सामग्री भी लाईं।।
फिर मगसिर सुदी एकादशी को, प्रभु मल्लिनाथ ने जन्म लिया।
शुभ पुण्य के वैभव से प्रभु ने, तीनों लोकों को धन्य किया।।
शचियों ने जात कर्म कीन्हा, फिर इन्द्र ऐरावत ले आया।
शचि ने बालक को लेकर के, माया मयी बालक पधराया।।
फिर पाण्डुक शिला पर ले जाकर, इन्द्रों ने जय-जय कार किया।
अभिषेक कराया भाव सहित, तब पुण्य सुफल शुभ प्राप्त किया।।

अनुक्रम से वृद्धि को पाकर, प्रभु युवा अवस्था को पाए।
विद्युत की चंचलता को लखकर, संयम को प्रभु जी अपनाए।।
शुभ मगसिर सुदि एकादशि को, पौर्वाह्ण काल अतिशय जानो।
प्रभु बैठ जयन्त पालकी में, शाली वन में पहुँचे मानो।।
फिर नृपति तीन सौ के संग में, दीक्षा धर तेला धार लिया।
होकर एकाग्र प्रभु ने अनुपम, निज चेतन तत्त्व का ध्यान किया।।
फिर पौष कृष्ण की द्वितिया को, प्रभु केवल ज्ञान प्रकट कीन्हें।
तब देव बनाए समवशरण, प्रभु दिव्य देशना शुभ दीन्हें।।
शुभ फाल्गुन शुक्ल पञ्चमी को, अश्वनी नक्षत्र प्रभु जी पाए।
सम्मेद शिखर पर जाकर के, प्रभु मुक्ति वधु को प्रगटाए।।
प्रभु का दर्शन अघ नाशक है, अनुपम सौभाग्य प्रदायक है।
जो बोधि समाधि का कारण, शुभ मोक्ष मार्ग दर्शायक है।।
जो भाव सहित अर्चा करता, वह अतिशय पुण्य कमाता है।
सुख शांति प्राप्त कर लेता है, फिर मोक्ष महल को जाता है।।
प्रभु के गुण होते हैं अनन्त, गणधर भी नहिं कह पाते हैं।
गुणगान करें जो भव्य जीव, प्रभु के गुण वह प्रगटाते हैं।।
शुभ महिमा सुनकर हे प्रभुवर ! तव चरण शरण में आए हैं।
हम अष्ट गुणों को पा जाएँ, यह अर्घ्य बनाकर लाए हैं।।

(छन्द घत्तानन्द)

जय-जय उपकारी संयम धारी, तीन लोक में पूज्य अहा।
त्रिभुवन के स्वामी विशद नमामी, तव शासन यह पूज्य रहा।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा – मल्लिनाथ निज हाथ से, दीजे शुभ आशीष।
चरण शरण के भक्त यह, झुका रहे हैं शीश।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री मुनिसुव्रतनाथ जिन पूजा

(स्थापना)

तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रत प्रभु, के चरणों में करें नमन् ।
नृप सुमित्र के राजदुलारे, पद्मावती माँ के नन्दन ।।
मुनिव्रत धारी हे भवतारी !, योगीश्वर जिनवर वन्दन ।
शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतु, प्रभु करते हैं हम आह्वानन् ।।
हे जिनेन्द्र ! मम् हृदय कमल पर, आना तुम स्वीकार करो ।
चरण शरण का भक्त बनालो, इतना सा उपकार करो ।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ:ठ: स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।।

(वीर छन्द)

है अनादि की मिथ्या भ्रांति, समकित जल से नाश करें।
नीर सु निर्मल से पूजा कर, मृत्यु आदि विनाश करें ।।
शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, पद पंकज में आए हैं।
मुनिसुव्रत जिनवर के चरणों, सादर शीश झुकाए हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रव्य भाव नो कर्मों का हम, रत्नत्रय से नाश करें।
शीतल चंदन से पूजा कर, भव आताप विनाश करें।।
शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, पद पंकज में आए हैं।
मुनिसुव्रत जिनवर के चरणों, सादर शीश झुकाए हैं।।2।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय अविनश्वर पद पाने, निज स्वभाव का भान करें।
अक्षय अक्षत से पूजा कर, आतम का उत्थान करें।।
शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, पद पंकज में आए हैं ।
मुनिसुव्रत जिनवर के चरणों, सादर शीश झुकाए हैं ।।3।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

संयम तप की शक्ती पाकर, निर्मल आत्म प्रकाश करें।
पुष्प सुगंधित से पूजा कर, कामबली का नाश करें।।
शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, पद पंकज में आए हैं।
मुनिसुव्रत जिनवर के चरणों, सादर शीश झुकाए हैं।।4।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचाचार का पालन करके, शिवनगरी में वास करें।
सुरभित चरु से पूजा करके, क्षुधा रोग का ह्रास करें ।।
शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, पद पंकज में आए हैं।
मुनिसुव्रत जिनवर के चरणों, सादर शीश झुकाए हैं।।5।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुण्य पाप आस्रव विनाश कर, केवल ज्ञान प्रकाश करें ।
दिव्य दीप से पूजा करके, मोह महातम नाश करें।।
शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, पद पंकज में आए हैं।
मुनिसुव्रत जिनवर के चरणों, सादर शीश झुकाए हैं।।6।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट गुणों की सिद्धि करके, अष्टम भू पर वास करें।
धूप सुगन्धित से पूजा कर, अष्ट कर्म का नाश करें।।
शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, पद पंकज में आए हैं।
मुनिसुव्रत जिनवर के चरणों, सादर शीश झुकाए हैं।।7।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

मोक्ष महाफल पाकर भगवन्, आतम धर्म प्रकाश करें।
विविध फलों से पूजा करके, मोक्ष महल में वास करें ।।
शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, पद पंकज में आए हैं।
मुनिसुव्रत जिनवर के चरणों, सादर शीश झुकाए हैं।।8।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

भेद ज्ञान का सूर्य उदय कर, अविनाशी पद प्राप्त करें।
अष्ट द्रव्य से पूजा करके, उर अनर्घ पद व्याप्त करें।।

शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, पद पंकज में आए हैं।
मुनिसुव्रत जिनवर के चरणों, सादर शीश झुकाए हैं।।9।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य *(चौपाई)*

श्रावण कृष्णा दोज सुजान, देव मनाए गर्भ कल्याण।
श्यामा माता के उर आन, राजगृही नगरी सु महान्।। तीन लोक...

ॐ ह्रीं श्रावण कृष्णा द्वितीयायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री मुनिसुव्रतनाथाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ।

दशमी कृष्ण वैशाख सुजान, सुर नर किए जन्म कल्याण।
नृप सुमित्र के घर में आन, सबको दिए किमिच्छित दान।। तीन लोक...

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्णा दशम्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री मुनिसुव्रतनाथाय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

कृष्ण दशम वैशाख महान्, प्रभु ने पाया तप कल्याण।
चंपक तरु तल पहुँचे नाथ, मुनि बनकर प्रभु हुए सनाथ।। तीन लोक...

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्णा दशम्यां तपोकल्याणक श्री मुनिसुव्रतनाथाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

नवमी कृष्ण वैशाख महान्, प्रभु ने पाया केवल ज्ञान।
सुरनर करते प्रभु गुणगान, मंगलकारी और महान्।। तीन लोक...

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्णा नवम्यां ज्ञानकल्याणक श्री मुनिसुव्रतनाथाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

फाल्गुन कृष्ण द्वादशी महान्, प्रभु ने पाया पद निर्वाण।
मोक्ष पधारे श्री भगवान, नित्य निरंजन हुए महान्।। तीन लोक...

ॐ ह्रीं फाल्गुन कृष्ण द्वादश्यां मोक्षकल्याणक श्री मुनिसुव्रतनाथाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जयमाला

दोहा – मुनिसुव्रत मुनिव्रत धरें, त्याग करें जगजाल ।
शनि अरिष्ट ग्रह शांत हो, गाते हैं जयमाल ।।

(पद्धरि छंद)

जय मुनिसुव्रत जिनवर महान्, जय किए कर्म की प्रभु हान।
जय मोह महामद दलन वीर, दुर्द्धर तप संयम धरण धीर।।

जय हो अनंत आनन्द कंद, जय रहित सर्व जग दंद फंद।
अघ हरन करन मन हरणहार, सुखकरण हरण भवदुख अपार।।
जय नृप सुमित्र के पुत्र नाथ, पद झुका रहे सुर नर सुमाथ।
जय श्यामादेवी के गर्भ आय, सावन वदि दुतिया हर्ष दाय।।
जय राजगृही में जन्म लीन, वैशाख कृष्ण दशमी प्रवीण।
जय जन्म से पाए तीन ज्ञान, जय अतिशय भी पाये महान्।।
तन सहस आठ लक्षण सुपाय, प्रभु जन्म लिए जग के हिताय।
सौधर्म इन्द्र को हुआ भान, राजगृह नगरी कर प्रयाण।।
जाके सुमेरु अभिषेक कीन, चरणों में नत हो ढोक दीन।
वैशाख कृष्ण दशमी सुजान, मन में जागा वैराग्य भान।।
कई वर्ष राज्य कर चले नाथ, इक सहस सु नृप भी चले साथ।
शुभ अशुभ राग की आग त्याग, हो गए स्वयं प्रभु वीतराग।।
नित आतम में हो गए लीन, चारित्र मोह प्रभु किए क्षीण।
प्रभु ध्यानी का हो क्षीण राग, वह भी हो जाए वीतराग।।
तीर्थंकर पहले बने संत, सबने अपनाया यही पंथ।
जिनधर्म का है बस यही सार, प्रभु वीतराग को नमस्कार।।
वैशाख वदी नौमी सुजान, प्रभु ने पाया कैवल्य ज्ञान।
सुर समवशरण रचना बनाय, सुर नर पशु सब उपदेश पाय।।
जय-जय छियालिस गुण सहित देव, शत् इन्द्र भक्ति वश करें सेव।
जय फाल्गुन वदि द्वादशी नाथ, प्रभु मुक्ति वधु को किए साथ।।

(छन्द घत्तानन्द)

मुनिसुव्रत स्वामी, अन्तर्यामी, सर्व जहाँ में सुखकारी।
जय भव भयहारी आनंदकारी, रवि सुत ग्रह पीड़ा हारी।।

ॐ ह्रीं शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा – मुनिसुव्रत के चरण के, बने रहें इस दास।
भाव सहित वन्दन करें, होवे मोक्ष निवास।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

श्री नमिनाथ जिन पूजा

(स्थापना)

हे तीर्थंकर ! केवल ज्ञानी, हे नमीनाथ जिनवर स्वामी।
यह भक्त पुकारें भाव सहित, हे त्रिभुवन पति ! अन्तर्यामी।।
आह्वानन् करते हैं उर में, बनने तव आये अनुगामी।
सन्निकट होव मेरे भगवन्, तव बन जाएँ हम पथगामी।।
हम भक्त शरण में आए हैं, हे भगवन् ! यह अरदास लिए।
हमको शुभ मार्ग दिखाओगे, हम आये यह विश्वास लिए।।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र-अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन्।
ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छन्द)

कर्मों की ज्वाला धधक रही, हे नाथ ! बुझाने आये हैं।
हो जन्म जरादि रोग नाश, हम नीर चढ़ाने लाए हैं।।
हे नमीनाथ ! जिनवर स्वामी, मेरी विनती स्वीकार करो।
प्रभु सरस भावना के द्वारा, मेरे मन को हे नाथ ! भरो।।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार ताप से तप्त हुए, हम ताप नशाने आये हैं।
हो भव आताप विनाश प्रभो ! हम गंध चढ़ाने लाए हैं।।
हे नमीनाथ ! जिनवर स्वामी, मेरी विनती स्वीकार करो।
प्रभु सरस भावना के द्वारा, मेरे मन को हे नाथ ! भरो।।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चदनं निर्वपामीति स्वाहा।

न लोकालोक का अन्त कहीं, हम चतुर्गति भटकाए हैं।
अब अक्षय पद हो प्राप्त हमें, अक्षत अर्पण को लाए हैं।।

हे नमीनाथ ! जिनवर स्वामी, मेरी विनती स्वीकार करो।
प्रभु सरस भावना के द्वारा, मेरे मन को हे नाथ ! भरो।।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

है काम वासना दुखदायी, उसमें सदियों से भरमाए।
वह काम बाण विध्वंश हेतु, यह पुष्प चढ़ाने हम लाए।।
हे नमीनाथ ! जिनवर स्वामी, मेरी विनती स्वीकार करो।
प्रभु सरस भावना के द्वारा, मेरे मन को हे नाथ ! भरो।।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु क्षुधा रोग से व्याकुल हो, सब द्रव्य चराचर खाए हैं।
अब क्षुधा रोग के नाश हेतु, नैवेद्य चढ़ाने लाए हैं।।
हे नमीनाथ ! जिनवर स्वामी, मेरी विनती स्वीकार करो।
प्रभु सरस भावना के द्वारा, मेरे मन को हे नाथ ! भरो।।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम मोह पास में फँसे हुए, पर वस्तु में अटकाए हैं।
अब मोह कर्म के नाश हेतु, यह दीप जलाकर लाए हैं।।
हे नमीनाथ ! जिनवर स्वामी, मेरी विनती स्वीकार करो।
प्रभु सरस भावना के द्वारा, मेरे मन को हे नाथ ! भरो।।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों कर्मों के बन्धन से, हम मुक्त नहीं हो पाए हैं।
अब अष्ट कर्म के नाश हेतु, यह धूप जलाने लाए हैं।।
हे नमीनाथ ! जिनवर स्वामी, मेरी विनती स्वीकार करो।
प्रभु सरस भावना के द्वारा, मेरे मन को हे नाथ ! भरो।।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म विनाशनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हम इच्छा करके निज फल की, निष्फल फल पाते आए हैं।
अब मोक्ष महाफल हेतु प्रभो !, फल यहाँ चढ़ाने लाए हैं।।
हे नमीनाथ ! जिनवर स्वामी, मेरी विनती स्वीकार करो।
प्रभु सरस भावना के द्वारा, मेरे मन को हे नाथ ! भरो।।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

हम अवगुण को ही नाथ सदा, निज के गुण कहते आए हैं।
अब पद अनर्घ की प्राप्ति हेतु, यह अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।।
हे नमीनाथ ! जिनवर स्वामी, मेरी विनती स्वीकार करो।
प्रभु सरस भावना के द्वारा, मेरे मन को हे नाथ ! भरो।।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

दोहा

आश्विन वदी द्वितिया तिथि, नमीनाथ जिनदेव।
माँ विपुला उर अवतरे, पूजें उन्हें सदैव।।

ॐ ह्रीं आश्विनकृष्णा द्वितीयायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

दशमी कृष्ण आषाढ़ महान्, जन्में नमीनाथ भगवान।
भूप विजयरथ के गृहद्वार, भारी हुआ मंगलाचार।।

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णा दशम्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अषाढ़ वदी दशमी को पाय, दीक्षा धारे नमी जिनाय।
अविकारी हो वन में वास, आत्म तत्त्व का किए प्रकाश।।

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णा दशम्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(हरि छन्द गीता)

मगसिर शुक्ला तिथि ग्यारस, नमी जिनवर ने अहा।
कर्मघाती नाश कीन्हें, ज्ञान पाया है महा।।
जिन प्रभु की वंदना को, हम शरण में आए हैं।
अर्घ्य यह प्रासुक बनाकर, हम चढ़ाने लाए हैं।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्ल एकादश्यां ज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(टप्पा छन्द)

चतुर्दशी वैशाख कृष्ण की, नमिनाथ स्वामी।
मोक्ष गये सम्मेद शिखर से, जिन अंतर्यामी।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, चरणों में लाए।
भक्ति भाव से हर्षित होकर, वंदन को आए।।

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णा चतुर्दश्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा – तीर्थंकर बनकर सभी, नाशे कर्म कराल।
नमिनाथ की हम यहाँ, गाते हैं जयमाल।।

(चाल टप्पा)

श्री जिनवर ने कर्म घातिया, नाश किए भाई।
तीर्थंकर पदवी प्रगटाए, यह प्रभुता पाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
मोक्ष मार्ग के अभिनेता ने, महिमा दिखलाई। जि...

पूर्वभवों में त्याग तपस्या, प्रभु ने अपनाई।
तीर्थंकर की प्रकृति बांधी, अतिशय सुखदाई।। जिने...

विजयसेन गृह अपराजित से, मिथिलापुर भाई।
चयकर आये मात वप्रिला, के उर जिनराई।। जिने...

दर्शें कृष्ण आषाढ़ वदी को, जन्म लिए भाई।
क्षीर नीर से मेरू गिरि पर, न्हवन हुआ भाई ।। जिने...

श्वेत कमल शुभ लक्षण देखा, इन्द्र ने सुखदाई।
नमिराज तव नाम पुकारा, जय ध्वनि गुंजाई।। जिने...

दर्शें कृष्ण आषाढ़ वदी को, जाति स्मृति पाई।
अनुप्रेक्षा का चिन्तन करके, संत बने भाई।। जिने...

निज आतम का ध्यान लगाकर, शक्ति प्रगटाई।
कर्म घातिया नशते केवल, ज्ञान जगा भाई।। जिने...

समवशरण में दिव्य ध्वनि तब, प्रभु ने गुंजाई।
सम्यक् दृष्टि संयमधारी, बने जीव भाई।। जिने...

मगसिर शुक्ला एकादशि को, शिव पदवी पाई।
मोक्ष महल के स्वामी हो गये, नमिनाथ भाई।। जिने...

अनुक्रम से हम मोक्ष मार्ग, पर बढ़े शीघ्र भाई।
वह पदवी हम भी पा जाएँ, जो प्रभु ने पाई।। जिने...

(छन्द घत्तानन्द)

जय-जय जिन स्वामी, अन्तर्यामी, धर्म ध्वजा के अधिकारी।
जय शिवपुर वासी, ज्ञान प्रकाशी, तीन लोक मंगलकारी।।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा - जिनवर तीनों लोक में, जिन शासन सुखकार।
मंगलमय मंगल कहा, नमूँ अनन्तो बार।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

श्री नेमिनाथ जिन पूजा

(स्थापना)

नेमिनाथ के श्रीचरणों में, भव्य जीव आ पाते हैं।
तीर्थंकर जिन के दर्शन से, सर्व कर्म कट जाते हैं।।
गिरि गिरनार के ऊपर श्रीजिन, को हम शीश झुकाते हैं।
हृदय कमल के सिंहासन पर, आह्वानन् कर तिष्ठाते हैं।।
राहु अरिष्ट ग्रह शांत करो प्रभु, हमने तुम्हें पुकारा है।
हमको प्रभु भव से पार करो, तुम बिन न कोई हमारा है।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्र ! अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन्। ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र-तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छन्द)

विषयों के विष की प्याला को, पीकर के जन्म गँवाया है।
नहिं जन्म मरण के दुःखों से, छुटकारा मिलने पाया है।।
हम मिथ्या मल धोने प्रभुजी, शुभ कलश में जल भर लाए हैं।
राहु अरिष्ट ग्रह शांति हेतु, चरणों में शीश झुकाए हैं।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोधादि कषायों के कारण, संताप हृदय में छाया है।
मन शांत रहे मेरा भगवन्, यह भक्त चरण में आया है।।
संसार ताप के नाश हेतु, हम शीतल चंदन लाए हैं।
राहू अरिष्ट ग्रह शांति हेतु, चरणों में शीश झुकाए हैं।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षणभंगुर वैभव जान प्रभु, तुमने सब राग नशाया है।
व्रत संयम तेज तपस्या से, अभिनव अक्षय पद पाया है।।
हो अक्षय पद प्राप्त हमें, हम अक्षय अक्षत लाए हैं।
राहू अरिष्ट ग्रह शांति हेतु, चरणों में शीश झुकाए हैं।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

है प्रबल काम शत्रु जग में, तुमने उसको ठुकराया है।
यह भक्त समर्पित चरणों में, तुमसा बनने को आया है।।
प्रभु कामबाण के नाश हेतु, यह प्रमुदित पुष्प चढ़ाए हैं।
राहू अरिष्ट ग्रह शांति हेतु, चरणों में शीश झुकाए हैं।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ ! भोग की तृष्णा ने, अरु क्षुधा ने हमें सताया है।
मन मर्कट खाकर सब पदार्थ, यह तृप्त नहीं हो पाया है।।
प्रभु क्षुधा रोग के शमन हेतु, यह व्यंजन सरस ले आए हैं।।
राहू अरिष्ट ग्रह शांति हेतु, चरणों में शीश झुकाए हैं।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोहांध महा अज्ञानी हम, जीवन में घोर तिमिर छाया।
मैं रागी द्वेषी बना रहा, निज के स्वभाव से बिसराया।।
मोहांधकार का नाश करें, यह दीप जलाने लाए हैं।
राहू अरिष्ट ग्रह शांति हेतु, चरणों में शीश झुकाए हैं।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों की सेना ने कैसा, यह चक्र व्यूह रचवाया है।
मुझ भोले-भाले प्राणी को, क्यों उसके बीच फँसाया है।।
अब अष्ट कर्म की धूप जले, यह धूप जलाने लाए हैं।
राहू अरिष्ट ग्रह शांति हेतु, चरणों में शीश झुकाए हैं।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हमने चित् चेतन का चिंतन, अरु मनन नहीं कर पाया है।
सद्दर्शन ज्ञान चरित का फल, शुभ फल निर्वाण न पाया है।।
अब मोक्ष महाफल दो स्वामी, हम श्रीफल लेकर आए हैं।
राहू अरिष्ट ग्रह शांति हेतु, चरणों में शीश झुकाए हैं।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अविचल अनर्घ पद पाने का, हमने अब भाव जगाया है।
अतएव प्रभु वसु द्रव्यों का, अनुपम यह अर्घ्य बनाया है।।
दो पद अनर्घ हमको स्वामी, यह अर्घ्य संजोकर लाए हैं।
राहू अरिष्ट ग्रह शांति हेतु, चरणों में शीश झुकाए हैं।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

नेमिनाथ भगवान, कार्तिक शुक्ला षष्ठमी।
पाए गर्भ कल्याण, शिवा देवी उर आ बसे।।

ॐ ह्रीं कार्तिक शुक्लाषष्ठभ्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री नेमिनाथाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

हुआ जन्म कल्याण, श्रावण शुक्ला षष्ठमी।
शौर्य पुरी नगरी शुभम्, समुद्र विजय हर्षित हुए।।

ॐ ह्रीं श्रावण शुक्लाषष्ठभ्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री नेमिनाथाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सहस्र आम्रवन बीच, श्रावण शुक्ला षष्ठमी।
पशु आक्रंदन देख, तप धारे गिरनार पर।।

ॐ ह्रीं श्रावण शुक्लाषष्ठभ्यां तपकल्याणक प्राप्त श्री नेमिनाथाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

हुआ ज्ञान कल्याण, आश्विन शुक्ल प्रतिपदा।
स्वपर प्रकाशी ज्ञान, नेमिनाथ जिन पा लिए।।

ॐ ह्रीं आश्विन शुक्ला प्रतिपदायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री नेमिनाथाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पाए पद निर्वाण, आठें शुक्ल अषाढ़ की।
हुआ मोक्ष कल्याण, ऊर्जयन्त के शीर्ष से।।

ॐ ह्रीं आषाढ़ शुक्ला अष्टम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री नेमिनाथाय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

जयमाला

दोहा– **समुद्र विजय के लाड़ले, शिवादेवी के लाल।**
नेमिनाथ जिनराज की, गाते हैं जयमाल।।

(राधेश्याम छन्द)

सुरेन्द्र नरेन्द्र मुनीन्द्र गणीन्द्र, शतेन्द्र सुध्यान लगाते हैं।
जिनराज की जय जयकार करें, उनका यश मंगल गाते हैं।।
जो ध्यान प्रभु का करते हैं, दुख उनके सारे हरते हैं।
जो चरण शरण में आ जाते, वह भवसागर से तरते हैं।।
तुम धर्ममई हो कर्मजई, तुममें जिनधर्म समाया है।
तुम जैसा बनने हेतु नाथ !, यह भक्त चरण में आया है।।
प्रभु द्रव्य भाव नोकर्म सभी, अरु राग द्वेष भी हारे हैं।
प्रभु तन में रहते हुए विशद, रहते उससे अति न्यारे हैं।।
जिसको भव सुख की चाह नहीं, वह दुख से क्या भय खाते हैं।
वह महाबली जिन धीर वीर, भवसागर से तिर जाते हैं।।
जो दयावान करुणाधारी, वात्सल्यमयी गुणसागर हैं।
वह सर्वसिद्धियों के नायक, शुभ रत्नों के रत्नाकर हैं।।
शुभ नित्य निरंजन शिव स्वरूप, चैतन्य रूप तुमने पाया।
उस मंगलमय पावन पवित्र, पद पाने को मन ललचाया।।
कर्मों के कारण जीव सभी, भव सागर में गोते खाते ।
जो शरण आपकी आते हैं, वह उनके पास नहीं आते ।।
तुम हो त्रिकालदर्शी प्रभुवर, तुमने तीर्थंकर पद पाया है।
तुमने सर्वज्ञता को पाया, अरु केवलज्ञान जगाया है।।
तुम हो महान् अतिशय धारी, तुम विधि के स्वयं विधाता हो।
सुर नर नरेन्द्र की बात कहाँ, तुम तो जन-जन के त्राता हो।।
तुम हो अनन्त ज्ञाता दृष्टा, चिन्मूरत हो प्रभु अविकारी।
जो शरण आपकी आ जाए, वह बने स्वयं मंगलकारी।।
जो मोह महामद मदन काम, इत्यादि तुमसे हारे हैं।
जो रहे असाता के कारण, चरणों झुक जाते सारे हैं।।
ज्यों तरुवर के नीचे आने से, राही शीतल छाया पाता।
प्रभु के शरणागत आने से, स्वमेव आनन्द समा जाता।।

तुमने पशुओं का आक्रन्दन, लख कर संसार असार कहा।
यह तो अनादि से है असार, इसका ऐसा स्वरूप रहा।।
हे जगत पिता ! करुणा निधान, यह सब तो एक बहाना था।
शायद कुछ इसी बहाने से, राजुल को पार लगाना था।।
राजुल का तुमने साथ दिया, उससे नव भव की प्रीति रही।
पर हमसे प्रीति निभाई न, वह खता तो हमसे कहो सही।।
अब शरण खड़ा है शरणागत, इसका भी बेड़ा पार करो।
कर रहा भक्ति के वशीभूत, हे ! दयासिंधु स्वीकार करो।।
जो शरण आपकी आ जाए, वह भव में कैसे भटकेगा।
जो भक्ति भाव से गुण गाए, वह जग में कैसे अटकेगा।।
तुम तीर्थंकर बाईसवें प्रभु, तुम बाईस परीषह को जीते।
तुमने अनन्त बल सुख पाया, तुम निजानन्द रस को पीते।।
जैसे प्रभु भव से पार हुए, वैसे मुझको भी पार करो।
हमको आलम्बन दे करके, प्रभु इस जग से उद्धार करो।
जो भाव सहित पूजा करते, वह पूजा का फल पाते हैं।।
पूजा के फल से भक्तों के, सारे संकट कट जाते हैं।
हम जन्म-मृत्यु के संकट से, घबड़ाकर चरणों आये हैं।
अब 'विशद' मोक्ष महापद पाने को, चरणों में शीश झुकाये हैं।।

(छन्द घत्तानन्द)

जय नेमि जिनेशं हितउपदेशं, शुद्ध बुद्ध चिद्रूपयति।
जय परमानन्दं आनन्दकंदं, दयानिकंदं ब्रह्मपति।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व.स्वाहा।

दोहा- नेमिनाथ के द्वार पर, पूरी होती आश।
मुक्ति हो संसार से, पूरा है विश्वास।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री पार्श्वनाथ जिन पूजा

(स्थापना)

हे पार्श्व प्रभो ! हे पार्श्व प्रभो ! मेरे मन मंदिर में आओ।
विघ्नों को दूर करो स्वामी, जग में सुख शांति दर्शाओ।।
सब विघ्न दूर हो जाते हैं, प्रभु नाम आपका लेने से।
जीवन मंगलमय हो जाता, जिन अर्घ्य चरण में देने से।।
हे ! तीन लोक के नाथ प्रभु, जन–जन से तुमको अपनापन।
मम् हृदय कमल में आ तिष्ठो, है 'विशद' भाव से आह्वानन।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्रावतरावतर संवौषट् इत्याह्वाननम्।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम् सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणं।

(गीता छन्द)

स्वर्ण कलश में प्रासुक जल ले, जो नित पूजन करते हैं।
मंगलमय जीवन हो उनका, सब दुख दारिद हरते हैं।।
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज मैं विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जन्म–जरा–मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

परम सुगन्धित मलयागिरि का, चन्दन चरण चढ़ाते हैं।
दिव्य गुणों को पाकर प्राणी, दिव्य लोक को जाते हैं।।
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धवल मनोहर अक्षय अक्षत, लेकर अर्चा करते हैं।
अक्षय पद हो प्राप्त हमें प्रभु, चरणों में सिर धरते हैं।।
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

कमल चमेली वकुल कुसुम से, प्रभु की पूजा करते हैं।
मंगलमय जीवन हो उनका, सुख के झरने झरते हैं।
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा।

शक्कर घृत मेवा युत व्यंजन, कनक थाल में लाये हैं।
अर्पित करते हैं प्रभु पद में, क्षुधा नशाने आये हैं।।
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत के दीप जलाकर सुन्दर, प्रभु की आरति करते हैं।
मोह तिमिर हो नाश हमारा, वसु कर्मों से डरते हैं।।
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय महामोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन केशर आदि सुगंधित, धूप दशांग मिलाये हैं।
अष्ट कर्म हों नाश हमारे, अग्नि बीच जलाए हैं।।

विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री फल केला और सुपारी, इत्यादिक फल लाए हैं।
श्री जिनवर के पद पंकज में, मिलकर आज चढ़ाए हैं।।
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल फल आदिक अष्ट द्रव्य से, अर्घ समर्पित करते हैं।
पूजन करके पार्श्वनाथ की, कोष पुण्य से भरते हैं।।
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

(त्रिभगी छन्द)

स्वर्गों में रहे, प्राणत से चये, माँ वामा उर में गर्भ लिये।
वसु देव कुमारी, अतिशयकारी, गर्भ समय में शोध किए।।
श्री विघ्न विनाशक, अरिगण नाशक, पारस जिन की सेव करें।
त्रिभुवन के ज्ञायक, शिव दर्शायक, प्रभु के पद में शीश धरें।।1।।

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्णा द्वितीयायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तिथि पौष एकादशि, कृष्णा की निशि, काशी में अवतार लिया।
देवों ने आकर, वाद्य बजाकर, आनन्दोत्सव महत किया।।

श्री विघ्न विनाशक, अरिगण नाशक, पारस जिन की सेव करें।
त्रिभुवन के ज्ञायक, शिव दर्शायक, प्रभु के पद में शीश धरें ।।2।।

ॐ ह्रीं पौषवदी ग्यारस जन्मकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

कलि पौष एकादशि, व्रत धरके असि, प्रभुजी तप को अपनाया।
भा बारह भावन, अति ही पावन, भेष दिगम्बर तुम पाया।।
श्री विघ्न विनाशक, अरिगण नाशक, पारस जिन की सेव करें।
त्रिभुवन के ज्ञायक, शिव दर्शायक, प्रभु के पद में शीश धरें ।।3।।

ॐ ह्रीं पौषवदी ग्यारस तपकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

जब क्रूर कमठ ने, बैरी शठ ने, अहि क्षेत्र में कीन्ही मनमानी।
तब चैत अंधेरी, चौथ सवेरी, आप हुए केवलज्ञानी।।
श्री विघ्न विनाशक, अरिगण नाशक, पारस जिन की सेव करें।
त्रिभुवन के ज्ञायक, शिव दर्शायक, प्रभु के पद में शीश धरें।।4।।

ॐ ह्रीं चैत्रवदी चतुर्थी कैवल्य ज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सित सातै सावन, अतिमन भावन, सम्मेद शिखर पे ध्यान किए।
वर के शिवनारी, अतिशयकारी, आतम का कल्याण किए।।
श्री विघ्न विनाशक, अरिगण नाशक, पारस जिन की सेव करें।
त्रिभुवन के ज्ञायक शिव दर्शायक, प्रभु के पद में शीश धरें ।।5।।

ॐ ह्रीं सावनसुदी सप्तमी मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जयमाला

दोहा– माँ वामा के लाड़ले, अश्वसेन के लाल।
विघ्न विनाशक पार्श्व की, कहते हैं जयमाल ।।1।।

(छंद)

चित् चिंतामणि नाथ नमस्ते, शुभ भावों के साथ नमस्ते।
ज्ञान रूप ओंकार नमस्ते, त्रिभुवन पति आधार नमस्ते।।2।।
श्री युत श्री जिनराज नमस्ते, भव सर मध्य जहाज नमस्ते।
सद् समता युत संत नमस्ते, मुक्ति वधु के कंत नमस्ते।।3।।
सद्गुण युत गुणवन्त नमस्ते, पार्श्वनाथ भगवंत नमस्ते।
अरि नाशक अरिहंत नमस्ते, महा महत् महामंत्र नमस्ते।।4।।
शांति दीप्ति शिव रूप नमस्ते, एकानेक स्वरूप नमस्ते।
तीर्थंकर पद पूत नमस्ते, कर्म कलिल निर्धूत नमस्ते।।5।।
धर्म धुरा धर धीर नमस्ते, सत्य शिवं शुभ वीर नमस्ते।
करुणा सागर नाथ नमस्ते, चरण झुका मम् माथ नमस्ते।।6।।
जन जन के शुभ मीत नमस्ते, भव हर्ता जगजीत नमस्ते।
बालयति आधीश नमस्ते, तीन लोक के ईश नमस्ते।।7।।
धर्म धुरा संयुक्त नमस्ते, सद् रत्नत्रय युक्त नमस्ते।
निज स्वरूप लवलीन नमस्ते, आशा पाश विहीन नमस्ते।।8।।
वाणी विश्व हिताय नमस्ते, उभय लोक सुखदाय नमस्ते।
जित् उपसर्ग जिनेन्द्र नमस्ते, पद पूजित सत् इन्द्र नमस्ते।।9।।

दोहा– भक्त्याष्टक नित जो पढ़े, भक्ति भाव के साथ।
सुख सम्पत्ति ऐश्वर्य पा, हो त्रिभुवन का नाथ।।10।।

ॐ ह्रीं श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जयमाला अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– चरण शरण के भक्त की, भक्ति फले अविराम।
मुक्ति पाने के लिए, करते 'विशद' प्रणाम्।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री महावीर स्वामी जिन पूजा

(स्थापना)

हे वीर प्रभो! महावीर प्रभो! हमको सद्राह दिखा जाओ।
यह भक्त खड़े हैं आश लिये, प्रभु आशिष दो उर में आओ।।
तुम तीन लोक में पूज्य हुए, हम पूजा करने को आए।
हम भक्ति भाव से हे भगवन्!, यह भाव सुमन कर में लाए।।
हे नाथ! आपके द्वारे पर, हम आये हैं विश्वास लिए।
आह्वानन् करते हैं उर में, यह भक्त खड़े अरदास लिए।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठ स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(शम्भू छन्द)

क्षण भंगुर यह जग जीवन है, तृष्णा जग में भटकाती है।
स्वाधीन सुखों से दूर करे, निज आत्म ज्ञान बिसराती है।।
हम प्रासुक जल लेकर आये, प्रभु जन्म मरण का नाश करो।
हे वीर प्रभु करुणा करके, सद्दर्शन ज्ञान प्रकाश भरो।।1।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन केशर की गंध महा, मानस मधुकर महकाती है।
आतम उससे निर्लिप्त रही, शुभ गंध नहीं मिल पाती है।।
शुभ गंध समर्पित करते हैं, आतम में गंध सुवास भरो।
हे वीर प्रभु करुणा करके, सद्दर्शन ज्ञान प्रकाश भरो।।2।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

हमने जो दौलत पाई है, क्षण-क्षण क्षय होती जाती है।
अक्षय निधि जो तुमने पाई, प्रभु उसकी याद सताती है।

हम अक्षय अक्षत लाये हैं, अब मेरा न उपहास करो।
हे वीर प्रभु करुणा करके, सद्दर्शन ज्ञान प्रकाश भरो ।।3।।
ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

हे प्रभु! आपके तन से शुभ, फूलों सम खुशबू आती है ।
सारे पुष्पों की खुशबू भी, उसके आगे शर्माती है ।।
हम पुष्प मनोहर लाये हैं, मम् उर में धर्म सुवास भरो ।
हे वीर प्रभु करुणा करके, सद्दर्शन ज्ञान प्रकाश भरो ।।4।।
ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा।

भर जाता पेट है भोजन से, रसना की आश न भरती है ।
जितना देते हैं मधुर मधुर, उतनी ही आश उभरती है ।।
नैवेद्य बनाकर लाये हम, न मुझको प्रभु निराश करो ।
हे वीर प्रभु करुणा करके, सद्दर्शन ज्ञान प्रकाश भरो।।5।।
ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम सोच रहे सूरज चंदा, दीपक से रोशनी आती है ।
हे प्रभु! आपकी कीर्ति से, वह भी फीकी पड़ जाती है ।।
हम दीप जलाकर लाये हैं, मम् अन्तर में विश्वास भरो ।
हे वीर प्रभु करुणा करके, सद्दर्शन ज्ञान प्रकाश भरो।।6।।
ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय महामोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

जीवों को सदियों से भगवन् , कर्मों की धूप सताती है ।
कर्मों के बन्धन पड़ने से, न छाया भी मिल पाती है ।।
यह धूप चढ़ाते चरणों में, मम् हृदय प्रभु जी वास करो ।
हे वीर प्रभु करुणा करके, सद्दर्शन ज्ञान प्रकाश भरो।।7।।
ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सारे जग के फल खाकर भी, न तृप्ति हमें मिल पाती है ।
यह फल तो सारे निष्फल हैं, माँ जिनवाणी यह गाती है ।।
इस फल के बदले मोक्ष सुफल, दो हमको नहीं उदास करो।
हे वीर प्रभु करुणा करके, सद्दर्शन ज्ञान प्रकाश भरो।।8।।
ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम राग द्वेष में अटक रहे, ईर्ष्या भी हमें जलाती है ।
जग में सदियों से भटक रहे, पर शांति नहीं मिल पाती है ।।
हम अर्घ्य बनाकर लाए हैं, मन का संताप विनाश करो ।
हे वीर प्रभु करुणा करके, सद्दर्शन ज्ञान प्रकाश भरो।।9।।
ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

अषाढ़ शुक्ल की षष्ठी आई, देव रत्नवृष्टि करवाई ।
देव सभी मन में हर्षाए, गर्भ में वीर प्रभु जब आए।।1।।
ॐ ह्रीं आषाढ़ शुक्ल षष्ठी गर्भकल्याणक प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चैत शुक्ल की तेरस आई, सारे जग में खुशियाँ छाई ।
प्रभु का जन्म हुआ अतिपावन, सारे जग में जो मन भावन।।2।।
ॐ ह्रीं चैत्रसुदी तेरस जन्मकल्याणक प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मार्ग शीर्ष दशमी दिन आया, मन में तब वैराग्य समाया ।
सारे जग का झंझट छोड़ा, प्रभु ने जग से मुँह को मोड़ा।।3।।
ॐ ह्रीं मंगसिर सुदी दशमी तपकल्याणक प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैशाख शुक्ल दशमी शुभ आई, पावन मंगल मय अति भाई ।
प्रभु ने केवल ज्ञान जगाया, इन्द्र ने समवशरण बनवाया।।4।।
ॐ ह्रीं वैशाखशुक्ला दशमी केवलज्ञान प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कार्तिक की शुभ आई अमावस, प्रभु ने कर्म नाश कीन्हे बस ।
हम सब भक्त शरण में आये, मुक्ति गमन के भाव बनाए।।5।।

ॐ ह्रीं कार्तिक अमावस्या मोक्ष कल्याणक प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– तीन लोक के नाथ को, वन्दन करें त्रिकाल।
महावीर भगवान की, गाते हैं जयमाल।।

(आर्या छन्द)

हे वर्धमान! शासन नायक, तुम वर्तमान के कहलाए।
हे परम पिता! हे परमेश्वर! तव चरणों में हम सिर नाए।।

(छंद ताटंक)

नृप सिद्धारथ के गृह तुमने, कुण्डलपुर में जन्म लिया।
माता त्रिशला की कुक्षि को, आकर प्रभु ने धन्य किया।।
शत् इन्द्रों ने जन्मोत्सव पर, मंगल उत्सव महत किया।
पाण्डुक शिला पर ले जाकर के, बालक का अभिषेक किया।।
दायें पग में सिंह चिन्ह लख, वर्धमान शुभ नाम दिया।
सुर नर इन्द्रों ने मिलकर तब, प्रभु का जय जयकार किया।।
नन्हा बालक झूल रहा था, पलने में जब भाव विभोर।
चारण ऋद्धि धारी मुनिवर, आये कुण्डलपुर की ओर।।
मुनिवर का लखकर बालक को, समाधान जब हुआ विशेष।
सन्मति नाम दिया मुनिवर ने, जग को दिया शुभम् सन्देश।।
समय बीतने पर बालक ने, श्रेष्ठ वीरता दिखलाई।
वीर नाम की देव ने पावन, ध्वनि लोक में गुंजाई।।
कुछ वर्षों के बाद प्रभु ने, युवा अवस्था को पाया।
कुण्डलपुर नगरी में इक दिन, हाथी मद से बौराया।।

हाथी के मद को तब प्रभु ने, मार–मार चकचूर किया।
अति वीर प्रभु का लोगों ने, मिलकर के शुभ नाम दिया।।
तीस वर्ष की उम्र प्राप्त कर, राज्य छोड़ वैराग्य लिए।
मुनि बनकर के पञ्च मुष्टि से, केश लुंच निज हाथ किए।।
परम दिगम्बर मुद्रा धरकर, खड्गासन से ध्यान किया।
कामदेव ने ध्यान भंग कर, देने का संकल्प लिया।।
कई देवियाँ वहाँ बुलाई, उनने कुत्सित नृत्य किया।
हार मानकर सभी देवियों ने, प्रभु पद में ढोक दिया।।
कामदेव ने महावीर के, नाम से बोला जयकारा।
मैंने सारे जग को जीता, पर इनसे मैं भी हारा।।
बारह वर्ष साधना करके, केवल ज्ञान प्रभु पाए।
देव देवियाँ सब मिल करके,भक्ति करने को आए।
धन कुबेर ने विपुलाचल पर, समोशरण शुभ बनवाया।
छियासठ दिन तक दिव्य देशना, का अवसर न मिल पाया।
श्रावण वदी तिथि एकम् को, दिव्य ध्वनि का लाभ मिला।
शासन वीर प्रभु का पाकर, 'विशद' धर्म का फूल खिला।
कार्तिक वदी अमावस को प्रभु, पावन पद निर्वाण हुआ।
मोक्ष मार्ग पर बढ़ो सभी जन, सबका मार्ग प्रशस्त किया।

दोहा – महावीर भगवान ने, दिया दिव्य संदेश।
मोक्ष मार्ग पर बढ़ो तुम, धार दिगम्बर भेष।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

दोहा – कर्म नाश शिवपुर गये, महावीर शिव धाम।
शिव सुख हमको प्राप्त हो, करते चरण प्रणाम।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

सोलहकारण भावना पूजा

स्थापना

सोलह कारण भावना, भाते हैं जो जीव।
तीर्थंकर पद प्राप्त कर, पाते सौख्य अतीव।।
कर्म घातिया नाशकर, पावें केवलज्ञान।
सोलह कारण भावना, का करते आह्वान।।
है अन्तिम यह भावना, हृदय जगे श्रद्धान।
सर्व कर्म का नाश हो, मिले सुपद निर्वाण।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादि षोडशकारणानि ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितों भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(चाल–छन्द)

हमने संसार बढ़ाया, न रत्नत्रय को पाया।
हम नीर सु निर्मल लाए, जन्मादि नशाने आए।।
है भव्य भावना भाई, शुभ तीर्थंकर पददायी।
हम सोलह कारण भाते, नत् सादर शीश झुकाते।।1।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धि, विनयसम्पन्नता, शीलव्रतेष्वनतिचार, अभीक्ष्णज्ञानोपयोग, संवेग, शक्तितस्त्याग, शक्तितस्तप साधु–समाधि, वैयावृत्यकरण, अर्हद्भक्ति, आचार्यभक्ति, बहुश्रुतभक्ति, प्रवचनभक्ति, आवश्यकापरिहाणि, मार्ग प्रभावना, प्रवचन वात्सल्य, इति षोडश कारणेभ्योः नमः जन्म–जरा–मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों ने हमें सताया, भारी संताप बढ़ाया।
हम चन्दन घिसकर लाए, भव ताप नशाने आए।।
है भव्य भावना भाई, शुभ तीर्थंकर पददायी।
हम सोलह कारण भाते, नत सादर शीश झुकाते।।2।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादि–षोडशकारणेभ्यो चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

खण्डित पद हमने पाए, जग में रह भ्रमण कराए।
हम अक्षय अक्षत लाए, शाश्वत पद पाने आए।।

है भव्य भावना भाई, शुभ तीर्थंकर पददायी।
हम सोलह कारण भाते, नत सादर शीश झुकाते।।3।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादि–षोडशकारणेभ्यो अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

भोगों ने हमें लुभाया, जग कीच के बीच फँसाया।
यह पुष्प चढ़ाने लाए, हम काम नशाने आए।।
है भव्य भावना भाई, शुभ तीर्थंकर पद दायी।
हम सोलह कारण भाते, नत सादर शीश झुकाते।।4।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादि–षोडशकारणेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

व्यंजन कई सरस बनाते, निशदिन हम नये–नये खाते।
नैवेद्य दवा बन जावे, भव क्षुधा रोग नश जावे।।
है भव्य भावना भाई, शुभ तीर्थंकर पद दायी।
हम सोलह कारण भाते, नत सादर शीश झुकाते।।5।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादि–षोडशकारणेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है मोह कर्म मतवाला, चेतन को कीन्हा काला।
हम दीप जलाकर लाए, हम मोह नशाने आए।।
है भव्य भावना भाई, शुभ तीर्थंकर पद दायी।
हम सोलह कारण भाते, नत सादर शीश झुकाते।।6।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादि–षोडशकारणेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

मिल आठों कर्म सताए, जिससे हम चेत न पाए।
यह धूप जलाने लाए, हम कर्म नशाने आए।।
है भव्य भावना भाई, शुभ तीर्थंकर पद दायी।
हम सोलह कारण भाते, नत सादर शीश झुकाते।।7।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादि–षोडशकारणेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

नश्वर फल जग के सारे, न कोई रहे हमारे।
फल सरस चढ़ाने लाए, मुक्ति पद पाने आए।।

है भव्य भावना भाई, शुभ तीर्थंकर पद दायी।
हम सोलह कारण भाते, नत सादर शीश झुकाते ।।8 ।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादि-षोडशकारणेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम पद अनर्घ न पाए, आठों पृथ्वी भटकाए।
यह अर्घ्य बनाकर लाए, पाने अनर्घ पद आए ।।
है भव्य भावना भाई, शुभ तीर्थंकर पद दायी।
हम सोलह कारण भाते, नत सादर शीश झुकाते ।।9 ।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादि-षोडशकारणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोलह कारण भावना के अर्घ्य

(ताटंक छन्द)

मिथ्या भाव रहेगा जब तक, दृष्टि सम्यक् नहीं बने।
दरश विशुद्धि हो जाये तो, कर्म घातिया शीघ्र हने ।।
तीर्थंकर पदवी के हेतु, सोलह कारण भाव कहे।
अर्घ्य समर्पित करते जिन पद, मेरे उर में भाव रहे ।।1 ।।

ॐ ह्रीं सर्वदोषरहित दर्शनविशुद्धिभावनायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव-शास्त्र-गुरु के प्रति भक्ति, कर्म पाप का हरण करे।
दर्शन ज्ञान चरित उपचारिक, विनय भाव जो हृदय धरे ।।
तीर्थंकर पदवी के हेतु, सोलह कारण भाव कहे।
अर्घ्य समर्पित करते जिन पद, मेरे उर में भाव रहे ।।2 ।।

ॐ ह्रीं सर्वदोषरहित विनयसम्पन्नभावनायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नव कोटि से शील व्रतों का, निरतिचार पालन करता।
सुर नर किन्नर से पूजित हो, कोष पुण्य से वह भरता ।।
तीर्थंकर पदवी के हेतु, सोलह कारण भाव कहे।
अर्घ्य समर्पित करते जिन पद, मेरे उर में भाव रहे ।।3 ।।

ॐ ह्रीं सर्वदोषरहित अनतिचारशीलव्रतभावनायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर की ॐकार मय, दिव्य देशना है पावन।
नित्य निरन्तर ज्ञान योग से, भाता है जो मनभावन ।।
तीर्थंकर पदवी के हेतु, सोलह कारण भाव कहे।
अर्घ्य समर्पित करते जिन पद, मेरे उर में भाव रहे ।।4 ।।

ॐ ह्रीं सर्वदोषरहित अभीक्ष्णज्ञानोपयोग भावनायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म और उसके फल में भी, हर्षभाव जिसको आवे।
सुत दारा धन का त्यागी हो, वह सुसंवेग भाव पावे ।।
तीर्थंकर पदवी के हेतु, सोलह कारण भाव कहे।
अर्घ्य समर्पित करते जिन पद, मेरे उर में भाव रहे ।।5 ।।

ॐ ह्रीं सर्वदोषरहित संवेगभावनायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वशक्ति को नहीं छिपाकर, त्याग भाव मन में लावे।
दान करे जो सत पात्रों में, त्याग शक्तिशः कहलावे ।।
तीर्थंकर पदवी के हेतु, सोलह कारण भाव कहे।
अर्घ्य समर्पित करते जिन पद, मेरे उर में भाव रहे ।।6 ।।

ॐ ह्रीं सर्वदोषरहित शक्तितस्त्यागभावनायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बाह्याभ्यन्तर सुतप करे जो, निज शक्ति को प्रगटावे।
निज आतम की शुद्धि हेतु, सुतप शक्तिशः वह पावे ।।
तीर्थंकर पदवी के हेतु, सोलह कारण भाव कहे।
अर्घ्य समर्पित करते जिन पद, मेरे उर में भाव रहे ।।7 ।।

ॐ ह्रीं सर्वदोषरहित शक्तितस्तपभावनायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साता और असाता पाकर, मन में समता उपजावे।
मरण समाधि सहित करे तो, साधु समाधि कहलावे ।।
तीर्थंकर पदवी के हेतु, सोलह कारण भाव कहे।
अर्घ्य समर्पित करते जिन पद, मेरे उर में भाव रहे ।।8 ।।

ॐ ह्रीं सर्वदोषरहित साधुसमाधिभावनायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साधक तन से करे साधना, उसमें कोई बाधा आवे।
दूर करे अनुराग भाव से, वैयावृत्ति कहलावे।।
तीर्थंकर पदवी के हेतु, सोलह कारण भाव कहे।
अर्घ्य समर्पित करते जिन पद, मेरे उर में भाव रहे।।9।।

ॐ ह्रीं सर्वदोषरहित वैय्यावृत्तिभावनायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म घातिया अरि के नाशक, श्री जिन अर्हत् पद पावें।
दोष रहित उनकी भक्ति शुभ, अर्हत् भक्ति कहलावे।।
तीर्थंकर पदवी के हेतु, सोलह कारण भाव कहे।
अर्घ्य समर्पित करते जिन पद, मेरे उर में भाव रहे।।10।।

ॐ ह्रीं सर्वदोषरहित अर्हद्भक्तिभावनायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्चाचार का पालन करते, दीक्षा देते शिवदायी।
उनकी भक्ति करना भाई, आचार्य भक्ति कहलाई।।
तीर्थंकर पदवी के हेतु, सोलह कारण भाव कहे।
अर्घ्य समर्पित करते जिन पद, मेरे उर में भाव रहे।।11।।

ॐ ह्रीं सर्वदोषरहित आचार्यभक्तिभावनायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बहुश्रुतधारी गुरु अनगारी, मुनि जिनसे शिक्षा पावें।
उपाध्याय की भक्ति करना, बहुश्रुत भक्ति कहलावे।।
तीर्थंकर पदवी के हेतु, सोलह कारण भाव कहे।
अर्घ्य समर्पित करते जिन पद, मेरे उर में भाव रहे।।12।।

ॐ ह्रीं सर्वदोषरहित बहुश्रुतभक्तिभावनायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वादशांग वाणी जिनवर की, द्रव्य तत्त्व को दर्शावे।
माँ जिनवाणी की भक्ति ही, प्रवचन भक्ति कहलावे।।
तीर्थंकर पदवी के हेतु, सोलह कारण भाव कहे।
अर्घ्य समर्पित करते जिन पद, मेरे उर में भाव रहे।।13।।

ॐ ह्रीं सर्वदोषरहित प्रवचनभक्तिभावनायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यत्नाचार सहित चर्या से, षट् आवश्यक पाल रहे।
आवश्यक अपरिहार्य भावना, मुनिवर स्वयं सम्हाल रहे।।

तीर्थंकर पदवी के हेतु, सोलह कारण भाव कहे।
अर्घ्य समर्पित करते जिन पद, मेरे उर में भाव रहे।।14।।

ॐ ह्रीं सर्वदोषरहित आवश्यकापरिहार्यभावनायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव वन्दना भक्ति महोत्सव, रथ यात्रा पूजा तप दान।
मोह–तिमिर का नाश प्रकाशक, ये ही धर्म प्रभावना मान।।
तीर्थंकर पदवी के हेतु, सोलह कारण भाव कहे।
अर्घ्य समर्पित करते जिन पद, मेरे उर में भाव रहे।।15।।

ॐ ह्रीं सर्वदोषरहित मार्गप्रभावनाभावनायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आर्य पुरुष त्यागी मुनिवर से, वात्सल्य का भाव रहे।
गाय और बछड़े सम प्रीति, प्रवचन वात्सल्य देव कहे।।
तीर्थंकर पदवी के हेतु, सोलह कारण भाव कहे।
अर्घ्य समर्पित करते जिन पद, मेरे उर में भाव रहे।।16।।

ॐ ह्रीं सर्वदोषरहित वात्सल्यभावनायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोलह कारण भाय भावना, तीर्थंकर पद पाते हैं।
अर्घ्य चढ़ाते भक्ति भाव से, उनके गुण को गाते हैं।।
तीर्थंकर पदवी के हेतु, सोलह कारण भाव कहे।
अर्घ्य समर्पित करते जिन पद, मेरे उर में भाव रहे।।17।।

ॐ ह्रीं सर्वदोषरहित दर्शनविशुद्धि आदि सोलहकारणभावनायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शान्तये शांतिधारा (दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

जयमाला

दोहा – **अष्ट द्रव्य का अर्घ्य शुभ, दीपक लिया प्रजाल।**
सोलह कारण भावना, की गाते जयमाल।।

(चौपाई)

काल अनादिनन्त बताया, इसका अन्त कहीं न पाया।
लोकालोक अनन्त कहाया, जिनवाणी में ऐसा गाया।।

जीव लोक में रहते भाई, इनकी संख्या कही न जाई।
जीवादि छह द्रव्यें जानो, सर्व लोक में इनको मानो।।
चतुर्गति में जीव भ्रमाते, कर्मोंदय से सुख-दुख पाते।
मिथ्यामति के कारण जानो, भ्रमण होय ऐसा पहचानो।।
उससे प्राणी मुक्ति पावें, जैन धर्म जो भी अपनावें।
प्राणी तीर्थंकर पद पाते, भव्य भावना जो भी भाते।।
सोलह कारण इसको जानो, प्रथम श्रेष्ठ आवश्यक मानो।
दर्श विशुद्धि जो कहलावे, सम्यक् दृष्टि प्राणी पावे।।
तो भी कोई काम न आवें, इसके बिना श्रेष्ठ सब पावे।
विनय भावना दूजी जानो, शील व्रतों का पालन मानो।।
ज्ञानोपयोग अभीक्ष्ण बताया, फिर संवेग भाव उपजाया।
शक्तितः शुभ त्याग बताया, तप धारण का भाव बनाया।।
साधु समाधि करें सद् ज्ञानी, वैयावृत्य भावना मानी।
अर्हद् भक्ति श्रेष्ठ बताई, है आचार्य भक्ति सुखदाई।।
आवश्यक अपरिहार्य जानिए, प्रवचन वत्सल श्रेष्ठ मानिए।
काल अनादि से कल्याणी, श्रेष्ठ भावना भाए प्राणी।।
हम भी यही भावना भाते, अपने मन में भाव बनाते।
विशद भावना हम ये भावें, फिर तीर्थंकर पदवीं पावें।।
अपने सारे कर्म नशाएँ, कर्म नाशकर शिवपुर जाएँ।
मुक्ति पद हम भी पा जावें, और नहीं अब जगत भ्रमावें।।

दोहा- सोलह कारण भावना, भाते योग सम्हाल।
भाव सहित हम वन्दना, करते विशद त्रिकाल।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धयादि-षोडशकारणेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- शाश्वत पद के हेतु हम, शाश्वत सोलह भाव।
भाने को उद्धत रहें, करके कोई उपाव।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

पंचमेरु पूजा

(गीता छन्द)

तीर्थंकरों के न्हवन जलतैं, भये तीरथ-शर्मदा।।
तातैं प्रदच्छन देत सुर-गन, पंच मेरुन की सदा।।
दो जलधि ढाई द्वीप में, सब गनत-मूल विराजहीं।
पूजौं असी जिनधाम-प्रतिमा, होहि सुख दुःख भाजहीं।।1।।

ॐ ह्रीं पंचमेरु सम्बन्धि जिनचैत्यालयस्थ-जिनप्रतिमा समूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वानन्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(चौपाई : आंचली बद्ध)

शीतल-मिष्ट सुवास मिलाय, जलसौं पूजौं श्रीजिनराय।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय।।
पाँचों मेरु असी जिनधाम, सब प्रतिमा को करों प्रणाम।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय।।1।।

ॐ ह्रीं सुदर्शन-विजय-अचल-मन्दिर-विद्युन्मालिपंचमेरु, सम्बन्धिजिन-चैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल केशर कर्पूर मिलाय, गन्धसों पूजौं श्री जिनराय।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय।। पाँचों.।।2।।

ॐ ह्रीं पंचमेरुसंबंधिजिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अमल अखंड सुगंध सुहाय, अच्छतसौं पूजौं श्री जिनराय।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय।। पाँचों.।।3।।

ॐ ह्रीं पंचमेरुसंबंधिजिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

बरन अनेक रहे महकाय, फूलसौं पूजौं श्री जिनराय।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय।। पाँचों.।।4।।

ॐ ह्रीं पंचमेरुसंबंधिजिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मनवांछित बहु तुरत बनाय, चरुसौं पूजौं श्री जिनराय।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ।। पाँचों.।।5।।

ॐ ह्रीं पंचमेरुसंबंधिजिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तमहर उज्ज्वल ज्योति जगाय, दीपसौं पूजौं श्री जिनराय।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ।। पाँचों.।।6।।

ॐ ह्रीं पंचमेरुसंबंधिजिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

खेऊँ अगर अमल अधिकाय, धूपसौं पूजौं श्री जिनराय।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ।। पाँचों.।।7।।

ॐ ह्रीं पंचमेरुसंबंधिजिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरस सुवर्ण सुगंध सुभाय, फलसों पूजौं श्री जिनराय।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय।। पाँचों.।।8।।

ॐ ह्रीं पंचमेरुसंबंधिजिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा।

आठदरबमय अरघ बनाय 'द्यानत', पूजौं श्री जिनराय।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ।। पाँचों.।।9।।

ॐ ह्रीं पंचमेरुसंबंधिजिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

सोरठा

प्रथम सुदर्शन-स्वामी, विजय अचलमन्दर कहा।
विद्युन्माली नाम, पंचमेरु जग में प्रकट।।

(बेसरी छन्द)

प्रथम सुदर्शन मेरु विराजै, भद्रशाल वन भूपर छाजै।
चैत्यालय चारों सुखकारी, मनवचनतन कर वन्दना हमारी।।
ऊपर पांच-शतक पर सोहै, नंदनवन देखत मन मोहै।
चैत्यालय चारों सुखकारी, मनवचनतन कर वन्दना हमारी।।
साढ़े बासठ सहस ऊँचाई, वन सुमनसशोभै अधिकाई।
चैत्यालय चारों सुखकारी, मनवचनतन कर वन्दना हमारी।।
ऊँचाजोजन सहस छत्तीसं, पांडुकवन सोहै गिरि-सीसं।
चैत्यालय चारों सुखकारी, मनवचनतन वन्दना हमारी।।
चारों मेरु समान बखानै, भूपर भद्रसाल चहुँ जानै।
चैत्यालय सोलह सुखकारी, मनवचनतन वन्दना हमारी।।
ऊँचे पांच शतक पर भाखे, चारों नंदनवन अभिलाखे।
चैत्यालय सोलह सुखकारी, मनवचनतन वन्दना हमारी ।।
साढ़े पचपन सहस उतंगा, वन सौमनस चार बहुरंगा।
चैत्यालय सोलह सुखकारी, मनवचनतन वन्दना हमारी।।
उच्च-अठाइस सहस बताये, पांडुक चारों वन शुभ गाये।
चैत्यालय सोलह सुखकारी, मनवचनतन वन्दना हमारी।।
सुर नर चारन वंदन आवैं, सोशोभा हम किहमुख गावैं।
चैत्यालय अस्सी सुखकारी, मनवचनतन वन्दना हमारी।।

ॐ ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धिजिनचैत्यालयस्थजिन बिंबेभ्यो महार्घं निर्वापामीति स्वाहा।

दोहा **पंचमेरु की आरती, पढ़ै सुनै जो कोय।**
'द्यानत' फल जानै प्रभू, तुरत महासुख होय।।11।।

ॐ ह्रीं पंचमेरु सम्बन्धि-जिन-चैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो अर्घ्यं निर्वापामीति स्वाहा।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

श्री नन्दीश्वर द्वीप पूजन

(स्थापना)

अष्टम द्वीप रहा नन्दीश्वर, अंजनगिरि है चारों ओर।
अंजन गिरि के चतुष्कोण पर, दधिमुख करते भाव विभोर।।
दधिमुख के द्वय बाह्य कोण पर, रतिकर पर्वत रहे महान्।
जिनके ऊपर जिन मंदिर में, शोभित होते हैं भगवान।।
बावन जिनगृह चतुर्दिशा में, शोभित होते महति महान्।
विशद हृदय में जिन बिम्बों का, भाव सहित करते आह्वान।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टमद्वीपनन्दीश्वर संबंधित द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्ब समूह ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितौ भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(श्रृंगार छन्द)

नीर यह प्रासुक लिया महान्, श्रेष्ठ निर्मल है क्षीर समान।
शीघ्र हो जन्म जरा का नाश, करें हम शिव नगरी में वास।।
द्वीप नन्दीश्वर रहा महान्, जिनालय में सोहें भगवान।
करें हम भाव सहित गुण गान, प्राप्त हो हमको पद निर्वाण।।1।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टमद्वीपनन्दीश्वर संबंधित द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो जन्म–जरा–मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ यह चन्दन लिया अनूप, प्राप्त करने शुद्धात्म स्वरूप।
चरण में आये लेकर आश, शीघ्र हो भव आताप विनाश।।
द्वीप नन्दीश्वर रहा महान्, जिनालय में सोहें भगवान।
करें हम भाव सहित गुण गान, प्राप्त हो हमको पद निर्वाण।।2।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टमद्वीपनन्दीश्वर संबंधित द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धवल यह अक्षत हैं मनहार, चढ़ाते हम ये मंगलकार।
मिले अक्षय पद मुझे प्रधान, भावना पूर्ण करो भगवान।।

द्वीप नन्दीश्वर रहा महान्, जिनालय में सोहें भगवान।
करें हम भाव सहित गुण गान, प्राप्त हो हमको पद निर्वाण।।3।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टमद्वीपनन्दीश्वर संबंधित द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प यह लाये विविध प्रकार, चढ़ाते चरणों बारम्बार।
शीघ्र हो कामबाण विध्वंश, रहे न जिसका कोई अंश।।
द्वीप नन्दीश्वर रहा महान्, जिनालय में सोहें भगवान।
करें हम भाव सहित गुण गान, प्राप्त हो हमको पद निर्वाण।।4।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टमद्वीपनन्दीश्वर संबंधित द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस व्यंजन भर लाए थाल, चढ़ाते हम होके नत भाल।
हमारी होवे क्षुधा विनाश, शरण में आये बनकर दास।।
द्वीप नन्दीश्वर रहा महान्, जिनालय में सोहें भगवान।
करें हम भाव सहित गुण गान, प्राप्त हो हमको पद निर्वाण।।5।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टमद्वीपनन्दीश्वर संबंधित द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जलाकर लाए घृत का दीप, चढ़ाते प्रभु के चरण समीप।
हमारे मोह तिमिर का नाश, करो प्रभु सम्यक् ज्ञान प्रकाश।।
द्वीप नन्दीश्वर रहा महान्, जिनालय में सोहें भगवान।
करें हम भाव सहित गुण गान, प्राप्त हो हमको पद निर्वाण।।6।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टमद्वीपनन्दीश्वर संबंधित द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

बनाई अष्ट गंध युक्त धूप, प्राप्त करने निज का स्वरूप।
हमारे हो कर्मों का नाश, मिले हमको शिवपुर का वास।।
द्वीप नन्दीश्वर रहा महान्, जिनालय में सोहें भगवान।
करें हम भाव सहित गुण गान, प्राप्त हो हमको पद निर्वाण।।7।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टमद्वीपनन्दीश्वर संबंधित द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अष्टकर्म विध्वंशनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस फल लाए यहाँ अनेक, चढ़ाते चरणों माथा टेक।
मोक्ष फल हमको करो प्रदान, प्रार्थना है मेरी भगवान।।
द्वीप नन्दीश्वर रहा महान्, जिनालय में सोहें भगवान।
करें हम भाव सहित गुण गान, प्राप्त हो हमको पद निर्वाण।।8।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टमद्वीपनन्दीश्वर संबंधित द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो महामोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

प्राप्त करने हम सुपद अनर्घ्य, चढ़ाते अष्ट द्रव्य का अर्घ्य।
झुकाते हम चरणों में माथ, भावना पूरी कर दो नाथ।।
द्वीप नन्दीश्वर रहा महान्, जिनालय में सोहें भगवान।
करें हम भाव सहित गुण गान, प्राप्त हो हमको पद निर्वाण।।9।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टमद्वीपनन्दीश्वर संबंधित द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– धारा देते हम यहाँ, विशद भाव के साथ।
मोक्ष महल का पथ मिले, चरण झुकाते माथ।। *शांतये शांतिधारा*
वन्दन करते भाव से, पुष्पाञ्जलि ले हाथ।
शिवपथ पाने के लिए, हे प्रभु ! देना साथ।। *पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्*

जयमाला

दोहा– नन्दीश्वर शुभ द्वीप है, मंगलमयी महान्।
गाते हैं जयमाल हम, पाने पद निर्वाण।।

(शम्भू छन्द)

अष्टम द्वीप श्री नन्दीश्वर, महिमाशाली रहा महान्।
योजन एक सौ त्रेसठ कोटी, लाख चौरासी आभावान।।
पर्व अढ़ाई में इन्द्रादी, पूजा करते मंगलकार।
हम परोक्ष ही रचना करके, अर्चा करते बारम्बार।।1।।
चतुर्दिशा में अंजनगिरियाँ, अंजन सम शोभित हैं चार।
अंजनगिरि की चतुर्दिशा में, दधिमुख पर्वत हैं शुभकार।।

दधिमुख के द्वय बाह्य कोण में, रतिकर दो हैं मंगलकार।
हम परोक्ष ही रचना करके, अर्चा करते बारम्बार।।2।।
योजन सहस्र चौरासी ऊँची, अंजनगिरियाँ चार समान।
दस हजार योजन के दधिमुख, रतिकर हैं इक योजनकार।।
कृष्ण श्वेत अरु लाल हैं क्रमशः, सभी ढोल सम गोलाकार।
हम परोक्ष ही रचना करके, अर्चा करते बारम्बार।।3।।
चतुर्दिशा में चार बावड़ी, एक लाख योजन चौकोर।
निर्मल जल से पूर्ण भरी हैं, फूल खिले हैं चारों ओर।।
एक लाख योजन के वन हैं, चतुर्दिशा में अपरम्पार।
हम परोक्ष ही रचना करके, अर्चा करते बारम्बार।।4।।
एक दिशा में तेरह पर्वत, बावन होते चारों ओर।
स्वर्ण रत्नमय आभा वाले, करते मन को भाव विभोर।।
कलशा ध्वजा कंगूरे घण्टा, से शोभित मंदिर मनहार।
हम परोक्ष ही रचना करके, अर्चा करते बारम्बार।।5।।
हैं प्रत्येक जिनालय में जिन, बिम्ब एक सौ आठ महान्।
नयन श्याम अरु श्वेत हैं नख मुख, लाल रंग के आभावान।।
श्याम रंग में भौंह केश हैं, वीतरागमय हैं अविकार।
हम परोक्ष ही रचना करके, अर्चा करते बारम्बार।।6।।
कोटी सूर्य चन्द्र भी जिनके, आगे पड़ते कांति विहीन।
दर्शन से सद् दर्शन पाकर, प्राणी होते ध्यानालीन।।
मानो बिन बोले ही सबको, शिक्षा देते भली प्रकार।
हम परोक्ष ही रचना करके, अर्चा करते बारम्बार।।7।।

दोहा– नन्दीश्वर शुभ द्वीप के, हैं जिनबिम्ब महान्।
विशद भाव से हम सभी, करते हैं गुणगान।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टमद्वीपनन्दीश्वर संबंधित द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– महिमाशाली श्रेष्ठ हैं, नन्दीश्वर जिन धाम।
जिनबिम्बों को भाव से, करते विशद प्रणाम।।

।। इत्याशीर्वाद पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

दशलक्षण पूजा

स्थापना

उत्तम क्षमा मार्दव आर्जव, शौच सत्य संयम धारी।
तपस्त्याग आकिंचन धारे, ब्रह्मचर्य धर अनगारी।।
दश धर्मों को धारण करते, कर्म निर्जरा करें मुनीश।
विशद भाव से वन्दन करके, झुका रहे हैं अपना शीश।।
सुख शांति सौभाग्य प्रदायक, धर्म लोक में रहा महान्।
उत्तम क्षमा आदि धर्मों का, करते हैं हम भी आह्वान।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि दशलक्षण धर्म ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(शम्भू छन्द)

ध्यानमयी उत्तम जल लेकर, धारा तीन कराए हैं।
जन्मादिक का रोग नशाकर, निजगुण पाने आए हैं।।
निज स्वभाव को हम पा जाएँ, यही भावना भाते हैं।
उत्तम धर्म प्रगट करने को, सादर शीश झुकाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं उत्तम क्षमा, मार्दव, आर्जव, सत्य, शौच, संयम, तप, त्याग, आकिंचन्य, ब्रह्मचर्याणि दशलक्षणधर्माय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानादर्श का शीतल चन्दन, यहाँ चढ़ाने लाए हैं।
भव संताप विनाश हेतु हम, आज यहाँ पर आए हैं।।
निज स्वभाव को हम पा जाएँ, यही भावना भाते हैं।
उत्तम धर्म प्रगट करने को, सादर शीश झुकाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

शुद्ध भाव के अक्षय अक्षत, जल से धोकर लाए हैं।
अक्षय पद पाने को अनुपम, भाव बनाकर आए हैं।।
निज स्वभाव को हम पा जाएँ, यही भावना भाते हैं।
उत्तम धर्म प्रगट करने को, सादर शीश झुकाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

चिदानन्द मय पुष्प मनोहर, चुन-चुनकर के लाए हैं।
काल अनादि काम वासना, यहाँ नशाने आए हैं।।
निज स्वभाव को हम पा जाएँ, यही भावना भाते हैं।
उत्तम धर्म प्रगट करने को, सादर शीश झुकाते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण के, शुभ नैवेद्य बनाए हैं।
क्षुधा शांत करने को अपनी, यहाँ चढ़ाने लाए हैं।।
निज स्वभाव को हम पा जाएँ, यही भावना भाते हैं।
उत्तम धर्म प्रगट करने को, सादर शीश झुकाते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज स्वभाव का दीप बनाकर, ज्ञान की ज्योति जलाए हैं।
मोह अंध के नाश हेतु हम, यहाँ चढ़ाने लाए हैं।।
निज स्वभाव को हम पा जाएँ, यही भावना भाते हैं।
उत्तम धर्म प्रगट करने को, सादर शीश झुकाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट कर्म की धूप बनाकर, यहाँ चढ़ाने लाए हैं।
सम्यक् तप की अग्नि जलाकर, स्वाहा करने आए हैं।।
निज स्वभाव को हम पा जाएँ, यही भावना भाते हैं।
उत्तम धर्म प्रगट करने को, सादर शीश झुकाते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

निज के गुण ही फल हैं अनुपम, वह प्रगटाने आए हैं।
मोक्ष महाफल पाने हेतु, ताजे फल यह लाए हैं।।
निज स्वभाव को हम पा जाएँ, यही भावना भाते हैं।
उत्तम धर्म प्रगट करने को, सादर शीश झुकाते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

शाश्वत पद के बिना जगत में, बार-बार भटकाए हैं।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें हम, अर्घ्य चढ़ाने आए हैं।।
निज स्वभाव को हम पा जाएँ, यही भावना भाते हैं।
उत्तम धर्म प्रगट करने को, सादर शीश झुकाते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येकार्घ्य *(चाल छन्द)*

जो रंच क्रोध न लावें, मन में समता उपजावें।
हे ! उत्तम क्षमा के धारी, जन जन के करुणाकारी।।
श्री तीर्थंकर जिन देवा, हम करें चरण की सेवा।
हे ! विघ्न विनाशनकारी, हम पूजा करें तुम्हारी।।1।।

ॐ ह्रीं उत्तम क्षमा धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनके उर मान न आवे, मन समता में रम जावे।
हे ! मार्दव धर्म के धारी, जन-जन के करुणाकारी।।
श्री तीर्थंकर जिन देवा... ।।2।।

ॐ ह्रीं उत्तम मार्दव धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो कुटिल भाव को त्यागें, औ सरल भाव उपजावें।
वे उत्तम आर्जव धारी, जन-जन के करुणाकारी।।
श्री तीर्थंकर जिन देवा... ।।3।।

ॐ ह्रीं उत्तम आर्जव धर्म धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो मन से मूर्छा त्यागें, औ आतम ध्यान में लागें।
वे उत्तम शौच के धारी, जन-जन के करुणाकारी।।
श्री तीर्थंकर जिन देवा... ।।4।।

ॐ ह्रीं उत्तम शौच धर्म धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो मन में हो सो भाषें, तन को उसमें ही राखें।
वे उत्तम सत्य के धारी, जन-जन के करुणाकारी।।
श्री तीर्थंकर जिन देवा... ।।5।।

ॐ ह्रीं उत्तम सत्य धर्म धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो इन्द्रिय मन संतोषें, षट्काय जीव को पोषें।
वे उत्तम संयम धारी, जन-जन के करुणाकारी।।
श्री तीर्थंकर जिन देवा... ।।6।।

ॐ ह्रीं उत्तम संयम धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो द्वादश विध तप धारें, वसु कर्मों को निरवारें।
वे उत्तम तप के धारी, जन-जन के करुणाकारी।।
श्री तीर्थंकर जिन देवा... ।।7।।

ॐ ह्रीं उत्तम तप धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पर द्रव्य नहीं अपनावें, चेतन में ही रमजावें।
वे त्याग धर्म के धारी, जन-जन के करुणाकारी।।
श्री तीर्थंकर जिन देवा... ।।8।।

ॐ ह्रीं उत्तम त्याग धर्म धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो किंचित् राग न लावें, वो वीतरागता पावें।
वे आकिंचन व्रत धारी, जन-जन के करुणाकारी।।
श्री तीर्थंकर जिन देवा... ।।9।।

ॐ ह्रीं उत्तम आकिञ्चन धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो निज पर तिय के त्यागी, शुभ परम ब्रह्म अनुरागी।
वे ब्रह्मचर्य व्रत धारी, जन-जन के करुणाकारी।।
श्री तीर्थंकर जिन देवा... ।।10।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्म बन्धन विमुक्त, उत्तम ब्रह्मचर्य धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा – विशद धर्म के भाव से, कटे कर्म का जाल।
क्षमा आदि दश धर्म की, गाते हैं जयमाल।।

(वेसरी छन्द)

धर्म कहा दशलक्षण भाई, भवि जीवों को है सुखदाई।
मोक्ष मार्ग में नौका जानो, मुक्ति का शुभ कारण मानो।।
धारण करें धर्म जो कोई, कर्म नाश उसके भी होई।
मोक्ष मार्ग का साधन जानो, जग जन का हितकारी मानो।।
धर्म कहा है रक्षक भाई, धारण करो हृदय हर्षाई।
कहा मान का नाशकारी, पग-पग पर होता हितकारी।।
मायाचारी को भी नाशे, आर्जव धर्म हृदय परकाशे।
लोभ हृदय में न रह पावे, शौच धर्म उर में प्रगटावे।।
मुख से सत्य वचन उच्चारे, सत्य धर्म जो उर में धारे।
मन को वश में करते भाई, इन्द्रिय दमन करें हर्षाई।।
बनते हैं संयम के धारी, हो जाते हैं जो अविकारी।
मूलधर्म का सुतप बताया, मोक्ष मार्ग का कारण गाया।।
करे निर्जरा तप से प्राणी, तीर्थंकर की है ये वाणी।
त्याग धर्म सब पाप नशावे, जो निज के गुण भी प्रगटावे।।
धर्माकिंचन सम न कोई, परम ब्रह्म प्रगटावे सोई।
ब्रह्मचर्य की महिमा न्यारी, सारे जग में विस्मयकारी।।
ब्रह्मचर्य व्रत पाने वाले, प्राणी जग में रहे निराले।
सारे जग में रहा निराला, शिव पद में पहुँचाने वाला।।

दोहा- **विधि सहित जो व्रत करें, पूजन करें विधान।**
सुख-शांति सौभाग्य पा, पावे पद निर्वाण।।

ॐ ह्रीं उत्तम क्षमा, मार्दव, आर्जव, सत्य, शौच, संयम, तप, त्याग, आकिंचन्य, ब्रह्मचर्याणि दशलक्षणधर्माय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **दशलक्षण जिन धर्म का, रहे हृदय में वास।**
सम्यक् दर्शन ज्ञान का, नित प्रति होय विकास।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

रत्नत्रय पूजा

(स्थापना)

चतुर्गति का कष्ट निवारक, दुःख अग्नि को शुभ जलधार।
शिवसुख का अनुपम है मारग, रत्नत्रय गुण का भण्डार।।
तीन लोक में शांति प्रदायक, भवि जीवों को एक शरण।
सम्यक् दर्शन ज्ञान चरण शुभ, रत्नत्रय का है आह्वान।।

ॐ ह्रीं सम्यक् दर्शन-ज्ञान-चारित्र ! अत्र आगच्छ-आगच्छ संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं सम्यक् दर्शन-ज्ञान-चारित्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं सम्यक् दर्शन-ज्ञान-चारित्र ! अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चाल-नन्दीश्वर)

ले हेम कलश मनहार, प्रासुक नीर भरा।
देते हम जल की धार, नशे मम् जन्म-जरा।।
रत्नत्रय रहा महान्, विशद अतिशयकारी।
करके कर्मों की हान, श्रेष्ठ मंगलकारी।।1।।

ॐ ह्रीं सम्यक्-दर्शन-ज्ञान-चारित्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन की गंध अपार, शीतल है प्यारा।
है भवतम हर मनहार, अनुपम है न्यारा।। रत्नत्रय रहा... ।।2।।

ॐ ह्रीं सम्यक्-दर्शन-ज्ञान-चारित्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत यह धवल अनूप, हम धोकर लाए।
अक्षत पाएँ स्वरूप, अर्चा को आए ।। रत्नत्रय रहा... ।।3।।

ॐ ह्रीं सम्यक्-दर्शन-ज्ञान-चारित्राय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

ले भाँति-भाँति के फूल, उत्तम गंध भरे।
हो कामबाण निर्मूल, निर्मल चित्त करे।। रत्नत्रय रहा... ।।4।।

ॐ ह्रीं सम्यक्-दर्शन-ज्ञान-चारित्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य बना रसदार, मीठे मनहारी।
जो क्षुधा रोग परिहार, के हों उपकारी।। रत्नत्रय रहा... ।।5।।
ॐ ह्रीं सम्यक्-दर्शन-ज्ञान-चारित्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक की ज्योति प्रकाश, तम को दूर करे।
हो मोह महातम नाश, मिथ्या मति हरे।। रत्नत्रय रहा... ।।6।।
ॐ ह्रीं सम्यक्-दर्शन-ज्ञान-चारित्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजी ले धूप सुवास, दश दिश महकाए।
हों आठों कर्म विनाश, भावना यह भाए।। रत्नत्रय रहा... ।।7।।
ॐ ह्रीं सम्यक्-दर्शन-ज्ञान-चारित्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजे फल ले रसदार, अनुपम थाल भरे।
हो मुक्ति फल दातार, भव से मुक्त करे।। रत्नत्रय रहा... ।।8।।
ॐ ह्रीं सम्यक्-दर्शन-ज्ञान-चारित्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों द्रव्यों का अर्घ्य, बनाकर यह लाए।
पाने हम सुपद अनर्घ, अर्घ्य लेकर आए।। रत्नत्रय रहा... ।।9।।
ॐ ह्रीं सम्यक्-दर्शन-ज्ञान-चारित्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- **थाल भरा वसु द्रव्य का, दीपक लिया प्रजाल।**
रत्नत्रय शुभ धर्म की, गाते हम जयमाल।।

(शम्भू छन्द)

मोक्ष मार्ग का अनुपम साधन, रत्नत्रय शुभ धर्म कहा।
जिसने पाया धर्म विशद यह, उसने पाया मोक्ष अहा।।
प्रथम रत्न सम्यक् दर्शन, करना तत्त्वों में श्रद्धान।
निरतिचार श्रद्धा का धारी, सारे जग में रहा महान्।।

श्रद्धाहीन ज्ञान चारित का, रहता नहीं है कोई अर्थ।
कठिन-कठिन तप करना भाई, हो जाता है सभी व्यर्थ।।
गुण का ग्रहण और दोषों का, समीचीन करना परिहार।
सम्यक् ज्ञान के द्वारा होता, जग में जीवों का उपकार।।
ज्ञान को सम्यक् करने वाला, होता है सम्यक् श्रद्धान।
पुद्गल अर्ध परावर्तन में, जीव करे निश्चय कल्याण।।
वस्तु तत्त्व का निर्णय करने, से हो मोह तिमिर का ह्रास।
निरतिचार व्रत के पालन से, हो जाता है स्थिर ध्यान।।
निजानन्द को पाने वाले, करते निजानन्द रसपान।
कर्मों का संवर हो जिससे, आस्रव का हो पूर्ण विनाश।।
गुण श्रेणी हो कर्म निर्जरा, होवे केवलज्ञान प्रकाश।
रत्नत्रय का फल यह अनुपम, अनन्त चतुष्टय होवे प्राप्त।।
अष्ट गुणों को पाने वाले, सिद्ध सनातन बनते आप्त।
अन्तर्मन की यही भावना, रत्नत्रय का होय विकास।।
कर्म निर्जरा करें विशद हम, पाएँ सिद्ध शिला पर वास।

दोहा

तीनों लोकों में कहा, रत्नत्रय अनमोल।
रत्नत्रय शुभ धर्म की, बोल सके जय बोल।।

ॐ ह्रीं सम्यक्-दर्शन-ज्ञान-चारित्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

जिसने भी इस लोक में, पाया यह उपहार।
अनुक्रम से उनको मिला, विशद मोक्ष का द्वार।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

सम्यक् दर्शन पूजा

(स्थापना)

शंकादि वसु दोष हैं, अरु रही मूढ़ता तीन।
छह अनायतन आठ मद, पच्चिस दोष विहीन।।
देव-शास्त्र-गुरु के प्रति, धारे सद् श्रद्धान्।
ज्ञान और चारित्र में, सम्यक् दर्श प्रधान।।
सम्यक् दर्शन श्रेष्ठ है, मंगलमयी महान्।
विशद हृदय में हम करें, जिसका शुभ आह्वान।।

ॐ ह्रीं सम्यक्दर्शन ! अत्र आगच्छ-आगच्छ संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं सम्यक्दर्शन ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं सम्यक्दर्शन ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चाल-छन्द)

हम भव-भव रहे दुखारी, मिथ्यामति हुई हमारी।
यह नीर चढ़ाने लाए, भव रोग नशाने आए।।
अब सम्यक् श्रद्धा जागे, न विषयों में मन लागे।
हम सद् श्रद्धान जगाएँ, इस भव से मुक्ति पाएँ।।1।।

ॐ ह्रीं सम्यक्दर्शनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हमने भव रोग बढ़ाया, न सम्यक् दर्शन पाया।
हम चन्दन श्रेष्ठ चढ़ाएँ, भव का सन्ताप नशाएँ।।
अब सम्यक् श्रद्धा जागे, न विषयों में मन लागे।
हम सद् श्रद्धान जगाएँ, इस भव से मुक्ति पाएँ।।2।।

ॐ ह्रीं सम्यक्दर्शनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

हम जग में रहे अकुलाए, न अक्षय पद को पाए।
अब अक्षय पद प्रगटाएँ, अक्षत यह धवल चढ़ाएँ।।
अब सम्यक् श्रद्धा जागे, न विषयों में मन लागे।
हम सद् श्रद्धान जगाएँ, इस भव से मुक्ति पाएँ।।3।।

ॐ ह्रीं सम्यक्दर्शनाय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

भोगों की आश लगाए, तीनों लोकों भटकाए।
अब कामबाण नश जाए, हम फूल चढ़ाने लाए।।
अब सम्यक् श्रद्धा जागे, न विषयों में मन लागे।
हम सद् श्रद्धान जगाएँ, इस भव से मुक्ति पाएँ।।4।।

ॐ ह्रीं सम्यक्दर्शनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हमने व्यंजन कई खाए, सन्तुष्ट नहीं हो पाए।
अब क्षुधा रोग नश जाए, नैवेद्य चढ़ाने लाए।।
अब सम्यक् श्रद्धा जागे, न विषयों में मन लागे।
हम सद् श्रद्धान जगाएँ, इस भव से मुक्ति पाएँ।।5।।

ॐ ह्रीं सम्यक्दर्शनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है मोह की महिमा न्यारी, मोहित करता है भारी।
हम दीप जलाकर लाए, यह मोह नशाने आए।।
अब सम्यक् श्रद्धा जागे, न विषयों में मन लागे।
हम सद् श्रद्धान जगाएँ, इस भव से मुक्ति पाएँ।।6।।

ॐ ह्रीं सम्यक्दर्शनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

आतम होता अविकारी, कर्मों से बना विकारी।
हम कर्म नशाने आए, अग्नि में धूप जलाए।।
अब सम्यक् श्रद्धा जागे, न विषयों में मन लागे।
हम सद् श्रद्धान जगाएँ, इस भव से मुक्ति पाएँ।।7।।

ॐ ह्रीं सम्यक्दर्शनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सदियों से भटकते आए, न मोक्ष महाफल पाए।
हम मोक्ष महाफल पाएँ, फल चरणों श्रेष्ठ चढ़ाएँ।।
अब सम्यक् श्रद्धा जागे, न विषयों में मन लागे।
हम सद् श्रद्धान जगाएँ, इस भव से मुक्ति पाएँ।।8।।

ॐ ह्रीं सम्यक्दर्शनाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम चतुर्गति भटकाए, न पद अनर्घ शुभ पाए।
यह अर्घ्य चढ़ाने लाए, पाने अनर्घ पद आए।।

अब सम्यक् श्रद्धा जागे, न विषयों में मन लागे।
हम सद् श्रद्धान जगाएँ, इस भव से मुक्ति पाएँ।।9।।

ॐ ह्रीं सम्यक्दर्शनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येकार्घ्य

दोहा– अष्ट अंग युत श्रेष्ठ है, सम्यक् दर्श महान्।
पुष्पाञ्जलि कर पूजते, पाने पद निर्वाण।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

जयमाला

दोहा– श्रेष्ठ कहा त्रय लोक में, सम्यक् दर्श त्रिकाल।
विशद भाव से गा रहे, जिसकी हम जयमाल।।

सम्यक्दर्शन रत्न श्रेष्ठ है, मिथ्या मति का करे विनाश।
भेद ज्ञान जागृत करता है, जीव तत्त्व का करे प्रकाश।।1।।
जिन बच में शंका न धारे, लोकाकांक्षा से हो हीन।
देव–शास्त्र–गुरु के प्रति किंचित्, ग्लानि से जो रहे विहीन।।2।।
देव धर्म गुरु के स्वरूप का, निर्णय करते भली प्रकार।
दोष ढाकते गुण प्रगटित कर, हुआ धर्म गुरु के आधार।।3।।
श्रद्धा चारित से डिगते जो, स्थित करते निज स्थान।
संघ चतुर्विध के प्रति मन से, वात्सल्य जो करें महान्।।4।।
धर्म प्रभावना करते नित प्रति, तपकर आगम के अनुसार।
लोक देव पाखंड मूढ़ता, पूर्ण रूप करते परिहार।।5।।
छह अनायतन सहित दोष इन, पच्चिसों से रहे विहीन।
द्रव्य तत्त्व के श्रद्धाधारी, सप्त भयों से रहते हीन।।6।।

दोहा– दर्शन के शुभ आठ गुण, संवेगादि महान।
मैत्री आदि भावना, श्रद्धा के स्थान।।

ॐ ह्रीं सम्यक्दर्शनाय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– सम्यक् दर्शन लोक में, मंगलमयी महान।
इसके द्वारा भव्य जन, पाते पद निर्वाण।।

पुष्पांजलिं क्षिपेत्

सम्यक् ज्ञान पूजा

(स्थापना)

अन्तर भावों में जगे, जिनके सद् श्रद्धान।
पा लेते हैं जीव वह, अतिशय सम्यक् ज्ञान।।
संशय विभ्रम नाश हो, हो विमोह की हान।
पावन सम्यक् ज्ञान का, करते हम आह्वान।।

ॐ ह्रीं सम्यक्ज्ञान ! अत्र आगच्छ–आगच्छ संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं सम्यक्ज्ञान ! अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः–ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं सम्यक्ज्ञान ! अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(तर्ज – सोलह कारण पूजा)

नीर लिया यह क्षीर समान, करने निज गुण की पहिचान।
परम शुभकार, सारे जग में मंगलकार।।
अष्ट अंगयुत सम्यक् ज्ञान, प्रगटाएँ हम भी भगवान।
परम शुभकार, सारे जग में मंगलकार।।1।।

ॐ ह्रीं सम्यक्ज्ञानाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन श्रेष्ठ सुगन्धिवान, करता है जो शांति प्रदान।
परम शुभकार, सारे जग में मंगलकार।।
अष्ट अंगयुत सम्यक् ज्ञान, प्रगटाएँ हम भी भगवान।
परम शुभकार, सारे जग में मंगलकार।।2।।

ॐ ह्रीं सम्यक्ज्ञानाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय अक्षत लिए महान, अक्षय पद के हेतु प्रधान।
परम शुभकार, सारे जग में मंगलकार।।
अष्ट अंगयुत सम्यक् ज्ञान, प्रगटाएँ हम भी भगवान।
परम शुभकार, सारे जग में मंगलकार।।3।।

ॐ ह्रीं सम्यक्ज्ञानाय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प सुगन्धित आभावान, करने कामबाण की हान।
परम शुभकार, सारे जग में मंगलकार।।

अष्ट अंगयुत सम्यक् ज्ञान, प्रगटाएँ हम भी भगवान।
परम शुभकार, सारे जग में मंगलकार ।।4 ।।

ॐ ह्रीं सम्यक्ज्ञानाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मिष्ठ सरस लाए पकवान, क्षुधा रोग नाशी हम आन।
परम शुभकार, सारे जग में मंगलकार ।।
अष्ट अंगयुत सम्यक् ज्ञान, प्रगटाएँ हम भी भगवान।
परम शुभकार, सारे जग में मंगलकार ।।5 ।।

ॐ ह्रीं सम्यक्ज्ञानाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह अंध का होय विनाश, करते अनुपम दीप प्रकाश।
परम शुभकार, सारे जग में मंगलकार ।।
अष्ट अंगयुत सम्यक् ज्ञान, प्रगटाएँ हम भी भगवान।
परम शुभकार, सारे जग में मंगलकार ।।6 ।।

ॐ ह्रीं सम्यक्ज्ञानाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

खेते धूप अग्नि में आन, कर्म नसे करके निज ध्यान।
परम शुभकार, सारे जग में मंगलकार ।।
अष्ट अंगयुत सम्यक् ज्ञान, प्रगटाएँ हम भी भगवान।
परम शुभकार, सारे जग में मंगलकार ।।7 ।।

ॐ ह्रीं सम्यक्ज्ञानाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल आदि लिए महान, मोक्ष महाफल मिले प्रधान।
परम शुभकार, सारे जग में मंगलकार ।।
अष्ट अंगयुत सम्यक् ज्ञान, प्रगटाएँ हम भी भगवान।
परम शुभकार, सारे जग में मंगलकार ।।8 ।।

ॐ ह्रीं सम्यक्ज्ञानाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य बनाया यह मनहार, पद अनर्घ पाने भव पार।
परम शुभकार, सारे जग में मंगलकार ।।
अष्ट अंगयुत सम्यक् ज्ञान, प्रगटाएँ हम भी भगवान।
परम शुभकार, सारे जग में मंगलकार ।।9 ।।

ॐ ह्रीं सम्यक्ज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रत्येकार्घ्य

दोहा– पञ्चभेद हैं ज्ञान के, सम्यक् ज्ञान प्रमाण।
पुष्पांजलिं के साथ हम, करते हैं गुणगान।।

मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्

जयमाला

दोहा– सर्व सुखों का मूल है, जग में सम्यक् ज्ञान।
जयमाला गाते परम, पाने पद निर्वाण।।

(चौपाई)

सम्यक् ज्ञान रत्न मनहारी, भवि जीवों का है उपकारी।
आगम तृतिय नेत्र कहाए, अष्ट अंग जिसके बतलाए ।।1 ।।
शब्दाचार प्रथम कहलाया, शुद्ध पठन जिसमें बतलाया।
अर्थाचार अर्थ बतलाए, शब्द अर्थमय उभय कहाए ।।2 ।।
कालाचार सुकाल बताया, विनयाचार विनय युत पाया।
नाम गुरु का नहीं छिपाना, यह अनिह्नवाचार बखाना ।।3 ।।
नियम सहित उपधान कहाए, आगम का बहुमान बढ़ाए।
द्वादशांग जिनवाणी जानो, जन–जन की कल्याणी मानो ।।4 ।।
ॐकारमय जिनवर गाए, झेले गणधर चित्त लगाए।
आचार्यों ने उनसे पाया, भव्यों को उपदेश सुनाया ।।5 ।।
लेखन किया ग्रन्थमय भाई, वह माँ जिनवाणी कहलाई।
वृहस्पति महिमा को गाए, फिर भी पूर्ण नहीं कह पाए ।।6 ।।
बालक कितना जोर लगाए, सागर पार नहीं कर पाए।
सागर से भी बढ़कर भाई, विशद ज्ञान की महिमा गाई ।।7 ।।

दोहा– पञ्च भेद सद्ज्ञान के, मतिश्रुत अवधि महान।
मनःपर्यय कैवल्य शुभ, बतलाए भगवान।।

ॐ ह्रीं सम्यक्–ज्ञानाय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– सम्यक् ज्ञान महान है, शिव सुख का आधार।
उभय लोक सुखकर विशद, मोक्ष महल का द्वार।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

सम्यक् चारित्र पूजा

(स्थापना)

पञ्च महाव्रत समिति गुप्तियाँ, तेरह विध चारित्र गाया।
सम्यक् श्रद्धा सहित भाव से, नहीं आज तक अपनाया।।
संवर और निर्जरा का शुभ, ये ही है अनुपम साधन।
सम्यक्चारित्र का करते हम, विशद हृदय में आह्वानन।।

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्र ! अत्र आगच्छ-आगच्छ संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्र ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(तर्ज – नंदीश्वर)

जिन वचनामृत सम शीतल जल, यहाँ चढ़ाने लाए हैं।
जन्म-जरा-मृत्यु का हम भी, रोग नशाने आये हैं।।
सम्यक् चारित्र पाकर हमको, भव का रोग नशाना है।
काल अनादि भ्रमण मैटकर, मुक्ति वधू को पाना है।।1।।

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ सुगन्धित शीतल चंदन, हम घिसकर के लाए हैं।
भव संताप मिटाकर अपना, शिव पद पाने आए हैं।।
सम्यक् चारित्र पाकर हमको, भव का रोग नशाना है।
काल अनादि भ्रमण मैटकर, मुक्ति वधू को पाना है।।2।।

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

उज्ज्वल धवल अखण्डित अक्षय, पद पाने हम आए हैं।
मिथ्यामल हो नाश हमारा, पुञ्ज चढ़ाने लाए हैं।।

सम्यक् चारित्र पाकर हमको, भव का रोग नशाना है।
काल अनादि भ्रमण मैटकर, मुक्ति वधू को पाना है।।3।।

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्राय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प सुगन्धित निज खुशबू से, चतुर्दिशा महकाए हैं।
विषय वासना नाश हेतु हम, अर्पित करने लाए हैं।।
सम्यक् चारित्र पाकर हमको, भव का रोग नशाना है।
काल अनादि भ्रमण मैटकर, मुक्ति वधू को पाना है।।4।।

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नाश किए जिन क्षुधा रोग का, अर्हत् पदवी पाए हैं।
यह नैवेद्य चढ़ाकर हम भी, वह पद पाने आए हैं।।
सम्यक् चारित्र पाकर हमको, भव का रोग नशाना है।
काल अनादि भ्रमण मैटकर, मुक्ति वधू को पाना है।।5।।

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह अंध का नाश किए जिन, केवल ज्ञान जगाए हैं।
अन्तरज्ञान की ज्योति जलाने, दीप जलाकर लाए हैं।।
सम्यक् चारित्र पाकर हमको, भव का रोग नशाना है।
काल अनादि भ्रमण मैटकर, मुक्ति वधू को पाना है।।6।।

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट कर्म का नाश किए प्रभु, सिद्ध सुपद को पाए हैं।
आठों कर्मनाश हों मेरे, धूप जलाने आए हैं।।
सम्यक् चारित्र पाकर हमको, भव का रोग नशाना है।
काल अनादि भ्रमण मैटकर, मुक्ति वधू को पाना है।।7।।

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

मोक्ष महाफल अनुपम अक्षय, हम पाने को आए हैं।
श्रेष्ठ सरस फल लिए थाल में, यहाँ चढ़ाने लाए हैं।।
सम्यक् चारित्र पाकर हमको, भव का रोग नशाना है।
काल अनादि भ्रमण मैटकर, मुक्ति वधू को पाना है।।8।।

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टम वसुधा पाने को हम, अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।
लख चौरासी भ्रमण नाशकर, शिव सुख पाने आए हैं।।
सम्यक् चारित्र पाकर हमको, भव का रोग नशाना है।
काल अनादि भ्रमण मैटकर, मुक्ति वधू को पाना है।।9।।

ॐ ह्रीं सम्यक्-चारित्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रत्येकार्घ्य

दोहा- सम्यक् चारित्र के यहाँ, चढ़ा रहे हैं अर्घ्य।
पुष्पाञ्जलि करते विशद, पाने सुपद अनर्घ्य।।

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जयमाला

दोहा- तेरह विध चारित्र है, अतिशय पूज्य त्रिकाल।
सम्यक् चारित्र की यहाँ, गाते हम जयमाल।।

(चाल-छन्द)

शुभ सम्यक्चारित्र जानो, तुम रत्न अनोखा मानो।
जो पाँचों पाप नशाए, फिर पंच महाव्रत पाए।।1।।

हो पञ्च समीति धारी, त्रय गुप्ति का अधिकारी।
जो त्रय हिंसा के त्यागी, हैं देशव्रती बड़ भागी।।2।।

मुनि सब हिंसा के त्यागी, विषयों में रहे विरागी।
निज आतम ध्यान लगाते, तब निजानन्द सुख पाते।।3।।

सामायिक संयम धारी, मुनिवर होते अविकारी।
छेदोपस्थापना जानो, व्रत शुद्धि जिससे मानो।।4।।

परिहार विशुद्धि भाई, जिसकी अतिशय प्रभुताई।
जब समवशरण में जावें, अठ वर्ष ज्ञान उपजावें।।5।।

मुनिवर फिर संयम पावें, न प्राणी कष्ट उठावें।
वादर कषाय जब खोवे, तब सूक्ष्म साम्पराय होवे।।6।।

उपशम क्षय जब हो जावे, तब यथाख्यात प्रगटावे।
संयम यह पाँचों पाए, वह केवलज्ञान जगाए।।7।।

हो सर्व कर्म के नाशी, बन जाते शिवपुर वासी।
वे सुख अनन्त को पाते, न लौट यहाँ फिर आते।।8।।

दोहा

सम्यक् चारित प्राप्त कर, करें कर्म का अन्त।
ज्ञान शरीरी सिद्ध जिन, हुए अनन्तानन्त।।

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

भाते हैं यह भावना, पूर्ण करो भगवान।
सम्यक्चारित्र प्राप्त हो, सुपद मिले निर्वाण।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

क्षमावाणी पूजन

स्थापना

जैन धर्म का मूल बताया, क्षमा धर्म अतिशय शुभकार।
सम्यक् दर्शन ज्ञान चरण शुभ, रत्न कहे हैं मंगलकार।।
मिथ्या मल को तजकर पाना, रत्नत्रय शुभ महति महान्।
ऐसे पावन जैन धर्म का, हृदय में करते हम आह्वान।।

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यक्चारित्र स्वरूप रत्नत्रय जिनधर्माय नमः अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(कुसुमलता छंद)

गंगा जल सम उज्ज्वल जल ले, भक्ति का लेकर आधार।
जन्म जरादि दुःख नाश हो, चरणाम्बुज में देते धार।।
उत्तम क्षमा धर्म को पाने, अर्चा करते अपरम्पार।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, भक्ति भाव से बारम्बार।।1।।

ॐ ह्रीं 1. निशंकितांगाय नमः, 2. निकांक्षितांगाय नमः, 3. निर्विचिकित्सांगाय नमः, 4. निर्मूढ़तागाय नमः, 5. उपगूहनांगाय नमः, 6. स्थितिकरणांगाय नमः, 7. वात्सल्यांगाय नमः, 8. प्रभावनांगाय नमः, 9. व्यंजन व्यंजिताय, 10. अर्थ समग्राय, 11. तदुभय समग्राय, 12. कालाध्ययनाय, 13. उपध्यानोपन्हिताय, 14. विनयलब्धिसहिताय, 15. गुरुवादापन्हवाय, 16. बहु मानोन्मानाय, 17. अहिंसाव्रताय, 18. सत्यव्रताय, 19. अचौर्यव्रताय, 20. ब्रह्मचर्यव्रताय, 21. अपरिग्रहव्रताय, 22. मनोगुप्त्ये, 23. वचन गुप्तये, 24. कायगुप्तये, 25. ईर्यासमितये, 26. भाषा समितये, 27. एषणा समितये, 28. आदान निक्षेपण समितये, 29. प्रतिष्ठापना समितये नमः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित चन्दन में कुंकुम अरु, लिया श्रेष्ठ कर्पूर घिसाय।
भव संताप विनाशन हेतु, दिया चरण में यहाँ चढ़ाय।।

उत्तम क्षमा धर्म को पाने, अर्चा करते अपरम्पार।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, भक्ति भाव से बारम्बार।।2।।

ॐ ह्रीं अष्टांग सम्यग्दर्शन, अष्टांग सम्यग्ज्ञान, त्रयोदशविध सम्यक्चारित्रेभ्यो नमः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ मनोहर शशि सम उज्ज्वल, अक्षत लाए यह शुभकार।
अक्षय निधि परमेश्वर के पद, चढ़ा रहे यह मंगलकार।।
उत्तम क्षमा धर्म को पाने, अर्चा करते अपरम्पार।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, भक्ति भाव से बारम्बार।।3।।

ॐ ह्रीं अष्टांग सम्यग्दर्शन, अष्टांग सम्यग्ज्ञान, त्रयोदशविध सम्यक्चारित्रेभ्यो नमः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सुरतरु के यह पुष्प मनोहर, भर कर लाए अनुपम आज।
काम दाह दाहक हे जिनवर, पूजा करता सकल समाज।।
उत्तम क्षमा धर्म को पाने, अर्चा करते अपरम्पार।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, भक्ति भाव से बारम्बार।।4।।

ॐ ह्रीं अष्टांग सम्यग्दर्शन, अष्टांग सम्यग्ज्ञान, त्रयोदशविध सम्यक्चारित्रेभ्यो नमः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पावन मन भावन शुभ व्यञ्जन, ताजे शुद्ध बनाए नाथ।
क्षुधा रोग अपहरण हेतु यह, चढ़ा रहे हम अपने हाथ।।
उत्तम क्षमा धर्म को पाने, अर्चा करते अपरम्पार।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, भक्ति भाव से बारम्बार।।5।।

ॐ ह्रीं अष्टांग सम्यग्दर्शन, अष्टांग सम्यग्ज्ञान, त्रयोदशविध सम्यक्चारित्रेभ्यो नमः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्योतिवंत अनुपम रत्नों के, दीपक श्रेष्ठ जलाए हैं।
मोह महातम नाशक जिन के, चरणों विशद चढ़ाए हैं।।
उत्तम क्षमा धर्म को पाने, अर्चा करते अपरम्पार।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, भक्ति भाव से बारम्बार।।6।।

ॐ ह्रीं अष्टांग सम्यग्दर्शन, अष्टांग सम्यग्ज्ञान, त्रयोदशविध सम्यक्चारित्रेभ्यो नमः मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशाविधि धूप सुगन्धित अनुपम, हर्षित होकर चढ़ा रहे।
कर्मदहन हो नाथ हमारा, भव-भव में दुखकार कहे।।
उत्तम क्षमा धर्म को पाने, अर्चा करते अपरम्पार।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, भक्ति भाव से बारम्बार।।7।।

ॐ ह्रीं अष्टांग सम्यग्दर्शन, अष्टांग सम्यग्ज्ञान, त्रयोदशविध सम्यक्चारित्रेभ्यो नमः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस सुगन्धित फल यह उत्तम, अर्पित करते पद में नाथ।
मोक्ष महाफल प्राप्त हमें हो, झुका रहे हम चरणों माथ।।
उत्तम क्षमा धर्म को पाने, अर्चा करते अपरम्पार।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, भक्ति भाव से बारम्बार।।8।।

ॐ ह्रीं अष्टांग सम्यग्दर्शन, अष्टांग सम्यग्ज्ञान, त्रयोदशविध सम्यक्चारित्रेभ्यो नमः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल फलादि वसु द्रव्य मिलाकर, अर्घ्य बनाया यह मनहार।
हो अनर्घ पद प्राप्त नाथ अब, पा जाए जीवन का सार।।
उत्तम क्षमा धर्म को पाने, अर्चा करते अपरम्पार।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, भक्ति भाव से बारम्बार।।9।।

ॐ ह्रीं अष्टांग सम्यग्दर्शन, अष्टांग सम्यग्ज्ञान, त्रयोदशविध सम्यक्चारित्रेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **शिवपुर वासी हम बनें, पाएँ सुख भरपूर।**
शांतिधारा दे रहे, नाश कर्म हों क्रूर।।

शांतये शांतिधारा

जब तक रवि शशि लोक में, स्थिर है गिरिराज।
तब तक इस संसार में, धर्म रहे जिनराज।।

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जयमाला

दोहा– **देव ऋषि सुरपति सभी, इस जगती के ईश।**
जयमाला गाते 'विशद', सदा झुकाएँ शीश।।

(शम्भू छंद)

धर्म वस्तु स्वभाव बताया, क्षमा आदि को धर्म कहा।
परम अहिंसा धर्म श्रेष्ठ शुभ, रत्नत्रय से युक्त रहा।।
जैन धर्म में शंका विरहित, निशंकित गुण रहा विशेष।
भोगों की वाञ्छा के त्यागी, निष्कांक्षित गुण कहे जिनेश।।1।।
साधर्मी से ग्लानी तजना, तृतिय अंग रहा मनहार।
तजना पूर्ण कुदेव मान्यता, है अमूढ़ता मंगलकार।।
धर्मी की गल्ती को ढ़कना, उपगूहन गुण रहा महान्।
जैन धर्म में स्थित करना, स्थितिकरण अंग शुभ जान।।2।।
साधर्मी से प्रीति बढ़ाना, वात्सल्य शुभ अंग कहा।
जैन धर्म करना उद्योतित, यह प्रभावना अंग रहा।।
अष्ट अंग जो पालें भाई, सम्यक् दृष्टि वह गाये।
सम्यक् ज्ञान के भी आगम में, अष्ट अंग शुभ बतलाए।।3।।
शुद्धोच्चारण करके पढ़ना, शब्दाचार कहा भाई।
शुद्ध अर्थ का ग्रहण श्रेष्ठ शुभ, अर्थाचार है सुखदायी।।
शब्द अर्थ युत उभय अंग शुभ, आगम में बतलाया है।
योग्य काल में वाचन करना, कालाचार कहाया है।।4।।
विनय शास्त्र ज्ञानी की करना, कहलाता है विनयाचार।
स्वाध्याय पर्यन्त त्याग का, नियम कहा उपधानाचार।।
नाम लोप न करें गुरु का, अंग अनिह्नवाचार कहा।
शिक्षा पा सौभाग्य मानना, यह बहुमानाचार रहा।।5।।
पंच महाव्रत पंच समीति, तीन गुप्तियाँ कहीं विशेष।
अंग श्रेष्ठ तेरह चारित के, जैनागम में कहे जिनेश।।

छहों काय जीवों की रक्षा, परम अहिंसा व्रत गाया।
हित–मित–प्रिय शुभ वचन बोलना, सत्य महाव्रत कहलाया।।6।।
मन वच तन से चोरी तजना, व्रत अचौर्य जानो भाई।
मैथुन करना त्याग पूर्णतः, ब्रह्मचर्य व्रत सुखदायी।।
मूर्छा भाव त्यागने वाले, कहे अपरिग्रह के धारी।
पंच महाव्रत जैनागम में, यह बतलाए शुभकारी।।7।।
चार हाथ भूमि लख करके, चलना ईर्या समिति कही।
बोल तौलकर कहना भाई, भाषा समीति श्रेष्ठ रही।।
छियालिस दोष टालकर भोजन, कही ऐषणा समिति महान।
लेना–देना देख शोधकर, वस्तु आदान निक्षेपण जान।।8।।
मल अरु मूत्र एकांत में क्षेपण, समिति कही उत्सर्ग विशेष।
पंच समीति का आगम में, दिया गया है शुभ उपदेश।।
मन की चेष्टा पूर्ण रोकना, मन गुप्ति यह कही महान।
वचन प्रक्रिया का निरोध शुभ, वचन गुप्ति कहलाए प्रधान।।9।।
तन की स्थिरता को भाई, काय गुप्ति शुभ कहा गया।
गुप्ती धारी साधु पाते, जीवन में उत्कर्ष नया।
क्षमावाणी या क्षमा धर्म के, उन्तिस अंग कहे जिनराज।
शिवपुर की हो चाह भव्य तो, क्षमा धार लो सकल समाज।।10।।

दोहा– रत्नत्रय को पूर्ण कर, क्षमा–क्षमा उर धार।
चैत, माघ, भादव सुदी, वर्ष में तीनों बार।।

ॐ ह्रीं अष्टांग सम्यग्दर्शन, अष्टांग सम्यग्ज्ञान, त्रयोदशविध सम्यक्चारित्रेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– क्षमावाणी है औषधि, आतम की हितकार।
'विशद' क्षमाधारी हुए, भव सिन्धु से पार।।

इत्याशीर्वादः

रक्षाबन्धन पर्व पूजा

स्थापना

श्री अकम्पनाचार्य आदि शुभ, सप्त शतक मुनि अनगारी।
यज्ञ किए मंत्री बलि आदि, जो उपसर्ग किए भारी।।
भक्ति से प्रेरित होकर हम, निज उर में करते आह्वान।
विष्णु कुमार मुनिवर के द्वारा, किया गया उपसर्ग निदान।।
श्रावण शुक्ल पूर्णिमा के दिन, हुआ जगत में मंगलकार।
वात्सल्य का पर्व कहाया, धर्म सुरक्षा का त्यौहार।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्यादि सप्तशतक एवं विष्णु कुमार मुनि अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितौ भव–भव वषट् सन्निधिकरणं। (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

शम्भू छंद

हमने अनादि से कर्मों के, बन्धन करके बहु दुःख सहे।
हम राग द्वेष की परिणति से, तीनों लोको में भटक रहे।।
अब जन्म जरा के नाश हेतु, यह निर्मल नीर चढ़ाते हैं।
श्री अकम्पनाचार्य आदि मुनि, के पद शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्यादि सप्तशतक एवं विष्णु कुमार मुनि जन्म–जरा–मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

भव भोगों की रही कामना, जिससे जग में भ्रमण किया।
भव संताप मिटाने का न, हमने अब तक यतन किया।।
नाश होय संसार ताप मम्, चन्दन श्रेष्ठ चढ़ाते हैं।
श्री अकम्पनाचार्य आदि मुनि, के पद शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्यादि सप्तशतक एवं विष्णु कुमार मुनि संसार ताप विनाशनाय चन्दनम् निर्व.स्वाहा।

विषय कषायों में रत रहकर, निज पद को न पाया है।
क्षण भंगुर, जीवन पाकर के, तीनों लोक भ्रमाया है।।
अक्षय पद पाने को अभिनव, अक्षत चरण चढ़ाते हैं।
श्री अकम्पनाचार्य आदि मुनि, के पद शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्यादि सप्तशतक एवं विष्णु कुमार मुनि अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व.स्वाहा।

मोह महामद को पीकर के, जीवन व्यर्थ गवाएँ हैं।
काम बाण से बिद्ध हुऐ हम, अब तक चेत न पाए हैं।।
काम वासना नाश हेतु यह, पुष्पित पुष्प चढ़ातें हैं।
श्री अकम्पनाचार्य आदि मुनि, के पद शीश झुकाते हैं।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्यादि सप्तशतक एवं विष्णु कुमार मुनि काम–बाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

हम विषय भोग की ज्वाला में, सदियों से जलते आए हैं।
आशाएँ पूर्ण न हो पाती, हमने कई जन्म गवाएँ हैं।।
अब क्षुधा रोग के नाश हेतु, अतिशय नैवेद्य चढ़ाते हैं।
श्री अकम्पनाचार्य आदि मुनि, के पद शीश झुकाते हैं।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्यादि सप्तशतक एवं विष्णु कुमार मुनि क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

है घोर तिमिर मिथ्या जग में, जिसमें जग जीव भ्रमाए हैं।
अतिशय प्रकाश का पुञ्ज जीव, अब तक समझ न पाए हैं।।
अब मोह तिमिर के नाश हेतु, यह मनहर दीप जलाते हैं।
श्री अकम्पनाचार्य आदि मुनि, के पद शीश झुकाते हैं।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्यादि सप्तशतक एवं विष्णु कुमार मुनि महामोहान्धकार विना. दीपं निर्व. स्वाहा।

ज्ञानावरणादि कर्मों ने, इस जग में जाल बिछाया है।
हम फँसे अनादि से उसमें, छुटकारा न मिल पाया है।।
अब अष्ट कर्म के नाश हेतु, अग्नि में धूप जलाते हैं।
श्री अकम्पनाचार्य आदि मुनि, के पद शीश झुकाते हैं।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्यादि सप्तशतक एवं विष्णु कुमार मुनि अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्व.स्वाहा।

पुण्य पाप का फल पाकर, हम उसमें रमते आए हैं।
हम भटक रहे है निज पद से, न अक्षय फल को पाए हैं।।
अब मोक्ष महाफल पाने को, चरणों फल सरस चढ़ाते हैं।
श्री अकम्पनाचार्य आदि मुनि, के पद शीश झुकाते हैं।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्यादि सप्तशतक एवं विष्णु कुमार मुनि महामोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

शाश्वत है जीव अनादि से, हम अब तक जान न पाए हैं।
तन में चेतन का भाव जगा, उसको अपनाते आए हैं।।
हम पद अनर्घ पाने हेतु, अतिशय यह अर्घ्य चढ़ाते हैं।
श्री अकम्पनाचार्य आदि मुनि, के पद शीश झुकाते हैं।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्यादि सप्तशतक एवं विष्णु कुमार मुनि अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा– **जलधारा देते यहाँ, भक्ति भाव के साथ।**
झुका रहे हम भाव से, चरण कमल में माथ।। शान्तये शांतिधारा.....

करते हैं पुष्पाञ्जलि, लेकर पुष्पित फूल।
गुरु भक्ति की भावना, बनी रहे अनुकूल।। *इति पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्*

जयमाला

दोहा– वात्सल्य का पर्व यह, जग में मंगलकार।
गाते हैं जयमालिका, करके जय जयकार।।

उज्जयिनी के नृप श्री वर्मा, के मंत्री थे चार विशेष।
बलि, प्रहलाद, बृहस्पति, नमुचि, मिथ्यावादी रहे अशेष।।
श्री अकम्पनाचार्य आदि मुनि, सप्त शतक थे बहुगुणवान।
दर्शन करके नृप श्री वर्मा, प्रमुदित मन में हुआ महान्।।
अशुभ निमित्त जानकर गुरु ने, मौन का दीन्हा था आदेश।
शिरोधार्य करके मुनियों ने, पालन कीन्हा जिसे विशेष।।
श्रुत सागर मुनि सुन न पाए, जो थे ज्ञानी श्रेष्ठ महान्।
चर्या करके लौट रहे थे, मंत्री करते तब अपमान।।
अज्ञानी होते मुनि सारे, जानें क्या तत्त्वों का सार।
सुनकर मुनि मंत्री से बोले, तुम क्यों करते गलत प्रचार।।
वाद–विवाद हुआ मुनिवर से, सारे मंत्री माने हार।
अपमानित होकर रात्रि में, मुनि पर कीन्हें खड्ग प्रहार।।

कीलित किया क्षेत्र रक्षक ने, सर्व मंत्रियों को उस हाल।
राजा ने क्रोधित हो करके, दीन्हा क्षण में देश निकाल।।
हस्तिनागपुर पहुँचे मंत्री, पद्मराय राजा के पास।
सर्व मंत्रियों ने मिलकर के, शत्रु दल का किया विनाश।।
तभी मंत्रियों को मुंह मांगा, राजा ने दीन्हा वरदान।
जब चाहेंगे ले लेंगे हम, वचन लिए राजा ने मान।।
श्री अकम्पनाचार्य आदि मुनि, करके पहुँचे वहाँ विहार।
संघ देख मंत्रिन् के मन में, भय का रहा न कोई पार।।
कुटिल भाव से मंत्री पहुँचे, पद्मराय नृप के दरबार।
अष्ट दिवस का राज्य दीजिए, मानेंगे हम सब आभार।।
भीषण आग जलाए मंत्री, यज्ञ रचाए विविध प्रकार।
दान किमिच्छित देते सबको, कीन्हा चारों ओर प्रचार।।
धरणी भूषण पर्वत पर मुनि, श्रुतसागर करते थे ध्यान।
कम्पित देख गगन में तारा, मुनि को आश्चर्य हुआ महान्।।
पुष्पदन्त क्षुल्लक को भेजा, विष्णु कुमार मुनि के पास।
मुनियों पर उपसर्ग हुआ है, मुनि को हुआ था ये आभास।।
श्रेष्ठ विक्रिया ऋद्धि मुनिवर, तप से सिद्ध हुई है खास।
यह उपसर्ग आपके द्वारा, हो सकता है पूर्ण विनाश।।
हस्तिनागपुर पहुँचे मुनिवर, वात्सल्य का भाव विचार।
बटुक विप्र का भेष धारकर, मुनि पहुँचे करने उपकार।।
बलि आदि मंत्री के आगे, बटुक ने मांगा यह वरदान।
तीन पैढ़ भूमि दो हमको, तुम हो दानी श्रेष्ठ महान्।।
वचन बद्ध करके मंत्री को, मुनिवर ने फिर रक्खा पैर।
दो पग में सब धरती मापी, तीजे की अब रही न खैर।।
बलि आदि मंत्री झुक जाते, मुनिवर के चरणों में आन।
हमें क्षमा कर दो हे मुनिवर !, हमसे गलती हुई महान्।।

विष्णु कुमार मुनि की बोले, प्राणी सारे जय-जयकार।
करके यह उपसर्ग दूर गुरु, कीन्हा है हम पर उपकार।।
नशते ही उपसर्ग सभी नें, मुनियों को दीन्हा आहार।
बलि आदि भी मुनि संघ की, भाव सहित बोले जयकार।।
रक्षासूत्र बाँध हाथों में, सबने कीन्हा यही विचार।
धर्म की रक्षा कर हमको भी, करना है जग का उपकार।।
साधर्मी से वात्सल्य का, भाव जगायेंगे हम लोग।
कहीं किसी भी रूप में हमको, मिले धर्म का जब संयोग।।
श्रावण शुक्ला पूनम का दिन, पर्व बना यह मंगलकार।
वात्सल्य का है प्रतीक जो, सम्यक् दर्शन का आधार।।
विष्णु कुमार मुनि ने फिर से, व्रत कीन्हें थे अंगीकार।
कर्मों की सेना के ऊपर, कीन्हा मुनिवर ने अधिकार।।
मुनियों ने कीन्हा तप भारी, निज परिणामों के अनुसार।
कर्म नाशकर स्वर्ग मोक्ष पद, पाये मुनिवर अपरम्पार।।
धर्म भावना जगे हृदय में, पाप रहें हमसे अतिदूर।
सम्यक् दर्शन ज्ञान चरण, से हृदय भरे मेरा भरपूर।।
रक्षा बन्धन पर्व धर्म की, रक्षा का त्यौहार महान्।
'विशद' भाव से करते हैं हम, मुनियों का अतिशय गुणगान।।
श्री अकम्पनाचार्य आदि मुनि, सप्त शतक के चरण नमन्।
हैं उपसर्ग निवारक महामुनि, विष्णु कुमार के पद वन्दन।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्यादि सप्तशतक एवं विष्णुकुमार मुनिभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- वात्सल्य का पर्व यह, रक्षाबन्धन नाम।
जिन मुनियों के चरण में, बारम्बार प्रणाम।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

दीपावली पूजा

ॐ जय जय जय। नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु।
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।।1।।

ॐ ह्रीं अनादिमूलमंत्रेभ्यो नमः।

चत्तारि मंगलं अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलि–पण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलि पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो। चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरिहंते सरणं पव्वज्जामि, सिद्धे सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि, केवलि–पण्णतं धम्मं सरणं पव्वज्जामि। ॐ नमोऽर्हते स्वाहा (पुष्पांजलि क्षिपेत्)

(नोट– समय हो तो जिनवाणी से पूरी पूजा विधि पढ़ें।)

देव–शास्त्र–गुरु अर्घ्य

हम अष्ट कर्म आवरणों के, आतंक से बहुत सताए हैं।
वसु कर्मों का हो नाश प्रभु, वसु द्रव्य संजोकर लाए हैं।।
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य–चैत्यालय को ध्यायें।
हम विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।2।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु, कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य–चैत्यालय, अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी, विद्यमान विंशति तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र समूह अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नवदेवता पूजन का अर्घ्य

हमने संसार सरोवर में, सदियों से गोते खाये हैं।
अक्षय अनर्घ पद पाने को, वसु द्रव्य संजोकर लाये हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों के, वन्दन से सारे विघ्न टलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्यमान बीस तीर्थंकरों का अर्घ्य

जल फल आठों द्रव्य, अरघ कर प्रीति धरी है।
गणधर इन्द्र निहू–तैं, थुति पूरी न करी है।।
श्रावक सेवक जान के हो, जगतैं लेहु निकार।
सीमंधर जिन आदि दे, बीस विदेह मंझार।
श्री जिनराज हो, भवतारण तरण जहाज ।।

ॐ ह्रीं श्री सीमन्धरादिविद्यमान विंशतितीर्थंकरेभ्योऽनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री महावीर स्वामी का अर्घ्य

जल–फल वसु सजि हिम–थार, तन मन मोद धरों।
गुण गाऊँ भवदधि तार, पूजत पाप हरों।।
श्री वीर महा अतिवीर, सन्मति नायक हो।
जय वर्द्धमान गुणधीर, सन्मतिदायक हो।।

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नोट– भगवान महावीर की पूजन पेज.... से करना चाहें तो करें।

सरस्वती का अर्घ्य

जल चंदन अक्षत फूल चरु, दीप धूप अति फल लावै।
पूजा को ठानत जो तुम लागत, सो नर द्यानत सुख पावै।।
तीर्थंकर की ध्वनि गणधर ने सुनि, अंग रचे चुनि ज्ञान मई।
सो जिनवर की वाणी शिवसुखदानी, त्रिभुवन मानी पूज्य भई।।

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यैः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आचार्य विशदसागरजी महाराज का अर्घ्य

प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर!, थाल सजाकर लाये हैं।
महाव्रतों को धारण कर ले, मन में भाव बनाये हैं।।
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अर्घ्यं समर्पित करते हैं।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें, गुरु चरणों में सिर धरते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री क्षमामूर्ति आचार्य 108 श्री विशदसागरजी मुनीन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

श्री महावीर स्वामी पूजन

स्थापना

हे वीर प्रभो! महावीर प्रभो! हमको सद्राह दिखा जाओ।
यह भक्त खड़ा है आश लिये, प्रभु आशिष दो उर में आओ।।
तुम तीन लोक में पूज्य हुए, हम पूजा करने को आए।
हम भक्ति भाव से हे भगवन् !, यह भाव सुमन कर में लाए।।
हे नाथ! आपके द्वारे पर, हम आये हैं विश्वास लिए।
आह्वानन् करते हैं उर में, यह भक्त खड़े अरदास लिए।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम् । ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठ स्थापनम् । ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्र! अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(शम्भू छन्द)

क्षण भंगुर यह जग जीवन है, तृष्णा जग में भटकाती है।
स्वाधीन सुखों से दूर करे, निज आत्म ज्ञान विसराती है।।
मैं प्रासुक जल लेकर आया, प्रभु जन्म मरण का नाश करो।
हे महावीर स्वामी ! करुणाकर, सद्दर्शन ज्ञान प्रकाश भरो।।1।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन केसर की गंध महा, मानस मधुकर को महकाती है।
आतम उससे निर्लिप्त रही, शुभ गंध नहीं मिल पाती है।।
शुभ गंध समर्पित करते हैं, आतम में गंध सुवास भरो।
हे महावीर स्वामी ! करुणाकर, सद्दर्शन ज्ञान प्रकाश भरो।।2।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

हमने जो दौलत पाई है, क्षण-क्षण क्षय होती जाती है।
अक्षय निधि जो तुमने पाई, प्रभु उसकी याद सताती है।

मैं अक्षय अक्षत लाया हूँ, अब मेरा न उपहास करो
हे महावीर स्वामी ! करुणाकर, सद्दर्शन ज्ञान प्रकाश भरो।।3।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

हे प्रभु! आपके तन से शुभ, फूलों सम खुशबू आती है।
सारे पुष्पों की खुशबू भी, उसके आगे शर्माती है।।
मैं पुष्प मनोहर लाया हूँ, मम् उर में धर्म सुवास भरो।
हे महावीर स्वामी ! करुणाकर, सद्दर्शन ज्ञान प्रकाश भरो।।4।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा।

भर जाता पेट है भोजन से, रसना की आश न भरती है।
जितना देते हैं मधुर मधुर, उतनी ही आश उभरती है।।
नैवेद्य बनाकर लाये हम, न मुझको प्रभु निराश करो।
हे महावीर स्वामी ! करुणाकर, सद्दर्शन ज्ञान प्रकाश भरो।।5।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मैं सोच रहा सूरज चंदा, दीपक से रोशनी आती है।
हे प्रभु! आपकी कीर्ति से, वह भी फीकी पड़ जाती है।।
मैं दीप जलाकर लाया हूँ, मम् अन्तर में विश्वास भरो।।
हे महावीर स्वामी ! करुणाकर, सद्दर्शन ज्ञान प्रकाश भरो।।6।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय महामोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

जीवों को सदियों से भगवन्, कर्मों की धूप सताती है।
कर्मों के बन्धन पड़ने से, न छाया हमको मिल पाती है।।
यह धूप चढ़ाता हूँ चरणों, मम् हृदय प्रभु जी वास करो।
हे महावीर स्वामी ! करुणाकर, सद्दर्शन ज्ञान प्रकाश भरो।।7।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सारे जग के फल खाकर भी, न तृप्ति हमें मिल पाती है।
यह फल तो सारे निष्फल हैं, माँ जिनवाणी यह गाती है।।
इस फल के बदले मोक्ष सुफल, दो हमको नहीं उदास करो।
हे महावीर स्वामी ! करुणाकर, सद्दर्शन ज्ञान प्रकाश भरो।।8।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम राग द्वेष में अटक रहे, ईर्ष्या भी हमें जलाती है।
जग में सदियों से भटक रहे, पर शांति नहीं मिल पाती है।।
हम अर्घ्य बनाकर लाए हैं, मन का संताप विनाश करो।
हे महावीर स्वामी ! करुणाकर, सद्दर्शन ज्ञान प्रकाश भरो।।9।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक के अर्घ्य

आषाढ़ शुक्ल की षष्ठी आई, देव रत्नवृष्टि करवाई।
देव सभी मन में हर्षाए, गर्भ में वीर प्रभु जब आए।।1।।

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणक प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत शुक्ल की तेरस आई, सारे जग में खुशियाँ छाई।
प्रभु का जन्म हुआ अतिपावन, सारे जग में जो मन भावन।।2।।

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणक प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मार्ग शीर्ष दशमी दिन आया, मन में तव वैराग्य समाया।
सारे जग का झंझट छोड़ा, प्रभु ने जग से मुँह को मोड़ा।।3।।

ॐ ह्रीं तपकल्याणक प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैशाख शुक्ल दशमी शुभ आई, पावन मंगल मय अति भाई।
प्रभु ने केवल ज्ञान जगाया, इन्द्र ने समवशरण बनवाया।।4।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञान प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कार्तिक की शुभ आई अमावस, प्रभु ने कर्म नाश कीन्हे बस।
हम सब भक्त शरण में आये, मुक्ति गमन के भाव बनाए।।5।।

ॐ ह्रीं मोक्ष कल्याणक प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– तीन लोक के नाथ को, वन्दन करूँ त्रिकाल।
महावीर भगवान की, गाता हूँ जयमाल।।

(आर्या छन्द)

हे वर्धमान! शासन नायक, तुम वर्तमान के कहलाए।
हे परम पिता! हे परमेश्वर! तव चरणों में हम सिर नाए।।

छंद ताटंक

नृप सिद्धारथ के गृह तुमने, कुण्डलपुर में जन्म लिया ।
माता त्रिशला की कुक्षि को, आकर प्रभु ने धन्य किया ।।
सत् इन्द्रों ने जन्मोत्सव पर, मंगल उत्सव महत किया ।
पाण्डुक शिला पर ले जाकर के, बालक का अभिषेक किया ।।
दायें पग में सिंह चिन्ह लख, वर्धमान शुभ नाम दिया ।
सुर नर इन्द्रों ने मिलकर तब, प्रभु का जय जयकार किया ।।
नन्हा बालक झूल रहा था, पलने में जब भाव विभोर ।
चारण ऋद्धि धारी मुनिवर, आये कुण्डलपुर की ओर ।।
मुनिवर का लखकर बालक को, समाधान जब हुआ विशेष ।
सन्मति नाम दिया मुनिवर ने, जग को दिया शुभम् सन्देश ।।
समय बीतने पर बालक ने, श्रेष्ठ वीरता दिखलाई ।
वीर नाम की देव ने पावन, ध्वनि लोक में गुंजाई ।।
कुछ वर्षों के बाद प्रभु ने, युवा अवस्था को पाया ।
कुण्डलपुर नगरी में इक दिन, हाथी मद से बौराया ।।

हाथी के मद को तब प्रभु ने, मार–मार चकचूर किया ।
अति वीर प्रभु का लोगों ने, मिलकर के शुभ नाम दिया ।।
तीस वर्ष की उम्र प्राप्त कर, राज्य छोड़ वैराग्य लिए ।
मुनि बनकर के पञ्च मुष्टि से, केश लुंच निज हाथ किए ।।
परम दिगम्बर मुद्रा धरकर, खड्गासन से ध्यान किया ।
कामदेव ने ध्यान भंग कर, देने का संकल्प लिया ।।
कई देवियाँ वहाँ बुलाई, उनने कुत्सित नृत्य किया ।
हार मानकर सभी देवियों ने, प्रभु पद में ढोक दिया ।।
काम–देव ने महावीर के, नाम से बोला जयकारा ।
मैंने सारे जग को जीता, पर इनसे में भी हारा ।।
बारह वर्ष साधना करके, केवल ज्ञान प्रभु पाए ।
देव देवियाँ सब मिल करके, भक्ति करने को आए ।।
धन कुबेर ने विपुलाचल पर, समोशरण शुभ बनवाया ।
छियासठ दिन तक दिव्य देशना, का अवसर न मिल पाया ।।
श्रावण वदी तिथि एकम को, दिव्य ध्वनि का लाभ मिला ।
शासन वीर प्रभु का पाकर, 'विशद' धर्म का फूल खिला ।।
कार्तिक वदी अमावश को प्रभु, पावन पद निर्वाण हुआ ।
मोक्ष मार्ग पर बढ़ो सभी जन, सबका मार्ग प्रशस्त किया ।।

दोहा – महावीर भगवान ने, दिया दिव्य संदेश ।
मोक्ष मार्ग पर बढ़ो तुम, धार दिगम्बर भेष ।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा – कर्म नाश शिवपुर गये, महावीर शिव धाम।
शिव सुख हमको प्राप्त हो, करता चरण प्रणाम।।

शान्तये शांतिधारा (दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

केवलज्ञान महालक्ष्मी पूजन

(स्थापना)

श्री है पूज्य लोक में भाई, अन्तरंग बहिरंग महान्।
केवलज्ञान लक्ष्मी अनुपम, करे जगत का जो कल्याण।।
लोकालोक दिखाई देता, जिसमें भाई अणु समान।
साधुगण भी जिनको ध्याते, हम करते उर में आह्वान।।

ॐ ह्रीं श्रीं अ सि आ उ सा केवलज्ञानलक्ष्मी ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानन्।

ॐ ह्रीं श्रीं अ सि आ उ सा केवलज्ञानलक्ष्मी ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्रीं अ सि आ उ सा केवलज्ञानलक्ष्मी ! अत्र मम् सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छन्द)

मन का मैल मिटा न मेरा, नश्वर तन यह धोया है।
निज वैभव पाने की आशा, में जीवन यह खोया है।।
यह जीवन सफल बनाने को, हे नाथ ! शरण में आए हैं।
अब मुक्ति पथ पाने प्रभुवर !, हम चरणों में सिर नाए हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीं अ सि आ उ सा केवलज्ञानलक्ष्मी ! जलं निर्वपामीति स्वाहा।

यह तन मन शीतल किया मगर, चेतन शीतल न हो पाया।
संसार ताप के नाश हेतु, जग मृग तृष्णा में भटकाया।।
यह जीवन सफल बनाने को... ।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीं अ सि आ उ सा केवलज्ञानलक्ष्मी ! चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

हम लाख–चौरासी योनि में, यूँ बार–बार भटकाए हैं।
कर्मों के बन्धन पड़े विकट, हम मुक्त नहीं हो पाए हैं।।
यह जीवन सफल बनाने को...।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीं अ सि आ उ सा केवलज्ञानलक्ष्मी ! अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

काया की माया में उलझे, हम सारे जग में भटकाए।
भोगों की आशा को मन से, हम आज मिटाने को आए।।
यह जीवन सफल बनाने को...।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीं अ सि आ उ सा केवलज्ञानलक्ष्मी ! पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नश्वर काया की पुष्टि को, हमने कई व्यंजन खाए हैं।
जीवन पर जीवन बिता दिए, संतुष्ट नहीं हो पाए हैं।।
यह जीवन सफल बनाने को...।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीं अ सि आ उ सा केवलज्ञानलक्ष्मी ! नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बाहर का तिमिर मिटाने को, सब नश्वर द्वीप जलाते हैं।
अन्तर का तिमिर मिटाने को, नर धर्म शरण में जाते हैं।।
यह जीवन सफल बनाने को...।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीं अ सि आ उ सा केवलज्ञानलक्ष्मी ! दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हम धूप जलाते रहे मगर, यह कर्म नहीं जल पाए हैं।
चेतन की याद भुलाकर के, हम बार-बार पछताए हैं।।
यह जीवन सफल बनाने को...।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीं अ सि आ उ सा केवलज्ञानलक्ष्मी ! धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल खाये हमने कई मगर, चेतन फल का न रस पाया।
अब शक्ति पाने चेतन की, फल यह चरणों में ले आया।।
यह जीवन सफल बनाने को...।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीं अ सि आ उ सा केवलज्ञानलक्ष्मी ! फलं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों की शक्ति के कारण, ना पद अनर्घ हमने पाया।
शुभ अर्घ्य बनाकर चरणों में, यह दास चढ़ाने को लाया।।
यह जीवन सफल बनाने को...।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीं अ सि आ उ सा केवलज्ञानलक्ष्मी ! अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **ज्ञान लक्ष्मी पूजते, पाने केवलज्ञान।**
शांति धारा दे रहे, होय जगत कल्याण।।

शान्त्ये शांतिधारा

सुर तरु के वर पुष्प ले, पूज रहे हम आज।
ज्ञान महालक्ष्मी विशद, देय धर्म साम्राज्य।।

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

मंत्र - ॐ श्रीं ह्रीं केवलज्ञानमहालक्ष्म्यैः नमः।

इसके बाद बहियों पर सांथिया बनायें जैसा नीचे बना है और श्री को पर्वताकार लिखें।

श्री
श्री श्री
श्री श्री श्री
श्री श्री श्री श्री
श्री श्री श्री श्री श्री

५

२४ २

३

नई बही के पहले पेज पर सबसे ऊपर लिखें :-

श्री ऋषभाय नमः, श्री महावीराय नमः, श्री गौतमगणधराय नमः श्री केवलज्ञान सरस्वत्यै नमः, श्री लक्ष्म्यै नमः, श्री वर्द्धताम् लिखें फिर नीचे श्री का पर्वताकार लेखन करें। बहियों के ऊपर मीठा, पान, हल्दी आदि सामान रख दें। पश्चात्- श्री वर्धमानाय नमः मम सर्व सिद्धिर्भवतु, काम मंगल्योत्सवाः सन्तु पुण्य वर्धताम्

धनं वर्धताम् पढ़कर बही खातों पर अर्घ्यं चढ़ायें। इसके बाद मंगल कलश वाली चौकी पर रुपयों की थैली को रखकर उसमें

श्री लीलायतनं माहीकुल गृहं कीर्ति प्रमोदास्पदं,
वाग्देवी रति केतनं जय रमा क्रीडा निधानं महत।
सः स्यात्सर्वमहोत्सवैक भवनं यः प्रार्थितार्थ प्रदं,
प्रातः पश्यति कल्प पाद प दलच्छाया जिनाङ्घ्रि द्वयम्।।

श्लोक पढ़कर सांथियाँ बनावें। पश्चात् लक्ष्मी पूजन करें और लक्ष्मीस्तोत्र पुण्य शांति विसर्जन करें।

इस यंत्र को लक्ष्मी पूजन के दिन अपने बही खाते पर लिखें, हल्दी, केशर या चन्दन से तथा निम्न मंत्र की एक माला अवश्य जपें। ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं अर्हं नमः।

९	१६	२	७
६	३	१३	१२
१५	१०	८	१
४	५	११	१४

इस यंत्र को दीपावली के दिन केशर या सिन्दूर से दुकान पर दायें हाथ पर बही पर लिखें।

इसको दीपावली के दिन दुकान के अन्दर दीवार पर सामने लिखें, मंगल स्थापना के दाहिने ओर।

दोनों यंत्रों की अष्ट द्रव्यों से पूजा करें।

जयमाला

दोहा– ज्ञान महालक्ष्मी कही, जग में पूज्य त्रिकाल।
शिव सुख पाने के लिए, गाते हम जयमाल।।

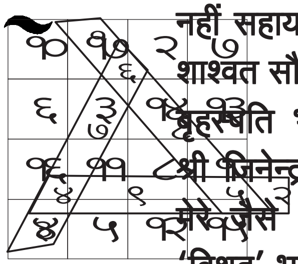

गुण अनंत के धारी होते, तीन लोक में जिन अरिहंत।
दर्श अनन्त प्राप्त करते हैं, पाते हैं प्रभु ज्ञान अनन्त।।
पाते हैं सम्यक्त्व वीर्य गुण, समवशरण के धारी नाथ।
सौ सौ इन्द्र चरण में आकर, झुका रहे हैं अपना माथ।।
केवल ज्ञान प्राप्त करते हैं, चौंसठ ऋद्धि पाते देव।
भवि जीवों का श्री चरणों में, हो अवगाहन श्रेष्ठ सदैव।।
भूत भविष्यत वर्तमान के, द्रव्य चराचर जान रहे।
गुण पर्याय जानने वाले, केवलज्ञानी श्रेष्ठ कहे।।
दर्पण सम दिखता है सारा, ज्ञान में जिसके लोकालोक।
उनके चरणों में नत होकर, प्राणी आकर देते ढोक।।
ज्ञाता ज्ञेय स्वयं होते हैं, पर का नहीं है कोई काम।
इन्द्रिय मन न बने सहायी, ऐसा पाते ज्ञान महान्।।
जो प्रत्यक्ष ज्ञान को पाते, कहा गया जग में असहाय।
नहीं सहायक जिनका कोई, आप सभी के बने सहाय।।
शाश्वत सौख्य अनन्त प्राप्त जो, करने वाले जगत महान्।
बृहस्पति भी महिमा गाने, में समर्थ न रहा प्रधान।।
श्री जिनेन्द्र की महिमा जग में, कही गई हैं अपरम्पार।
मेरे जैसे अल्प बुद्धि फिर, करें प्रभु कैसे गुणगान।।
'विशद' भाव के पुष्प चरण में, करता हूँ प्रभु यहाँ प्रदान।
अल्प काल में हम भी पायें, अतिशयकारी पद निर्वाण।।

दोहा– **ज्ञान लक्ष्मी श्रेष्ठ है, शिवसुख करे प्रदान।**
जग का वैभव प्राप्त कर, पावें पद निर्वाण।।

ॐ ह्रीं श्रीं अ सि आ उ सा केवलज्ञानलक्ष्मी ! जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **ज्ञान लक्ष्मी पूजकर, सुखी बने संसार।**
विशद ज्ञान पाके स्वयं, पावे भवदधि पार।।

इत्याशीर्वादः

गौतम गणधर मुनि पूजन

(स्थापना)

हे तीर्थंकर ! केवलज्ञानी, सर्वज्ञ प्रभु जग हितकारी।
हे गणधर स्वामी ! जिनवर के, तुम कृपा करो हे त्रिपुरारी ।।
निर्ग्रन्थ मुनीश्वर ऋद्धीधारी, तव करते हैं हम आह्वानन।
दो हमको शुभ आशीष विशद, हम करते हैं शत्–शत् वन्दन।
हे नाथ ! पुजारी चरणों में, तव पूजा करने आए हैं।
पूजा को अनुपम द्रव्यों के, यह थाल सजाकर लाए हैं।।

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा गौतम स्वामिने ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानन।
ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा गौतम स्वामिने ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा गौतम स्वामिने ! अत्र मम् सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छन्द)

जल पिया अनादी से हमने, पर तृषा शान्त न हो पाई।
अति लगा हुआ है मिथ्या मल, हमने आतम न चमकाई।।
अब जन्म जरा हो नाश मेरा, हम नीर चढ़ाने लाए हैं।
हे नाथ ! आपके चरणों में, हम पूजा करने आए हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा गौतम स्वामिने ! जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन के वन घिस गये कई, पर शीतलता न मिल पाई।
सद् दर्शन की शुभ कली हृदय में, नहीं हमारे खिल पाई।।
चन्दन घिसकर मलयागिरि का, हम आज चढ़ाने आए हैं।
हे नाथ ! आपके चरणों में, हम पूजा करने आए हैं।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा गौतम स्वामिने ! चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

भर–भर कर थाल तन्दुलों के, कई खाकर बहुत नशाए हैं।
अक्षय पद जो है अखण्ड वह, प्राप्त नहीं कर पाए हैं।।
अब अक्षय पद के हेतु यहाँ, यह अक्षय अक्षत लाए हैं।
हे नाथ ! आपके चरणों में, हम पूजा करने आए हैं।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा गौतम स्वामिने ! अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

तृष्णा की खाई है असीम, वह पूर्ण नहीं हो पाती है।
है काम वासना दुखदायी, भव–भव में हमें सताती है।।
हम काम वासना नाश हेतु, यह पुष्प सुगन्धित लाए हैं।
हे नाथ ! आपके चरणों में, हम पूजा करने आए हैं।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा गौतम स्वामिने ! पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

यह क्षुधा वेदना जीवों को, सदियों से छलती आई है।
खाकर मिष्ठान अनादी से, न तृप्ति हमें मिल पाई है।।
अब क्षुधा वेदना नाश हेतु, नैवेद्य चढ़ाने लाए हैं।
हे नाथ ! आपके चरणों में, हम पूजा करने आए हैं।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा गौतम स्वामिने ! नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जड़ दीपक तिमिर का नाशक है, मिथ्यातम को न हरण करे।
चैतन्य प्रकाशित करता वह, रत्नत्रय को जो ग्रहण करे।।
अब विशद ज्ञान का दीप जले, हम दीप जलाकर लाए हैं।
हे नाथ ! आपके चरणों में, हम पूजा करने आए हैं।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा गौतम स्वामिने ! दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नि में धूप जलाने से, आकाश सुवासित होता है।
जब तीव्र कर्म का वेग बढ़े, चेतन शक्ती तब खोता है।।
अब अक्षय पद के हेतु यहाँ, यह अक्षत अक्षत लाए हैं।
हे नाथ ! आपके चरणों में, हम पूजा करने आए हैं।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा गौतम स्वामिने ! धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

यह सरस मधुर फल खाने से, रसना की चाह बढ़ाते हैं।
हम चाह दाह के नाश हेतु, यह फल तव चरण चढ़ाते हैं।।
हो मोक्ष महाफल प्राप्त हमें, तव हर्ष–हर्ष गुण गाए हैं।
हे नाथ ! आपके चरणों में, हम पूजा करने आए हैं।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा गौतम स्वामिने ! फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हमने अनर्घ पद पाने का, सदियों से भाव बनाया है।
किन्तू विषयों में फँसने से, वह पद हमने न पाया है।।
अब पद अनर्घ के हेतु प्रभो !, यह अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।
हे नाथ ! आपके चरणों में, हम पूजा करने आए हैं।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा गौतम स्वामिने ! अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप– ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा गौतम स्वामिने ! गणधरेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा– श्री गौतम गणधर मुनि, जग में पूज्य महान।
चौंसठ ऋद्धीवान का, करते हैं गुणगान।।

(शम्भू छन्द)

परिशुद्ध हृदय जिनका निर्मल, गुणगण के अनुपम कोष रहे।
तीर्थंकर जिनके गणनायक, आगम में गणधर देव कहे।।
जो मति श्रुत अवधि मनःपर्यय, शुभ चार ज्ञान के धारी हैं।
जो भौतिक तत्त्वों के ज्ञाता, अरु पूर्ण रूप अविकारी हैं।।1।।
शुभ स्याद्धवाद के धारी हैं, पर मत का खण्डन करते हैं।
पञ्चेन्द्रिय जय करने वाले, गुरु पञ्च महाव्रत धरते हैं।।
जो अंग पूर्व के धारी हैं, अष्टांग निमित्त के ज्ञाता हैं।
शुभ दिव्य देशना झेल रहे, जग में भव्यों के त्राता हैं।।2।।
गुरु अष्ट ऋद्धि के धारी हैं, जिन प्रज्ञा श्रमण कहाते हैं।
शुभ स्वप्न शकुन ज्योतिष ज्ञाता, तन परमौदारिक पाते हैं।।
जो अनेकांत के धारी हैं, एकान्त ध्यान में लीन रहे।
हैं परम अहिंसा व्रतधारी, गणधर जिनेन्द्र के श्रेष्ठ कहे।।3।।
गुरु घोर पराक्रम के धारी, जो घोर परीषह सहते हैं।
हर एक विषमता को सहकर, जो शान्त भाव से रहते हैं।।
तीर्थंकर जिन के दिव्य वचन, ॐकार रूप से आते हैं।
किरणों की प्रखर रोशनी सम, गणधर में आन समाते हैं।।4।।

जिन वचन महोदधि है अनन्त, जिसका होता न अंत कहीं।
शत् इन्द्र चक्रवर्ती आदी, जिन संत समझते पूर्ण नहीं।।
गणधर गूंथित जैनागम ही, भवि जीवों का ज्ञान प्रदाता है।
रत्नत्रय धर्म प्रदायक है, जो मोक्ष महल का दाता है।।5।।
जिनधर्म धारकर भवि प्राणी, कर्मों का पूर्ण विनाश करें।
फिर अनन्त चतुष्टय को पाकर, जिन केवल ज्ञान प्रकाश करें।।
शुभ कार्तिक कृष्ण अमावस को, प्रभु महावीर निर्वाण किये।
संध्या को गौतम गणधरजी, अनुपम शुभ केवलज्ञान लिये।।6।।
यह दीपमालिका पर्व विशद, तब से सब लोग मनाते हैं।
निर्वाण दिवस प्रातः करके, संध्या को दीप जलाते हैं।।
हम तीन काल के तीर्थंकर, गणधर को शीश झुकाते हैं।
अब गुण पाने जिन गणधर के, हम चरण–शरण को पाते हैं।।7।।

छन्द घत्तानन्द

जिन पद अनुगामी, गणधर स्वामी, मोक्षमार्ग के पथगामी।
जय गण के स्वामी, तुम्हें नमामी, द्रव्य भाव श्रुतधर नामी।।

ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा श्री चतुर्विंशति तीर्थंकराणां श्री वृषभसेनादि एक सहस्र चतुर्शतक द्विपंचाशत गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर के पद नमूँ, गणधर करूँ प्रणाम।
पुष्पाञ्जलि करके विशद, पाऊँ मुक्तिधाम।।

।। पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

गणधरों का समुच्चय अर्घ्य

वृषभादि महावीर प्रभु के, गणधर जग में हुए महान्।
तीर्थंकर की दिव्य देशना, का करते हैं जो गुणगान॥
वृषभसेन आदि चौदह सौ, बावन हुए हैं मंगलकार।
उनके चरणों विशद भाव से, वन्दन मेरा बारम्बार॥

ॐ ह्रीं वृषभादि महावीर पर्यन्त चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्योः के चतुर्दश शत् द्विपञ्चाशतगणधरेभ्योः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुगंध दशमी पूजा

स्थापना

श्रेष्ठ सकल सौभाग्य सुव्रत है, हैं सुगंध दशमी शुभ नाम।
भाव सहित व्रत पालन करने से, बन जाते बिगड़े काम।।
व्रत पालन करने वाले कई हुए लोक में सर्व महान।
ऐसा अक्षय फलदायी व्रत का, हम करते हैं आह्वानन्।।

ॐ ह्रीं श्रीं .... ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन।
ॐ ह्रीं श्रीं .... ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्रीं ..... ! अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अष्टक

(शम्भू छन्द)

भव भोगों मं फंसकर स्वामी, जीवन यह व्यर्थ गवाया है।
ना जन्म मरण से छुटकारा, हमको अब तक मिल पाया है।।
हे नाथ भक्त के ऊपर अब, शुभ मेघ दया के बरसाओ।
हमको भी दर्शन दो स्वामी, न और हमें अब तरसाओ ।।1 ।।

ॐ ह्रीं श्री ....संसार ताप विनाशनाय चन्दनम् निर्वपामीति स्वाहा।

हम अन्तर मल शीतल करने, चन्दन घिसकर के लाए हैं।
क्रोधादि कषाए पूर्ण नाश, निज शान्ति पाने आए हैं।। हे नाथ...।।1 ।।

ॐ ह्रीं श्री .... अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

चेतन की निर्मलता पाने, हम चरण शरण में आए है।
शाश्वत अक्षय पद पाने को, यह अक्षय अक्षत लाए है।। हे नाथ...।।2 ।।

ॐ ह्रीं श्री .... काम-बाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु काम वासना से वासित, होकर सारा जग भटकाए।
अब काम अग्नि का रोग नशे, हम पुण्य चढ़ाने को लाए ।। हे नाथ...।।3 ।।

ॐ ह्रीं श्री .... क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृष्णा दुख देती है हमको, छुटकारा पाने हम आए।
अब क्षुधा मिटाने को प्रभुवर, नैवेद्य चढ़ाने यह लाए ।। हे नाथ...।।4 ।।

ॐ ह्रीं श्री ...... महामोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा

दीपक की जले अनुपम, अंधियारा दूर भग जाए।
यह दीप जलाकर हे स्वामी, हम मोह नशाने को आए ।। हे नाथ...।।5 ।।

ॐ ह्रीं श्री ....अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हम धूप जलाते अग्नि में क्षय, कर्मों का प्रभु हो जाए।
शिव पद के राहो बन जाएँ, मम् मन मयूर शुभ हर्षाए ।। हे नाथ...।।6 ।।

ॐ ह्रीं श्री .....महामोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

फल चढ़ा रहे यह शुभकारी, भव सिन्धु से मुक्ति पाएँ।
हे करुणा सागर दया करो, हम मोक्ष शुभ पा जाएँ ।। हे नाथ...।।7 ।।

ॐ ह्रीं श्री .....महामोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा

जल चन्दन अक्षत पुष्प चरु, दीपक शुभ धूप जलाए हैं।
फल रखकर अनुपम अर्घ्य बना, हम यही चढ़ाने लाए हैं ।। हे नाथ...।।7 ।।

ॐ ह्रीं श्री ......अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **निज आतम के ध्यान से, मिले आत्म आनन्द।**
शांति धारा दे रहे, पाने सहजानन्द।।

शान्तये शांतिधारा.....

आत्म ज्योति प्रगटित किए, अखिल विश्व के नाथ।
पुष्पाञ्जलि करते विशद, चरण झुकाते माथ।।

इति पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जयमाला

दोहा– संयम व्रत चारित्र का, पाएँ फल तत्काल।
श्रेष्ठ सकल सौभाग्य व्रत, की गाते है जयमाल।।

(शम्भू छन्द)

समव शरण गिरनार गिरि पर, नेमिनाथ का आया खास।
श्री कृष्ण परिवार सहित तब, दर्शन करने पहुँचे पास।।
रूकमणि ने पूछा हे स्वामी, किया कौन सा पुण्य विशेष।
यह अखण्ड़ सौभाग्य मिला जो, बतलाओ हे श्री जिनेश।।
गणधर बोले मगध देश लक्ष्मीपुर पावन स्थान।
सोम सेन ब्राह्मण की पत्नि लक्ष्मी मति को था अभिमान।।
मुनि समाधि गुप्तिनन्दी, करके हुआ भगंदर रोग।
मरकर भैस सूकरी कुत्ती, गधी नरक का पाई योग।।
फिर दुर्जन कुल नीच प्राप्त कर, माता पिता से हुई।
भीख मांगकर जीवन बीता, रहती थी होकर के दीन।।
नदी नर्मदा के तट पर शुभ, मुनिवर का पाया संदेश।
गृहण किए व्रत उसने गुरु से, मरकर पहुँची कोंकण देश।।
नन्दन सेठ की नन्दावति से, लक्ष्मी मति हुई मनहार।
नन्दा स्वामी महामुनि को, दिया भाव से शुभ आहार।।
मुनिवर से उसने भव पूछे, सात भवों का कियो कथन।
हो अखण्ड़ सौभाग्य प्राप्त अब, कहो प्रभु ऐसा वर्णन।।

करो सकल सौभाग्य सुव्रत का, बेटी भाव सहित पालन।
दश वर्षों का व्रत करके किए, करो क्रिया से उद्यापन।।
व्रत का पालन करके उसने, पुण्य कमाया अपरम्पार।
कुन्दनपुर नृप भीष्म के गृह में जन्म लिया जिसने शुभकार।।
रूकमणि नाम पड़ा था जिसका, श्री कृष्ण से ब्याह किया।
पटरानी पद पाने का भी जिसने शुभ सौभाग्य लिया।।
गणधर के चरणों रूक्मणि थे, फिर से पावन व्रत पाए।
उद्यापन करके परिजन सब मन में भारी हर्षाए।।
पुनः आर्यिका के व्रत करके, सुतप किया जिसने शुभकार।
मरण समाधि कर सोलहवें, स्वर्ग में देव बनी मनहार।।
माह भाद्र पद शुक्ल पक्ष में, पाँचे से दशमी तक खास।
पुष्पाञ्जलि व्रत करके अनुपम, दशमी का करके उपवास।।
जिन पूजा अभिषेक किया कर, खेना अनुपम धूप महान।
उद्यापन के अवसर पर शुभ, करना शीतल नाथ विधान।।
यह सुगन्ध दशमी व्रत करके, पाया हैं सौभाग्य महान।
कर्म श्रृंखला पूर्ण नाशकर 'विशद' प्राप्त करना निर्वाण।।

दोहा– व्रत अखण्ड सौभाग्य शुभ, जग में कहा महान।
पद अखण्ड पाने विशद, करते हम गुणगान।।

ॐ ह्रीं..........सम्यक्चारित्रेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– सकल व्रतों को प्राप्त कर, करें कर्म का नाश।
भव की बाधा नाशकर, पाएँ निवास।।

इत्याशीर्वादः

श्रुत पंचमी पूजन

स्थापना

श्री जिनेन्द्र की दिव्य देशना, मंगलमय मंगलकारी।
स्याद्वाद अरु अनेकान्तमय, द्वादशांग युत मनहारी।।
श्री धरसेनाचार्य के मन में, जीवों पर करुणा जागी।
दिव्य देशना रहे सुरक्षित, मन में श्रेष्ठ लगन लागी।।
अंकलेश्वर में षट् खण्डागम, ग्रन्थ का लेखन हुआ शुरू।
लिपिबद्ध करने वाले थे, श्री पुष्पदन्त भूतबली गुरु।।
ज्येष्ठ शुक्ल पंचमी दिवस को, पूर्ण हुआ श्रुत का लेखन।
पर्व बना श्रुत पंचमी पावन, श्रुत का करते आह्वानन्।।

ॐ ह्रीं श्री श्रुतज्ञान षट् खण्डा-गम ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री श्रुतज्ञान षट् खण्डा-गम ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री श्रुतज्ञान षट् खण्डा-गम ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।
पुष्पाजलिं क्षिपेत्

ज्यों-ज्यों हमने जल पान किया, त्यों-त्यों आशा की प्यास जगी।
नित प्राप्त विषय विष भोगों से, बहु राग द्वेष की आग लगी।।
शुद्धातम सा परिशुद्ध अमल, यह नीर चरण में लाये हैं।
सन्तप्त हृदय हो शांत विशद, हम जिनश्रुत शरण में आए हैं।।
ॐ ह्रीं श्री श्रुतज्ञान षट् खण्डागम मम जन्म, जरा, मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

मैं पाप शाप में दवा रहा, निज आतम को न पहिचाना।
जो रहा स्वयं से भिन्न अन्य, उसको मैंने अपना माना।।
हम क्रोधानल के शमन हेतु, शुभ चंदन घिसकर लाये हैं।
सन्तप्त हृदय हो शांत विशद, हम जिनश्रुत शरण में आए हैं।।
ॐ ह्रीं श्री श्रुतज्ञान षट् खण्डागम मम संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

हम अक्ष विषय में लीन रहे, उनको ही अक्षय सुख माना।
अभिमान किया हमने तन का, अब अन्त रहा बस पछताना।।
अब मद की दम के दमन हेतु, हम अक्षय अक्षत लाए हैं।
सन्तप्त हृदय हो शांत विशद, हम जिनश्रुत शरण में आए हैं।।
ॐ ह्रीं श्री श्रुतज्ञान षट् खण्डागम मम अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

है काम बली का महा वेग, उसने सदियों से भरमाया।
निज शक्ति का नित ह्रास किया, औ मन में भारी हरषाया।।
हम काम बाण विध्वंस हेतु, शुभ पुष्प संजोकर लाए हैं।
सन्तप्त हृदय हो शांत विशद, हम जिनश्रुत शरण में आए हैं।।
ॐ ह्रीं श्री श्रुतज्ञान षट् खण्डागम मम कामवाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नाना व्यंजन का भोग किया, पर क्षुधा रोग न शांत हुआ।
ज्यों-ज्यों भोजन में लिप्त हुआ, त्यों-त्यों मेरा मन क्लांत हुआ।
चरणों नैवेद्य चढ़ाने को, व्यंजन कई सरस बनाए हैं।
सन्तप्त हृदय हो शांत विशद, हम जिनश्रुत शरण में आए हैं।।
ॐ ह्रीं श्री श्रुतज्ञान षट् खण्डागम मम क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अगणित दीपों के द्वारा भी, संसार तिमिर न घट पाता।
इन नश्वर दीपों के द्वारा, अज्ञान तिमिर न हट पाता।।
अब ज्ञान का दीप जलाने को, हम जग-मग दीप जलाए हैं।
सन्तप्त हृदय हो शांत विशद, हम जिनश्रुत शरण में आए हैं।।
ॐ ह्रीं श्री श्रुतज्ञान षट् खण्डागम मम मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

तीनों लोकों में दुःखों की अत्यन्त, दुखित ज्वाला जलती।
नित मोह कषायों की शक्ति, मम आतम को रहती छलती।।
हम धूप दशांगी शोधन कर, अग्नि में होम लगाए हैं।
सन्तप्त हृदय हो शांत विशद, हम जिनश्रुत शरण में आए हैं।।
ॐ ह्रीं श्री श्रुतज्ञान षट् खण्डागम मम अष्ट कर्म विनाशनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

विषयों को अमृत फल माना, उसके सेवन में मस्त रहा।
विषयों की चाहत में नित प्रति, मैं व्यस्त रहा अभ्यस्त रहा।।
अब मोक्ष महाफल की आशा ले, सरस श्रीफल लाये हैं।
सन्तप्त हृदय हो शांत विशद, हम जिनश्रुत शरण में आए हैं।।

ॐ ह्रीं श्री श्रुतज्ञान षट् खण्डागम मम मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों ने काल अनादि से, सारे जग में भटकाया है।
है नहीं कष्ट कोई ऐसा, जग में रहकर न पाया है।।
आठों द्रव्यों को एक मिला, हम अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।
सन्तप्त हृदय हो शांत विशद, हम जिनश्रुत शरण में आए हैं।।

ॐ ह्रीं श्री श्रुतज्ञान षट् खण्डागम मम अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– अरि नाशक अरिहन्त हैं, जिनवाणी ॐकार।
द्रव्य भाव श्रुत को नमूँ, करके जय–जयकार।।

जयमाला

हे जिनवाणी ! माता मेरी भक्तों पर दया प्रदान करो।
हम ज्ञान हीन अज्ञानी हैं, हम सबका अब कल्याण करो।।

श्री ऋषभ देव से महावीर तक, दिव्य ध्वनि खिरती आई।
गणधर जी ने गुंथित करके, इस भव्य जगत में फैलाई।।

महावीर के बाद केवली, दिव्य देशना दिए अनेक।
श्रुत केवली पाँच हुए फिर, उनने ज्ञान दिए अति नेक।।

अंग और पूरव के ज्ञाता, श्रेष्ठ हुए ग्यारह आचार्य।
पूर्वरहित कुछ हीन अंग के, ज्ञायक हुए सतत् आचार्य।।

जैनाचार्यों के द्वारा शुभ, श्रुत का निर्झर झरा अपार।
मोक्षमार्ग का भव्य जनों को, ज्ञान मिला है अपरम्पार।।

काल दोष के कारण लेकिन, जिनवाणी का ह्रास हुआ।
श्री धरसेनाचार्य गुरु के, मन में कुछ अहसास हुआ।।

द्वादशांग का लोप हुआ तो, क्या होगा संसार का।
अनेकांत का क्या होगा औ, क्या निश्चय व्यवहार का।।

लेखन हो जाए श्रुत का तो, अमर होएगी जिनवाणी।
श्रीधर सेनाचार्य ने मन में, लेखन करने की ठानी।।

अर्हद्वली आचार्य संघ से, दो मुनियों को बुलवाया।
पूर्ण परीक्षित करके उनसे, जिनवाणी को लिखवाया।।

लेखन हुआ ताड़पत्रों पर, षट्खण्डागम ग्रन्थ का।
अजर अमर हो गया सुयश, यह वीतराग निर्ग्रन्थ का।।

ज्येष्ठ शुक्ल पंचमी दिवस को, स्वप्न पूर्ण साकार हुआ।
घर–घर मंगल वाद्य बजे अरु, नगर–नगर जयकार हुआ।।

धवला टीका वीरसेन कृत, सहस बहत्तर श्लोक प्रमाण।
जय धवला जिनसेन वीर कृत, साठ हजार श्लोक प्रमाण।।

महाधवल है देवसेन कृत, हैं श्लोक चालीस हजार।
विजय धवल अतिशय धवल का, प्राप्त नहीं श्लोक विचार।।

क्रमशः ऋषि मुनियों के द्वारा, ग्रन्थ लिखे कई ज्ञान प्रधान।
चारों ही अनुयोग के द्वारा, दिया जगत को करुणा दान।।

श्रुत पारंगत विद्वत श्रेष्ठी, सबने श्रुत का किया विकास।
आगे भी सब ऋषि मुनि अरु, विद्वत श्रेष्ठी करें प्रकाश।।

जिनवाणी की भक्ति करें अरु जिनश्रुत की महिमा गाएँ।
सम्यक्दर्शन की निधि पाकर, सम्यग्ज्ञानी बन जाएँ।।

रत्नत्रय के आलम्बन से, वसु कर्मों का नाश करें।
मोक्ष मार्ग पर गमन करें फिर, सिद्ध शिला पर वास करें।।

ॐ ह्रीं श्री श्रुतज्ञान षट् खण्डागम जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– जिनश्रुत की पूजा करूँ, जिनश्रुत है गुणवन्त।
जिनश्रुत मेरे उर बसे, नमन अनन्तानन्त।।

(पुष्पाजलिं क्षिपेत्)

अक्षय तृतीया पूजा

स्थापना

अक्षय तृतीया पर्व कहाया, मंगल मय मंगलकारी।
ग्रहण किए आहार आदि जिन, इच्छुरस का शुभकारी।।
अक्षय दान का पर्व कहाया, सारे जग में महति महान।
पर्व पात्र का विशद हृदय में, करते हैं हम भी आह्वानन्।।

ॐ ह्रीं श्रीं .... ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन।
ॐ ह्रीं श्रीं .... ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्रीं ..... ! अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(भुजंग प्रयात)

धवल क्षीर सागर के जैसा ये जल है, भक्ति में मल साफ करने का बल है।
चेतन की शुद्धि को जल ये चढ़ाए, लगे रोग जन्मादि को हम नशाएँ।।

चिंता चिता सम है, भव ताप लाए, जीवों को चारों गति में भ्रमाए।
आतम की शुद्धि को, चन्दन घिसाए, हे नाथ अवशेष भव ताप जाए।।

उज्ज्वल है श्रेष्ठ अक्षत में भारी, अस्थिर में जीवन अथिर दुनिया दारी।
अक्षय ये अक्षत चढ़ाने को लाए, अक्षय सुपद प्राप्त करने हम आए।।

रोगी तन बूढ़ा है इच्छाएँ भारी, इच्छाएँ हो शांत करना तैयारी।
पुष्पों की माला बनाकर के लाए, ये भोगों की बाधा नशाने को आए।।

खाने को व्यंजन जिह्वा श्रेष्ठ चाहे, नहीं प्राप्त होने पर मन को ये दाहे।
अब क्षुधा रोग हो नाश चरु हम चढ़ाते, चरणों में हे नाथ हम माथा झुकाते।।

छाया नहीं में करम का अंधेरा, विशद ज्ञान का होवे अब तो सवेरा।
ये दीपक जलाकर तिमिर को नशाएँ, लगा मोह का अंध उसको हटाएँ।।

अब करके सुतप सारे जलाएँ, नहीं पद जो पाप सुपद श्रेष्ठ पाए।
करम नाश हेतु धूप अग्नि में जारें, अब मुक्ति की मैं मंजिल को हमे भी सम्हारे।।

फल हमने षट् ऋतु के खाकर नशाए, मुक्ति सुफल लेकिन अब तक न पाए।
शाश्वत फल शिव पद हम पाने को अब, चरणों प्रभु आके माथा झुकाए।।

गगन में प्रभु है तुम्हारा बसेरा, भक्ति से हो प्रभु जी जीवन सवेरा।
निष्फल निरापद, प्रभु होने आए, वसु द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाने को लाए।।

दोहा- आदिनाथ आदिम तीर्थंकर, चौबीसी में हुए महान।
नील परी की मृत्यु लखकर, संयम धारण किए महान।।

जयमाला

दोहा- आदिनाथ भगवान के चरणों में नत भाल।
अक्षय तृतीया पर्व की, गाते हैं जयमाल।।

(तर्ज :- हे दीन बंधु.....)

जय जय जिनेन्द्र आदिनाथ देव हमारे।
जय धर्म प्रर्वतक किए, जिन धर्म सहारे।।
यह काल अनादि अनन्त धर्म बताया।
अव सर्पिणी में काल यह जब तीसरा आया।।
अयोध्या नरेश नाभिराय धर्म के धारी।
रानी थी मरूदेवी शुभ धर्मात्मा नारी।।
आषाढ़ कृष्ण द्वितीया का श्रेष्ठ दिन पाये।
सर्वार्थ सिद्धि से चये प्रभु गर्भ में आए।।
छह माह पूर्व इन्द्र ने शुभ रत्न वर्षाए।
शुभ चैत्र कृष्ण नौमी को जीव हर्षाए।।

प्रत्यूष काल में प्रभु ने जन्म शुभ पाया।
आनन्द रहस्य देवों ने आकर के मनाया।।
सौधर्म इन्द्र स्वर्ग से ऐरावत लाया।
पाण्डुक शिला पे लाके अभिषेक कराया।।
शुभ बैल चिन्ह देख इन्द्र नाम बताया।
जय ऋषभदेव बोल जयकार लगाया।।
फिर इन्द्र ने बालक को माँ के सुलाया।
माता-पिता परिवार तभी देख हर्षाया।।
बढ़ने लगे कुमार श्वेत चाँद के जैसे।
उपमा नहीं है कोई गुणगान हो कैसे।।
यौवना अवस्था में प्रभु युवराज पद पाए।
नन्दा सुन्दा रानी से ब्याह रचाए।।
चक्री भरत आदि सौ पुत्र प्रभु पाए।
पूरव तिरासी लाख प्रभु राज्य चलाए।।
सौधर्म इन्द्र नृत्य को नीलाञ्जना लाया।
मृत्यु को देख प्रभु ने वैराग्य जगाया ।।
ब्रह्म ऋषि देव तब सम्बोधने आए।
फिर राज्य पाठ छोड़ प्रभु वन को सिधाए।।
कर केश लुंच प्रभु ने संयम को जगाया।
छह माह का प्रभु ने शुभ ध्यान लखगाया।।
चलकर प्रभुजी हस्तिनागपुर में आए।
आहार के लिए प्रभु छह माह भटकाए।।
हो कर्म की क्या लीला पूरव में जो किए।
घर-घर प्रभुजी भटके आहार के लिए।।

कोई भी नवधा भक्ति करने नहीं आए।
लेकर के भेंट राजा कई प्रभु को दिखाए।।
राजा श्रेयांस सौम तब सौभाग्य उपाए।
पूरव मैं नवधा भक्ति की याद दिलाए।।
वैशाख शुक्ल तृतीया जो धन्य बनाए।
आहार करके दान का प्रभु पर्व चलाए।।
देवों ने पञ्च आश्चर्य आके वहाँ किए।
अहो दान पात्र बोल क प्रसन्न हो लिए।।
अक्षय हुआ ये अक्षय तृतीया का व्रत करें।
सौभाग्य प्राप्त करता जो व्रत स्वयं करें।।
करके उपास पूजा शुभ जाप कीजिए।
अक्षय निधि को भाई शुभ लीजिए।।
तृतीया का तीन साल तक ये व्रत जो करेंगे।
मुक्ति रमा को अन्त में निश्चय से वरेंगे।।

दोहा- . . . . ।
. . . . । ।

ॐ ह्रीं.........सम्यक्चारित्रेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- . . . . ।
. . . . । ।

इत्याशीर्वादः

मोक्ष सप्तमी पूजन

स्थापना

श्रावण शुक्ल सप्तमी को प्रभु, पार्श्वनाथ जी मोक्ष गये।
संयम त्याग साधना करके, अपने सारे कर्म क्षये।।
मोक्ष सप्तमी पर्व बना यह, मुकुट सप्तमी भी है नाम।
आह्वानन् करते हम उर में, करके प्रभु के चरण प्रणाम।।

ॐ ह्रीं श्रीं .... ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन।
ॐ ह्रीं श्रीं .... ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्रीं ..... ! अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(नरेन्द्र छन्द)

भर जाएँ तीनों लोक प्रभु, हमने इतना जल पी डाला।
न प्यास बुझी हे नाथ मेरी, चेतन कर्मों से है काला है।।
अब चेतन को धोने हेतु प्रभु, नीर चढ़ाने लाए हैं।
हम मोक्ष सप्तमी की पूजा, प्रभु आज रचाने आए हैं।।

ॐ ह्रीं श्री ....संसार ताप विनाशनाय चन्दनम् निर्वपामीति स्वाहा।

यह मोह राग गा दावानल, सदियों से झुलसाता आया।
किंचित् मन की न दाह मिटी, हे नाथ शरण को आप।।
भव ताप नशाने हेतु प्रभु, यह चन्दन घिसकर लाए हैं।
हम मोक्ष सप्पमी की पूजा, प्रभु आज रचाने आए हैं।।

ॐ ह्रीं श्री .... अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुरुषों की सुरभि से केवल यह तृप्त नाशिका होती है।
आतम के गुण मय पुष्पों की दुर्गन्ध वाटिका है।।
निज के गुण निज में पाने को, यह सुमन संजोकर लाए हैं।
हम मोक्ष सप्तमी की पूजा, प्रभु आज रचाने आए हैं।।

ॐ ह्रीं श्री .... काम-बाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

षटरस शुभ खाने से, इस तन का पोषण होता है।
भक्ति मय व्यञ्जन श्रेष्ठ सरस, निज क्षुधा रोग को खोता है।।
चेतन की क्षुधा मिटे, हम नैवेद्य सरस यह लाए है।
हम मोक्ष सप्तमी की पूजा, प्रभु आज रचाने आए हैं।।

ॐ ह्रीं श्री .... क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ दीपक की मालाओं से, प्रभु जग का तिमिर नशाते हैं।
है मोह तिमिर अन्तर्मन में, तिमिर मिटा न पाते है।
चेतन के दिव्य प्रकाश हेतु, यह दीप जलाकर लाए है।।
हम मोक्ष सप्तमी की पूजा, प्रभु आज रचाने आए हैं।।

ॐ ह्रीं श्री ...... महामोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा

शुभ योग ऋतु आ जाने से, उपवन फल से भर जाते हैं।
फल योग्य ऋतु के जाते हो, वह फल सारे झड़ जाते हैं।।
अब सरस भक्ति का फल पाने, फल यहाँ चढ़ाने लाए हैं।
हम मोक्ष सप्तमी की पूजा, प्रभु यहाँ चढ़ाने लाए हैं।।

ॐ ह्रीं श्री ....अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्री .....महामोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा

पथ में आने वाली बाधा हमको, व्याकुल कर जाती है।
किन्तु व्याकुलता इस मन की, कर्मों का बंध कराती है।।
अब पद अनर्घ शाश्वत पाने, यह बनाकर लाए हैं।
हम मोक्ष सप्तमी की पूजा, प्रभु यहाँ चढ़ाने लाए हैं।।

ॐ ह्रीं श्री ......अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- . . . . ।
. . . . ।।

शान्तये शांतिधारा.....

. . . . ।

. . . . ।।

इति पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जयमाला

दोहा– पार्श्व प्रभु के चरण का करते हम प्रच्छाल।
मोक्ष सप्तमी पर्व की, गाते है जयमाल।।

(कुसमलता)

जम्बूद्वीप के कुरु जाड़ाल शुभ देश में हस्तिनापुर शुभकार।
विजय सेन विजया बती के, दो नारियाँ थी मनहार।।
मुकुट केशरी विधि सवेरी, दोनों में था प्रेम विशेष।
समय बीतने पर वह दोनों, वियाही गईं अयोध्या देश।।1।।
बुद्धि और सुबुद्धि सागर, चारण ऋद्धि धर अनगार।
नगर हस्तिनापुर में आए, लेने को मुनिवर आहार।।
स्वयं बेटियों का राजा ने मुनिवर से पूछा शुभ हाल।
राजा के प्रश्नों का उत्तर दिया, मुनि ने तब तत्काल।।2।।
श्रेष्ठी थे धन दत्त यहाँ पर, बेटी जिन मती थी गुणवान।
वन सती माली को लड़की भी, जिसको साथी रही प्रधान।।
मुकुट सप्तमी का व्रत करके, गई घूमने को उद्यान।
डसा सर्प ने उन दोनों को, णमोकार तब पड़ा महान।।3।।
स्वर्ग लोक जन्म लिया तव, किया स्वर्ग के सुख का भोग।
वहाँ से चय करके आई, मिला यहाँ पर भी संयोग।।
सुनकर के राजा के मन में, हर्ष हुआ तव अपरम्पार।
पुनः बुटियों ने व्रत धारे, गुरु चरणों में फिर शुभकार।।4।।

यथा विधि व्रत का पालन कर, किया समाधि सहित मरग।
सोहवें स्वर्गों में जाकर, सुर पदवी को किया वरग।।
नर भव पाकर मुनि व्रत धरके, स्वयं करेंगे कर्म विनाश।
यह संसार वास तजकर के, होगा मोक्ष महल में वास।।5।।
श्रावण शुक्ल सप्तमी का शुभ, मुकुट सप्तमी कहते लोग।
पार्श्व नाथ ने शिवपद पाया, यह भी बना श्रेष्ठ संयोग।।
मुकुट सप्तमी के व्रत धारी, करते है प्रोषध उपवास।
पूजा भक्ति स्वाध्याय शुभ, करते है लेकर अवकाश।।6।।
सात वर्ष व्रत कर उद्यापन, सात वस्तु का करके दान।
श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ शुभ, करें भाव से श्रेष्ठ विधान।।
यदि उद्यापन न कर पावे, तो व्रत दूने करें विशेष।
करें दान श्रद्धान शक्तिशः कहते हैं प्रभु वीर जिनेश।।7।।
मुकुट सप्तमी के व्रत की है, महिमा जग में अपरम्पार।
जग में रहकर स्वर्ग राज, सुख प्राणी पाते बारम्बार।।
सप्त तत्व का श्रद्धा धारी, पावे सप्तम तत्व महान।
जग में रहकर स्वर्ग राज, सुख प्राणी पाते बारम्बार।।
सप्त तत्व का श्रद्धा धारी, पावे सप्तम तत्व महान।
अल्प समय में कर्म क्षीण कर, 'विशद' प्राप्त करना निर्वाण।।8।।

दोहा– पार्श्वनाथ भगवान का जपें निरन्तर नाम।
भक्ति भाव से चरण में, करके विशद प्रणाम।।

ॐ ह्रीं....सम्यक्चारित्रेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– मुकुट सप्तमी व्रत किए, मिले मोक्ष साम्राज।
शिव रमणी को वरण कर, पावे शिवपुर राज।।

इत्याशीर्वादः

सप्तऋषि पूजा

स्थापना

मन्व प्रथम स्वरमन्व द्वितिय मुनि, श्री निचय तृतिय मुनिराज।
चौथे सर्व सुन्दर श्री जयवान, पञ्चम कहलाए ऋषिराज।।
लालस छठे जयमित्र सातवें, ऋद्धिधारी सर्व महान।
विशद हृदय के सिंहासन पर, करते भाव सहित आह्वान।।

दोहा– **सप्त ऋषि इस लोक में, हरते जग का क्लेश।**
अष्ट द्रव्य से पूजते, हरने कर्म अशेष।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चारण ऋद्धिधारी श्री सप्त ऋषीश्वराः ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(शम्भू छंद)

हैं जन्म जन्म के प्यासे हम, जल पीकर प्यास बुझाते हैं।
पर प्यास शांत न हो पाती, जल ले पूजा को आते हैं।।
हम सप्त ऋषि की पूजा कर, अपना सौभाग्य जगाएंगे।
अब छोड़ के यह संसार वास, सीधे शिवपुर को जाएंगे।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चारण–ऋद्धिधारी श्री मन्व–स्वरमन्व–निचय–सर्वसुन्दर जयवान–विनयलालस–जयमित्र सप्त ऋषिभ्यो जन्म–जरा–मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जड़ कर्मों ने संताप दिया, शीतलता न मिल पाई है।
शीतल चंदन यह चढ़ा रहे, अब आतम की सुधि आई है।।
हम सप्त ऋषि की पूजा कर, अपना सौभाग्य जगाएंगे।
अब छोड़ के यह संसार वास, सीधे शिवपुर को जाएंगे।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चारण–ऋद्धिधारी श्री मन्व–स्वरमन्व–निचय–सर्वसुन्दर जयवान–विनयलालस–जयमित्र सप्त ऋषिभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

यह पद पाने को जग सारा, पुरुषार्थ निरन्तर करता है।
न अक्षय पद मिल पाता है, कई बार जन्मता मरता है।।
हम सप्त ऋषि की पूजा कर, अपना सौभाग्य जगाएंगे।
अब छोड़ के यह संसार वास, सीधे शिवपुर को जाएंगे।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चारण–ऋद्धिधारी श्री मन्व–स्वरमन्व–निचय–सर्वसुन्दर जयवान–विनयलालस–जयमित्र सप्त ऋषिभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

मन अशुभ भाव में रत रहकर, भोगों की नींद में सोता है।
जो पुष्प सहित पूजा करता, वह बीज पुण्य का बोता है।।
हम सप्त ऋषि की पूजा कर, अपना सौभाग्य जगाएंगे।
अब छोड़ के यह संसार वास, सीधे शिवपुर को जाएंगे।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चारण–ऋद्धिधारी श्री मन्व–स्वरमन्व–निचय–सर्वसुन्दर जयवान–विनयलालस–जयमित्र सप्त ऋषिभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

भोजन से तृप्ति न होती है, भोजन करके फिर भूख लगे।
नैवेद्य चढ़ाते यह अनुपम, अब निज चेतन की याद जगे।।
हम सप्त ऋषि की पूजा कर, अपना सौभाग्य जगाएंगे।
अब छोड़ के यह संसार वास, सीधे शिवपुर को जाएंगे।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चारण–ऋद्धिधारी श्री मन्व–स्वरमन्व–निचय–सर्वसुन्दर जयवान–विनयलालस–जयमित्र सप्त ऋषिभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बाहर में उजाला करते हैं, अन्तर में अन्धेरा छाया है।
अब ज्ञान दीप की ज्योति जगे, हमने यह दीप जलाया है।।
हम सप्त ऋषि की पूजा कर, अपना सौभाग्य जगाएंगे।
अब छोड़ के यह संसार वास, सीधे शिवपुर को जाएंगे।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चारण–ऋद्धिधारी श्री मन्व–स्वरमन्व–निचय–सर्वसुन्दर जयवान–विनयलालस–जयमित्र सप्त ऋषिभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सुख–दुख कर्मों से मिलता है, सदियों से कर्म सताते हैं।
कर्मों का धुआँ उड़ाने को, अग्नि में धूप जलाते हैं।।
हम सप्त ऋषि की पूजा कर, अपना सौभाग्य जगाएंगे।
अब छोड़ के यह संसार वास, सीधे शिवपुर को जाएंगे।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चारण–ऋद्धिधारी श्री मन्व–स्वरमन्व–निचय–सर्वसुन्दर जयवान–विनयलालस–जयमित्र सप्त ऋषिभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

रसदार सरस फल खाने से, मन खुशियों से भर जाता है।
संसार चक्र में फँसने से, न मुक्ती फल मिल पाता है।।
हम सप्त ऋषि की पूजा कर, अपना सौभाग्य जगाएंगे।
अब छोड़ के यह संसार वास, सीधे शिवपुर को जाएंगे।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चारण–ऋद्धिधारी श्री मन्व–स्वरमन्व–निचय–सर्वसुन्दर जयवान–विनयलालस–जयमित्र सप्त ऋषिभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

मन वचन काय हो अन्तर्मुख, विषयों से मन अब हट जाए।
शुभ पद अनर्घ्य पाने हेतु, यह अर्घ्य बनाकर हम लाए।।
हम सप्त ऋषि की पूजा कर, अपना सौभाग्य जगाएंगे।
अब छोड़ के यह संसार वास, सीधे शिवपुर को जाएंगे।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चारण–ऋद्धिधारी श्री मन्व–स्वरमन्व–निचय–सर्वसुन्दर जयवान–विनयलालस–जयमित्र सप्त ऋषिभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– भक्त पुकारें आपको, लेकर आए आश।
शांतिधारा दे रहे, हो चरणों में वास।।

शांतये शांतिधारा

आकर दर्शन दीजिए, हे त्रिभुवनपति ईश।
पुष्पाञ्जलि करते विशद, चरण झुकाकर शीश।।

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जयमाला

दोहा– **चारण ऋद्धिधर मुनि, करुणाकर ऋषिराज।**
जयमाला गाते यहाँ, तारण तरण जहाज।।

(शम्भू छंद)

जय चारण ऋद्धिधारी मुनि, तुमने शिवपथ को अपनाया।
रत्नत्रय को पाकर स्वामी, कई श्रेष्ठ ऋद्धियों को पाया।।
मुनिराज प्रथम है श्री मन्व, उत्तम संयम पाने वाले।
मिथ्यादि कषायों के नाशक, शुभ जैन धर्म के रखवाले।।
द्वितीय मुनिवर स्वर मन्व कहे, जिनने इन्द्रिय जय पाई है।
सारे जग की समता शायद, मुनिवर में आन समाई है।।
श्री निचय हैं तृतिय मुनिवर, जिनने तत्त्वों का ज्ञान किया।
जग वैर विरोधों को तजकर, निज आत्म तत्त्व का ध्यान किया।।
हैं मुनिवर सर्व सुन्दर चौथे, जो मोक्षमार्ग अपनाए हैं।
इस जग की मृगतृष्णा तजके, वैराग्य भावना भाए हैं।।
जयवान मुनी पंचम गाए, जो तन–मन पर जय पाए हैं।
अध्यात्म आत्म बल का गौरव, मुनिराज स्वयं प्रगटाए हैं।।
छठवे मुनिराज विनय लालस, हैं विनय आदि गुण के धारी।
सुन्दर आकर्षक वीतराग, छवि लगती है मन को प्यारी।।
जयमित्र सुमित्र जगत् जनके, जग को शिव राह दिखाते हैं।
चलकर के स्वयं मोक्षपथ पर, सबको शिवपुर पहुँचाते हैं।।

मथुरा नगरी के लोग सभी, जब मरी रोग से अकुलाए।
यह सातों मुनिवर एक साथ, आकाश गमन करते आये।।
भक्तों ने भक्ति भाव सहित, जिनके खुश होकर गुण गाए।
तन से स्पर्शित वायु से, सब जीव रोग मुक्ती पाए।।
नर-नारी मिलकर के सारे, मुनिवर की जय-जयकार किए।
जब निर्भय हुए सभी प्राणी, कई लोगों ने व्रत ग्रहण किए।।
मुनिराज ग्रीष्म ऋतु में जाकर, आतापन आदि योग धरें।
वह क्षुधा तृषा परिषह जयकर, निजकर्म निर्जरा नित्य करें।।
वर्षा ऋतु में तरुवर तल में, निज आत्म ध्यान में रत रहते ।
सरवर सरिता चौपाटी पर, जो शीत परीषह भी सहते।।
जब ध्यानारूढ़ मुनी होते, तब तरू शैल सम हो जाते।
वनचारी मृग आदि आकर, मुनिवर से खुजली खुजलाते।।
व्रजासन मृतकाशन आदि, धारण करके तप तपते हैं।
मुनिराज ध्यान में रत होकर, णमोकार मंत्र शुभ जपते हैं।।
पूजा करने से मुनिवर की, सब रोग शोक नश जाते हैं।
कई दीन दरिद्री अर्चाकर, अपना सौभाग्य जगाते हैं।।

दोहा- अर्चा करने के लिये, आये हम ऋषिराज।
'विशद' सिन्धु बनकर मिले, हमको शिवपुर राज।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चारण-ऋद्धिधारी श्री मन्व-स्वरमन्व-निचय-सर्वसुन्दर जयवान-विनयलालस-जयमित्र सप्त ऋषिभ्यो अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- नमन चरण ऋषिराज के, करते हैं जो लोग।
ऋद्धि सिद्धि सौभाग्य का, पाते वे संयोग।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

रोहिणी व्रत पूजा

स्थापना *(दोहा)*

रोहिणी नाम नक्षत्र का, आता है प्रति मास।
श्रेष्ठ रोहिणी व्रत करें, करके शुभ उपवास।।
जिनाभिषेक पूजन करें, स्वाध्याय भी साथ।
आह्वानन जिनदेव का, करें झुकाकर माथ।।
वासुपूज्य भगवान का, किए हृदय से ध्यान।
जीवन सुखमय हो विशद, पाएँगे निर्वाण।।

ॐ ह्रीं रोहिणी व्रत आराध्य श्री वासुपूज्य जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(शम्भू छंद)

हमने प्रभु काल अनादि से, निज के स्वरूप को ना जाना।
निर्मल जल सम चेतन सुन्दर, शुभ यह रहस्य न पहिचाना।।
अब श्रेष्ठ रोहिणी व्रत करके, हम ज्ञान जगाने आए हैं।
वासुपूज्य प्रभु के चरणों में, हम शीश झुकाने आए हैं।।1।।

ॐ ह्रीं रोहिणीव्रत आराध्य श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हमको भव ताप जलाता है, हम अब तक जान न पाए हैं।
शीतल स्वरूप पाने अनुपम, चंदन यहाँ घिसकर लाए हैं।।
अब श्रेष्ठ रोहिणी व्रत करके, हम ज्ञान जगाने आए हैं।
वासुपूज्य प्रभु के चरणों में, हम शीश झुकाने आए हैं।।2।।

ॐ ह्रीं रोहिणीव्रत आराध्य श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्व.स्वाहा।

अक्षय पद बिन क्षत विक्षत हुए, भौतिक पदवी में उलझाए।
अब अक्षय पद पाने हेतु यह, पुञ्ज सुअक्षत के लाए।।
अब श्रेष्ठ रोहिणी व्रत करके, हम ज्ञान जगाने आए हैं।
वासुपूज्य प्रभु के चरणों में, हम शीश झुकाने आए हैं।।3।।

ॐ ह्रीं रोहिणीव्रत आराध्य श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्व.स्वाहा।

है पाप पंक यह काम अरी, चक्कर में इसके भरमाए।
उस काम अरी के नाश हेतु, यह पुष्प मनोहर हम लाए।।
अब श्रेष्ठ रोहिणी व्रत करके, हम ज्ञान जगाने आए हैं।
वासुपूज्य प्रभु के चरणों में, हम शीश झुकाने आए हैं।।4।।

ॐ ह्रीं रोहिणीव्रत आराध्य श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्व.स्वाहा।

इस संख्यातीत लोक का हमने, अन्न आज तक खाया है।
अब क्षुधा रोग हम पूर्ण नशाएँ, मन में भाव समाया है।।
अब श्रेष्ठ रोहिणी व्रत करके, हम ज्ञान जगाने आए हैं।
वासुपूज्य प्रभु के चरणों में, हम शीश झुकाने आए हैं।।5।।

ॐ ह्रीं रोहिणीव्रत आराध्य श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

हम पर भावों के प्रबल वेग में, निश दिन बहते आए हैं।
अब मोह कर्म के नाश हेतु, यह दीप जलाने लाए हैं।।
अब श्रेष्ठ रोहिणी व्रत करके, हम ज्ञान जगाने आए हैं।
वासुपूज्य प्रभु के चरणों में, हम शीश झुकाने आए हैं।।6।।

ॐ ह्रीं रोहिणीव्रत आराध्य श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

सुख दुःख जीवन की आशा में, सदियों से भटकते आए हैं।
अब पूर्ण नाश हो कर्मों का, यह धूप जलाने लाए हैं।।
अब श्रेष्ठ रोहिणी व्रत करके, हम ज्ञान जगाने आए हैं।
वासुपूज्य प्रभु के चरणों में, हम शीश झुकाने आए हैं।।7।।

ॐ ह्रीं रोहिणीव्रत आराध्य श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अनगिनते कर्म किए हमने, निज को पहचान न पाए हैं।
अब मोक्ष महाफल पाने को, फल आज चढ़ाने लाए हैं।।
अब श्रेष्ठ रोहिणी व्रत करके, हम ज्ञान जगाने आए हैं।
वासुपूज्य प्रभु के चरणों में, हम शीश झुकाने आए हैं।।8।।

ॐ ह्रीं रोहिणीव्रत आराध्य श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्व. स्वाहा।

कर्मों का रंग चढ़ा भारी, हम निज को जान न पाए हैं।
कर्मों की चादर काट सकें, यह अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।।
अब श्रेष्ठ रोहिणी व्रत करके, हम ज्ञान जगाने आए हैं।
वासुपूज्य प्रभु के चरणों में, हम शीश झुकाने आए हैं।।9।।

ॐ ह्रीं रोहिणीव्रत आराध्य श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा– **शांतिधारा दे रहे, 'विशद' भाव के साथ।**
शांति हमको हो प्रभु, झुका चरण में माथ।।

शांतये शांतिधारा

पुष्पाञ्जलि करने 'विशद', लाए सुरभित फूल।
पूजा करते भाव से, पाने भव का कूल।।

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जयमाला

दोहा– **श्रेष्ठ रोहिणी व्रत करें, करके प्रभु का ध्यान।**
जयमाला गाए शुभम्, उसका हो कल्याण।।

(चौपाई छंद)

अंग देश भारत का जानो, चम्पापुर नगरी शुभ मानो।
माधव भूप वहाँ का भाई, रानी लक्ष्मीमति शुभ गाई।।
सात पुत्र उसके शुभ जानो, कन्या श्रेष्ठ रोहिणी मानो।
नगर हस्तिनापुर का स्वामी, हुआ वीतशोका शुभ नामी।।
विद्युतश्रवा ने सुत उपजाया, नाम अशोक पुत्र ने पाया।
चम्पापुरी नगरी में आया, रोहिणी से शुभ ब्याह रचाया।।
चारण ऋद्धिधर मुनि आए, रोहिणी का वृत्तान्त सुनाए।
नगर हस्तिनापुर यह गाया, राजा वास्तुपाल कहलाया।।
श्रेष्ठ मित्र उसका कहलाया, शुभम् नाम धनमित्र बताया।
दुर्गन्धा पुत्री को पाया, मन में वह भारी अकुलाया।।

वर उसको जब मिल न पाया, व्यसनी से तब ब्याह रचाया।
व्यसनी छोड़ गया निज नारी, दुखी हुई वह मन में भारी।।
अमृतसेन मुनि जब आए, दुर्गन्धा ने दर्शन पाए।
मुनी भवान्तर तब बतलाए, शुभकर पावन वचन सुनाए।।
है सौराष्ट देश शुभकारी, पर्वत पास रहा गिरनारी।
नृप भूपाल नगर का भाई, सिंधुमति रानी शुभ गाई।।
राजा वनक्रीड़ा को आए, उसने मुनि के दर्शन पाए।
राजा तब यह बोले वाणी, चौका आप लगाओ रानी।।
भोग वियोग ने उसे सताया, रोष हृदय में उसके आया।
कड़वी तुम्बी वह बुलवाई, मुनिवर को उसने खिलवाई।।
हुई वेदना तन में भारी, प्राण तजे मुनिवर अविकारी।
नर-नारी सब मिलकर आए, मुनि की अन्तिम क्रिया कराए।।
रानी देश निकाला पाई, कुष्ठ हुआ तन में भी भाई।
उसने भारी दुःख उठाया, मरकर नरक गति को पाया।।
वहाँ से आकर पशु गति पाई, बनी बाद दुर्गन्धा भाई।
मुनिवर ने यह व्रत बतलाया, नाम रोहिणी जिसका गाया।।
रोहिणी नाम नक्षत्र कहाए, एक बार प्रतिमाह में आए।
वर्ष पाँच अरु माह भी जानो, हो उपवास सहित यह मानो।।
फिर व्रत का उद्यापन कीजे, यथायोग्य शुभ दान भी दीजे।
उद्यापन यदि न कर पावें, तो व्रत दूने करते जावें।।
दुर्गन्धा ने यह व्रत भाई, भाव सहित कीन्हा सुखदायी।
अन्त समय संन्यास जो पाई, मरकर के जो स्वर्ग सिधाई।।
वहाँ से चयकर के वह आई, माधव राज की पुत्री भाई।
नृप अशोक के साथ में भाई, माधव ने शादी रचवाई।।
फिर अशोक के भव बतलाए, मुनिवर इस प्रकार से गाए।
वन में भील बना तू भाई, मिथ्या मति तूने जो पाई।।

मुनिवर पर उपसर्ग कराया, मरके सप्तम नरक को पाया।
जन्म मरण का दुख बहु पाया, वणिक के गृह में फिर उपजाया।।
दुर्गन्धित तन तूने पाया, लोगों ने तव दूर भगाया।
मुनि की आज्ञा तूने पाई, रोहिणी व्रत कीन्हा सुखदायी।।
जन्म स्वर्ग में तूने पाया, वहाँ से चयकर के तू आया।
फिर विदेह में तू उपजाया, अर्ककीर्ति चक्री कहलाया।।
वहाँ पे तूने दीक्षाधारी, फिर देवेन्द्र बना शुभकारी।
फिर चयकर पृथ्वी पर आया, तू अशोक राजा कहलाया।।
दोनों जलकर के गृह आए, सुख में अपना समय बिताए।
वासुपूज्य जिनवर कहलाए, समवशरण में शोभा पाए।।
दिव्य देशना सुनकर भाई, दोनों ने शुभ दीक्षा पाई।
किया सुतप बनके अनगारी, मुनि अशोक ने अतिशयकारी।।
अपने सारे कर्म नशाए, अन्त में शिव पदवी को पाए।
रोहिणी आर्यिका स्वर्ग सिधाई, वहाँ पर शुभ सुर पदवी पाई।।
वहाँ से चयकर के फिर आए, उत्तम महाव्रतों को पाए।
अपने सारे कर्म नशाए, अनुक्रम से वह मोक्ष सिधाए।।
किए भाव से जो व्रत भाई, उन सबने शिव पदवी पाई।
भाव से यह व्रत करते जाएँ, 'विशद' सभी वह शिवपद पाएँ।।

दोहा– **श्रेष्ठ रोहिणी व्रत किए, नृपति अशोक महान।**
क्रमशः रानी रोहिणी, ने पाया निर्वाण।।

ॐ ह्रीं रोहिणीव्रत आराध्य श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **श्रेष्ठ रोहिणी व्रत करें, श्रावक श्रेष्ठ प्रधान।**
स्वर्गों का सुख भोगकर, पावे मोक्ष निधान।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जिनगुण सम्पत्ति पूजा

(स्थापना)

सोलह कारण भावना, पूर्व भवों में भाते हैं।
तीर्थंकर प्रकृति के बन्धक, पञ्च कल्याणक पाते हैं।।
चौंतिस अतिशय पाने वाले, प्रातिहार्य प्रगटाते हैं।
अनन्त चतुष्टय प्रकट करें जो, केवलज्ञान जगाते हैं।।
प्राप्त हमें हो जिनगुण सम्पत्ति, शिव पद में होवे विश्राम।
विशद हृदय में आह्वानन कर, करते बारम्बार प्रणाम।।

ॐ ह्रीं श्री जिनगुण सम्पत्ति समूह ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री जिनगुण सम्पत्ति समूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्री जिनगुण सम्पत्ति समूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(वीर छंद)

गंगा यमुना का निर्मल जल, तन का मल ही धो पाता है।
जो लगा कर्म मल चेतन में, वह रत्नत्रय से जाता है।।
हम जिनगुण की पूजा करके, अब निज गुण पाने आए हैं।
अब जिनगुण सम्पत्ति पाने को, यह नीर चढ़ाने लाए हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्री त्रिषष्टि जिनगुण सम्पद्भ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित चन्दन की शीतलता, नर देह ताप को शांत करे।
क्रोधादि कषायों का आतप, जिनधर्म गंध उपशांत करे।।
हम जिनगुण की पूजा करके, अब निज गुण पाने आए हैं।
अब निजगुण सम्पत्ति पाने चंदन, हम यहाँ चढ़ाने लाए हैं।।2।।

ॐ ह्रीं श्री त्रिषष्टि जिनगुण सम्पद्भ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

आतम स्वरूप अक्षय अखण्ड, जो संयम से मिल पाता है।
संयम के उपवन में सौरभ, जिसका अतिशय खिल जाता है।।
हम जिनगुण की पूजा करके, अब निज गुण पाने आए हैं।
अब जिनगुण की सम्पत्ति पाने, यह अक्षय अक्षत लाए हैं।।3।।

ॐ ह्रीं श्री त्रिषष्टि जिनगुण सम्पद्भ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पों को पाकर मन मेरा, अतिशय पुलकित हो जाता है।
भँवरे सम भ्रमण किया करती, न आत्म ज्ञान जग पाता है।।
हम जिनगुण की पूजा करके, अब निज गुण पाने आए हैं।
अब जिनगुण सम्पत्ति पाने को, यह पुष्प चढ़ाने लाए हैं।।4।।

ॐ ह्रीं श्री त्रिषष्टि जिनगुण सम्पद्भ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ सरसव्यंजन खाकर भी, ना तृप्त कभी हो पाते हैं।
वह जिह्वा स्वाद के बाद सभी, क्षणभर में ही नश जाते हैं।।
हम जिनगुण की पूजा करके, अब निज गुण पाने आए हैं।
अब जिनगुण सम्पत्ति पाने को, नैवेद्य चढ़ाने लाए हैं।।5।।

ॐ ह्रीं श्री त्रिषष्टि जिनगुण सम्पद्भ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है मोह तिमिर का अँधियारा, सदियों से हमें घुमाया है।
भव-भव में दुःख सहे हमने, नहिं सुपथ हमें दिख पाया है।।
हम जिनगुण की पूजा करके, अब निज गुण पाने आए हैं।
अब जिनगुण सम्पत्ति पाने को, हम दीप जलाकर लाए हैं।।6।।

ॐ ह्रीं श्री त्रिषष्टि जिनगुण सम्पद्भ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हमने कर्मों को जड़ माना, अरु बन्ध सदा करते आये।
अज्ञानी बनकर ठगे स्वयं, न कर्म बन्ध से बच पाए।।
हम जिनगुण की पूजा करके, अब निज गुण पाने आए हैं।
अब जिनगुण सम्पत्ति पाने को, यह धूप जलाने लाए हैं।।7।।

ॐ ह्रीं श्री त्रिषष्टि जिनगुण सम्पद्भ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल दाता जग में कोई नहीं, हर जीव स्वयं फल पाता है।
किन्तु यह फल की आशा में, चारों गति में भटकाता है।।
हम जिनगुण की पूजा करके, अब निज गुण पाने आए हैं।
अब जिनगुण सम्पत्ति पाने को, यह श्रेष्ठ श्रीफल लाए हैं।।8।।

ॐ ह्रीं श्री त्रिषष्टि जिनगुण सम्पद्भ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जिस गति में जन्म मिला हमको, उस गति में ही रम जाते हैं।
शुभ पद अनर्घ्य को पाने का, पुरुषार्थ नहीं कर पाते हैं।।
हम जिनगुण की पूजा करके, अब निज गुण पाने आए हैं।
अब जिनगुण सम्पत्ति पाने को, यह अर्घ्य बनाकर लाए हैं।।9।।

ॐ ह्रीं श्री त्रिषष्टि जिनगुण सम्पद्भ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– श्री जिनेन्द्र के गुण तथा, जिनवर पूज्य त्रिकाल।
जिनगुण सम्पत्ति की यहाँ, गाते हैं जयमाल।।

शम्भू छंद

सुर नर विद्याधर नरेन्द्र भी, पद में शीश झुकाते हैं।
तीर्थंकर के पाद मूल में, जिनगुण पाने आते हैं।।
जिन गुण सम्पद मोक्षमार्ग में, अतिशय कारण जाना है।
तीर्थंकर प्रकृति के कारण, सोलह कारण माना है।।1।।
दर्श विशुद्धि आदि सोलह, भव्य भावना भाते हैं।
प्रबल पुण्य से भव्य जीव ही, तीर्थंकर पद पाते हैं।।
गर्भ जन्म तप ज्ञान मोक्ष यह, उत्सव पंच कहाते हैं।
तीर्थंकर प्रकृति के बन्धक, कल्याणक यह पाते हैं।।2।।
धर्म तीर्थ के नेता बनकर, मोक्षमार्ग दर्शाते हैं।
पञ्च परावर्तन तजकर के, शिव पदवी को पाते हैं।।
छत्र चँवर भामण्डल अनुपम, दिव्य ध्वनि सुनाते हैं।
पुष्प वृष्टि सुर सिंहासन तरु, दुन्दुभि देव बजाते हैं।।3।।
तीर्थंकर पद की महिमा यह, प्रातिहार्य प्रगटाते हैं।
समवशरण लक्ष्मी के भर्त्ता, त्रिभुवनपति कहलाते हैं।।
जन्म समय की महिमा अनुपम, दश अतिशय जिन पाते हैं।
केवलज्ञान के दश अतिशय जिन, ज्ञान जगे प्रगटाते हैं।।4।।

चौदह अतिशय देव शरण में, आकर श्रेष्ठ दिखाते हैं।
श्री जिनेन्द्र चौंतिस अतिशय यह, महिमाशाली पाते हैं।।
इस प्रकार त्रेसठ गुण के शुभ, त्रेसठ जो व्रत करते हैं।
ऋद्धि–सिद्धि सौभाग्यप्रदायक, कोष पुण्य से भरते हैं।।5।।
प्रतिपदा के सोलह व्रत हैं, पाँच पञ्चमी के जानो।
आठ अष्टमी के व्रत भाई, बीस दशें के तुम मानो।।
चौदस के व्रत चौदह होते, जोड़ सभी त्रेसठ गाए।
भाव सहित जो व्रत करते हैं, वह जिनगुण सम्पद पाए।।6।।
श्रावक और श्राविका कोई, विधि सहित व्रत करते हैं।
सुख शांति पा जाते हैं वह, अपने सब दुःख हरते हैं।।
रोग मरी दुर्भिक्ष कलह से, उनकी रक्षा होती है।
भूत पिशाच आदि कोई भी, सर्व आपदा खोती है।।7।।
ओज तेज बल वृद्धि वैभव, स्वर्गों के सुख पाते हैं।
कामदेव चक्री बनकर के, तीर्थंकर बन जाते हैं।।
समवशरण सा वैभव पाकर, मोक्ष लक्ष्मी पाते हैं।
सिद्ध शिला पर जाने वाले, शिव सुख में रम जाते हैं।।8।।
यही भावना भाते हैं प्रभु, कर्म सभी क्षय हो जावें।
बोधि समाधि लाभ प्राप्त हो, सुगति गमन हम भी पावें।।
होवे मरण समाधि मेरा, जिनगुण सम्पदा पा जावें।
'विशद' ज्ञान को पाकर हम भी, परम श्रेष्ठ शिव सुख पावें।।9।।

(धत्ता छंद)

जय जय जिन स्वामी, शिवपथ गामी, जिनगुण सम्पत के स्वामी।
तव चरण नमामि त्रिभुवननामी, बनो प्रभो ! मम पथ गामी।।

ॐ ह्रीं श्री त्रिषष्टि जिनगुण सम्पद्भ्यो अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– सुर गणपति न कर सकें, गुण गणना तव नाथ।
वह गुण पाने हेतु तव, चरण झुकाते माथ।।

इत्याशीर्वादः

चारित्र शुद्धि व्रत पूजा

स्थापना

पञ्च महाव्रत समिति गुप्तियाँ, तेरह विधि होता चारित्र।
भवि जीवों के लिए बताया, तीन लोक में अनुपम मित्र।।
सम्यक् चारित्र की शुद्धि का, उद्यम करते जीव महान।
विशद भाव से पूजा करने, हेतु करते हम आह्वान।।

दोहा– सम्यक् चारित्र धारकर, पद पाएँ निर्ग्रन्थ।
कर्म घातिया नाशकर, हो जाएँ अर्हन्त।।

ॐ ह्रीं चारित्र शुद्धि व्रत ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(शम्भू छंद)

स्वर्ण कलश में प्रासुक जल भर, हम पूजन को लाए हैं।
जन्म जरादि रोग नशाकर, शिवपद पाने आए हैं।।
सम्यक् चारित्र की शुद्धि को, पूजा आज रचाते हैं।
चारित्र धारी जिन संतों के, पद में शीश झुकाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं चारित्र शुद्धि व्रताय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन केसर आदि सुगन्धित, हमने यहाँ घिसाए हैं।
भव संताप नशाने को हम, आज यहाँ पर आए हैं।।
सम्यक् चारित्र की शुद्धि को, पूजा आज रचाते हैं।
चारित्र धारी जिन संतों के, पद में शीश झुकाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं चारित्र शुद्धि व्रताय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मोती सम अक्षय अक्षत हम, यहाँ चढ़ाने लाए हैं।
अक्षय पद पाने को अनुपम, भाव बनाकर आए हैं।।

सम्यक् चारित्र की शुद्धि को, पूजा आज रचाते हैं।
चारित्र धारी जिन संतों के, पद में शीश झुकाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं चारित्र शुद्धि व्रताय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित पुष्प मनोहर सुन्दर, थाली में भर लाए हैं।
कामबाण की बाधा अपनी, हम हरने को आए हैं।।
सम्यक् चारित्र की शुद्धि को, पूजा आज रचाते हैं।
चारित्र धारी जिन संतों के, पद में शीश झुकाते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं चारित्र शुद्धि व्रताय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ ताजे नैवेद्य बनाकर, अर्चा करने लाए हैं।
क्षुधा रोग है काल अनादि, उसे नशाने आए हैं।।
सम्यक् चारित्र की शुद्धि को, पूजा आज रचाते हैं।
चारित्र धारी जिन संतों के, पद में शीश झुकाते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं चारित्र शुद्धि व्रताय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत का यह शुभ दीप जलाया, आरति करने लाए हैं।
मोह तिमिर छाया है भारी, मोह नशाने आए हैं।।
सम्यक् चारित्र की शुद्धि को, पूजा आज रचाते हैं।
चारित्र धारी जिन संतों के, पद में शीश झुकाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं चारित्र शुद्धि व्रताय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन आदि शुभ द्रव्यों से, धूप बनाकर लाए हैं।
वसु कर्मों ने हमें सताया, छुटकारा पाने आए हैं।।
सम्यक् चारित्र की शुद्धि को, पूजा आज रचाते हैं।
चारित्र धारी जिन संतों के, पद में शीश झुकाते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं चारित्र शुद्धि व्रताय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ऐला केला श्रीफल आदि, यहाँ चढ़ाने लाए हैं।
मोक्ष महाफल पाने को हम, चारित्र पाने आए हैं।।

सम्यक् चारित्र की शुद्धि को, पूजा आज रचाते हैं।
चारित्र धारी जिन संतों के, पद में शीश झुकाते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं चारित्र शुद्धि व्रताय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंधादि अष्ट द्रव्य का, अनुपम अर्घ्य बनाए हैं।
पद अनर्घ पाने हेतु यह, अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।।
सम्यक् चारित्र की शुद्धि को, पूजा आज रचाते हैं।
चारित्र धारी जिन संतों के, पद में शीश झुकाते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं चारित्र शुद्धि व्रताय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा– धारा देते आज, शांति पाने के लिए।
पाने शिव का राज, पूजा करते भाव से।।

शांतये शांतिधारा

भाव भक्ति के साथ, पुष्पाञ्जलि करते यहाँ।
हे त्रिभुवन के नाथ, चारित्र शुद्धि मम करो।।

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जयमाला

दोहा– सम्यक् चारित्र पूज्य है, तीनों लोक त्रिकाल।
चारित्र शुद्धि के लिए, गाते हैं जयमाल।।

(शम्भू छंद)

देव–शास्त्र–गुरु के प्रति श्रद्धा, करने से हो सद् श्रद्धान।
सम्यक् श्रद्धा पा लेने से, प्राणी पाते सम्यक् ज्ञान।।
तन चेतन का भेद प्राप्त कर, करने निज आतम का ध्यान।
सम्यक् चारित्र धारण करते, जग के प्राणी यह सम्मान।।
सकल वासना तजने वाले, शुद्ध शीलधर बन्ध विहीन।
वीतराग संयम के धारी, निज स्वभाव में रहते लीन।।

पञ्च महाव्रत धारण करते, पञ्च समीति गुप्ति वान।
दश धर्मों के धारी अनुपम, इन्द्रिय जय करते गुणवान।।
समता वंदना स्तुति करते, प्रतिक्रमण करते स्वाध्याय।
कायोत्सर्ग धारने वाले, ध्यान करें जिन का सुखदाय।।
तन से राग त्यागने वाले, केशलुंच करते निज हाथ।
वस्त्र त्याग निर्ग्रन्थ भेष शुभ, धारण करते हैं मुनिनाथ।।
दातुन मंजन न्हवन त्यागते, थिति भोजन करते इक बार।
क्षिति शयन करने वाले मुनि, शल्य रहित होते शुभकार।।
पाँच भेद सम्यक् चारित्र के, जैनागम में कहे प्रधान।
सामायिक में समता धारण, करना माना गया महान।।
व्रत में दूषण छेद कहा है, प्रायश्चित्त कहा उपस्थापन।
छेदोपस्थापना व्रत मुनियों का, बतलाया है संयम धन।।
परिहार विशुद्धि संयम धारी, से हिंसा का हो परिहार।
सूक्ष्म साम्पराय धारी मुनिवर, जग में होते मंगलकार।।
यथाख्यात चारित पाते हैं, कषाय रहित मुनिवर अनगार।
सम्यक् चारित्र धारी मुनि के, पद में वन्दन बारम्बार।।
मूल गुणों के धारी मुनिवर, उत्तर गुण धर जैन ऋषीश।
सम्यक् चारित्र में शुद्धि युत, होते केवलज्ञानी ईश।।

दोहा– सम्यक चारित्र के धनी, वीतराग अनगार।
दाता मुक्ति मार्ग के , जग में मंगलकार।।

ॐ ह्रीं चारित्र शुद्धि व्रताय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा– चारित्र शुद्धि महान, राही मुक्ति मार्ग के।
पालन करे प्रधान, शिव पद पाने के लिए।।

इत्याशीर्वादः

अनन्त व्रत पूजा

स्थापना

हम अनन्त व्रत पालन करने, जिन अनन्त को ध्याते हैं।
गुण अनन्त के धारी जिन पद, सादर शीश झुकाते हैं।।
ज्ञान अनन्त प्राप्त करने हम, करते प्रभु आपका ध्यान।
हृदय कमल पर प्रभु आपका, विशद भाव से है आह्वान।।

ॐ ह्रीं अनन्त व्रत ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(गीता छंद)

प्रभु जल से हम पूजा करें, अपनी शरण में लीजिए।
करुणा की धारा से प्रभु, भावों की शुद्धि कीजिए।।
भव अनन्त करने के लिए, प्रभु शरण में हम आए है।
निज गुण प्रगट करने 'विशद', यह अर्घ्य अनुपम लाए है।।

ॐ ह्रीं अनन्त व्रताय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित लिया चन्दन प्रभु, मन शुभ मेरा कीजिए।
है पंक सम जीवन मेरा, प्रभु पंकज इसे कर दीजिए।।
भव अनन्त करने के लिए, प्रभु शरण में हम आए है।
निज गुण प्रगट करने 'विशद', यह अर्घ्य अनुपम लाए है।।

ॐ ह्रीं अनन्त व्रताय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

हे धर्म के राही चरण में, श्रेष्ठ अक्षत लाए हैं।
अक्षयपुरी में तुम गये प्रभु, हम भी पाने आए हैं।।
भव अनन्त करने के लिए, प्रभु शरण में हम आए है।
निज गुण प्रगट करने 'विशद', यह अर्घ्य अनुपम लाए है।।

ॐ ह्रीं अनन्त व्रताय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

यह पुष्प लेकर नाथ पद में, कर रहे अर्चा सभी।
मन काम से पीड़ित हुआ, अवगुण यही करता सभी।।
भव अनन्त करने के लिए, प्रभु शरण में हम आए है।
निज गुण प्रगट करने 'विशद', यह अर्घ्य अनुपम लाए है।।

ॐ ह्रीं अनन्त व्रताय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हम श्रेष्ठ व्यञ्जन से प्रभु, पूजा यहाँ पर कर रहे।
हो क्षुधा बाधा नाश मेरी, कष्ट जिससे कई सहे।।
भव अनन्त करने के लिए, प्रभु शरण में हम आए है।
निज गुण प्रगट करने 'विशद', यह अर्घ्य अनुपम लाए है।।

ॐ ह्रीं अनन्त व्रताय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कितने सवेरे खो दिए पर, मोह का तम न गया।
दीपक जलाते नाथ चरणों, अब सबेरा हो नया।।
भव अनन्त करने के लिए, प्रभु शरण में हम आए है।
निज गुण प्रगट करने 'विशद', यह अर्घ्य अनुपम लाए है।।

ॐ ह्रीं अनन्त व्रताय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

यह धूप अग्नि में जलाते, नाश हो मेरा भवाताप का।
अब शीघ्र हो जाए 'विशद' प्रभु कर्म के अभिशाप का।।
भव अनन्त करने के लिए, प्रभु शरण में हम आए है।
निज गुण प्रगट करने 'विशद', यह अर्घ्य अनुपम लाए है।।

ॐ ह्रीं अनन्त व्रताय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजा रचाते श्रेष्ठ फल ले, मोक्ष फल अब प्राप्त हो।
मन की गति रूक जाए मेरे, भोग में न व्याप्त हो।।
भव अनन्त करने के लिए, प्रभु शरण में हम आए है।
निज गुण प्रगट करने 'विशद', यह अर्घ्य अनुपम लाए है।।

ॐ ह्रीं अनन्त व्रताय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम अर्घ्य से पूजा रचाते, तव चरण के पास में।
यह मन रमे न नाथ मेरा, भव सुखों की आश में।।
भव अनन्त करने के लिए, प्रभु शरण में हम आए है।
निज गुण प्रगट करने 'विशद', यह अर्घ्य अनुपम लाए है।।

ॐ ह्रीं अनन्त व्रताय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– तीन लोक में पूज्य जिन, ऊर्ध्व मध्य पाताल।
व्रत अनन्त की हम यहाँ, गाते हैं जयमाल।।

(शम्भू छंद)

जम्बूद्वीप के आर्य खण्ड़ में, कौशल देश रहा मनहार।
नगर अयोध्या पद्म खण्ड़ में शुभ ग्राम रहा अतिशय शुभकार।।
ब्राह्मण सोम शर्मा की पत्नि, शोभा था जिसका शुभ नाम।
स्वयं पुत्रियों सहित गाँव में, करता रहता था कई काम।।
भिक्षा लेकर जीने वाला, रहा दरिद्री ज्ञान विहीन।
जीवन के दिन विता रहा था, बेबश होकर के जोन दीन।।
एक बार वह घर से निकला, श्रेष्ठ सकुन देखा शुभकार।
लोग अनेकों बढ़ते जाते, आगे आगे बारम्बार।।
जिन अनन्त के समवशरण, वन्दन करने जाते लोग।
ब्राह्मण ने भी जिन अर्चा का, पाया पावन तम संयोग।।
दिव्य देशना सुनकर प्रभु की, पाया उसने सद् श्रद्धान।
आठ मूलगुण धारण करके, देश व्रती बन गया प्रधान।।
प्रश्न किया उसने जिनवर से, हो दरिद्रता कैसे दूर।
भावुक हुआ प्रभु के चरणों, बेचारा ब्राह्मण भरपूर।।
दिव्य देशना हुई प्रभु की, सुनकर के यह अतिशयकार।
तुम अनन्त व्रत का पालन कर, पूजा करना मंगलकार।।

चौदह वर्षों तक व्रत करके, उद्यापन करना पश्चात्।
उद्यापन न हो पाए यदि, तो व्रत दुगने करना भ्रात।।
श्री जिन अनन्त केवली का, करना शुभ मन से जाप।
इस विधि पूजा से कट जाते, जन्म जन्म के सारे पाप।।
जिन मुख से व्रत की विधि, सुनकर व्रत का पालन किया प्रधान।
अल्प काल में उस ब्राह्मण ने, पाया भारी धन सम्मान।।
ब्राह्मण की यश वृद्धि वैभव, देख नगर के ज्ञानी लोग।
व्रत का पालन किए भाव से, वह भी पाए यश का भोग।।
गुरु मानने लगे लोग कई, ब्राह्मण को सुन व्रत उपदेश।
जैन धर्म के धारी प्राणी, बने वहाँ पर कई विशेष।।
फिर सन्यास मरण कर ब्राह्मण, स्वर्ग लोक में किया प्रयाण।
पत्नी देवी हुई स्वर्ग में, पाया वैभव यहाँ महान।।
स्वर्गलोक से चमकर ब्राह्मण, अनन्त वीर्य नृप हुआ प्रधान।
पटरानी तव हुई ब्राह्मणी, उत्तम गुण रत्नों की खान।।
अनन्तवीर्य नृप दीक्षा लेकर, सिद्ध श्री पाए अभिराम।
अच्युत स्वर्ग गई पटरानी, पाया व्रत शुभ परिणाम।।
यह अनन्त व्रत का पालन कर, स्वयं जगाते अपना भाग्य।
'विशद' भावना हम यह भाते, जागे मेरा भी सौभाग्य।।

दोहा– जिन अनन्त के चरण में लगी है मेरी आस।
हम अनन्त गुण पाएगें, पूरा है विश्वास।।

ॐ ह्रीं अनन्त व्रताय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा– यह अनन्त व्रत पालकर, करना निज उद्धार।
सुख शांति सौभाग्य पा, पाना है शिवद्वार।।

इत्याशीर्वादः

परम पूज्य 108 आचार्य
श्री विशदसागरजी महाराज की पूजन

पुण्य उदय से हे ! गुरुवर दर्शन तेरे मिल पाते हैं।
श्री गुरुवर के दर्शन करके, हृदय कमल खिल जाते हैं॥
गुरु आराध्य हम आराधक, करते उर से अभिवादन।
मम् हृदय कमल पर आ तिष्ठो, गुरु करते हैं हम आह्वानन्॥

ॐ ह्रीं 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वानम् अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

सांसारिक भोगों में फँसकर, ये जीवन वृथा गंवाया है।
रागद्वेष की वैतरणीं से, अब तक पार न पाया है॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, निर्मल जल हम लाए हैं।
भव तापों का नाश करो, भव बंध नशाने आये हैं॥

ॐ ह्रीं 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय जन्म-जरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोध रूप अग्नि से अब तक, कष्ट बहुत ही पाये हैं।
कष्टों से छुटकारा पाने, गुरु चरणों में आये हैं॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, चंदन घिसकर लाये हैं।
संसार ताप का नाश करो, भव बंध नशाने आये हैं॥

ॐ ह्रीं 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय संसार ताप विध्वंशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

चारों गतियों में अनादि से, बार-बार भटकाये हैं।
अक्षय निधि को भूल रहे थे, उसको पाने आये हैं॥

विशद सिंधु के श्री चरणों में, अक्षय अक्षत लाये हैं।
अक्षय पद हो प्राप्त हमें, हम गुरु चरणों में आये हैं॥

ॐ ह्रीं 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

काम बाण की महावेदना, सबको बहुत सताती है।
तृष्णा जितनी शांत करें वह, उतनी बढ़ती जाती है॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, पुष्प सुगंधित लाये हैं।
काम बाण विध्वंस होय गुरु, पुष्प चढ़ाने आये हैं॥

ॐ ह्रीं 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

काल अनादि से हे गुरुवर ! क्षुधा से बहुत सताये हैं।
खाये बहु मिष्ठान जरा भी, तृप्त नहीं हो पाये हैं॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, नैवेद्य सुसुन्दर लाये हैं।
क्षुधा शांत कर दो गुरु भव की ! क्षुधा मेटने आये हैं॥

ॐ ह्रीं 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह तिमिर में फंसकर हमने, निज स्वरूप न पहिचाना।
विषय कषायों में रत रहकर, अंत रहा बस पछताना॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, दीप जलाकर लाये हैं।
मोह अंध का नाश करो, मम् दीप जलाने आये हैं॥

ॐ ह्रीं 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय मोहान्धकार विध्वंशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अशुभ कर्म ने घेरा हमको, अब तक ऐसा माना था।
पाप कर्म तज पुण्य कर्म को, चाह रहा अपनाना था॥

विशद सिंधु के श्री चरणों में, धूप जलाने आये हैं।
आठों कर्म नशाने हेतु, गुरु चरणों में आयें हैंङ्क

ॐ ह्रीं 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

पिस्ता अरु बादाम सुपाड़ी, इत्यादि फल लाये हैं।
पूजन का फल प्राप्त हमें हो, तुमसा बनने आये हैंङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, भाँति-भाँति फल लाये हैं।
मुक्ति वधु की इच्छा करके, गुरु चरणों में आये हैंङ्क

ॐ ह्रीं 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय मोक्ष फल प्राप्ताय फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर ! थाल सजाकर लाये हैं।
महाव्रतों को धारण कर लें, मन में भाव बनाये हैंङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अर्घ समर्पित करते हैं।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें गुरु, चरणों में सिर धरते हैंङ्क

ॐ ह्रीं 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- विशद सिंधु गुरुवर मेरे, वंदन करूँ त्रिकाल।
मन-वन-तन से गुरु की, करते हैं जयमालङ्क

गुरुवर के गुण गाने को, अर्पित है जीवन के क्षण-क्षण।
श्रद्धा सुमन समर्पित हैं, हर्षायें धरती के कण-कणङ्क
छतरपुर के कुपी नगर में, गूँज उठी शहनाई थी।
श्री नाथूराम के घर में अनुपम, बजने लगी बधाई थीङ्क
बचपन में चंचल बालक के, शुभादर्श यूँ उमड़ पड़े।
ब्रह्मचर्य व्रत पाने हेतु, अपने घर से निकल पड़ेङ्क

आठ फरवरी सन् छियानवे को, गुरुवर से संयम पाया।
मोक्ष ज्ञान अन्तर में जागा, मन मयूर अति हर्षायाङ्क
पद आचार्य प्रतिष्ठा का शुभ, दो हजार सन् पाँच रहा।
तेरह फरवरी बसंत पंचमी, बने गुरु आचार्य अहा।।
तुम हो कुंद-कुंद के कुन्दन, सारा जग कुन्दन करते।
निकल पड़े बस इसलिए, भवि जीवों की जड़ता हरतेङ्क
मंद मधुर मुस्कान तुम्हारी, चेहरे पर बिखरी रहती।
तव वाणी अनुपम न्यारी है, करुणा की शुभ धारा बहती ङ्क
तुममें कोई मोहक मंत्र भरा, या कोई जादू टोना है।
है वेश दिगम्बर मनमोहक अरु, अतिशय रूप सलौना हैङ्क
हैं शब्द नहीं गुण गाने को, गाना भी मेरा अन्जाना।
हम पूजन स्तुति क्या जाने, बस गुरु भक्ति में रम जानाङ्क
गुरु तुम्हें छोड़ न जाएँ कहीं, मन में ये फिर-फिरकर आता।
हम रहें चरण की शरण यहीं, मिल जाये इस जग की साताङ्क
सुख साता को पाकर समता से, सारी ममता का त्याग करें।
श्री देव-शास्त्र-गुरु के चरणों में, मन-वच-तन अनुराग करेंङ्क
गुरु गुण गाएँ गुण को पाने, औ सर्वदोष का नाश करें।
हम विशद ज्ञान को प्राप्त करें, औ सिद्ध शिला पर वास करेंङ्क

ॐ ह्रीं 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरु की महिमा अगम है, कौन करे गुणगान।
मंद बुद्धि के बाल हम, कैसे करें बखानङ्क

(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपेत्)

ब्र. आस्था दीदी (संघस्थ)

श्री णमोकार चालीसा

महामंत्र– णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं, णमो उव्वज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।

दोहा– **तीन लोक से पूज्य हैं अर्हतादि नव देव।**
मन वच तन से पूजते उनको विनत सदैव।।
णमोकार महामंत्र है काल अनादि अनन्त।
श्रद्धा भक्ति जाप से, बनें जीव अर्हन्त।।

चौपाई

णमोकार शुभ मंत्र कहाया, काल अनादि अनन्त बताया।
मंत्रराज जानो शुभकारी, अपराजित अनुपम मनहारी।।
परमेष्ठी वाचक यह जानो, महिमाशाली जो पहिचानो।
जिनने कर्म घातिया नाशे, अनुपम केवलज्ञान प्रकाशे।।
छियालिस मूलगुणों के धारी, मंगलमय पावन अविकारी।
सर्व चराचर के हैं ज्ञाता, भवि जीवों के भाग्य विधाता।।
दोष अठारह रहित बताए, चौंतिस अतिशय जो प्रगटाए।
अनन्त चतुष्टय जिनने पाए, प्रातिहार्य आ देव रचाए।।
सारा जग ये महिमा गाए, पद में सादर शीश झुकाए।
समवशरण आ देव बनाते, शत् इन्द्रों से पूजे जाते।।
कल्याणक शुभ पाने वाले, सारे जग में रहे निराले।
अष्ट कर्म जिनके नश जाते, जीव सिद्धपद अनुपम पाते।।
जो शरीर से रहित बताए, सुख अनन्त के भोगी गाए।
फैली है जग में प्रभुताई, अनुपम सिद्धों की प्रभु भाई।।
आठ मूलगुण जिनके गाए, सिद्धशिला पर धाम बनाए।
सिद्ध सुपद हम पाने आए, अतः सिद्ध गुण हमने गाए।।
आचार्यों के हम गुण गाते, पद में नत हो शीश झुकाते।
पञ्चाचार के धारी गाए, इस जग को सन्मार्ग दिखाए।।

शिक्षा–दीक्षा देने वाले, जिन शासन के हैं रखवाले।
आवश्यक पालन करवाते, प्रायश्चित्त दे दोष नशाते।।
छत्तिस मूलगुणों के धारी, नग्न दिगम्बर हैं अविकारी।
द्रव्य भाव श्रुत के जो ज्ञाता, भवि जीवों के भाग्य विधाता।।
ज्ञानाभ्यास करें जो भाई, संतों को शिक्षा दें भाई।
द्वादशांग के ज्ञाता जानो, पच्चिस गुणधारी पहिचानो।।
रत्नत्रयधारी कहलाए, मुक्ति पथ के नेता गाए।
दर्शन–ज्ञान–चारित के धारी, साधु होते हैं अनगारी।।
विषयाशा के त्यागी जानो, संगारम्भ रहित पहिचानो।
ज्ञान ध्यान तप में रत रहते, जो उपसर्ग परीषह सहते।।
हैं अट्ठाईस मूलगुणधारी, करें साधना मंगलकारी।
पञ्चमहाव्रत धारी जानो, पञ्चसमिति पाले मानो।।
पञ्चेन्द्रिय जय करने वाले, आवश्यक के हैं रखवाले।
णमोकार में इनकी भाई, अतिशयकारी महिमा गाई।।
महामंत्र को जिसने ध्याया, उसने ही अनुपम फल पाया।
अंजन बना निरंजन भाई, नाग युगल सुर पदवी पाई।।
सेठ सुदर्शन ने भी ध्याया, सूली का सिंहासन पाया।
सीता सती अंजना नारी, ने पाया इच्छित फल भारी।।
श्वानादि पशु स्वर्ग सिधाए, णमोकार को मन से ध्याए।
महिमा इसकी को कह पाए, लाख चौरासी मंत्र समाए।।
भाव सहित इसको जो ध्याए, इस भव के सारे सुख पाए।
अपने सारे कर्म नशाए, अन्त में शिव पदवी को पाए।।

दोहा– **चालीसा चालीस दिन, पढ़े भाव के साथ।**
विशद गुणों को प्राप्त कर, बने श्री का नाथ।।
धूप अग्नि में होमकर, करें मंत्र का जाप।
अन्त समय में जीव के, कटते सारे पाप।।

जापहृह्न ॐ ह्रीं अर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधुभ्यो नमः।

श्री आदिनाथ चालीसा

दोहा– परमेष्ठी जिन पाँच हैं, मंगल उत्तम चार।
शरण चार की प्राप्त कर, भवदधि पाऊँ पार।।

दोहा– वंदन करके भाव से, करते हम गुणगान।
चालीसा जिन आदि का, गाते विशद महान।।

चौपाई

लोकालोक अनन्त बताया, जिसका अन्त कहीं न पाया।
लोक रहा है विस्मयकारी, चौदह राजू है मनहारी।।
ऊर्ध्व लोक ऊर्ध्व में गाया, अधोलोक नीचे बतलाया।
मध्य लोक है मध्य में भाई, सागर दीप युक्त सुखदायी।।
नगर अयोध्या जन्म लिया है, नाभिराय को धन्य किया है।
सर्वार्थ–सिद्धि से चय कर आये, मरुदेवी के लाल कहाए।।
चिह्न बैल का पद में पाया, लोगों ने जयकार लगाया।
आदिनाथ प्रभु जी कहलाए, प्राणी सादर शीश झुकाए।।
जीवों को षट् कर्म सिखाए, सारे जग के कष्ट मिटाए।
पद युवराज का पाये भाई, विधि स्वयंवर की बतलाई।।
सुत ने चक्रवर्ति पद पाया, कामदेव सा पुत्र कहाया।
हुई पुत्रियाँ उनके भाई, कालदोष की यह प्रभुताई।।
ब्राह्मी को श्रुत लिपि सिखाई, ब्राह्मी लिपि अतः कहलाई।
लघु सुता सुन्दरी कहलाई, अंक ज्ञान की कला सिखाई।।
लाख तिरासी पूरब जानो, काल भोग में बीता मानो।
इन्द्र के मन में चिंता जागी, प्रभु बने बैठे हैं रागी।।
उसने युक्ति एक लगाई, देवी नृत्य हेतु बुलवाई।
उससे अतिशय नृत्य कराया, तभी मरण देवी ने पाया।।
दृश्य प्रभु के मन में आया, प्रभु को तब वैराग्य समाया।
केश लुंच कर दीक्षा धारी, संयम धार हुए अविकारी।।

छह महीने का ध्यान लगाया, चित् का चिंतन प्रभु ने पाया।
चर्या को प्रभु निकले भाई, विधि किसी ने जान न पाई।।
छह महीने तक प्रभु भटकाए, निराहार प्रभु काल बिताए।
नृप श्रेयांश को सपना आया, आहार विधि का ज्ञान जगाया।।
अक्षय तृतीया के दिन भाई, चर्या की विधि प्रभु ने पाई।
भूप ने यह सौभाग्य जगाया, इक्षु रस आहार कराया।।
पञ्चाश्चर्य हुए तब भाई, ये है प्रभुवर की प्रभुताई।
प्रभुजी केवल ज्ञान जगाए, समवशरण तब देव बनाए।।
प्रातिहार्य अतिशय प्रगटाए, दिव्य ध्वनि तब प्रभु सुनाए।
बारह योजन का शुभ गाए, गणधर चौरासी प्रभु पाए।।
माघ वदी चौदश कहलाए, अष्टापद से मोक्ष सिधाए।
मोक्ष मार्ग प्रभु ने दर्शाया, जैनधर्म का ज्ञान कराया।।
योग निरोध प्रभुजी कीन्हें, कर्म नाश सारे कर दीन्हें।
शिव पदवी को प्रभु ने पाया, सिद्ध शिला स्थान बनाया।।
बने पूर्णतः प्रभु अविकारी, सुख अनन्त पाये त्रिपुरारी।
हम भी यही भावना भाते, पद में सादर शीश झुकाते।।
जगह–जगह प्रतिमाएँ सोहें, भवि जीवों के मन को मोहें।
क्षेत्र बने कई अतिशयकारी, सारे जग में मंगलकारी।।
जिस पदवी को तुमने पाया, वह पाने का भाव बनाया।
तव पूजा का फल हम पाएँ, मोक्ष मार्ग पर कदम बढ़ाएँ।।

दोहा

चालीसा चालीस दिन, दिन में चालीस बार।
'विशद' भाव से जो पढ़ें, पावे भव से पार।।
रोग शोक पीड़ा मिटे, होवे बहु गुणवान्।
कर्म नाश कर अन्त में, होवे सिद्ध महान्।।

श्री सम्भवनाथ चालीसा

दोहा– पञ्च परमेष्ठी लोक में, अतिशय रहे महान्।
सम्भव जिन तीर्थेश का, करते हम गुणगान।।

(चौपाई)

सम्भव जिन शुभ करने वाले, भविजन का दुःख हरने वाले।
जो अनुपम महिमा धारी, तीन लोक में मंगलकारी।।
गुण गाने के भाव बनाए, जिन चरणों से प्रीति लगाए।
देवों के भी देव कहाए, शत् इन्द्रों से पूज्य बताए।।
श्रेष्ठ दिगम्बर मुद्रा धारे, कर्म शत्रु प्रभु सभी निवारे।
मोह विजय तुमने प्रभु कीन्हा, उत्तम संयम मन से लीन्हा।।
जम्बू द्वीप रहा मनहारी, भरत क्षेत्र पावन शुभकारी।
आर्य खण्ड जिसमें बतलाया, भारत देश श्रेष्ठ शुभ गाया।।
श्रावस्ती नगरी है प्यारी, सुखी सभी थी जनता सारी।
भूप जितारी जी कहलाए, रानी आप सुसीमा पाए।।
स्वर्गों से चयकर प्रभु आए, सारे जग के भाग्य जगाये।
फाल्गुन सुदी अष्टमी जानो, मंगलमय ये तिथि पहचानो।।
सम्भव जिनवर गर्भ में आए, रत्नदेव तब कई वर्षाये।
छह महिने पहले से भाई, हुई रत्नवृष्टि सुखदायी।।
कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा गाई, पावन हुई जन्म से भाई।
इन्द्र कई स्वर्गों से आए, बालक का अभिषेक कराए।।
पग में अश्व चिह्न शुभ पाया, इन्द्र ने प्रभु पद शीश झुकाया।
सम्भवनाथ नाम बतलाया, जिन गुण गाकर के हर्षाया।।
जन्म से तीन ज्ञान प्रभु पाए, अतः त्रिलोकीनाथ कहाए।
साठ लाख पूरब की भाई, आयु जिनवर की बतलाई।।
धनुष चार सौ थी ऊँचाई, स्वर्ण रंग तन का था भाई।
अश्विन सुदी पूनम दिन आया, प्रभु ने संयम को अपनाया।।

~

केशलुंच कर दीक्षा धारी, महाव्रती बन के अविकारी।
देव कई लौकान्तिक आए, श्रेष्ठ प्रशंसा कर हर्षाए।।
देवों ने तब हर्ष मनाया, प्रभु के पद में शीश झुकाया।
पूजा करके प्रभु गुण गाए, जयकारों से गगन गुँजाए।।
स्वर्ण पेटिका दिव्य मँगाई, उसमें केश रखे शुभ भाई।
देव पेटिका हाथ सम्हाले, क्षीर सिन्धु में जाकर डाले।।
प्रभु ने अतिशय ध्यान लगाया, निज स्वभाव में निज को पाया।
कार्तिक वदी चौथ प्रभु पाए, अनुपम केवलज्ञान जगाए।।
समवशरण आ देव रचाए, गंधकुटी अतिशय बनवाए।
प्रातिहार्य जिसमें प्रगटाए, कमलासन अतिशय बनवाए।।
दिव्य देशना प्रभु सुनाए, गणधर आदि चरण में आए।
बारह सभा लगी मनहारी, दिव्य ध्वनि पाई शुभकारी।।
श्रावक कई चरणों में आए, भिन्न–भिन्न वह पूज रचाए।
मनवांछित फल वह सब पाए, अपने जो सौभाग्य जगाए।।
प्रभु सम्मेदशिखर पर आए, शाश्वत तीर्थराज कहलाए।
पूर्व दिशा में दृष्टि कीन्हें, निज स्वभाव में दृष्टि दीन्हें।।
धवल कूट है मंगलकारी, ध्यान किए जाके त्रिपुरारी।
योग निरोध प्रभुजी कीन्हें, एक माह निज में चित्त दीन्हें।।
चैत्र सुदी षष्टी को स्वामी, बने कर्म नश शिवपथ गामी।
एक समय में शिवपद पाया, सिद्ध शिला पर धाम बनाया।।
हम यह नित्य भावना भाते, प्रभु पद अपने हृदय सजाते।
जिस पद को प्रभुजी तुम पाए, वह पद पाने पद में आए।
इच्छा पूर्ण करो हे स्वामी, तव चरणों में विशद नमामि।।
जागें अब सौभाग्य हमारे, कट जाएँ भव–बन्धन सारे।।

दोहा– चालीसा चालीस दिन, प्रतिदिन चालीस बार।
पढ़ने से शांति मिले, मन में अपरम्पार।।
स्वजन मित्र मिलकर सभी, करते हैं सहयोग।
इस भव में शांति 'विशद', परभव शिव का योग।।

श्री सुमतिनाथ चालीसा

दोहा– नव देवों को पूजते, पाने को शिव धाम।
सुमतिनाथ के पद युगल, करते विशद प्रणाम।।

चौपाई

सुमतिनाथ के पद में जावे, उसकी मति सुमति हो जावे।
प्रभु कहे त्रिभुवन के स्वामी, जन–जन के हैं अन्तर्यामी।।
अनुपम भेष दिगम्बर धारी, जिन की महिमा जग से न्यारी।
वीतराग मुद्रा है प्यारी, सारे जग की तारण हारी।।
नगर अयोध्या मंगलकारी, जन्मे सुमतिनाथ त्रिपुरारी।
पिता मेघरथजी कहलाए, मात मंगला जिनकी गाए।।
वंश रहा इक्ष्वाकु भाई, महिमा जिसकी जग में गाई।
वैजयन्त से चयकर आये, श्रावण शुक्ल दोज शुभ पाए।।
मघा नक्षत्र रहा मनहारी, ब्रह्ममुर्हूर्त पाए शुभकारी।
चैत्र शुक्ल ग्यारस दिन आया, जन्म प्रभुजी ने शुभ पाया।।
इन्द्र तभी ऐरावत लाए, जा सुमेरु पर न्हवन कराए।
चकवा चिह्न पैर में पाया, सुमतिनाथ शुभ नाम बताया।।
स्वर्ण रंग तन का शुभ जानो, धनुष तीन सौ ऊँचे मानो।
जाति स्मरण देखकर स्वामी, बने आप मुक्तिपथ गामी।।
कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी गाई, मघा नक्षत्र पाए सुखदायी।
तेला का व्रत धारण कीन्हे, सहस्र भूप संग दीक्षा लीन्हे।।
गये सहेतुक वन में स्वामी, तरुवर रहा प्रियंगु नामी।
पौष शुक्ल पूनम शुभकारी, हस्त नक्षत्र रहा मनहारी।।
नगर अयोध्या में फिर आए, प्रभु जी केवलज्ञान जगाए।
समवशरण तव देव बनाए, दश योजन विस्तार बताए।।

गणधर एक सौ सोलह गाए, गणधर प्रथम वज्र कहलाए।
मुनिवर तीन लाख कहलाए, बीस हजार अधिक बतलाए।।
गिरि सम्मेद शिखर प्रभु आए, कर्म नाश कर मुक्ति पाए।
कृपा करो भक्तों पर स्वामी, बनें सभी मुक्ति पथगामी।।
इस जग के सारे दुःख पाए, अन्त में भव से मोक्ष सिधाए।
विनती चरणों विशद हमारी, बनो सभी के प्रभु हितकारी।।
चालिस लाख पूर्व की स्वामी, आयु पाए शिवपद गामी।
योग निरोध किए जिन स्वामी, एक माह का अन्तर्यामी।
चैत्र शुक्ल दशमी शुभ गाई, सुमतिनाथ ने मुक्ति पाई।।
सहस्र मुनि सह मुक्ति पाए, अपने सारे कर्म नशाए।
अविचल कूट रहा शुभकारी, तीर्थ क्षेत्र पर मंगलकारी।।
तीर्थ वन्दना करने आते, प्राणी अपने भाग्य सजाते।
सीकर जिला रहा शुभकारी, रैंवासा में अतिशयकारी।।
प्रतिमा प्रगट हुई मनहारी, सुमतिनाथ की मंगलकारी।
दर्शन प्रभु का है सुखदायी, शांतिदायक है अति भाई।।
जसों का खेड़ा ग्राम बताया, जिला भीलवाड़ा कहलाया।
मूलनायक जिन प्रतिमा सोहे, भव्यों के मन को जो मोहे।।
कई ग्रामों में प्रतिमा प्यारी, शोभित होती है मनहारी।
दर्शन पाते हैं नर–नारी, श्री जिनवर का मंगलकारी।।
जो भी प्रभु का दर्शन पाए, बार–बार दर्शन को आए।
हम भी प्रभु का ध्यान लगाएँ, निज आतम की शांति पाएँ।।

दोहा– चालीसा चालिस दिन, सद् श्रद्धा के साथ।
शांति मन में हो विशद, बने श्री का नाथ।।

***

श्री मल्लिनाथ चालीसा

दोहा– परमेष्ठी के पद युगल, चौबिस जिन के साथ।
मल्लिनाथ जिनराज पद, विनत झुकाते माथ।।

चौपाई

मल्लिनाथ जिनराज कहाए, संयम पाके शिवसुख पाए।
प्रभु है वीतरागता धारी, सारे जग में मंगलकारी।।
अपराजित से चय कर आये, चैत्र शुक्ल एकम तिथि गाए।
मिथला के नृप कुम्भ कहाए, प्रजावति के गर्भ में आए।।
इक्ष्वाकु नन्दन कहलाए, कलश चिह्न पहिचान बताए।
अश्विनी नक्षत्र श्रेष्ठ बतलाए, प्रातःकाल का समय कहाए।।
मगसिर शुक्ला ग्यारस गाए, जन्म प्रभु मल्लि जिन पाए।
पच्चिस धनुष रही ऊँचाई, स्वर्ण रंग तन का है भाई।।
तड़ित देख वैराग्य समाया, प्रभु ने सद् संयम को पाया।
इन्द्र पालकी लेकर आए, उसमें प्रभु जी को बैठाए।।
इन्द्र पालकी जहाँ उठाते, नरपति तव आगे आ जाते।
मानव लेकर आगे बढ़ते, देव गगन में लेकर उड़ते।।
मगशिर शुक्ला ग्यारस पाए, प्रभुजी केवलज्ञान जगाए।
श्रेष्ठ मनोहर वन शुभ पाया, तरु अशोक वन अनुपम गाया।।
समवशरण शुभ देव रचाए, त्रय योजन विस्तार कहाए।
वैशाख कृष्ण दशमी को भाई, प्रभु ने जिनवर दीक्षा पाई।।
पौर्वाह्न का समय बताया, षष्ठम भक्त प्रभु ने पाया।
शालि वन में पहुँचे स्वामी, तरु अशोक तल में शिवगामी।।
सहस्र भूप संग दीक्षा पाए, निज आतम का ध्यान लगाए।
वरुण यक्ष प्रभु का शुभ गाया, यक्षी पद विजया ने पाया।।

पचपन सहस्र वर्ष की भाई, प्रभु की शुभ आयु बतलाई।
गणधर शुभ अट्ठाइस बताए, गणी विशाख पहले गाए।।
साढ़े पाँच सौ पूरब धारी, उन्तिस सहस्र शिक्षक अविकारी।
बाईस सौ अवधिज्ञानी गाए, चौदह सौ वादी बतलाए।।
उन्तिस सौ विक्रिया के धारी, बाईस सौ केवली मनहारी।
सत्रह सौ पचास मुनि गाए, मनःपर्ययज्ञानी बतलाए।।
पचपन सहस्र आर्यिका भाई, मधुसेना गणिनी बतलाई।
एक लाख श्रावक कहलाए, चालिस सहस्र मुनि सब गाए।।
योग रोधकर ध्यान लगाए, एक माह का समय बिताए।
फाल्गुन कृष्ण पञ्चमी जानो, गिरि सम्मेद शिखर पर मानो।।
भरणी शुभ नक्षत्र बताया, प्रभु ने मुक्ति पद शुभ पाया।
सायंकाल रहा शुभकारी, गौधूलि बेला मनहारी।।
तीर्थंकर पद पाके स्वामी, बने मोक्षपद के अनुगामी।
महा मनोहर मुद्राधारी, जिनबिम्बों की शोभा न्यारी।।
भावसहित जो पूजें ध्यावें, वे अपने सौभाग्य बढ़ावें।
यश कीर्ति बल वैभव पावें, ओज तेज कांति उपजावें।।
सर्वमान्य जग पदवी पावें, रण में विजयश्री ले आवें।
हों अनुकूल स्वजन परिवारी, सेवक होंवे आज्ञाकारी।।
अर्चा के शुभ भाव बनाएँ, चरण–शरण में हम भी आएँ।
शांतिमय हो जगती सारी, यही भावना रही हमारी।।
जब तक हम शिवपद न पाएँ, चरण आपके हृदय सजाएँ।
'विशद' भाव से तव गुण गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।

दोहा– चालीसा चालीस दिन, दिन में चालीस बार।
पढ़े सुने जो भाव से, तीनों योग सम्हार।।
मित्र स्वजन अनुकूल हों, बढ़े पुण्य का कोष।
अन्तिम शिव पदवी मिले, जीवन हो निर्दोष।।

श्री नेमीनाथ चालीसा

दोहा– परमेष्ठी के पद युगल, करते विशद प्रणाम।
नेमिनाथ का भाव से, ले सुखकारी नाम।।

(चौपाई छन्द)

नेमीनाथ दया के सागर, करुणाकर हे ज्ञान ! उजागर।
प्रभु हैं जन–जन के हितकारी, ज्ञानी ध्यानी जग उपकारी।।
तीन काल तिय जग के ज्ञाता, जन–जन का प्रभु तुमसे नाता।
तुमने मोक्ष मार्ग दर्शाया, नर जीवन का सार बताया।
सुर नर जिनको वन्दन करते, ऐसे प्रभु जग के दुःख हरते।।
कार्तिक शुक्ला षष्ठी प्यारी, प्रभु जी आप हुए अवतारी।
राजा समुद्र विजय के घर में, रानी शिवादेवी के उर में।।
अपराजित से च्युत हो आये, शौरीपुर नगरी को पाए।
श्रावण शुक्ला षष्ठी आई, शैरीपुर में जन्में भाई।।
अनहद बाजे देव बजाए, सुर–नर पशु मन में हर्षाए।
इन्द्र तभी ऐरावत लाया, सची ने प्रभु को गोद बिठाया।।
माया मय शिशु वहाँ लिटाया, माता ने कुछ जान न पाया।
क्षीर सिंधु से जल भर लाये, वसु योजन के कलश भराये।
पाण्डुक वन अभिषेक कराये, इन्द्रों ने तव चँवर ढुराये।
शंख चिन्ह दाएँ पग पाया, नेमिनाथ सुर नाम सुनाया।।
आयु सहस्त्र वर्ष की पाई, चालीस हाथ रही ऊँचाई।
श्याम वर्ण प्रभु तन का पाया, जग को अतिशय खूब दिखाया।।
नारायण बलदेव से भाई, आन मिले जो हैं अधिकाई।
कौतूहल वश बात ये आई, शक्ति किसमें अधिक है भाई।।

कोई वीर बलदेव को कहते, कोई कृष्ण की हामी भरते।
कोई शम्भू नाम पुकारें, कोइ अनिरुद्ध के देते नारे।।
नेमीनाथ का नाम भी आया, कुछ लोगों को नहीं ये भाया।
ऊँगली कनिष्ठ मोड़ दिखलाई, सीधी करे जो वीर है भाई।।
सब अपनी शक्ति अजमाए, कोई सीधी न कर पाए।
हार मान योद्धा सिरनाये, श्री कृष्ण मन में घबड़ाए।।
राज्य छीन न लेवे भाई, कृष्ण ने युक्ति एक लगाई।
जल क्रीड़ा की राह दिखाई, पटरानी कई साथ लगाई।।
नेमी जामवती से बोले, भाभी मेरी धोती धो ले।
भाभी ने तब रौब जमाया, मैंने पटरानी पद पाया।।
तुम भी अपना ब्याह रचाओ, रानी पा धोती धुलवाओ।
मेरे पति चक्र के धारी, शंख बजाते विस्मयकारी।।
तुमको जरा लाज नहिं आई, हमसे छोटी बात सुनाई।
रोम–रोम प्रभु का थर्राया, उनको सहन नहीं हो पाया।।
आयुधशाला पहुँचे भाई, शैया नाग की प्रभु बनाई।
पैर की ऊँगली को फैलाया, उस पर रख कर चक्र चलाया।
पीछे हाथ में शंख उठाया, नाक के स्वर से उसे बजाया।।
उससे तीन लोक थर्राया, श्री कृष्ण का मन घबड़ाया।
जाकर भाई को समझाया, उनके मन को धैर्य दिलाया।।
शादी की तब बात चलाई, जूनागढ़ पहुंचे फिर भाई।
उग्रसेन से कृष्ण सुनाए, राजुल नेमि से परणाएँ।।
उग्रसेन हर्षित हुए भारी, शीघ्र ब्याह की की तैयारी।
कृष्ण ने तब की मायाचारी, नृप बुलवाए मांसाहारी।।

नेमि दूल्हा बनकर आए, बाड़े में कई पशु रंभाए।
करुणा से नेमि भर आए, पूछा क्यों यह पशु बंधाए।।
इन पशुओं का मांस बनेगा, इन लोगों में हर्ष मनेगा।
सुनते ही वैराग्य समाया, पशुओं का बन्धन खुलबाया।।
कंगन तोड़े वस्त्र उतारे, गिरनारी जा दीक्षा धारे।
राजुल सुनकर के घबड़ाई, दौड़ प्रभु के चरणों आई।।
प्रभु को राजुल ने समझाया, नहिं माने तो साथ निभाया।
केशलुंच कर दीक्षा धारी, बनी आर्यिका राजुल नारी।
श्रावण शुक्ला षष्ठी पाए, पद्मासन से ध्यान लगाए।।
सहस एक नृप दीक्षा धारे, द्वारावति में लिए आहारे।
श्रावण सुदि नौमी दिन पाया ! वरदत्त ने यह पुण्य कमाया।।
अश्विन सुदि एकम् दिन आया, प्रभु ने केवलज्ञान जगाया।
सवशरण मिल देव बनाए, दिव्य देशना प्रभु सुनाए।।
ग्यारह गणधर प्रभु ने पाए, वरदत्त उनमें प्रथम कहाए।
आषाढ़ शुक्ल आठें दिन भाई, ऊर्जयंत से मुक्ति पाई।।
सौख्य अनन्त प्रभु ने पाया, नर जीवन का सार बताया।
हम भी उस पदवी को पाएँ, कर्म नाश कर मुक्ति पाएँ।।

सोरठा– चालीसा चालीस दिन में, जो पढ़ता 'विशद'।
चरण झुकाए शीश, विनय भाव के साथ जो।।

सोरठा– शांति मिले विशेष, रोग शोक चिंता मिटे।
पाप शाप हो नाश, विशद मोक्ष पदवी मिले।।

***

श्री पदमप्रभु चालीसा

दोहा– परमेष्ठी की वन्दना, करते बारम्बार।
चालीसा जिन पदम का, गाते अपरम्पार।।

चौपाई

जय–जय पद्म प्रभु जिन स्वामी, बने आप मुक्ति पथगामी।
भेष दिगम्बर तुमने पाया, सारे जग का मोह नशाया।।
शांति छवि मुद्रा अविकारी, तीन लोक में मंगलकारी।
अस्त्र–शस्त्र त्यागे तुम सारे, रहे न कोई शत्रु तुम्हारे।।
उपरिम ग्रैवयक से चय कीन्हे, स्वर्ग संपदा छोड़ जो दीन्हे।
कौशाम्बी नगरी शुभकारी, चयकर आये प्रभु अवतारी।।
धरणराज के लाल कहाए, मात सुसीमा के उर आए।
वंश इक्ष्वाकु तुमने पाया, इस जग में अनुपम कहलाया।।
माघ कृष्ण षष्ठी शुभकारी, चित्रा नक्षत्र रहा मनहारी।
प्रातःकाल गर्भ में आये, मात–पिता के भाग्य जगाये।।
कार्तिक कृष्ण त्रयोदशि जानो, शुभ नक्षत्र चित्रा पहचानो।
इन्द्र करें जिनकी पदसेवा, जन्मे पद्म प्रभ जिनदेवा।।
कौशाम्बी में मंगल छाया, जन्मोत्सव तव वहाँ मनाया।
इन्द्र मेरु पर न्हवन कराए, कमल चिह्न प्रभु के पद पाए।।
धनुष ढाई सौ उच्च कहाए, लाल रंग तन का प्रभु पाए।
जाति स्मरण प्रभु को आया, प्रभु के मन वैराग्य समाया।।
ज्येष्ठ शुक्ल बारस तिथि जानो, अपराह्न काल श्रेष्ठ पहिचानो।
तृतिय भक्त प्रभु जी पाए, सहस्र भूप सह दीक्षा पाए।।
समवशरण आ देव बनाए, साढ़े नौ योजन का गाए।
बाड़ा गाँव एक बतलाया, मूला जाट वहाँ का गाया।।

उसको तुमने स्वप्न दिखाया, मन ही मन मूला हर्षाया।
उसने गृह की नींव खुदायी, उसमें मूर्ति निकली भाई।।
आस–पास के लोग बुलाए, सबको वह मूर्ति दिखलाए।
कमल चिह्न था उसमें भाई, जय बोले सब मिलके भाई।।
दर्शन करने श्रावक आए, बाधा प्रेत की दूर भगाए।
मनोकामना पूरी करते, दुःखियों के सारे दुःख हरते।।
पद्म प्रभु के गुण हम गाते, पद में सादर शीश झुकाते।
यही भावना रही हमारी, सुखी रहे प्रभु जनता सारी।।
धर्मी हों इस जग के प्राणी, पढ़ें–सुनें हर दिन जिनवाणी।
नर जीवन को सफल बनावें, सम्यक् श्रद्धा संयम पावें।।
निज आतम का ध्यान लगावें, कर्म नाशकर शिवपुर जावें।
मुनिवर तीन सौ चौबिस भाई, साथ में प्रभु के मुक्ति पाई।।
बारह सभा जुड़ी वहाँ भाई, दिव्य देशना श्रेष्ठ सुनाई।
गणधर एक सौ ग्यारह गाए, प्रथम चमर गणधर कहलाए।।
तीस लाख पूरब की स्वामी, आयु पाये हैं प्रभु नामी।
छद्मस्थ काल छह माह का पाए, ज्ञानी बनकर शिवसुख पाए।।
प्रभु सम्मेद शिखर पर आए, योग निरोध महिने का पाए।
फाल्गुन शुक्ल चौथ शुभकारी, मुक्ति पाए प्रभु अविकारी।।
मोहन कूट से मोक्ष सिधाए, अग्निदेव भक्ति से आए।
नख केशों को तभी जलाए, प्रभु पद भक्ति कर हर्षाए।।
सिद्ध शिला पर धाम बनाए, सुख अनन्त अविनाशी पाए।

दोहा– चालीसा प्रभु पद्म का, दिन में चालिस बार।
'विशद' भाव से जो पढ़े, पावें शांति अपार।।

***

श्री चन्द्रप्रभु चालीसा

दोहा– परमेष्ठी की वन्दना, करते योग सम्हाल।
चन्द्र प्रभु के चरण में, वन्दन है नत भाल।।

(शम्भू –छन्द) *तर्ज– आल्हा*

भव दुःख से संतप्त मरुस्थल, में यह भटक रहा संसार।
चन्द्र प्रभु की छत्र छाँव में, आश्रय मिलता है शुभकार।।
जम्बू द्वीप के भरत क्षेत्र में, चन्द्रपुरी है मंगलकार।
यहाँ सुखी थी जनता सारी, महासेन नृप का दरबार।।1।।
महिषी जिनकी वही सुलक्षणा, शुभ लक्षण से युक्त महान।
वैजयन्त से चयकर माँ के, गर्भ में आये थे भगवान।।
इक्ष्वाकु वंश आपका, सारे जग में अपरम्पार।
चैत कृष्ण पाँचे को प्रभु ने, भारत भू पर ले अवतार।।2।।
शुभ नक्षत्र विशाखा पावन, अन्तिम रात्रि थी मनहार।
देव–देवियों ने हर्षित हो, आके किया मंगलाचार।।
पौष कृष्ण ग्यारस को जन्में, हर्षित हुआ राज परिवार।
इन्द्रों ने जाकर सुमेरु पर, न्हवन कराया बारम्बार।।3।।
दाँये पग में अर्द्ध चन्द्रमा, देखके इन्द्र बोला नाम।
चन्द्र प्रभु की जय बोली फिर, चरणों में कीन्हा विशद प्रणाम।।
बढ़ने लगे प्रभु नित प्रतिदिन, गुण के सागर महति महान।
आयु लाख पूर्व दश की शुभ, पाए चन्द्र प्रभु भगवान।।4।।
धनुष डेढ़ सौ थी ऊँचाई, धवल रंग स्फटिक के समान।
तड़ित चमकता देख गगन में, हुआ प्रभु को निज का भान।।
मार्ग शीर्ष शुक्ला सातें को, धारण कीन्हें प्रभु वैराग्य।
अनुराधा नक्षत्र में भाई, सहस्र भूप के जागे भाग्य।।5।।
वन सर्वार्थ नाग तरु तल में, प्रभु ने कीन्हा आतम ध्यान।
फाल्गुन कृष्ण अष्टमी को प्रभु, पाए अनुपम केवलज्ञान।।
समवशरण की रचना आकर, देवों ने की मंगलकार।

साढ़े आठ योजन का भाई, समवशरण का था विस्तार।।6।।
गणधर रहे तिरानवे प्रभु के, उनमें रहे वैदर्भ प्रधान।
गिरि सम्मेद शिखर पर प्रभु जी, ललित कूट पर किये प्रयाण।।
योग निरोध किया था प्रभु ने, एक माह तक करके ध्यान।
भादों शुक्ल सप्तमी को शुभ प्रभु, ने पाया पद निर्वाण।।7।।
ज्येष्ठा शुभ नक्षत्र बताया, काल बताया है पौवाह्ण।
एक हजार साथ में मुनियों, ने भी पाया पद निर्वाण।।
वीतराग मुद्रा को लखकर, बने देव चरणों के भक्त।
मनोयोग से जिन चरणों की, भक्ति में रहते अनुरक्त।।8।।
समन्तभद्र मुनिवर को भाई, भस्म व्याधि जब हुई महान।
शिव को भोग खिलाऊँगा मैं, राजा से वह बोले आन।।
छुपकर उत्तम भोजन खाया, हुआ व्याधि का पूर्ण विनाश।
पता चला राजा को जब तो, राजा मन में हुआ उदास।।9।।
राजा समन्तभद्र से बोले, शिव पिण्डी को करो नमन।
पिण्डी नमन झेल न पाए, कर दो सांकल से बन्धन।।
आप स्वयंभू पाठ बनाए, शीश झुकाकर किए नमन।
पिण्डी फटी चन्द्र प्रभु स्वामी, के सबने पाए दर्शन।।10।।
प्रगट हुए देहरा में प्रभु जी, लोग किए तब जय-जयकार।
सोनागिर में आप विराजे, समवशरण ले सोलह बार।।
टोंक जिला के मैंदवास में, प्रकट हुए भूमि से नाथ।
जयपुर में बैनाड़ क्षेत्र पर, भक्त झुकाते चरणों माथ।।11।।
नगर-नगर के मंदिर में प्रभु, शोभित होते हैं अविकार।
पूजा आरति वन्दन करते, भक्त चरण में बारम्बार।।
सब जीवों में मैत्री जागे, सुख-शांतिमय हो संसार।
'विशद' भावना भाते हैं हम, होवे भव से बेड़ा पार।।12।।

दोहा- चालीसा चालीस दिन, पढ़ें भक्ति के साथ।
सुख-शांति आनन्द पा, होय श्री का नाथ।।

श्री शीतलनाथ चालीसा

दोहा

नमन करें अरहंत को, करें सिद्ध का ध्यान।
आचार्योपाध्याय साधु का, करें विशद गुणगान।।
जैनागम जिनधर्म शुभ, जिन मंदिर नवदेव।
शीतलनाथ जिनेन्द्र को, वन्दूँ विनत सदैव।।

(चौपाई)

आरण स्वर्ग से चय कर आये, माहिलपुर को धन्य बनाए।
जय-जय शीतल नाथ हमारे, भव-भव के दुःख नाशन हारे।।
तुमने कर्म घातिया नाशे, अतिशय केवल ज्ञान प्रकाशे।
दृढ़रथ नृप के पुत्र कहाए, मात सुनन्दा प्रभु की गाए।।
गर्भोत्सव तव इन्द्र मनाए, रत्न वृष्टि करके हर्षाए।।
क्षीर सिन्धु से जल भर लाए, जन्मोत्सव पर न्हवन कराए।।
आयु लाख पूर्व की जानो, कल्प वृक्ष लक्षण पहिचानो।
नब्बे धनुष रही ऊँचाई, महिमा जिनकी कही न जाई।।
पद युवराज आपने पाया, कई वर्षों तक राज्य चलाया।
हिम का नाश देखकर स्वामी, बने मोक्ष पथ के अनुगामी।।
केशलोंच कर दीक्षा धारी, हुए दिगम्बर प्रभु अविकारी।
पंच महाव्रत प्रभु ने पाए, निज आतम का ध्यान लगाए।।
संयम तप धारण कर लीन्हें, संवर और निर्जरा कीन्हें।
कर्म घातिया प्रभु जी नाशे, अतिशय केवल ज्ञान प्रकाशे।।
इन्द्र अनेकों चरणों आये, भक्ति भाव से शीश झुकाए।
पूजा कीन्हीं मंगलकारी, अतिशय हुए वहाँ पर भारी।।

समवशरण तव देव बनाए, प्रातिहार्य अतिशय प्रगटाए।
गणधर रहे सतासी भाई, जिनकी महिमा है अधिकाई।।
कुन्थु गणधर प्रथम कहाए, चार ज्ञान के धारी गाए।
दिव्य देशना प्रभु सुनाए, भव्य जीव सुनने को आए।।
गणधर झेले जिसको भाई, सब भाषा मय सरल बनाई।
सम्यक् दर्शन पाए प्राणी, सुनकर श्री जिनवर की वाणी।।
कुछ लोगों ने संयम पाया, मोक्ष मार्ग उनने अपनाया।
गगन गमन करते थे स्वामी, केवल ज्ञानी अन्तर्यामी।।
स्वर्ण कमल पग तल में जानो, देव श्रेष्ठ रचते थे मानो।
गिरि सम्मेद शिखर पर आये, योग रोधकर ध्यान लगाए।।
विद्युतवर शुभ कूट कहाए, जिसकी महिमा कही न जाए।
अश्विन शुक्ल अष्टमी जानो, पूर्वाषाढ़ नक्षत्र पिछानो।।
इक साधु के संग में भाई, शीतल जिन ने मुक्ति पाई।
विशद भावना हम यह भाते, पद में सादर शीश झुकाते।।
जिस पथ को तुमने अपनाया, मेरे मन में पथ वह भाया।
इसी राह पर हम बढ़ जाएँ, उसमें कोई विघ्न न आएँ।।
साहस बढ़े हमारा स्वामी, बने मोक्ष के हम अनुगामी।
शिव पदवी को हम भी पाएँ, सिद्ध शिला पर धाम बनाएँ।।

दोहा

चालीसा चालीस दिन, दिन में चालीस बार।
'विशद' भाव से जो पढ़े, होवे भव से पार।।
ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य पा, होवे बहु गुणवान।
कर्म नाशकर शीघ्र ही, उसका हो निर्वाण।।

***

श्री वासुपूज्य चालीसा

दोहा– परमेष्ठी जिन पाँच हैं, तीर्थंकर चौबीस।
वासुपूज्य के पद युगल, विनत झुके मम् शीश।।

(चौपाई)

वासुपूज्य जिनराज कहाए, अपने सारे कर्म नशाए।
अनुपम केवलज्ञान जगाए, अविनाशी अनुपम पद पाए।।
महाशुक्र से चयकर आए, चम्पापुर नगरी कहलाए।
पिता वसु नृप अनुपम गाए, जयावती के लाल कहाए।।
आषाढ़ कृष्ण दशमी दिन पाए, इक्ष्वाकु शुभ वंश उपाए।
गर्भ नक्षत्र शतभिषा गाए, प्रातःकाल का समय बिताए।।
फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी गाया, जन्म कल्याणक प्रभु ने पाया।
शुभ नक्षत्र विशाका गया, इन्द्र तभी ऐरावत लाया।।
पाण्डुक शिला पे न्हवन कराया, भैंसा चिह्न पैर में पाया।
वासुपूज्य तब नाम बताया, हर्ष सभी के मन में छाया।।
लोग सभी जयकार लगाए, सत्तर धनुष ऊँचाई पाए।
माघ शुक्ल की चौथ बताए, जाति स्मरण प्रभु जी पाए।।
अपराह्न काल का समय बताया, एक उपवास प्रभु ने पाया।
बाल ब्रह्मचारी कहलाए, लाल वर्ण तन का प्रभु पाए।।
प्रभु मनोहर वन में आए, तरु पाटला का तल पाए।
राजा छह सौ छह बतलाए, साथ में प्रभु के दीक्षा पाए।।
आयु लाख बहत्तर पाए, उत्तम तप कर कर्म नशाए।
माघ शुक्ल द्वितीया शुभ पाए, प्रभु जी केवलज्ञान जगाए।।
मिलकर इन्द्र वहाँ पर आए, प्रभु के पद में ढ़ोक लगाए।
समवशरण सुन्दर बनवाए, साढ़े छह योजन कहलाए।।

गौरी श्रेष्ठ यक्षिणी जानो, सन्मुख यक्ष प्रभु का मानो।
एक माह पूर्व से भाई, योग निरोध किए सुखदायी।।
फाल्गुन कृष्ण पञ्चमी आई, जिस दिन प्रभु ने मुक्ति पाई।
शुभ नक्षत्र अश्विनी गाया, अपराह्न काल का समय बताया।।
मुनिवर छह सौ एक कहाए, साथ में प्रभु के मुक्ति पाए।
छियासठ प्रभु के गणधर गाए, मन्दर उनमें प्रथम कहाए।।
बारह सौ थे पूरब धारी, दश हजार विक्रिया धारी।
शिक्षक पद के धारी गाए, उन्तालिस हजार दो सौ कहलाए।।
छह हजार थे केवलज्ञानी, छह हजार मनःपर्यय ज्ञानी।
दश हजार विक्रियाधारी, ब्यालिस सौ वादी शुभकारी।।
चौवन सौ अवधिज्ञानी पाए, सहस्र बहत्तर सब ऋषि गाए।
आर्यिकाएँ प्रभु चरणों आईं, एक लाख छह सहस्र बताईं।।
वरसेना गणिनी कहलाई, आयु लाख बहत्तर पाई।
एक वर्ष छद्मस्थ बिताए, चम्पापुर से मुक्ति पाए।।
पाँचो कल्याणक शुभ जानो, चम्पापुर में प्रभु के मानो।
ग्रहारिष्ट मंगल के स्वामी, वासुपूज्य जिन अन्तर्यामी।।
मंगल ग्रह हो पीड़ाकारी, प्रभु का वह बन जाए पुजारी।
आरती कर चालीसा गाए, ग्रह पीड़ा को शीघ्र नशाए।।
सुख-शांति वह मानव पाए, उसका भाग्य उदय में आए।
रत्नत्रय पा कर्म नशाए, शीघ्र विभव से मुक्ति पाए।।
यही भावना 'विशद' हमारी, मुक्ति दो हमको त्रिपुरारी।
भव सागर में नहीं भ्रमाएँ, शिवपद पाके शिवसुख पाएँ।।

दोहा- चालीसा जो भाव से, पढ़ते दिन चालीस।
पाते सुख शांति विशद, बनते शिवपति ईश।।

श्री पुष्पदन्त चालीसा

दोहा- अर्हत् सिद्धागम धरम, आचार्योपाध्याय संत।
जिन मंदिर जिनबिम्ब को, नमन अनन्तानंत।।
कुन्द पुष्प सम रूप शुभ, पुष्पदन्त है नाम।
चरण-कमल द्वय में विशद, बारम्बार प्रणाम।।

चौपाई

जय-जय पुष्पदन्त जिन स्वामी, करुणानिधि हे अन्तर्यामी।
तुम हो सब देवों के देवा, इन्द्र करें तव पद की सेवा।।
महिमा है इस जग से न्यारी, सारी जगती बनी पुजारी।
महिमा सारा जग ये गाए, पद में सादर शीश झुकाए।।
प्राणत स्वर्ग से चयकर आए, काकन्दी नगरी कहलाए।
पिताश्री सुग्रीव कहाए, माताश्री जयरामा पाए।।
फाल्गुन कृष्ण नौमी कहलाए, मूल नक्षत्र गर्भ में आए।
प्रातःकाल का समय बताए, इक्ष्वाकु कुल नन्दन गाए।।
मगसिर शुक्ला एकम जानो, प्रभु ने जन्म लिया यह मानो।
मगर चिह्न प्रभु का बतलाया, इन्द्रों ने पद शीश झुकाया।।
धवल रंग प्रभु जी शुभ पाए, धनुष एक सौ ऊँचे गाए।
उल्कापात देख के स्वामी, बने आप मुक्ति पथगामी।।
मगसिर कृष्णा एकम पाए, अनुराधा नक्षत्र कहाए।
अपराह्न काल दीक्षा का गाया, तृतिय भक्त प्रभु ने पाया।।
दीक्षा वृक्ष पुष्प शुभ गाया, शाल वृक्ष तल ध्यान लगाया।
सहस्र भूप संग दीक्षा पाए, निज आतम का ध्यान लगाए।।
कार्तिक शुक्ला तीज बखानी, हुए प्रभुजी केवलज्ञानी।
काकन्दी नगरी फिर आए, अक्ष तरु वन पुष्प कहाए।।

समवशरण वसु योजन पाए, सुन्दर आके देव रचाए।
एक माह पूर्व से स्वामी, योग निरोध किए जगनामी।।
यक्ष आपका ब्रह्म कहाए, काली श्रेष्ठ यक्षणी पाए।
गणधर आप अठासी पाए, उनमें नाग प्रथम कहलाए।।
आयु लाख पूर्व दो पाए, चार वर्ष छद्मस्थ बिताए।
सर्व ऋषि दो लाख बताए, समवशरण में प्रभु के गाए।।
घोषा प्रथम आर्यिका जानो, छियालीस गुण के धारी मानो।
गिरि सम्मेद शिखर पर आए, निज आतम का ध्यान लगाए।।
अश्विन शुक्ल अष्टमी जानो, एक हजार मुनि संग मानो।
मूल नक्षत्र प्रभु जी पाए, अपराह्न काल में मोक्ष सिधाए।।
शुक्रारिष्ट ग्रह जिन्हें सताए, पुष्पदंत प्रभु को वह ध्याये।
पूजा और विधान रचाए, भावसहित चालीसा गाए।।
करे आरती मंगलकारी, शुक्रवार के दिन मनहारी।
जीवन में सुख-शांति पावे, भक्त भाव से जो गुण गावे।।
प्रभु की महिमा रही निराली, है सौभाग्य जगाने वाली।
महिमा सुनकर के हम आए, भाव सुमन अपने उर लाए।।
मम जीवन हो मंगलकारी, विघ्न व्याधि नश जाए हमारी।
तव प्रतिमा के दर्शन पाएँ, हर्ष-हर्ष करके गुण गाएँ।।
पद में सादर शीश झुकाएँ, अपने सारे कर्म नशाएँ।
भव सिन्धु से मुक्ति पाएँ, हम भी अब शिव पदवीं पाएँ।।

दोहा- चालीसा चालीस दिन, पढ़े भाव के साथ।
सुख-शांति आनन्द पा, बने श्री के नाथ।।
विधि सहित पूजा करें, करके 'विशद' विधान।
पाते हैं सौभाग्य वह, अन्त में हो निर्वाण।।

श्री मुनिसुव्रतनाथ चालीसा

अरहंतों को नमन् कर, सिद्धों का धर ध्यान।
उपाध्याय आचार्य अरु, सर्व साधु गुणवान।।
जैन धर्म आगम 'विशद', चैत्यालय जिनदेव।
मुनिसुव्रत जिनराज को, वंदन करूँ सदैव।।

मुनिसुव्रत जिनराज हमारे, जन-जन के हैं तारण हारे।
प्रभु हैं वीतरागता धारी, तीन लोक में करुणा कारी।।
भाव सहित उनके गुण गाते, चरण कमल में शीष झुकाते।
जय जय जय छियालिस गुणधारी, भविजन के तुम हो हितकारी।।
देवों के भी देव कहाते, सुरनर पशु तुमरे गुण गाते।
तुम हो सर्व चराचर ज्ञाता, सारे जग के आप हि त्राता।।
प्रभु तुम भेष दिगम्बर धारे, तुमसे कर्म शत्रु भी हारे।
क्रोध मान माया के नाशी, तुम हो केवलज्ञान प्रकाशी।।
प्रभु की प्रतिमा कितनी सुंदर, दृष्टि सुखद जमीं नाशा पर।
खड्गासन से ध्यान लगाया, तुमने केवलज्ञान जगाया।।
मध्यलोक पृथ्वी का मानो, उसमें जम्बूद्वीप सुहानो।
अंग देश उसमें कहलाए, राजगृहि नगरी मन भाए।।
भूपति वहाँ सुमित्र कहाए, माता पदमा के उर आए।
यादव वंश आपने पाया, कश्यप गोत्र वीर ने गाया।।
प्राणत स्वर्ग से चयकर आये, गर्भ दोज सावन शुदि पाए।
वहाँ पे सुर बालाएँ आईं, माँ की सेवा करें सुभाई।।
वैशाख वदी दशमी दिन आया, जन्म राजगृह नगरी पाया।
इन्द्र सभी मन में हर्षाए, ऐरावत ले द्वारे आये।।
पांडुकशिला अभिषेक कराया, जन-जन का तव मन हर्षाया।
पग में कछुआ चिह्न दिखाया, मुनिसुव्रत जी नाम कहाया।।
जन्म से तीन ज्ञान के धारी, क्रीड़ा करते सुखमय भारी।
बल विक्रम वैभव को पाए, जग में दीनानाथ कहाए।।

बीस धनुष तन की ऊँचाई, तन का रंग कृष्ण था भाई।
कई वर्षों तक राज्य चलाया, सर्व प्रजा को सुखी बनाया।।
उल्का पतन प्रभू ने देखा, चिंतन किए द्वादश अनुप्रेक्षा।
सुर लौकान्तिक स्वर्ग से आए, प्रभु के मन वैराग्य जगाए।।
देव पालकी अपराजित लाए, उसमें प्रभु जी को पधराए।
भूपति कई प्रभु को ले चाले, देवों ने की स्वयं हवाले।।
वैशाख वदी दशमी दिन आया, नील सु वन चंपक तरु पाया।
मुनिव्रतों को तुमने पाया, प्रभु ने सार्थक नाम बनाया।।
पंचमुष्टि से केश उखाड़े, आकर देव सामने ठाड़े।
केश क्षीर सागर ले चाले, भक्तिभाव से उसमें डाले।।
वेला के उपवास जो धारे, तीजे दिन राजगृही पधारे।
वृषभसेन पड़गाहन कीन्हा, खीर का शुभ आहार जो दीन्हा।।
वैशाख कृष्ण नौमी दिन आया, प्रभु ने केवलज्ञान जगाया।
देव सभी दर्शन को आए, समवशरण सुंदर बनवाए।।
गणधर प्रभु अठारह पाए, उनमें प्रमुख सुप्रभ कहलाए।
तीस हजार मुनि संग आए, समवशरण में शोभा पाए।।
इकलख श्रावक भी आए भाई, तीन लाख श्राविकाएँ आईं।
संख्यातक पशु वहाँ आए, असंख्यात सुर गण भी आये।।
प्रभु सम्मेद शिखर को आए, खड्गासन से ध्यान लगाए।
पूर्व दिशा में दृष्टि पाए, निर्जर कूट से मोक्ष सिधाए।।
फाल्गुन वदी वारस दिन जानो, श्रवण नक्षत्र मोक्ष का मानो।
प्रदोष काल में मोक्ष सिधाये, मुनि अनेक सह मुक्ति पाये।।
शनि अरिष्ट गृह जिन्हें सताए, मुनिसुव्रत जी शांति दिलाएँ।
इह पर भव के सुख हम पाएँ, मुक्तिवधु को हम पा जाएँ।।

दोहा– पाठ करें चालीस दिन, नित चालीसों बार।
मुनिसुव्रत के चरण में, खेय सुगंध अपार।।
मित्र स्वजन अनुकूल हों, योग्य होय संतान।
दीन दरिद्री होय जो, 'विशद' होय धनवान।।

श्री नेमीनाथ चालीसा

दोहा

परमेष्ठी के पद युगल, करते विशद प्रणाम।
नेमिनाथ का भाव से, ले सुखकारी नाम।।

(चौपाई छन्द)

नेमीनाथ दया के सागर, करुणाकर हे ज्ञान ! उजागर।
सुर नर जिनको वन्दन करते, ऐसे प्रभु जग के दुख हरते।।
कार्तिक शुक्ला षष्ठी प्यारी, प्रभु जी आप हुए अवतारी।
राजा समुद्र विजय के घर में, रानी शिवादेवी के उर में।।
अपराजित से च्युत हो आये, शौरीपुर नगरी को पाए।
श्रावण शुक्ला षष्ठी आई, शौरीपुर में जन्में भाई।।
अनहद बाजे देव बजाए, सुर–नर पशु मन में हर्षाए।
इन्द्र तभी ऐरावत लाया, शची ने प्रभु को गोद बिठाया।।
माया मय शिशु वहाँ लिटाया, माता ने कुछ जान न पाया।
क्षीर सिंधु से जल भर लाये, वसु योजन के कलश भराये।।
पाण्डुक वन अभिषेक कराये, इन्द्रों ने तव चँवर ढुराये।
शंख चिन्ह दाएँ पग पाया, नेमिनाथ सुर नाम सुनाया।।
आयु सहस्त्र वर्ष की पाई, चालिस हाथ रही ऊँचाई।
श्याम वर्ण प्रभु तन का पाया, जग को अतिशय खूब दिखाया।।
नारायण बलदेव से भाई, आन मिले जो हैं अधिकाई।
कौतूहल वश बात ये आई, शक्ति किसमें अधिक है भाई।।
कोई वीर बलदेव को कहते, कोई कृष्ण की हामी भरते।
कोई शम्भू नाम पुकारें, कोई अनिरुद्ध के देते नारे।।
नेमीनाथ का नाम भी आया, कुछ लोगों को नहीं ये भाया।

ऊगली कनिष्ठ मोड़ दिखलाई, सीधी करे जो वीर है भाई।।
सब अपनी शक्ति अजमाए, कोई सीधी न कर पाए।
हार मान योद्धा सिरनाये, श्री कृष्ण मन में घबड़ाए।।
राज्य छीन न लेवे भाई, कृष्ण ने युक्ति एक लगाई।
जल क्रीड़ा की राह दिखाई, पटरानी कई साथ लगाई।।
नेमी जामवती से बोले, भाभी मेरी धोती धो ले।
भाभी ने तब रौब जमाया, मैंने पटरानी पद पाया।।
तुम भी अपना ब्याह रचाओ, रानी पा धोती धुलवाओ।
मेरे पति चक्र के धारी, शंख बजाते विस्मयकारी।।
तुमको जरा लाज नहिं आई, हमसे छोटी बात सुनाई।
रोम-रोम प्रभु का थर्राया, उनको सहन नहीं हो पाया।।
आयुधशाला पहुँचे भाई, शैया नाग की प्रभु बनाई।
पैर की ऊँगली को फैलाया, उस पर रख कर चक्र चलाया।।
पीछे हाथ में शंख उठाया, नाक के स्वर से उसे बजाया।
उससे तीन लोक थर्राया, श्री कृष्ण का मन घबड़ाया।।
जाकर भाई को समझाया, उनके मन को धैर्य दिलाया।
शादी की तब बात चलाई, जूनागढ़ पहुंचे फिर भाई।।
उग्रसेन से कृष्ण सुनाए, राजुल नेमि से परणाएँ।
उग्रसेन हर्षित हुए भारी, शीघ्र ब्याह की की तैयारी।।
श्री कृष्ण ने की होशियारी, नृप बुलवाए मांसाहारी।
नेमि दूल्हा बनकर आए, बाड़े में कई पशु रंभाए।।
करुणा से नेमि भर आए, पूछा क्यों यह पशु बंधाए।
इन पशुओं का मांस बनेगा, इन लोगों में हर्ष मनेगा।।
सुनते ही वैराग्य समाया, पशुओं का बन्धन खुलवाया।
कंगन तोड़े वस्त्र उतारे, गिरनारी जा दीक्षा धारे।।

राजुल सुनकर के घबड़ाई, दौड़ प्रभु के चरणों आई।
प्रभु को राजुल ने समझाया, नहिं माने तो साथ निभाया।।
केशलुंच कर दीक्षा धारी, बनी आर्यिका राजुल नारी।
श्रावण शुक्ला षष्ठी पाए, पद्मासन से ध्यान लगाए।।
सहस एक नृप दीक्षा धारे, द्वारावति में लिए आहारे।
श्रावण सुदि नौमी दिन पाया, वरदत्त ने यह पुण्य कमाया।।
अश्विन सुदि एकम् दिन आया, प्रभु ने केवलज्ञान जगाया।
सवशरण मिल देव बनाए, दिव्य देशना प्रभु सुनाए।।
ग्यारह गणधर प्रभु ने पाए, वरदत्त उनमें प्रथम कहाए।
आषाढ़ शुक्ल आठें दिन भाई, ऊर्जयंत से मुक्ति पाई।।
हम भी उस पदवी को पाएँ, कर्म नाश कर मुक्ति पाएँ।।

सोरठा– चालीसा चालीस दिन में, जो पढ़ता 'विशद'।
चरण झुकाए शीश, रोग शोक चिंता मिटे।।

***

श्री पार्श्वनाथ चालीसा

दोहा– अर्हत् सिद्धाचार्य शुभ, उपाध्याय जिन संत।
पार्श्व प्रभु के चरण में, नमन अनंतानंत।।

(तर्ज– नित देव मेरी आत्मा...)

जिनराज पारसनाथ स्वामी, लोक में पावन रहे।
संसार में जो भव्य जीवों, के तरण-तारण कहे।।
कर ध्यान आतम का प्रभु जी, नाश कर अज्ञान का।
अनुपम अलौकिक आपने, दीपक जलाया ज्ञान का।।1।।

कुँवर हैं अश्वसेन के जो, मात वामा जानिए।
नगर काशी के अधीपति, आप को पहिचानिए।।
शुभ दोज वदि वैशाख तिथि को, गर्भ में आये प्रभो !।
छह माह पहले से नगर में, हर्ष छाये थे विभो !।।2।।
तब रत्न वृष्टि दिव्य करके, देव हर्षाए अहा।
शुभ पोष कृष्ण एकादशी को, जन्म का उत्सव रहा।।
तब इन्द्र ऐरावत पे आके, प्रभो को भी ले गया।
शुभ न्हवन मेरु पर कराया, हुआ तव उत्सव नया।।3।।
शुभ नाग लक्षण दाएँ पद में, इन्द्र ने देखा तभी।
तब नाम पारस बोलकर, जयकार शुभ कीन्हें सभी।।
युवराज पारस सैर करने को, सघन वन में गये।
जाके वहाँ देखे प्रभु में, विशद कई अचरज नये।।4।।
पञ्चाग्नि तप में जीव जलते, देखकर प्रभु ने कहा।
रे तापसी ! जीवों को अग्नि, में जलाता जा रहा।।
लेकर कुल्हाड़ी तापसी ने, लक्कड़े फाड़े सभी।
अध जले तब नाग निकले, लक्कड़ों से वह सभी।।5।।
नवकार नागों को सुनाया, प्रभु ने यह जानिए।
धरणेन्द्र व पद्मावति हुए, आप यह सच मानिए।।
संसार की यह दशा लखकर, प्रभु संयम धर लिए।
तब पौष एकादशी कृष्णा, सब परिग्रह तज दिए।।6।।
धनदत्त के गृह क्षीर का, आहार प्रभु पारस लिये।
देवों ने आकर पञ्च आश्चर्य, उस समय आकर किये।।
जब सघन वन में ध्यान करते, थे प्रभु यह मानिए।
तब धूमकेतु देव ने, उपसर्ग कीन्हा मानिए।।7।।

की धूल अग्नि पत्थरों की, वृष्टि आके देव ने।
तब ध्यान आतम का किया था, पार्श्व प्रभु जिनदेव ने।।
अहिक्षेत्र में यह हुई घटना, आप यह सुन लीजिए।
जिन पार्श्व प्रभु का वहाँ जाकर, आप दर्शन कीजिए।।8।।
उपसर्ग वह धरणेन्द्र, पद्मावति ने टाला तभी।
जयकार करने लगे सुर–नर, प्रभु की आके सभी।।
शुभ चैत कृष्णा चौथ प्रभु जी, ज्ञान केवल पा लिए।
तव इन्द्र आये सौ वहाँ पर, ढ़ोक चरणों में दिए।।9।।
कर समवशरण रचना निराली, महत् उत्सव भी किया।
ॐकार ध्वनि में पार्श्व ने, संदेश मुक्ति का दिया।।
सम्मेदगिरि पहुँचे वहाँ से, मोक्ष पाए जिन प्रभो !।
श्रावण सुदी साते को जिनवर, पा गये शिवपद विभो !।।10।।
है प्रार्थना इतनी प्रभु, अब शरण हमको दीजिए।
हे नाथ ! अपने भक्त को भी, आप सा कर लीजिए।।
विश्वास है इतना प्रभु न, भक्त को ठुकराओगे।
अतिशीघ्र मुक्तिपथ दिखाकर, सिद्धि तुम दिलवाओगे।।11।।
जिनबिम्ब जग में पार्श्व प्रभु के, छाए हैं कई श्रेष्ठतम।
शुभ दर्श करके पार्श्व जिन का, नाश होता मोहतम।।
हम भावना भाते स्वयं, जिनदेव का दर्शन मिले।
मेरे हृदय में पुष्प श्रद्धा, का विशद अनुपम खिले।।12।।

दोहा– चालीसा जिन पार्श्व का, पढ़े जो चालिस बार।
सुख शांति सौभाग्य पा, होय विशद भव पार।।

जाप– ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐम् अर्हं विघ्न विनाशक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः।

***

श्री अभिनंदननाथ चालीसा

दोहा– नव देवों के चरण में, नव कोटि के साथ।
भक्ति करते भाव से, चरण झुकाते माथ।।
अभिनन्दन जिनराज का, चालीसा शुभकार।
मुक्ति पद के भाव से, लिखते अपरम्पार।।

(चौपाई)

है आकाश अनन्तानन्त, जिसका कहीं न होता अंत।
बीच में तीनों लोक महान्, मध्य लोक में मध्य प्रधान।।
जिसमें जम्बूद्वीप विशेष, दक्षिण में है भारत देश।
नगर अयोध्या रहा महान्, नृपति संवर जिसका जान।।
कश्यप गोत्र रहा शुभकार, वंश इक्ष्वाकु मंगलकार।
रानी सिद्धार्था के उर आन, गर्भ में आए जिन भगवान।।
बेला प्रत्यूष रही प्रधान, पुनर्वसू नक्षत्र महान।
वैसाख शुक्ला षष्ठी जान, पाए प्रभु गर्भ कल्याण।।
माघ शुक्ल बारस शुभकार, जन्म लिए जिन मंगलकार।
पुनर्वसु नक्षत्र प्रधान, राशि स्वामी बुध पहिचान।।
पीत वर्ण तन का शुभकार, बन्दर चिह्न रहा मनहार।
पचास लाख पूरब की जान, आयु पाये जिन भगवान।।
साढ़े तीन सौ धनुष महान्, अवगाहन प्रभु तन का जान।
प्रभु ने देखा मेघ विनाश, धारण किए आप सन्यास।।
माघ शुक्ल बारस मनहार, प्रत्यूष बेला अपरम्पार।
चित्रा हस्त पालकी जान, पुनर्वसु नक्षत्र महान्।।
नगर अयोध्या रहा महान्, दीक्षा स्थल उग्र उद्यान।
दीक्षा वृक्ष असन पहिचान, धनु बयालिस सौ उच्च महान्।।

सहस भूप सह दीक्षित जान, कर बेला उपवास महान्।
दो दिन बाद लिए आहार, क्षीर खीर का प्रभु मनहार।।
नगर अयोध्या मंगलकार, राजा इन्द्रदत्त गृहवार।
शुभ अष्टादश वर्ष विशेष, रहे आप छद्मस्थ जिनेश।।
पौष शुक्ल चौदस दिनमान, प्रभु ने पाया केवल ज्ञान।
इन्द्र राज धनपति के साथ, आकर चरण झुकाए माथ।।
समवशरण रचना शुभकार, साढ़े दश योजन विस्तार।
पद्मासन में बैठ जिनेश, दिव्य–देशना दिए विशेष।।
गणधर एक सौ तीन महान्, वज्रनाभि थे गणी प्रधान।
तीन लाख मुनिवर अनगार, प्रभु के साथ रहे शुभकार।।
यक्षेश्वर था यक्ष प्रधान, यक्षी वज्र शृंखला जान।
छठ वैसाख शुक्ल की जान, श्री सम्मेद शिखर स्थान।।
खड्गासन से आप जिनेश, कूटानन्द स्थान विशेष।
सर्व कर्म का किए विनाश, सिद्ध शिला पर कीन्हें वास।।
पाए ज्ञान अनन्तानन्त, सुख अनन्त पाए भगवन्त।
आप हुए अभिनन्दन नाथ, चरण झुकाते तव हम माथ।।
कई जिनबिम्ब रहे शुभकार, सर्व जहाँ में मंगलकार।
अनुपम रहा दिगम्बर भेष, देते शिवपद का उपदेश।।
भक्ति करे भाव के साथ, प्रभु के चरण झुकाए माथ।
उसका होय 'विशद' कल्याण, शीघ्र प्राप्त हो केवलज्ञान।।
नश जाए क्षण में संसार, मुक्ति पद पाए शुभकार।
हम भी करते प्रभु गुणगान, प्राप्त हमें हो पद निर्वाण।।

दोहा– अभिनन्दन जिनराज का, चालीसा शुभकार।
पढ़े सुने जो भाव से, उसका हो उद्धार।।
सुख–शांति सौभाग्य पा, जग में बने महान्।
कर्म नाश कर जीव वह, पद पावे निर्वाण।।

श्री सुपार्श्वनाथ चालीसा

दोहा– परमेष्ठी जिन पाँच हैं, जग में अपरम्पार।
चैत्य चैत्यालय धर्म जिन, आगम मंगलकार।।
चालीसा लिखते यहाँ, जिन सुपार्श्व के नाम।
तीन योग से चरण में, करके विशद प्रणाम।।

(चौपाई)

जिन सुपार्श्व महिमा के धारी, तीन लोक में मंगलकारी।
तुम हो सर्व चराचर ज्ञाता, भवि जीवों के अनुपम त्राता।।
मोह मान माया को त्यागा, केवल ज्ञान हृदय में जागा।
अतः आपके गुण सब गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।
जम्बू द्वीप रहा शुभकारी, भरत क्षेत्र जिसमें मनहारी।
काशी देश बनारस नगरी, प्रजा सुखी जानो तुम सगरी।।
सुप्रतिष्ठ राजा शुभ गाए, पृथ्वी सेना रानी पाए।
भादव शुक्ला षष्ठी जानो, प्रत्यूष बेला शुभ पहिचानो।।
मध्यम ग्रैवेयक से चय आये, समुद्र विमान वहाँ पर पाए।
विशाख नक्षत्र रहा शुभकारी, गर्भ प्रभु पाए मनहारी।।
देव स्वर्ग से चलकर आए, रत्नों की वृष्टी करवाए।
ज्येष्ठ शुक्ल बारस शुभ जानो, शुभ नक्षत्र विशाख बखानो।।
अग्निमित्र योग शुभकारी, तुला राशि जानो मनहारी।
शुक्र राशि का स्वामी गाया, जिसमें जन्म प्रभु ने पाया।।
हरित वर्ण तन का शुभ जानो, स्वस्तिक चिह्न आपका मानो।
इन्द्रराज चरणों में आया, पद में सादर शीश झुकाया।।
सहस आठ कलशा शुभ लाया, मेरू गिरि पर न्हवन कराया।
बीस लाख पूरब की भाई, आयु पाये हैं सुखदायी।।
दो सौ धनुष रही ऊँचाई, प्रभु के तन की मंगलदायी।
पतझड़ देख भावना भाए, मन में प्रभु वैराग्य जगाए।।

ज्येष्ठ शुक्ल बारस पहिचानो, सायंकाल श्रेष्ठ शुभ मानो।
विशाख नक्षत्र श्रेष्ठ शुभ पाए, देव स्वर्ग से चलकर आए।।
पालकी श्रेष्ठ मनोगति लाए, सहस्राभ वन में पहुँचाए।
शिरीष वृक्ष रहा शुभ भाई, धनुष श्रेष्ठ दो सौ ऊँचाई।।
एक सहस्र भूपति संग आए, प्रभु के साथ में दीक्षा पाए।
सोम खेट नगरी शुभ जानो, महेन्द्रदत्त नृप के गृह मानो।।
प्रभु आहार क्षीर की कीन्हें, विषयों की आशा तज दीन्हें।
शुभ छद्मस्थ काल सुखदायी, प्रभु नौ वर्ष बताया भाई।।
फाल्गुन कृष्णा षष्ठी जानो, तिथि शुभ केवलज्ञान की मानो।
सौ–सौ इन्द्र शरण में आए, चरणों में नत शीश झुकाए।।
धनपति साथ में इन्द्र के आया, जो शुभ समवशरण बनवाया।
सौ योजन का है शुभकारी, तरुवर श्रेष्ठ अशोक मनहारी।।
गणधर पञ्चानवे शुभ गाये, बलदत्त प्रथम गणी कहलाए।
मुनिवर ढाई लाख बतलाए, जो शुभ उत्तम संयम पाए।।
काली यक्षी प्रभु की गाई, यक्ष विजय था अनुपम भाई।
गिरि सम्मेद शिखर जिन आए, कूट प्रभास प्रभुजी पाए।।
फाल्गुन वदि साते शुभ जानो, शुभ नक्षत्र विशाखा मानो।
खड्गासन से श्री जिन स्वामी, जिन मुक्ति पाए अनुगामी।।
जिनवर श्री सुपार्श्व कहलाए, जो उपसर्ग जयी शुभ गाए।
प्रभु की प्रतिमाएँ शुभकारी, इस जग में अति मंगलकारी।।
कई इक जगह नागफण वाली, प्रतिमाएँ शुभ रही निराली।
प्राणी शुभ जिन दर्शन पाएँ, शिवपद का जो बोध कराएँ।।

दोहा– चालीसा चालीस दिन, पढ़े भाव के साथ।
शुभ तन मन सौभाग्य पा, बने श्री के नाथ।।
सुख समृद्धि बुद्धि बल, बढ़ता अपने आप।
'विशद' ज्ञान जागे परम, कट जाते हैं पाप।।

श्री विमलनाथ चालीसा

दोहा– पञ्च परम परमेष्ठि को, वन्दन बारम्बार।
चालीसा गाते यहाँ, पाने पद अनगार।।
पूज्य हुए हैं लोक में, विमलनाथ भगवान।
भक्ति भाव से हम यहाँ, करते हैं गुणगान।।

(चौपाई)

जम्बूद्वीप रहा मनहारी, भरत क्षेत्र जिसमें शुभकारी।
अंगदेश जिसमें शुभ गाया, नगर कम्पिला श्रेष्ठ बताया।।
राजा कृतवर्मा शुभ गाये, जैनधर्म धारी कहलाए।
जयश्यामा जिनकी महारानी, जिनकी नहीं है कोई शानी।।
वंश इक्ष्वाकु जिनका गाया, जो इस जग में श्रेष्ठ बताया।
ज्येष्ठ वदी दशमी शुभकारी, प्रातःकाल की बेला प्यारी।।
शुभ नक्षत्र आपने पाया, उत्तरा भाद्रपद नाम बताया।
सहस्रार से चयकर आये, माँ के गर्भ को धन्य बनाए।।
माघ कृष्ण की चौथ बताई, मीन राशि अतिशय शुभ गाई।
बृहस्पति राशि का स्वामी, पाये हैं जिन अन्तर्यामी।।
तप्त स्वर्ण सम तन शुभ पाए, उससे भी न नेह लगाए।
साठ धनुष तन की ऊँचाई, सूकर लक्षण जानो भाई।।
वर्ष साठ लख आयु पाए, जग के भोग तुम्हें न भाए।
मेघ विनाश देखकर स्वामी, हुए आप मुक्ती पथगामी।।
शुक्ला माघ चतुर्थी जानो, सन्ध्याकाल श्रेष्ठ पहिचानो।
चलकर देव स्वर्ग से आए, साथ पालकी अपने लाए।।
उसमें प्रभु जी को बैठाए, सहस्राभ वन चलकर आये।
जम्बू वृक्ष रहा शुभकारी, जिसके नीचे दीक्षा धारी।।
एक सहस राजा भी आए, साथ में प्रभु के दीक्षा पाए।
दो उपवास आपने कीन्हे, शुभ क्षीरान्न आहार में लीन्हे।।
नृपति कनक प्रभ अनुपम गाया, आहारदाता जो कहलाया।
चन्दनपुर नगरी शुभकारी, रही पारणा नगरी प्यारी।।

उत्तम संयम प्रभु जी पाए, तप से अपने कर्म नशाए।
माघ शुक्ल षष्ठी दिन आया, प्रभु ने केवलज्ञान जगाया।।
इन्द्र वहाँ चलकर के आया, धन कुबेर को साथ में लाया।
चरणों आकर ढोक लगाए, समवशरण रचना करवाए।।
छह योजन विस्तार बताया, जिसमें प्रभुजी को बैठाया।
पद्मासन से बैठे स्वामी, तीन लोक के अन्तर्यामी।।
केवलज्ञानी अनुपम गाए, साढ़े पाँच सहस्र बतलाए।
ग्यारह सौ थे पूरब धारी, समवशरण में मुनि अविकारी।।
साढ़े अड़तिस सहस निराले, शिक्षक शिक्षा देने वाले।
विपुलमति मनःपर्ययज्ञानी, रहे पाँच सौ ज्ञानी ध्यानी।।
मुनि बानवे सौ अविकारी, रहे विक्रिया ऋद्धीधारी।
अड़तालिस सौ अवधिज्ञानी, आगम वर्णित संख्या मानी।।
वादी छत्तिस सौ बतलाए, मुक्ती पथ के नेता गाए।
पचपन गणधर श्रेष्ठ बताए, गणधर प्रथम मंदरजी गाये।।
अड़सठ सहस मुनि अविकारी, साथ में प्रभु के थे शुभकारी।
एक लाख आर्यिकाएँ जानो, गणिनी प्रमुख पद्मश्री मानो।।
श्रावक शुभ दो लाख बताए, श्रोता प्रमुख स्वयंभू गाए।
यक्ष चतुर्मुख जानो भाई, यक्षी वैरोटी बतलाई।।
अनुबद्ध केवली चालिस गाए, पन्द्रह लाख वर्ष तप पाए।
योग निरोध किए जिन स्वामी, एक माह पहिले शिवगामी।।
अषाढ़ कृष्ण आठें शुभ जानो, प्रातःकाल समय पहिचानो।
गिरि सम्मेद शिखर से भाई, कूट सुवीर से मुक्ती पाई।।
जग में कई जिनबिम्ब निराले, वीतराग दर्शाने वाले।
उनके शुभ दर्शन हम पाएँ, अपने हम सौभाग्य जगाएँ।।

दोहा– चालीसा पढ़ते शुभम्, दिन में चालिस बार।
सुख शांति सौभाग्य पा, पाते भव से पार।।
विमलनाथ भगवान का, करते हम गुणगान।
यही भावना है 'विशद', होय शीघ्र निर्वाण।।

श्री अनन्तनाथ चालीसा

दोहा– नव देवों के चरण में, वंदन बारम्बार।
अनन्तनाथ जिनराज का, चालीसा शुभकार।।

(चौपाई)

जम्बूद्वीप रहा शुभकारी, भरत क्षेत्र जिसमें मनहारी।
जिसमें कौशल देश बताया, नगर अयोध्या पावन गाया।।
राजा सिंहसेन कहलाए, इक्ष्वाकु वंशी शुभ गाए।
सर्वयशा रानी कहलाई, शुभ लक्षण से युक्त बताई।।
अच्युत स्वर्ग से चयकर आये, पुष्पोत्तर विमान शुभ पाए।
चयकर माँ के गर्भ में आए, माता के सौभाग्य जगाए।।
ज्येष्ठ कृष्ण बारस शुभकारी, जन्म प्रभु पाये मनहारी।
राशि श्रेष्ठ मीन शुभ जानो, बृहस्पति स्वामी पहिचानो।।
तन का वर्ण स्वर्ण शुभ गाया, पग में सेही चिह्न बताया।
तीस लाख वर्षों की भाई, अनन्तनाथ ने आयु पाई।।
धनुष पचास रही ऊँचाई, श्री जिनेन्द्र के तन की भाई।
पन्द्रह लाख वर्ष का स्वामी, राजभोग पाए शिवगामी।।
उल्का पतन देखकर भाई, हो विरक्त शुभ दीक्षा पाई।
शुभ नक्षत्र रेवती गाया, सायंकाल का समय बताया।।
नगर अयोध्या अनुपम जानो, सागरदत्त पालकी मानो।
आप सहेतुक वन में आए, पीपल वृक्ष श्रेष्ठ शुभ पाए।।
दीक्षा वृक्ष की शुभ ऊँचाई, छह सौ धनुष शास्त्र में गाई।
एक हजार नृपति शुभ आए, दीक्षा प्रभु के साथ में पाए।।
केशलुंच कर दीक्षा धारे, अपने सारे वस्त्र उतारे।
दो उपवास आपने कीन्हे, फिर क्षीरान्न आप शुभ लीन्हे।।
नगर अयोध्या में शुभ जानो, नृपति विशाखराज पहिचानो।
आहारदाता जो कहलाया, उसने अनुपम पुण्य कमाया।।

वन उपवन में ध्यान लगाए, दो वर्षों का समय बिताए।
कृष्णा चैत अमावस जानो, केवलज्ञान तिथि पहचानो।।
इन्द्र कुबेर आदि शुभकारी, देव चरण में आये भारी।
समवशरण रचना करवाई, खुश हो जय–जयकार लगाई।।
साढ़े पाँच योजन का भाई, मणि रत्नों का है सुखदायी।
पाँच हजार केवली गाए, पूरबधारी सहस बताए।।
साढ़े पैंतिस सहस निराले, शिक्षक शिक्षा देने वाले।
विपुलमति मनःपर्यय ज्ञानी, पाँच सहस्र कही जिनवाणी।।
तैंतालिस सौ अवधिज्ञानी, बत्तिस सौ वादी विज्ञानी।
आठ सहस ऋद्धि के धारी, छयासठ सहस मुनि अविकारी।।
गणधर श्रेष्ठ पचास बताए, गणधर श्री जय प्रथम कहाए।
किन्नर यक्ष रहा शुभकारी, यक्षी वैरोटी मनहारी।।
एक माह पहले जिन स्वामी, योग निरोध किए शिवगामी।
गिरि सम्मेद शिखर शुभकारी, कूट स्वयंप्रभ है मनहारी।।
कृष्णा चैत अमावस जानो, अपराह्न काल श्रेष्ठ पहिचानो।
रेवती शुभ नक्षत्र बताया, आसन कायोत्सर्ग कहाया।।
एक हजार शिष्य शुभ गाए, साथ में प्रभु के मुक्ति पाए।
शुभ अनुबद्ध केवली गाये, छत्तिस आगम में बतलाये।।
वीतराग जिनकी प्रतिमाएँ, भव्यों को शिवमार्ग दिखाएँ।
जिनबिम्बों के हम गुण गाते, नत हो सादर शीश झुकाते।।

दोहा– चालीसा चालीस दिन, पढ़े सुने जो कोय।
ऋद्धि सिद्धि सौभाग्य श्री, सुख समृद्धि होय।।
गुण अनन्त के कोष हैं, अनन्त नाथ भगवान।
उनकी अर्चा से मिले, 'विशद' शीघ्र निर्वाण।।

श्री धर्मनाथ चालीसा

दोहा– रहे पूज्य नव देवता, तीनों लोक महान्।
धर्मनाथ भगवान का, करते हम गुणगान।।
चालीसा गाते यहाँ, भाव सहित शुभकार।
वन्दन करते पद युगल, जिन पद बारम्बार।।

(चौपाई)

लोकालोक रहा शुभकारी, मध्य लोक जिसमें मनहारी।
मध्य में जम्बूद्वीप बताया, भरत क्षेत्र जिसमें शुभ गाया।।
जिसमें अंग देश है भाई, रत्नपुरी नगरी सुखदायी।
भानुराय जिसमें कहलाए, कुरू वंश के स्वामी गाए।।
कश्यप गोत्री जो कहलाए, महारानी सुव्रता जो पाए।
वैसाख शुक्ल त्रयोदशि जानो, प्रातःकाल समय पहिचानो।।
शुभ नक्षत्र रेवती पाए, चयकर सर्वार्थ सिद्धि से आए।
तीर्थंकर प्रकृति शुभ पाए, प्रभु जी माँ के गर्भ में आए।।
माघ शुक्ल तेरस शुभकारी, पुष्य नक्षत्र रहा मनहारी।
अतिशय जन्म प्रभुजी पाए, जन्म कल्याणक जो कहलाए।।
कर्क राशि का योग बताया, राशि स्वामी चन्द्र कहाया।
स्वर्ण वर्ण तन का है भाई, धनुष पैंतालिस है ऊँचाई।।
वर्ष लाख दश आयु पाए, वज्रदण्ड पहिचान कराए।
उल्कापात देखकर स्वामी, दीक्षा पाए अन्तर्यामी।।
माघ शुक्ल तेरस शुभकारी, पुष्य नक्षत्र रहा मनहारी।
दीक्षा नगर रत्नपुर गाया, सायंकाल का समय बताया।।
देव पालकी लेकर आये, नागदत्ता शुभ नाम बताए।
शालिवन उद्यान बताया, दीर्घपर्ण तरुवर कहलाया।।
एक सौ अस्सी धनुष ऊँचाई, दीक्षा वृक्ष की जानो भाई।
एक सहस राजा भी आए, साथ में प्रभु के दीक्षा पाए।।

दो उपवास आपने कीन्हें, शुभ क्षीरान्न बाद में लीन्हे।
धर्म मित्र दाता कहलाया, पाटलिपुत्र नगर शुभ गाया।।
एक वर्ष तप काल बताया, बाद में केवलज्ञान जगाया।
पौष शुक्ल पूनम शुभ जानो, संध्याकाल समय शुभ मानो।।
इन्द्र राज–चरणों में आया, धन कुबेर को साथ में लाया।
साथ में देव अन्य कई आए, समवशरण रचना बनवाए।।
पाँच योजन विस्तार बताया, पद्मासन प्रभु ने शुभ पाया।
साथ में केवलज्ञान जगाए, साढ़े चार सहस बतलाए।।
सात हजार विक्रियाधारी, नौ सौ पूरब धर अविकारी।
चालिस सहस सात सौ भाई, शिक्षक की संख्या बतलाई।।
चार हजार पाँच सौ जानो, मनःपर्यय ज्ञानी पहिचानो।
अवधि ज्ञानधारी मुनि आए, तीन सहस छह सौ बतलाए।।
दो हजार आठ सौ भाई, वादी मुनि संख्या बतलाई।
प्रभु के साथ मुनीश्वर आए, चौंसठ सहस पूर्ण कहलाए।।
गणधर तैंतालिस कहलाए, अरिष्ठसेन प्रथम गणि कहाए।
यक्ष किंपुरुष जानो भाई, अनन्तमति यक्षी कहलाई।।
प्रभु सम्मेद शिखर पर आए, कूट सुदत्तवर अनुपम गाए।
योग निरोध किए जिन स्वामी, एक माह पहले शिवगामी।।
कायोत्सर्गासन प्रभु पाए, स्वामी प्रातः मोक्ष सिधाए।
चौथ ज्येष्ठ शुक्ला की जानो, मोक्ष कल्याणक की तिथि मानो।।
पन्द्रहवें तीर्थंकर गाए, जग को मुक्ति मार्ग दिखाए।
जिन प्रतिमाएँ हैं शुभकारी, वीतराग मुद्रा अविकारी।।
दर्शन कर सद्दर्शन पाएँ, अपने हम सौभाग्य जगाएँ।
प्रभु की महिमा है शुभकारी, तीन लोक में मंगलकारी।।

दोहा– चालीसा चालीस दिन, पढ़ें सुने जो लोग।
सुख शांति सौभाग्य का, मिले उन्हें संयोग।।
धर्मनाथ के चरण को, ध्याये जो गुणवान।
अल्प समय में ही, 'विशद' पावें वह निर्वाण।।

श्री कुन्थुनाथ चालीसा

दोहा– परमेष्ठी के पद युगल, वन्दन बारम्बार।
चालीसा जिन कुन्थु का, गाते हम शुभकार।।

(चौपाई)

मध्य लोक पृथ्वी पर गाया, जिसमें जम्बूद्वीप बताया।
भरत क्षेत्र जानो शुभकारी, आर्य खण्ड की महिमा न्यारी।।
कुरुजांगल शुभ देश कहाया, नगर हस्तिनापुर शुभ गाया।
सूरसेन राजा कहलाए, कुरूवंश के स्वामी गाए।।
रानी श्रीमती शुभ गाई, धर्म परायण जानो भाई।
श्रावण कृष्णा दशमी जानो, अन्तिम पहर रात का मानो।।
कृतिका शुभ नक्षत्र बताया, गर्भ प्रभु ने जिसमें पाया।
चयकर सर्वार्थ सिद्धि से आये, आप वहाँ अहमिन्द्र कहाए।।
सुदि एकम वैशाख कहाए, जन्म प्रभु कुन्थु जिन पाए।
कृतिका शुभ नक्षत्र बताया, आग्नेय शुभ योग कहाया।।
वृषभ राशि पाए शुभकारी, स्वामी शुक्र रहा मनहारी।
इन्द्रराज तब स्वर्ग से आए, प्रभु के पद में शीश झुकाए।।
ऐरावत स्वर्गों से लाए, प्रभु जी को उस पर बैठाए।
पाण्डुक शिला पे लेकर आए, क्षीर नीर से न्हवन कराए।।
बकरा चिह्न पैर में पाया, स्वर्ण रंग तन का शुभ गाया।
सहस पञ्चानवे आयु पाई, पैंतिस धनुष रही ऊँचाई।।
जाति स्मरण करके स्वामी, बने मुक्ति पथ के अनुगामी।
सुदि एकम वैसाख बताई, संध्याकाल में दीक्षा पाई।।
विजया देव पालकी लाए, उस पर प्रभुजी को बैठाए।
आप सहेतुक वन में आए, तिलक वृक्ष तल दीक्षा पाए।।
चार सौ बीस धनुष ऊँचाई, दीक्षा तरू की जानो भाई।
प्रभु ने तेला के व्रत कीन्हे, सहस भूप सह दीक्षा लीन्हे।।

नगर हस्तिनापुर के स्वामी, अपराजित राजा थे नामी।
पड़गाहन प्रभु का शुभ कीन्हे, क्षीरान्न शुभ आहार में दीन्हे।।
तप में सोलह वर्ष बिताए, फिर प्रभु केवलज्ञान जगाए।
चैत्र शुक्ल तृतिया शुभ जानो, अपराह्न काल समय शुभ मानो।।
इन्द्र राज स्वर्गों से आए, धनपति इन्द्र साथ में लाए।
समवशरण सुन्दर बनवाए, चार योजन विस्तार कहाए।।
समवशरण में आसन भाई, पद्मासन प्रभु की बतलाई।
बत्तिस सहस केवली गाए, सात सौ पूरवधारी आए।।
पैंतिस सौ मनःपर्यय ज्ञानी, ढाई सहस थे अवधि ज्ञानी।
इक्यावन सौ विक्रिया धारी, दो हजार वादी अविकारी।।
साठ सहस कुल साधु जानो, समवशरण की संख्या मानो।
प्रभु के पैंतिस गणधर गाए, प्रथम स्वयंभू जी कहलाए।।
यक्ष श्रेष्ठ गन्धर्व था भाई, यक्षी जयादेवी बतलाई।
श्री सम्मेद शिखर पर आए, कूट ज्ञानधर प्रभु जी पाए।।
एक माह पहले से स्वामी, योग निरोध किए शिवगामी।
सुदि एकम वैशाख बताई, सायंकाल में मुक्ति पाई।।
कृतिका शुभ नक्षत्र बताया, कायोत्सर्गासन शुभ गाया।
सहस मुनि सह मुक्ति पाए, चौबिस अनुबद्ध केवली गाए।।
कामदेव चक्री कहलाए, तीर्थंकर पदवी शुभ पाए।
आप हुए त्रयपद के धारी, महिमा तुमरी जग से न्यारी।।
सत्तरहवें तीर्थंकर गाये, जग को मुक्ति मार्ग दिखाए।
महिमा 'विशद' आपकी गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।

दोहा– कुन्थुनाथ भगवान का, चालीसा शुभकार।
पढ़े सुने जो भाव से, पावे भवदधि पार।।
चालीसा चालिस दिन, पढ़े भाव के साथ।
सुख-शांति सौभाग्य पा, बने श्री का नाथ।।

श्री नमिनाथ चालीसा

दोहा– नव देवों के चरण में, नव कोटि के साथ।
गुण गाते नमिनाथ के, चरण झुकाकर माथ।।
तव चरणों में हे प्रभु, जोड़ रहे द्वय हाथ।
चालीसा गाते यहाँ, विनय भाव करे साथ।।

(चौपाई)

मध्य लोक पृथ्वी का जानो, जिसमें जम्बूद्वीप बखानो।
भरत क्षेत्र जानो शुभकारी, दक्षिण में सोहे मनहारी।।
वंगदेश जानो शुभ भाई, मिथिला नगरी शुभ कहलाई।
विजयराज राजा शुभ गाए, वंश इक्ष्वाकु अनुपम पाए।।
वप्रिला रानी जिनकी गाई, धर्म परायण जो कहलाई।
अश्विन वदी दूज शुभ जानो, पिछला पहर रात का मानो।।
शुभ नक्षत्र अश्विनी पाए, कश्यप गोत्री आप कहाए।
अपराजित से चयकर आए, माँ के गर्भ को धन्य बनाए।।
दशें कृष्ण आषाढ़ की जानो, शुभ नक्षत्र स्वाति पहिचानो।
जन्म मेष राशि में पाया, राशि स्वामी मंगल गाया।।
घंटा नाद हुआ तब भारी, देवलोक में अतिशयकारी।
स्वयं इन्द्र ऐरावत लाया, सुर परिवार साथ में आया।।
प्रभु के पद में शीश झुकाया, जन्म कल्याणक श्रेष्ठ मनाया।
नीलकमल शुभ लक्षण जानो, स्वर्ण वर्ण तन का पहिचानो।।
दस हजार वर्षों की स्वामी, आयु पाये हैं शिवगामी।
सम चतुरस्र तन पाए भाई, पन्द्रह धनुष रही ऊँचाई।।
सहस्राष्ट लक्षण शुभकारी, रक्त श्वेत जानो मनहारी।
जाति स्मरण प्रभु को आया, मन में तव वैराग्य समाया।।

~

दशें कृष्ण आषाढ़ की जानो, संध्याकाल समय पहिचानो।
मिथिला नगरी श्रेष्ठ बताई, उत्तर कुरु पालकी गाई।।
शुभ उद्यान जैत्र वन गाया, चम्पक वृक्ष श्रेष्ठ बतलाया।
एक सौ अस्सी धनुष ऊँचाई, दीक्षा वृक्ष की जानो भाई।।
एक सहस राजा संग आये, साथ में प्रभु के दीक्षा पाए।
दो उपवास प्रभु जी कीन्हें, शुभ क्षीरान्न आहार जो लीन्हें।।
नगर वीरपुर अनुपम गाया, दाता राजा दत्त कहाया।
मगसिर शुक्ल एकादशि जानो, संध्याकाल समय पहिचानो।।
प्रभु जी मिथिला नगरी आए, अतिशय केवलज्ञान जगाए।
शुभ उद्यान जैत्र वन गाया, मौलश्री शुभ तरु कहलाया।।
समवशरण आ देव बनाए, दो योजन विस्तार कहाए।
शुभ पद्मासन प्रभु का जानो, सोलह सौ केवली पहिचानो।।
संघ में साधु संख्या भाई, बीस हजार श्रेष्ठ बतलाई।
गणधर संख्या सत्रह जानो, सुप्रभ प्रथम वाणी पहिचानो।।
एक लाख श्रावक भी आए, विजय प्रमुख श्रोता कहलाए।
यक्ष कहा विद्युतप्रभ भाई, चामुण्डी यक्षी कहलाई।।
गिरि सम्मेद शिखर पर आए, कूट मित्रधर अनुपम पाए।
एक माह पूरब से स्वामी, योग निरोध किए शिवगामी।।
वैशाख कृष्ण चतुर्दशी जानो, अंतिम पहर रात का मानो।
खड्गासन से मोक्ष सिधाए, सहस मुनि सह मुक्ति पाए।।
जिनवर का हम ध्यान लगाएँ, हृदय कमल पर उन्हें बिठाएँ।
हम भी मुक्ति पद को पाएँ, 'विशद' भावना उर से भाएँ।।

दोहा– चालीसा चालीस दिन, पढ़े–सुने उर धार।
सुख–शांति सौभाग्य पा, पावें भव से पार।।
नमिनाथ भगवान का, करने से गुणगान।
आशा मन की पूर्ण हो, शीघ्र होय कल्याण।।

श्री गिरनारजी चालीसा

दोहा– परमेष्ठी के पद युगल, वन्दन बारम्बार।
तीन लोक में पूज्य है, तीर्थ क्षेत्र गिरनार।।
चालीसा गाते यहाँ, होके भाव विभोर।
यही भावना है 'विशद', बढ़ें मोक्ष की ओर।।

(चौपाई)

जय–जय सिद्धक्षेत्र गिरनार, जिसकी महिमा अपरम्पार।
है सौराष्ट्र देश शुभकार, जूनागढ़ जिसमें मनहार।।
तीन कोश जाने के बाद, दरवाजा फिर नदी अगाध।
उत्तर दक्षिण पर्वत दोय, जिसमें बहता उज्ज्वल तोय।।
नदी मध्य कई कुण्ड सुजान, दोनों तट मंदिर पहिचान।
वैष्णव साधु के स्थान, भिक्षा वृत्ति वाले मान।।
एक कोश आगे को जाय, जल से पूरित नाला आय।
श्रावक जन करते स्नान, मृगी कुण्ड फिर आगे जान।।
वैष्णव के तीरथ स्थान, पूजा भक्ति करें प्रधान।
डेढ़ कोश आगे को जाय, फिर छोटे पर्वत को पाय।।
तीन कुण्ड है जहाँ महान्, युग मंदिर जिन के पहिचान।
दो मंदिर जिनवर के जान, श्वेताम्बर के बहुत प्रमाण।।
बनी धर्मशाला शुभकार, जल का कुण्ड है अपरम्पार।
दर्शन करके आगे जाय, द्वितिय टोंक का दर्शन पाय।।
मोक्ष गये अनिरुद्ध कुमार, चरण बने हैं अपरम्पार।
भक्त वंदना करते आन, अर्घ्य चढ़ा करते गुणगान।।
तृतिय टोंक का फिर स्थान, छतरी बनी है जहाँ महान्।
पाए मुक्ति शम्बुकुमार, पद में वन्दन बारम्बार।।
भक्त करें शुभ मंगलगान, नत हो पद पंकज में आन।
आगे चढ़े बनाके भाव, फिर मिलता है कठिन चढ़ाव।।

बनी है चौथी टोंक विशाल, चढ़के प्राणी हों बेहाल।
श्रावक फिर भी श्रद्धावान, चढ़के करते प्रभु गुणगान।।
मुक्ति गये प्रद्युम्न कुमार, बनकर के स्वामी अनगार।
आगे पञ्चम टोंक विशेष, मुक्ति गये श्री नेमि जिनेश।।
चरण बने प्रभु के शुभकार, जिनपद वन्दन बारम्बार।
छतरी वहाँ बनी थी खास, बिजली से हो गई विनाश।।
हरा भरा पर्वत मनहार, रहा लोक में अतिशयकार।
गिरि की महिमा का नहिं पार, भव सिन्धु से करें जो पार।।
ऊँचा पर्वत रहा महान्, नहीं तीर्थ है और समान।
तीर्थ वन्दना करके दास, करने आते पूरी आस।।
कर्मों का हो पूर्ण विनाश, पा जाएँ हम शिवपुर वास।
पच्चिस सौ सैंतिस निर्वाण, माघ शुक्ल तृतिया शुभमान।।
भक्त करें भक्ती शुभकार, पावें भक्ती का उपहार।
रहा आम्रवन जहाँ विशेष, दीक्षा धारे नेमि जिनेश।।
गिरि की महिमा का नहीं पार, माने सुर गुरु भी जब हार।
बत्तिस कोढ़ी मुनि सौ सात, कर्म घातिया कीन्हें घात।।
अविकारी बनके जिन संत, किए कर्म का अपने अन्त।
यात्री आकर के शुभ खास, बनते हैं चरणों के दास।।
पूजा वन्दन करे महान्, भक्ति अर्चा करें प्रधान।
भक्ती का पाके आधार, हो जाते हैं भव से पार।।
वन्दन करते बारम्बार, अब भव सिन्धु का पाने द्वार।
करते हैं जो प्रभु का जाप, उनके कटते हैं पाप।।

दोहा– चालीसा गिरनार का, गिर के ऊपर जाय।
भक्ति भाव से जो पढ़े, सुख–सम्पत्ती पाय।।
रोग–शोक का नाशकर, पावे सुन्दर देह।
'विशद' मोक्ष पद पायेगा, भक्त नहीं सन्देह।।

श्री शांतिनाथ चालीसा

दोहा– परमेष्ठी जिन धर्म जिन, आगम मंगलकार।
जिन चैत्यालय चैत्य को, वन्दन बारम्बार।।
शांतिनाथ भगवान के, करते चरण प्रणाम।
चालीसा गाते यहाँ, पाने निज का धाम।।

(चौपाई)

जम्बूद्वीप में क्षेत्र बताया, भरत क्षेत्र अनुपम कहलाया।
भारत देश रहा शुभकारी, जिसकी महिमा जग से न्यारी।।
नगर हस्तिनापुर के स्वामी, विश्वसेन राजा थे नामी।
रानी ऐरादेवी पाए, जिनके सुत शांतिजिन गाए।।
माँ के गर्भ में प्रभु जब आये, रत्नवृष्टि तब देव कराए।
भादव कृष्ण सप्तमी जानो, शुभ नक्षत्र भरणी पहिचानो।।
ज्येष्ठ कृष्ण चौदस शुभकारी, मेष राशि जानो मनहारी।
जन्म प्रभुजी ने जब पाया, देवराज ऐरावत लाया।।
शचि ने प्रभु को गोद उठाया, फिर ऐरावत पर बैठाया।
पाण्डुक वन अभिषेक कराया, सहस्र नेत्र से दर्शन पाया।।
पग में हिरण चिह्न शुभ गाया, शांतिनाथ तब नाम बताया।
पञ्चम चक्रवर्ति कहलाए, कामदेव बारहवें गाए।।
तीर्थंकर सोलहवें जानो, यथा नाम गुणकारी मानो।
नव निधियों के स्वामी गाये, चौदह रत्न श्रेष्ठ बताए।।
सहस्र छियानवे रानी पाए, छह खण्डों पर राज्य चलाए।
नीतिवन्त हो राज्य चलाया, दुखियों का सब दुःख मिटाया।।
सूर्य वंश के स्वामी गाए, सारे जग में यश फैलाए।
जाति स्मरण प्रभु को आया, महाव्रतों को प्रभु ने पाया।।
स्वर्गों से लौकान्तिक आये, अनुमोदन कर हर्ष मनाए।
केशलुंच कर दीक्षा धारी, हुए दिगम्बर मुनि अविकारी।।

एक लाख राजा संग आए, साथ में प्रभु के दीक्षा पाए।
ज्येष्ठ कृष्ण चौदस तिथि जानो, तप कल्याणक प्रभु का मानो।।
आत्म ध्यान कीन्हें तव स्वामी, किये निर्जरा अन्तर्यामी।
पौष सुदी दशमी शुभ आई, केवलज्ञान की ज्योति जगाई।।
समवशरण आ देव बनाए, प्रभु की जय–जयकार लगाए।
दिव्य देशना आप सुनाए, धर्म ध्वजा जग में फहराए।।
छत्तिस गणधर प्रभु जी पाए, प्रथम गणी चक्रायुध गाए।
यक्ष गरुण जानो तुम भाई, यक्षी श्रेष्ठ मानसी गाई।।
योग निरोध किए जगनामी, गुण अनन्त पाये जिन स्वामी।
ज्येष्ठ कृष्ण चौदश तिथि जानो, गिरि सम्मेद शिखर से मानो।।
नो सौ मुनि श्रेष्ठ बतलाए, साथ में प्रभु के मुक्ति पाए।
महामोक्ष फल तुमने पाया, शिवपुर अपना धाम बनाया।।
कूट कुन्द प्रभ जानो भाई, कायोत्सर्गासन शुभ गाई।
जग में कई जिनबिम्ब निराले, अतिशय श्रेष्ठ दिखाने वाले।।
अहार क्षेत्र वानपुर जानो, बीना बारहा भी पहिचानो।
रामटेक सीरोन कहाया, खजुराहो पचराई गाया।।
गाँव–गाँव में बिम्ब बताए, गिनती कहो कौन कर पाए।
जो भी अर्चा करते भाई, अर्चा होती है फलदायी।
कई लोगों ने शुभ फल पाए, रोग–शोक दारिद्र नशाए।।
शांतिनाथ शांति के दाता, तीन लोक में भाग्य विधाता।
भाव सहित प्रभु को जो ध्याये, इच्छित फल वह मानव पाए।
पूजा अर्चा कर जो ध्यावे, सुख–शांति सौभाग्य जगावे।
निज आतम का वैभव पावे, अनुक्रम से फिर शिवपुर जावे।।

दोहा– चालीसा चालीस दिन, पढ़े भाव के साथ।
सुख–शांति आनन्द पा, बने श्री का नाथ।।
दीन दरिद्री होय जो, या हो पुत्र विहीन।
सुत पावे धन सम्पदा, होवे ज्ञान प्रवीण।।

श्री शांतिनाथ चालीसा

दोहा– अरहन्तों को नमन कर, सिद्धों को उर धार।
आचार्योपाध्याय साधु को, वन्दन बारम्बार।।
चैत्य–चैत्यालय धर्म जिन, आगम यह नवदेव।
शांतिनाथ के चरण में, वन्दन करूँ सदैव।।

(तर्ज – नित देव मेरी...)

शांति जिन की वन्दना जो, जीव करते हैं सभी।
सुख–शांति में रहते मगन, वह खेद न पाते कभी।।
प्रभु हैं दिगम्बर वीतरागी, शुद्ध हैं निर्दोष हैं।
प्रभु ज्ञान दर्शन वीर्य सुखमय, सद्गुणों के कोष हैं।।1।।
चयकर प्रभु सर्वार्थ सिद्धि, से यहाँ पर आए हैं।
विश्वसेन नृप के पुत्र माता, ऐरादेवी पाए हैं।।
जन्में हस्तिनागपुर में, वंश इक्ष्वाकु कहा।
भरणी शुभ नक्षत्र पाए, काल प्रातः का रहा।।2।।
माह भादों कृष्ण सातें, गर्भ में आए प्रभो।
स्वप्न सोलह मात देखे, नृत्य सुर कीन्हें विभो।।
ज्येष्ठ वदि चौदस प्रभु का, जन्म कल्याणक कहा।
इन्द्र ने लक्षण चरण में, हिरण शुभ देखा अहा।।3।।
चक्रवर्ती रहे पञ्चम, मदन बारहवें कहे।
प्रभु सोलहवे कहे जिन, स्वर्ण रंग के जो रहे।।
वर्ष इक लख श्रेष्ठ आयु, प्रभु की उत्तम कही।
धनुष चालिस श्रेष्ठ प्रभु के, तन की ऊँचाई रही।।4।।
जाति स्मरण से प्रभु, वैराग्य धारण कर लिए।
वैशाख शुक्ला तिथि एकम्, भक्त तृतिय जो किए।।
आम्रवन में नन्द तरु तल, में प्रभु दीक्षा धरे।
दीक्षा धरके सहस्र राजा, केश लुन्चन खुद करे।।5।।

गरुड प्रभु का यक्ष मानो, मानसी यक्षी कही।
शुभ हरिषेणा मुख्य प्रभु की, आर्यिका अनुपम रही।।
पौष शुक्ला तिथि दशमी, ज्ञानकेवल पाए हैं।
समवशरण तब देव आके, श्रेष्ठ शुभ बनवाए हैं।।6।।
व्यास साढ़े चार योजन, सभा का शुभ जानिए।
नगर हस्तिनागपुर में, ज्ञान पाए मानिए।।
एक महिने पूर्व से जो, योग का शुभ रोधकर।
ध्यान चेतन का लगाए, आत्मा का बोधकर।।7।।
गिरि सम्मेदाचल से मुक्ति, शांति जिनवर पाए हैं।
ज्येष्ठ कृष्णा तिथि चौदश, शिव गमन बतलाए हैं।।
भूप नौ सौ साथ में, मुक्तिश्री को पाए हैं।
काल प्रातः मोक्ष प्रभु श्री, शांति जिन का गाए हैं।।8।।
गणी छत्तिस शांति जिन के, वीतरागी जानिए।
प्रथम चक्रायुध गणी अति, श्रेष्ठतम शुभ मानिए।।
शांति जिन की अर्चना कर, शांति पाते हैं सभी।
ध्यान जो करते प्रभु का, वे दुःखी न हों कभी।।9।।
शांति जिन के बिम्ब जग में, कष्ट इस जग के हरें।
भक्त के गृह शांति जिनवर, शांति की वर्षा करें।।
शांति जिन के तीर्थ जग में, कई जगह पर छाए हैं।
शांति दाता शांति जिनवर, लोक में कहलाए हैं।।10।।
बानपुर आहार थूवौन, वीना खजुराहो कहा।
हस्तिनागपुर देवगढ़ अरु, रामटेक अतिशय रहा।।
भाव से जिन अर्चना कर, पुण्य का अर्जन करें।
शांति जिन का ध्यान करके, भव जलधि से हम तरें।।11।।

दोहा– चालीसा चालिस दिन, पढ़े जो चालीस बार।
'विशद' शांति सौभाग्य पा, पावे भव से पार।।

श्री महावीर चालीसा

दोहा- सिद्ध और अरिहंत का, है सुखकारी नाम।
आचार्योपाध्याय साधु के, करते चरण प्रणाम।।
वर्धमान सन्मति तथा, वीर और अतिवीर।
महावीर की वन्दना, से बदले तकदीर।।

चौपाई

जय-जय वर्धमान जिन स्वामी, शांति मनोहर छवि है नामी।
तीर्थंकर प्रकृति के धारी, सर्व जहाँ में मंगलकारी।।
पुरुषोत्तम विमान से आए, माँ को सोलह स्वप्न दिखाए।
राजा सिद्धारथ कहलाए, कुण्डलपुर के भूप कहाए।।
माता त्रिशला के उर आए, नाथ वंश के सूर्य कहलाए।
षष्ठी शुक्ल आषाढ़ कहाए, गर्भ में चयकर के प्रभु आए।।
चैत शुक्ल तेरस दिन आया, जन्म प्रभु ने जिस दिन पाया।
नक्षत्र उत्तरा फाल्गुन जानो, अन्तिम पहर रात का मानो।।
इन्द्र तभी ऐरावत लाया, पाण्डुक शिला पर न्हवन कराया।
प्रभु के पद में शीश झुकाया, पग में चिह्न शेर का पाया।।
वर्द्धमान तब नाम बताया, जयकारे से गगन गुँजाया।
पलना प्रभु का मात झुलाये, ऋद्धिधारी मुनिवर आए।।
मन में प्रश्न मुनि के आया, जिसका समाधान न पाया।
देख प्रभु को हल कर लीन्हा, सन्मति नाम प्रभु का दीन्हा।।
मित्रों संग क्रीड़ा को आए, सभी वीरता लख हर्षाए।
देव परीक्षा लेने आया, नाग का उसने रूप बनाया।।
भागे मित्र सभी भय खाये, किन्तु प्रभु नहीं घबराए।
पैर की ठोकर सिर में मारी, देव तभी चीखा अति भारी।।
उसने चरणों ढ़ोक लगाया, वीर नाम प्रभु का बतलाया।
युवा अवस्था प्रभु जी पाए, करके सैर नगर में आए।।
हाथी ने उत्पात मचाए, मद उसका प्रभु पूर्ण नशाए।
प्रभु अतिवीर नाम को पाए, सभी प्रशंसा कर हर्षाए।।

बाल ब्रह्मचारी कहलाए, तीस वर्ष में दीक्षा पाए।
जाति स्मरण प्रभु को आया, तब मन में वैराग्य समाया।।
माघ कृष्ण दशमी दिन पाया, नक्षत्र उत्तरा फाल्गुन गाया।
तृतीय भक्त प्रभुजी पाए, दीक्षा धर एकाकी आए।।
स्वर्ण रंग प्रभु का शुभ पाया, सप्त हाथ अवगाहन पाया।
प्रभु नाथ वन में फिर आए, साल तरु तल ध्यान लगाए।।
कामदेव रति वन में आए, जग को जीता ऐसा गाए।
रति ने प्रभु का दर्शन पाया, कामदेव से वचन सुनाया।।
इन्हें जीत पाए क्या स्वामी, नग्न खड़े जो शिवपथ गामी।
प्रभु को ध्यान से खूब डिगाया, किन्तु उन्हें डिगा न पाए।।
कामदेव पद शीश झुकाया, महावीर तव नाम बताया।
दशें शुक्ल वैसाख बखानी, हुए प्रभुजी केवलज्ञानी।।
ऋजुकूला का तीर बताया, शाल वृक्ष वन खण्ड कहाया।
समवशरण इक योजन जानो, योग निवृत्ति अनुपम मानो।।
कार्तिक कृष्ण अमावस पाए, महावीर जिन मोक्ष सिधाए।
प्रातःकाल रहा शुभकारी, ग्यारह गणधर थे मनहारी।।
गौतम गणधर प्रथम कहाए, नाम इन्द्रभूति शुभ पाए।
गणधरजी ने ध्यान लगाया, सायं केवलज्ञान जगाया।।
प्रभु शासन नायक कहलाए, श्रेष्ठ सिद्धान्त लोक में छाए।
प्रतिमाएँ हैं अतिशयकारी, वीतरागमय मंगलकारी।।
चाँदनपुर महिमा दिखलाए, टीले में गौ दूध झराए।
ग्वाले के मन अचरज आया, उसने टीले को खुदवाया।।
वीर प्रभु के दर्शन पाए, लोग सभी मन में हर्षाए।
पावागिरि ऊन कहलाए, वहाँ भी कई अतिशय दिखलाए।।
यही भावना रही हमारी, जनता सुखमय होवे सारी।।
चरण कमल में हम सिर नाते, 'विशद' भाव से शीश झुकाते।

दोहा- चालीसा चालीस दिन, दिन में चालिस बार।
पढ़ने से सुख-शांति हो, मिले मोक्ष का द्वार।।

***

आचार्य श्री विशदसागरजी चालीसा

परमेष्ठी को नमन् कर, नव देवों के साथ।
लिखने का साहस करें, चरण झुकाएँ माथ।।
रोग-शोक का नाश कर, पाएँ मुक्ती धाम।
विशद सिंधु गुरुवर तुम्हें, शत्-शत् बार प्रणाम।।

चौपाई

चउ अनुयोगों के गुरु ज्ञाता, सूरी तुम जन-जन के त्राता।
भक्तों के तुम (गुरु) देव कहाते, श्रुत अमृत की धार बहाते।।
जय-जय छत्तिस गुण के धारी, भविजन के तुम हो हितकारी।
भाव सहित तुमरे गुण गाते, चरण कमल में शीश झुकाते।।
नाथूरामजी पिता तुम्हारे, इंदर माँ की नयन के तारे।
छोड़ सभी झंझट संसारी, बन गए आप बाल ब्रह्मचारी।।
आठ नवम्बर बानवें आया, ब्रह्मचर्य व्रत तव अपनाया।
एक वर्ष तक रहे विरागी, संयम की मन में सुध जागी।।
स्वारथ का संसार है सारा, मिला न अब तक कोई सहारा।
दीन-हीन बालक को गुरुवर, कृपा कीजिये भव्य जानकर।।
ऐलक पद तुमने अपनाया, पाँचें मार्ग शीष सित पाया।
सन् उन्नीस सौ छियानवें आया, आठ फरवरी का दिन पाया।।
तन मन से हो गये अविकारी, जैसे हो चंदन की क्यारी।
भरत सिंधु के दर्शन पाये, तन मन में गुरु अति हर्षाये।।
श्री गुरुवर ने दिया सहारा, भव्यों का करने उद्धारा।
भक्तों को सद्ज्ञान सिखाओ, मोक्षमार्ग पर उन्हें बढ़ाओ।।
तुमको है आशीष हमारा, जीवन हो मंगलमय सारा।
गुरुवर मालपुरा में आए, सबने गुरु के दर्शन पाए।।
मन में हर्ष हुआ था भारी, गद्गद् हुई थी जनता सारी।
तेरह फरवरी का दिन पाया, दो हजार सन् पाँच कहाया।।
मुनिवर से आचार्य बनाया, गुरुवर की शुभ पाई छाया।
फिर गुरुवर से आशीष पाए, दीक्षा देकर शिष्य बनाए।।

एक मुनि दो क्षुल्लक भाई, उनने फिर शुभ दीक्षा पाई।
जग में जितने पद कहलाये, सारे ही निष्फल कहलाये।।
मोक्षमार्ग का पथ पा जाएँ, तव चरणों में हम शीश झुकाये।
ज्ञानवीर हो ध्यान वीर हो, मुनि श्रावक के महावीर हो।।
जीवन के आदर्श तुम्हीं हो, प्रेय श्रेय भगवंत तुम्ही हो।
क्षमामूर्ति गुरुदेव हमारे, जन-जन के हैं तारण हारे।।
वीतराग मुद्रा के धारी, तीन लोक में करुणाकारी।
जपने से गुरु नाम तुम्हारा, भव सिन्धु का मिले किनारा।।
दुनियाँ में नहिं कोई हमारा, दे दो गुरुवर हमें सहारा।
मात-पिता तुमको ही माना, परम ब्रह्म परमातम जाना।।
धर्म-कर्म के तुम हो ज्ञाता, सूरी तुम हो भाग्य विधाता।
जग में सबको सब कुछ देते, बदले में तुम कुछ न लेते।।
सरस्वती की है यह माया, होनहार विद्वान बनाया।
पञ्च महाव्रत पालन करते, दशधर्मों को जो आचरते।।
चिंतन मंथन अनुभव द्वारा, भक्तों का करते उद्धारा।
चरण शरण में जो भी आता, मन वांछित फल तब पा जाता।।
चरणों की रज है सुखकारी, दुख दरिद्रा की नाशन हारी।
तव भक्ती का मिला सहारा, कथन किया लघु शब्दों द्वारा।।
हम है दीन हीन संसारी, लिखने की क्या शक्ति हमारी।
भक्ति करने हम भी आए, नहीं भेंट में कुछ भी लाए।।
भाव समर्पित करने आए, नहीं भेंट में कुछ भी लाए।
'आस्था' भाव समर्पित करते, तव चरणों में मस्तक धरते।।

दोहा- विशद चालीसा जो पढ़े, विशद भक्ति के साथ।
विशद ज्ञान पा कर बनें, विशद लोक का नाथ।।
विशद ज्ञान पावे सदा, करें विशद कल्याण।
विशद लोक में जा बसे, बने विशद धीमान।।

- ब्र. आस्था दीदी (संघस्थ)

सुप्रभात-स्तोत्रम्

यत्स्वर्गा-वतरोत्सवे यदभवज्, जन्मा-भिषेकोत्सवे,
यद्दीक्षा ग्रहणोत्सवे यदखिल, ज्ञान-प्रकाशोत्सवे।
यन्निर्वाण-गमोत्सवे जिनपतेः, पूजाद्भुतं तद्भवैः,
संगीत स्तुति मंगलैः प्रसरतां, मे सुप्रभातोत्सवः ।।1 ।।

श्रीमन्नतामर किरीट मणिप्रभाभि,
रालीढपाद युग दुर्द्धर कर्मदूर।
श्रीनाभिनन्दन! जिनाजित! शम्भवाख्य !
त्वद्ध्यानतोऽस्तु सततं मम सुप्रभातम् ।।2 ।।

छत्रत्रय-प्रचल चामर-वीज्यमान,
देवाभिनन्दनमुने! सुमते! जिनेन्द्र।
पद्मप्रभा रुणमणि द्युतिभासुराङ्ग,
त्वद्ध्यानतोऽस्तु सततं मम सुप्रभातम् ।।3 ।।

अर्हन् सुपार्श्व कदली-दलवर्ण गात्र,
प्रालेयतार-गिरि मौक्तिक वर्णगौर।
चन्द्रप्रभ-स्फटिक-पाण्डुर-पुष्पदन्त!
त्वद्ध्यानतोऽस्तु सततं मम सुप्रभातम् ।।4 ।।

सन्तप्त काञ्चनरुचे जिन-शीतलाख्य,
श्रेयान् विनष्ट-दुरिताष्ट-कलङ्कपंक।
बंधूक-बंधुररुचे जिनवासुपूज्य,
त्वद्ध्यानतोऽस्तु सततं मम सुप्रभातम् ।।5 ।।

उद्दण्ड-दर्पक-रिपो विमला-मलाङ्ग,
स्थेमन्-ननन्त-जिदनन्त-सुखाम्बुराशे।

दुष्कर्म-कल्मष-विवर्जित-धर्मनाथ,
त्वद्ध्यानतोऽस्तु सततं मम सुप्रभातम् ।।6 ।।

देवामरी-कुसुम-सन्निभ-शान्तिनाथ,
कुन्थो! दयागुण विभूषण भूषिताङ्ग।
देवाधिदेव-भगवन्-नरतीर्थ-नाथ,
त्वद्ध्यानतोऽस्तु सततं मम सुप्रभातम् ।।7 ।।

यन्मोह मल्लमद-भञ्जन-मल्लिनाथ,
क्षेमङ्करा-वितथ-शासन-सुव्रताख्य।
यत्-सम्पदा प्रशमितो नमि नामधेय,
त्वद्ध्यानतोऽस्तु सततं मम सुप्रभातम् ।।8 ।।

तापिच्छ-गुच्छ-रुचिरोज्ज्वल-नेमिनाथ,
घोरोपसर्ग-विजयिन् जिन-पार्श्वनाथ।
स्याद्वाद सूक्ति मणि-दर्पण वर्द्धमान,
त्वद्ध्यानतोऽस्तु सततं मम सुप्रभातम् ।।9 ।।

प्रालेय-नील हरि-तारुण पीत-भासं,
यन्मूर्ति-मव्यय सुखावसथं मुनीन्द्राः।
ध्यायन्ति सप्तति-शतं जिन-वल्लभानां,
त्वद्ध्यानतोऽस्तु सततं मम सुप्रभातम् ।।10 ।।

सुप्रभातं सुनक्षत्रं, माङ्गल्यं परिकीर्तितम्।
चतुर्विंशति तीर्थानां, सुप्रभातं दिने-दिने ।।11 ।।

सुप्रभातं सुनक्षत्रं, श्रेयः प्रत्यभिनन्दितम्।
देवता ऋषयः सिद्धाः, सुप्रभातं दिने-दिने ।।12 ।।

सुप्रभातं तवैकस्य, वृषभस्य महात्मनः ।
येन प्रवर्तितं तीर्थं, भव्यसत्त्व सुखावहम् ।।13।।

सुप्रभातं जिनेन्द्राणां, ज्ञानोन्मीलितचक्षुषाम्।
अज्ञानतिमिरांधानां, नित्यमस्तमितो रविः ।।14।।

सुप्रभातं जिनेन्द्रस्य, वीरः कमललोचनः।
येन कर्माटवीदग्धा, शुक्लध्यानोग्र वह्निना ।।15।।

सुप्रभातं सुनक्षत्रं, सुकल्याणं सुमङ्गलम्।
त्रैलोक्यहितकर्त्तृणां, जिनानामेव शासनम् ।।16।।

।। इति सुप्रभात-स्तोत्रम् ।।

सुप्रभात स्तोत्र

गर्भ जन्म के उत्सव में अरु, दीक्षा ग्रहण महोत्सव में।
अखिल ज्ञान कल्याणक में भी, मोक्ष गमन के उत्सव में।।
भक्ती गीत प्रार्थना मंगल, द्वारा अनुपम अतिशय हो।
जिनपद में हम शीष झुकाते, मम् प्रभात मंगलमय हो ।।1।।

नमते देवों के मुकुटों की, मणियों की कांती से युक्त।
चरण कमल द्वय शोभित होते, दुरित कर्म से हुए विमुक्त।।
नाभीनंदन अजितनाथ जिन, संभव जिन की जय-जय हो।
ध्यान आपका रहे निरंतर, मम् प्रभात मंगलमय हो ।।2।।

छत्र त्रय से शोभित होते, ढुरते हुए चँवर संयुक्त।
अभिनंदन जिन सुमतिनाथजी, स्वर्णमयी कांति से युक्त।।
अरुणमणि सम शोभित होते, पद्म प्रभु की जय-जय हो।
ध्यान आपका रहे निरन्तर, मम् प्रभात मंगलमय हो ।।3।।

कदली दल सम हरित वर्णमय, श्री सुपार्श्व जिनवर का रूप।
ढका हुआ ज्यों बर्फ से हिमगिरि, चन्द्रप्रभु का है स्वरूप।।
श्वेत वर्ण स्फटिक मणीसम, पुष्पदंत की जय-जय हो।
ध्यान आपका रहे निरन्तर, मम् प्रभात मंगलमय हो ।।4।।

तप्त स्वर्ण सम कांति वाले, श्री शीतलनाथ जिनवर स्वामी।
दुरित कर्म वसु नष्ट किए हैं, श्री श्रेयांस मोक्षगामी।।
बंधूक पुष्प सम अरुण मनोहर, वासुपूज्य की जय-जय हो।
ध्यान आपका रहे निरन्तर, मम् प्रभात मंगलमय हो ।।5।।

उद्दण्ड दर्पमय गज के मद को, विमलनाथ जिन नाश किए।
स्थिर मन करके अनंत जिन, सुख अनंत में वास किए।।
दुष्ट कर्म मल रहित जिनेश्वर, धर्मनाथ की जय-जय हो।
ध्यान आपका रहे निरन्तर, मम् प्रभात मंगलमय हो ।।6।।

देवामरी वृक्ष के फूलों, जैसे शोभित शांतीनाथ।
दयारूप गुण के आभूषण, से भूषित श्री कुंथूनाथ।।
देवों के भी देव जिनेश्वर, अरहनाथ की जय-जय हो।
ध्यान आपका रहे निरन्तर, मम् प्रभात मंगलमय हो ।।7।।

मोह मल्ल के मद का भंजन, करते हैं श्री मल्लीनाथ।
सत् शासन युत मुनिसुव्रतजी, झुका रहे हम चरणों माथ।।
त्यागा राज्य संपदा वैभव, नमीनाथ की जय-जय हो।
ध्यान आपका रहे निरन्तर, मम् प्रभात मंगलमय हो ।।8।।

तरु तमाल के पुष्पों सम हैं, नेमिनाथ की कांति महान्।
जीते हैं उपसर्ग घोर अति, श्री जिन पार्श्वनाथ भगवान।।

स्याद्वाद सूक्ती मणि दर्पण, वर्द्धमान की जय-जय हो।
ध्यान आपका रहे निरन्तर, मम् प्रभात मंगलमय हो।।9।।

धवल नील अरु हरित लाल रंग, पीले में शोभा पाते।
वीतराग अविनाशी सुखमय, गणधरादि जिनको ध्याते।।
एक सो सत्तर एक काल के, तीर्थंकर की जय-जय हो।
ध्यान आपका रहे निरन्तर, मम् प्रभात मंगलमय हो।।10।।

चौपाई

चौबीस तीर्थंकर जिनदेव, सुप्रभात नक्षत्र सुएव।
प्रतिदिन स्तुति मंगल सोय, मम् प्रभात मंगलमय होय।।11।।

परम सिद्ध ऋषिवर नवदेव, सुप्रभात नक्षत्र सुएव।
श्रेय से खुश करते हैं सोय, मम् प्रभात मंगलमय होय।।12।।

धर्म के आप महात्मन् एक, करते तीर्थ प्रवर्तन नेक।
भविजन जिससे सुखमय होय, मम् प्रभात मंगलमय होय।।13।।

जीवों में छाया अज्ञान, देते जिनवर सम्यक्ज्ञान।
तम को जैसे सूरज खोय, मम् प्रभात मंगलमय होय।।14।।

शुक्ल ध्यान की अग्नि माँय, कर्मों का वन दिये जलाय।
नयन कमल सम जिनके सोय, मम् प्रभात मंगलमय होय।।15।।

सुनक्षत्र मंगल कल्याण, तीन लोक का करते त्राण।
शासन 'विशद' प्रभु का सोय, मम् प्रभात मंगलमय होय।।16।।

।। इति सुप्रभात ।।

श्री उपसर्गहर पार्श्वनाथ स्तोत्र

(आचार्य भद्रबाहु स्वामी कृत)

उवसग्गहरं पासं, पासं वन्दामि कम्मघणमुक्कं।
विसहर-विसनिन्ननासं, मंगल-कल्याण आवासं।।1।।

विसहर-फुलिंग-मंतं, कंठे धारेदि जो सया मणुवो।
तस्स गह-रोग-मारी, दुट्ठजरा जंति उवसामं।।2।।

चिट्ठदु दूरे मंतो, तुज्झ पणामो वि बहुफलो होदी।
णर तिरिएसु वि जीवा, पावन्ति न दुक्ख-दोगच्चं।।3।।

तुह सम्मत्ते लद्धे, चिन्तामणि-कम्पापावय सरिसे।
पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं।।4।।

ॐ अमर तरु काम धेणु, चिन्तामणि-कामकुंभमादिया।
सिरी पाणह-सेवा, ग्गहणे सव्वे वि दासत्तं।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीं ऐं ॐ तुह दंसणेण सामिय, पणासेइ रोग-सोग-दोहग्गं।
कप्पतरुमिव जायइ, ॐ तुह दंसणेण समफल हेउ स्वाहा।।6।।

ॐ ह्रीं णमिऊण पणवसहियं, मायाबीएण धरणनागिंदं।
सिरी कामराय कलियं, पासजिणंदं, णमंसामि।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीं पास विसहर-विज्जामन्तेण झाण झाएज्जा।
धरणे पउमादेवी, ॐ ह्रीं क्ष्म्ल्व्र्यूं स्वाहा।।8।।

ॐ थुणेमि पासं, ॐ ह्रीं पणमामि परमभत्तीए।
अट्ठक्खर धरणिंदो, पउमावइ पयडिया कित्ती।।9।।

ॐ णट्ठट्ठ-मयट्ठाणे-पणट्ठकम्मट्ठ-णट्ठ संसारे।
परमट्ठ-निट्ठियट्ठे, अट्ठगुणाधीसरं वन्दे।।10।।

इह संथुअदो महायश ! भत्तिब्भर-णिब्भरेण हिदयेण।
ता देव ! दिज्ज बोहिं, भवे-भवे पास जिणचन्दं।।11।।

***

श्री पार्श्वनाथस्तोत्रम्

नरेन्द्रं फणीन्द्रं सुरेन्द्रं अधीशं, शतेन्द्रं सु पूजैं भजैं नाथ शीशं।।
मुनीन्द्रं गणेन्द्रं नमों जोड़ि हाथं, नमो देवदेवं सदा पार्श्वनाथं।।1।।

गजेन्द्रं मृगेन्द्रं गह्यो तू छुड़ावै, महा आगतैं नागतैं तू बचावै।।
महावीर तैं युद्ध में तू जितावै, महा रोगतैं बंधतैं तू छुड़ावै।।2।।

दुखी दुःखहर्त्ता सुखी सुखकर्त्ता, सदा सेवकों को महानन्द भर्त्ता।।
हरे यक्षराक्षस भूतं पिशाचं, विषं डाकिनी विघ्न के भय अवाचं।।3।।

दरिद्रीन को द्रव्य के दान दीने, अपुत्रीन को तू भले पुत्र कीने।।
महासंकटों से निकारै विधाता, सबै संपदा सर्व को देहि दाता।।4।।

महाचोर को वज्र को भय निवारे, महापुण्य के पुंजतै तू उबारै।।
महाक्रोध की अग्नि को मेघधारा, महालोभशैलेश को वज्र भारा।।5।।

महा मोह अंधेर को ज्ञान भानं, महाकर्म कांतार को दौ प्रधानं।।
किये नाग–नागिन अधोलोकस्वामी, हस्योमान तू दैत्य को हो अकामी।।6।।

तुही कल्पवृक्षं तुही कामधेनुं, तुही दिव्य चिंतामणि नाग एनं।।
पशु नर्क के दुःखतैं तू छुड़ावै, महास्वर्गतै मुक्ति मैं तू बसावै।।7।।

करै लौह को हेम पाषाण नामी, रटै नाम सो क्यों न हो मोक्षगामी।।
करै सेव ताकी करैं देव सेवा, सुने वैन सोही लहै ज्ञान मेवा।।8।।

जपै जाप ताको नहीं पाप लागै, धरे ध्यान ताके सबै दोष भागै।।
बिना तोहि जाने धरे भव घनेरे, तुम्हारी कृपा तैं सरैं काज मेरे।।9।।

दोहा– गणधर इन्द्र न कर सकैं, तुम विनती भगवान।
'द्यानत' प्रीति निहारकैं, कीजे आप समान।।

।। इति समाप्तम् ।।

श्री महावीराष्टक स्तोत्रम्

(शिखरिणी छन्दः)

यदीये चैतन्ये मुकुर इव भावाश्चिदचितः
समं भान्ति ध्रौव्य–व्यय–जनि – लसन्तोऽन्तरहिताः।
जगत्साक्षी मार्ग – प्रकटन – परो भानुरिव यो
महावीर – स्वामी नयन – पथगामी भवतु मे।।1।।

अताम्रं यच्चक्षुः कमल – युगलं स्पन्द – रहितं
जनान्कोपा – पायं प्रकटयति वाभ्यन्तर – मपि।
स्फुटं मूर्तिर्यस्य प्रशमितमयी वातिविमला
महावीर – स्वामी नयन पथगामी भवतु मे।।2।।

नमन्नाकेन्द्राली – मुकुटमणि – भा – जाल – जटिलं
लसत्पादाम्भोज – द्वयमिह यदीयं तनुभृताम्।
भवज्ज्वाला – शान्त्यै प्रभवति जलं वा स्मृतमपि
महावीर – स्वामी नयन पथगामी भवतु मे।।3।।

यदर्चा – भावेन प्रमुदित – मना दर्दुर इह
क्षणादासीत्स्वर्गी गुण – गण – समृद्धः सुखनिधिः।
लभन्ते सद्भक्ताः शिव सुख – समाजं किमु तदा
महावीर – स्वामी नयन पथगामी भवतु मे।।4।।

कनत्स्वर्णाभासोऽप्यपगत – तनुर्ज्ञान – निवहो,
विचित्रात्माप्येको नृपति – वर सिद्धार्थ – तनयः।
अजन्मापि श्रीमान् विगत – भव – रागोऽद्भुत – गतिर्
महावीर – स्वामी नयन पथगामी भवतु मे।।5।।

यदीया वाग्गङ्गा विविध – नय – कल्लोल – विमला,
बृहज्ज्ञानाम्भोभि – र्जगति जनतां या स्नपयति।

इदानीमप्येषा बुध-जन-मरालैः परिचिता
महावीर-स्वामी नयन पथगामी भवतु मे ।।6।।

अनिर्वारोद्रेकस्, त्रिभुवन-जयी काम-सुभटः
कुमारावस्थाया-, मपि निज-बलाद्येन विजितः।
स्फुरन्-नित्यानन्द, प्रशम-पद-राज्याय स जिनः
महावीर-स्वामी नयन पथगामी भवतु मे ।।7।।

महामोहातङ्क-, प्रशमनपराकस्मिक-भिषङ्
निरापेक्षो बन्धु-, र्विदित-महिमा मङ्गलकरः।
शरण्यः साधूनां, भव-भयभृता-मुत्तमगुणो,
महावीर-स्वामी नयन पथगामी भवतु मे ।।8।।

महावीराष्टकं स्तोत्रं, भक्त्या 'भागेन्दुना' कृतम्।
यः पठेच्छ्रणुयाच्चापि, स याति परमां गतिम् ।।9।।

।। इति श्रीमहावीराष्टकस्तोत्रम् ।।

महावीराष्टक स्तोत्र

ज्ञानादर्श में युगपद दिखते, जीवाजीव द्रव्य सारे।
व्यय, उत्पाद, धौव्य प्रतिभाषित, अंत रहित होते न्यारे।।
जग को मुक्ती पथ प्रकटाते, रवि सम जिन अन्तर्यामी।
ऐसे श्री महावीर प्रभु हों, मम् नयनों के पथगामी।।1।।

नयन कमल झपते नहिं दोनों, क्रोध लालिमा से भी हीन।
जिनकी मुद्रा शांत विमल है, अंतर बाहर भाव विहीन।।
क्रोध भाव से रहित लोक में, प्रगटित हैं अन्तर्यामी।
ऐसे श्री महावीर प्रभु हों, मम् नयनों के पथगामी।।2।।

नमित सुरों के मुकुट मणि की, आभा हुई है कांतिमान।
दोनों चरण कमल की भक्ती, भक्तजनों को नीर समान।।

दुखहर्ता सुखकर्त्ता जग में, जन-जन के अंतर्यामी।
ऐसे श्री महावीर प्रभु हों, मम् नयनों के पथगामी।।3।।

हर्षित मन होकर मेढ़क ने, जिन पूजा के भाव किए।
क्षण में मरकर गुण समूह युत, देवगति अवतार लिए।।
क्या अतिशय नर भक्ति आपकी, करके हो अंतर्यामी।
ऐसे श्री महावीर प्रभु हों, मम् नयनों के पथगामी।।4।।

स्वर्ण समा तन को पाकर भी, तन से आप विहीन रहे।
पुत्र नृपति सिद्धारथ के हैं, फिर भी तन से हीन कहे।।
राग-द्वेष से रहित आप जिन, श्री युत हैं अंतर्यामी।
ऐसे श्री महावीर प्रभु हों, मम् नयनों के पथगामी।।5।।

जिनके वचनों की गंगा शुभ, नाना नय कल्लोल विमल।
महत् ज्ञान जल से जन-जन को, प्रच्छालित कर करे अमल।।
बुधजन हंस सुपरिचित होकर, बन जाते अंतर्यामी।
ऐसे श्री महावीर प्रभु हों, मम् नयनों के पथगामी।।6।।

तीन लोक में कामबली पर, विजय प्राप्त करना मुश्किल।
लघु वय में अनुपम निज बल से, विजय प्राप्त कर हुए विमल।।
सुख शांती शिव पद को पाकर, आप हुए अंतर्यामी।
ऐसे श्री महावीर प्रभु हों, मम् नयनों के पथगामी।।7।।

महामोह के शमन हेतु शुभ, कुशल वैद्य हो आप महान्।
निरापेक्ष बंधु हैं सुखकर, उत्तम गुण रत्नों की खान।।
भव भयशील साधुओं को हैं, शरण भूत अन्तर्यामी।
ऐसे श्री महावीर प्रभु हों, मम् नयनों के पथगामी।।8।।

दोहा- भागचंद भागेन्दु ने, भक्ति भाव के साथ।
महावीर अष्टक लिखा, झुका चरण में माथ।।
पढ़े सुने जो भाव से, श्रेष्ठ गति को पाय।
भाषा पढ़ के काव्य की, 'विशद' वीर बन जाय।।

तत्त्वार्थसूत्रम्

(श्री उमास्वामी आचार्य विरचितम्)

मोक्ष–मार्गस्य नेतारं, भेत्तारं कर्मभू–भृताम्।
ज्ञातारं विश्वतत्त्वानां, वन्दे तद्गुण–लब्धये।।

त्रैकाल्यं द्रव्यषट्कं, नवपदसहितं जीव षट्कायलेश्याः
पञ्चान्ये चास्तिकाया, व्रतसमिति–गतिज्ञानचारित्रभेदाः।
इत्येतन्मोक्षमूलं, त्रिभुवन–महितैः प्रोक्तमर्हद्भिरीशैः
प्रत्येति श्रद्धधाति, स्पृशति च मतिमान्, यः स वैशुद्धदृष्टिः।।1।।

सिद्धे जयप्पसिद्धे, चउव्विहाराहणाफलं पत्ते।
वंदित्ता अरहंते, वोच्छं आराहणा कमसो।।2।।

उज्जोवणमुज्जवणं, णिव्वहणं साहणं च णिच्छरणं।
दंसणणाणचरित्तं, तवाणमाराहणा भणिया।।3।।

प्रथम अध्याय

सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि मोक्षमार्गः।।1।। तत्त्वार्थश्रद्धानं सम्यग्दर्शनम्।।2।। तन्निसर्गादधिगमाद्वावा।।3।। जीवाजीवास्रवबन्धसंवरनिर्जरामोक्षास्तत्त्वम्।।4।। नाम–स्थापनाद्रव्यभावतस्तन्न्यासः।।5।। प्रमाणनयैरधिगमः।।6।। निर्देशस्वामित्वसाधनाधिकरणस्थितिविधानतः।।7।। सत्संख्याक्षेत्रस्पर्शन–कालान्तरभावाल्पबहुत्वैश्च।।8।। मतिश्रुतावधिमनः पर्ययकेवलानि ज्ञानम्।।9।। तत्प्रमाणे।।10।। आद्ये परोक्षम्।।11।। प्रत्यक्षमन्यत्।।12।। मतिः स्मृतिः संज्ञा चिन्ताभिनिबोध इत्यनर्थान्तरम्।।13।। तदिन्द्रियानिन्द्रिय–निमित्तम्।।14।। अवग्रहेहावायधारणाः।।15।। बहुबहुविधक्षिप्रानिः सृतानुक्तध्रुवाणां सेतराणाम्।।16।। अर्थस्य।।17।। व्यञ्जन–स्यावग्रहः।।18।। न चक्षुरनिन्द्रियाभ्याम्।।19।। श्रुतं मतिपूर्वं द्वयनेकद्वादशभेदम्।।20।।

भवप्रत्ययोऽवधिर्देव नारकाणाम्।।21।। क्षयोपशमनिमित्तः षड् विकल्पः शेषाणाम्।।22।। ऋजुविपुलमती मनःपर्ययः।।23।। विशुद्ध्यप्रतिपाताभ्यां तद्विशेषः।।24।। विशुद्धिक्षेत्र – स्वामिविषयेभ्योऽवधिमनः पर्यययोः।।25।। मतिश्रुतयोर्निबन्धो द्रव्येष्वसर्वपर्यायेषु।।26।। रूपिष्ववधेः।।27।। तदनन्तभागे मनः पर्ययस्य।।28।। सर्वद्रव्यपर्यायेषु केवलस्य।।29।। एकादीनि भाज्यानि युगपदेकस्मिन्नाचतुर्भ्यः।।30।। मतिश्रुतावधयो विपर्ययश्च।।31।सदसतोर–विशेषाद्यदृच्छोपलब्धेरुन्मत्तवत्।।32।। नैगमसंग्रहव्यवहारर्जुसूत्रशब्द–समभिरुढैवंभूतानयाः।।33।।

।। इति तत्त्वार्थसूत्रे (मोक्षशास्त्रे) प्रथमोऽध्यायः।।1।।

द्वितीय अध्याय

औपशमिकक्षायिकौ भावौ मिश्रश्च जीवस्य स्वतत्त्व–मौदयिकपारिणामिकौ च।।1।। द्विनवाष्टादशैकविंशतित्रिभेदा यथाक्रमम्।।2।। सम्यक्त्वचारित्रे।।3।। ज्ञानदर्शनदानलाभ–भोगोपभोगवीर्याणि च।।4।। ज्ञानाज्ञानदर्शनलब्ध–यश्चतुस्त्रित्रि पंचभेदाः सम्यक्त्वचारित्रसंयमासंयमाश्च।।5।। गतिकषायलिङ्ग–मिथ्यादर्शनाज्ञानासंयतासिद्धलेश्याश्चतुश्चतुस्त्र्येकैकैकैकषड् भेदाः।।6।। जीवभव्याभव्यत्वानि च।।7।। उपयोगो लक्षणम्।।8।। स द्विविधोऽष्ट–चतुर्भेदः।।9।। संसारिणो मुक्ताश्च।।10।। समनस्कामनस्काः।।11।। संसारिणस्त्रसस्थावराः।।12।। पृथिव्यप्तेजोवायुवनस्पतयः स्थावराः।।13।। द्वीन्द्रियादयस्त्रसाः।।14।। पञ्चेन्द्रियाणि।।15।। द्विविधानि।।16।। निर्वृत्त्युपकरणे द्रव्येन्द्रियम।।17।। लब्ध्युपयोगौ भावेन्द्रियम्।।18।। स्पर्शनरसनाघ्राणचक्षुः श्रोत्राणि।।19।। स्पर्शरसगन्धवर्ण–शब्दास् तदर्थाः।।20।। श्रुतमनिन्द्रियस्य।।21।। वनस्पत्यन्तानामेकम्।।22।।

कृमिपिपीलिकाभ्रमर-मनुष्यादीनामेकैकवृद्धानि ।।23।। सञ्ज्ञिनः समनस्काः ।।24।। विग्रहगतौ कर्मयोगः ।।25।। अनुश्रेणि गतिः ।।26।। अविग्रहा जीवस्य ।।27।। विग्रहवती च संसारिणः प्राक् चतुर्भ्यः ।।28।। एकसमयाऽविग्रहा ।।29।। एकं द्वौ त्रीन् वानाहारकः ।।30।। सम्मूर्च्छनगर्भोपपादा जन्म ।।31।। सचित्तशीतसंवृताः सेतरा मिश्राश्चैकशस्तद्योनयः ।।32।। जरायुजाण्डजपोतानां गर्भः ।।33।। देवनारकाणामुपपादः ।।34।। शेषाणां सम्मूर्च्छनम् ।।35।। औदारिकवैक्रियिकाहारकतैजसकार्मणानि शरीराणि ।।36।। परं परं सूक्ष्मम् ।।37।। प्रदेश-तोऽसंख्येयगुणं प्राक् तैजसात् ।।38।। अनन्तगुणे परे ।।39।। अप्रतीघाते ।।40।। अनादिसंबन्धे च ।।41।। सर्वस्य ।।42।। तदादीनि भाज्यानि युगपदेकस्मिन्नाचतुर्भ्यः ।।43।। निरुपभोगमन्त्यम् ।।44।। गर्भसम्मूर्च्छनज-माद्यम् ।।45।। औपपादिकं वैक्रियिकम् ।।46।। लब्धिप्रत्ययं च ।।47।। तैजसमपि ।।48।। शुभं विशुद्धमव्याघाति चाहारकं प्रमत्तसंयतस्यैव ।।49।। नारक सम्मूर्च्छिनो नपुंसकानि ।।50।। न देवाः ।।51।। शेषास् त्रिवेदाः ।।52।। औपपादिकचरमोत्तमदेहाऽ-संख्येयवर्षायुषोऽनपवर्त्यायुषः ।।53।।

।। इति तत्त्वार्थसूत्रे (मोक्षशास्त्रे) द्वितीयोऽध्यायः ।।2।।

तृतीय अध्याय

रत्नशर्कराबालुकापङ्कधूमतमोमहातमः प्रभाभूमयो घनाम्बुवाता-काशप्रतिष्ठाः सप्ताधोऽधः ।।1।। तासु त्रिंशत्पंचविंशतिपंचदश-दशत्रिपंचोनैकनरक-शतसहस्राणि पञ्च चैव यथाक्रमम् ।।2।। नारका नित्याशुभतरलेश्या - परिणामदेहवेदनाविक्रियाः ।।3।। परस्परोदीरितदुःखाः ।।4।। संक्लिष्टा-सुरोदीरितदुःखाश्च प्राक् चतुर्थ्याः ।।5।। तेष्वेकत्रिसप्तदशसप्तदशद्वाविंशतित्र-यस्त्रिंशत्साग-रोपमा सत्त्वानां परा स्थितिः ।।6।। जम्बूद्वीपलवणोदादयः शुभनामानो

द्वीपसमुद्राः ।।7।। द्विर्द्विर्विष्कम्भाः पूर्वपूर्वपरिक्षेपिणो वलया-कृतयः ।।8।। तन्मध्ये मेरुनाभिर्वृत्तो योजनशतसहस्रविष्कम्भो जम्बूद्वीपः ।।9।। भरतहैमवतहरिविदेहरम्यकहैरण्यवतैरावतवर्षाः क्षेत्राणि ।।10।। तद्विभाजिनः पूर्वापरायता हिमवन्महाहिमवन्निषध नीलरुक्मिशिखरिणो वर्षधरपर्वताः ।।11।। हेमार्जुनतपनी-यवैडूर्यरजतहेममयाः ।।12।। मणिविचित्र-पार्श्वा उपरिमूले च तुल्यविस्ताराः ।।13।। पद्ममहापद्मतिगिंछकेशरिमहापुण्डरीकपुण्डरीका ह्रदास्तेषामुपरि ।।14।। प्रथमो योजनसहस्रायामस् तदर्द्ध विष्कम्भो ह्रदः ।।15।। दशयोजना-वगाहः ।।16।। तन्मध्ये योजनं पुष्करम् ।।17।। तद्द्विगुणद्विगुणा ह्रदाः पुष्कराणि च ।।18।। तन्निवासिन्यो देव्यः श्रीह्रीधृतिकीर्ति-बुद्धिलक्ष्म्यः पल्योपमस्थितयः ससामानिकपरिषत्काः ।।19।। गङ्गासिन्धुरोहिद्रोहिता-स्याहरिद्धरिकान्तासीतासीतोदानारीनरकान्तासुवर्णरूप्यकूलारक्तारक्तोदाः सरितस्तन्मध्यगाः ।।20।। द्वयोर्द्वयोः पूर्वाः पूर्वगाः ।।21।। शेषास्त्वपरगाः ।।22।। चतुर्दशनदीसहस्रपरिवृता गङ्गासिन्ध्वादयो नद्यः ।।23।। भरतः षड्विंशतिपञ्चयोजनशतविस्तारः षट् चैकोनविंशतिभागा योजनस्य ।।24।। तद्द्विगुणद्विगुणविस्तारा वर्षधरवर्षा विदेहान्ताः ।।25।। उत्तरादक्षिणतुल्याः ।।26।। भरतैरावतयोर्वृद्धिह्रासौ षट्समयाभ्यामुत्सर्पिण्यव-सर्पिणीभ्याम् ।।27।। ताभ्यामपरा भूमयोऽव-स्थिताः ।।28।। एकद्वित्रिपल्योपमस्थितयो हैमवतक-हारिवर्षक-दैवकुरवकाः ।।29।। तथोत्तराः ।।30।। विदेहेषुसंख्येयकालाः ।।31।। भरतस्य विष्कम्भो जम्बूद्वीपस्य नवतिशत भागः ।।32।। द्विर्धातकीखण्डे ।।33।। पुष्करार्द्धे च ।।34।। प्राङ् मानुषोत्तरान्मनुष्याः ।।35।। आर्या म्लेच्छाश्च ।।36।। भरतैरावतविदेहाः कर्मभूमयोऽन्यत्र देवकुरूत्तरकुरुभ्यः ।।37।। नृस्थिती परावरे त्रिपल्योपमान्तर्मुहूर्ते ।।38।। तिर्यग्योनिजानां च ।।39।।

।। इति तत्त्वार्थसूत्रे (मोक्षशास्त्रे) तृतीयोऽध्यायः ।।3।।

चतुर्थ अध्याय

देवाश्चतुर्णिकायाः ।।1।। आदितस्त्रिषु पीतान्तलेश्याः ।।2।। दशाष्टपञ्च-द्वादशविकल्पाः कल्पोपपन्नपर्यन्ताः ।।3।। इन्द्र-सामानिकत्रायस्त्रिंशपारिषदात्मरक्षलोकपालानीकप्रकीर्ण-काभियोग्य-किल्विषिकाश्चैकशः ।।4।। त्रायस्त्रिंशलोकपालवर्ज्या व्यन्तरज्योतिष्काः ।।5।। पूर्वयो-र्द्वीन्द्राः ।।6।। कायप्रवीचारा आ ऐशानात् ।।7।। शेषाः स्पर्शरूपशब्दमनः प्रवीचाराः ।।8।। परेऽप्रवीचाराः ।।9।। भवनवासिनोऽसुरनाग-विद्युत्सुपर्णाग्नि- वातस्त-नितोदधिद्वीप-दिक्कुमाराः ।।10।। व्यन्तराः किन्नर-किंपुरुषमहोरग-गन्धर्वयक्षराक्षसभूतपिशाचाः ।।11।। ज्योतिष्काः सूर्याचन्द्रमसौ ग्रहनक्षत्रप्रकीर्णकतारकाश्च ।।12।। मेरुप्रदक्षिणा नित्यगतयो नृलोके ।।13।। तत्कृतः कालविभागः ।।14।। बहिरवस्थिताः ।।15।। वैमानिकाः ।।16।। कल्पोपपन्नाः कल्पातीताश्च ।।17।। उपर्युपरि ।।18।। सौधर्मैशानसानत्कुमार-माहेन्द्रब्रह्मब्रह्मोत्तरलान्तवकापिष्ठ-शुक्रमहाशुक्रशतार - सहस्रारेष्वानत-प्राणतयोरारणाच्युतयोर्नवसु ग्रैवेयकेषु विजय-वैजयन्तजयन्तापराजितेषु सर्वार्थसिद्धौ च ।।19।। स्थितिप्रभाव-सुखद्युतिलेश्याविशुद्धीन्द्रियावधि-विषयतोऽधिकाः ।।20।। गतिशरीरपरिग्रहाभिमानतो हीनाः ।।21।। पीतपद्मशुक्ल-लेश्या द्वित्रिशेषेषु ।।22।। प्राग्ग्रैवेयकेभ्यः कल्पाः ।।23।। ब्रह्म-लोकालया लौकान्तिकाः ।।24।। सारस्वतादित्यवह्न्यरुणगर्दतोय-तुषिताव्याबाधारिष्टाश्च ।।25।। विजयादिषु द्विचरमाः ।।26।। औप-पादिकमनुष्येभ्यः शेषास्तिर्यग्योनयः ।।27।। स्थितिरसुरनागसुपर्ण-द्वीपशेषाणां सागरोपमत्रिपल्योपमार्द्धहीन-मिताः ।।28।। सौधर्मै-शानयोः सागरोपमे अधिके ।।29।। सानत्कुमारमाहेन्द्रयोः सप्त ।।30।।

त्रिसप्तनवैकादशत्रयोदश-पञ्चदशभिरधिकानि तु ।।31।। आरणाच्युतादूर्ध्वमेकैकेन नवसु ग्रैवेयकेषु विजयादिषु सर्वार्थसिद्धौ च ।।32।। अपरा पल्योपममधिकम् ।।33।। परतःपरतः पूर्वा पूर्वाऽनन्तरा ।।34।। नारकाणां च द्वितीयादिषु ।।35।। दशवर्षसहस्राणि प्रथमायाम् ।।36।। भवनेषु च ।।37।। व्यन्तराणां च ।।38।। परा पल्योपममधिकम् ।।39।। ज्योतिष्काणां च ।।40।। तदष्टभागोऽपरा ।।41।। लौकान्तिकानामष्टौ सागरोपमाणि सर्वेषाम् ।।42।।

।। इति तत्त्वार्थसूत्रे (मोक्षशास्त्रे) चतुर्थोऽध्यायः ।।4।।

पंचम अध्याय

अजीवकायाधर्माधर्माकाशपुद्गलाः ।।1।। द्रव्याणि ।।2।। जीवाश्च ।।3।। नित्यावस्थितान्यरूपाणि ।।4।। रूपिणः पुद्गलाः ।।5।। आ आकाशादेकद्रव्याणि ।।6।। निष्क्रियाणि च ।।7।। असंख्येयाः प्रदेशा धर्माधर्मैकजीवानाम् ।।8।। आकाशस्यानन्ताः ।।9।। संख्येयासंख्येयाश्च पुद्गलानाम् ।।10।। नाणोः ।।11।। लोकाकाशेऽवगाहः ।।12।। धर्माधर्मयोः कृत्स्ने ।।13।। एकप्रदेशादिषु भाज्यः पुद्गलानाम् ।।14।। असंख्येयभागादिषु जीवानाम् ।।15।। प्रदेशसंहारविसर्पाभ्यां प्रदीपवत् ।।16।। गतिस्थित्युपग्रहौ धर्माधर्मयोरुपकारः ।।17।। आकाशस्यावगाहः ।।18।। शरीरवाङ्मनः प्राणापानाः पुद्गलानाम् ।।19।। सुखदुःखजीवित-मरणोपग्रहाश्च ।।20।। परस्परोपग्रहो जीवानाम् ।।21।। वर्तनापरिणामक्रियापरत्वापरत्वे च कालस्य ।।22।। स्पर्शरसगन्धवर्ण-वन्तः पुद्गलाः ।।23।। शब्दबन्धसौक्ष्म्यस्थौल्य संस्थानभेदतमश्-छायातपोद्योतवन्तश्च ।।24।। अणवः स्कन्धाश्च ।।25।। भेद-सङ्घातेभ्य उत्पद्यन्ते ।।26।। भेदादणुः ।।27।। भेदसङ्घाताभ्यां चाक्षुषः ।।28।। सद् द्रव्यलक्षणम् ।।29।। उत्पादव्ययध्रौव्ययुक्तं सत् ।।30।। तद्भावाव्ययं

नित्यम् ।।31 ।। अर्पितानर्पितसिद्धेः ।।32 ।। स्निग्ध–रूक्षत्वाद्बन्धः ।।33 ।। न जघन्यगुणानाम् ।।34 ।। गुणसाम्ये सदृशानाम् ।।35 ।। द्व्यधिकादिगुणानां तु ।।36 ।। बन्धेऽधिकौ परिणामिकौ च ।।37 ।। गुणपर्ययवद् द्रव्यम् ।।38 ।। कालश्च ।।39 ।। सोऽनन्तसमयः ।।40 ।। द्रव्याश्रया निर्गुणा गुणाः ।।41 ।। तद्भावः परिणामः ।।42 ।।

।। इति तत्त्वार्थसूत्रे (मोक्षशास्त्रे) पञ्चमोऽध्यायः ।।5 ।।

षष्ठम् अध्याय

कायवाङ्मनः कर्मयोगः ।।1 ।। स आस्रवः ।।2 ।। शुभः पुण्य–स्याशुभः पापस्य ।।3 ।। सकषायाकषाययोः साम्परायिकेर्यापथयोः ।।4 ।। इन्द्रियकषाया–व्रतक्रियाः पञ्च चतुः पञ्चपञ्चविंशतिसंख्याः पूर्वस्य भेदाः ।।5 ।। तीव्रमन्द–ज्ञाताज्ञात–भावाधिकरण–वीर्यविशेषेभ्य–स्तद्विशेषः ।।6 ।। अधिकरणं जीवाजीवाः ।।7 ।। आद्यं संरम्भसमा–रम्भारम्भयोगकृतकारितानुमत–कषायविशेषै–स्त्रिस्त्रिस्त्रिश्–चतुश्चैकशः ।।8 ।। निर्वर्तनानिक्षेपसंयोगनिसर्गा द्विचतुर्द्वित्रिभेदाः परम् ।।9 ।। तत्प्रदोषनिह्नवमात्सर्यान्तराया–सादनोपघाता ज्ञानदर्शना–वरणयोः ।।10 ।। दुःखशोकतापाक्रन्दन – वधपरिदेव – नान्यात्म – परोभय–स्थानान्यसद्वेद्यस्य ।।11 ।। भूतव्रत्यनुकम्पादा नसराग संयमादियोगः क्षान्तिः शौचमिति सद्वेद्यस्य ।।12 ।। केवलिश्रुतसंघधर्मदेवावर्ण–वादो दर्शनमोहस्य ।।13 ।। कषायोदया–त्तीव्रपरिणामश्चारित्रमोहस्य ।।14 ।। बह्वारम्भपरिग्रहत्वं नारकस्यायुषः ।।15 ।। माया तैर्यग्योनस्य ।।16 ।। अल्पारम्भ परिग्रहत्वं मानुषस्य ।।17 ।। स्वभावमार्दवं च ।।18 ।। निःशीलव्रतत्वं च सर्वेषाम् ।।19 ।। सरागसंयमसंयमा–संयमाकामनिर्जराबाल तपांसि दैवस्य ।।20 ।। सम्यक्त्वं च ।।21 ।। योगवक्रता विसंवादनं चाशुभस्य

नाम्नः ।।22 ।। तद्विपरीतं शुभस्य ।।23 ।। दर्शनविशुद्धिर्विनय–संपन्नता शीलव्रतेष्वनतीचा–रोऽभीक्ष्ण–ज्ञानोपयोगसंवेगौ शक्तितस्त्याग–तपसीसाधु–समाधिर्वैयावृत्यकरण मर्हदाचार्य–बहुश्रुतप्रवचनभक्ति–रावश्यकापरिहाणिर्मार्ग–प्रभावना–प्रवचन–वत्सल–त्वमितितीर्थ–करत्वस्य ।।24 ।। परात्मनिन्दाप्रशंसे सद–सद्गुणोच्छादनोद्भावने च नीचैर्गोत्रस्य ।।25 ।। तद्विपर्ययो नीचै–र्वृत्यनुत्सेकौ चोत्तरस्य ।।26 ।। विघ्नकरणमन्तरायस्य ।।27 ।।

।। इति तत्त्वार्थसूत्रे (मोक्षशास्त्रे) षष्ठोऽध्यायः ।।6 ।।

सप्तम अध्याय

हिंसाऽनृतस्तेयाब्रह्मपरिग्रहेभ्यो विरति र्व्रतम् ।।1 ।। देशसर्वतो–ऽणुमहती ।।2 ।। तत्स्थैर्यार्थं भावनाः पञ्च पञ्च ।।3 ।। वाङ्मनोगुप्ती–र्यादाननिक्षेपणसमित्या–लोकितपानभोजनानि पञ्च ।।4 ।। क्रोधलोभ–भीरुत्वहास्यप्रत्याख्याना–न्यनुवीचिभाषणं च पञ्च ।।5 ।। शून्यागार विमोचितावासपरोपरोधाकरण–भैक्ष्यशुद्धिसधर्माविसंवादाः पञ्च ।।6 ।। स्त्रीराग–कथाश्रवणतन्मनोहराङ्ग–निरीक्षण–पूर्वरतानुस्मरणवृष्येष्ट–रसस्वशरीर संस्कारत्यागाः पञ्च ।।7 ।। मनोज्ञामनोज्ञेन्द्रियविषय–रागद्वेषवर्जनानि पञ्च ।।8 ।। हिंसादिष्विहामुत्रा–पायावद्यदर्शनम् ।।9 ।। दुःखमेव वा ।।10 ।। मैत्रीप्रमोदकारुण्यमाध्यस्थ्यानि च सत्त्वगुणा–धिकक्लिश्य–मानाविनयेषु ।।11 ।। जगत्कायस्वभावौ वा संवेग–वैराग्यार्थम् ।।12 ।। प्रमत्तयोगात्प्राणव्यपरोपणं हिंसा ।।13 ।। अस–दभिधानमनृतम् ।।14 ।। अदत्तादानं स्तेयम् ।।15 ।। मैथुनमब्रह्म ।।16 ।। मूर्छा परिग्रहः ।।17 ।। निःशल्यो व्रती ।।18 ।। आगार्यनगारश्च ।।19 ।। अणुव्रतोऽगारी ।।20 ।। दिग्देशानर्थदण्ड– विरतिसामायिकप्रोषधोप–वासोपभोग–परिभोगपरिमाणा–तिथिसंविभागव्रतसम्पन्नश्च ।।21 ।।

मारणान्तिकीं सल्लेखनां जोषिता ।।22 ।। शङ्का-कांक्षा-विचिकित्सान्यदृष्टिप्रशंसा संस्तवाः सम्यग्दृष्टेरतीचाराः ।।23 ।। व्रतशीलेषु पञ्च पञ्च यथाक्रमम् ।।24 ।। बन्ध-वधच्छेदातिभारारोपणान्न-पान-निरोधाः।।25 ।। मिथ्योपदेशरहोभ्या-ख्यानकूटलेख-क्रियान्यासापहार-साकारमन्त्रभेदाः ।।26 ।। स्तेनप्रयोगतदा-हृतादान-विरुद्धराज्या-तिक्रमहीनाधिकमानोन्मानप्रतिरूपकव्यवहाराः ।।27 ।। परविवाह-करणेत्वरिकापरिगृहीतापरिगृहीता-गमनानङ्गक्रीडाकाम-तीव्राभिनिवेशाः ।।28 ।। क्षेत्रवास्तुहिरण्यसुवर्ण-धनधान्य-दासीदासकुप्य-प्रमाणातिक्रमाः ।।29 ।। ऊर्ध्वाधस्तिर्यग्व्य-तिक्रम-क्षेत्रवृद्धिस्मृत्यन्तरा-धानानि ।।30 ।। आनयनप्रेष्यप्रयोग-शब्दरूपानु पातपुद्गलक्षेपाः ।।31 ।। कन्दर्पकौत्कुच्यमौखर्या-समीक्ष्याधि-करणोपभोगपरिभोगानर्थक्यानि ।।32 ।। योगदुःप्रणिधा नानादर-स्मृत्यनु-पस्थानानि ।।33 ।। अप्रत्यवेक्षिता-प्रमार्जितोत्सर्गा-दान-संस्तरोप-क्रमणानादर-स्मृत्य-नुपस्थानानि ।।34 ।। सचित्त-सम्बन्ध-सम्मिश्राभिषवदुः पक्वाहाराः ।।35 ।। सचित्तनिक्षेपा-पिधानपरव्यपदेशमात्सर्य्य-कालातिक्रमाः ।।36 ।। जीवितमरणा-शंसामित्रानुरागसुखानुबन्ध-निदानानि ।।37 ।। अनुग्रहार्थं स्वस्याति-सर्गो दानम् ।।38 ।। विधिद्रव्य-दातृपात्र-विशेषात्तद्विशेषः ।।39 ।।

।। इति तत्त्वार्थसूत्रे (मोक्षशास्त्रे) सप्तमोऽध्यायः ।।7 ।।

अष्टम अध्याय

मिथ्यादर्शनाविरतिप्रमादः-कषाययोगा बन्धहेतवः ।।1 ।। सकषायत्वाज्जीवः कर्मणो योग्यान् पुद्गलानादत्ते स बन्धः ।।2 ।। प्रकृतिस्थित्यनुभवप्रदेशास् तद्विधयः ।।3 ।। आद्यो ज्ञानदर्शनावरण वेदनीयमोहनीयायुर्नाम-गोत्रान्तरायाः ।।4 ।। पञ्चनवद्व्यष्टा

विंशतिचतुर्द्विचत्वारिंशद्द्विपञ्चभेदा यथाक्रमम् ।।5 ।। मतिश्रुता वधिमनः पर्ययकेवलानाम् ।।6 ।। चक्षुरचक्षुरवधिकेवलानां निद्रा निद्रा-निद्रा-प्रचला-प्रचला-प्रचला-स्त्यानगृद्धयश्च ।।7 ।। सदसद्वेद्ये ।।8 ।। दर्शनचारित्र-मोहनीयत्तकषाय-कषायवेदनीयाख्यास्-त्रिद्विनवषोडश भेदाः सम्यक्त्व-मिथ्यात्वतदुभयान्यकषाय-कषायौ हास्यरत्य-रतिशोकभयजुगुप्सा-स्त्रिपुन्नपुंसकवेदा अनन्तानु-बन्ध्य-प्रत्याख्यान-प्रत्याख्यान-संज्वलन-विकल्पाश्चैकशः क्रोध मानमायालोभाः ।।9 ।। नारकतैर्यग्योनमानुषदैवानि ।।10 ।। गति-जातिशरीराङ्गोपाङ्ग-निर्माणबन्धन-सङ्घातसंस्थानसंहननस्पर्श-रसगन्धवर्णानुपूर्व्या-गुरुलघूपघात-परघातातपोद्योतोच्छ्वास-विहायो गतयः प्रत्येकशरीरत्रससुभगसुस्वरशुभ-सूक्ष्मपर्याप्तिस्थिरा-देययशः कीर्तिसेतराणि तीर्थकरत्वं च ।।11 ।। उच्चैर्नीचैश्च ।।12 ।। दानलाभभोगोपभोगवीर्याणाम् ।।13 ।। आदितस्ति-सृणामन्तरायस्य च त्रिंशत्सागरोपम्-कोटीकोट्यः परा स्थितिः ।।14 ।। सप्तति-र्मोहनीयस्य ।।15 ।। विंशतिर्नामगोत्रयोः ।।16 ।। त्रयस्त्रिंशत्सागरो-पमाण्यायुषः ।।17 ।। अपरा द्वादशमुहूर्त्ता वेदनीयस्य ।।18 ।। नाम-गोत्रयोरष्टौ ।।19 ।। शेषाणामन्तर्मुहूर्ता ।।20 ।। विपाकोऽनुभवः ।।21 ।। स यथानाम् ।।22 ।। ततश्च निर्जरा ।।23 ।। नामप्रत्ययाः सर्वतो योगविशेषात् सूक्ष्मैकक्षेत्रावगाहस्थिताः सर्वात्मप्रदेशेष्व-नन्तानन्तप्रदेशाः ।।24 ।। सद्वेद्यशुभायुर्नामगोत्राणि पुण्यम् ।।25 ।। अतोऽन्यत्पापम् ।।26 ।।

।। इति तत्त्वार्थसूत्रे (मोक्षशास्त्रे) अष्टमोऽध्याय ।।8 ।।

नवम अध्याय

आस्रवनिरोधः संवरः ।।1 ।। स गुप्तिसमितिधर्मानुप्रेक्षा-परीषहजय चारित्रैः ।।2 ।। तपसा निर्जरा च ।।3 ।। सम्यग्योगनिग्रहो गुप्तिः ।।4 ।। ईर्याभाषैषणा-

दाननिक्षेपोत्सर्गाः समितयः ।।5।। उत्तमक्षमा–मार्दवार्जव–शौचसत्यसंयम–तपत्यागाकिञ्चन्य–ब्रह्मचर्याणि धर्मः ।।6।। अनित्याशरण–संसारैकत्वान्यत्वाशुच्यास्रव–संवरनिर्जरालोक बोधिदुर्लभ–धर्मस्वाख्या–तत्त्वानुचिन्तन–मनुप्रेक्षाः ।।7।। मार्गाच्यवननिर्जरार्थं परिषोढव्याः परीषहाः ।।8।। क्षुत्पिपासाशीतोष्ण–दंशमशक–नाग्न्यारति–स्त्री–चर्या–निषद्या–शय्या–क्रोश–वध–याचनालाभ–रोगतृणस्पर्श–मलसत्कारपुरस्कार–प्रज्ञाज्ञाना–दर्शनानि ।।9।। सूक्ष्मसाम्प–रायच्छद्मस्थवीतरागयोश्चतुर्दश ।।10।। एकादश जिने ।।11।। बादरसाम्पराये सर्वे ।।12।। ज्ञानावरणे प्रज्ञाज्ञाने ।।13।। दर्शनमोहान्तराययोरदर्शनालाभौ ।।14।। चारित्रमोहे नाग्न्यारतिस्त्रीनिषद्या–क्रोशयाचनासत्कार–पुरस्काराः ।।15।। वेदनीये शेषाः ।।16।। एकादयो भाज्यायुगपदेकस्मिन्नै–कोनविंशतेः ।।17।। सामायिकच्छेदोपस्थापनापरिहार–विशुद्धि–सूक्ष्मसाम्परायथाख्यात–मिति चारित्रम् ।।18।। अनशनाव–मौदर्यवृत्तिपरिसंख्यान–रस–परित्याग–विविक्तशय्यासन–कायक्लेशा बाह्यं तपः ।।19।। प्रायश्चित्तविनय–वैयावृत्यस्वाध्यायव्युत्सर्ग–ध्यानान्युत्तरम् ।।20।। नवचतुर्दश–पञ्च–द्विभेदा यथा–क्रमं प्राग्ध्यानात् ।।21।। आलोचना–प्रतिक्रमण–तदुभयविवेकव्युत्सर्ग–तपश्छेदपरिहारोप–स्थापनाः ।।22।। ज्ञानदर्शन–चारित्रो–पचाराः ।।23।। आचार्यो–पाध्यायतपस्विशैक्ष्यग्लान–गणकुलसङ्घ–साधुमनोज्ञानाम् ।।24।। वाचना–पृच्छनानुप्रेक्षाम्नायधर्मो–पदेशाः ।।25।। बाह्याभ्यन्त–रोपध्योः ।।26।। उत्तमसंहननस्यैका–ग्रचिन्तानिरोधो ध्यानमान्तर्मुहूर्तात् ।।27।। आर्त्तरौद्रधर्म्य–शुक्लानि ।।28।। परे मोक्षहेतू ।।29।। आर्तममनोज्ञस्य संप्रयोगे तद्विप्रयोगाय स्मृतिसमन्वाहारः ।।30।। विपरीतं मनोज्ञस्य ।।31।। वेदनायाश्च ।।32।। निदानं च ।।33।। तदविरतदेशविरत–प्रमत्तसंयतानाम् ।।34।।

हिंसानृतस्तेयविषयसंरक्षणेभ्यो–रौद्र–मविरतदेशविरतयोः ।।35।। आज्ञापायविपाकसंस्थानविचयाय धर्म्यम् ।।36।। शुक्ले चाद्ये पूर्वविदः ।।37।। परे केवलिनः ।।38।। पृथक्त्वैकत्व–वितर्कसूक्ष्म–क्रियाप्रतिपाति–व्युपरत क्रिया–निवर्तीनि ।।39।। त्र्येकयोगकाय–योगायोगानाम् ।।40।। एकाश्रये सवितर्कवीचारे पूर्वे ।।41।। अवीचारं द्वितीयम् ।।42।। वितर्कःश्रुतम् ।।43।। वीचारोऽर्थ व्यञ्जनयोग–संक्रान्तिः ।।44।। सम्यग्दृष्टि–श्रावकविरतानन्तवियोजक–दर्शनमोहक्षपकोपशम–कोपशान्तमोह क्षपकक्षीणमोहजिनाः क्रमशोऽसंख्येयगुण–निर्जराः ।।45।। पुलाक–वकुशकुशील–निर्ग्रन्थस्नातका निर्ग्रन्थाः ।।46।। संयमश्रुतप्रति–सेवनातीर्थ–लिङ्गलेश्योपपाद–स्थानविकल्पतः साध्याः ।।47।।

।।इति तत्त्वार्थसूत्रे (मोक्षशास्त्रे) नवमोऽध्यायः ।।9।।

दशम अध्याय

मोहक्षयाज्ज्ञान–दर्शनावरणान्तरायक्षयाच्च केवलम् ।।1।। बन्धहेत्वभाव–निर्जराभ्यां कृत्स्नकर्मविप्रमोक्षो मोक्षः ।।2।। औपशमिकादिभव्यत्वानां च ।।3।। अन्यत्र केवल– सम्यक्त्वज्ञान–दर्शनसिद्धत्वेभ्यः ।।4।। तदनन्तरमूर्ध्वं गच्छत्यालोकान्तात् ।।5।। पूर्वप्रयोगा–दसङ्गत्वाद्–बन्धच्छेदात् तथागति–परिणामाच्च ।।6।। आविद्धकुलालचक्रवद्–व्यपगतलेपालाम्बुवदेरण्डबीज–वदग्नि–शिखावच्च ।।7।। धर्मास्तिकाया–भावात् ।।8।। क्षेत्रकालगति–लिङ्गतीर्थचारित्रप्रत्येकबुद्धबोधित–ज्ञानावगाहनान्तरसंख्याल्प–बहुत्वतः साध्याः ।।9।।

।। इति तत्त्वार्थसूत्रे (मोक्षशास्त्रे) दशमोऽध्यायः ।।10।।

दोद्यक वृत्त

अक्षर-मात्र-पदस्वर-हीनं, व्यञ्जनसंधि-विवर्जितरेफम्।
साधुभिरत्र मम क्षमितव्यं, को न विमुह्यति शास्त्रसमुद्रे।।1।।

दशाध्याये परिच्छिन्ने, तत्त्वार्थे पठिते सति।
फलं स्यादुपवासस्य, भाषितं मुनिपुङ्गवैः।।2।।

तत्त्वार्थ-सूत्रकर्तारं, गृद्ध-पिच्छोप-लक्षितम्।
वन्दे गणीन्द्रसंजात, मुमास्वामीमुनीश्वरम्।।3।।

पढम चउक्के पढमं, पंचमए जाण पुग्गलं तच्च।
छहसत्तमे हि आस्सव, अट्ठमे बंध णायव्वो।।4।।

णवमे संवर णिज्जर, दहमे मोक्खं वियाणे हि।
इह सत्त तच्च भणियं, दह सुत्ते मुणिवरिं देहिं।।5।।

जं सक्कइ तं कीरइ, जं च ण सक्कइ तहेव सद्दहणं।
सद्दहमाणो जीवो, पावइ अजरामरं ठाणं।।6।।

तवयरणं वयधरणं, संजमसरणं च जीवदयाकरणम्।
अन्ते समाहिमरणं, चउगइ दुक्खं णिवारेई।।7।।

कोटिशतं द्वादशचैव कोट्यो, लक्षाण्यशीतिस्त्र्यधिकानि चैव।
पंचाशदष्टौ च सहस्रसंख्य, मेतच्छ्रुतं पंचपदं नमामि।।8।।

अरहंत भासियत्थं, गणहरदेवेहिं गंथिय सव्वं।
पणमामि भत्तिजुत्तो, सुदणाणमहोवहिं सिरसा।।9।।

गुरवः पांतु नो नित्यं, ज्ञानदर्शननायकाः
चारित्रार्णवगम्भीरा, मोक्षमार्गोपदेशकाः।।10।।

।। इति तत्त्वार्थसूत्रापरनाम मोक्षशास्त्रं समाप्तम् ।।

श्री जिनसहस्रनाम स्तोत्रम्

स्वयंभुवे नमस्तुभ्यमुत्पाद्यात्मानमात्मनि।
स्वात्मनैव तथोद्भूत - वृत्तयेऽचिन्त्यवृत्तये।।1।।

नमस्ते जगतां पत्ये, लक्ष्मीभर्त्रे नमोऽस्तु ते।
विदांवर नमस्तुभ्यं, नमस्ते वदतांवर।।2।।

कामशत्रुहणं देव, मानमन्ति मनीषिणः।
त्वामानमन्सुरेण्मौलि-भा-मालाऽभ्यर्चितक्रमम्।।3।।

ध्यान - द्रुघण - निर्भिन्न, घन - घाति महातरुः।
अनन्त - भव - सन्तान, जयादासीदनन्तजित्।।4।।

त्रैलोक्य - निर्जयावाप्त - दुर्दर्पमतिदुर्जयम्।
मृत्युराजं विजित्यासीज्जिन ! मृत्युं जयो भवान्।।5।।

विधूताशेष - संसार - बन्धनो भव्यबान्धवः।
त्रिपुराऽरिस्त्वमेवासि, जन्म मृत्यु-जराऽन्तकृत्।।6।।

त्रिकाल-विषयाऽशेष-तत्त्वभेदात् त्रिधोत्थितम्।
केवलाख्यं दधच्चक्षुस्त्रिनेत्रोऽसि त्वमीशितः।।7।।

त्वामन्धकाऽन्तकं प्राहु, र्मोहान्धाऽसुर-मर्दनात्।
अर्द्धं ते नारयो यस्मादर्धनारीश्वरोऽस्यतः।।8।।

शिवः शिवपदाध्यासाद्, दुरिताऽरि - हरो हरः।
शंकरः कृतशं लोके, शंभवस्त्वं भवन्सुखे।।9।।

वृषभोऽसि जगज्ज्येष्ठः पुरुः पुरुगुणोदयैः।
नाभेयो नाभि-सम्भूतेरिक्ष्वाकु-कुल-नन्दनः।।10।।

त्वमेक: पुरुषस्कन्धस्त्वं, द्वे लोकस्य लोचने।
तवं त्रिधा बुद्ध–सन्मार्गस्त्रिज्ञस्त्रिज्ञान–धारक: ।।11।।

चतु:शरण – मांगल्य – मूर्तिस्त्वं चतुरस्रधी:।
पञ्च–ब्रह्ममयो देव, पावनस्त्वं पुनीहि माम् ।।12।।

स्वर्गाऽवतारिणे तुभ्यं, सद्योजाताम्ने नम:।
जन्माभिषेकवामाय, वामदेव नमोऽस्तु ते ।।13।।

सन्निष्क्रान्तावघोराय, पदं परममीयुषे।
केवलज्ञान – संसिद्धावीशानाय नमोऽस्तु ते ।।14।।

पुरस्तत्पुरुषत्वेन विमुक्तपदभाजिने।
नमस्तत्पुरुषाऽवस्थां, भाविनीं तेऽद्य विभ्रते ।।15।।

ज्ञानावरण – निर्हासान्नमस्तेऽनन्तचक्षुषे।
दर्शनवरणोच्छेदान्नमस्ते विश्वदृश्वने ।।16।।
नमो दर्शनमोहघ्ने, क्षायिकाऽमलदृष्टये।
नमश्चारित्रमोहघ्ने, विरागाय महौजसे ।।17।।

नमस्तेऽनन्तवीर्याय, नमोऽनन्तसुखात्मने।
नमस्तेऽनन्तलोकाय, लोकालोक–विलोकिने ।।18।।

नमस्तेऽनन्तदानाय, नमस्तेऽनन्तलब्धये।
नमस्तेऽनन्तभोगाय, नमोऽनन्तोपभोगिने ।।19।।

नम: परमयोगाय नमस्तुभ्यमयोनये।
नम: परमपूताय नमस्ते परमर्षये ।।20।।

नम: परमविद्याय नम: पर–मतच्छिदे।
नम: परम–तत्त्वाय नमस्ते परमात्मने ।।21।।

नम: परम–रूपाय नम: परम–तेजसे।
नम: परम–मार्गाय नमस्ते परमेष्ठिने ।।22।।

परमर्द्धिजुषे धाम्ने परमज्योतिषे नम:।
नम पारेतम: प्राप्तधाम्ने परतराऽऽत्मने ।।23।।

नम: क्षीणकलंकाय क्षीणबन्ध ! नमोऽस्तु ते।
नमस्ते क्षीणमोहाय क्षीणदोषाय ते नम: ।।24।।

नम: सुगतये तुभ्यं शोभनां गतिमीयुषे।
नमस्तेऽतीन्द्रिय–ज्ञान–सुखायाऽनिन्द्रियात्मने ।।25।।

काय – बन्धन – निर्मोक्षादकायाय नमोऽस्तु ते।
नमस्तुभ्यमयोगाय योगिनामधियोगिने ।।26।।

अवेदाय नमस्तुभ्यमकषायाय ते नम:।
नम: परम–योगीन्द्रवन्दिताङ्घ्रिद्वयाय ते ।।27।।

नम: परम–विज्ञान ! नम: परम–संयम !।
नम: परमदृग्दृष्टपरमार्थाय ते नम: ।।28।।

नमस्तुभ्यमलेश्याय शुक्ललेश्यांशक–स्पृशे।
नमो भव्येतराऽवस्था–व्यतीताय विमोक्षिणे ।।29।।

संज्ञ्यसंज्ञिद्वयावस्था– व्यतिरिक्ताऽमलात्मने।
नमस्ते वीतसंज्ञाय नम: क्षायिकदृष्टये ।।30।।

अनाहाराय तृप्ताय नम: परमभाजुषे।
व्यतीताऽशेषदोषाय भवाब्धे: पारमीयुषे ।।31।।

अजराय नमस्तुभ्यं नमस्तेवीतजन्मने।
अमृत्यवे नमस्तुभ्यमचलायाऽक्षरात्मने ।।32।।

अलमास्तां गुणस्तोत्रमनन्तास्तावकागुणा: ।
त्वां नामस्मृतिमात्रेण पर्युपासिसिषामहे ।।33 ।।

एवं स्तुत्वा जिनं देवं भक्त्या परमया सुधी: ।
पठेदष्टोत्तरं नाम्नां सहस्रं पापशान्तये ।।34 ।।

इति प्रस्तावना

प्रसिद्धाऽष्टसहस्रेद्धलक्षणं त्वां गिरांपतिम् ।
नाम्नामष्टसहस्रेण तोष्टुमोऽभीष्टसिद्धये ।।1 ।।

श्रीमान् स्वयम्भूर्वृषभ: शम्भव: शम्भुरात्मभू: ।
स्वयंप्रभ: प्रभुर्भोक्ता विश्वभूरपुनर्भव: ।।2।।

विश्वात्मा विश्वलोकेशो विश्वतश्चक्षुरक्षर: ।
विश्वविद् विश्वविद्येशो विश्वयोनिरनश्वर: ।।3 ।।

विश्वदृश्वा विभुर्धाता विश्वेशो विश्वलोचन: ।
विश्वव्यापी विधिर्वेधा: शाश्वतो विश्वतोमुख: ।।4।।

विश्वकर्मा जगज्ज्येष्ठो विश्वमूर्तिर्जिनेश्वर: ।
विश्वदृग् विश्वभूतेशो विश्वज्योतिरनीश्वर: ।।5 ।।

जिनो जिष्णुरमेयात्मा विश्वरीशो जगत्पति: ।
अनन्तजिदचिन्त्यात्मा भव्यबन्धुरऽबन्धन: ।।6 ।।

युगादिपुरुषो ब्रह्मा पञ्चब्रह्ममय: शिव: ।
पर: परतर: सूक्ष्म: परमेष्ठी सनातन: ।।7 ।।

स्वयंज्योतिरजोऽजन्मा ब्रह्मयोनिरऽयोनिज: ।
मोहारिविजयी जेता धर्मचक्री दयाध्वज: ।।8 ।।

प्रशान्तारिरनन्तात्मा योगी योगीश्वराऽर्चित: ।
ब्रह्मविद् बह्मतत्त्वज्ञो ब्रह्मोद्याविद्यतीश्वर: ।।9 ।।

शुद्धो बुद्ध: प्रबुद्धात्मा सिद्धार्थ: सिद्धशासन: ।
सिद्ध सिद्धान्तविद् ध्येय: सिद्धासाध्यो जगद्धित: ।।10 ।।

सहिष्णुरच्युतोऽनन्त: प्रभविष्णुर्भवोद्भव: ।
प्रभूष्णुरजरोऽजर्यो भ्राजिष्णुर्धीश्वरोऽव्यय: ।।11 ।।

विभावसुरसम्भूष्णु: स्वयम्भूष्णु: पुरातन: ।
परमात्मा परंज्योतिस्त्रिजगत्परमेश्वर: ।।12 ।।

इति श्रीमदादिशतम् ।।1 ।।

दिव्यभाषापतिर्दिव्य: पूतवाक्पूतशासन: ।
पूतात्मा परमज्योतिर्धर्माध्यक्षो दमीश्वर: ।।1 ।।

श्रीपतिर्भगवानर्हन्नरजा विरजा: शुचि: ।
तीर्थकृत् केवलीशान: पूजार्ह: स्नातकोऽमल: ।।2 ।।

अनन्तदीप्तिर्ज्ञानात्मा स्वयंबुद्ध: प्रजापति: ।
मुक्त: शक्तो निराबाधो निष्कलो भुवनेश्वर: ।।3 ।।

निरञ्जनो जगज्ज्योतिर्निरुक्तोर्निरामय: ।
अचलस्थितिरक्षोभ्य: कूटस्थ: स्थाणुरक्षय: ।।4 ।।

अग्रणीर्ग्रामणीर्नेता प्रणेता न्यायशास्त्रकृत् ।
शास्ता धर्मपतिर्धर्म्यो धर्मात्मा धर्मतीर्थकृत् ।।5 ।।

वृषभध्वजो वृषाधीशो वृषकेतुर्वृषायुध: ।
वृषो वृषपतिर्भर्त्ता वृषभांको वृषोद्भव: ।।6 ।।

हिरण्यनाभिर्भूतात्मा भूतभृद् भूतभावन: ।
प्रभवो विभवो भास्वान् भवो भावो भवान्तक: ।।7 ।।

हिरण्यगर्भ: श्रीगर्भ: प्रभूतविभवोद्भव: ।
स्वयंप्रभु: प्रभूतात्मा भूतनाथो जगत्प्रभु: ।।8 ।।

सर्वादि: सर्ववृक् सार्व: सर्वज्ञ: सर्वदर्शन:।
सर्वात्मा सर्वलोकेश: सर्ववित् सर्वलोकजित्।।9।।

सुगति: सुश्रुत: सुश्रुत् सुवाक् सूरिर्बहुश्रुत:।
विश्रुतो विश्वत:पादो विश्वशीर्ष: शुचिश्रवा:।।10।।

सहस्रशीर्ष: क्षेत्रज्ञ: सहस्राक्ष: सहस्रपात्।
भूतभव्यभवद्भर्ता विश्वविद्या महेश्वर:।।11।।

इति दिव्यादिशतम्।।2।।

स्थविष्ठ: स्थविरो ज्येष्ठ: पृष्ठ: प्रेष्ठो वरिष्ठधी:।
स्थेष्ठो गरिष्ठो बंहिष्ठ: श्रेष्ठोऽणिष्ठो गरिष्ठगी:।।1।।

विश्वभद् विश्वसृड् विश्वेड् विश्वभुग् विश्वनायक:।
विश्वाशीर्विश्वरूपात्मा विश्वजिद्विजितान्तक:।।2।।

विभवो विभयो वीरो विशोको विजरो जरन्।
विरागो विरतोऽसंगो विविक्तो वीत मत्सर:।।3।।

विनेय-जनता-बन्धु-र्विलीना-शेष कल्मष:।
वियोगो योगविद् विद्वान् विधाता सुविधि: सुधी:।।4।।

क्षान्तिभाक्पृथ्वीमूर्ति: शान्तिभाक्सलिलात्मक:।
वायुमूर्तिरसंगात्मा वह्निमूर्तिर धर्मधृक्।।5।।

सुयज्वा यजमानात्मा सुत्वा सूत्रामपूजित:।
ऋत्विग्यज्ञपतिर्यज्ञो यज्ञांगममृतं हवि:।।6।।

व्योममूर्तिरमूर्तात्मा निर्लेपो निर्मलोऽचल:।
सोममूर्ति: सुसौम्यात्मा सूर्यमूर्तिर्महाप्रभ:।।7।।

मन्त्रविन्मन्त्रकृन्मन्त्री मन्त्रमूर्तिरनन्तग:।
स्वतन्त्रस्तन्त्रकृत्स्वान्त: कृतान्तान्त: कृतान्तकृत्।।8।।

कृती कृतार्थ: सत्कृत्य: कृतकृत्य: कृतक्रतु:।
नित्यो मृत्युञ्जयो मृत्युरमृतात्माऽमृतोद्भव:।।9।।

ब्रह्मनिष्ठ: परंब्रह्म ब्रह्मात्मा ब्रह्मसम्भव:।
महाब्रह्मपतिर्ब्रह्मेड् महाब्रह्मपदेश्वर:।।10।।

सुप्रसन्न: प्रसन्नात्मा ज्ञानधर्मदमप्रभु:।
प्रशमात्मा प्रशान्तात्मा पुराणपुरुषोत्तम:।।11।।

इति स्थविष्ठादिशतम्।।3।।

महाऽशोकध्वजोऽशोक: क: स्रष्टा पद्मविष्टर:।
पद्मेश: पद्मसम्भूति: पद्मनाभिरनुत्तर:।।1।।

पद्मयोनिर्जगद्योनिरित्य: स्तुत्य: स्तुतीश्वर:।
स्तवनार्हो हृषीकेशो जितजेय: कृतक्रिय:।।2।।

गणाधिपो गणज्येष्ठो गण्य: पुण्यो गणाग्रणी:।
गुणाकरो गुणाम्भोधिर्गुणज्ञो गुणनायक:।।3।।

गुणादरी गुणोच्छेदी निर्गुण: पुण्यगीर्गुण:।
शरण्य: पुण्यवाक्पूतो वरेण्य: पुण्यनायक:।।4।।

अगण्य: पुण्यधीर्गुण्य: पुण्यकृत्पुण्यशासन:।
धर्मारामो गुणग्राम: पुण्यापुण्य-निरोधक:।।5।।

पापापेतो विपापात्मा विपाप्मा वीतकल्मष:।
निर्द्वन्द्वो निर्मद: शान्तो निर्मोहो निरुपद्रव:।।6।।

निर्निमेषो निराहारो निष्क्रियो निरुपप्लव:।
निष्कलंको निरस्तैना निर्धूतागा निरास्रव:।।7।।

विशालो विपुलज्योतिरतुलोऽचिन्त्यवैभव:।
सुसंवृत: सुगुप्तात्मा सुभृत् सुनयतत्त्ववित्।।8।।

एकविद्यो महाविद्यो मुनिः परिवृढः पतिः।
धीशो विद्यानिधिः साक्षी विनेता विहतान्तकः॥9॥

पिता पितामहः पाता पवित्रः पावनो गतिः।
त्राता भिषग्वरो वर्यो वरदः परमः पुमान्॥10॥

कविः पुराणपुरुषो वर्षीयान्वृषभः पुरुः।
प्रतिष्ठाप्रसवो हेतुर्भुवनैकपितामहः॥11॥

इति महाशोकध्वजादिशतम्॥4॥

श्रीवृक्षलक्षणः श्लक्ष्णो लक्षण्यः शुभलक्षणः।
निरक्षः पुण्डरीकाक्षः पुष्कलः पुष्करेक्षणः॥1॥

सिद्धिदः सिद्धसंकल्पः सिद्धात्मा सिद्धसाधनः।
बुद्धबोध्यो महाबोधिर्वर्धमानो महर्द्धिकः॥2॥

वेदांगो वेदविद् वेद्यो जातरूपो विदांवरः।
वेदवेद्यः स्वसंवेद्यो विवेदो वदतांवरः॥3॥

अनादिनिधनोऽव्यक्तो व्यक्तवाग्व्यक्तशासनः।
युगादिकृद् युगाधारो युगादिर्जगदादिजः॥4॥

अतीन्द्रोऽतीन्द्रियो धीन्द्रो महेन्द्रोऽतीन्द्रियार्थदृक्।
अनिन्द्रियोऽहमिन्द्राच्र्यो महेन्द्रमहितो महान्॥5॥

उद्भवः कारणं कर्ता पारगो भवतारकः।
अगाह्यो गहनं गुह्यं परार्घ्यः परमेश्वरः॥6॥

अनन्तर्द्धिरमेयर्द्धिरचिन्त्यर्द्धिः समग्रधीः।
प्राग्र्यः प्राग्रहरोऽभ्यग्रःप्रत्यग्रोऽग्र्योऽग्रिमोऽग्रजः॥7॥

महातपा महातेजा महोदर्को महोदयः।
महायशा महाधामा महासत्वो महाधृतिः॥8॥

महाधैर्यो महावीर्यो महासंपन्महाबलः।
महाशक्तिर्महाज्योतिर्महाभूतिर्महाद्युतिः॥9॥

महामतिर्महानीतिर्महाक्षान्तिर्महोदयः।
महाप्राज्ञो महाभागो महानन्दो महाकविः॥10॥

महामहा महाकीर्तिर्महाकान्तिर्महावपुः।
महादानो महाज्ञानो महायोगो महागुणः॥11॥

महामहपतिः प्राप्त महाकल्याण पञ्चकः।
महाप्रभुर्महाप्रातिहार्याधीशो महेश्वरः॥12॥

इति श्रीवृक्षादिशतम्॥5॥

महामुनिर्महामौनी महाध्यानी महादमः।
महाक्षमो महाशीलो महायज्ञो महामखः॥1॥

महाव्रतपतिर्मह्यो महाकान्ति धरोऽधिपः।
महामैत्री महामेयो महोपायो महोमयः॥2॥

महाकारुणिको मन्ता महामन्त्रो महायतिः।
महानादो महाघोषो महेज्यो महसांपतिः॥3॥

महाध्वरधरो धुर्य्यो महौदार्यो महिष्ठवाक्।
महात्मा महसांधाम महर्षिर्महितोदयः॥4॥

महाक्लेशांकुशः शूरो महाभूतपतिर्गुरुः।
महापराक्रमोऽनन्तो महाक्रोधरिपुर्वशी॥5॥

महाभवाब्धिसंतारीर्महामोहाऽद्रिसूदनः।
महागुणाकरः क्षान्तो महायोगीश्वरः शमी॥6॥

महाध्यान पतिर्ध्याता महाधर्मा महाव्रतः।
महाकर्मारिहाऽऽत्मज्ञो महादेवो महेशिता ।।7 ।।

सर्वक्लेशापहः साधुः सर्वदोषहरो हरः।
असंख्येयोऽप्रमेयात्मा शमात्मा प्रशमाकरः ।।8।।

सर्वयोगीश्वरोऽचिन्त्यः श्रुतात्मा विष्टरश्रवाः।
दान्तात्मा दमतीर्थेशो योगात्मा ज्ञानसर्वगः ।।9 ।।

प्रधानमात्मा प्रकृतिः परमः परमोदयः।
प्रक्षीणबन्धः कामारिः क्षेमकृत्क्षेमशासनः ।।10 ।।

प्रणवः प्रणयः प्राणः प्राणदः प्रणतेश्वरः।
प्रमाणं प्रणिधिर्दक्षो दक्षिणोऽध्वर्युरध्वरः ।।11 ।।

आनन्दो नन्दनो नन्दो वन्द्योऽनिन्द्योऽभिनन्दनः।
कामहा कामदः काम्यः कामधेनुररिञ्जयः ।।12 ।।

इति महामुन्यादिशतम् ।।6 ।।

असंस्कृतसुसंस्कारः प्राकृतो वैकृतान्तकृत्।
अन्तकृत्कान्तगुः कान्तश्चिन्तामणिरभीष्टदः ।।1।।

अजितो जितकामारिरमितोऽमितशासनः।
जितक्रोधो जितामित्रो जितक्लेशो जितान्तकः ।।2 ।।

जिनेन्द्रः परमानन्दो मुनीन्द्रो दुन्दुभिस्वनः।
महेन्द्रवन्द्यो योगीन्द्रो यतीन्द्रो नाभिनन्दनः ।।3 ।।

नाभेयो नाभिजोऽजातः सुव्रतो मनुरुत्तमः।
अभेद्योऽनत्ययोऽनाश्वानधिकोऽधिगुरुः सुधीः ।।4 ।।

सुमेधा विक्रमी स्वामी दुराधर्षो निरुत्सुकः।
विशिष्टः शिष्टभुक्शिष्टः प्रत्ययः कामनोऽनघः ।।5 ।।

क्षेमी क्षेमंकरोऽक्षय्यः क्षेमधर्मपतिः क्षमी।
अग्राह्यो ज्ञाननिग्राह्यो ध्यानगम्यो निरुत्तरः ।।6 ।।

सुकृती धातुरिज्यार्हः सुनयश्चतुराननः।
श्रीनिवासश्चतुर्वक्त्रश्चतुरास्यश्चतुर्मुखः ।।7 ।।

सत्यात्मा सत्यविज्ञानः सत्यवाक्सत्यशासनः।
सत्याशीः सत्यसन्धानः सत्यः सत्यपरायणः ।।8 ।।

स्थेयान्स्थवीयान्नेदीयान्दवीयान् दूरदर्शनः।
अणोरणीयाननणुर्गुरुराद्यो गरीयसाम् ।।9 ।।

सदायोगः सदाभोगः सदातृप्तः सदाशिवः।
सदागतिः सदासौख्यः सदाविद्यः सदोदयः ।।10 ।।

सुघोषः समुखः सौम्यः सुखदः सुहितः सुहृत्।
सुगुप्तो गुप्तिभृद् गोप्ता लोकाध्यक्षो दमीश्वरः ।।11 ।।

इति असंस्कृतादिशतम् ।।7 ।।

बृहन्बृहस्पतिर्वाग्मी वाचस्पतिरुदारधीः।
मनीषी धिषणो धीमाञ्छेमुषीशो गिरांपतिः ।।1।।

नैकरूपो नयोत्तुंगो नैकात्मा नैकधर्मकृत्।
अविज्ञेयोऽप्रतर्क्यात्मा कृतज्ञः कृतलक्षणः ।।2।।

ज्ञानगर्भो दयागर्भो रत्नगर्भः प्रभास्वरः।
पद्मगर्भो जगद्गर्भो हेमगर्भः सुदर्शनः ।।3 ।।

लक्ष्मीवांस्त्रिदशाध्यक्षो दृढीयानिन ईशिता।
मनोहारो मनोज्ञांगो धीरो गम्भीरशासन: ।।4।।

धर्मयूपो दयायागो धर्मनेमिर्मुनीश्वर:।
धर्मचक्रायुधो देव: कर्महा धर्मघोषण: ।।5।।

अमोघवागमोघाज्ञो निर्मलोऽमोघशासन:।
सुरूप: सुभगस्त्यागी समयज्ञ: समाहित: ।।6।।

सुस्थित: स्वास्थ्यभाक्स्वस्थो नीरजस्को निरुद्धव:।
अलेपो निष्कलंकात्मा वीतरागो गतस्पृह: ।।7।।

वश्येन्द्रियो विमुक्तात्मा नि:सपत्नो जितेन्द्रिय:।
प्रशान्तोऽनन्तधामर्षिर्मंगलं मलहानघ: ।।8।।

अनीदृगुपमाभूतो दिष्टिर्दैवमगोचर:।
अमूर्तो मूर्तिमानेको नैको नानैकतत्त्वदृक् ।।9।।

अध्यात्मगम्योऽगम्यात्मा योगविद्योगिवन्दित:।
सर्वत्रग: सदाभावी त्रिकालविषयार्थदृक् ।।10।।

शंकर: शंवदो दान्तो दमी क्षान्तिपरायण:।
अधिप: परमानन्द: परात्मज्ञ: परात्पर: ।।11।।

त्रिजगद्वल्लभोऽभ्यर्च्यस्त्रिजगन्मंगलोदय:।
त्रिजगत्पति पूज्याङ्घ्रिस्त्रि लोकाग्र शिखामणि: ।।12।।

इति बृहदादिशतम् ।।8।।

त्रिकालदर्शी लोकेशो लोकधाता दृढव्रत:।
सर्वलोकातिग: पूज्य: सर्वलोकैक सारथि: ।।1।।

पुराण: पुरुष: पूर्व: कृतपूर्वांगविस्तर:।
आदिदेव: पुराणाद्य: पुरुदेवोऽधिदेवता ।।2।।

युगमुख्यो युगज्येष्ठो योगादिस्थितिदेशक:।
कल्याणवर्ण: कल्याण: कल्य: कल्याणलक्षण: ।।3।।

कल्याणप्रकृतिर्दीप्तकल्याणात्मा विकल्मष:।
विकलंक: कलातीत: कलिलघ्न: कलाधर: ।।4।।

देवदेवो जगन्नाथो जगद्बन्धुर्जगद्विभु:।
जगद्धितैषी लोकज्ञ: सर्वगो जगदग्रज: ।।5।।

चराचरगुरुर्गोप्यो गूढात्मा गूढगोचर:।
सद्योजात: प्रकाशात्मा ज्वलज्ज्वलनसप्रभ: ।।6।।

आदित्यवर्णो भर्माभ: सुप्रभ: कनकप्रभ:।
सुवर्णवर्णो रुक्माभ: सूर्यकोटिसमप्रभ: ।।7।।

तपनीयनिभस्तुंगो बालार्काभोऽनलप्रभ:।
सन्ध्याभ्रबभ्रुर्हेमाभस्तप्तचामीकरच्छवि: ।। 8 ।।

निष्टप्तकनकच्छाय: कनत्काञ्चनसन्निभ:।
हिरण्यवर्ण: स्वर्णाभ: शातकुम्भनिभप्रभ: ।।9।।

द्युम्नाभो जातरूपाभस्तप्तजाम्बूनदद्युति:।
सुधौतकलधौतश्री: प्रदीप्तो हाटकद्युति: ।।10।।

शिष्टेष्ट: पुष्टिद: पुष्ट: स्पष्ट: स्पष्टाक्षर: क्षम:।
शत्रुघ्नोऽप्रतिघोऽमोघ: प्रशास्ता शासिता स्वभू: ।।11।।

शान्तिनिष्ठो मुनिज्येष्ठ: शिवताति: शिवप्रद:।
शान्तिद: शान्तिकृच्छान्ति: कान्तिमान्कामितप्रद: ।।12।।

श्रेयोनिधिरधिष्ठानमप्रतिष्ठः प्रतिष्ठितः ।
सुस्थिरः स्थावरः स्थाणुः प्रथीयान्प्रथितः पृथुः ।।13।।

इति त्रिकालदर्श्यादिशतम् ।।9।।

दिग्वासा वातरशनो निर्ग्रन्थेशो निरम्बरः ।
निष्किञ्चनो निराशंसो ज्ञानचक्षुरमोमुहः ।।1।।

तेजोराशिरनन्तौजो ज्ञानाब्धिः शीलसागरः ।
तेजोमयोऽमितज्योतिर्ज्योतिर्मूर्तिस्तमोपहः ।।2।।

जगच्चूडामणिर्दीप्तः शंवान्विघ्नविनायकः ।
कलिघ्नः कर्मशत्रुघ्नो लोकालोकप्रकाशकः ।।3।।

अनिद्रालुरतन्द्रालुर्जागरुकः प्रभामयः ।
लक्ष्मीपतिर्जगज्ज्योतिर्धर्मराजः प्रजाहितः ।।4।।

मुमुक्षुर्बन्धमोक्षज्ञो जिताक्षो जितमन्मथः ।
प्रशान्तरसशैलूषो भव्यपेटकनायकः ।।5।।

मूलकर्त्ताऽखिलज्योतिर्मलघ्नो मूलकारणः ।
आप्तो वागीश्वरः श्रेयाञ्छ्रायसोक्तिर्निरुक्तवाक् ।।6।।

प्रवक्ता वचसामीशो मारजिद्विश्वभाववित् ।
सुतनुस्तनुनिर्मुक्तः सुगतो हतदुर्नयः ।।7।।

श्रीशः श्रीश्रित पादाब्जो वीतभीरभयंकरः ।
उत्सन्नदोषो निर्विघ्नो निश्चलो लोकवत्सलः ।।8।।

लोकोत्तरो लोकपतिर्लोकचक्षुरपारधीः ।
धीरधीर्बुद्धसन्मार्गः शुद्धः सूनृतपूतवाक् ।।9।।

प्रज्ञापारमितः प्राज्ञो यतिर्नियमितेन्द्रियः ।
भदन्तो भद्रकृतद्भद्रः कल्पवृक्षो वरप्रदः ।।10।।

समुन्मूलितकर्मारिः कर्मकाष्ठाऽऽशुशुक्षणिः ।
कर्मण्यः कर्मठः प्रांशुर्हेयादेयविचक्षणः ।।11।।

अनन्तशक्तिरच्छेद्यस्त्रिपुरारिस्त्रिलोचनः ।
त्रिनेत्रस्त्र्यम्बकस्त्र्यक्षः केवलज्ञानवीक्षणः ।।12।।

समन्तभद्रः शान्तारिर्धर्माचार्यो दयानिधिः ।
सूक्ष्मदर्शी जितानंग कृपालुर्धर्मदेशकः ।।13।।

शुभंयुः सुखसाद्भूतः पुण्यराशिरनामयः ।
धर्मपालो जगत्पालो धर्मसाम्राज्यनायकः ।।14।।

इति दिग्वासाद्यष्टोत्तरशतम् ।।10।।

धाम्नांपते तवामूनि नामान्यागमकोविदैः ।
समुच्चितान्यनुध्यायन्पुमान्पूतस्मृतिर्भवेत् ।।1।।

गोचरोऽपि गिरामासां त्वमवाग्गोचरो मतः ।
स्तोता तथाप्यसन्दिग्धं त्वत्तोऽभिष्टफलं भजेत् ।।2।।

त्वमतोऽसि जगद्बन्धुस्त्वमतोऽसि जगद्भिषक् ।
त्वमतोऽसि जगद्धाता त्वमतोऽसि जगद्धितः ।।3।।

त्वमेकं जगतां ज्योतिस्त्वं द्विरूपोपयोगभाक् ।
त्वं त्रिरूपैकमुक्त्यंगः स्वोत्थानन्तचतुष्टयः ।।4।।

त्वं पञ्चब्रह्मतत्त्वात्मा पञ्चकल्याणनायकः ।
षड्भेदभावतत्त्वज्ञस्त्वं सप्तनयसंग्रहः ।।5।।

दिव्याष्टगुणमूर्तिस्त्वं नवकेवललब्धिक: ।
दशावतारनिर्धार्यो मां पाहि परमेश्वर ! ।।6।।

युष्मन्नामावलीदृब्धविलसत्स्तोत्रमालया ।
भवन्तं वरिवस्याम: प्रसीदानुगृहाण न: ।। 7 ।।

इदं स्तोत्रमनुस्मृत्य पूतो भवति भाक्तिक: ।
य: संपाठं पठत्येनं स स्यात्कल्याणभाजनम् ।।8।।

तत: सदेदं पुण्यार्थी पुमान्पठति पुण्यधी: ।
पौरुहूर्तीं श्रियं प्राप्तुं परमामभिलाषुक: ।।9।।

स्तुत्वेति मघवा देवं चराचरजगद्गुरुम् ।
ततस्तीर्थविहारस्य व्यधात्प्रस्तावनामिमाम् ।।10।।

स्तुति: पुण्यगुणोत्कीर्ति: स्तोता भव्य: प्रसन्नधी: ।
निष्ठितार्थो भवांस्तुस्य: फलं नैश्रेयसं सुखम् ।।11।।

य: स्तुत्यो जगतां त्रयस्य न पुन: स्तोता स्वयं कस्यचित्,
ध्येयो योगिजनस्य यश्च नितरां ध्याता स्वयं कस्यचित् ।
यो नेन्तृन् नयते नमस्कृतिमलं नन्तव्यपक्षेक्षण:,
स श्रीमान् जगतां त्रयस्य य गुरुर्देव: पुरु: पावन: ।।12।।

तं देवं त्रिदशाधिपार्चितपदं घातिक्षयानन्तरं,
प्रोत्थानन्तचतुष्टयं जिनमिमं भव्याब्जिनीनामिनम् ।
मानस्तम्भविलोकनानत्तजगन्मान्यं त्रिलोकीपतिं,
प्राप्ताचिन्त्यबहिर्विभूतिमनघं भक्तया प्रवन्दामहे ।।13।।

इति श्रीभगवज्जिनसहस्रनामस्तोत्रं समाप्तम् ।

कल्याण मंदिर स्तोत्र भाषा

दोहा

परम ब्रह्म के कोष हैं, पार्श्व नाथ भगवान।
विशद भाव से कर रहे, जिन पद का गुणगान।।

(चौपाई)

हे कल्याण धाम गुणवान, भव सर तारक पोत महान।
शिव मंदिर अघ हारक नाम, पार्श्वनाथ के चरण प्रणाम ।।1।।
सागर सम हे गौरववान !, सुर गुरु न कर सके बखान।
भंजन किया कमठ का मान, तव करता प्रभु मैं गुणगान ।।2।।
तव स्वरूप प्रभु अगम अपार, मन्द बुद्धि न पावे पार ।
प्रखर सूर्य ज्यों आभावान, उल्लू देख सके न आन ।।3।।
मोह की भी हो जाए हान, कह पावे तव को गुणगान।
जल सागर से भी बह जाय, प्रकट रत्न भी को गिन पाय ।।4।।
तुम गुण रत्नों के आगार, मैं मतिहीन बुद्धि अनुसार।
ज्यों बालक निज वाँह पसार, उद्यत करने सागर पार ।।5।।
तव गुण गाने को लाचार, योगी जन भी माने हार।
ज्यों पक्षी बोलें निज वान, त्यों करते हम तव गुण गान ।।6।।
तव महिमा जिन अगम अपार, नाम एक जग जन आधार।
पवन पद्म सरवर से आय, ग्रीष्म तपन को पूर्ण नशाय ।।7।।
मन से ध्याये जिन अर्हन्त, कर्म बन्ध हो शिथिल तुरन्त।
बोलें ज्यों चन्दन तरु मोर, नाग डरें भागे चहुँ ओर ।।8।।

(शम्भू छन्द)

हे जिनेन्द्र तव दर्शन करके, विपदाओं का होय विनाश।
अंधकार भग जाता जैसे, उदित सूर्य का होय प्रकाश।।

पशुओं को रात्रि में जैसे, आकर घेर रहे हों चोर।
गौ स्वामी को देख भागते, डर के कारण होते भोर।।9।।
तुम को हृदय बसाने वाला, हो जाता है भव से पार।
भवि जीवों के लिए आप हो, चिन्तन का अनुपम आधार।।
वायु पूरित मसक तैरकर, हो जाती है सागर पार।
मन मंदिर में तुम्हे बसाने, से जीवों का हो उद्धार।।10।।
हरिहर आदि महापुरुष भी, कामदेव से हारे हैं।
कामदेव के बाण आपने, क्षण में जीते सारे हैं।।
दावानल का पानी जैसे, कर देता है पूर्ण विनाश।
उसी नीर का क्रोधित होकर, बड़वानल कर देता नाश।।11।।
अन्य किसी से जिनकी तुलना, करना सम्भव नहीं अरे।
ऐसे प्रभु के गुण अनन्त का, कैसे कोइ गुणगान करे।।
प्रभु को हृदय बसाते हैं जो, भव सागर तिर जाते हैं।
है अचिन्त्य महिमा श्री जिन की, चिन्तन में न आते हैं।।12।।
सबसे पहले प्रभु आपने, क्रोध शत्रु का नाश किया।
क्रोध बिना फिर कहो आपने, कैसे कर्म विनाश किया ?।।
बर्फ लोक में ठण्डा होकर, वृक्षों को झुलसाता है।
क्षमाजयी प्रभु तुमरे द्वारा, बैरी जीता जाता है।।13।।
श्रेष्ठ महर्षि प्रभु आपकी, महिमा अनुपम गाते हैं।
हृदय कमल में ज्ञान नेत्र से, अन्वेषण कर ध्याते हैं।।
कमल कर्णिका श्रेष्ठ बीज का, है पवित्र उत्पत्ति स्थान।
हृदय कमल के मध्य भाग में, शुद्धातम का होता ध्यान।।14।।
धातु शिला अग्नि को पाकर, तजती किट्ट कालिमा रूप।
पत्थर की पर्याय छोड़कर, हो जाता है स्वर्ण स्वरूप।।

ऐसे ही संसारी प्राणी, करें आपका निश्चल ध्यान।
परमातम पद पाने वाले, बनें वीतरागी विज्ञान।।15।।
जिस शरीर के मध्य बिठाकर, भविजन तुमको ध्याते हैं।
उस शरीर को आप जिनेश्वर, फिर क्यों नाश कराते हैं।।
रागद्वेष से रहित जीव का, विग्रह ही स्वभाव रहा।
काय द्वेष को समित किया है, सत् पुरुषों ने पूर्ण अहा।।16।।
जब अभेद बुद्धि के द्वारा, योगी करें आपका ध्यान।
है प्रभाव यह प्रभु आपका, हो जाते हैं आप समान।।
यह अमृत है ऐसी श्रद्धा, करके जल पीते जो लोग।
विष विकार के मंत्रित जल से, होता है क्या नहीं वियोग।।17।।
अज्ञानी प्राणी कहते हैं, तुमको ब्रह्मा विष्णु महेश।
अन्यमतावलम्बी पूजा शुभ, करें आपकी श्रेष्ठ जिनेश।।
निश्चित मानो प्यारे भाई, जिनको हुआ पीलिया रोग।
श्वेत शंख भी पीला दिखता, उस बीमारी के संयोग।।18।।
धर्म देशना के अवसर पर, जो आ जाएँ तुमरे पास।
मानव की क्या बात शोक तरु, हो अशोक का पूर्ण विनाश।।
सूर्योदय होने पर केवल, मानव ही ना पाते बोध।
वनस्पति भी निद्रा तजकर, पा लेती है पूर्ण विबोध।।19।।
सघन पुष्पवृष्टि की जाती, देवों द्वारा अपरम्पार।
डण्ठल नीचे ऊर्ध्व पाँखुरी, होती पुष्पों की शुभकार।।
मानो डण्ठल सूचित करते, आते हैं जो तुमरे पास।
कर्मों के बन्धन भव्यों के, हो जाते हैं पूर्ण विनाश।।20।।
प्रभु गम्भीर हृदय के सागर, से मुखरित हैं दिव्य वचन।
सच है सुधा समान मानते, तीन लोक में सारे जन।।

अमृतवाणी पाके प्राणी, अक्षय सुख पा जाते हैं।
आकुलता को तजने वाले, अजर अमर पद पाते हैं।।21।।
चँवर ढुराते देव तो पहले, नीचे फिर ऊपर जाते।
मानो जग जीवों को झुककर, विनय शीलता सिखलाते।।
विशद भाव से करते हैं जो, श्री जिनेन्द्र के चरण नमन।
कर्म नाशकर के वह प्राणी, जाते हैं फिर मोक्ष सदन।।22।।
सिंहासन स्वर्णिम कंचनमय, पर स्थित हैं श्री जिनेश।
दिव्य ध्वनि प्रगटाते अनुपम, श्यामल तन में प्रभु विशेष।।
होता स्वर्ण सुमेरु पर ज्यों, काले मेघों का गर्जन।
हर्षित होकर भव्य मोर ज्यों, करें आपका अवलोकन।।23।।
भामण्डल दैदीप्यमान शुभ, सुर तरू की छवि लुप्त करे।
स्वयं अचेतन होकर भी जो, प्रभा दिखाए श्रेष्ठ अरे।।
भव्य जीव हे नाथ आपकी, स्वयं निकटता में आवें।
वीतराग हो भव्य जीव वह, मोक्ष निकेतन को पावें।।24।।

(रोला छंद)

दुन्दुभि नाद गगन में होवे, देवों द्वारा।
मानो चिल्लाकर कहता लो, चरण सहारा।।
मोक्षपुरी जाना चाहों तो, प्रभु को ध्याओ।
तज प्रमाद हे प्राणी तुम भी, शिव पद पाओ।।25।।
तीन क्षत्र त्रिभुवन के नाथ, बताने वाले।
तारा गण की छवि युक्त हैं, श्रेष्ठ निराले।।
त्रिविध रूप धारण कर जैसे, चाँद दिखावे।
होकर भाव विभोर प्रभु, सेवा को आवे।।26।।
सोना चाँदी माणिक से त्रय, कोट बनाए।
तीन लोक के पिण्ड सम्पदा, युक्त कहाए।।

कान्ति कीर्ति व तेज पुञ्ज का, वर्तुल गाया।
पार्श्व प्रभु का समवशरण जगती पर आया।।27।।
इन्द्रों के मुकुटों की दिव्य, सुमन मालाएँ।
नमस्कार के समय चरण में, जो गिर जाएँ।।
मानो वह तव चरणों में शुभ, जगह बनाएँ।
पाद पद्म को छोड़ और अब, कहीं न जाएँ।।28।।
हुआ अधोमुख पक्व घड़ा, सागर में जावे।
गहन जलाशय से मानव को, पार करावे।।
भव सिंधु से हुए विमुख, हे संत निराले।
भव्यों को भव तारक अतिशय, महिमा वाले।।29।।
तीन लोक के नाथ आप, निर्धन कहलाए।
तीन काल के ज्ञाता हो, अज्ञानी गाए।।
तुम अक्षर स्वभावी कोई, लिख न पाए।
सर्व चराचर के ज्ञाता प्रभु, आप कहाए।।30।।
कुपित कमठ ने नभ मण्डल में, धूल गिराई।
तव तन की छाया को भी वह, छू ना पाई।।
तिरस्कार की दृष्टि से जो, कार्य कराया।
विफल मनोरथ हुआ कर्म का, बन्धन पाया।।31।।
गरजे मेघ चमकती बिजली, खूब दिखाई।
जल की वृष्टी महा भयंकर, वहाँ कराई।।
फिर भी पार्श्व प्रभु का वह, कुछ न कर पाया।
अपने हाथों निज पद मानो, खड्ग चलाया।।32।।
महा भयानक नर मुण्डन की, धारी माला।
और वदन से निकल रही थी, अग्नि ज्वाला।।
भंग तपस्या करने भूत, प्रेत दौड़ाए।
प्रभु का कुछ न बिगड़ा कर्म का, बन्ध उपाए।।33।।

पुलकित होकर चरण शरण, प्रभु का पा जाते।
तजकर माया जाल तीन, कालों में आते।।
विधिवत करें अर्चना हे, जगति पति तेरी।
होगा जीवन धन्य मिटे, भव-भव की फेरी।।34।।

(शम्भू छंद)

हे मुनीन्द्र हम कई जन्मों से, दु:ख उठाते आए हैं।
कानों से हम नाम आपका, फिर भी न सुन पाए हैं।।
मन्त्रोचार पूर्वक स्वामी, सुने आपका जो भी नाम।
विपदा रूपी नागिन से वह, पा लेते क्षण में विश्राम।।35।।
चरण कमल में नाथ आपके, कई जन्मों से ना आए।
मन वांछित फल देने वाले, पूजा तव न कर पाए।।
इसीलिए इस जग के प्राणी, करते हिय भेदी अपमान।
शरण आपकी पाई हमनें, पाएँगे हम फिर सम्मान।।36।।
मोह महातम से अच्छादित, खोल सके न ज्ञान नयन।
निश्चय पूर्वक एक बार भी, किए आपके न दर्शन।।
दु:ख मर्म भेदी हे स्वामी, इसीलिए बहु सता रहे।
किये दर्श ना पूर्व जन्म में, अत: कर्म के घात सहे।।37।।
प्रभु आपके चरणों की हम, दर्शन पूजन को आए।
यह निश्चय है प्रभु आपको, हृदय ना धारण कर पाए।।
भाव शून्य भक्ति करने से, हमने भारी दु:ख सहे।
क्रिया भाव से रहित लोक में, फलदायी न कभी रहे।।38।।
नाथ दुखी जन के वत्सल हे !, शरणागत को एक शरण।
करुणाकर हे इन्द्रिय जेता, जोगीश्वर तव दोय चरण।।
हे महेश ! हम भक्ति पूर्वक, झुका रहे हैं पद में शीश।
दूर करो मेरे दु:ख सारे, यही प्रार्थना दो आशीष।।39।।

अशरण शरण शरण प्रतिपालक, जगतपति जगति के ईश।
गुण अनन्त के धारी भगवन्, कर्म विजेता हे जगदीश।।
तव पद पंकज में रहकर भी, ध्यान से हम प्रभु रहित रहे।
इसीलिए हे प्रभुवर हमने, कर्मों के घनघात सहे।।40।।
अखिल विश्व के ज्ञाता दृष्टा, वन्दनीय इन्द्रों से नाथ।
भव तारक हे प्रभु आप हो, करुणाकर त्रैलोकीनाथ।।
करुणा सागर हे जिनेन्द्र प्रभु !, दुखिया का उद्धार करो।
महा भयानक दुख सागर से, मुझको भी प्रभु पार करो।।41।।
हे शरणागत के प्रतिपालक, शरण आपकी हम आए।
किञ्चित पुण्य कमाया हमने, भक्ति चरण की जो पाए।।
यही चाहते हम भव-भव में, स्वामी मेरे आप रहो।
हम बन सकें आपके जैसे, बनों मेरे आदर्श अहो।।42।।
हे जिनेन्द्र सावधान बुद्धि से, भव्य पुरुष जो भी आते।
रोमांचित हो मुख अम्बुज के, लक्ष्य बना दर्शन पाते।।
विधि पूर्वक संस्तव रचना, करते हैं जो भव्य महान्।
स्वर्गों के सुख पाने वाले, अतिशीघ्र पाते निर्वाण।।43।।
जन-जन के शुभ नयन कमल को, विकशाने वाले चन्द्रेश।
स्वर्ग सम्पदा पाने हेतु, करते सहसा स्वर्ग प्रवेश।।
किञ्चित काल भोग करके नर, मानव गति में आते हैं।
कर्म श्रृंखला शीघ्र नाशकर, मोक्ष निकेतन पाते हैं।।44।।

(त्रिभंगी छन्द)

जय-जय जग नायक, सौख्य प्रदायक, मुक्तिदायक, हितकारी।
कर्मों के क्षायक, ज्ञान प्रदायक, पार्श्वनाथ मंगलकारी।।

***

लघु स्वयंभू स्तोत्र

येन स्वयंबोधमयेन लोका, आश्वासिता: केचन वित्तकार्ये।
प्रबोधिता: केचन मोक्ष–मार्गे, तमादिनाथं प्रणमामि नित्यम्।।1।।

इन्द्रादिभि: क्षीरसमुद्र–तोयै:, संस्नापितो मेरुगिरौ जिनेन्द्र:।
य: कामजेता जन–सौख्यकारी, तं शुद्ध–भावा–दजितं नमामि।।2।।

ध्यान–प्रबन्ध: प्रभवेन येन, निहत्य कर्म–प्रकृति: समस्ता:।
मुक्ति–स्वरूपां पदवीं प्रपेदे, तं संभवं नौमि महानुरागात्।।3।।

स्वप्ने यदीया जननी क्षपायां, गजादि वह्न्यन्तमिदं ददर्श।
यत्तात इत्याह गुरु: परोऽयं, नौमि प्रमोदा–दभिनंदनं तम्।।4।।

कुवादिवादं जयता महान्तं, नय प्रमाणै–र्वचनै–र्जगत्सु।
जैनं मतं विस्तरितं च येन, तं देवदेवं सुमतिं नमामि।।5।।

यस्यावतारे सति पितृधिष्ण्ये, ववर्ष रत्नानि हरे–र्निदेशात्।
धनाधिप: षण्णव–मास पूर्वं, पद्मप्रभं तं प्रणमामि साधुम्।।6।।

नरेन्द्र – सर्पेश्वर नाक – नाथैर् – वाणी भवन्ती जगृहे स्वचित्ते।
यस्यात्म–बोध: प्रथित: सभाया–महं सुपार्श्वं ननु तं नमामि।।7।।

सत्प्रातिहार्यातिशय – प्रपन्नो, गुण – प्रवीणो हत – दोष संग:।
यो लोक–मोहान्ध–तम: प्रदीपश्, चन्द्रप्रभं तं प्रणमामि भावात्।।8।।

गुप्तित्रयं – पंच महाव्रतानि – पंचोपदिष्टा: – समितिश्च येन।
बभाण यो द्वादशधा तपांसि, तं पुष्पदंतं प्रणमामि देवम्।।9।।

ब्रह्मा–व्रतांतो जिन नायकेनोत्–तम क्षमादि–र्दशधापि धर्म:।
येन प्रयुक्तो व्रत–बंध–बुद्ध्या, तं शीतलं तीर्थकरं नमामि।।10।।

गणे जनानंदकरे धरान्ते, विध्वस्त–कोपे प्रशमैक–चित्ते।
यो द्वादशांगं श्रुतमादि–देश, श्रेयांसमानौमि जिनं तमीशम्।।11।।

मुक्त्यंगनाया रचिता विशाला, रत्नत्रयी–शेखरता च येन।
यत्कंठ–मासाद्य बभूव श्रेष्ठा, तं वासुपूज्यं प्रणमामि वेगात्।।12।।

ज्ञानी–विवेकी–परम–स्वरूपी–ध्यानी–व्रती–प्राणि–हितोपदेशी।
मिथ्यात्व–घाती शिवसौख्य भोजी, बभूव यस्तं विमलं नमामि।।13।।

आभ्यंतरं – बाह्य – मनेकधा – य:, परिग्रहं सर्व – मपाचकार।
यो मार्ग–मुद्दिश्य हितं जनानां, वन्दे जिनं तं प्रणमाम्यनंतम्।।14।।

सार्द्धं पदार्था नव–सप्त तत्त्वै:–पंचास्तिकायाश्च न कालकाया:।
षड्द्रव्य निर्णीति–रलोक युक्तिर्, येनोदिता तं प्रणमामि धर्मम्।।15।।

यश्चक्रवर्ती भुवि पञ्चमोऽभूच्–छ्री नंदनो द्वादशको गुणानाम्।
निधि प्रभु: षोडशको जिनेन्द्रस्, तं शांतिनाथं प्रणमामि भेदात्।।16।।

प्रशंसितो यो न बिभर्ति हर्षं, विराधितो यो न करोति रोषं।
शीलं–व्रताद् ब्रह्मपदं गतो यस्, तं कुंथुनाथं प्रणमामि हर्षात्।।17।।

न संस्तुतो न प्रणत: सभायां, य: सेवितोऽन्तर्गण–पूरणाय।
पदच्युतै: केवलिभि–र्जिनस्य, देवाधिदेवं प्रणमाम्यरं तम्।।18।।

रत्नत्रयं पूर्व–भवान्तरे यो, व्रतं पवित्रं कृतवा–नशेषम्।
कायेन–वाचा–मनसा विशुद्ध्या, तं मल्लिनाथं प्रणमामि भक्त्या।।19।।

ब्रुवन्नम: सिद्ध–पदाय वाक्य–मित्यग्रहीद्य: स्वयमेव लोचम्।
लौकान्तिकेभ्य: स्तवनं निशम्य, वन्दे जिनेशं मुनिसुव्रतं तम्।।20।।

विद्यावते तीर्थकराय तस्मा–याहार दानं ददतो विशेषात्।
गृहे नृपस्या–जनि रत्नवृष्टि:, स्तौमि प्रमाणान्–नयतो नमिं तम्।।21।।

राजीमतीं यः प्रविहाय मोक्षे, स्थितिं चकारा–पुनरागमाय।
सर्वेषु जीवेषु दया दधानस्, तं नेमिनाथं प्रणमामि भक्त्या।।22।

सर्पाधिराजः कमठारितो–यैर्, ध्यान स्थितस्यैव फणावितानैः।
यस्योपसर्गं निरवर्त – यत्तं, नमामि पार्श्वं महदादरेण।।23।।

भवार्णवे जन्तु – समूहमेन – माकर्षयामास – हि – धर्म – पोतात्।
मज्जन्त–मुद्वीक्ष्य य येन सापि–श्रीवर्द्धमानं प्रणमाम्यहं तं।।24।।

यो धर्मं दशधा करोति पुरुषः स्त्री वा कृतोपस्कृतं,
सर्वज्ञ – ध्वनि – संभवं त्रिकरण – व्यापार – शुद्ध्यानिशम्।
भव्यानां जयमालया विमलया पुष्पांजलिं दापयन्,
नित्यं स श्रियमातनोति सकलं स्वर्गापवर्ग–स्थितम्।।25।।

(इति स्वयंभू स्तोत्र)

स्वयंभूस्तोत्र (भाषा)

राजविषे जुगलनि सुख कियो, राज त्याग भवि शिवपद लियो।
स्वयम्बोध स्वयम्भू भगवान, बन्दौं आदिनाथ गुणखान।।1।।

इन्द्र क्षीर–सागर–जल लाय, मेरु न्हवाये गाय बजाय।
मदन–विनाशक सुख करतार, बन्दौं अजित–अजित–पदकार।।2।।

शुकल ध्यानकरि करम विनाशि, घाति अघाति सकल दुःखराशि।
लह्यो मुकतिपद सुख अविकार बन्दौं सम्भव भव–दुःख टार।।3।।

माता पश्चिम रयन मँझार, सुपने सोलह देखे सार।
भूप पूँछि फल सुनि हरषाय, बंदौं अभिनंदन मन लाय।।4।।

सब कुवादवादी सरदार, जीते स्याद्वाद धुनि धार।
जैन–धरम परकाशक स्वामि, सुमतिदेव–पद करहुँ प्रणाम।।5।।

गर्भ अगाऊँ धनपति आय, करी नगर–शोभा अधिकाय।
बरसे रतन पंचदश मास, नमों पदमप्रभु सुख की रास।।6।।

इन्द्र फणीन्द्र नरेन्द्र त्रिकाल, बानी सुनि सुनि होहिं खुशाल।
द्वादश सभा ज्ञानदातार, नमों सुपारसनाथ निहार।।7।।

सुगुन छियालीस हैं तुम माहिं, दोष अठारह कोऊ नाहिं।
मोह–महातमनाशक दीप, नमों चंद्रप्रभु राख समीप।।8।।

द्वादशविध तप करम विनाश, तेरह विध चारित्र प्रकाश।
निज अनिच्छ भवि इच्छक दान, बंदौं पुष्पदंत मन आन।।9।।

भवि सुखदाय सुरगतैं आय, दशविधि धरम कह्यो जिनराय।
आप समान सबनि सुख देह, बंदौं शीतल धर्म सनेह।।10।।

समता–सुधा कोप–विष नाश, द्वादशांग वानी परकाश।
चारसंघ–आनंद–दातार, नमो श्रेयांस जिनेश्वर सार।।11।।

रत्नत्रय शिवमुकुट विशाल, सोभै कंठ सुगुन मनिमाल।
मुक्तिनार भरता भगवान, वासुपूज्य वंदौं धर ध्यान।।12।।

परम समाधि–स्वरूप जिनेश, ज्ञानी ध्यानी हित–उपदेश।
कर्मनाशि शिवसुख विलसंत, बंदौं विमलनाथ भगवंत।।13।।

अन्तर–बाहिर परिग्रह डारि, परम दिगंबर व्रत को धारि।
सर्वजीवहित–राह दिखाय, नमों अनंत वचन–मन लाय।।14।।

सात तत्त्व पंचास्तिकाय, नव पदार्थ छह द्रव्य बताय।
लोक अलोक सकल परकास, बंदौं धर्मनाथ अविनाश।।15।।

पंचम चक्रवर्ति निधि भोग, कामदेव द्वादशम मनोग।
शांतिकरण सोलम जिनराय, शांतिनाथ बंदौं हरषाय।।16।।

बहु थुति करे हरष नहिं होय, निंदे दोष गहैं नहिं कोय।
शीलवान परब्रह्मस्वरूप, बंदौं कुंथुनाथ शिवभूप।।17।।

द्वादशगण पूजैं सुखदाय, थुति वंदना करैं अधिकाय।
जाकी निजथुति कबहुँ न होय, वंदौं अर-जिनवर-पद्दोय।।18।।

परभव रत्नत्रय-अनुराग, इह भव ब्याह-समय वैराग।
बाल-ब्रह्म-पूरन-व्रत धार, बंदौं मल्लिनाथ जिनसार।।19।।

बिन उपदेश स्वयं वैराग, थुति लोकांत करै पगलाग।
नम: सिद्ध कहि सब व्रत लेहिं, बंदौं मुनिसुव्रत व्रत देहिं।।20।।

श्रावक विद्यावंत निहार, भगति भावसौं दियो अहार।
बरसी रतनराशि तत्काल, बंदौं नमिप्रभु दीनदयाल।।21।।

सब जीवन की बंदी छोर, राग-द्वेष द्वै बंधन तोर।
राजुल तज शिवतियसों मिले नेमिनाथ बंदौं सुख निले।।22।।

दैत्य कियो उपसर्ग अपार, ध्यान देखि आयो फनधार।
गयो कमठ शठ मुखकर श्याम, नमो मेरुसम पारस स्वाम।।23।।

भवसागर तैं जीव अपार, धरम पोत में धरे निहार।
डूबत काढ़े दया विचार, वर्द्धमान बंदौं बहुबार।।24।।

दोहा

चौबीसों पद कमल जुग, बंदौं मन-वच-काय।
'द्यानत' पढ़ै सुनै सदा, सो प्रभु क्यों न सहाय।।

***

चैत्यालयाष्टक

श्री जिन भवन के दर्शन करके, भव तापों का होता नाश।
धन वैभव का भव्य जीव के, स्वयं आप ही होता वास।।
क्षीर नीर सम धवल सुउज्ज्वल, कोटि-कोटि शोभित होते।
ध्वजा प्रकर शोभित होता है, भव्यों की जड़ता खोते।।1।।

श्री जिन भवन के दर्शन करके, भुवन एक लक्ष्मी को प्राप्त।
धर्म सरोवर वर्जित होता, महत् मुनि से सेवित आप्त।।
विद्याधर अरु अमर वंधुजन, का है मुक्ति रूप अनुराग।
दिव्य पुष्प अञ्जलि समूह से, शोभित है सारा भू-भाग।।2।।

श्री जिन भवन के दर्शन करके, भवनादिक देवों में वास।
जग विख्यात स्वर्ग की गणिका, गीयमान गण का आवास।।
नाना मणी समूह से भासुर, विकसित किरणों का विस्तार।
महत् सुनिर्मल शुभम् सुशोभित, गवाक्ष शोभा का आधार।।3।।

श्री जिन भवनके दर्शन करके, सिद्ध यक्ष सुर अरु गंधर्व।
किन्नर कर में वेणु वीणा, लेकर बाद्य बजाते सर्व।।
नृत्य गान कर करें नमन नित, पूरब पश्चिम चारों ओर।
गगन और पृथ्वी में झूमें, भक्तिमय हो भाव विभोर।।4।।

श्री जिन भवन के दर्शन करके, विलसत और विलोलित माल।
देखके विभ्रम हो जाता है, ललितालक है शुभम् कुलाल।।
मधुर बाद्य लय नृत्य विलासी, लीला चलद वलय अभिराम।
नुपूर से हो रम्यनाद अति, जिन चैत्यालय पूजा धाम।।5।।

श्री जिन भवन के दर्शन करके, उज्ज्वल हेममणिमय भव्य।
हेम रत्नमय कलश सुचामर, दर्पण आदि सुमंगल द्रव्य।।
एक सौ आठ द्रव्य शुभ राजित, मणि मुक्तामय अपरंपार।

इत्यादिक शोभा से मण्डित, चैत्यालय है मंगलकार।।6।।

श्री जिन भवन के दर्शन करके, श्रेष्ठ देव दारू कर्पूर।
चंदन तरु से प्राप्त सुगंधित, धूप मनोहर है भरपूर।
मेघ सुविघटित होता है ज्यों, गगन मध्य में शोभामान।
विमल शाल उत्तुंग सुकेतन, चंचल चलद है आभावान।।7।।

श्रीजिन भवन के दर्शन करके, धवल पत्र शोभित पावन।
छाया में रहते निमग्न तनु, यक्षकुमार सुमन भावन।।
दुग्ध फेन सम श्वेत सुचामर, पंक्तिबद्ध शोभित सुखधाम।
कांति युक्त भामण्डल अनुपम, प्रतिमा शोभित है अभिराम।।8।।

श्री जिन भवन के दर्शन करके, विविध प्रकार पुष्प उपहार।
भूमि पर शोभित होते हैं, अति रमणीय सुरत्न अपार।।
नित्य बंसत तिलक सम आश्रय, हो प्राप्त शुभ अपरंपार।।
सफल सुमंगल चन्द्र मुनीन्द्रों से, वंदित है बारंबार।।9।।

मणि काञ्चनमय तुंग सुचित्रित, सिंहासन आदि जिनबिम्ब।
अति शोभा से युक्त जिनालय, कीर्तिमान होता प्रतिबिंब।।
'विशद' जिनालय देखा मैंने, आज महामह अपरंपार।
सफल सुमंगल चन्द्र मुनीन्द्रों, से वंदित है बारम्बार।।10।।

***

एकीभाव स्तोत्र

एकमेक होकर नितान्त जो, मानो स्वयं हुआ अनिवार्य।
ऐसा कर्म-प्रबन्ध भवों तक, दुख देने का करता कार्य।।
उससे पिण्ड छुड़ा सकती जब, हे जिन-सूर्य आपकी भक्ति।
तो फिर कौन अन्य भवतापी, जिन पर वह अजमावे शक्ति।।1।।

''पाप-पुंज रूपी अँधियारे, के विनाश के हेतु मशाल।
आप कहे जाते हैं जिनवर'', तत्त्वज्ञों द्वारा चिरकाल।।
मेरे मन-मन्दिर में जब तक, है ज्योतिर्मय तेरा वास।
तब तक कैसे पाप-तिमिर को, उसमें मिल सकता अवकाश।।2।।

टप-टप गिरे हर्ष के आँसू, उनसे अपना मुख धोया।
दृढ़ मन होकर गद्गद् स्वर से, मन्त्र कीर्तन संजोया।।
काया की बाँबी में बसते, थे नाना रोगों के नाग।
वे अपनी चिर जगह छोड़कर, गये शीघ्र अब बाहर भाग।।3।।

भव्यों के सौभाग्य उदय से, आप स्वर्ग से करें प्रयाण।
उसके पहिले यहाँ सुरों ने, स्वर्णिम किया गर्भ-कल्याण।।
मेरे मनहर मन-मन्दिर में, ध्यान-द्वार से यदि आवें।
तो क्या अचरज देव ! कोढ़ि की, कञ्चन काया कर जावें।।4।।

लोकहितैषी एकमात्र हैं, बन्धु आप ही निष्कारण।
सर्व विषयगत शक्ति आपमें, ही है जिनवर ! निरावरण।।
आओ पधारो ! बिछी हुई है, भक्ति खचित यह मनकी सेज।
पर कैसे तब धीर धरेंगे, जब निकलेंगी आहें तेज।।5।।

भवारण्य में बहुत समय तक, रहा स्वयं को भटकाता।
जैसे तैसे मिल पाई तव, सुधा-बावड़ी नय-गाथा।।
वह इतनी शीतल है जितना, बर्फ चन्द्र या चन्दन अब।
डुबकी उसमें लगा चुका हूँ, नहीं तापका बन्धन अब।।6।।

कदम-कदम पर बिछते जाते, कमल पांवडे देव पुनीत।
सुरभित स्वर्णिम हो जाते जब, श्रीविहार से लोकपुनीत।।
तब मेरा मन छू ले यदि, सर्वाङ्ग रूप से तुमको देव !
अहा ! कौन सा कल्याणक फिर, प्राप्त नहीं होगा स्वयमेव।।7।।

देखा जाता है कि तुम्हें जो, भक्त निहारा करते हैं।
कर्मभूमि से निकल काम को, भू पर मारा करते हैं।।
भक्तिरूप अँजुलि में भरकर, तब वचनामृत जो पीते।
भूलुंठित कर क्रूर-रोग को, निष्कंटक सुख से जीते।।8।।

पत्थर का खम्भा कोई तो ? मानथम्भपाषाण हृदय।
मूर्तिमान हैं रत्न यही बस, वैसे ढेरों रत्नत्रय।।
ज्यों ही सम्यक् दृष्टि पड़ी उस, पर त्यों ही अभिमान गला।
निकट भव्यता की ऐसी, पावे तो कोई शक्ति भला?।।9।।

तेरी मूरत कायागिरि को, छूकर बहती हुई पवन।
धूल उड़ाती रोगों की जन, मानस में कर संचारण।।
फिर जिस हृदय-कमल के तुम हो, ध्यानामंत्रित अभ्यागत।
उसको किस लौकिक भलाई की, प्राप्त नहीं प्रभुवर ! ताकत।।10।।

तुम्हीं जानते जैसे जो जो, जनम जनम के कष्ट सहे।
उनके संस्मरण भी मुझको, मानो भाले चुभा रहे।।
सर्वेश्वर करुणाकर ! हो प्रभु, अत: भक्तिवश तव शरणम्।
मुझे सभी कुछ प्रामाणिक है, जैसा जो कुछ करणीयम्।।11।।

णमोकार के मूलमन्त्र को, कुत्सित कुत्ता मरणासन्न।
जीवन्धर द्वारा पाते ही, हुआ देव जब सुख-सम्पन्न।।
तो मणिमालाओं द्वारा पद, नमस्कार मन्त्रों का जाप्य।
करने वाले पुरुषों को सच, इन्द्रों का भी वैभव प्राप्य।।12।।

मोहरूप-मुद्रा के कारण, मुक्तिद्वार के बन्द कपाट।
कैसे खुल सकते मुमुक्षु के, द्वारा कुञ्जीहित विराट।।
सम्यग्दर्शन भक्ति-रूपिणी, कुञ्जी सुखदा पास न हो।
ज्ञान भले ही विमल रहो, आचरण भले ही शुद्ध रहो।।13।।

ढका हुआ चहुँ ओर पाप के, घोर अंधेरे में शिव-पन्थ।
दु:खरूपी गहरे गड्ढों से, ऊबड़-खाबड़ है अत्यन्त।।
आगे आगे तत्त्व-दर्शिका, दीपक-मणि यदि जिनवाणी।
होती नहीं मार्ग पर कैसे, चल सकते सुख से प्राणी।।14।।

कर्मभूमि के तहखानों में, गड़ा-पड़ा अक्षुण्ण खजाना।
हर्षित आत्मज्योतिनिधि-दृष्टा, वाममार्गियों अनजाना।।
भक्त भेदिया करें हस्तगत, निश्चय ही उसको तत्काल।
खोदें कर्मभूमि की पर्तें, कठिन हाथ ले विनय-कुदाल।।15।।

अनेकान्तरूपी हिमगिरि से, देव ! भक्ति-गंगा निकली।
चूम-चूम श्रीचरण-कमल को, शिवसागर में पुन: मिली।।
मेरे मन का मैल धुल गया, उसमें अवगाहन करके।
क्या संदेह ? रहा आऊँगा, निर्मल मन-पावन करके।।16।।

''शाश्वत सुखपदप्रकटरूपप्रभु''! ऐसा करते ध्यान ध्यान।
निर्विकल्प मति छा जाती है, ''मैं भी हूँ सोऽहम् भगवान''।।
झूठ बात-''भगवान कहाँ हूँ?'' किन्तु चैन इससे मिलती।
तेरी अनुकम्पा से छद-मस्थों, की भी वांछा फलती।।17।।

जिनवाणी रूपी समुद्र कर, रह व्याप्त भू-मण्डल को।
सप्तभङ्ग की तरल तरंगे, हटा रहीं मिथ्या-मल को।।
मन-सुमेरु रूपी मथनी से, किया गया सागर-मन्थन।
तृप्त करेगा विज्ञजनों को, देवोपम अमृत-सेवन।।18।।

जो स्वभावत: ही कुरूप है, उसे चाहिए गहने वस्त्र।
जिसे शत्रु से खटका रहता, वही ग्रहण करता है अस्त्र।।
तुम सर्वाङ्ग रूप से सुन्दर, तथा अजात-शत्रु जिनदेव।
अस्त्र-शस्त्र या वस्त्राभूषण, सज्जा व्यर्थ तुम्हें स्वयमेव।।19।।

''इन्द्र आपकी सेवा करता, भली-भाँति'' क्या हुई बड़ाई?
किन्तु इन्द्र ने ऐसा करके, निजी प्रशंसा अभव बढ़ाई?
भव-सागर से पार करैया, तुम शिव-रमणी के भगवान !
इसी प्रशंसा से हो सकता, लोकेश्वर का गौरव-गान।।20।।

जड़ शब्दों की प्रवृति और है, निज स्वरूप चिन्मय कुछ और।
ऐसे पहुँच सकेंगे तुम तक, वाक्य हमारे है सिरमौर।।
भले न पहुँचे भक्ति-सुधा में, पगे हुए भीने उद्‌गार।
भव्यों को तो बन जावेंगे, कल्पवृक्ष वाँछित दातार।।21।।

नहीं किसी पर अनुकम्पा है, नहीं किसी पर किञ्चितरोष।
चित्त आपका सचमुच सबसे, उदासीन एवं निर्दोष।।
तो भी बैर भुलाने वाला, विश्वबन्धु-मय अनुशासन।
नहीं किसी के पास मिलेगा, आप सरीखा हे ! भगवन्।।22।।

अप्सराओं के द्वारा गाया, गया आपका गौरव-गान।
सकल विषय गत मूर्तिमान है, देव आपका केवल-ज्ञान।।
उस मुमुक्षु को शिव-मग, टेढ़ा-मेढ़ा नहीं लगा करता।
मूढ़ न होता तात्विक चर्चा, में रखता जो तत्परता।।23।।

अतुल चतुष्टय रूप आपका, समा गया जिसके मन में।
सादर समयसारता पूर्वक, जो तल्लीन कीर्तन में।।
पुण्यवान वह गायन से ही, तय करता श्रेयस मंजिल।
गर्भ जन्म तप ज्ञान मोक्ष फिर, जाते उसको पाँचों मिल।।24।।

अहो भक्त इन्द्रों से पूजित, चरण आपके अपरम्पार।
सूक्ष्मज्ञानदर्शी मुनि यति भी, जिनगुण गायन में लाचार।।
मन्दबुद्धि हम कहाँ विचारे, फिर भी एक बहाना यह।
कल्पवृक्ष है, आत्म सुखद है, तब प्रशस्ति है गाना यह।।25।।

***

विषापहार स्तोत्र भाषा

(श्री 'कुमुद' वा 'पुष्पेन्दु' खुरई प्रणीत)

हो आत्म-रूप में संस्थित, त्रिभुवन के भी गामी।
व्यापारों के हो वेत्ता भी, अपरिग्रही जिन-स्वामी।।
दीर्घायु सहित भी होकर, नित वृद्धावस्था-विरहित।
अतिश्रेष्ठ पुराण नरोत्तम, अब करें नाश से रक्षित।।1।।

जिसने ही अन्य विचिन्तित, युग-भार अकेले धारा।
एवं जिनका गुण-कीर्तन, सम्भव न मुनीन्द्रों द्वारा।।
अभिनन्दनीय हैं मेरे, अब वही वृषभ दुख-हर्ता।
रवि के अभाव में प्रभुवर, क्या दीप प्रवेश न कर्ता।।2।।

तव संस्तुति करने का भी, मद त्याग चुका है सुरपति।
पर मैं तव गुण गाने का, उद्योग न तजता जिनपति।।
वातायन सम ही सीमित, निज अल्पज्ञान से इस क्षण।
करता हूँ उनसे विस्तृत, अति व्यापक अर्थ निरूपण।।3।।

वैयाकरण और नैयायिक, कविगण एवं सन्त सहाय।
वादिराज की तुलना में हैं, चारों के चारों निरुपाय।।
भूधर की भूधरली शिर पर, किया पद्यमय यह अनुवाद।
कुमुद और पुष्पेन्दु युगल ने, पाकर गुरु का परम प्रसाद।।4।।

हैं आप सभी के दृष्टा, सबसे किन्तु अदर्शित।
वेत्ता भी आप सभी के, पर सबसे ही हैं अविदित।।
'प्रभु, कैसे हैं ? कितने हैं?', यह बता न सकते ज्ञानी।
तव संस्तुति से हो मेरी, ही प्रकट अशक्ति कहानी।।5।।

जो शिशुओं सम हैं व्याकुल, निजदोष राशि के कारण।
कर दिये आपने उनके, सारे भव-रोग निवारण।।

जो मूढ़ नहीं कर सकते, हित और अहित का निर्णय।
जिनराज ! आप ही उनके, तो बाल–वैद्य हैं निश्चय ।।6 ।।

कुछ देता न किसी को एवं, कुछ हरण न करता दिनकर।
बस 'आज' और 'कल' यों ही, आशाएँ वह दिखलाकर ।।
असमर्थ दिवस खो देता, प्रतिदिन ही जगती को छल।
पर आप शीघ्र तन जन को, दे देते मनवांछित फल ।।7 ।।

अनुकूल आपके चलता, जो प्राणी वह सुख पाता।
रहता प्रतिकूल तथा जो, वह अगणित दुःख उठाता ।।
पर आप सदा ही दोनों, के आगे भी दर्पण–सम।
अवदात कान्ति से लगते हैं, एक सदृश सुन्दरतम ।।8 ।।

सागर का तो गहरापन, बस सागर तक मर्यादित।
ऊँचाई मेरु अचल की, है मात्र उसी तक सीमित ।।
विस्तार उसी विधि सीमित, वसुधा–तल और गगन के।
पर तव गुणौघ से पूरित, कण–कण भी तीन भुवन के ।।9 ।।

सिद्धान्त आपका प्रभुवर !, है यथार्थ अनवस्था।
एवं न आपने घोषित– की, पुनरागमन अवस्था ।।
इह लौकिक सुख को तजकर, परलोक–सौख्य अभिलाषी।
यों आप उचिततामय हैं, हो मात्र विरोधाभासी ।।10 ।।

वस्तुतः आपके द्वारा–ही, काम हुआ है मर्दित।
यदि कहें शम्भु को तो वे, फिर हुए मनोज कलंकित ।।
स्वयमेव विष्णु भी सोये, हो लक्ष्मीजी से प्रेरित।
क्यों ग्राह्य हुए हैं ये जब, अविराम आप हैं जागृत ।।11 ।।

ब्रह्मादि देव हों निर्मल, या अन्य देव सविकारी।
पर उनके दोष–कथन से, कुछ गरिमा नहीं तुम्हारी ।।

कारण समुद्र की महिमा, होती स्वभावतः जिनवर।
पर सिद्ध नहीं हो जाती, सरवर को छोटा कहकर ।।12 ।।

इस कर्म–पिण्ड को भव–भव, में जीव साथ ले जाता।
औ, कर्म–पिण्ड भी उसको, हर गति में साथ घुमाता ।।
यों देव ! आपने भव–जल, में नौका नाविक सम ही।
नेतृत्व परस्पर कहकर, बतलाया सत्य नियम ही ।।13 ।।

ज्यों तैल प्राप्त करने को, शिशु पेला करते रजकण।
त्यों देव ! आपके शासन से, विमुख अनेकों नर–गण ।।
सुख की इच्छा से दुख को, गुणाभिलाष से दुष्कृत।
औ, धर्म हेतु ही पापों, को प्रतिदिन करते संचित ।।14 ।।

अति विस्मय है विषहारक, मणि औषधि–मन्त्र–रसायन।
के हेतु विश्व में भटका, करते हैं भोले जग–जन ।।
पर, आप मन्त्र–मणि औषधि, यह नहीं ध्यान में लाते।
ये क्योंकि आपके ही तो, पर्यायी नाम कहाते ।।15 ।।

हे देव ! आप निज मन में, स्वयमेव न कुछ भी करते।
पर जो जन अपने उर में, सामोद आपको धरते ।।
उनने समस्त ही जग को, कर लिया हाथ में संचित।
आश्चर्य ! आप तो चेतन से, विरहित हो भी जीवित ।।16 ।।

त्रय–काल तत्त्व के ज्ञाता, एवं त्रिलोक के स्वामी।
उनकी निश्चितता से ही, यही संख्या है अनुगामी ।।
पर नहीं ज्ञान के शासन–के प्रति यह संख्या समुचित।
कारण कि और यदि होते, हो जाते तो अन्तर्हित ।।17 ।।

सुरपुर के स्वामी की वह, सुन्दर सेना मनहारी।
उपकारी न आपकी है, हे ! आगम–रूप के धारी ।।

पर अगमरूप मय दिनकर, को छत्र लगाने वाले।
सम उसी इन्द्र को देती, है आत्मिक सौख्य निराले।।18।।

निर्मोही आप कहाँ तो, है कहाँ सुखद उपदेशन।
यह सही, कहाँ पर सम्भव, इच्छा विपरीत निरूपन।।
इच्छा-विपरीत कहाँ यह, है कहाँ लोक-रञ्जकता।
यों है विरोध, इस कारण, सद्रूप नहीं कह सकता।।19।।

जो फल तुरन्त मिल जाता, दानी निष्किंचन जन से।
वह नहीं प्राप्त हो सकता, धनशाली लोभी जन से।।
ज्यों अगणित सरित् निकलती, जलविरहित अद्रिशिखर से।
पर देव ! एक भी सरिता, बहती न कभी सागर से।।20।।

जो तीनों ही लोकों के, सेवार्थ नियम के कारण।
सुरपति ने अधिक विनय से, वह दण्ड किया था धारण।।
यों प्रातिहार्य हो उसको, पर नहीं आपको संभव।
पर कर्मयोग से वह ही, हो नाथ आपको संभव।।21।।

निर्धन जन लक्ष्मीशाली, को देखा करते सादर।
पर सिवा आपके निर्धन, को धनी न देते आदर।।
है सत्य यथा तिमिरावस्थित, को प्रकाशस्थ दिखलाता।
त्यों प्रकाशस्थ तिमिरावस्थित, को नहीं देखने पाता।।22।।

प्रत्यक्ष वृद्धि उच्छ्वासों वा, दृग ज्योति आदि के भाजन।
अपने स्वरूप के अनुभव की, शक्ति न रखते जो जन।।
वे सकल विश्व के ज्ञायक, सज्ज्ञानमयी गुण-सागर।
अध्यक्ष आपको कैसे, समझेंगे हे ! जिनवर।।23।।

हैं आप नाभि के नंदन, या पिता भरत के जिनवर।
यों वंश आपके कहकर, अपमानित करते जो नर।।

वे अब भी करगत सोने, को पत्थर-जन्य समझकर।
फिर अवश्य तज देते, उसको भी पत्थर कहकर।।24।।

त्रिभुवन में मोह-सुभट ने, जो जय का पटह बजाया।
सब हुये तिरस्कृत उससे, पर लाभ मोह ने पाया।।
पर उसे आपके सम्मुख, तो पड़ा पराजित होना।
है सत्य-सबल का रिपु बन, निज को समूल हो खोना।।25।।

हे नाथ ! आपने देखा, है मुक्ति-मार्ग ही केवल।
पर औरों ने तो देखी, हैं चारों गतियों की हलचल।।
अतएव सभी कुछ मैंने, देखा है ऐसा कहकर।
निज-भुजा आपने मद से, देखी न कभी भी जिनवर।।26।।

है राहु सूर्य का ग्राहक, जल पावक का संहारक।
कल्पान्त काल का भीषण, मारुत है सागर-नाशक।।
औ, विरह-भाव इस जग के, भोगों का करता क्षय है।
यों सिवा आपके होता, सबका अरि-संग उदय है।।27।।

प्रभु ! बिना आपको जाने, विजयी फल पाता जैसा।
औरों को देव समझकर, पाता न कभी फल वैसा।।
शुचि मणि को कांच समझकर, ही धरने वाला सज्जन।
मणि समझ मणी के धर्त्ता से, ही नहीं कभी भी निर्धन।।28।।

व्यवहार-कुशल पटु-वक्ता, चारों कषाय से दहते।
अनुरागी द्वेषी जन को, भी देव निरन्तर कहते।।
ज्यों बुझे हुए दीपक को, कहते हैं 'दीप बड़ा है'।
अथवा 'कल्याण' बताते, जब जाता फूट घड़ा है।।29।।

एकार्थ आपके वर्णित, नानार्थों के प्रतिपादक।
त्रिभुवन हितकारी वचनों को, सुनकर कौन विचारक।।

तव निर्दोषत्व न तत्क्षण, प्रभुवर अनुभव का पाता।
सच है, ज्वर-विरहित रोगी, स्वर से सुगम्य हो जाता ।।30।।

इच्छा न आपकी कुछ भी, पर खिरते वचन स्वयं ही।
सच, किसी काल में वैसा, होता है कभी नियम ही।।
ज्यों शशि न सोच यह उगता, मैं करूँ सिन्धु को पूरित।
पर वह स्वभावत: प्रतिदिन, रजनी में होता समुदित ।।31।।

हे नाथ ! आपके गुण-गण, अनुपम गम्भीर अपरिमित।
उत्कृष्ट समुज्ज्वल एवं, नाना प्रकार के अगणित।।
यों अन्त दिखाता उनका, पर नहीं स्तवन में जिनवर।
गुण अन्य, गुणों का क्या अब, हो सकता इससे बढ़कर ।।32।।

मनवाञ्छित सिद्ध न होता, है केवल संस्तुति से ही।
पर होता सिद्ध सुसंस्मृति, सद्भक्ति नमस्कृति से भी।।
अतएव आपको भजता, ध्याता नत होता प्रतिपल।
कारण कि किसी भी विधि से, होता है साध्य परम फल ।।33।।

अतएव त्रिलोक-स्वरूपी, इस नगरी के अधिकारी।
शाश्वत अति श्रेष्ठ प्रभामय, निस्सीम शक्ति के धारी।।
हर पुण्य-पाप से विरहित, जग पुण्यहेतु जगवन्दित।
पर स्वयं अवन्दक प्रभु को, करता प्रणाम हो हर्षित ।।34।।

संस्पर्श-हीन अति नीरस, हर गंध रूप से विरहित।
औ शब्द-रहित भी होकर, तद्विषय-ज्ञान से शोभित।।
सर्वज्ञ स्वयं ही होकर, भी अन्य जनों से अविदित।
अस्मार्य जिनेश्वर को ही, मैं ध्याता हूँ हो प्रमुदित ।।35।।

गम्भीर सिन्धु से बढ़कर, मन द्वारा भी अनुलंघित।
निष्किञ्चन होने पर ही, धनवानों द्वारा याचित।।

जो सबके पार-स्वरूपी, पर जिनका पार न पाया।
उन अपरम्पार जगत्पति, की शरण-प्राप्ति को आया ।।36।।

त्रिभुवन के दीक्षा गुरुवर, है नमन आपको शत्-शत्।
जो वर्धमान भी होकर, स्वयमेव हुये थे उन्नत।।
गिरि मेरु पूर्व में टीला, फिर शिला राशि फिर पर्वत।
फिर हुआ न क्रमश: कुलगिरि, पर था स्वभाव से उन्नत ।।37।।

स्वयमेव प्रकाशित जिसके, दिन और रात के सम ही।
बाध्यत्व तथा बाधकता, का नहीं कदापि नियम ही।।
यों जिनके न कभी भी लाघव, है और न गौरव अणुभर।
उन एकरूप अविनाशी, प्रभु को प्रणाम है सादर ।।38।।

प्रभुवर ! यों संस्तुति करके, मैं दीनभाव से भरकर।
वर नहीं मांगता, कारण, हैं आप उपेक्षक जिनवर।।
स्वयमेव वृक्ष आश्रित को, मिल जाती छाया शीतल।
छाया की भीख मँगाने से, निकल सकेगा क्या फल ।।39।।

यदि देने की अभिलाषा या, आग्रह है 'कुछ लेओ'।
तो मुझे आप में तत्पर, सद्भक्ति भावना देओ।।
विश्वास आप अब वैसी, ही कृपा करेंगे मुझ पर।
निज पोष्यशिष्य पर सकरुण, होता न कौनसा गुरुवर ।।40।।

हे देववन्द्य ! जिननायक, जिस किसी भाँति सम्पादित।
यह भति विनम्र पुरुष को, देती पदार्थ मनवांछित।।
फिर भक्ति आपकी संस्तुति, विषयिक अवश्य ही निश्चय।
देती विशेषता-पूर्वक सुख, कीर्ति विभा जय अक्षय ।।41।।

इति विषापहारस्तोत्र समाप्त

विषापहार स्तोत्र विधान प्रारम्भ

सर्व विघ्न विनाशक

स्वात्मस्थितः सर्वगतः समस्त, व्यापार वेदी विनिवृत्तसंगः।
प्रवृद्धकालोऽप्यजरो वरेण्यः,पायादपायात्पुरुषः पुराणः।।1।।

आत्मरूप में संस्थित हैं अरु, त्रिभुवन के हैं पथगामी।
वेत्ता हैं सब व्यापारों के, अपरिग्रही हैं जिन स्वामी।।
दीर्घायु से सहित आप हैं, वृद्ध अवस्था से भी हीन।
श्रेष्ठ पुराण नरोत्तम जग में, जो विनाश से पूर्ण विहीन।।

अचिन्त्य महिमावान

परैरचिन्त्यं युगभारमेकः, स्तोतुं वहन्योगिभिरप्यशक्यः।
स्तुत्योऽद्य मेऽसौ वृषभो न भानोः, किमप्रवेशे विशति प्रदीपः।।2।।

युग का भार विचिन्तित जिसने, अन्य अकेले ही धारा।
एवं जिनका गुण कीर्तन भी, सम्भव न मुनियों द्वारा।।
अभिनंदन के योग्य मेरे वह, श्री वृषभ दुख के हर्त्ता।
रवि अभाव में हे प्रभुवर ! क्या, दीप प्रवेश नहीं करता।।

इच्छित फलदर्शन

तत्याज शक्रः शकनाभिमानं, नाहं त्यजामि स्तवनानुबन्धम्।
स्वल्पेन बोधेन ततोऽधिकार्थं, वातायनेनेव निरूपयामि।।3।।

तव संस्तुति करने का भी, जब त्याग चुका मद है सुरपति।
पर में तव गुण गाने का भी, करे न उद्यम हे जिनपति ! ।।
वातायन सम सीमित होकर, अल्प ज्ञान से मैं इस क्षण।
करता हूँ उनसे विस्तृत अति, व्यापक अर्थ का मैं निरुपण।।

विद्यादायक

त्वं विश्वदृश्वा सकलैरदृश्यो, विद्वानशेषं निखिलैरवेद्यः।
वक्तुं क्रियान्कीदृश मित्यशक्यः, स्तुतिस्ततोऽशक्तिकथा तवास्तु।।4।।

आप सभी के ज्ञाता दृष्टा, किन्तु सबसे आदर्शित।
वेत्ता भी हो आप सभी के, विदित नहीं हो स्पर्शित।।
कितने हैं ? कैसे हैं ? प्रभुजी, बता नहीं पाते ज्ञानी।
प्रभु तव संस्तुति से प्रगटित हो, मेरी शक्ती अन्जानी।।

अज्ञानता विनाशक

व्यापीडितं बालमिवात्मदोषै-, रुल्लाघतां लोकमवापिपस्त्वम्।
हिताहितान्वेषणमांद्यभाजः, सर्वस्य जन्तोरसि बालवैद्यः।।5।।

जो शिशुओं सम व्याकुल जग में, अपने दोषों के कारण।
उन दोषों का पूर्ण रूप से, किया आपने है वारण।।
मूढ़ बुद्धि हित और अहित का, कर न पाते हैं निर्णय।
बाल वैद्य बनकर निश्चय से, करते भव रोगों का क्षय।।

अभीप्सित फलप्रदाता

दाता न हर्ता दिवसं विवस्वा- नद्यश्व इत्यच्युत ! दर्शिताशः।
सव्याजमेवं गमयत्यशक्तः, क्षणेन दत्सेऽभिमतं नताय।।6।।

कुछ भी हरण नहीं करता है, न ही कुछ देता दिनकर।
आज और कल की आशाएँ, सब जीवों को दिखलाकर।।
हो असमर्थ दिवस खो देता, प्रतिदिन ही जगती को छल।
शीघ्र आप जन जन को बन्धु, दे देते मन वांछित फल।।

संतान सुखदायक

उपैति भक्त्या सुमुखः सुखानि, त्वयि स्वभावाद् विमुखश्च दुःखम्।
सदावदात-द्युतिरेकरूप-, स्तयोस्त्वमादर्श इवावभासि।।7।।

जो अनुकूल आपके चलते, वह प्राणी सुख से रहते।
रहते जो प्रतिकूल आपके, जग के अगणित दुख सहते।।
आप सदा दोनों के आगे, दर्पण सम रहते भगवान।
अपनी आभा में निमग्न हो, होते नहीं कभी भी क्लान।।

सर्व व्यापीगुण धारक

अगाधताब्धेः स यतः पयोधि–, मेंरोश्च तुंगा प्रकृतिः स यत्र।
द्यावापृथिव्योः पृथुता तथैव, व्याप त्वदीया भुवनान्तराणि।।8।।

सागर का गहरापन भाई, सागर तक मर्यादित है।
अरु सुमेरु की ऊँचाई भी, मात्र उसी तक सीमित है।।
वसुधा और गगन की सीमा, तीन लोक में रही महान्।
तव गुण से कण–कण पूरित हैं, तीन लोक में हे भगवान।।

दृष्टि रोग नाशक

तवानवस्था परमार्थतत्त्वं, त्वया न गीतः पुनरागमश्च।
दृष्टं विहाय त्वमदृष्टमैषी–र्विरुद्धवृत्तोऽपि समञ्जसस्त्वम्।।9।।

है सिद्धांत आपका प्रभुवर, अनवस्थित है और यथार्थ।
पुनरागमन व्यवस्था का न, घोषित किया आपने अर्थ।।
इह लौकिक सुख त्याग सौख्य शुभ, पर लौकिक के अभिलाषी।
शरणागत को मिले आपके, रहे और विरोधाभाषी।।

शत्रु जयकारक

स्मरः सुदग्धो भवतैव तस्मि–, न्नुद्धूलितात्मा यदि नाम शम्भुः।
अशेत वृन्दोपहतोऽपि विष्णुः, किं गृह्यते येन भवानजागः।।10।।

हुआ वस्तुतः आपके द्वारा, मर्यादित शुभ कार्य अशेष।
हुआ मनोज कलंकित शम्भू, कैसे माने गये विशेष।।
लक्ष्मी से प्रेरित होकर के, विष्णु भी सोये स्वमेय।
जागृत थे अविराम आप क्यों, ग्राह्य हुए फिर कैसे एव।।

श्री सुख प्रदायक

स नीरजाः स्यादपरोऽघवान्वा, तद्दोषकीर्त्यैव न ते गुणित्वम्।
स्वतोऽम्बुराशेर्महिमा न देव ! स्तोकापवादेन जलाशयस्य।।11।।

ब्रह्मादि या अन्य देव कोइ, सारे जग के सविकारी।
उनके दोष कथन से गरिमा, रह पाती न अविकारी।।
जिस कारण सागर की महिमा, हो स्वभावतः हे जिनवर !
सिद्ध नहीं हो पाए कभी भी, सरवर को छोटा कहकर।।

सर्व विजयदायक

कर्मस्थितिं जन्तुरनेकभूमिम्, नयत्यमुं सा च परस्परस्य।
त्वं नेतृभावं हि तयोर्भवाब्धौ, जिनेन्द्र नौनाविकयोरिवाख्यः।।12।।

कर्म पिण्ड को भव–भव में यह, जीव साथ ले जाता है।
वही कर्म का पिण्ड जीव को, हर गति साथ घुमाता है।।
हे जिनेन्द्र ! नौका नाविक सम, भव जल में यह दिखलाया।
सत्य नियम नेतृत्व परस्पर, कहकर जग को बतलाया।।

रोग विनाशक

सुखाय दुःखानि गुणाय दोषान्, धर्माय पापानि समाचरन्ति।
तैलाय बालाः सिकतासमूहं, निपीडयन्ति स्फुटमत्वदीयाः।।13।।

जैसे तेल प्राप्त करने को, शिशु पेला करते रज कण।
विमुख आपके शासन से त्यों, देव अनेकों है नर गण।।
सुख की इच्छा से दुख पाते, गुण की इच्छा करके दोष।
धर्म हेतु पापों का संचय, करके भरते उनका कोष।।

विषापहारी जिनवर

विषापहारं मणिमौषधानि, मन्त्रं समुद्दिश्य रसायनं च।
भ्राम्यन्त्यहो न त्वमिति स्मरन्ति, पर्यायनामानि तवैव तानि।।14।।

मणी मंत्र औषधी रसायन, खोज रहें हैं विषहारी ।
भोले प्राणी भटक रहे हैं, खोज रहे विस्मयकारी ।।
मणी मंत्र औषधि आप कुछ, नहीं ध्यान में भी लाते ।
क्योंकि आपके ही यह सारे, पर्यय नाम कहे जाते ।।

सर्व अर्थ सिद्धिदायक

चित्ते न किञ्चित्कृतवानसि त्वं, देवः कृतश्चेतसि येन सर्वम्।
हस्ते कृतं तेन जगद्विचित्रं, सुखेन जीवत्यपि चित्तबाह्यः ।।15।।

स्वयं आप अपने मन में हे, देव ! नहीं कुछ भी करते।
प्राणी भाव सहित इस जग के, मोद सहित उर में धरते।।
मानो सर्व जगत् को उनने, किया हाथ में भी संचित।
है आश्चर्य ! आप चेतन से, रहित लोक में हो जीवित।।

परम शांति प्रदायक

त्रिकालतत्त्वं त्वमवैस्त्रिलोकी, स्वामीति संख्यानियतेरमीषाम्।
बोधाधिपत्यं प्रति नाभविष्यं–, स्तेऽन्येऽपिचेद्व्याप्स्यदमूनपीदम्।।16।।

त्रैकालिक तत्वों के ज्ञाता, अरु त्रिलोक के हो स्वामी।
उनकी निश्चितता से संख्या, बन जाती प्रभु अनुगामी।।
नहीं ज्ञान के शासन में पर, यह संख्या समुचित मानी ।
होती कोई और यदि वह, जान रहे केवलज्ञानी।।

सम्मान सौभाग्यवर्द्धक

नाकस्य पत्युः परिकर्म रम्यं, नागम्यरूपस्य तवोपकारि।
तस्यैव हेतुः स्वसुखस्य भानो–रुद्बिभ्रतच्छत्रमिवादरेण।।17।।

शिवपुर के स्वामी की सेना, सर्व जगत् में मनहारी।
हे आगम ! के धारी अनुपम, नहीं आपकी उपकारी।।
जैनागम के दिनकर को शुभ, छत्र लगाने वाली है।
आत्मिक सुख देने वाली जो, जग में विशद निराली है।।

अकथनीय महिमाधारक

क्वोपेक्षकस्त्वं क्व सुखोपदेशः स चेत्किमिच्छा प्रतिकूलवादः।
क्वासौ क्व वा सर्वजगत्प्रियत्वम्–, तन्नो यथातथ्य मवेविजं ते।।18।।

कहाँ आप निर्मोही जिनवर, कहाँ सुखद उपदेश महान्।
इच्छा के विपरीत निरूपण, कहाँ आपका हो भगवान।।
कहाँ लोक प्रियता होती है, कहाँ लोक रंजकता एव।
यों विरोध है सब प्रकार से, होय नहीं सद्रूप सदैव।।

सर्व विजयदायक

तुंगात्फलं यत्तदकिञ्चनाच्च, प्राप्यं समृद्धान्न धनेश्वरादेः।
निरम्भसोऽप्युच्चतमादिवाद्रे–र्नैकापि निर्याति धुनी पयोधेः ।।19।।

दानी निष्किन्चन से जो फल, पल में ही मिल जाता है।
धनशाली लोभी जन से वह, नहीं प्राप्त हो पाता है।।
अद्रि शिखर से जल विहीन ज्यों, अगणित सरिताएँ बहतीं।
पर हे नाथ ! सभी सरिताएँ, सागर से दूर सदा रहतीं।।

मनोरथ पूरक

त्रैलोक्य–सेवा नियमाय दण्डं, दध्रे यदिन्द्रो विनयेन तस्य।
तत्प्रातिहार्यं भवतः कुतस्त्यं, तत्कर्म योगाद्यदि वा तवास्तु।।20।।

तीनों लोकों की सेवा के, अर्थ नियम के जो कारण।
अधिक विनय से सुरपति द्वारा, दण्ड किया था जो धारण।।
प्रातिहार्य उसको यों होते, नहीं आपको संभव नाथ।
कर्म योग से वही आपके, पद में झुका रहे हैं माथ।।

वाञ्छापूरक

श्रिया परं पश्यति साधु निःस्वः, श्रीमान्न कश्चित्कृपणं त्वदन्यः।
यथा प्रकाश–स्थितमन्धकार–स्थायीक्षतेऽसौ न तथा तमःस्थम्।।21।।

निर्धन जन लक्ष्मी शाली को, सदा देखते हैं सादर।
शिवा आपके निर्धन को वह, धनी नहीं देते आदर।।
तिमिरावस्थित प्राणी को ही, ज्यों प्रकाश दिखलाता है।
त्यों प्रकाश स्थित प्राणी को, नहीं देखने पाता है।।

अरिष्ट योगनिवारक

स्ववृद्धिनिःश्वास–निमेषभाजि, प्रत्यक्षमात्मानुभवेऽपि मूढः।
किं चाखिल–ज्ञेय–विवर्ति–बोध–स्वरूपमध्यक्षमवैति लोकः।।22।।

ज्यों प्रत्यक्ष वृद्धि उच्छवासों, का दृग ज्योति के भाजन।
निजस्वरूप के अनुभव की जो, शक्ति न रखते हैं भविजन।।
सकल विश्व के ज्ञायक वह सब, ज्ञानमयी गुण के सागर।
लोकाध्यक्ष आपको कैसे, समझ पाएँगे हे जिनवर !।।

सर्व भय निवारक

तस्यात्मजस्तस्य पितेति देव ! त्वां येऽवगायन्ति कुलं प्रकाश्य।
तेऽद्यापि नन्वाश्मनमित्यवश्यं, पाणौ कृतं हेम पुनस्त्यजन्ति।।23।।

नाभिराय नन्दन हे जिनवर !, पिता भरत के आप महान्।
नाथ ! आपकी वंशावलि कह, अपमानित करते इन्सान।।
स्वर्ण प्राप्त करके हाथों में, पत्थर जन्म समझते हैं।
फिर अवश्य ही जग के, प्राणी पत्थर कहकर तजते हैं।।

मोह सुभट विजेता

दत्तस्त्रिलोक्यां पटहोऽभिभूताः, सुराऽसुरास्तस्य महान् स लाभः।
मोहस्य मोहस्त्वयि को विरोद्धुर्, मूलस्य नाशो बलवद्विरोधः।।24।।

तीन लोक में मोह सुभट ने, जय का पटह बजाया है।
हुए तिरस्कृत उससे सब पर, लाभ मोह ने पाया है।

उसको भी तो आपके सम्मुख, पड़ा पराजित होना देव।
सत्य सबल का रिपु रहा जो, नाश हुआ वह पूर्ण सदैव।।

नेत्र रोगनाशक

मार्गस्त्वयैको ददृशे विमुक्ते–श्चतुर्गतीनां गहनं परेण।
सर्वं मया दृष्टमिति स्मयेन, त्वं मा कदाचिद्–भुजमालुलोकः।।25।।

जो भी देखा नाथ आपने, मोक्षमार्ग पर रहा गमन।
औरों ने जो भी देखा वह, चतुर्गति का रहा भ्रमण।।
सर्व चराचर मैंने देखा, ऐसा कभी नहीं कहकर।
स्वयं भुजाएँ अपने मद से, देखी नहीं कभी जिनवर।।

सर्व संकट निवारक

स्वर्भानुरर्कय हविर्भुजोऽम्भः, कल्पान्तवातोऽम्बुनिधेर्विघातः।
संसारभोगस्य वियोगभावो, विपक्षपूर्वाभ्युदयास्त्वदन्ये।।26।।

राहु सूर्य का ग्राहक है तो, जल पावक का संहारक।
जो कल्पान्त काल का भीषण, मारुत सागर का नाशक।।
विरह भाव इस जग के भोगों, का क्षयकारी रहा विशेष।
सिवा आपके सबका अरि संग, होता है संयोग जिनेश।।

वैभव प्रदायक

अजानतस्त्वां नमतः फलं यत्, –तज्जानतोऽन्यं न तु देवतेति।
हरिन्मणिं काचधिया दधानस्–, तं तस्य बुद्ध्या वहतो न रिक्तः।।27।।

बिना आपको जाने जिनवर ! विजयी फल पाता जैसा।
देव समझ करके औरों को, कभी न फल पावे वैसा।।
निर्मल मणि को काँच समझकर, धारण जो करता सज्जन।
मणि को मणी समझने वाला, होता नहीं कभी निर्धन।।

पिशाचादि बाधा निवारक

प्रशस्तवाचश्चतुराः कषायैर्-, दग्धस्य देव व्यवहारमाहुः।
गतस्य दीपस्य हि नन्दितत्त्वं, दृष्टं कपालस्य च मंगलत्वम्।।28।।

ज्यों व्यवहार कुशल पटु वक्ता, चतुःकषायों से दहते।
रागी द्वेषी मोही जन को, देव निरन्तर जो कहते।।
बुझे हुए दीपक को प्राणी, जैसे कहते दीप बड़ा।
कहते हैं कल्याण हुआ जब, फूट जाय यदि कोई घड़ा।।

ज्वर पीड़ा विनाशक

नानार्थ मेकार्थमदस्त्वदुक्तं, हितं वचस्ते निशमय्य वक्तुः।
निर्दोषतां के न विभावयन्ति, ज्वरेण मुक्तः सुगमः स्वरेण।।29।।

हैं एकार्थ आपके वर्णित, कई अर्थों के प्रतिपादक।
त्रिभुवन हितकारी वचनों के, कौन लोक में हैं धारक।।
निर्दोषत्व न तत्क्षण अपना, प्रभुवर अनुभव को पाता।
सच है ज्वर से विरहित योगी, स्वर सुगम्य कहा जाता।।

भव सिन्धु तारक

न क्वापि वाञ्छाववृते च वाक्ते, काले क्वचित्कोऽपि तथा नियोगः।
न पूरयाम्यम्बुधिमित्युदंशुः, स्वयं हि शीतद्युतिरभ्युदेति।।30।।

इच्छा नहीं आपकी कुछ भी, खिरते वचन स्वयं पावन।
किसी काल में वैसा होता, नियम नहीं न अपनापन।।
उगता नहीं सोच ज्यों शशि यह, करूँ सिन्धु को मैं पूरित।
पर स्वभावतः प्रतिदिन रजनी, दूर करे होकर समुदित।।

श्रेष्ठ गुण प्रदायक

गुणा गभीराः परमाः प्रसन्नाः, बहुप्रकारा बहवस्तवेति।
दृष्टोऽयमन्तः स्तवने न तेषाम्, गुणो गुणानां किमतः परोऽस्ति।।31।।

गुण गण हैं हे नाथ ! आपके, अनुपम अगणित अरु गम्भीर।
और अपरिमित श्रेष्ठ समुज्ज्वल, विविध भांति उत्कृष्ट सुधीर।।
यों तो अन्त दिखाता उनका, नहीं स्तवन में जिनवर।
और अन्य गुण क्या हो सकते, हे जिनेन्द्र ! इनसे बढ़कर।।

इष्ट फलसाधक

स्तुत्या परं नाभिमतं हि भक्त्या, स्मृत्या प्रणत्या च ततो भजामि।
स्मरामि देवं प्रणमामि नित्यं, केनाप्युपायेन फलं हि साध्यम्।।32।।

केवल संस्तुति करने से ही, मन वाच्छित न होवे सिद्ध।
सद्भक्ति और नमस्कृति से, संस्मृति से होय प्रसिद्ध।।
प्रतिपल नत होकर ध्याता जो, भजे आपको भी अत एव।
परम साध्य फल पा लेता है, कारण किसी विधि से एव।।

अखण्ड स्वामित्व दायक

ततस्त्रिलोकी नगराधिदेवं, नित्यं परं ज्योतिरनंतशक्तिम्।
अपुण्यपापं परपुण्यहेतुं, नमाम्यहं वन्द्यमवन्दितारम्।।33।।

प्रभु अतएव त्रिलोक स्वरूपी, इस नगरी के अधिकारी।
शाश्वत हैं अति श्रेष्ठ प्रभामय, प्रभु निस्सीम शक्ति धारी।।
पुण्य पाप से विरहित हैं जो, पुण्य हेतु जग में वन्दित।
स्वयं अखण्ड प्रभु को करता, मैं प्रणाम हो आनन्दित।।

सर्व सिद्धिदायक

अशब्दमस्पर्शमरूपगन्धं, त्वां नीरसं तद्विषयावबोधम्।
सर्वस्य मातारममेय-मन्यै-, र्जिनेन्द्र-मस्मार्यमनुस्मरामि।।34।।

जो स्पर्श हीन अति नीरस, गंध रूप से पूर्ण विहीन।
और शब्द से रहित जिनोत्तम, तद्विषयक हैं ज्ञान प्रवीण।।
प्रभु सर्वज्ञ स्वयं होकर भी, अन्य जनों से जो वंदित।
ध्याते हम अस्मार्य जिनेश्वर, विशद भाव से हो प्रमुदित।।

सर्व विपत्ति नाशक

अगाधमन्यैर्मनसाप्यलंघयं, निष्किञ्चनं प्रार्थितमर्थवद्भिः।
विश्वस्य पारं तमदृष्टपारं, पतिं जनानां शरणं व्रजामि।।35।।

जो गम्भीर सिन्धु से बढ़कर, मन द्वारा भी अनुलंघित।
निष्किन्चन होने पर भी जो, धनवानों द्वारा याचित।।
जो हैं सबके पार स्वरूपी, पर जिनका न पाए पार।
शरण प्राप्त हो जाए उनकी, जगत्पति जो अपरम्पार।।

स्वभाविक गुण प्रदायक

त्रैलोक्यदीक्षागुरवे नमस्ते, यो वर्धमानोऽपि निजोन्नतोऽभूत्।
प्राग्गण्डशैलः पुनरद्रिकल्पः, पश्चान्न मेरुः कुलपर्वतोऽभूत्।।36।।

त्रिभुवन के दीक्षा गुरुवर हे ! नमन् आपको शत्-शत् बार।
वर्धमान होकर भी उन्नत, स्वयं आप हो अपरम्पार।।
मेरु गिरि के पूर्व में टीला, शिला राशि फिर पर्वत राज।
क्रमश: कुल गिरि हुआ न फिर भी, था स्वभाव से उन्नत ताज।।

परमात्मा फलदायक

स्वयंप्रकाशस्य दिवा निशा वा-, न बाध्यता यस्य न बाधकत्वम्।
न लाघवं गौरवमेकरूपं, वन्दे विभुं कालकलामतीतम्।।37।।

जो स्वयमेव प्रकाशित जिसको, दिन अरु रात का भेद नहीं।
न बाधकता अरु बाधत्व का, न ही होता नियम कहीं।।
यों जिनके न कभी भी लाघव, और न गौरव है अणुभर।
अविनाशी उन एक रूप जिन, को प्रणाम मेरा सादर।।

इच्छित फलदायक

इति स्तुतिं देव विधाय दैन्याद्-वरं न याचे त्वमुपेक्षकोऽसि।
छाया तरुं संश्रयतः स्वतः स्यात्-कश्छायया याचितयात्मलाभः।।38।।

हे प्रभुवर ! यों संस्तुति करके, मैं भी दीन भाव के साथ।
नहीं माँगता हूँ वर कोई, क्योंकि आप उपेक्षक नाथ।।
वृक्षाश्रित को स्वयं आप ही, मिल जाती छाया शीतल।
भीख माँगने से छाया की, मिलता है क्या कोई फल।।

विषम ज्वर विनाशक

अथास्ति दित्सा यदि वोपरोध-स्त्वय्येव सक्तां दिश भक्तिबुद्धिम्।
करिष्यते देव तथा कृपां मे-, को वात्मपोष्ये सुमुखो न सूरिः।।39।।

यदि आग्रह कुछ देने का है, या देने की अभिलाषा।
हो जाऊँ भक्ति में तत्पर, यही मात्र मेरी आशा।।
है विश्वास आप अब वैसी, कृपा करोगे हे जिनवर !।
निज शिष्यों पर करुणाकर क्या ?, होते नहीं श्री गुरुवर।।

धन, जय, सुख, यश प्रदात्ती जिनभक्ति

वितरति विहिता यथाकथञ्चिज्, जिन विनताय मनीषितानि भक्तिः।
त्वयि नुतिविषया पुनर्विशेषाद्-, दिशति सुखानि यशो 'धनंजयं' च।।40।।

जिस किस भाँति से सम्पादित, देव वंद्य हे जिननायक !
मन वाच्छित फल देने वाली, भक्ति कर्मों की क्षायक।।
संस्तुति विषयक भक्ति आपकी, देती है शुभ फल निश्चय।
'विशद' ओज विद्यादायक है, कीर्ति धनंजय ही अक्षय।।

न्याय और व्याकरण के ज्ञाता, कविगण एवं संत सहाय।
वादिराज अरु कवि धनञ्जय, की तुलना में हैं निरुपाय।।
पाकर शुभ आशीष गुरु का, किया पद्यमय यह अनुवाद।
'विशद' ज्ञान के सुधा कलश से, पाने को अनुपम आस्वाद।।41।।

***

श्री नवदेवता स्तोत्रम्–मंगलाष्टकम्

अर्हन्त:

श्रीमन्तो जिनपाजगत्त्रयनुता, दोषैर्विमुक्तात्मका:।
लोकालोकविलोकनैक चतुराश्शुद्धा: परं निर्मला:।।
दिव्यानन्तचतुष्टयादिकयुता:, सत्यस्वरूपात्मका:।
प्राप्तायैर्भुविप्रातिहार्यविभवा:, कुर्वन्तु ते मंगलम्।।1।।

सिद्धा:

श्रीमन्तो नृसुरा सुरेन्द्र महिता, लोकाग्रसंवासिन:।
नित्या: सर्व सुखाकरा भयहरा, विश्वेषु कामप्रदा:।।
कर्मातीतविशुद्ध भावसहिता, ज्योति:स्वरूपात्मका:।
श्रीसिद्धाजननार्ति मृत्युरहिता:, कुर्वन्तु ते मंगलम्।।2।।

आचार्या:

पञ्चाचार परायणा: सुविमलाश्चारित्र संद्योतका:।
अर्हद्रू पधराश्च निस्पृहपरा:, कामादिदोषोज्झिता:।।
बाह्याभ्यन्तर संगमोहरहिता: शुद्धात्मसंराधका:।
आचार्या नरदेवपूजितपदा:, कुर्वन्तु ते मंगलम्।।3।।

उपाध्याया:

वेदांगं निखलागमं शुभतरं, पूर्णं पुराणं सदा।
सूक्ष्मासूक्ष्मसमस्ततत्त्वकथकं, श्री द्वादशांग शुभम्।।
स्वात्मज्ञानविवृद्धये गतमला:, येऽध्यायपन्तीश्वरा:।
निर्द्वन्द्वावरपाठका: सुविमला:, कुर्वन्तु ते मंगलम्।।4।।

साधव:

त्यक्त्वाशां भव भोग पुत्रतनुजां, मोहं परं दुस्त्यजं।
नि:संगाकरुणालयाश्च विरता दैगम्बरा धीधना:।।
शुद्धाचाररतानिजात्मरसिका, ब्रह्मस्वरूपात्मका।
देवेन्द्रैरपि पूजिता: सुमुनय:, कुर्वन्तु ते मंगलम्।।5।।

जिनधर्म:

जीवानामभयप्रद: सुसदय:, संसारदु:खापह:।
सौख्यंयोनित्तरां ददाति सकलं, दिव्यं मनोवाञ्छितम्।।
तीर्थेशैरपिधारितोद्यनुपम:, स्वर्मोक्षसंसाधक:।
धर्म:सोऽत्र जिनोदितोहितकर:, कुर्यात्सदा मंगलम्।।6।।

जिनागम

स्याद्वादांकधरं त्रिलोकमहितं, देवै: सदा संस्तुतं।
सन्देहादि विरोध भाव रहितं, सर्वार्थ सन्देशकम्।।
याथातथ्यमजेयमाप्तकथितं, कोटिप्रभाभासितं।
श्रीमज्जैनसुशासनं हितकरं, कुर्यात्सदा मंगलम्।।7।।

जिनप्रतिमा

सौम्या: सर्वविकार भावरहिता:, शान्ति स्वरूपात्मका:।
शुद्धध्यानमया: प्रशान्तवदना:, श्रीप्रातिहार्यान्विता:।।
स्वात्मानन्द विकाशकाश्च सुभगाश्चैतन्य भावावहा:।
पञ्चानांपरमेष्ठिनां हि कृतया:, कुर्वन्तु ते मंगलम्।।8।।

जिनालया:

घण्टातोरणदामधूपघटकै, राजन्ति सन्मंगलै:।
स्तोत्रैश्चित्तहरैर्महोत्सव शतै, र्वादित्र संगीत कै:।।
पूजारम्भ महाभिषेक यजनै: पुण्योत्करै: सत्क्रियै:।
श्रीचैत्यायतनानितानि कृतिनां, कुर्वन्तु सन्मंगलम्।।9।।

निखिल नव देवता

इत्थंमंगलदायका जिनवरा:, सिद्धाश्च सूर्यादया:।
पूज्यास्ता नव देवता अघहरास्तीर्थोत्तमास्तारका:।।
चारित्रोज्वलतांविशुद्ध शमतां, बोधिं समाधिं तथा।
श्री जैनेन्द्र 'सुधर्म' मात्मसुखदं, कुर्वन्तु सन्मंगलम्।।10।।

इति वीतराग तपोमूर्ति स्व. आचार्य 'श्री सुधर्मासागरजी विरचितं नव देवता स्तोत्रम्

नवदेवता स्तोत्र

तीन लोक में पूज्यनीय हैं, जिन श्रीमान् निर्मल निर्दोष।
दिव्यानन्त चतुष्टय आदिक, प्रातिहार्य वैभव के कोष।।
सत्य स्वरूपी परम आत्मशुभ, श्रीजिन छियालिस गुणधारी।
लोकालोक विलोकी अर्हत्, इस जग में मंगलकारी।।1।।

महित सुरासुर नर से पूजित, नित्य सर्व सुखकर श्रीमान्।
कर्मातीत विशुद्ध काम पद, ज्योति स्वरूपी वसु गुणवान।।
रहित जन्म-मृत्यु अर्ति से, विश्वेषु जिन भयहारी।
सिद्ध श्री लोकाग्र निवासी, इस जग में मंगलकारी।।2।।

पंचाचार परायण निष्पृह, कामादि दोषों से हीन।
विमल ज्ञान चारित्र प्रकाशक, बाह्याभ्यन्तर संग विहीन।।
परं शुद्ध आतम आराधक, जिन अर्हन्त रूपधारी।
जिनाचार नर सुर से पूजित, इस जग में मंगलकारी।।3।।

निर्मल वेद अंग शुभतर शुभ, निखिलागम् युत पूर्ण पुराण।
सूक्ष्मासूक्ष्म सर्व तत्वों का, द्वादशांग में कथन महान्।।
श्रेष्ठ विमल पंतीश्वर ध्याता, स्वात्म ज्ञान वृद्धिकारी।
उपाध्याय निर्द्वन्द सुपाठक, इस जग में मंगलकारी।।4।।

महा मोह आशा के त्यागी, करुणालय अध्यात्म स्वरूप।
पुत्र तनु भव भोग विरत धीमान् निसंग दिगम्बर रूप।।
निज आतम के रसिक श्रेष्ठ जो, ज्ञान ध्यान शुद्धाचारी।
देवेन्द्रों से पूजित मुनिवर, इस जग में मंगलकारी।।5।।

अभय प्रदायक जग जीवों का, दयावान दुःख का हर्ता।
स्वर्ग मोक्ष का साधक अनुपम, मनवांछित सुख का कर्ता।।
सकल विमल सुदिव्य तीर्थ के, अधिपति पावन हितकारी।
जिनवर कथित धर्म है पावन, इस जग में मंगलकारी।।6।।

स्याद्वाद रवि से आलोकित, सुर नर पूजित लोक महान्।
सन्देहादि दोष रहित शुभ, सर्व अर्थ संदेश प्रधान।।
याथातथ्य अजेय सुशासन, आप्त कथित है हितकारी।
कोटि प्रभा भाषित जैनागम, इस जग में मंगलकारी।।7।।

शुद्ध ध्यानमय प्रातिहार्य युत, परमेष्ठी कृत शांतिस्वरूप।
सर्व विकार भाव से वर्जित, सुभग चैतन्य भावमय रूप।।
स्वात्मानंद प्रशांत वदनमय, जिन मुद्रा है अविकारी।
सौम्य सुनिर्मल जिन प्रतिमा है, इस जग में मंगलकारी।।8।।

घंटा तोरण दाम धूप घट, राजत शत् वादित्र महान्।
पूजारंभ महोत्सव मंगल, महाभिषेक स्तोत्र प्रधान।।
महत् पुण्यकारक सत् किरिया, भवि जीवों को हितकारी।
कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्यालय, इस जग में मंगलकारी।।9।।

मंगलदायक श्री जिनवरजी, सिद्ध सूरि आदिक नवदेव।
उत्तम तीर्थ सुतारक भव से, बोधि समाधि दाता एव।।
उज्ज्वलतम् विशुद्ध समतामय, सुचरित्रमय अघहारी।
'विशद' धर्म आतम सुखदायक, इस जग में मंगलकारी।।10।।

***

अथ नवग्रह शांति स्तोत्रम्

जगद्गुरुं नमस्कृत्य, श्रुत्वा सद्गुरुभाषितै।
ग्रहशांतिं प्रवक्ष्यामि, लोकानां सुखहेतवे।।
जिनेन्द्राः खेचरा ज्ञेया, पूजनीया विधिक्रमात्।
पुष्पै र्विलेपनै धूर्पै नैं वेद्यै स्तुष्टि हेतवे ।
पद्मप्रभस्य मार्तण्डश्चन्द्रश्चन्द्रप्रभस्य च।
वासुपूज्यस्य भूपुत्रो, बुधश्चाष्टजिनेशिनां।।
विमलानन्तधर्मेश-शांतिकुन्थ्वरहनमि ।
वर्द्धमानजिनेन्द्राणां, पादपद्मं बुधो नमेत्।।
ऋषभाजितसुपार्श्वा: साभिनन्दनशीतलौ ।
सुमतिः सम्भवस्वामी, श्रेयांसेषु बृहस्पतिः।।
सुविधिः कथितः शुक्रे, सुव्रतश्च शनैश्चरै।
नेमिनाथो भवेद्राहोः, केतुः श्रीमल्लिपार्श्वयोः।।
जन्मलग्नं च राशिं च, यदि पीडयन्ति खेचराः।
तदा संपूजयेद् धीमान्-खेचरान् सह तान् जिनान्।।
भद्रबाहुगुरुर्वाग्मी, पंचमः श्रुतकेवली ।
विद्याप्रसादतः पूर्वं ग्रहशांतिविधिः कृता।।
यः पठेत् प्रातरुत्थाय, शुचिर्भूत्वा समाहितः।
विपत्तितो भवेच्छांतिः क्षेमं तस्य पदे पदे।।

प्रात:काल इस स्तोत्र का पाठ करने से क्रूरग्रह अपना असर नहीं करते। किसी ग्रह के असर होने पर 27 दिन तक प्रतिदिन 21 बार पाठ करने से अवश्य शान्ति होगी।

***

श्री सरस्वती स्तोत्रम्

चन्द्रार्क कोटि घटितोज्ज्वलदिव्यमूर्ते,
श्रीचन्द्रिका कलित निर्मल शुभ्रवस्त्रे।
कामार्थदायि कलहंस समाधि रूढे,
वागीश्वरि प्रतिदिनं मम रक्ष देवि।।1।।

देवा सुरेन्द्र नतमौलिमणि प्ररोचि,
श्री मंजरी निविड रंजित पादपद्मे।
नीलालके प्रमदहस्ति समानयाने,
वागीश्वरि प्रतिदिनं मम रक्ष देवि।।2।।

केयूरहार मणिकुण्डल मुद्रिकाद्यैः,
सर्वांगभूषण नरेन्द्र मुनीन्द्र वंद्ये।
नानासुरत्न वर निर्मल मौलियुक्ते,
वागीश्वरि प्रतिदिनं मम रक्ष देवि।।3।।

मंजीरकोत्कनककंकणकिंकणीनां,
कांच्याश्च झंकृत रवेण विराजमाने।
सद्धर्म वारिनिधि संतति वर्द्धमाने,
वागीश्वरि प्रतिदिनं मम रक्ष देवि।।4।।

कंकेलिपल्लव विनिंदित पाणि युग्मे,
पद्मासने दिवस पद्मसमान वक्त्रे।
जैनेन्द्र वक्त्र भवदिव्य समस्त भाषे,
वागीश्वरि प्रतिदिनं मम रक्ष देवि।।5।।

अर्द्धेन्दु मण्डितजटा ललित स्वरूपे,
शास्त्र प्रकाशिनि समस्त कलाधिनाथे।

चिन्मुद्रिका जपसराभय पुस्तकांके,
वागीश्वरि प्रतिदिनं मम रक्ष देवि ।।6 ।।

डिंडीरपिंड हिमशंख सिताभ्रहारे,
पूर्णेन्दु बिम्बरुचि शोभित दिव्यगात्रे।
चांचल्यमान मृगशावललाट नेत्रे,
वागीश्वरि प्रतिदिनं मम रक्ष देवि ।।7 ।।

पूज्ये पवित्रकरणोन्नत कामरूपे,
नित्यं फणीन्द्र गरुडाधिप किन्नरेन्द्रैः।
विद्याधरेन्द्र सुरयक्ष समस्तवृन्दैः,
वागीश्वरि प्रतिदिनं मम रक्ष देवि ।।8 ।।

।। इति सरस्वती स्तोत्रम् ।।

श्री सरस्वती नाम स्तोत्रम्

सरस्वत्याः प्रसादेन, काव्यं कुर्वन्ति मानवाः।
तस्मान्निश्चल भावेन, पूजनीया सरस्वती ।।1 ।।

श्री सर्वज्ञ मुखोत्पन्ना, भारती बहुभाषिणी।
अज्ञान तिमिरं हन्ति, विद्या बहुविकासिनी ।।2 ।।

सरस्वती मया दृष्टा, दिव्या कमललोचना।
हंसस्कन्ध समारुढ़ा वीणा पुस्तकधारिणी ।।3 ।।

प्रथमं भारती नाम, द्वितीयं च सरस्वती।
तृतीयं शारदा देवी, चतुर्थं हंसगामिनी ।।4 ।।

पंचमं विदुषां माता, षष्ठं वागीश्वरि तथा।
कुमारी सप्तमं प्रोक्तं, अष्टमं ब्रह्मचारिणी ।।5 ।।

नवमं च जगन्माता, दशमं ब्राह्मिणी तथा।
एकादशं तु ब्रह्माणी, द्वादशं वरदा भवेत् ।।6 ।।

वाणी त्रयोदशं नाम, भाषाचैव चतुर्दशम्।
पंचदशं तु श्रुतदेवी, षोडशं गौर्निगद्यते ।।7 ।।

एतानि श्रुतनामानि प्रातरुत्थाय यः पठेत्।
तस्य संतुष्यति माता शारदा वरदा भवेत् ।।8 ।।

सरस्वती नमस्तुभ्यं, वरदे काम रूपिणी।
विद्यारंभं करिष्यामि, सिद्धिर्भवतु मे सदा ।।9 ।।

।। इति श्री सरस्वती नाम स्तोत्रम् ।।

पार्श्वनाथ स्तोत्र

ॐ नमः पार्श्वनाथाय विश्वचिन्तामणियुते।
ह्रीं धरणेन्द्र वैरोट्या पद्मावती युतायुते ।।1 ।।

शान्ति तुष्टि महापुष्टि धृति-कीर्ति विद्यापिते।
ॐ ह्रीं दिड्व्याल वेताल, सर्वाधि-व्याधिनाशिने ।।2 ।।

जया जिताख्या विजयाख्या पराजितयान्वितः।
दिशांपाले ग्रहैर्यक्षेर्विद्यादेवी भिरन्वितः ।।3 ।।

ॐ असिआउसाय नमस् तत्र त्रैलोक्यनाथताम्।
चतुः षष्ठि सुरेन्द्रास्ते, भासन्ते छत्रचामरैः ।।4 ।।

श्रीशंखेश्वरमण्डन् पार्श्वजिन ! प्रणतकल्पतरुकल्प।
चूरय दुष्ट व्रातं, पूरय में वांछित नाथ ।।5 ।।

आध्यात्म शयन गीतिका

शुद्ध बुद्ध हो नित्य निरंजन, विशद ज्ञान के धारी हो।
इस जग की माया से निर्वृत्त, पूर्ण रूप अविकारी हो।।
इस शरीर से भिन्न अन्य तुम, सब चेष्टाओं को छोड़ो।
मात शांतला के वचनों से, बेटा तुम नाता जोड़ो।।1।।

तुम हो ज्ञाता दृष्टा निर्मल, हो परमात्म स्वरूप अखण्ड।
सद्गुण के आलय जित् इन्द्रिय, तेजस्वी हो अमल प्रचण्ड।।
मानादिक मुदा को तजकर, राग-द्वेष को भी छोड़ो।
मात शांतला के वचनों से, बेटा तुम नाता जोड़ो।।2।।

तुम हो शांत संयमित आतम, अविनाशी हो सिद्ध स्वरूप।
सब प्रकार के मल से निर्वृत, निष्कलंक हो ज्योति रूप।।
इस संसार की माया तजकर, छल छद्म को भी छोड़ो।
मात शांतला के वचनों से, बेटा तुम नाता जोड़ो।।3।।

मुक्त चिदात्मक हो तुम चेतन, एक चिरन्तन है स्वरूप।
हो चिद्रूप्रभाव मय बन्धु, 'विशद' अतीन्द्रिय तेरा रूप।।
मोह छोड़कर के इस तन से, परिजन से नाता तोड़ो।
मात शांतला के वचनों से, बेटा तुम नाता जोड़ो।।4।।

कर्म रूप तुम नहीं हो चेतन, तुम हो पूर्णरूप निष्काम।
रत्नत्रय युत वेत्ता हो तुम, परम पवित्र हो आतम राम।।
चेतन से नाता तुम जोड़ो, काम भाव को तुम छोड़ो।
मात शांतला के वचनों से, बेटा तुम नाता जोड़ो।।5।।

तुम प्रमाद से मुक्त सुनिर्मल, आतम ब्रह्म बिहारी देव।
दर्शन ज्ञान वीर्य सुखमय तुम, ऽनन्त चतुष्टय धारी एव।।
अपने चिद् आतम की रक्षा, में अपने मन को मोड़ो।
मात शांतला के वचनों से, बेटा तुम नाता जोड़ो।।6।।

तुम कैवल्य भाव मय बन्धु, योग मुक्त तेरा स्वरूप।
सर्व तत्त्व वेत्ता हो चेतन, रोग मुक्त शुभ आतम रूप।।
चित् स्वरूप से निज को जोड़ो, शेष भाव सब तुम छोड़ो।
मात शांतला के वचनों से, बेटा तुम नाता जोड़ो।।7।।

ज्ञान भाव आदि के कर्ता, तुम हो काम वासना मुक्त।
हो सर्वज्ञ सर्वदर्शी तुम, हो चैतन्य रूप संयुक्त।।
निज अभीष्ट परमातम से अब, 'विशद' आप नाता जोड़ो।
मात शांतला के वचनों से, बेटा तुम नाता जोड़ो।।8।।

***

बारह भावना

दोहा- बंदूँ श्री अरहंत पद, वीतराग विज्ञान।
वरणूँ बारह भावना, जग जीवन हित जान।।1।।

(विष्णुपद छन्द)

कहाँ गये चक्री जिन जीता, भरतखण्ड सारा।
कहाँ गये वह राम-अरु-लक्ष्मण, जिन रावण मारा।।
कहाँ कृष्ण रूक्मिणी सतभामा, अरु संपति सगरी।
कहाँ गये वह रंगमहल अरु, सुवरन की नगरी।।2।।

नहीं रहे वह लोभी कौरव, जूझ मरे रन में।
गये राज तज पांडव वन को, अग्नि लगी तन में।।

मोह–नींद से उठ रे चेतन, तुझे जगावन को।
हो दयाल उपदेश करैं गुरु, बारह भावन को।।3।।

1. अथिर (अनित्य) भावना

सूरज चाँद छिपै निकलै ऋतु, फिर फिर कर आवै।
प्यारी आयु ऐसी बीतै, पता नहीं पावै।।
पर्वत–पतित–नदी–सरिता–जल बहकर नहिं हटता।
स्वाँस चलत यों घटै काठ ज्यों, आरे सों कटता।।4।।

ओस–बूंद ज्यों गलै धूप में, वा अंजुलि पानी।
छिन छिन यौवन छीन होत है, क्या समझै प्रानी।।
इंद्रजाल आकाश नगर सम, जग–संपति सारी।
अथिर रूप संसार विचारो, सब नर अरु नारी।।5।।

2. अशरण भावना

काल सिंह ने मृग चेतन को, घेरा भव वन में।
नहीं बचावन हारा कोई, यों समझो मन में।।
मंत्र यंत्र सेना धन संपति, राज पाट छूटे।
वश नहि चलता काल लुटेरा, काय नगरि लूटे।।6।।

चक्ररत्न हलधर सा भाई, काम नहीं आया।
एक तीर के लगत कृष्ण की, विनश गई काया।।
देव धर्म गुरु शरण जगत में, और नहीं कोई।
भ्रम से फिरे भटकता चेतन, यूं ही उमर खोई।।7।।

3. संसार भावना

जनम–मरन अरु जरा–रोग से, सदा दुःखी रहता।
द्रव्य क्षेत्र अरु काल भाव भव, परिवर्तन सहता।।

छेदन भेदन नरक पशुगति, वध बंधन सहना।
राग–उदय से दुःख सुरगति में, कहाँ सुखी रहना।।8।।

भोगि पुण्यफल हो इकइन्द्री, क्या इसमें लाली।
कुतवाली दिनचार वही फिर, खुरपा अरु जाली।।
मानुष–जन्म अनेक विपतिमय, कहीं न सुख देखा।
पंचमगति सुख मिले शुभाशुभ, का मेटो लेखा।।9।।

4. एकत्व भावना

जन्मे मरे अकेला चेतन, सुख–दुःख का भोगी।
और किसी का क्या इक दिन यह, देह जुदी होगी।।
कमला चलत न पैंड जाय, मरघट तक परिवारा।
अपने अपने सुख को रोवैं, पिता पुत्र दारा।।10।।

ज्यों मेले में पंथीजन मिल, नेह फिरैं धरते।
ज्यों तरुवर पै रैन बसेरा, पंछी आ करते।।
कोस कोई दो कोस कोई उड़, फिर थक–थक हारै।
जाय अकेला हंस संग में, कोई न पर मारै।।11।।

5. अन्यत्व भावना

मोह–रूप मृग–तृष्णा जग में, मिथ्या जल चमके।
मृग चेतन नित भ्रम में उठ, उठ दौड़ैं थक थक के।।
जल नहिं पावै प्राण गमावै, भटक भटक मरता।
वस्तु पराई मानै अपनी, भेद नहीं करता।।12।।

तू चेतन अरु देह अचेतन, यह जड़ तू ज्ञानी।
मिले–अनादि यतन तैं बिछुड़ै, ज्यों पय अरु पानी।।
रूप तुम्हारा सबसों न्यारा, भेद ज्ञान करना।
जोलों पौरुष थकै न तोलों, उद्यम सौं चरना।।13।।

6. अशुचि भावना

तू नित पोखै यह सूखे ज्यों, धोवै त्यों मैली।
निश दिन करै उपाय देह का, रोग-दशा फैली।।
मात-पिता-रज-वीरज मिलकर, बनी देह तेरी।
मांस हाड़ नश लहू राध की, प्रगट व्याधि घेरी।।14।।

काना पौंड़ा पड़ा हाथ यह, चूसै तो रोवै।
फलै अनंत जु धर्म ध्यान की, भूमि-विषै बोवै।।
केसर चंदन पुष्प सुगन्धित, वस्तु देख सारी।
देह परसते होय अपावन, निशदिन मल जारी।।15।।

7. आस्रव भावना

ज्यों सर-जल आवत मोरी त्यों, आस्रव कर्मन को।
दर्वित जीव प्रदेश गहै जब, पुद्‌गल भरमन को।।
भावित आस्रव भाव शुभाशुभ, निशदिन चेतन को।
पाप-पुण्य के दोनों करता, कारण बंधन को।।16।।

पन-मिथ्यात योग-पंद्रह, द्वादश-अविरत जानो।
पंचरु बीस कषाय मिले सब, सत्तावन मानो।।
मोह-भाव की ममता टारै, पर परणति खोते।
करै मोख का यतन निरास्रव, ज्ञानीजन होते।।17।।

8. संवर भावना

ज्यों मोरी में डाट लगावै, तब जल रुक जाता।
त्यों आस्रव को रोके संवर, क्यों नहिं मन लाता।।
पंच महाव्रत समिति गुप्तिकर वचन काय मन को।
दशविध-धर्म परीषह-बाईस, बारह भावन को।।18।।

यह सब भाव सतावन मिलकर, आस्रव को खोते।
स्वप्न दशा से जागो चेतन, कहाँ पड़े सोते।।

भाव शुभाशुभ रहित शुद्ध, भावन संवर भावै।
डाँट लगत यह नाव पड़ी, मझधार पार जावै।।19।।

9. निर्जरा भावना

ज्यों सरवर जल रुका सूखता, तपन पड़े भारी।
संवर रोके कर्म निर्जरा, है सोखनहारी।।
उदय-भोग सविपाक-समय, पक जाय आम डाली।
दूजी है अविपाक पकावै, पाल विषै माली।।20।।

पहली सबके होय नहीं, कुछ सरै काम तेरा।
दूजी करै जु उद्यम करकै, मिटे जगत फेरा।।
संवर सहित करो तप प्रानी, मिलै मुकत रानी।
इस दुल्हन की यही सहेली, जानै सब ज्ञानी।।21।।

10. लोक भावना

लोक अलोक आकाश माहिं थिर, निराधार जानो।
पुरुषरूप-कर-कटी भये, षट्, द्रव्यनसों मानो।।
इसका कोई न करता हरता, अमिट अनादी है।
जीव रु पुद्‌गल नाचै यामैं, कर्म उपाधी है।।22।।

पाप पुण्य सों जीव जगत में, नित सुख-दुःख भरता।
अपनी करनी आप भरै सिर, औरन के धरता।।
मोहकर्म को नाश मैटकर, सब जग की आशा।
निज पद में थिर होय लोक के, शीश करो बासा।।23।।

11. बोधि-दुर्लभ भावना

दुर्लभ है निगोद से थावर, अरु त्रसगति पानी।
नर काया को सुरपति तरसे, सो दुर्लभ प्राणी।।

उत्तम देश सुसंगति दुर्लभ, श्रावककुल पाना।
दुर्लभ सम्यक् दुर्लभ संयम, पंचम गुण ठाना।।24।।

दुर्लभ रत्नत्रय आराधन, दीक्षा का धरना।
दुर्लभ मुनिवर के व्रत पालन, शुद्धभाव करना।।
दुर्लभ तैं दुर्लभ है चेतन, बोधिज्ञान पावै।
पाकर केवलज्ञान नहीं फिर, इस भव में आवै।।25।।

12. धर्म भावना

एकान्तवाद के धारी जग में, दर्शन बहुतेरे,
कल्पित नाना युक्ति बनाकर, ज्ञान हरें मेरे।
हो सुछन्द सब पाप करें सिर, करता के लावैं,
कोई छिनक कोई करता से, जग में भटकावैं।।26।।

वीतराग सर्वज्ञ दोष बिन, श्रीजिन की वानी।
सप्त तत्त्व का वर्णन जामें, सबको सुखदानी।।
इनका चिंतवन बार-बार कर, श्रद्धा उर धरना।
'मंगत' इसी जतन तैं इक दिन, भव-सागर-तरना।।27।।

इत्याशीर्वादः।

बारह भावना

राजा राणा छत्रपति, हाथिन के असवार।
मरना सबको एक दिन, अपनी-अपनी वार।।1।।

दल बल देवी देवता, मात-पिता परिवार।
मरती बिरियाँ जीव को, कोई न राखनहार।।2।।

दाम बिना निर्धन दुःखी, तृष्णावश धनवान।
कहूँ न सुख संसार में, सब जग देख्यों छान।।3।।

आप अकेला अवतरे, मरे अकेलो होय।
यूँ कबहूँ इस जीव को, साथी सगा न कोय।।4।।

जहाँ देह अपनी नहीं, तहाँ न अपनो कोय।
घर संपत्ति पर प्रगट ये, पर हैं परिजन लोय।।5।।

दिपै चाम-चादर मढ़ी, हाड़ पींजरा देह।
भीतर या सम जगत में, अवर नहीं घिन-गेह।।6।।

मोह-नींद के जोर, जगवासी घूमैं सदा।
कर्म-चोर चहुँ ओर, सरवस लूटैं सुध नहीं।।7।।

सतगुरु देय जगाय, मोह-नींद जब उपशमें।
तब कछु बनहिं उपाय, कर्मचोर आवत रुकैं।।8।।

ज्ञान-दीप तप-तेल भर, घर शौधे भ्रम छोर।
या विधि बिन निकसे नहीं, बैठे पूरब चोर।।9।।

पंच महाव्रत संचरण, समिति पंच परकार।
प्रबल पंच इन्द्रिय विजय, धार निर्जरा सार।।10।।

चौदह राजु उतंग नभ, लोक पुरुष-संठान।
तामें जीव अनादितैं, भरमत हैं बिन ज्ञान।।11।।

धन कन कंचन राजसुख, सबहि सुलभकर जान।
दुर्लभ है संसार में, एक जथारथ ज्ञान।।12।।

जाँचे सुर-तरु देय सुख, चिंतन चिंता रैन।
बिन जाचै बिन चिन्तये, धर्म सकल सुख दैन।।13।।

इत्याशीर्वादः।

दर्शन स्तुति

(सकल ज्ञेय...)

सकल ज्ञेय ज्ञायक तदपि, निजानन्द रसलीन।
सो जिनेन्द्र जयवन्त नित, अरि रज रहस विहीन।।

जय वीतराग विज्ञान पूर, जय मोहतिमिर को हरनसूर।
जय ज्ञान अनन्तानन्तधार, दृग सुख वीरज मंडित अपार।।
जय परम शांत मुद्रा समेत, भविजन को निज अनुभूति हेत।
भवि भागन वश जोगे वशाय, तुम धुनि है सुनि विभ्रम नशाय।।

तुम गुण चिंतत निज पर विवेक, प्रगटै विघटै आपद अनेक।
तुम जगभूषण दूषण वियुक्त, सब महिमायुक्त विकल्पमुक्त।।
अविरुद्ध शुद्ध चेतन स्वरूप, परमात्म परम पावन अनूप।
शुभ अशुभ विभाव अभाव कीन, स्वाभाविक परिणति मय अछीण।।

अष्टादश दोष विमुक्त धीर, सुचतुष्टयमय राजत गम्भीर।
मुनि गणधरादि सेवत महन्त, नव केवल लब्धिरमा धरंत।।
तुम शासन सेय अमेय जीव, शिव गये जांहि जै हैं सदीव।
भवसागर में दुख छार वारि, तारन को ओर न आप टारि।।

यह लखि निज दुख गद हरण काज, तुम ही निमित्त कारण इलाज।
जानें तातैं मैं शरण आय, उचरो निज दुख जो चिर लहाय।।
मैं भ्रम्यो अपन को विसरि आप, अपनाये विधि फल पुण्य-पाप।
निज को पर को करता पिछान, पर में अनिष्टता इष्ट ठान।।

आकुलित भयो अज्ञान धारि, ज्यों मृग-मृगतृष्णा जानि वारि।
तन परणति में, आपो चितार, कबहुँ न अनुभवो स्वपद सार।।
तुमको बिन जाने जो क्लेश, पाये सो तुम जानत जिनेश।
पशु नारक नर सुरगति मझार भव धर-धर मर्‌यो अनन्तबार।।

अब काल लब्धि बल तैं दयाल, तुम दर्शन पाय भयो खुशहाल।
मन शांत भयो मिटि सकल द्वन्द, चाख्यो स्वातमरससुख निकन्द।।
तातैं अब ऐसी करहु नाथ, बिछुरे न कभी तुम चरण साथ।
तुम गुण गण को नहिं छेव देव, जग तारन को तुम विरद एव।।

आतम के अहित विषय कषाय, इनमें मेरी परणति न जाय।
मैं रहूँ आप में आप लीन, सो करो होऊँ ज्यों निजाधीन।।
मेरे न चाह कछु और ईश, रत्नत्रय निधि दीजे मुनीश।
मुझ कारज के कारन सु आप, शिव करहु हरहु मन मोहताप।।

शशि शांति करन तप हरन हेत, स्वयमेव तथा तुम कुशल देत।
पीवत पीयूष ज्यों रोग जाय, त्यों तुम अनुभव तैं भव नशाय।।
त्रिभुवन तिहुँ काल मंझार कोय, नहिं तुम बिन निज सुखदाय होय।
मो उर यह निश्चय भयो आज, दुख जलधि उतारन तुम जिहाज।।

दोहा

तुम गुण गण मणि गणपति, गणत न पावहिं पार।
''दौल'' स्वल्पमति किम कहैं, नमु त्रियोग सम्हार।।

***

स्तुति *(अहो जगतगुरु)*

पं. भूधरदासकृत स्तुति

अहो ! जगतगुरु देव, सुनिए अरज हमारी।
तुम प्रभु दीनदयाल, मैं दुखिया संसारी।।
इस भव वन में माहिं, काल अनादि गमायो।
भ्रम्यो चहूँगति माहिं, सुख नहिं दुख बहु पायो।।
कर्म महारिपु जोर, एक न कान करैं जी।
मन माने दुख देहिं, काहूँसों नाहिं डरैं जी।।
कबहूँ इतर निगोद, कबहूँ नर्क दिखावै।
सुर–नर–पशुगति माहिं, बहुविधि नाच नचावै।।
प्रभु ! इनके परसंग, भव भव माहिं बुरो जी।
जे दुःख देखे देव ! तुमसों नाहिं दुरो जी।।
एक जनम की बात, कहि न सकौं सुनि स्वामी।
तुम अनन्त परजाय, जानत अन्तरयामी।।
मैं तो एक अनाथ, ये मिल दुष्ट घनेरे।
कियो बहुत बेहाल, सुनियों साहिब मेरे।।
ज्ञान महानिधि लूटि, रंक निबल करि डार्‌यो।
इन ही तुम मुझ मांहि, हे जिन ! अन्तर पार्‌यो।।
पाप पुण्य मिल दोय, पायनि बेड़ी डारी।
तन कारागृह माहिं, मोहि दियो दुःख भारी।।
इनको नेक बिगार, मैं कछु नाहिं कियो जी।
बिन कारन जगवंद्य ! बहुविधि बैर लियो जी।।
अब आयो तुम पास सुनि कर, सुजस तिहारो।
नीति निपुन महाराज, कीजै न्याय हमारो।।
दुष्टन देहु निकार, साधुन को रख लीजै।
विनवै 'भूधरदास' हे प्रभु ! ढ़ील न कीजै।।

गुरु स्तुति *(ते गुरु मेरे मन वसो...)*

ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवजलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे श्री ऋषिराज ।।टेक।।
मोह महारिपु जानिकै, छांड्यो सब घरबार।
होय दिगम्बर वन बसे, आतम शुद्ध विचार।।
रोग उरग बिल वपु गिण्यो, भोग भुजङ्ग समान।
कदली तरु संसार है, त्याग सब यह जान।।
रत्नत्रय निधि उर धरैं, अरु निर्ग्रन्थ त्रिकाल।
मार्‌यो काम खबीसको, स्वामी परम दयाल।।
पंच महाव्रत आचरैं, पांचों समिति समेत।
तीन गुपति पालैं सदा, अजर अमर पद हेत।।
धर्म धरैं दश लक्ष्णी, भावें भावना सार।
सहैं परीषह बीस द्वै, चारित रतन भण्डार।।
जेठ तपै रवि आकरो, सूखै सरवर नीर।
शैल शिखर मुनि तप तपैं, दाझै नगन शरीर।।
पावस रैन डरावनी, बरसै जलधर धार।
तरुतल निवसैं साहसी, चालै झंझाधार।।
शीत पड़े कपि–मद गले, दाहै सब बनराय।
ताल तरंगनिकै तटै, ठाड़े ध्यान लगाय।।
इह विधि दुद्धर तप तपैं, तीनों कालमंझार।
लागे सहज सरूपमें, तनसों ममत निवार।।
पूरब भोग न चिन्तवै, आगम वांछा नाहिं।
चहुँगति के दुःखों से डरै, सुरति लगी शिवमाहिं।।
रंग महल में पोढ़ते, कोमल सेज बिछाय।
ते पश्चिम निशि भूमि में, सोवै संवरि काय।।
गज चढ़ि चलते गरब सों, सेना सजि चतुरङ्ग।
निरखि निरखि पग ते धरैं, पालैं करुणा अंग।।
वे गुरु चरण जहाँ धरैं, जग में तीरथ जेह।
सो रज मम मस्तक चढ़ो ! 'भूधर' माँगै एह।।

निर्वाण काण्ड भाषा

दोहा – वीतराग वन्दौं सदा, भाव सहित सिर नाय।
कहूँ काण्ड निर्वाण की, भाषा सुगम बनाय।।1।।

चौपाई

अष्टापद आदीश्वर स्वामि, वासुपूज्य चम्पापुरि नामि।
नेमिनाथ स्वामी गिरनार, वन्दौं भाव-भगति उर धार।।2।।

चरम तीर्थंकर चरम-शरीर, पावापुरि स्वामी महावीर।
शिखरसम्मेद जिनेश्वर बीस, भावसहित वन्दौं निश-दीस।।3।।

वरदत्तराय अरु इंद्र मुनिंद्र, सायरदत्त आदि गुणवृंद।
नगर तारवर मुनि उठकोड़ि, वंदौं भावसहित कर जोड़ि।।4।।

श्रीगिरनार शिखर विख्यात, कोड़ि बहत्तर अरु सौ सात।
संबु-प्रद्युम्न कुमार द्वै-भाय, अनिरुद्ध आदि नमूँ तसु पाय।।5।।

रामचंद्र के सुत द्वै वीर, लाड-नरिंद आदि गुणधीर।
पाँच कोड़ि मुनि मुक्ति मंझार, पावागिरि वंदौं निरधार।।6।।

पांडव तीन द्रविड़-राजान, आठ कोड़ि मुनि मुकति पयान।
श्री शत्रुंजय-गिरि के सीस, भावसहित वंदौं निश-दीस।।7।।

जे बलभद्र मुकति में गये, आठ कोड़ि मुनि औरहु भये।
श्री गजपंथ शिखर सुविशाल, तिनके चरण नमूँ तिहुँ काल।।8।।

राम हनू सुग्रीव सुडील, गव गवाख्य नील महानील।
कोड़ि निन्याणवे मुक्ति पयान, तुंगीगिरि वंदौं धरि ध्यान।।9।।

नंग अनंग कुमार सुजान, पाँच कोड़ि अरु अर्घ प्रमान।
मुक्ति गये सोनागिरि-शीश, ते वंदौं त्रिभुवनपति ईस।।10।।

रावण के सुत आदिकुमार, मुक्ति गये रेवा-तट सार।
कोटि पंच अरु लाख पचास, ते वन्दौं धरि परम हुलास।।11।।

रेवानदी सिद्धवर कूट, पश्चिम दिशा देह जह छूट।
द्वै चक्री दश कामकुमार, आठकोड़ि वंदौं भव पार।।12।।

बड़वानी बड़नगर सुचंग, दक्षिण दिशि गिरि चूल उतंग।
इंद्रजीत अरु कुंभ जु कर्ण, ते वंदौं भव-सागर तर्ण।।13।।

सुवरण-भद्र आदि मुनि चार, पावागिरि-वर-शिखर मँझार।
चेलना नदी-तीर के पास, मुक्ति गये वंदौं नित तास।।14।।

फलहोड़ी बड़गाम अनूप, पच्छिम दिशा द्रोणागिरि रूप।
गुरुदत्तादि-मुनीसुर जहाँ, मुक्ति गये वंदौं नित तहाँ।।15।।

बाल महाबाल मुनि दोय, नागकुमार मिले त्रय होय।
श्री अष्टापद मुक्ति मँझार, ते वंदौं नित सुरत सँभार।।16।।

अचलापुर की दिशा ईसान, तहाँ मेढ़गिरि नाम प्रधान।
साढ़े तीन कोड़ि मुनिराय, तिनके चरण नमूँ चित लाय।।17।।

वंशस्थल वन के ढिग होय, पच्छिम दिशा कुंथुगिरि सोय।
कुलभूषण देशभूषण नाम, तिनके चरणनि करूँ प्रणाम।।18।।

जसरथ राजा के सुत कहे, देश कलिंग पाँच सौ लहे।
कोटिशिला मुनि कोटि प्रमान, वंदन करूँ जोरि जुग पान।।19।।

समवसरण श्री पार्श्व-जिनंद, रेसिंदीगिरि नयनानंद।
वरदत्तादि पंच ऋषिराज, ते वंदौं नित धरम-जिहाज।।20।।

मथुरापुरी पवित्र उद्यान, जम्बूस्वामी जी निर्वाण।
चरमकेवली पंचमकाल, ते वन्दौं नित दीनदयाल।।21।।

तीन लोक के तीरथ जहाँ, नित प्रति वंदन कीजै तहाँ।
मन-वच-काय सहित सिर नाय, वंदन करहिं भविक गुण गाय।।22।।

संवत् सतरह सौ इकताल, आश्विन सुदि दशमी सुविशाल।
'भैया' वंदन करहिं त्रिकाल, जय निर्वाण काण्ड गुणमाल।।23।।

इत्याशीर्वाद :।

आचार्य वंदना

श्री सिद्ध भक्ति

पौर्वाह्निक आचार्य (भक्ति) वंदना, पूर्वाचार्यों के अनुसार।
सकल कर्म के क्षय हेतु हम, करते हैं गुरु बारंबार।।
भाव पुष्प से पूजा वंदन, स्तव सहित समर्पित अर्घ्य।
श्री सिद्धो की भक्ति संबंधी, करते हैं हम कायोत्सर्ग।।

(9 बार णमोकार मंत्र पढ़े)

कायोत्सर्ग

सिद्धों के हैं आठ मूलगुण, दर्श अनन्त वीर्य सुख ज्ञान।
अवगाहन सूक्ष्मत्व अगुरुलघु, अव्याबाध अनन्त प्रमाण।।
तप से नय संयम चरित्र से, सिद्ध हुए हैं दर्शन ज्ञान।
ऐसे सिद्ध प्रभु के चरणों, करते बारम्बार प्रणाम।।

अञ्चलिका

सिद्ध भक्ति के कायोत्सर्ग में, हुई हो कोई हम से भूल।
हे भगवन् ! हम इच्छा करते, वह गल्ती होवे निर्मूल।।
सम्यक् दर्शन ज्ञान चरित मय, अष्ट कर्म से पूर्ण विमुक्त।
उर्ध्व लोक के शीर्ष विराजित, अष्ट गुणों से हैं संयुक्त।।

वर्तमान अरु भूत भविष्यत, तीन काल के जगत् प्रसिद्ध।
तप से नय संयम चारित्र से, जो भी जीव हुए हैं सिद्ध ।
नित्य अर्चना पूजा वंदन, नमन् करें हो सुगति गमन।।
बोधि समाधी जिन गुण पाएँ, कर्म कष्ट का होय शमन।।

श्रुत भक्ति

पौर्वाह्निक आचार्य (भक्ति) वंदना, पूर्वाचार्यों के अनुसार।
सकल कर्म के क्षय हेतु हम, करते हैं गुरु बारम्बार।।

भाव पुष्प से पूजा वन्दन, स्तव सहित समर्पित अर्घ्य।
श्री जिनश्रुत भक्ति सम्बंधी, करते हैं हम कायोत्सर्ग।।1।।

(9 बार णमोकार मंत्र पढ़े)

एक सौ बारह कोटि तिरासी, लाख सहस हैं अट्ठावन।
पाँच पदों से सहित सुश्रुत को, मेरा है शत्-शत् वन्दन।।
अर्हत् कथित सु गणधर गूथित, महा समुद्र रूप श्रुतज्ञान।
भक्ति सहित हम शीष झुकाकर, करते बारम्बार प्रणाम।।1।।

अञ्चलिका

हे ! भगवन् हम इच्छा करते, पावन श्री श्रुत भक्ति का।
कायोत्सर्ग किया जो हमने, सर्वदोष से मुक्ति का।।
आंगोपांग प्रकीर्णक प्राभृत, प्रथमानुयोग तथा परिकर्म।
सहित पूर्वगत और चूलिका, स्तुति सूत्र कथा जिनधर्म।।2।।

नित्य अर्चना पूजा करते, करते वन्दन सहित नमन।
सर्व कर्म का क्षय हो जावे, दु:खों का हो पूर्ण शमन।।
बोधी का हो लाभ मुझे अरु, विशद सुगति में करूँ गमन।
जिन गुण की सम्पती पाएँ, और समाधि सहित मरण।।3।।

आचार्य भक्ति

पौर्वाह्निक आचार्य वंदना, पूर्वाचार्यों के अनुसार।
सकल कर्म के क्षय हेतु हम, करते हैं गुरु बारंबार।।
भाव पुष्प से पूजा वन्दन, स्तव सहित समर्पित अर्घ्य।
श्री आचार्य भक्ति संबंधी, करते हैं हम कायोत्सर्ग।।

(9 बार णमोकार मंत्र पढ़े)

जो श्रुत सागर में पारंगत, स्व पर मत में बुद्धि निपुण ।
सम्यक् तप चारित्र की निधि हैं, गुरु गुण गण को विशद नमन्।।

छत्तिस मूल गुणों के धारी, पालन करते पञ्चाचार।
शिष्यों का जो करें अनुग्रह, वन्दनीय हैं धर्माचार्य।।1।

गुरु भक्ति संयम से तिरते, भव सागर है बड़ा महान्।
अष्ट कर्म का छेदन करते, जन्म मरण की करते हान।।
ध्यान रूप अग्नि में प्रतिदिन, व्रत अरु मंत्र होम में लीन।
षट् आवश्यक पालन करने, में रहते हरदम लवलीन।।2।।

तप रूपी धन जिनका धन है, शील व्रतों के ओढ़े वस्त्र।
लाख चौरासी गुण के हरदम, साथ में अपने रखते शस्त्र।।
साधु क्रिया का पालन करते, सूर्य चन्द्र से तेज महान्।
मोक्ष महल के द्वार खोलने, हेतु योद्धा संत प्रधान।।3।।

ऐसे सद् साधुजन मुझ पर, हो प्रसन्न दें करुणादान।
सम्यक् दर्शन ज्ञान चरण के, सागर हे गुरुवर ! गुणवान।।
मोक्ष मार्ग के उपदेशक गुरु, सारे जग में चरण शरण।
रक्षा करो हमारी गुरुवर, चरण कमल में विशद नमन्।।4।।

अञ्चलिका

हे ! भगवन् हम इच्छा करते, जैनाचार्य की भक्ति का।
कायोत्सर्ग किया जो हमने, सर्व दोष से मुक्ति का।।
सम्यग्दर्शन ज्ञान चरण अरु, पञ्चाचार के शुभ साधक।
श्री आचार्य अरु उपाध्याय जी, द्वादशांग के आराधक।।5।।

सम्यक् दर्शन ज्ञान चरण जो, रत्नात्रय को पाल रहे।
सर्व साधु जी शुद्ध भाव से, चेतन तत्त्व सम्भाल रहे।।
कर्म दुःख क्षय करूँ समाधि, बोधि सुगति में जाने को।
नित्य वन्दना पूजा अर्चा, करते जिन गुण पाने को।।6।।

***

मेरी भावना

–जुगलकिशोरजी

जिसने राग–द्वेष कामादिक, जीते सब जग जान लिया,
सब जीवों को मोक्षमार्ग का, निस्पृह हो उपदेश दिया।
बुद्ध, वीर, जिन, हरि, हर ब्रह्मा या उसको स्वाधीन कहो,
भक्तिभाव से प्रेरित हो यह चित्त उसी में लीन रहो।।1।।

विषयों की आशा नहिं जिनके साम्यभाव धन रखते हैं,
निज–पर के हित–साधन में जो निश–दिन तत्पर रहते हैं।
स्वार्थ त्याग की कठिन तपस्या बिना खेद जो करते हैं,
ऐसे ज्ञानी साधु जगत के दुःख समूह को हरते हैं।।2।।

रहे सदा सत्संग उन्हीं का ध्यान उन्हीं का नित्य रहे,
उन ही जैसी चर्या में यह चित्त सदा अनुरक्त रहे।
नहीं सताऊँ किसी जीव को झूठ कभी नहिं कहा करूँ,
परधन वनिता पर न लुभाऊँ संतोषामृत पिया करूँ।।3।।

अहंकार का भाव न रक्खूँ नहीं किसी पर क्रोध करूँ,
देख दूसरों की बढ़ती को कभी न ईर्ष्या–भाव धरूँ।
रहे भावना ऐसी मेरी सरल सत्य व्यवहार करूँ,
बने जहाँ तक इस जीवन में औरों का उपकार करूँ।।4।।

मैत्रीभाव जगत में मेरा सब जीवों से नित्य रहे,
दीन–दुःखी जीवों पर मेरे उर से करुणा–स्रोत बहे।
दुर्जन–क्रूर–कुमार्गरतों पर क्षोभ नहीं मुझको आवे,
साम्य भाव रक्खूँ मैं उन पर ऐसी परिणति हो जावे।।5।।

गुणीजनों को देख हृदय में मेरे प्रेम उमड़ आवे,
बने जहाँ तक उनकी सेवा करके यह मन सुख पावे।
होऊँ नहीं कृतघ्न कभी मैं द्रोह न मेरे उर आवे,
गुण-ग्रहण का भाव रहे नित दृष्टि न दोषों पर जावे।।6।।

कोई बुरा कहो या अच्छा लक्ष्मी आवे या जावे,
लाखों वर्षों तक जीऊँ या मृत्यु आज ही आ जावे।
अथवा कोई कैसा भी भय या लालच देने आवे,
तो भी न्याय मार्ग से मेरा कभी न पद डिगने पावे।।7।।

होकर सुख में मग्न न फूले दुःख में कभी न घबरावे,
पर्वत-नदी श्मशान भयानक अटवी से नहिं भय खावे।
रहे अडोल अकम्प निरन्तर यह मन दृढ़तर बन जावे,
इष्ट वियोग अनिष्ट योग में सहनशीलता दिखलावे।।8।।

सुखी रहें सब जीव जगत के कोई कभी न घबरावे,
बैर-पाप अभिमान छोड़ जग नित्य नये मंगल गावे।
घर-घर चर्चा रहे धर्म की दुष्कृत दुष्कर हो जावें,
ज्ञानचरित उन्नतकर अपना मनुज जन्म-फल सब पावें।।9।।

ईति भीति व्यापै नहिं जग में वृष्टि समय पर हुआ करे,
धर्मनिष्ठ होकर राजा भी न्याय प्रजा का किया करे।
रोग, मरी दुर्भिक्ष न फैले प्रजा शान्ति से जिया करे,
परम अहिंसा धर्म जगत में फैल सर्वहित किया करे।।10।।

फैले प्रेम परस्पर जग में मोह दूर ही रहा करे,
अप्रिय-कटुक कठोर शब्द नहिं कोई मुख से कहा करे।
बन कर सब 'युग-वीर' हृदय से देशोन्नति रत रहा करें,
वस्तु स्वरूप विचार खुशी से सब दुःख संकट सहा करें।।11।।

सोलहकारण भावना

दोहा – सोलह कारण भावना, विशद भाव से भाय।
तीर्थंकर पदवी लहे, मोक्ष महाफल पाय।।

दर्शन विशुद्धि भावना ***(विष्णु पद छन्द)***

मोह तिमिर से आच्छादित है, तीन लोक सारा।
काल अनादि से भटके हैं, मिथ्या भ्रम द्वारा।।
कभी नरक नर सुर गति पायी, पशु गति में भटके।
राग द्वेष मद मोह प्राप्त कर, विषयों में अटके।।1।।

सप्त तत्त्व छह द्रव्य गुणों में, श्रद्धा उर धरना।
मिथ्या भाव छोड़कर सम्यक्, रुचि प्राप्त करना।।
शंकादि दोषों को तजकर, भेद ज्ञान पाना।
दरश विशुद्धि गुणीजनों ने, या को ही माना।।2।।

विनय सम्पन्न भावना

अहंकार दुर्गति का कारण, सद्गति का नाशी।
निज के गुण को हरने वाला, दुर्गुण की राशि।।
मद की दम को दमन करें जो, बनकर श्रद्धानी।
नम्र भाव धारण करते हैं, जग में सद्ज्ञानी।।3।।

उच्च गोत्र का कारण बन्धु, मृदुल भाव गाया।
पुण्य पुरुष होता है जिसने, विनय भाव पाया।।
'विशद' विनय सम्पन्न भावना, भाव सहित गाये।
तीर्थंकर सा पद पाकर के, सिद्ध शिला जाये।।4।।

अनातिचार भावना

नर भव पाया रत्न अमौलिक, विषयों में खोता।
भोगों में अनुराग लगा जो, अतिचार होता।।
अतिचार से रहित व्रतों, को पाले जो कोई।
प्रकट होय आतम निधि उसकी, सदियों से खोई।।5।।

कृत कारित अरु अनुमोदन से, मन–वच–तन द्वारा।
नव कोटी से शील व्रतों का, पालन हो प्यारा।।
सोलहकारण शुभम् भावना, भाव सहित भावे।
अनतिचार व्रत शील से अपना, जीवन महकावे।।6।।

अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग भावना

ज्ञानावरणी कर्म ने भाई, जग में भरमाया।
सम्यक् ज्ञान हृदय में मेरे, जाग नहीं पाया।।
सम्यक् श्रद्धा के द्वारा अब, सम्यक् ज्ञान जगाना।
ज्ञाता बनकर ज्ञान के द्वारा, चित् में चित्त लगाना।।7।।

अजर अमर पद पाने हेतु, ज्ञान सुधामृत पाना।
ॐकार मय जिनवाणी के, शुभ छन्दों को गाना।।
ज्ञान योग होता अभीक्ष्ण, यह शुद्ध भाव से ध्याना।
'विशद' ज्ञान के द्वारा भाई, सिद्ध शिला को पाना।।8।।

संवेग भावना

है संसार अपार असीमित, पार नहीं पाया।
काल अनादि से प्राणी यह, जग में भरमाया।।
भय से हो भयभीत जानकर, इस जग की माया।
मंगलमय संवेग भाव बस, ये ही कहलाया।।9।।

सम्यक् दर्शन ज्ञान चरण को, सम्यक् धर्म कहा।
मोक्ष महल का सम्यक् साधन, अनुपम यही रहा।।
धर्म और उसके फल में जो, हर्ष भाव आवे।
सु संवेग भाव शास्त्रों में, ये ही कहलावे।।10।।

शक्तितस्त्याग भावना

राग आग से जलकर अब तक, यूँ ही काल बिताया।
परिणत हुए भोग विषयों को, हमने अपनाया।।
निज निधि को खोकर के हमने, पर पदार्थ पाये।
प्रकट दिखाई देते हैं पर, अपने–अपने गाये।।11।।

पर परिणत से बचकर हमको, निज निधि को पाना।
छोड़ विकल्पों को अब सारे, निज को ही ध्याना।।
यथाशक्ति जो त्याग करे, वह मोक्ष मार्ग जानो।
जैनागम में त्याग शक्तिसः, इसी तरह मानो।।12।।

शक्तितस्तप भावना

काल अनादि से यह प्राणी, तन का दास रहा।
साथ निभायेगा यह मेरा, ये विश्वास रहा।।
प्यास बढ़ाता है पीने से, जैसे जल खारा।
मृगतृष्णा बढ़ती रहती है, मिले न जल धारा।।13।।

पल–पल करके नर जीवन का, समय निकल जाता।
इन्द्रियरोध किये बिन भाई, मिले ना सुख साता।।
इच्छाओं का दमन करे, फिर महामंत्र जपना।
यथा शक्ति तप करना भाई, शक्तिसः तपना।।14।।

साधु समाधि भावना

काल अनादि से मिथ्यावश, जन्म मरण पाया।
निज शक्ति को भूल जगत् में, प्राणी भरमाया।।
आधि व्याधि अरु पद उपाधि में, नर जीवन खोया।
मोह की मदिरा पीकर भारी, कर्म बीज बोया।।15।।

जन्म मरण होता है तन का, चेतन है ज्ञाता।
कर्म करेगा जैसा प्राणी, वैसा फल पाता।।
चेतन का ना अंत है कोई, ना ही आदी है।
श्रेष्ठ मरण औ सत् अनुभूति, साधु समाधि है।।16।।

वैय्यावृत्ती भावना

स्वारथ का संसार है भाई, सारा का सारा।
लालच की बहती है जग में, बड़ी तीव्र धारा।।

पर उपकार को भूल रहे हैं, इस जग के प्राणी।
पर में निज उपकार छुपा है, कहती जिनवाणी।।17।।

साधक करे साधना अपनी, संयम के द्वारा।
रत्नत्रय अपने जीवन से, जिनको है प्यारा।।
विघ्न साधना में कोई भी, उनकी आ जावे।
वैय्यावृत्ती विघ्न दूर, करना ही कहलावे।।18।।

अर्हद् भक्ति भावना

चार घातिया कर्मनाशकर, 'विशद' ज्ञान पाये।
समोशरण की सभा में बैठे, अर्हत् कहलाये।।
दिव्य देशना जिनकी पावन, जग में उपकारी।
सुहित हेतु पाते इस जग के, सारे नर-नारी।।19।।

अर्हत् होते हैं इस जग में, सद्गुण के दाता।
अतः सार्व कहलाए भगवन्, भविजन के त्राता।।
हो अनुराग गुणों में उनके, भाव सहित भाई।
अर्हत् भक्ति गुणीजनों ने, इसी तरह गाई।।20।।

आचार्य भक्ति भावना

दर्शन ज्ञान चरित तप साधक, वीर्यचरण धारी।
रत्नत्रय का पालन करते, गुरु पंचाचारी।।
भक्तों के हैं भाग्य विधाता, मुक्ती पद दाता।
शिक्षा दीक्षा देने वाले, जन-जन के त्राता।।21।।

सत् संयम की इच्छा करके, गुरु के गुण गाते।
भाव सहित वंदन करने को, चरणों में जाते।।
गुरु चरणों की भक्ति जग में, होती सुख दानी।
गुणियों ने आचार्य भक्ति शुभ, इसी तरह मानी।।22।।

बहुश्रुत (उपाध्याय) भक्ति भावना

ग्यारह अंग पूर्व चौदह के, होते जो ज्ञाता।
सम्यक् दर्शन ज्ञान के गुरुवर, होते हैं दाता।।
संतों में जो श्रेष्ठ कहे हैं, समता के धारी।
ज्ञान ध्यान तप में रत रहते, ऋषिवर अनगारी।।23।।

करते हैं उपदेश धर्म का, जो मंगलकारी।
संत दिगम्बर और निरम्बर, नीरस आहारी।।
उपाध्याय को जग भोगों से, पूर्ण विरक्ति है।
भाव सहित गुण गाना उनके, बहुश्रुत भक्ति है।।24।।

प्रवचन भक्ति भावना

द्रव्य भाव श्रुत के भावों में, तत्पर जो रहते।
घोर तपस्या करने वाले, परिषह भी सहते।।
चेतन का अनुभव जो करते, निर्मल चित्धारी।
चित् को निर्मल करने वाली, वाणी मनहारी।।25।।

सप्त तत्त्व झंकृत होते हैं, जिनवाणी द्वारा।
दिव्य देशना निःसृत होती, जैसे जलधारा।।
जिस वाणी से जागृत होवे, चेतन शक्ति है।
'विशद' ज्ञान में वर्णित पावन, प्रवचन भक्ति है।।26।।

आवश्यकापरिहाणी भावना

नहीं कभी सत् कर्म किया है, जीवन व्यर्थ गया।
भूले हैं कर्त्तव्य स्वयं के, आती बड़ी दया।।
श्रावक के गुण क्या होते हैं, जाने नहीं कभी।
पाप व्यसन जो होते जग में, करते रहे सभी।।27।।

होते क्या कर्त्तव्य हमारे, उनको पाना है।
व्रत संयम से जीवन अपना, हमें सजाना है।।

कर्त्तव्यों के पालन हेतु, भावों से भरना।
आवश्यकऽपरिहार भावना, सम्पूरण करना।।28।।

मार्ग प्रभावना भावना

सम्यक् दर्शन ज्ञान चरण यह, सम्यक् धर्म कहा।
काल अनादी से यह बन्धु, मोक्ष का मार्ग रहा।।
मोक्ष मार्ग पर आगे चलकर, और चलाना है।
मंजिल को जब तक न पाया, बढ़ते जाना है।।29।।

महिमा अगम है जिन शासन की, कैसे उसे कहें।
संयम तप श्रद्धा भक्ति में, हरपल मगन रहें।।
मोक्ष मार्ग औ जैन धर्म की, महिमा जो गाई।
पथ प्रभावना सत् संतों ने, जग में फैलाई।।30।।

प्रवचन वत्सलत्व भावना

गाय का ज्यों बछड़े के प्रति, स्नेह अटल होता।
काय वचन और मन से शुभ, अनुराग विमल होता।।
स्वार्थ रहित साधर्मी जन से, जो अनुराग रहा।
श्री जिनेन्द्र ने जैनागम में, ये वात्सल्य कहा।।31।।

द्वेष भाव के द्वारा हमने, कितने कष्ट सहे।
मद माया की लपटों में हम, जलते 'विशद' रहे।।
सदियाँ गुजर गयीं हैं लेकिन, धर्म नहीं पाया।
चेतन की यह भूल रही, अरु रही मोह माया।।32।।

दोहा – शब्द अर्थ की भूल को, पढ़ना सुधी सुधार।
पंच परम गुरु के चरण, वंदन बारम्बार।।

इत्याशीर्वाद : ।

रचियता : *आचार्य विशदसागर*

बारह भावना

दोहा– वंदूँ श्री अरहंत पद, वीतराग विज्ञान।
वरणूँ बारह भावना, जग जीवन हित जान।।1।।

(विष्णुपद छन्द)

कहाँ गये चक्री जिन जीता, भरतखण्ड सारा।
कहाँ गये वह राम–अरु–लक्ष्मण, जिन रावण मारा।।
कहाँ कृष्ण रूक्मिणी सतभामा, अरु संपति सगरी।
कहाँ गये वह रंगमहल अरु, सुवरन की नगरी।।2।।

नहीं रहे वह लोभी कौरव, जूझ मरे रन में।
गये राज तज पांडव वन को, अग्नि लगी तन में।।
मोह–नींद से उठ रे चेतन, तुझे जगावन को।
हो दयाल उपदेश करैं गुरु, बारह भावन को।।3।।

1. अथिर (अनित्य) भावना

सूरज चाँद छिपै निकलै ऋतु, फिर फिर कर आवै।
प्यारी आयु ऐसी बीतै, पता नहीं पावै।।
पर्वत–पतित–नदी–सरिता–जल बहकर नहिं हटता।
स्वाँस चलत यों घटै काठ ज्यों, आरे सों कटता।।4।।

ओस–बूंद ज्यों गलै धूप में, वा अंजुलि पानी।
छिन छिन यौवन छीन होत है क्या समझै प्रानी।।
इंद्रजाल आकाश नगर सम जग–संपति सारी।
अथिर रूप संसार विचारो सब नर अरु नारी।।5।।

2. अशरण भावना

काल सिंह ने मृग चेतन को, घेरा भव वन में।
नहीं बचावन हारा कोई, यों समझो मन में।।

मंत्र यंत्र सेना धन संपति, राज पाट छूटे।
वश नहिं चलता काल लुटेरा, काय नगरि लूटे।।6।।

चक्ररत्न हलधर सा भाई, काम नहीं आया।
एक तीर के लगत कृष्ण की, विनश गई काया।।
देव धर्म गुरु शरण जगत में, और नहीं कोई।
भ्रम से फिरे भटकता चेतन, यूं ही उमर खोई।।7।।

3. संसार भावना

जनम–मरन अरु जरा–रोग से, सदा दुःखी रहता।
द्रव्य क्षेत्र अरु काल भाव भव, परिवर्तन सहता।।
छेदन भेदन नरक पशुगति, वध बंधन सहना।
राग–उदय से दुःख सुरगति में, कहाँ सुखी रहना।।8।।

भोगि पुण्यफल हो इकइंद्री, क्या इसमें लाली।
कुतवाली दिनचार वही फिर, खुरपा अरु जाली।।
मानुष–जन्म अनेक विपतिमय, कहीं न सुख देखा।
पंचमगति सुख मिले शुभाशुभ, का मेटो लेखा।।9।।

4. एकत्व भावना

जन्मे मरे अकेला चेतन, सुख–दुःख का भोगी।
और किसी का क्या इक दिन यह, देह जुदी होगी।।
कमला चलत न पैंड जाय, मरघट तक परिवारा।
अपने अपने सुख को रोवैं, पिता पुत्र दारा।।10।।

ज्यों मेले में पंथीजन मिल, नेह फिरैं धरते।
ज्यों तरुवर पै रैन बसेरा, पंछी आ करते।।
कोस कोई दो कोस कोई उड़, फिर थक–थक हारै।
जाय अकेला हंस संग में, कोई न पर मारै।।11।।

5. अन्यत्व भावना

मोह–रूप मृग–तृष्णा जग में, मिथ्या जल चमके।
मृग चेतन नित भ्रम में उठ, उठ दौड़ैं थक थक के।।
जल नहिं पावै प्राण गमावै, भटक भटक मरता।
वस्तु पराई मानै अपनी, भेद नहीं करता।।12।।

तू चेतन अरु देह अचेतन, यह जड़ तू ज्ञानी।
मिले–अनादि यतन तैं बिछुड़ै, ज्यों पय अरु पानी।।
रूप तुम्हारा सबसों न्यारा, भेद ज्ञान करना।
जोलों पौरुष थकै न तोलों, उद्यम सौं चरना।।13।।

6. अशुचि भावना

तू नित पोखै यह सूखे ज्यों, धोवै त्यों मैली।
निश दिन करै उपाय देह का, रोग–दशा फैली।।
मात–पिता–रज–वीरज मिलकर, बनी देह तेरी।
मांस हाड़ नश लहू राध की, प्रगट व्याधि घेरी।।14।।

काना पौंड़ा पड़ा हाथ यह चूसै तो रोवै।
फलै अनंत जु धर्म ध्यान की, भूमि–विषै बोवै।।
केसर चंदन पुष्प सुगन्धित, वस्तु देख सारी।
देह परसते होय अपावन, निशदिन मल जारी।।15।।

7. आस्रव भावना

ज्यों सर–जल आवत मोरी त्यों, आस्रव कर्मन को।
दर्वित जीव प्रदेश गहै जब, पुद्गल भरमन को।।
भावित आस्रव भाव शुभाशुभ, निशदिन चेतन को।
पाप–पुण्य के दोनों करता, कारण बंधन को।।16।।

पन–मिथ्यात योग–पंद्रह, द्वादश–अविरत जानो।
पंचरु बीस कषाय मिले सब, सत्तावन मानो।।

मोह-भाव की ममता टारै, पर परणति खोते।
करै मोख का यतन निरास्रव, ज्ञानीजन होते।।17।।

8. संवर भावना

ज्यों मोरी में डाट लगावै, तब जल रुक जाता।
त्यों आस्रव को रोके संवर, क्यों नहिं मन लाता।।
पंच महाव्रत समिति गुप्तिकर, वचन काय मन को।
दशविध-धर्म परीषह-बाईस, बारह भावन को।।18।।

यह सब भाव सतावन मिलकर, आस्रव को खोते।
स्वप्न दशा से जागो चेतन, कहाँ पड़े सोते।।
भाव शुभाशुभ रहित शुद्ध, भावन संवर भावै।
डाँट लगत यह नाव पड़ी, मझधार पार जावै।।19।।

9. निर्जरा भावना

ज्यों सरवर जल रुका सूखता, तपन पड़े भारी।
संवर रोके कर्म निर्जरा, है सोखनहारी।।
उदय-भोग सविपाक-समय, पक जाय आम डाली।
दूजी है अविपाक पकावै, पाल विषै माली।।20।।

पहली सबके होय नहीं, कुछ सरै काम तेरा।
दूजी करै जु उद्यम करकै, मिटे जगत फेरा।।
संवर सहित करो तप प्रानी, मिलै मुकत रानी।
इस दुल्हन की यही सहेली, जानै सब ज्ञानी।।21।।

10. लोक भावना

लोक अलोक आकाश माहिं थिर, निराधार जानो।
पुरुषरूप-कर-कटी भये, षट्, द्रव्यनसों मानो।।

इसका कोई न करता हरता, अमिट अनादी है।
जीव रु पुद्‌गल नाचै यामैं, कर्म उपाधी है।।22।।
पाप पुण्य सों जीव जगत में, नित सुख-दुःख भरता।
अपनी करनी आप भरै सिर, औरन के धरता।।
मोहकर्म को नाश मैटकर, सब जग की आशा।
निज पद में थिर होय लोक के, शीश करो बासा।।23।।

11. बोधि-दुर्लभ भावना

दुर्लभ है निगोद से थावर, अरु त्रसगति पानी।
नर काया को सुरपति तरसे, सो दुर्लभ प्राणी।।
उत्तम देश सुसंगति दुर्लभ, श्रावककुल पाना।
दुर्लभ सम्यक् दुर्लभ संयम, पंचम गुण ठाना।।24।।

दुर्लभ रत्नत्रय आराधन, दीक्षा का धरना।
दुर्लभ मुनिवर के व्रत पालन, शुद्धभाव करना।।
दुर्लभ तैं दुर्लभ है चेतन, बोधिज्ञान पावै।
पाकर केवलज्ञान नहीं फिर, इस भव में आवै।।25।।

12. धर्म भावना

एकान्तवाद के धारी जग में, दर्शन बहुतेरे,
कल्पित नाना युक्ति बनाकर, ज्ञान हरें मेरे।
हो सुछन्द सब पाप करें सिर, करता के लावैं,
कोई छिनक कोई करता से, जग में भटकावैं।।26।।

वीतराग सर्वज्ञ दोष बिन, श्रीजिन की वानी।
सप्त तत्त्व का वर्णन जामें, सबको सुखदानी।।
इनका चिंतवन बार-बार कर, श्रद्धा उर धरना।
'मंगत' इसी जतन तैं इक दिन, भव-सागर-तरना।।27।।

इत्याशीर्वादः।

वैराग्य भावना

(कविवर भूधरदास कृत)

दोहा – बीज राख फल भोगवै, ज्यों किसान जग माहिं।
त्यों चक्री नृप सुख करैं, धर्म विसारैं नाहिं।।1।।

(जोगीरास वा नरेन्द्र छन्द)

इह विधि राज करै नरनायक, भोगे पुण्य विशालो।
सुखसागर में रमत निरंतर, जात न जान्यो कालो।।
एक दिवस शुभ कर्मसंजोगे, क्षेमंकर मुनि वंदे।
देख श्री गुरु के पद पंकज, लोचन अलि आनन्दे।।2।।

तीन प्रदक्षिणा दे शिरनायो, कर पूजा थुति कीनी।
साधु-समीप विनय कर बैठ्यो, चरनन में दिठि दीनी।।
गुरु उपदेश्यो धर्म-शिरोमणि, सुन राजा वैरागे।
राज रमा वनितादिक जे रस, ते रस बेरस लागे।।3।।

मुनि सूरज कथनी किरणावलि, लगत भरम बुधि भागी।
भव तन-भोग-स्वरूप विचारयो, परम धरम अनुरागी।।
इह संसार महावन भीतर, भरमत और न आवै।
जामन मरन जरा दौं दाझै, जीव महादुःख पावै।।4।।

कबहूँ जाय नरक थिति भुंजै, छेदन भेदन भारी।
कबहूँ पशु परजाय धरै तहँ, बध बंधन भयकारी।।
सुरगति में परसंपत्ति देखे राग उदय दुख होई।
मानुषयोनि अनेक विपतिमय, सर्वसुखी नहिं कोई।।5।।

कोई इष्ट वियोगी विलखै, कोई अनिष्ट संयोगी।
कोई दीन-दरिद्री विगूचे, कोई तन के रोगी।।
किसही घर कलिहारी नारी, कै बैरी सम भाई।
किसही के दुःख बाहिर दीखै, किसही उर दुचिताई।।6।।

कोई पुत्र बिना नित झूरै, होय मरै तब रोवै।
खोटी संततिसों दुख उपजै, क्यों प्रानी सुख सोवै।।
पुण्य उदय जिनके तिनके भी, नाहिं सदा सुख साता।
यह जगवास जथारथ दीखै, सब दीखै दुःख दाता।।7।।

जो संसार विषै सुख होता, तीर्थंकर क्यों त्यागै।
काहे को शिव साधन करते, संजमसो अनुरागै।।
देह अपावन अथिर घिनावन, यामें सार न कोई।
सागर के जल सों शुचि कीजे, तो भी शुद्ध न होई।।8।।

सात कुधातु भरी मल-मूरत, चाम लपेटी सोहै।
अंतर देखत या सम जग में, अवर अपावन को है।।
नव-मल-द्वार स्रवै निशिवासर, नाम लिये घिन आवै।
व्याधि-उपाधि अनेक जहाँ तहँ, कौन सुधी सुख पावै।।9।।

पोषत तो दुःख दोष करै अति, सोषत सुख उपजावै।
दुर्जन-देह-स्वभाव बराबर, मूरख प्रीति बढ़ावै।।
राचन-जोग स्वरूप न याको, विरचन-जोग सही है।
यह तन पाय महातप कीजै, यामें सार यही है।।10।।

भोग बुरे भव रोग बढ़ावैं, बैरी हैं जग जीके।
बेरस होय विपाक समय अति, सेवत लागैं नीके।।
वज्र-अगनि विष से विषधर से, ये अधिके दुःखदाई।
धर्म-रतन के चोर चपल अति, दुर्गति-पंथ सहाई।।11।।

मोह-उदय यह जीव अज्ञानी, भोग भले कर जानै।
ज्यों कोई जन खाय धतूरा, सो सब कंचन माने।।
ज्यों-ज्यों भोग-संजोग मनोहर, मन वांछित जन पावैं।
तृष्णा नागिन त्यों-त्यों डंकै, लहर जहर की आवे।।12।।

मैं चक्री पद पाय निरन्तर, भोगे-भोग घनेरे।
तौ भी तनक भये नहिं पूरन, भोग मनोरथ मेरे।।
राजसमाज महा अघ-कारण, बैर बढ़ावनहारा।
वेश्या सम लछमी अति चंचल, याका कौन पत्यारा।।13।।

मोह महा-रिपु बैर विचार्यो, जग-जिय संकट डारे।
तन-कारागृह वनिता बेड़ी, परिजन जन रखवारे।।
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण तप, ये जियके हितकारी।
ये ही सार असार और सब, यह चक्री चितधारी।।14।।

छोड़े चौदह रत्न नवों निधि, अरु छोड़े संग साथी।
कोड़ि अठारह घोड़े छोड़े, चौरासी लख हाथी।।
इत्यादिक संपत्ति बहुतेरी, जीरण-तृण-सम त्यागी।
नीति विचार नियोगी सुत कों, राज दियो बड़भागी।।15।।

होय निशल्य अनेक नृपति संग, भूषण वसन उतारे।
श्री गुरु चरण धरी जिनमुद्रा, पंच महाव्रत धारे।।
धनि यह समझ सुबुद्धि जगोत्तम, धनि यह धीरज धारी।
ऐसी संपत्ति छोड़ बसे वन, तिन पद धोक हमारी।।16।।

दोहा – परिग्रह पोठ उतार सब, लीनो चारित पंथ।
निज स्वभाव में थिर भये, वज्रनाभि निरग्रंथ।।

।। इतिश्री वज्रनाभि चक्रवर्ती की वैराग्य भावना।।

आलोचना पाठ

दोहा– वंदों पाँचों परमगुरु, चौबीसों जिनराज।
करूँ शुद्ध आलोचना, शुद्धि करन के काज।।1।।

सखी छंद

सुनिये जिन अरज हमारी, हम दोष किये अति भारी।
तिनकी अब निर्वृत्ति काजा, तुम सरन लही जिनराजा।।2।।

इक बे ते चउ इंद्री वा, मन रहित सहित जे जीवा।
तिनकी नहिं करुणा धारी, निरदई है घात विचारी।।3।।

समरंभ समारंभ आरंभ, मन वच तन कीने प्रारंभ।
कृत कारित मोदन करिकैं, क्रोधादि चतुष्टय धरिकैं।।4।।

शत आठ जु इमि भेदनतैं, अघ कीने परिछेदन तैं।
तिनकी कहुँ कोलों कहानी, तुम जानत केवलज्ञानी।।5।।

विपरीत एकान्त विनय के, संशय अज्ञान कुनय के।
वश होय घोर अघ कीने, वचतैं नहिं जाय कहीने।।6।।

कुगुरुन की सेवा कीनी, केवल अदया करि भीनी।
या विधि मिथ्यात भ्रमायो, चहुँगति मधि दोष उपायो।।7।।

हिंसा पुनि झूठ जु चोरी, पर वनिता सों दृग जोरी।
आरंभ परिग्रह भीनो, पन पाप जु या विधि कीनो।।8।।

सपरस रसना घ्रानन को, चखु कान विषय सेवन को।
बहु करम किये मनमाने, कछु न्याय-अन्याय न जाने।।9।।

फल पंच उदुम्बर खाये, मधु मांस मद्य चित्त चाये।
नहिं अष्ट मूलगुण धारे, सेये कुव्यसन दुःखकारे।।10।।

दुइबीस अभख जिन गाये, सो भी निश-दिन भुंजाये।
कछु भेदाभेद न पायो, ज्यों त्यों करि उदर भरायो ।।11।।

अनंतानु जु बंधी जानो, प्रत्याख्यान अप्रत्याख्यानो।
संज्वलन चौकड़ी गुनिये, सब भेद जु षोडश मुनिये ।।12।।

परिहास अरति रति शोक, भय ग्लानि तिवेद संयोग।
पनबीस जु भेद भये इम, इनके वश पाप किये हम ।।13।।

निद्रा वश शयन कराई, सुपने मधि दोष लगाई।
फिर जागि विषय वन धायो, नाना विध विषफल खायो ।।14।।

आहार विहार नीहारा, इनमें नहिं जतन विचारा।
बिन देखी धरी उठाई, बिन शोधी वस्तु जु खाई ।।15।।

तब ही परमाद सतायो, बहुविधि विकलप उपजायो।
कछु सुधि बुधि नाहिं रही है, मिथ्यामति छाय गई है ।।16।।

मरजादा तुम ढिंग लीनी, ताहू में दोष जु कीनी।
भिन भिन अब कैसें कहिये, तुम ज्ञान विषैं सब पइये ।।17।।

हा हा मैं दुठ अपराधी, त्रस-जीवन राशि विराधी।
थावर की जतन न कीनी, उर में करुणा नहिं लीनी ।।18।।

पृथिवी बहु खोद कराई, महलादिक जागाँ चिनाई।
पुनि विन गाल्यो जल ढोल्यों, पंखातैं पवन बिलोल्यो ।।19।।

हा हा! मैं अदयाचारी, बहु हरित काय जु विदारी।
तामधि जीवन के खंदा, हम खाये धरि आनंदा ।।20।।

हा हा परमाद बसाई, बिन देखे अगनि जलाई।
तामध्य जीव जे आये, ते हू परलोक सिधाये ।।21।।

बीध्यो अन राति पिसायो, ईंधन बिन सोधि जलायो।
झाडू ले जागां बुहारी, चींटी आदिक जीव बिदारी ।।22।।

जल छानि जिवानी कीनी, सो हू पुनि डारि जु दीनी।
नहिं जल-थानक पहुँचाई, किरिया बिन पाप उपाई ।।23।।

जल मल मोरिन गिरवायो, कृमि-कुल बहु घात करायो।
नदियन बिच चीर धुवाये, कोसन के जीव मराये ।।24।।

अन्नादिक शोध कराई, तातें में जु जीव निसराई।
तिनका नहिं जतन कराया, गलियारैं धूप डराया ।।25।।

पुनि द्रव्य कमावन काजै, बहु आरंभ हिंसा साजै।
किये तिसनावश अघ भारी, करुणा नहिं रंच विचारी ।।26।।

इत्यादिक पाप अनंता, हम कीने श्री भगवंता।
संतति चिरकाल उपाई, वाणी तैं कहिय न जाई ।।27।।

ताको जु उदय अब आयो, नाना विध मोहि सतायो।
फल भुंजत जिय दुःख पावै, वचतैं कैसे करि गावै ।।28।।

तुम जानत केवलज्ञानी, दुःख दूर करो शिवथानी।
हम तो तुम शरण लही है, जिन तारन विरद सही है ।।29।।

इक गांव पती जो होवे, सो भी दुःखिया दुःख खोवै।
तुम तीन भुवन के स्वामी, दुःख मेटहु अंतरजामी ।।30।।

द्रौपदि को चीर बढ़ायो, सीता-प्रति कमल रचायो।
अंजन से किये अकामी, दुःख मेटो अंतरजामी ।।31।।

मेरे अवगुन न चितारो, प्रभु अपनो विरद सम्हारो।
सब दोष-रहित करि स्वामी, दुःख मेटहु अंतरजामी ।।32।।

इंद्रादिक पदवी नहिं चाहूँ, विषयनि में नाहिं लुभाऊँ।
रागादिक दोष हरीजे, परमातम निज पद दीजे।।33।।

(दोहा)

दोष-रहित जिनदेवजी, निज-पद दीज्यो मोय।
सब जीवन के सुख बढ़ें, आनंद मंगल होय।।
अनुभव माणिक पारखी, जौहरि आप जिनन्द।
ये ही वर मोहि दीजिये, चरण शरण आनन्द ।।

3. तृतीय सामायिक भाव कर्म

अब जीवन में मेरे समता भाव जग्यो है।
सब जिय मो सम समता राखो भाव लग्यो है।।
आर्त्त रौद्र द्वय ध्यान छाँड़ि करिहूँ सामायिक।
संजम मो कब शुद्ध होय भाव बधायक।।11।।
पृथिवी जल अरु अग्नि वायु चउ काय वनस्पति।
पंचहि थावर माहिं तथा त्रस जीव बसैं जित।।
बेइंद्रिय तिय चउ पंचेद्रिय माँहि जीव सब।
तिनतैं क्षमा कराऊँ मुझ पर क्षमा करो अब।।12।।
इस अवसर में मेरे सब सम कंचन अरु तृण।
महल मसान समान शत्रु अरु मित्रहिं समगण।।
जामन मरण समान जानि हम समता कीनी।
सामायिक का काल जितै यह भाव नवीनी।।13।।
मेरो है इक आतम तामें ममत जु कीनो।
और सबै सम भिन्न जानि ममता रस भीनो।।
माता पिता सुत बंधु मित्र तिय आदि सबै यह।
मोतैं न्यारे जानि जथारथ रूप कर्‌यो गह।।14।।

मैं अनादि जग जाल माँहिं फँसि रूप न जाण्यो।
एकेन्द्रिय दे आदि जंतु को प्राण हराण्यो।।
ते सब जीव समूह सुनो मेरी यह अरजी।
भव-भव को अपराध छिमा कीज्यो कर मरजी।।15।।

4. चतुर्थ स्तवन कर्म

नमौं ऋषभ जिनदेव अजित जिन जीति कर्म को।
सम्भव भव दुःख हरण करण अभिनन्द शर्म को।।
सुमति सुमति दातार तार भव सिंधु पार कर।
पद्म प्रभ पद्माभ भानि भवभीति प्रीतिधर।।16।।
श्री सुपार्श्व कृत पाश नाश भव जास शुद्ध कर।
श्री चन्द्रप्रभ चन्द्र कांति सम देह कांतिधर।।
पुष्पदन्त दमि दोष कोष भवि पोष रोषहर।
शीतल शीतल करण हरण भवताप दोष कर।।17।।
श्रेय रूप जिन श्रेय ध्येय नित सेय भव्य जन।
वासुपूज्य शत पूज्य वासवादिक भव भय हन।।
विमल विमलमति देन अन्तगत है अनन्त जिन।
धर्म शर्म शिवकरण शान्तिजिन शान्ति विधायिन।।18।।
कुंथु कुंथुमुख जीवपाल अरनाथ जाल हर।
मल्लि मल्ल सम मोह मल्ल मारन प्रचार धर।।
मुनिसुव्रत व्रतकरण नमत सुर संघहिं नमिजिन।
नेमिनाथ जिन नेमि धर्मरथ मांहि ज्ञानधन।।19।।
पार्श्व नाथ जिन पार्श्व उपल सम मोक्ष रमापति।
वर्द्धमान जिन नमूं नमूं भवदुःख कर्मकृत।।

या विधि मैं जिन संघ रूप चउबीस संख्यधर।
स्तवूं नमूं हूँ बार-बार वन्दूँ शिव सुखकर।।20।।

5. पंचम वंदना कर्म

वन्दूँ मैं जिनवीर धीर महावीर सु सन्मति।
वर्द्धमान अतिवीर वन्दि हूँ मन वच तन कृत।।
त्रिशला तनुज महेश धीश विद्यापति वन्दूँ।
वंदौं नित प्रति कनक रूप तनु पापनिकंदु।।21।।

सिद्धारथ नृपनंद द्वंद्व, दुःख दोष मिटावन।
दुरित दवानल ज्वलित ज्वाल जगजीव उधारन।।
कुण्डलपुर करि जन्म जगत् जिय आनंद कारन।
वर्ष बहत्तर आयु पाय सब ही दुःख टारन।।22।।

सप्त हस्त तनु तुङ्गभंगकृत जन्म मरण भय।
बाल ब्रह्म मय ज्ञेय हेय आदेय ज्ञानमय।
दे उपदेश उधारि तारि भवसिंधु जीव घन।
आप बसे शिवमाँहि ताहि वंदौं मन वच तन।।23।।

जाके वंदन थकी दोष दुःख दूरहि जावै।
जाके वंदन थकी मुक्तितिय सन्मुख आवै।
जाके वंदन थकी वंद्य होवे सुरगन के।
ऐसे वीर जिनेश वन्दि हूँ क्रम युग तिनके।।24।।

सामायिक षट्कर्म मांहिं वंदन यह पंचम।
वंदौं वीर जिनेन्द्र इंद्र शत वंद्य वंद्य मम।।

जन्म मरण भय हरो करो अब शान्ति शान्तिमय।
मैं अघ कोष सुपोष दोष को दोष विनाश।।25।।

6. छठा कायोत्सर्ग कर्म

कायोत्सर्ग विधान करूँ अंतिम सुखदाई।
कायत्यजनमय होय काय सबको दुखदाई।।
पूरब दक्षिण नमूं दिशा पश्चिम उत्तर में।
जिनगृह वंदन करूँ हरूँ भवपाप तिमिर मैं।।26।।

शिरोनति मैं करूँ नमूं मस्तक कर धरिकैं।
आवर्तादिक क्रिया करूँ मन वच मद हरिकैं।।
तीन लोक जिन भवनमांहि जिन हैं जुअकृत्रिम।
कृत्रिम हैं द्वय अर्द्धद्वीप माहीं बंदो जिम।।27।।

आठ कोड़ि परि छप्पन लाख जु सहस सत्याणूं।
च्यारि शतक-पर असी एक जिमंदिरजाणूं।।
व्यंतर ज्योतिष माहिं संख्य रहिते जिन मंदिर।
ते सब वंदन करूँ हरहु मम पाप संघकर।।28।।

सामायिक सम नाहिं और कोउ वैर मिटायक।
सामायिक सम नाहिं और कोउ मैत्री दायक।।
श्रावक अणुव्रत आदि अन्त सप्तम गुणथानक।
यह आवश्यक किये होय निश्चय दुखहानक।।29।।

जे भवि आतम-काज-करण उद्यम के धारी।
ते सब काज विहाय करो सामायिक सारी।।
राग रोष मद मोह क्रोध लोभादिक जे सब।
बुध महाचन्द्र विलाय जाय तातैं कीज्यो अब।।30।।

***

भक्तामरस्तोत्रम्

(श्रीमानतुंगाचार्य विरचित)

भक्तामर-प्रणत-मौलि-मणि-प्रभाणा-
मुद्योतकं दलित-पाप-तमो-वितानम्।
सम्यक् प्रणम्य जिन-पाद-युगं युगादा-
वालम्बनं भव-जले पततां जनानाम्।।1।।

यः संस्तुतः सकल-वाङ्मय-तत्त्व-
बोधा-दुद्भूत-बुद्धि-पटुभिः सुर-लोक-नाथैः।
स्तोत्रैर्जगत्त्रितय-चित्त-हरैरुदारैः
स्तोष्ये किलाहमपि तं प्रथमं जिनेन्द्रम्।।2।।

बुद्ध्या विनाऽपि विबुधार्चित-पादपीठ
स्तोतुं समुद्यतमतिर्विगत-त्रपोऽहम्
बालं विहाय जल संस्थित मिन्दु-बिम्ब
मन्यः कः इच्छति जनः सहसा ग्रहीतुम्।।3।।

वक्तुं गुणान्गुणसमुद्र! शशांककांतान्
कस्ते क्षमः सुरगुरुप्रतिमोऽपि बुद्ध्या।
कल्पान्तकालपवनोद्धतनक्रचक्रम् को
वा तरीतुमलमम्बुनिधिं भुजाभ्याम्।।4।।

सोऽहं तथापि तव भक्तिवशान्मुनीश!
कर्तुं स्तवं विगतशक्तिरपि प्रवृत्तः।
प्रीत्यात्मवीर्यमविचार्य मृगी मृगेन्द्रम्
नाभ्येति किं निजशिशोः परिपालनार्थम्।।5।।

अल्पश्रुतं श्रुतवतां परिहासधाम
त्वद्भक्तिरेव मुखरीकुरुते बलान्माम्।

यत्कोकिलः किल मधौ मधुरं विरौति
तच्चाम्रचारुकलिकानिकरैकहेतु।।6।।

त्वत्संस्तवेन भवसन्ततिसन्निबद्धम्
पापं क्षणात्क्षयमुपैति शरीरभाजाम्।
आक्रान्तलोकमलिनीलमशेषमाशु
सुर्यांशुभिन्नमिव शार्वरमन्धकारम्।।7।।

मत्त्वेति नाथ! तव संस्तवनं मयेद-
मारभ्यते तनुधियापि तव प्रभावात्।
चेतो हरिष्यति सतां नलिनीदलेषु
मुक्ताफलद्युतिमुपैति ननूदबिन्दुः।।8।।

आस्तां तव स्तवनमस्तसमस्तदोषम्
त्वत्संकथाऽपि जगतां दुरितानि हन्ति।
दूरे सहस्रकिरणः कुरुते प्रभैव पद्माकरेषु
जलजानि विकासभाञ्जि।।9।।

नात्यद्भुतं भुवनभूषण भूतनाथ !
भूतैर्गुणैर्भुवि भवन्तमभिष्टुवन्तः।
तुल्या भवन्ति भवतो ननु तेन किं वा
भूत्याश्रितं य इह नात्मसमं करोति।।10।।

दृष्ट्वा भवन्तमनिमेषविलोकनीयम्
नान्यत्रतोषमुपयाति जनस्य चक्षुः।
पीत्वा पयः शशिकरद्युतिदुग्धसिन्धोः
क्षारं जलं जलनिधे रसितुं कः इच्छेत्।।11।।

यैः शांतरागरुचिभिः परमाणुभिस्त्वम्
निर्मापितस्त्रिभुवनैकललामभूत!
तावन्त एव खलु तेऽप्यणवः पृथिव्याम्
यत्ते समानमपरं नहि रूपमस्ति।।12।।

वक्त्रं क्व ते सुरनरोरगनेत्रहारि
निःशेषनिर्जितजगत्त्रितयोपमानम्।
बिम्बं कलंकमलिनं क्व निशाकरस्य
यद्वासरे भवति पाण्डुपलाशकल्पम्।।13।।

सम्पूर्ण–मण्डल–शशांककलाकलाप
शुभ्रा गुणास्त्रिभुवनं तव लंघयन्ति।
ये संश्रितास्त्रिजगदीश्वर नाथमेकम्
कस्तान्निवारयति संचरतो यथेष्टम्।।14।।

चित्रं किमत्र यदि ते त्रिदशाङ्गनाभिर्,
नीतं मनागपि मनो न विकारमार्गम्।
कल्पान्तकालमरुता चलिताचलेन,
किं मंदराद्रिशिखरं चलितं कदाचित्।।15।।

निर्धूमवर्तिरपवर्जिततैलपूरः,
कृत्स्नं जगत्त्रयमिदं प्रकटीकरोषि।
गम्यो न जातु मरुतां चलिताचलानाम्,
दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ ! जगत्प्रकाशः।।16।।

नास्तं कदाचिदुपयासि न राहुगम्यः
स्पष्टीकरोषि सहसा युगपज्जगन्ति
नाम्भोधरोदरनिरुद्धमहाप्रभावः
सूर्यातिशायिमहिमासि मुनीन्द्र! लोके।।17।।

नित्योदयं दलितमोहमहान्धकारम्,
गम्यं न राहुवदनस्य न वारिदानाम्।
विभ्राजते तव मुखाब्जमनल्पकान्ति,
विद्योतयज्जगदपूर्वशशांकबिम्बम्।।18।।

किं शर्वरीषु शशिनाऽन्हि विवस्वता वा,
युष्मन्मुखेन्दुदलितेषु तमःसु नाथ।
निष्पन्न शालिवनशालिनि जीवलोके,
कार्यं कियज्जलधरैर्जलभार नम्रैः।।19।।

ज्ञानं यथा त्वयि विभाति कृतावकाशम्,
नैवं तथा हरिहरादिषु नायकेषु।
तेजोमहामणिषु याति यथा महत्त्वम्
नैवं तु काचशकले किरणाकुलेऽपि।।20।।

मन्ये वरं हरिहरादय एव दृष्टा,
दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोषमेति।
किं वीक्षितेन भवता भुवि येन नान्यः,
कश्चिन्मनो हरति नाथ ! भवान्तरेऽपि।।21।।

स्त्रीणां शतानि शतशो जनयन्ति पुत्रान्
नान्या सुतं त्वदुपमं जननी प्रसूता।
सर्वा दिशो दधति भानि सहस्ररश्मिम्
प्राच्येव दिग्जनयति स्फुरदंशुजालम्।।22।।

त्वामामनन्ति मुनयः परमं पुमांस
मादित्यवर्णममलं तमसः परस्तात्।
त्वामेव सम्यगुपलभ्य जयन्ति मृत्युम्,
नान्यः शिवः शिवपदस्य मुनीन्द्र! पन्थाः।।23।।

त्वामव्ययं विभुमचिन्त्यमसंख्यमाद्यम्,
ब्रह्माणमीश्वरमनन्तमनंगकेतुम्।
योगीश्वरं विदितयोगमनेकमेकम्,
ज्ञानस्वरूपममलं प्रवदन्ति सन्तः।।24।।

बुद्धस्त्वमेव विबुधार्चितबुद्धिबोधात्,
त्वं शंकरोऽसि भुवनत्रयशंकरत्वात्।
धाताऽसि धीर ! शिवमार्गविधेर्विधानात्,
व्यक्तं त्वमेव भगवन् ! पुरुषोत्तमोऽसि ।।25।।

तुभ्यं नमस्त्रिभुवनार्तिहराय नाथ !
तुभ्यं नमः क्षितितलामलभूषणाय।
तुभ्यं नमस्त्रिजगतः परमेश्वराय,
तुभ्यं नमो जिन! भवोदधिशोषणाय ।।26।।

को विस्मयोऽत्र यदि नाम गुणैरशेषैस्,
त्वं संश्रितो निरवकाशतया मुनीश!
दोषैरुपात्तविधाश्रयजातगर्वैः,
स्वप्नान्तरेऽपि न कदाचिदपीक्षितोऽसि ।।27।।

उच्चैरशोकतरुसंश्रितमुन्मयूख–,
माभाति रूपममलं भवतो नितान्तम्।
स्पष्टोल्लसत्किरणमस्ततमोवितानम्,
बिम्बं रवेरिव पयोधरपार्श्ववर्ति ।।28।।

सिंहासने मणिमयूखशिखाविचित्रे,
विभ्राजते तव वपुः कनकावदातम्।
बिम्बं वियद्विलसदंशुलतावितानम्,
तुङ्गोदयाद्रिशिरसीव सहस्ररश्मेः ।।29।।

कुन्दावदातचलचामरचारुशोभम्,
विभ्राजते तव वपुः कलधौतकान्तम्।
उद्यच्छशांकशुचिनिर्झरवारिधार–,
मुच्चैस्तटं सुरगिरेरिव शातकौम्भम् ।।30।।

छत्रत्रयं तव विभाति शशांककान्त–,
मुच्चैः स्थितं स्थगितभानुकरप्रतापम्।
मुक्ताफलप्रकरजालविवृद्धशोभम्,
प्रख्यापयत्त्रिजगतः परमेश्वरत्वम् ।।31।।

गम्भीरताररवपूरितदिग्विभागस्–,
त्रैलोक्यलोकशुभसंगमभूतिदक्षः ।
सद्धर्मराज! जय घोषणघोषकः सन्,
खे दुन्दुभिर्ध्वनति ते यशसः प्रवादी ।।32।।

मन्दारसुन्दरनमेरुसुपारिजात,
सन्तानकादिकुसुमोत्करवृष्टिरुद्धा।
गन्धोदबिन्दुशुभमन्दमरुत्प्रपाता,
दिव्या दिवः पतति ते वचसां ततिर्वा ।।33।।

शुम्भत्प्रभावलयभूरिविभा विभोस्ते
लोकत्रये द्युतिमतां द्युतिमाक्षिपन्ती।
प्रोद्यद्दिवाकरनिरन्तरभूरिसंख्या
दीप्त्या जयत्यपि निशामपि सोमसौम्याम् ।।34।।

स्वर्गापवर्गगममार्गविमार्गणेष्टः,
सद्धर्मतत्त्वकथनैकपटुस्त्रिलोक्याः।
दिव्यध्वनिर्भवति ते विशदार्थसर्व–,
भाषास्वभावपरिणामगुणैः प्रयोज्यः ।।35।।

उन्निद्रहेमनवपंकज–पुंजकान्ति
पर्युल्लसन्नखमयूखशिखाभिरामौ।
पादौ पदानि तव यत्र जिनेन्द्र! धत्तः
पद्मानि तत्र विबुधाः परिकल्पयन्ति ।।36।।

इत्थं यथा तव विभूतिरभूज्जिनेन्द्र,
धर्मोपदेशनविधौ न तथा परस्य।
यादृक् प्रभा दिनकृतः प्रहतान्धकारा,
तादृक् कुतो ग्रह-गणस्य विकासिनोऽपि ।।37।।

श्च्योतन्मदाविलविलोलकपोलमूल
मत्त-भ्रमद् भ्रमरनाद्विवृद्धकोपम्।
ऐरावताभमिभमुद्धतमापतन्तं
दृष्ट्वाभयं भवति नो भवदाश्रितानाम्।।38।।

भिन्नेभकुम्भगलदुज्जवलशोणिताक्त-
मुक्ताफलप्रकर भूषितभूमिभागः ।
बद्धक्रमः क्रमगतं हरिणाधिपोऽपि
नाक्रामति क्रमयुगाचल-संश्रितं ते।।39।।

कल्पान्तकालपवनोद्धतवह्निकल्पम्
दावानलं ज्वलितमुज्जवलमुत्स्फुलिङ्गम्।
विश्वं जिघत्सुमिव सम्मुखमापतन्तम्
त्वन्नामकीर्तनजलं शमयत्यशेषम्।।40।।

रक्तेक्षणं समदकोकिलकण्ठनीलम्
क्रोधोद्धतं फणिनमुत्फणमापतन्तम्।
आक्रामति क्रमयुगेण निरस्तशंकस्-
त्वन्नामनागदमनी हृदि यस्य पुंसः।।41।।

वल्गत्तुरंगगजगर्जित भीमनाद
माजौ बलं बलवतामपि भूपतीनाम्।
उद्यद्दिवाकरमयूखशिखापविद्धम्
त्वत्कीर्तनात्तम इवाशु भिदामुपैति।।42।।

कुन्ताग्रभिन्नगजशोणितवारिवाह
वेगावतार तरणातुरयोधभीमे।
युद्धे जयं विजितदुर्जयजेयपक्षास्
त्वत्पादपङ्कजवनाश्रयिणो लभन्ते।।43।।

अम्भोनिधौ क्षुभितभीषणनक्र-चक्र,
पाठीनपीठभयदोल्वणवाडवाग्नौ।
रङ्गत्तरङ्गशिखरस्थितयानपात्रास्,
त्रासं विहाय भवतः स्मरणाद् व्रजन्ति।।44।।

उद्भूतभीषणजलोदरभारभुग्नाः,
शोच्यां दशामुपगताश्च्युतजीविताशाः।
त्वत्पादपङ्कजरजोऽमृतदिग्धदेहा,
मर्त्या भवन्ति मकरध्वजतुल्यरूपाः।।45।।

आपादकण्ठमुरुशृङ्ख लवेष्टिताङ्गाः
गाढं बृहन्निगडकोटिनिघृष्टजङ्घाः।
त्वन्नाममन्त्रमनिशं मनुजाः स्मरन्तः
सद्यः स्वयं विगतबन्धभया भवन्ति।।46।।

मत्तद्विपेन्द्रमृगराजदवानलाहि
संग्रामवारिधिमहोदरबन्धनोत्थम्।
तस्याशु नाशमुपयाति भयं भियेव
यस्तावकं स्तवमिमं मतिमानधीते।।47।।

स्तोत्रस्रजं तव जिनेन्द्र! गुणैर्निबद्धां
भक्तया मया विविधवर्णविचित्रपुष्पाम्।
धत्तेजनो य इह कण्ठगतामजस्रं
तं मानतुङ्गमवशा समुपैति लक्ष्मीः।।48।।

।। इतिश्रीमन्मानतुङ्गाचार्यविरचितं भक्तामरस्तोत्रम् ।।

भक्तामर स्तोत्र

(पद्यानुवाद – आचार्य श्री विशदसागरजी)

दोहा

वृषभनाथ वृषभेष जिन, हो वृष के अवतार।
तारण तरण जहाज तव, करो 'विशद' भव पार॥

(चौपाई)

भक्त अमर नत मुकुट छवि देय,
गहन पाप तम को हर लेय।
भव सर पतित को शरण विशाल,
'विशद' नमन जिन पद नत भाल॥1॥

द्वादशांग ज्ञाता सुर देव,
जिनवर की करते नित सेव।
शब्द अर्थ पद छन्द बनाय,
थुति करता हूँ मैं सिरनाय॥2॥

मंद बुद्धि हूँ अति अज्ञान,
करता हूँ प्रभु का गुणगान।
जल में चन्द्र बिम्ब को पाय,
बालक मन को ही ललचाय॥3॥

गुणसागर प्रभु गुण की खान,
सुर गुरु न कर सके बखान।
क्षुब्ध जंतु युत प्रलय अपार,
सागर तैर करे को पार॥4॥

फिर भी 'विशद' भक्ति उर लाय,
शक्ति हीन थुति करूँ बनाय।
हिरण शक्ति क्या छोड़ न जाय,
मृगपति ढिग निज शिशु न बचाय॥5॥

मैं अल्पज्ञ हास्य को पात्र,
भक्ति हेतु है पुलकित गात।
आम्रकली लख ऋतु बसंत,
कोयल कुहुके कर पुलकंत॥6॥

पाप कर्म होता निर्मूल,
तव थुति जो करता अनुकूल।
सघन तिमिर ज्यों रवि को पाय,
क्षण में शीघ्र नष्ट हो जाय॥7॥

थुति करता हूँ मैं मति मंद,
मन हरता मन्त्रों का छंद।
कमल पत्र पर जल कण जाय,
ज्यों मुक्ता की शोभा पाय॥8॥

तव संस्तुति की कथा विशाल,
नाम काटता कर्म कराल।
दिनकर रहें बहुत ही दूर,
कमल खिलाता सर में पूर॥9॥

भवि थुतिकर तुम सम हो जाय,
या में क्या अचरज कहलाय ?

आश्रित करें न आप समान,
ऐसे प्रभु का क्या सम्मान ? ।।10।।

नयन आपके तन को देख,
और नहीं फिर लगते नेक।
क्षीर नीर जो करता पान,
क्षार नीर क्यों करे पुमान ? ।।11।।

प्रभु तुम शांत मनोहर रूप,
परमाणु सम्पूर्ण अनूप।
तुम सा नहीं है जग में कोय,
दर्शन की अभिलाषा होय।।12।।

तव अनुपम मुख है भगवान,
निरुपम है अति शोभामान।
चन्द्रकांति दिन में छिप जाय,
तब मुख शोभा निशदिन पाय।।13।।

'विशद' गुणों के प्रभु भण्डार,
तीन लोक को करते पार।
एक नाथ हो आश्रयवान,
उन विचरण को रोके आन।।14।।

अचल चलावें प्रलय समीर,
मेरु न हिलता हो अतिधीर।
सुर तिय न कर सके विकार,
मन प्रभु का स्थिर अविकार।।15।।

जले तेल बाती बिन श्वांस,
त्रिभुवन का प्रभु करें प्रकाश।
दीप धूप बिन जलता जाय,
तूफां उसको बुझा न पाय।।16।।

ग्रसे राहु न होते अस्त,
प्रभु जी रवि से अधिक प्रशस्त।
मेघ ढकें न अती प्रकाश,
ज्ञान भानु हो अद्भुत खास।।17।।

उदित नित्य मुख जो तम हार,
मेघ राहु से है विनिवार।
सौम्य मुखाम्बुज चन्द्र समान,
लोक प्रकाशी कांति महान्।।18।।

तमहर तव मुख चन्द्र महान्,
कहाँ करे निशदिन शशिभान।
खेत में ज्यों पक जाये धान,
जलधर वर्षा है निष्काम।।19।।

शोभे ज्ञान तुम्हारे पास,
हरि हर में न उसका वास।
कांति महामणि में जो होय,
कम्ब में होती क्या वह सोय ? ।।20।।

देखे हरि हरादि कई देव,
तुम से आज मिले जिनदेव।

श्रद्धा हृदय जगी तव पाय,
अन्य देव अब नहीं सुहाय।।21।।

सतनारी सत सुत उपजाय,
तुम समान कोई न पाय।
रवि का पूरब में अवतार,
तारागण के कई आधार।। 22 ।।

तुमको परम पुरुष मुनि माने,
तमहर अमल सूर्यसम जाने।
मृत्युंजय हो प्रभु को पाय,
शरण छोड़ जन जगत भ्रमाय।।23।।

भोगाव्यय असंख्य विभु ईश्वर,
अचिन्त्य आद्य ब्रह्मा योगीश्वर।
अनेक ज्ञानमय अमल अनंत,
कामकेतु इक कहते संत।।24।।

बुध विबुधार्चित बुद्ध महान्,
शंकर सुखकारी भगवान।
ब्रह्मा शिवपथ दाता नाथ,
सर्वश्रेष्ठ पुरुषोत्तम साथ ।।25।।

त्रिभुवन दुखहर तुम्हें प्रणाम,
भूतल भूषण तुम्हें प्रणाम।
त्रिभुवन स्वामी तुम्हें प्रणाम,
भवसर शोषक तुम्हें प्रणाम।।26।।

शरण में आये सब गुण आन,
विस्मय क्या कोई मिला न थान ?
मुख न देखें स्वप्न में दोष,
सारे जग में प्रभु निर्दोष।।27।।

तरु अशोक तल में भगवान,
उज्ज्वल तन अति शोभामान।
मेघ निकट दिनकर के होय,
उस भांति दिखते प्रभु सोय।।28।।

मणिमय सिंहासन पर देव,
तव तन शोभे स्वर्णिम एव।
रवि का उदयाचल पर रूप,
उदित सूर्य सम दिखे स्वरूप।।29।।

ढुरते चामर शुक्ल विशेष,
स्वर्णिम शोभित है तव भेष।
ज्यों मेरु पर बहती धार,
स्वर्णमयी पर्वत मनहार।।30।।

तीन छत्र तिय लोक समान,
मणिमय शशि सम शोभावान।
सूर्य ताप का करे विनाश,
श्री जिन के गुण करे प्रकाश।।31।।

दश दिशि ध्वनि गूँजें गम्भीर,
जय घोषक जिनवर की धीर।

तीन लोक में अति सुखदाय,
सुयश दुन्दुभि बाजा गाय ।।32 ।।

मंद मरुत गंधोदक सार,
सुरगुरु सुमन अनेक प्रकार।
दिव्य वचन श्री मुख से खिरें,
पुष्प वृष्टि नभ से ज्यों झरें ।।33 ।।

त्रिजग कांति फीकी पढ़ जाय,
भामण्डल की शोभा पाय।
चन्द्र कांति सम शीतल होय,
सारे जग का आतप खोय ।।34 ।।

स्वर्ग मोक्ष की राह दिखाय,
द्रव्य तत्त्व गुण को प्रगटाय।
दिव्य ध्वनि है 'विशद' अनूप,
ॐकार सब भाषा रूप ।।35 ।।

भवि जीवों का हो उपकार,
प्रभु इच्छा बिन करें विहार।
जहँ जहँ प्रभु के पग पढ़ जायँ,
तहँ तहँ पंकज देव रचायँ ।।36 ।।

धर्म कथन में आप समान,
अन्य देव न पाते आन।
तारा रवि की द्युति क्या पाय ?
वैभव देव न अन्य लहाय ।।37 ।।

गण्डस्थल मद जल से सने,
गीत गूँजते अतिशय घने।

मत्त कुपित होकर गज आय,
फिर भी भक्त नहीं भय खाय ।।38 ।।

भिदे कुम्भ गज मुक्ता द्वारा,
हो भूषित भू भाग ही सारा।
तव भक्तों का केहरि आन,
न कर सके जरा भी हान ।।39 ।।

प्रलय पवन अग्नि घन-घोर,
उठें तिलंगे चारों ओर।
जग भक्षण हेतु आक्रान्त,
नाम रूप जल से हो शांत ।।40 ।।

काला नाग कुपित हो जाय,
तो भी निर्भयता को पाय।
हाथ में नाग दमन ज्यों पाय,
भक्त आपका बढ़ता जाय ।। 41 ।।

हय गय भयकारी रव होय,
शक्तीशाली नृप दल सोय।
नाश होय कर प्रभु यशगान,
रवि ज्यों करे तिमिर की हान ।।42 ।।

भाला गज के सिर लग जाय,
सिर से रक्त की धार बहाय।
रण में दास विजय तव पाय,
दुर्जय शत्रु भी आ जाय ।।43।।

क्षुब्ध जलधि बड़वानल होय,
मकरादिक भयकारी सोय।
करें आपका जो भी ध्यान,
पार करें निर्भय हो थान।।44।।

रोग जलोदर होवे खास,
चिन्तित दशा तजी हो आस।
अमृत प्रभु पद रज सिर नाय,
मदन रूपता को वह पाय।।45।।

सांकल से हो बद्ध शरीर,
खून से लथपत होवे पीर।
नाम मंत्र तव जपते लोग,
शीघ्र बंध का होय वियोग।।46।।

गज अहि दव रण बंधन रोग,
मृग भय सिंधु का संयोग।
सारे भय भी हों भयभीत,
थुति प्रभु की जो करें विनीत।।47।।

विविध पुष्प जिनगुण की माल,
प्रभु की संस्तुती रची विशाल।
कंठ में धारण जो कर लेय,
मानतुंग सम लक्ष्मी सेय।।48।।

दोहा

मानतुंग की कृति का, भाषा मय अनुवाद।
विशद शांति आनन्द का, भोग करे कर याद।।

***

सामायिक पाठ

–आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज

तीन लोक के सब जीवों से, मेरा मैत्री भाव रहे।
गुणी जनों को देख हृदय में, प्रेम की सरिता नित्य बहेङ्क
दुःखी प्राणियों को लखकर के, उर में करुणा भाव जगे।
हो माध्यस्थ भाव उनके प्रति, अविनय में जो जीव लगेङ्क1ङ्क

हे जिनेन्द्र! तव कृपा प्राप्त कर, मुझमें ऐसी शक्ति जगे।
ज्यों तलवार म्यान से होती, भिन्न आत्मा मुझे लगेङ्क
है अनन्त शक्तिशाली जो, सर्व दोष से हैं निर्मूल।
तन से चेतन भिन्न करूँ मैं, क्षमता यह जागे अनुकूलङ्क2ङ्क

हे जिनेन्द्र! मेरे मन में शुभ, समता का संचार बहे।
पर पदार्थ में न ममत्व हो, निर्ममत्व का भाव रहेङ्क
वन में और भवन सुख दुःख में, शत्रु मित्र का हो संयोग।
या वियोग हो जाए स्वजन का, धारें समता का ही योगङ्क3ङ्क

हे मुनीश! तम के नाशक हो, दीपक सम तव दोय चरण।
लीन हुए सम या कीलित सम, अविचल मैं कर सकूँ वरणङ्क
स्थिर रहें उकेरे जैसे, मंगलमय शुभ मूर्ति समान।
हों आसीन हृदय में मेरे, नित्य करूँ मैं जिन का ध्यानङ्क4ङ्क

हे जिनेन्द्र! मैंने प्रमाद से, इधर उधर कीन्हा संचार।
एकेन्द्रिय आदि जीवों का, यदि हुआ होवे संहारङ्क
मले गये या चोट खाये हों, अलग-अलग जो हुए कहीं।
दुराचरण वह मिथ्या हो मम्, मैंने जाना उसे नहींङ्क5ङ्क

हे जिनेन्द्र! मुक्ति मारग के, किया आचरण जो प्रतिकूल।
वह कषाय इन्द्रिय विषयों के, वशीभूत हो हुई ये भूलङ्क
लोप हुआ चारित्र शुद्धि का, मुझ दुर्बुद्धि के द्वारा।
वह दुष्कृत मिथ्या हो जाए, हे स्वामी! मेरा साराङ्क6ङ्क

हे जिनेन्द्र! मैंने कषाय या, मन वच तन से कीन्हा पाप।
मैं निन्दा आलोचन द्वारा, करता उसका पश्चातापङ्क
ज्यों मंत्रों की शक्ति द्वारा, विष का करता वैद्य विनाश।
भव दुःख के कारण पापों का, त्यों मेरे हो जाए नाशङ्क7ङ्क

हे जिनेन्द्र! चारित्र क्रिया में, अतिक्रम हुआ रहा अज्ञान।
या प्रमाद से हुआ व्यतिक्रम, जिसमें हुई व्रतों की हानङ्क
अतिचार या अनाचार जो, मुझसे हुआ है हे भगवान!
उसकी शुद्धि हेतु करता, प्रतिक्रमण मैं करके ध्यानङ्क8ङ्क

हे जिनेन्द्र! ज्ञानी जन मन की, शुद्धि में क्षति को अतिक्रम।
शीलव्रतों के उल्लंघन को, कहते हैं वह तो व्यतिक्रमङ्क
विषयों में यदि होय प्रवर्तन, उसको कहते हैं अतिचार।
अनाचार अत्याशक्ति को, कहते आगम के अनुसारङ्क 9ङ्क

हे देवी! जिन सरस्वती यदि, मेरे द्वारा हुआ प्रमाद।
वाक्य अर्थ पद मात्रा का जो, किंचित् हीन हुआ उत्पादङ्क
वह अपराध क्षमा हो मेरा, देना हमको करुणा दान।
केवल ज्ञान रूप लब्धि अब, माता हमको करो प्रदान ङ्क 1ङ्क

हे देवी ! जिन सरस्वति तव, मन वाञ्छित फल की दाता।
चिंतामणि सम तुम को वन्दन, तव चरणों में सिर नाताङ्क
बोधि समाधि मुझे प्राप्त हो, परिणामों की हो शुद्धि।
निज स्वरूप की प्राप्ति हो अरु, मोक्ष सौख्य की हो सिद्धिङ्क 11ङ्क

मुनि नायक के वृंदों से जो, नित्य स्मरण योग्य कहे।
सुरपति नरपति जिनकी स्तुति, करने में तल्लीन रहेङ्क
वेद पुराण शास्त्र में गाए, वह मेरे देवाधिदेव।
हृदय कमल पर करुणा करके, आन विराजो श्री जिनदेव ङ्क12ङ्क

दर्श अनन्त ज्ञान को पाए, सुख स्वभाव में रहते लीन।
इस संसार के सभी विकारों, से जो रहते पूर्ण विहीनङ्क
जोसमाधि के गम्य रहे हैं, परमातम संज्ञा धारी।
वह देवों के देव हमारे, हृदय बसें मंगलकारीङ्क 13ङ्क

जो भव दुक्खों के समूह का, कर देता है पूर्ण विनाश।
और जगत् के अन्तराल का, ज्ञान में जिसके होय प्रकाशङ्क
योगी जन से प्रेक्षणीय जो, जिनका है लोकाग्र निवास।
वह देवों के देव कृपाकर, मेरे करें हृदय में वासङ्क 14ङ्क

मोक्ष मार्ग के प्रतिपादक हो, जन्म मरण दुःखों से हीन।
तीन लोक अवलोकन करते, जो शरीर से रहे विहीनङ्क
कर्म कलंक हीन होते जो, वह हैं देवों के भी देव।
हृदय कमल पर करुणा करके, आन विराजो श्री जिनदेवङ्क 15ङ्क

तीन लोकवर्ती जीवों को, व्याप्त करें रागादिक दोष।
दोष रहित वह कहे अतीन्द्रिय, ज्ञान मयी होते निर्दोषङ्क
जो अपाय से रहित लोक में, वह हैं देवों के भी देव।
हृदय कमल पर करुणा करके, आन विराजो श्री जिनदेवङ्क 16ङ्क

ज्ञेयापेक्षा व्यापक हैं जो, ज्ञायक स्वभावी हैं जो सिद्ध।
विश्व कल्याण की वृत्ति जिनकी, सर्वलोक में रही प्रसिद्धङ्क
कर्म बन्ध विध्वंशक ध्याता, सकल विकारों के नाशी।
वह देवों के देव हमारे, अन्तःपुर के हों वासीङ्क 17ङ्क

तम समूह ज्यों रवि किरणों को, कर सकता है न स्पर्श।
कर्म कलंक दोष त्यों जिनके, करते नहीं कभी भी दर्शङ्क
नित्य निरंजन जो अनेक इक, वह जिनवर हैं मेरे आप्त।
देवों के जो देव कहे हैं, उनकी शरण हमें हो प्राप्तङ्क 18ङ्क

भुवन भास्कर सूर्य कभी भी, शोभा पाता नहीं वहाँ।
विद्यमान रहते हैं अनुपम, प्रखर प्रकाशी प्रभु जहाँङ्क
निज आतम स्वरूप में स्थित, ज्ञान प्रकाशी रहे सदैव।
शरण प्राप्त करता मैं उनकी, आप्त कहे देवों के देवङ्क 19ङ्क

जिनके अवलोकन करने पर, सारा का सारा संसार।
पृथक-पृथक दिखता है इकदम, कोई किसी का न आधारङ्क

वह शिव शान्त स्वरूप सिद्ध जिन, तो हैं आदि अन्त विहीन।
आप्त देव की शरण प्राप्त कर, भक्ति में हो जाऊँ लीनङ्क 2ङ्क

वृक्ष समूह अग्नि के द्वारा, पूर्ण रूप हो जाता क्षय।
भय निद्रा मूर्छा दुख चिन्ता, शोकादि त्यों होय विलयङ्क
मान और मन्मथ आदि सब, दोषों से जो पूर्ण विहीन।
आप्त देव की शरण प्राप्त कर, भक्ति में हो जाऊँलीनङ्क 21ङ्क

परम समाधि के विधान में, न संस्तर है न पाषाण।
न तृण पुंज और न पृथ्वी, नव निर्मित न फलक महान्ङ्क
क्योंकि बुद्धीमानों द्वारा, विषय कषाय शत्रु से हीन।
निर्मल आतम ही समाधि के, मानी योग्य पूर्ण स्वाधीन ङ्क22ङ्क

हे भद्र! नहीं है संस्तर क्योंकि, नहीं लोक पूजा मनहार।
नहीं संघ सम्मेलन अनुपम, परम समाधि का आधारङ्क
इसीलिए तुम सब प्रकार से, बाह्य वासना को छोड़ो।
नित्य प्रतिदिन आत्म निरत हो, अध्यातम से नाता जोड़ोङ्क 23ङ्क

हे भद्र! नहीं है मेरे कोई, जो भी बाह्य पदार्थ रहे।
नहीं कदापि मैं उनका हूँ, कोई कुछ भी हमें कहेङ्क
इस प्रकार दृढ़ निश्चय करके, बाह्य की तुम संगति छोड़ो।
नित्य प्रति अब निज आतम से, अपना तुम नाता जोड़ोङ्क 24ङ्क

निज आतम को निज आतम से, करना भाई अवलोकन।
निश्चय से सद्ज्ञान युक्त हो, और सहित हो सद्दर्शनङ्क
जहाँ कभी भी स्थित साधु, मोहादि सब करें समाप्त।
हो विशुद्ध एकाग्र चित्त वह, परम समाधि करते प्राप्तङ्क 25ङ्क

मम आतम है एक हमेशा, है अधिगम स्वभाव संयुक्त।
जो शाश्वत है परम सुनिर्मल, अन्य सभी से रहा वियुक्तङ्क
बाह्य पदार्थ रहे जो कुछ भी, नहीं है अपने शाश्वत रूप।
कर्म जनित होते हैं सब ही, जिनवर कहते वस्तु स्वरूपङ्क 26ङ्क

चर्म अलग कर देने पर ज्यों, इस शरीर के मध्य कभी।
रोम छिद्र निश्चय से उसमें, कहाँ रहेंगे कहो सभीङ्क
इस शरीर के साथ भी जिसका, एक्यपना है नहीं कदा।
स्त्री पुत्र मित्र में उसका, कैसे सम्भव ऐक्य तदाङ्क 27ङ्क

भव वन में संसारी प्राणी, क्योंकि पाते हैं संयोग।
इस कारण से कई प्रकार के, पावे दुःखों का वह योगङ्क
इसीलिए कल्याण कारिणी, मुक्ति के इच्छाकारी।
मन वच तन से वह संयोगों, को छोड़ें हो अविकारी ङ्क 28ङ्क

भव कान्तार में शीघ्र पतन के, कारण जो भी रहे प्रधान।
उन विकल्प जालों का बन्धु, पूर्ण रूप करके अवसानङ्क
एक मात्र आतम को भाई, सदा देखते हुए अहो।
निज परमात्म तत्त्व में बन्धु, सदा स्वयं ही लीन रहोङ्क 29ङ्क

स्वयं किए जो कर्म पूर्व में, पहले अपने ही द्वारा।
उनका फल स्पष्ट रूप से, मिले शुभाशुभ ही साराङ्क
यदि और का दिया गया फल, सुखमय रूप में होवे प्राप्त।
तो फिर स्वयं किए कर्मों का, हो जाएगा व्यर्थ समाप्त ङ्क 3ङ्क

स्वयं उपार्जित कर्म छोड़कर, कोई किसी के लिए कभी।
किंचित् भी दे सके कभी न, ऐसा सोचो जीव सभीङ्क
अहो आत्मन्! पर कोई दाता, ऐसी बुद्धि तुम छोड़ो।
हो एकाग्र चित्त हे बन्धु! निज से अब नाता जोड़ोङ्क 31ङ्क

अमित गति से वन्दनीय जो, पुरुष लोक में कर्म विहीन।
अति निर्दोष परम परमातम, मन से ध्याते होकर लीनङ्क
वैभव वाले परम पुरुष वह, मोक्ष महल को करते प्राप्त।
अष्ट कर्म का नाश करें वह, बनते अल्प समय में आप्तङ्क 32ङ्क

जो एकाग्र चित्त होकर इन, बत्तिस पद्यों को सम्प्राप्त।
परमातम को देख रहे वह, अविनाशी पद करते प्राप्तङ्क 33ङ्क

●●●

समाधिमरण (भाषा)

गौतम स्वामी वंदो नामी, मरण समाधि भला है।
मैं कब पाऊँ निश दिन ध्याऊँ, गाऊँ वचन कला है।।
देव धर्म गुरु प्रीति महा दृढ़, सप्त व्यसन नहिं जाने।
त्यागे बाइस अभक्ष संयमी, बारह व्रत नित ठाने।।1।।

चक्की उखरी चूलि बुहारी, पानी त्रस न विराधै।
बनिज करै परद्रव्य हरै नहिं, छहों कर्म इमि साधै।।
पूजा शास्त्र गुरुन की सेवा, संयम तप चहुँ दानी।
पर उपकारी अल्प अहारी, सामायिक विधि ज्ञानी।।2।।

जाप जपे तिहुँ योग धरै दृढ़, तन की ममता टारै।
अन्त समय वैराग्य सम्हारै, ध्यान समाधि विचारै।।
आग लगै अरु नाव डुबै जब, धर्म विघन तब आवै।
चार प्रकार आहार त्यागि के, मन्त्र सु-मन में ध्यावे।।3।।

रोग असाध्य जरा बहु देखे, कारण और निहारै।
बात बड़ी है जो बनि आवे, भार भवन को टारै।।
जो न बने तो घर में रह करि, सब सों होय निराला।
मात-पिता सुत तिय को सौंपे, निज परिग्रह तिहिकाला।।4।।

कुछ चैत्यालय कुछ श्रावकजन कुछ दुखिया धन देई।
क्षमा-क्षमा सब ही सों कहिके, मन की शल्य हनेई।।
शत्रुन सों मिल निज कर जोरे, मैं बहु कीनी बुराई।
तुमसे प्रीतम को दुख दीने, क्षमा करो सो भाई।।5।।

धन धरती जो मुखसों माँगै, सो सब दे संतोषे।
छहों काय के प्राणी ऊपर, करुणा भाव विशेषै।।
ऊँच-नीच घर बैठ जगह इक, कुछ भोजन कुछ पै ले।
दूधाधारी क्रम-क्रम तजि के, छाछ अहार पहेलै।।6।।

छाछ त्यागि के पानी राखै, पानी तजि संथारा।
भूमि मांहि थिर आसन मांडै, साधर्मी ढिग प्यारा।।
जब तुम जानो यह न जपै है, तब जिनवाणी पढ़िये।
यों कहि मौन लियो सन्यासी, पंच परम पद गहिये।।7।।

चार अराधन मन में ध्यावै, बारह भावन भावे।
दशलक्षण मुनि-धर्म विचारै, रत्नत्रय मन ल्यावे।।
पैंतीस सोलह षटपन चारों, दुइ इक वरन विचारे।
काया तेरी दुख की ढेरी, ज्ञानमयी तू सारे।।8।।

अजर-अमर निज गुण सों, पूरै परमानन्द सुभावे।
आनन्दकन्द चिदानन्द साहब, तीन जगतपति ध्यावे।।
क्षुधा तृषादिक होय परीषह, सहै भाव सम राखे।
अतीचार पाँचों सब त्यागे, ज्ञान सुधारस चाखे।।9।।

हाड़ मांस सब सूख जाय, जब धर्मलीन तन त्यागे।
अद्भुत पुण्य उपाय स्वर्ग में, सेज उठै ज्यों जागे।।
तहाँ तै आवै शिवपद पावै, विलसै सुक्ख अनन्तो।
'द्यानत' यह गति होय हमारी, जैन धर्म जयवन्तो।।10।।

***

समाधि मरण (बड़ा)

वन्दों श्री अरिहन्त परमगुरु, जो सबको सुखदाई।
इस जग में दुःख जो मैं भुगते, सो तुम जानो राई।।
अब मैं अरज करौं प्रभु तुमसे, कर समाधि उर माहीं।
अन्त समय में वह वर मांगो, सो दीजे जग-राई।।1।।

भवभव में तन धार नया मैं, भव भव शुभ सँग पायो।
भवभव में नृप रिद्धि लही मैं, मात पिता सुत थायो।।
भवभव में तन पुरुष तनों घर, नारी हू तन लीनो।
भवभव में मैं भयो नपुंसक, आतमगुण नहिं चीनो।।2।।

भवभव में सुर पदवी पाई, ताके सुख अति भोगे।
भवभव में गति नरकतनी धर, दुःख पावे विधि योगे।।
भवभव में तिर्यञ्च योनि धर, पायो दुःख अतिभारी।
भवभव में साधर्मीजन को, संग मिल्यो हितकारी।।3।।

भवभव में जिन पूजन कीनी, दान सुपात्रहिं दीनो।
भवभव में मैं समवसरण में, देखो जिनगुण भीनो।।
ऐसी वस्तु मिली भवभव में, सम्यक गुण नहिं पायो।
ना समाधिजुतमरण कियो मैं, तातें जग भरमायो।।4।।

काल अनादि गयो जग भ्रमते, सदा कुमरणहिं कीनो।
एक बार हू सम्यक्युत मैं, निज आतम नहिं चीनो।।
जो निज पर को ज्ञान होय तो,मरण समय दुःख काई।
देह विनाशी मैं निजभासी, ज्योतिस्वरूप सदाई।।5।।

विषय कषायन के वश होकर, देह आपनो जान्यो।
कर मिथ्या सरधान हिये विच, आतम नाहिं पिछान्यो।।
यों क्लेश हियधार मरणकर, चारों गति भरमायो।
सम्यक्दर्शन-ज्ञान-चरन ये, हिरदे में नहिं लायो।।6।।

अब यह अरज करों प्रभु सुनिये, मरण समय यह मांगो।
रोगजनित पीड़ा मत होवे, अरु कषाय मत जागो।।
ये मुझ मरण समय दुःखदाता, इन हर साता कीजे।
जो समाधियुत मरण होय मुझ, अरु मिथ्यामद छीजे।।7।।

यह तन सात कुधात मई है, देखत ही घिन आवे।
चर्म लपेटी ऊपर सोहे, भीतर विष्टा पावे।।
अति दुर्गन्ध अपावनसों यह, मूरख प्रीति बढ़ावे।
देह विनाशी जिय अविनाशी, नित्यस्वरूप कहावे।।8।।

यह तन जीर्ण कुटीसम आतम, यातें प्रीति न कीजे।
नूतन महल मिले जब भाई, तब यामें क्या छीजे।।
मृत्यु होने से हानि कोन है, याको भय मत लावो।
समता से जो देह तजोगे, तो शुभ तन तुम पावो।।9।।

मृत्यु मित्र उपकारी तेरी, इस अवसर के माहीं।
जीरन तन से देत नयो यह, या सम काहू नाहीं।।
ये सेती इस मृत्यु समय पर, उत्सव अति ही कीजे।
क्लेश भाव को त्याग सयाने, समता भाव धरीजे।।10।।

जो तुम पूरब पुण्य किये हैं, तिनको फल सुखदाई।
मृत्यु मित्र बिन कौन दिखावे, स्वर्ग सम्पदा भाई।।
राग-द्वेष को छोड़ सयाने, सात व्यसन दुखदाई।
अन्य समय में समता धारो, पर भव पंथ सहाई।।11।।

कर्म महा दुठ बैरी मेरो, ता सेती दुख पावे।
तनपिंजर में बन्द कियो मोहि, यासों कौन छुड़ावे।।
भूख तृशा दुख आदि अनेकन, इस ही तन में गाढ़े।
मृत्युराज अब आय दया कर, तन पिंजरा सों काढ़े।।12।।

नाना वस्त्राभूषण मैंने, इस तन को पहराये।
गन्ध-सुगन्धी अतर लगाये, षट्रस अशन कराये।।
रात दिना मैं दास होय कर, सेव करी तन केरी।
सो तन तेरे काम न आवे, भूल रह्यो निधि मेरी।।13।।

मृत्युराज को शरन पाय तन, नूतन ऐसो पाऊँ।
जामें सम्यक् रतन तीन लहि, आठों कर्म खपाऊँ।।
देखो तन सम और कृतघ्नी, नाहिं सु या जगमाहीं।
मृत्युसमय में ये ही परिजन, सबही हैं दुखदाई।।14।।

यह सब मोह चढ़ावन हारे, जिय को दुर्गति दाता।
इनसे ममत निवारो जियरा, जो चाहो सुख साता।।
मृत्यु कल्पद्रुम पाय सयाने, माँगो इच्छा जेती।
समता धरकर मृत्यु करो तो, पावो सम्पति तेती।।15।।

चौआराधनसहित प्राणतज, तो ये पदवी पाओ।
हरि प्रतिहरि चक्री तीर्थेश्वर, स्वर्ग मुक्ति में जावो।।
मृत्युकल्पद्रुम सम नहिं दाता, तीनों लोक मँझारे।
ताको पाय क्लेश करो मत, जन्म जवाहर हारे।।16।।

इस तन में क्या राचै जियरा, दिन-दिन जीरन हो है।
तेज कांति बल नित्य घटत है, या सम अथिर सुको है।।

पाँचों इन्द्री शिथिल भई अब, वास शुद्ध नहिं आवे।
तापर भी ममता नहिं छोड़े, समता उर नहिं लावे।।17।।

मृत्युराज उपकारी जिय को, तन सों तोहि छुड़ावे।
नातर या तन बन्दीगृह में, पर्‌यो पर्‌यो बिललावै।।
पुद्‌गल के परमाणु मिलकें, पिण्डरूप तन भासी।
या है मूरत मैं अमूरती, ज्ञानजोति गुणखासी।।18।।

रोग-शोक आदी जो वेदन, ते सब पुद्‌गल लारे।
मैं तो चेतन व्याधि बिना नित, हैं सो भाव हमारे।।
या तनसों इस क्षेत्र सम्बन्धी, कारण आज बन्यो है।
खान-पान दे याको पोष्यो, अब समभाव ठन्यो है।।19।।

मिथ्यादर्शन आत्मज्ञान बिन, यह तन अपनो जान्यो।
इन्द्रीभोग गिने सुख मैंने, आपो नाहिं पिछान्यो।।
तनविनशनतै नाश जान निज, यह अयान दुखदाई।
कुटुम आदि को अपनो जानो, भूल अनादी छाई।।20।।

अब निजभेद जथारथ समभयो, मैं हूँ ज्योति स्वरूपी।
उपजे विनसे सो यह पुद्‌गल, जान्यो याकों रूपी।।
इष्ट-निष्ट जैते दुःख सुख जो हैं, सो सब पुद्‌गल लागे।
मैं जब अपनी रूप विचारों, तब वे सब दुःख भागे।।21।।

बिन समता तन अनेक घरे मैं, तिन में वे दुख पायो।
शस्त्र घात तें अनेक बार मर, नाना-योनि भ्रमायो।।
बार अनंतहिं अग्नि माहिं जर, भूवो सुमति न लायो।
सिंह व्याघ्र अहिनैक बार मुझ, नाना दुःख दिखायो।।22।।

बिन समाधि ये दुःख लहे मैं, अब उर समता आई।
मृत्युराज को भय नहिं मानो, देवे तन सुखदाई।।
यातें जब लग मृत्यु न आवे, तब लग जप तप कीजे।
जप-तप बिन इस जग के माहीं, कोई भी नहिं सीजे।।23।।

स्वर्ग संपदा तप सों पावे, तपसों कर्म नसावै।
तपही सों शिवकामिनि पति है, या सों तप चित लावे।।
अब मैं जानी समता बिन मुझ, कोऊ नाहिं सहाई।
मात-पिता सुत बन्धु तिरिया, ये सबहैं दुखदाई।।24।।

मृत्यु समय में मोह करें ये, तातें आरत हो है।
आरततें गति नीची पावे, यों लख मोह तज्यो है।।
और परिग्रह जेते जग में, तिनसों प्रीति न कीजे।
पर भव में ये संग न चालें, नाहक आरत कीजे।।25।।

जे-जे वस्तु लखत हैं ते पर, तिनसों नेह निवारो।
परगति में ये साथ न चालें, ऐसो भाव विचारो।।
जो पर भव में संग चले तुझ, तिनसे प्रीतिसु कीजे।
पञ्च पाप तज समता धारो, दान चार विधि दीजे।।26।।

दशलक्षणमय धर्म धरो उर, अनुकम्पा उर लाओ।
षोडशकारण को नित चिन्तो, द्वादश भावना भावो।।
चारों परवी प्रोषध कीजे, अशनरात को त्यागो।
समता धर दुरभाव निवारो, संयम सों अनुरागो।।27।।

अन्त समय में ये शुभ भावहिं, होवें आनि सहाई।
स्वर्ग मोक्ष फल तोहि दिखावें, ऋद्धि देहिं अधिकाई।।
खोटे भाव सकल जिय त्यागे, उर में समता लाके।
जा सेती गति चार दूरकर, बसो मोक्षपुर जाके।।28।।

मन थिरता करके तुम चिंतो, चौ आराधन भाई।
ये ही तोकों सुख की दाता, और हितू कोउ नाहीं।।
आगे बहु मुनिराज भये हैं, तिन गहि थिरता भारी।
बहु उपसर्ग सहे शुभ भावन, आराधन उरधारी।।29।।

तिन में कछुइक नाम कहूँ मैं, सो सुनो भव्य चित लाके।
भाव सहित अनुमोदे तासे, दुर्गति होय न ताके।।
अरु समता जिन उर में आवे, भाव अधीरज जावे।
यों निस दिन जो मुनिवर को, ध्यान हिये बिचलावे।।30।।

धन्य-धन्य सुकुमाल महामुनि, कैसे धीरज धारी।
एक श्यालिनि जुगबालक युत, पाँव भख्यो दुखकारी।।
यह उपसर्ग सह्यो धर थिरता, आराधन चित धारी।
तो तुमरे जिय कौन दुःख है, मृत्यु-महोत्सव भारी।।31।।

धन्यधन्य जु सुकौशल स्वामी, व्याघ्री ने तन खायो।
तों भी श्रीमुनि नेक डिगे नाहिं, आतम सों हित लायो।।
यह उपसर्ग सह्यो धर थिरता, आराधन चितधारी।
तो तुमरे जिय कौन दुःख है, मृत्यु-महोत्सव भारी।।32।।

देखो गज मुनि के सिर ऊपर, विप्र अगनि बहुबारी।
शीश जले जिमि लकड़ी तिनको, तो भी नाहिं चिंगारी।।
यह उपसर्ग सह्यो धर थिरता, आराधन चितधारी।
तो तुमरे जिय कौन दुःख है, मृत्यु-महोत्सव भारी।।33।।

सनत्कुमार मुनि के तन में, कुष्ट-वेदना व्यापी।
छिन्न-भिन्न तन तासों हूवो, तब चिंत्यो गुण आपी।।

यह उपसर्ग सह्यो धर थिरता, आराधन चित धारी।
तो तुमरे जिय कौन दुःख है, मृत्यु–महोत्सव भारी।।34।।

श्रेणिकसुत गंगा में डूब्यो, तन जिननाम चितार्यो।
धर संल्लेखना परिग्रह छोड्यो, शुद्ध भाव उर धार्यो।।
यह उपसर्ग सह्यो धर थिरता, आराधन चितधारी।
तो तुमरे जिय कौन दुःख है, मृत्यु–महोत्सव भारी।।35।।

समन्तभद्र मुनिवर के तन में, क्षुधा–वेदना आई।
तो दुख में मुनि नेक न डिगियो, चिंत्यो निज गुण भाई।।
यह उपसर्ग सह्यो धर थिरता, आराधन चितधारी।
तो तुमरे जिय कौन दुःख है, मृत्यु–महोत्सव भारी।।36।।

ललितघटादिक तीस दोय मुनि, कौशांबी तट जानो।
नदी में मुनि बहकर डूबे, सो दुख उन नहिं मानो।।
यह उपसर्ग सह्यो धर थिरता, आराधन चितधारी।
तो तुमरे जिय कौन दुःख है, मृत्यु–महोत्सव भारी।।37।।

धर्मकोष मुनि चम्पानगरी, बाह्य ध्यान घर ठांढो।
एकमास की कर मर्यादा, तृषा–दुःख सह गाढ़ो।।
यह उपसर्ग सह्यो धर थिरता, आराधन चितधारी।
तो तुमरे जिय कौन दुःख है, मृत्यु–महोत्सव भारी।।38।।

श्रीदत्तमुनि को पूर्व जन्म को, बैरी देव सु आके।
विक्रिय कर दुख शीत तनो सो, सह्योसाधु मन लाके।।
यह उपसर्ग सह्यो धर थिरता, आराधन चितधारी।
तो तुमरे जिय कौन दुःख है, मृत्यु–महोत्सव भारी।।39।।

वृषभसेन मुनि उष्ण शिला पर, ध्यान घर्यो मन लाई।
सूर्यधाम अरु उष्ण पवन को, दुःख सहो अधिकाई।।
यह उपसर्ग सह्यो धर थिरता, आराधन चितधारी।
तो तुमरे जिय कौन दुःख है, मृत्यु–महोत्सव भारी।।40।।

अभयघोष मुनि काकंदीपुर, महा–वेदना पाई।
शत्रु चंड ने सब तन छेदो, दुःख दीनो अधिकाई।।
यह उपसर्ग सह्यो धर थिरता, आराधन चितधारी।
तो तुमरे जिय कौन दुःख है, मृत्यु–महोत्सव भारी।।41।।

विद्युतचरने बहु दुख पायो, तो भी धीर न त्यागी।
शुभभावन सो प्राण तजे निज, धन्य और बड़भागी।।
यह उपसर्ग सह्यो धर थिरता, आराधन चितधारी।
तो तुमरे जिय कौन दुःख है, मृत्यु–महोत्सव भारी।।42।।

पुत्र चिलाती नामा मुनि को, वैरी ने तन घाता।
मोटे–मोटे कीट पड़े तन, तापर निज गुण राता।।
यह उपसर्ग सह्यो धर थिरता, आराधन चितधारी।
तो तुमरे जिय कौन दुःख है, मृत्यु–महोत्सव भारी।।43।।

दंडक नामा मुनि की देही, बाणन कर अरि भेदी।
तापर नेक डिगे नहिं वे मुनि, कर्म महा रिपु छेदी।।
यह उपसर्ग सह्यो धर थिरता, आराधन चितधारी।
तो तुमरे जिय कौन दुःख है, मृत्यु–महोत्सव भारी।।44।।

अभिनन्दन मुनि आदि पाँच सौ, घानी पेलि जु मारे।।
तो भी श्री मुनि समताधारी; पूरब कर्म बिचारे।।
यह उपसर्ग सह्यो धर थिरता, आराधन चितधारी।
तो तुमरे जिय कौन दुःख है, मृत्यु–महोत्सव भारी।।45।।

चाणक–मुनि गोगृह के मांही, मूँद अगिनि परजाल्यो।
श्रीगुरु उर समभाव धारके, अपनो रूप सम्हाल्यो।।
यह उपसर्ग सह्यो धर थिरता, आराधन चितधारी।
तो तुमरे जिय कौन दुःख है, मृत्यु–महोत्सव भारी।।46।।

सात शतक मुनिवर ने पायो, हस्तिनापुर में जानो।
बली विप्रकृत घोर उपद्रव, सो मुनिवर नहिं मानो।।
यह उपसर्ग सह्यो धर थिरता, आराधन चितधारी।
तो तुमरे जिय कौन दुःख है, मृत्यु–महोत्सव भारी।।47।।

लोह मयी आभूषण गढ़ के, ताते कर पहराये।
पाँचों पांडव मुनि के तन में, तो भी नाहिं चिगाये।।
यह उपसर्ग सह्यो धर थिरता, आराधन चितधारी।
तो तुमरे जिय कौन दुःख है, मृत्यु–महोत्सव भारी।।48।।

और अनेक भये इस जग में, समता रस के स्वादी।
वे ही हमको हों सुखदाता, हर हैं टेव प्रमादी।।
यह उपसर्ग सह्यो धर थिरता, आराधन चितधारी।
तो तुमरे जिय कौन दुःख है, मृत्यु–महोत्सव भारी।।49।।

सम्यग्दर्शन ज्ञान चरन तप, ये आराधन चारों।
ये ही मोकों सुख की दाता, इन्हें सदा उर धारों।।
यह उपसर्ग सह्यो धर थिरता, आराधन चितधारी।
तो तुमरे जिय कौन दुःख है, मृत्यु–महोत्सव भारी।।50।।

यों समाधि उर माहीं लावो, अपनो हित जो चाहो।
तज ममता अरु आठों मद को, ज्योति–स्वरूपी ध्यावो।।

यह उपसर्ग सह्यो धर थिरता, आराधन चित धारी।
तो तुमरे जिय कौन दुःख है, मृत्यु–महोत्सव भारी।।51।।

जो कोई नित करत पयानो, ग्रामान्तर के काजे।
सो भी शकुन विचारे नीके, शुभ के कारण साजे।।
यह उपसर्ग सह्यो धर थिरता, आराधन चित धारी।
तो तुमरे जिय कौन दुःख है, मृत्यु–महोत्सव भारी।।52।।

मातपितादिक अरु सर्व कुटुमसों, नीको शकुन बनावे।
हल्दी धनिया पुंगी अक्षत, दूध दही फल लावे।।
एक ग्राम के कारण एते, करें शकुन शुभ सारे।
जब परगति को करत पयानो, तउ नहिं सोचैं प्यारे।।53।।

सर्वकुटुम्ब जब रोवन लागे, तोहि रुलावे प्यारे।
ये अपशकुन करें सुन तोकों, तूं यों क्यों न विचारे।।
अब परगति को चलत बिरियाँ, धर्मध्यान उर आनो।
चारों आराधन आराधो, मोह तनों दुःखहानो।।54।।

होय निशल्य तजो सब दुविधा, आतमराम सु ध्यावो।
जब परगति की करहु पयानो, परम तत्त्व उर लावो।।
मोहजाल को काट पियारे, अपनो रूप विचारो।
मित्र मृत्यु उपकारी तेरी, यों उर निश्चय धारो।।55।।

मृत्यु महोत्सव पाठ को, पढ़ो सुनो बुद्धिमान।
सरधा धर नित सुख लहो, सूरचंद शिवथान।।
पंच उभय नव एक नभ, संवत सो सुखदाय।
आश्विन श्याम सप्तमी, कह्यो पाठ मन लाय।।56।।

***

दुःखहरण विनती

श्रीपति जिनवर करुणायतनं, दुःखहरन तुम्हारा बाना है।
मत मेरी बार अबार करो, मोहि देहु विमल कल्याना है।। टेक।।
त्रैकालिक वस्तु प्रत्यक्ष लखो, तुम सों कुछ बात न छाना है।
मेरे उर आरत जो वरतैं, निहचै सब सो तुम जाना है।।
अवलोक विथा मत मौन गहो, नहिं मेरा कहीं ठिकाना है।
हो राजिवलोचन सोचविमोचन, मैं तुम सों हित ठाना है।।1।।
सब ग्रंथनि में निरग्रंथनि ने, निरधार यही गणधार कही।
जिननायक ही सब लायक हैं, सुखदायक छायक ज्ञानमही।।
यह बात हमारे कान परी, तब आन तुम्हारी सरन गही।
क्यों मेरी बार विलंब करो, जिन नाथ कहो यह बात सही।।2।।
काहूको भोग मनोग करो, काहू को स्वर्ग-विमाना है।
काहूको नाग नरेशपती, काहू को ऋद्धि निधाना है।।
अब मोपर क्यों न कृपा करते, यह क्या अंधेर जमाना है।
इन्साफ करो मत देर करो, सुखवृन्द भजो भगवाना है।।3।।
खल कर्म मुझे हैरान किया, तब तुमसों आन पुकारा है।
तुम ही समरथ न न्याय करो, तब बंदे का क्या चारा है।।
खल घालक पालक बालक का, नृपनीति यही जग सारा है।
तुम नीतिनिपुण त्रैलोकपति, तुम ही लगि दौर हमारा है।।4।।
जबसे तुमसे पहचान भई, तबसे तुमही को माना है।
तुमरे ही शासन का स्वामी, हमको शरना सरधाना है।।
जिनको तुमरी शरनागत है, तिनसौं यमराज डराना है।
यह सुजस तुम्हारे सांचे का, सब गावत वेद पुराना है।।5।।
जिसने तुमसे दिल दर्द कहा, तिसका तुमने दुःख हाना है।
अघ छोटा-मोटा नाशि तुरत, सुख दिया तिन्हें मनमाना है।।
पावकसौ शीतल नीर किया, औ चीर बढ़ा असमाना है।
भोजन था जिसके पास नहीं, सो किया कुबेर समाना है।।6।।

~

चिंतामणि पारस कल्पतरू, सुखदायक ये सरधाना है।
तब दासन के सब दास यही, हमरे मन में ठहराना है।।
तुम भक्तन को सुरइंदपदी, फिर चक्रपतिपद पाना है।
क्या बात कहौं विस्तार बढ़ी, वे पावैं मुक्ति ठिकाना है।।7।।
गति चार चौरासी लाखविषैं, चिन्मूरत मेरा भटका है।
हो दीनबंधु करुणानिधान, अबलों न मिटा वह खटका है।।
जब जोग मिला शिवसाधन का, सब विघ्न कर्म ने हटका है।
तुम विघन हमारे दूर करो, सुख देहु निराकुल घटका है।।8।।
गज-ग्राह-ग्रसित उद्धार लिया, ज्यों अंजन तस्कर तारा है।
ज्यों सागर गोपदरूप किया, मैना का संकट टारा है।।
ज्यों शूलीतें सिंहासन और, बेड़ी को काट बिडारा है।
त्यों मेरा संकट दूर करो प्रभु, मोकूँ आस तुम्हारा है।।9।।
ज्यों फाटक टेकत पाँय खुला, औ साँप सुमन कर डारा है।
ज्यों खड्ग कुसुम का माल किया, बालक का जहर उतारा है।।
ज्यों सेठ विपत चकचूरि पूर, घर लक्ष्मी सुख विस्तारा है।
त्यों मेरा संकट दूर करो प्रभु, मोकूँ आश तुम्हारा है।।10।।
यद्यपि तुमको रागादि नहीं, यह सत्य सर्वथा जाना है।
चिनमूरति आप अनंतगुनी, नित शुद्धदशा शिवथाना है।।
तद्यपि भक्तन की पीर हरो, सुख देत तिन्हें जु सुहाना है।
यह भक्ति अचिंत तुम्हारी का, क्या पावे पार सयाना है।।11।।
दुःखखंडन श्री सुखमंडन का, तुमरा प्रन परम प्रमाना है।
वरदान दया जस कीरत का, तिहुँलोक धुजा फहराना है।।
कमलाधर जी ! कमलाकर जी !, करिये कमला अमलाना है।
अब मेरी विथा अवलोकि रमापति, रंच न बार लगाना है।।12।।
हो दीनानाथ अनाथ हितू, जन दीन अनाथ पुकारी है।
उदयागत कर्मविपाक हलाहल, मोह विथा विस्तारी है।।
ज्यों आप और भवि जीवन की, तत्काल विथा निरवारी है।
त्यों 'वृंदावन' यह अर्ज करैं, प्रभु आज हमारी बारी है।।13।।

भक्तामर महिमा

श्री भक्तामर का पाठ करो, नित प्रात: भक्ति मन लाई।
सब संकट जायें नशाई।।

जो ज्ञान-मान-मतवारे थे, मुनि मानतुंग से हारे थे।
उन चतुराई से नृपति लिया, बहकाई।।सब... ।।1।।
मुनि जी को नृपति बुलाया था, सैनिक जा हुक्म सुनाया था।
मुनि वीतराग को आज्ञा नहीं सुहाई।।सब... ।।2।।
उपसर्ग घोर तब आया था, बलपूर्वक पकड़ मंगाया था।
हथकड़ी बेड़ियों से, तन दिया बंधाई।।सब... ।।3।।
मुनि काराग्रह भिजवाये थे, अड़तालिस ताले लगाये थे।
क्रोधित नृप बाहर, पहरा दिया बिठाई ।।सब... ।।4।।
मुनि शान्त भाव अपनाया था, श्री आदिनाथ को ध्याया था।
हो ध्यान मग्न, 'भक्तामर' दिया बनाई ।।सब... ।।5।।
सब बन्धन टूट गये मुनि के, ताले सब स्वयं खुले उनके।
काराग्रह से आ बाहर, दिये दिखाई ।।सब... ।।6।।
राजा नत होकर आया था, अपराध क्षमा करवाया था।
मुनि के चरणों में अनुपम, भक्ति दिखाई।।सब... ।।7।।
जो पाठ भक्ति से करता है, नित ऋषभ-चरण चित धरता है।
जो ऋद्धि- मन्त्र का, विधिवत् जाप कराई ।।सब... ।।8।।
भय विघ्न उपद्रव टलते हैं, विपदा के दिवस बदलते हैं।
सब मन वाञ्छित हों पूर्ण, शान्ति छा जाई ।।सब... ।।9।।
जो वीतराग आराधन हैं, आतम उन्नति का साधन हैं।
उससे प्राणी का भव बन्धन, कट जाई।।सब... ।।10।।
'कौशल' सुभक्ति को पहिचानो, संसार-दृष्टि बन्धन जानो।
लो भक्तामर से, आत्म-ज्योति प्रकटाई ।।सब... ।।11।।

लघु प्रतिक्रमण

(सामायिक विधि)

चिदानंदकै रुपाय जिनाय परमात्ने।
परमात्म प्रकाशाय नित्य सिद्धात्मने नम:।।

इतर निगोद सात लाख, नित्य निगोद सात लाख, पृथ्वीकाय सात लाख, अपकाय सात लाख, तेउकाय सात लाख, वायुकाय सात लाख, वनस्पति काय दश लाख, वे इन्द्रिय दोय लाख, त्री इन्द्रिय दोय लाख, चौ इन्द्रिय दोय लाख, नरकगति चार लाख, देवगति चार लाख, तिर्यंचगति चार लाख, मनुष्य गति चौदह लाख एवं काय चौरासी लाख, माता पक्षे पिता पक्षे एक सौं साढ़े निन्यानवे लक्ष कुल कोटी लक्ष सूक्ष्म बादर पर्याप्त अपर्याप्त लब्धि पर्यांप्त कोई जीवनी विराधना करी होय, रागद्वेष करीने पाप लाग्यो होय-तस्स मिच्छामि दुक्कड़।।1।।

पंच मिथ्यात्व, बाहर अविरत पंदर योग पच्चीस कषाय एवं सत्तावन आश्रव करी पाप लाग्यो होय (आंचली)- तस्स मिच्छामी दुक्कड़।।2।।

तीन दंड; तीन शल्य, तीन गर्व करी ने पाप लाग्यो होयह्नह्न

तस्स मिच्छामि दुक्कड़ं।।3।।

राज कथा, चोर कथा, स्त्री कथा, भोजन कथा, करी ने पाप लाग्यो होयह्नह्न तस्स मिच्छामि दुक्कड़ं।।4।।

चार आर्त ध्यान, चार रौद्र ध्यान करी ने पाप लाग्यो होय-तस्स मिच्छामि दुक्कड़ं।।5।।

आचार अनाचार करी ने पाप लाग्यो होय– तस्स मिच्छामि दुक्कड़ं।।6।।

पंच मिथ्यात्व करी ने पाप लाग्यो होय– तस्स मिच्छामि दुक्कड़ं।।7।।

पंच आश्रव करी ने पाप लाग्यो होय–तस्स मिच्छामि दुक्कड़ं।।8।।

पंच व्रत, छट्टा व्रत त्रस जीवनी विराधना करी ने पाप लाग्यो होय– तस्स मिच्छामि दुक्कड़ं।।9।।

सप्त व्यसन सेवे करी ने पाप लाग्यो होय– तस्स मिच्छामि दुक्कड़ं।।10।।

सप्त भय करी ने पाप लाग्यो होय– तस्स मिच्छामि दुक्कड़ं।।11।।

अष्ट मूलगुण व्रतना अतिचार करी ने पाप लाग्यो होय– तस्स मिच्छामि दुक्कड़ं।।12।।

दश प्रकारना बहिरङ्ग परिग्रह करी ने पाप लाग्यो होय– तस्स मिच्छामि दुक्कड़ं ।।13।।

चौदह प्रकारना अन्तरङ्ग परिग्रह करी ने पाप लाग्यो होय–तस्स मिच्छामि दुक्कड़ं।।14।।

पन्द्रह प्रमाद करी ने पाप लाग्यो होय– तस्स मिच्छामि दुक्कड़ं।।15।।

पच्चीस कषाय करी ने पाप लाग्यो होय– तस्स मिच्छामि दुक्कड़ं।।16।।

पंच अतिचार करी ने पाप लाग्यो होय– तस्स मिच्छामि दुक्कड़ं।।17।।

मारे समक्ष नहीं करी ने पाप लाग्यो होय–तस्स मिच्छामि दुक्कड़ं।।18।।

रोद्र परिणामना दुश्चितवन करी ने पाप लाग्गो होय– तस्स मिच्छामि दुक्कड़ं।।19।।

हिंड़ता, हालता, बोलता, चालता, सुता बेसता मार्ग ने विसे जाणे अणजाणे दीठे अणदीठें कई पाप लाग्यो होय– तस्स मिच्छामि दुक्कड़ं।।20।।

सूक्ष्म बादर कोई जीव चंपायो होय, भय पाम्यो होय, त्रास पाम्यो होय वेदना पाम्यो होय, छेदना पाम्यो होय– तस्स मिच्छामि दुक्कड़ं।।21।।

यति सर्वे मुनि–आर्यिका श्रावक–श्राविका सर्वे प्रकारे निंदा करि होय, करावी होय, सांभली होय, संभलावी होय, पराई निदा करी ने पाप लाग्यो होय– तस्स मिच्छामि दुक्कड़ं।।22।।

देव गुरु शांस्त्रनो अविनय थयो होय– तस्स मिच्छामि दुक्कड़ं।।23।।

निर्माल्य द्रव्यना पाप लाग्या होय–तस्स मिच्छामि दुक्कड़ं।।24।।

बत्तीस प्रकारना सामायिकना दोष लाग्या होय– तस्स मिच्छामि दुक्कड़ं।।25।।

पन्च इन्द्रिय व छट्ठा विषय मन करी ने पाप लाग्यो होय– तस्स मिच्छामि दुक्कड़ं।।26।।

जाणे अणजाणे कई पाप लाग्यो होय– तस्स मिच्छामि दुक्कड़ं।।27।।

मारे कोई साथे राग नहीं, द्वेष नहीं, वैर नहीं, मान नहीं, माया नहीं, मारे समस्त जीव साथे उत्तम क्षमा कर्म क्षयनता समाधि मरण चारों गति का दु:ख निवारण हो।।28।।

इति लघु सामायिक प्रतिक्रमण भूल–चुक कानो मात्रा
माफ करो, माफ करो, माफ करो।

क्षमा वंदना

क्षमा करना क्षमा करना, क्षमा शांति का दाता है।
क्षमा के भाव से प्राणी, 'विशद' मुक्ति को पाता है।
क्षमा करता सकल जन को, क्षमा करना सभी मुझको।
अभी छद्मस्थ हूँ मैं भी, नहीं है ज्ञान कुछ मुझको।
रहे मैत्री सभी जन से, किसी से बैर न मेरा।
हृदय में भावना मेरी, किसी से हो नहीं फेरा।
क्षमा करना क्षमा करना, क्षमा ही जग का त्राता है।
क्षमा के भाव से प्राणी, 'विशद' मुक्ति को पाता है।
पाप का कर सकें छेदन, रहे यह भाव में वेदन।
क्षमा उनसे भी चाहूँगा, मेरे हाथों हुए भेदन।
त्याग दूँ दोष इस जग के, यही है भावना मेरी।
पटे खाई हृदय की जो, बनी हो पूर्व से तेरी।
क्षमा करना क्षमा करना, क्षमा समता को लाता है।
क्षमा के भाव से प्राणी, 'विशद' मुक्ति को पाता है।
दया मय भाव हो जावें, हृदय करुणा से भर जावे।
रहे भावों में शीतलता, कभी भी क्रोध न आवे।
क्षमा की तरणी बह जावे, सदा मैं भाव करता हूँ।
क्षमा भूषण है तन मन का, उसे मैं आप धरता हूँ।
क्षमा करना क्षमा करना, क्षमा उर में समाता है।
क्षमा के भाव से प्राणी,'विशद' मुक्ति को पाता है।
कभी जाने या अनजाने, हुए हों दोष जो मेरे।
क्षमा हमको सभी करना, बड़े उपकार हों तेरे।
वीर का धर्म ये कहता, हृदय में शांति तुम धरना।
क्षमा धारण 'विशद' दिल में कि अर्पण प्राण तुम करना।
क्षमा करना क्षमा करना, क्षमा को धर्म गाता है।
क्षमा के भाव से प्राणी,'विशद' मुक्ति को पाता है।

।। इति समाप्तम् ।।

जाप्य-मन्त्र

सुख शान्ति हेतु प्रतिदिन जाप करें

रविवार को	ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः।
सोमवार को	ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः।
मंगलवार को	ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः।
बुधवार को	ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमः।
गुरुवार को	ॐ ह्रीं श्री सुरगुरुदोष निवारणाय अष्टजिनेन्द्राय नमः।
शुक्रवार को	ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय नमः।
शनिवार को	ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः।

मनोवाँछित हेतु जाप–

ॐ ह्रीं श्रीं अ सि आ उ सा मम सर्वविघ्न शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।

सर्वशान्ति हेतु जाप–ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय मम शान्तिकराय सर्वोपद्रवशान्तिं कुरु कुरु ह्रीं नमः।

इन्द्रध्वज विधान का जाप्य मन्त्र– ॐ ह्रीं अर्हं शाश्वत जिनालय सर्व जिनबिम्बेभ्यो नमः।

रत्नत्रय जाप्य मन्त्र–ॐ ह्रीं श्री सम्यग्दर्शन–ज्ञान–चारित्रेभ्यो नमः।

दशलक्षण व्रत जाप्य मन्त्र–

1. ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलसमुद्गताय उत्तमक्षमाधर्माङ्गाय नमः।
2. ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलसमुद्गताय उत्तममार्दवधर्माङ्गाय नमः।
3. ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलसमुद्गताय उत्तमार्जवधर्माङ्गाय नमः।
4. ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलसमुद्गताय उत्तमशौचधर्माङ्गाय नमः।
5. ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलसमुद्गताय उत्तमसत्यधर्माङ्गाय नमः।

6. ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलसमुद्गताय उत्तमसंयमधर्माङ्गाय नमः।

7. ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलसमुद्गताय उत्तमतपोधर्माङ्गाय नमः।

8. ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलसमुद्गताय उत्तमत्यागधर्माङ्गाय नमः।

9. ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलसमुद्गताय उत्तमाकिंचनधर्माङ्गाय नमः।

10. ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलसमुद्गताय उत्तमब्रह्मचर्यधर्माङ्गाय नमः।

षोडशकारण जाप्य मन्त्र–

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धयादि षोडशकारणेभ्यो नमः।

पंचमेरु व्रत जाप्य मन्त्र–

1. ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयेभ्यो नमः।
2. ॐ ह्रीं विजयमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयेभ्यो नमः।
3. ॐ ह्रीं अचलमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयेभ्यो नमः।
4. ॐ ह्रीं मन्दरमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयेभ्यो नमः।
5. ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयेभ्यो नमः।

सोलहकारण की 16 जाप्य मन्त्र–

1. ॐ ह्रीं अर्हं दर्शनविशुद्धिभावनायै नमः। 2. ॐ ह्रीं अर्हं निवयसंपन्नताभावनायै नमः। 3. ॐ ह्रीं अर्हं शीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै नमः। 4. ॐ ह्रीं अर्हं अभीक्ष्णज्ञानोपयोगभावनायै नमः। 5. ॐ ह्रीं अर्हं संवेगभावनायै नमः। 6. ॐ ह्रीं अर्हं शक्तितस्त्यागभावनायै नमः। 7. ॐ ह्रीं अर्हं शक्तितस्तपोभावनायै नमः। 8. ॐ ह्रीं अर्हं साधुसमाधिभावनायै नमः। 9. ॐ ह्रीं अर्हं वैयावृत्यकरणभावनायै नमः। 10. ॐ ह्रीं अर्हं अर्हद्भक्तिभावनायै नमः। 11. ॐ ह्रीं अर्हं आचार्यभक्तिभावनायै नमः। 12. ॐ ह्रीं अर्हं बहुश्रुतभक्तिभावनायै नमः। 13. ॐ ह्रीं अर्हं प्रवचनभक्तिभावनायै नमः। 14. ॐ ह्रीं अर्हं आवश्यकापरिहाणिभावनायै नमः। 15. ॐ ह्रीं अर्हं मार्गप्रभावनाभावनायै नमः। 16. ॐ ह्रीं अर्हं प्रवचनवत्सलत्वभावनायै नमः।

नन्दीश्वर व्रत (अष्टाह्निका व्रत) जाप्य मन्त्र–

(1) ॐ ह्रीं नन्दीश्वर–सञ्ज्ञाय नमः। (2) ॐ ह्रीं अष्टमहाविभूति–सञ्ज्ञाय नमः। (3) ॐ ह्रीं त्रिलोकसार– सञ्ज्ञाय नमः। (4) ॐ ह्रीं चतुर्मुख–सञ्ज्ञाय नमः। (5) ॐ ह्रीं पंचमहालक्षण– सञ्ज्ञाय नमः। (6) ॐ ह्रीं स्वर्गसोपान– सञ्ज्ञाय नमः। (7) ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राय नमः। (8) ॐ ह्रीं इन्द्रध्वज–सञ्ज्ञाय नमः।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर–द्वीपस्थ द्वापञ्चाशज्जिनालयस्थ–जिनेबिम्बेभ्यो नमः।

पुष्पाञ्जलि व्रत जाप्य मन्त्र– ॐ ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धि अशीति–जिनालयेभ्यो नमः।

रोहिणी व्रत जाप्य –ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य–जिनेन्द्राय नमः।

रोगनाशक मन्त्र–ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कलिकुण्डदण्डस्वामिने नमः। आरोग्य–परमैश्वर्यं कुरु कुरु स्वाहा।

यह मन्त्र श्री पार्श्वनाथजी की प्रतिमा के सामने शुद्ध भाव और क्रियापूर्वक 108 बार जपना चाहिये।

मंगलदायक मन्त्र– ॐ ह्रीं वरे सुवरे असिआउसा नमः।

एकान्त में प्रतिदिन 108 बार धूप के साथ, शुद्ध भावपूर्वक जपें।

ऐश्वर्यदायक मन्त्र– ॐ ह्रीं असिआउसा नमः स्वाहा।

सूर्योदय के समय पूर्व दिशा में मुख करके प्रतिदिन 108 बार शुद्ध भाव से जपें।

सर्वसिद्धिदायक मन्त्र–

ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं अर्हं श्री वृषभनाथ तीर्थंकराय नमः।

समस्त कार्यों की सिद्धि के लिए प्रतिदिन श्रद्धापूर्वक 108 बार जपना चाहिये।

सर्वग्रह शान्ति मन्त्र–

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा सर्व–शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।

रोग निवारक मन्त्र–

ॐ ह्रीं सकल–रोगहराय श्री सन्मति देवाय नमः।

शान्तिकारक मन्त्र–

ॐ ह्रीं परम शान्ति विधायक श्री शान्तिनाथाय नमः।

ऋषि–मण्डल जाप्य मन्त्र– ॐ ह्रां ह्रीं ह्रुं ह्रूं ह्रें ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा सम्यग्दर्शन– ज्ञान–चारित्रेभ्यो ह्रीं नमः।

सिद्धचक्र विधान के समय का जाप्य मन्त्र–

ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः स्वाहा।

त्रैलोक्य मण्डल विधान का जाप्य मन्त्र–

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं अनाहत–विद्याधिपाय त्रैलोक्यनाथाय नमः सर्व शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।

लघु शान्ति मन्त्र–

ॐ ह्रीं अर्हं असिआउसा सर्वशान्तिं कुरुत कुरुत स्वाहा।

वेदी प्रतिष्ठा कलशारोहण तथा बिम्ब स्थापन के समय का जाप्य मंत्र– ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हंअसिआउसा अनाहत विद्यायै णमो अरिहंताणं ह्रीं सर्वशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।

रविव्रत जाप्य मंत्र–

ॐ ह्रीं नमो भगवते चिन्तामणि–पार्श्वनाथ सप्तफणमंडिताय श्री धरणेन्द्र–पद्मावती सहिताय मम ऋद्धिं सिद्धिं वृद्धिं सौख्यं कुरु कुरु स्वाहा।

रविव्रत लघु जाप्य मंत्र–ॐ ह्रीं अर्हं श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथाय नमः।

मनोरथ सिद्धिदायक मंत्र– ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं नमः।

आकाश पंचमी व्रत जाप्य मंत्र– ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वृषभादिचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो यक्षयक्षीसहितेभ्यो नमः।

निर्दोष सप्तमी व्रत की जाप्य– ॐ ह्रां ह्रीं सर्वविघ्ननिवारकाय श्री शांतिनाथस्वामिने नमः स्वाहा।

सुगन्धदशमी व्रत जाप्य मंत्र– ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथजिनेन्द्राय नमः।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री शीतलनाथ ईश्वरयक्षमानवीयक्षी सहिताय नमः स्वाहा।

रत्नत्रय जाप्य मंत्र– ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्य नमः।

अनन्तचतुर्दशी व्रत जाप्य मंत्र–

(1) ॐ ह्रीं अर्हं हं स अनन्तकेवलिने नमः।

(2) ॐ नमोऽर्हते भगवते अणंताणंतसिज्झधम्मे भगवतो महाविज्जा–महाविज्जा अणंताणंतकेवलिए अणंतकेवलणाणे अणंत–केवलदंसणेअणुपुज्जवासणे अणंते अणंतागमकेवली स्वाहा।

रोहिणी व्रत जाप्य मंत्र– ॐ ह्रीं वासुपूज्यजिनेन्द्राय नमः।

णमोकार व्रत जाप्य मंत्र– ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं, ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं, ॐ ह्रूँ णमो आइरियाणं, ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं, ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं।

जिनगुणसंपत्ति व्रत जाप्य मंत्र– ॐ ह्रीं त्रिषष्टिजिनगुणसंपद्भ्यो नमः।

सप्तपरमस्थान व्रत जाप्य मंत्र– ॐ ह्रीं परमब्रह्मणे सप्तपरमस्थानाय नमः।

ऋषिमण्डल जाप्य मंत्र– ॐ ह्रां ह्रिं ह्रुं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रौं ह्रः असिआउसा सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्यः ह्रीं नमः।

सिद्धचक्र जाप्य मंत्र– ॐ ह्रीं अर्हं असिआउसा नमः।

शांति मंत्र– ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथाय जगत्शांतिकराय सर्वोपद्रवशांतिम् कुरु कुरु ह्रीं नमः।

आरोग्य प्राप्ति मंत्र– ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोसहिपत्ताणं।

कार्यसिद्धि मंत्र– ॐ ह्रीं अर्हं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय नमः।

ॐ ह्रीं श्री ऋषभदेवाय सर्वसिद्धिकरण सर्वसौख्यं कुरु कुरु ह्रीं नमः।

अयोध्या तीर्थक्षेत्र मंत्र– ॐ ह्रीं अनंतानंततीर्थंकरजन्मभूमिअयोध्या पुर्यौ नमः।

सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र मंत्र– ॐ ह्रीं अनंतानंत तीर्थंकर निर्वाण भूमि सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्राय नमः।

महामृत्युंजय मंत्र– ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं, ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं, ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं, ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं, ॐ ह्रः णशमो लोए सव्वसाहूणं। मम सर्वग्रहारिष्टान् निवारय निवारय अपमृत्युं घातय–घातय सर्वशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।

विधि– दीप जलाकर धूप देते हुए नैष्ठिक रहकर इस मन्त्र का स्वयं जाप करें या अन्य–द्वारा करावें। यदि अन्य व्यक्ति जाप करें तो 'मम' के स्थान पर उस व्यक्ति का नाम जोड़ लें– अमुकस्य सर्वग्रहारिष्टान निवारय आदि। इस मन्त्र का सवा लाख जाप करने से ग्रहबाधा दूर हो जाती है। कम से कम इस मन्त्र का 31 हजार जाप करना चाहिए। जाप के अनन्तर दशांश आहुति देकर हवन भी करें।

शास्त्र स्तुति

माता तू दया करके कर्मों से छुड़ा देना,
इतनी सी विनय तुमसे चरणों में जगह देना।
संसार में भटके हैं माया के अंधेरें में,
कोई नहीं हमारा है इस कर्म के रेले में।
कोई नहीं हमारा है तुम धीर बंधा देना ।। इतनी।।
जीवन के चौराहे पर हम सोच रहे कब से,
जायें तो किधर जायें यह पूछ रहे मन से,
पथ भूल गये हैं हम तुम राह दिखा देना।। इतनी।।
लाखों को उबारा है हमको भी उबारो तुम
मझधार में है नैया उसको भी तिरादो तुम
मझधार में अटका हैं उस पार लगा देना।।
इतनी सी विनय तुमसे चरणों में जगह देना,
गुरुवर तुम दया करके कर्मों से छुड़ा देना।।

णमोकार मंत्र की आरती

(तर्ज : आज मंगलवार है...)

**महामंत्र नवकार है, मुक्ति का यह द्वार है।
ध्यान जाप आरति कर प्राणी, होता भव से पार है।।
होता भव से पार है।**

महामंत्र के पञ्च पदों में, परमेष्ठी को ध्याया है।
अर्हत् सिद्धाचार्य उपाध्याय, सर्व साधु गुण गाया है।।
महामंत्र नवकार...... ।।1 ।।
मूलमंत्र अपराजित आदि, मंत्रराज कई नाम रहे।
श्रेष्ठ अनादिऽनिधन मंत्र से, और अनेकों नाम कहे।।
महामंत्र नवकार...... ।।2 ।।
महामंत्र को जपने वाले, अतिशय पुण्य कमाते हैं।
सुख शांति आनन्द प्राप्त कर, निज सौभाग्य जगाते हैं।।
महामंत्र नवकार...... ।।3 ।।
काल अनादि से जीवों ने, सत् श्रद्धान जगाया है।
महामंत्र का ध्यान जापकर, स्वर्ग मोक्ष पद पाया है।।
महामंत्र नवकार...... ।।4 ।।
सुनकर नाग नागिनी जिसको, पद्मावति धरणेन्द्र भये।
अन्जन हुए निरन्जन पढ़कर, अन्त समय में मोक्ष गये।।
महामंत्र नवकार...... ।।5 ।।
प्रबल पुण्य के उदय से हमने, महामंत्र को पाया है।
अतिशय पुण्य कमाने का शुभ, हमने भाग्य जगाया है।।
महामंत्र नवकार...... ।।6 ।।
महामंत्र का ध्यान जाप कर, आरति करने आए हैं।
'विशद' भाव का दीप जलाकर, आज यहाँ पर लाए हैं।
महामंत्र नवकार...... ।।7 ।।

पंच परमेष्ठी की आरती

(तर्ज–पत्थर के पारस प्यारे...)

परमेष्ठी हैं पंच हमारे, सारे जग से न्यारे।
सबकी उतारे हम आरती, ओ भैया !
हम सब उतारें मंगल आरती....

कर्म घातिया नाश किये हैं, केवल ज्ञान जगाए।
दोष अठारह रहे न कोई, प्रभु अर्हत् कहलाए।।
प्रभु के द्वारे हम आये, भक्ति से शीश झुकाए।।
हम सब उतारें मंगल आरती....

अष्ट कर्म का नाश किया है, अष्ट गुणों को पाए।
अजर–अमर अक्षय पद धारी, सिद्ध प्रभु कहलाए।।
शिवपुर को जाने वाले, मुक्ति को पाने वाले।
हम सब उतारें मंगल आरती....

पंचाचार का पालन करते, शिष्यों से करवाते।
शिक्षा दीक्षा देने वाले, जैनाचार्य कहलाते।।
भक्ति हम उनकी करते, चरणों में मस्तक धरते।।
हम सब उतारें मंगल आरती....

रत्नत्रय के धारी मुनिवर, पढ़ते और पढ़ाते।
मोक्ष मार्ग पर उपाध्यायजी, नित प्रति कदम बढ़ाते।।
मूल गुण पाने वाले, ज्ञान बरसाने वाले।
हम सब उतारें मंगल आरती....

विषय वासना हीन रहे जो, ज्ञान ध्यान तप करते।
'विशद' साधना करने वाले, कर्म कालिमा हरते।।
कर्मों को हरने वाले, मुक्ति को वरने वाले।
हम सब उतारें मंगल आरती....

सहस्रनाम की आरती

आज करें हम सहस्रनाम की, आरती मंगलकारी।
दीप जलाकर लाए घृत के, जिनवर के दरबार.. हो जिनवर ...
हम सब उतारे मंगल आरती..

सहस्रनाम के धारी जिनवर, सहस्र गुणों को पाते।
एक हजार आठ गुणधारी, तीर्थंकर कहलाते।।
हो जिनवर... ।।1।।

श्री जिनेन्द्र के तन में नौ सौ, व्यंजन विस्मयकारी।
सुगुण एक सौ आठ जिनेश्वर, पाते अतिशयकारी।।
हो जिनवर... ।।2।।

भूत भविष्यत वर्तमान के, जिन इसके अधिकारी।
अनन्त चतुष्टय के धारी जिन, होते मंगलकारी।।
हो जिनवर... ।।3।।

सार्थक नाम प्राप्त करते हैं, तीर्थंकर अविकारी।
अनुक्रम से बन जाते हैं जो, शिवपद के अधिकारी।।
हो जिनवर... ।।4।।

सहस्रनाम की पूजा अर्चा, करने को हम आए।
'विशद' जगे सौभाग्य हमारे, चरण–शरण को पाए।।
हो जिनवर... ।।5।।

चौबीस जिन की आरती

(तर्ज – मांई रि मांई ...)

चौबीस जिन की आरती करने, दीप जलाकर लाए।
विशद आरती करने के शुभ, हमने भाग्य जगाए।।
जिनवर के चरणों में नमन्, प्रभुवर के चरणों में नमन्।

ऋषभ नाथ जी धर्म प्रवर्तक, अजित कर्म के जेता।
सम्भव जिन अभिनन्दन स्वामी, अतिशय कर्म विजेता।।
सुमति नाथ जिनवर के चरणों, मति सुमति हो जाए।
विशद आरती ...

पद्म प्रभु जी पद्म हरे हैं, जिन सुपार्श्व जी भाई।
चन्द्र प्रभु अरु पुष्पदन्त की, धवल कांति सुखदाई।।
शीतल जिन के चरण शरण में, शीतलता मिल जाए।
विशद आरती ...

श्रेय नाथ जिन श्रेय प्रदायक, वासुपूज्य जिन स्वामी।
विमलानन्त प्रभु कहलाए, जग में अन्तर्यामी।।
धर्मनाथ जी धर्म प्रदाता, इस जग में कहलाए।
विशद आरती ...

शांति कन्थु अरु अरह नाथ जी, तीन–तीन पद पाए।
चक्री काम कुमार तीर्थंकर, बनकर मोक्ष सिधाए।।
मल्लिनाथ जी मोहे मल्ल को, क्षण में मार भगाए।
विशद आरती ...

मुनिसुव्रत जी व्रत को धारे, नमि धर्म के धारी।
नेमिनाथ जी करुणा धारे, पार्श्वनाथ अविकारी।।
वर्धमान सन्मति वीर अति, महावीर कहलाए।
विशद आरती ...

श्री आदिनाथ भगवान की आरती

(तर्ज : आज करें हम .....)

आज करें हम विशद भाव से, आरती मंगलकारी।
मणिमय दीपक लेकर आये, आदिनाथ दरबार।।
हो जिनवर–हम सब उतारे मंगल आरती।

जन्म प्राप्त कर नगर अयोध्या, को प्रभु धन्य बनाया।
नाभिराय राजा मरुदेवी, ने सौभाग्य जगाया।।
हो जिनवर–हम सब उतारे मंगल आरती।।1।।

षट् कर्मों की शिक्षा देकर, सबके भाग्य जगाए।
नर–नारी सब नाचे गाये, जय–जयकार लगाए।।
हो जिनवर–हम सब उतारे मंगल आरती।।2।।

रत्नत्रय पाकर हे स्वामी!, मोक्ष मार्ग अपनाया।
आतम ध्यान लगाकर, तुमने केवलज्ञान जगाया।।
हो जिनवर–हम सब उतारे मंगल आरती।।3।।

यही भावना भाते हैं हम, तव पदवी को पावें।
मोक्ष प्राप्त न होवे जब तक, शरण आपकी आवें।।
हो जिनवर–हम सब उतारे मंगल आरती।।4।।

अतिशय पुण्यवान प्राणी ही, दर्श आपका पाते।
'विशद' आरती करने वाले, बिगड़े भाग्य बनाते।।
हो जिनवर–हम सब उतारे मंगल आरती।।5।।

***

श्री पुष्पदंत भगवान की आरती

(तर्ज : नर तन रतन अमोल इसे....)

रत्न जड़ित मंगलमय पावन, दीप जलाओ जी।
पुष्पदंत तीर्थंकर जिन की, आरती गाओ जी।। रत्न जड़ित....

1. जन्म लिया काकन्दी नगरी, आनन्द मंगल छाया जी।
इन्द्र ने पाण्डुक शिला के ऊपर, मंगल न्हवन कराया जी।
जिनवर की आरति करने, ओ ऽऽऽ थाल सजाओ जी।
पुष्पदंत तीर्थंकर जिन....

2. उल्कापात देखकर प्रभु के, मन वैराग्य समाया जी।
पञ्चमुष्ठि से केशलुंच कर, महाव्रतों को पाया जी।
आतम की सिद्धि करने, ओ ऽऽऽ ध्यान लगाओ जी।
पुष्पदंत तीर्थंकर जिन....

3. कार्तिक शुक्ला दोज तिथि को, केवलज्ञान जगाया जी।
पुष्पक वन में शत् इन्द्रों ने, समवशरण बनवाया जी।
पुष्पदंत की दिव्य ध्वनि को, ओ ऽऽऽ सब मिल पाओ जी।
पुष्पदंत तीर्थंकर जिन....

4. भादों शुक्ल अष्टमी को प्रभु, सारे कर्म नशाए जी।
सिद्ध शिला पर जाने वाले, मोक्ष लक्ष्मी पाए जी।
पुष्पदंत के पद में मिलकर, ओ ऽऽऽ शीश झुकाओ जी।
पुष्पदंत तीर्थंकर जिन....

5. जिस पदवी को प्रभु ने पाया, हमको भी अब पाना है।
ज्ञान ध्यान तप के द्वारा अब,केवलज्ञान जगाना है।
सर्व कर्म के नाश हेतु तुम, ओ ऽऽऽ जिन गुण गाओ जी।
पुष्पदंत तीर्थंकर जिन....

~

श्री वासुपूज्य भगवान की आरती

श्री वासुपूज्य भगवान आज थारी आरती उतारें।
आरती उतारें, थारी मूरत निहारें, कर दो भव से पार।।
आज थारी....

वसुपूज्य के सुत हो प्यारे, जयावती के राजदुलारे।
चम्पापुर महाराज–आज थारी....।।1।।

जन्म के अतिशय तुमने पाए, केवलज्ञान को भी प्रगटाए।
देवों कृत शुभकार–आज थारी....।।2।।

कर्म घातियाँ तुमने नाशे, अनुपम केवल ज्ञान प्रकाशे।
शिवपुर के सरताज–आज थारी....।।3।।

अनन्त चतुष्टय तुमने पाए, प्रातिहार्य भी शुभ प्रकटाए।
तीर्थंकर जिनराज–आज थारी....।।4।।

हम भी द्वार आपके आए, पद में सादर शीश झुकाए।
'विशद' ज्ञान के ताज–आज थारी....।।5।।

BÝgmZ H$m OrdZ Š`m ? EH$ gwÝXa gr bmoar h¡Ÿ&
gåny`U© àoŠQ>rH$b Zht _mÌ Wmo‹S>r gr Ï`moar h¡Ÿ&&
JS>Jm J`o JS>JmXmg `_wZm J`o `_wZmXmg H$hmdV nwamZr h¡Ÿ&
{Ja{JQ>H$s ^m§{V ê$n ~XbZm BÝgmZ H$s H$_Omoar h¡Ÿ&&

श्री वासुपूज्य जिन की आरती

(तर्ज:– दूल्हे का सेहरा.....)

वसुपूज्य सुत वासुपूज्य को, करूँ नमन्–करूँ नमन्।
वासुपूज्य जिन के चरणों, शत् शत् वन्दन।।टेक।।

हे प्रभो ! तव चरणों में, हम भाव से आये।
मंगलमय शुभ दीप जलाकर, आरति को लाये।
तुमने कर्म घातिया जिनवर, नाश किए।
अपने निज अन्तर में, ज्ञान प्रकाश किए।
शीष झुकाकर चरणों में हम, करें नमन्–करें नमन।
वासुपूज्य जिन के चरणों, शत् शत् वन्दन।।1।।

हे प्रभो ! तुम सारे जग का, करते हो कल्याण।
अतः आपके चरणों का हम, करते हैं गुणगान।।
शत् इन्द्रों ने पूजा की, तव चरणों में आकर।
नृत्यगान कर भक्ति की, जिन गुण गा कर।
तव पद पाने को हम करते हैं अर्चन–हैं अर्चन।
वासुपूज्य जिन के चरणों, शत् शत् वन्दन।।2।।

हे प्रभो ! जनम जनम का, तुमसे है नाता।
सब जीवों के तुमही, जग में हो त्राता।।
हृदय कमल में तुमको प्रभु सजाते हैं।
'विशद' भाव से चरणों ध्यान लगाते हैं।।
मोक्षमार्ग पर हम भी तो कर सकें गमन–सकें गमन।
वासुपूज्य जिन के चरणों, शत् शत् वन्दन।।टेक।।

श्री विमलनाथ भगवान की आरती

(तर्ज– ॐ जय जगदीश हरे...)

ॐ जय विमलनाथ स्वामी, प्रभु विमलनाथ स्वामी।
विशद आरती करके, बने मोक्ष गामी।। ॐ जय......

नगर कम्पिला जन्मे, सुअर चिह्न धारी– स्वामी...
साठ लाख पूरब की आयु, पाए त्रिपुरारी।। ॐ जय......।।1।।

सुव्रत वर्मा के सुत हो तुम, माँ श्यामा थारी– स्वामी...
साठ धनुष ऊँचा तन प्रभु का, मनहर था भारी।। ॐ जय......।।2।।

ज्येष्ठ वदी दशमी को, गर्भ में प्रभु आए– स्वामी...
पन्द्रह माह पूर्व से धनपति, रत्न भी बरसाए।। ॐ जय......।।3।।

माघ शुक्ल की चौथ को, प्रभु ने जन्म लिया– स्वामी...
इन्द्रों ने मेरु पर जाके, शुभ अभिषेक किया।। ॐ जय......।।4।।

माघ शुक्ल की चौथ प्रभु ने, तप धारण कीन्हा। – स्वामी...
पञ्च महाव्रत धारे, केशलुंच कीन्हा।। ॐ जय......।।5।।

माघ सुदी षष्ठी को, 'विशद' ज्ञान पाया– स्वामी...
समवशरण देवों ने, आकर बनवाया।। ॐ जय......।।6।।

षष्ठी कृष्ण आषाढ़ माह की, गिरि सम्मेद गये– स्वामी...
'विशद' ध्यान के द्वारा प्रभु जी, सारे कर्म क्षये।। ॐ जय......।।7।।

श्री अनन्तनाथ भगवान की आरती

(तर्ज– हे राजाराम थारी आरती उतारूँ)

श्री अनन्तनाथ भगवान, आज थारी आरती उतारें।
आरती उतारे थारी, मूरत निहारें।। टेक
प्रभु कर दो विशद उद्धार, आज थारी आरती उतारे....

सुरजा माता के सुत प्यारे, हरीषेण के राजदुलारे।
जन्मे अयोध्या धाम, आज थारी आरती उतारें... ।।1।।

पचास लाख पूरब की जानो, श्री जिनेन्द्र की आयु मानो।
सेही चिह्न पहिचान, आज थारी आरती उतारें... ।।2।।

पचास धनुष ऊँचाई पाए, स्वर्ण रंग तन का प्रभु पाए।
'विशद' ज्ञान के ताज, आज थारी आरती उतारें... ।।3।।

कार्तिक वदी एकम को स्वामी, गर्भ में आए अन्तर्यामी।
ज्येष्ठ वदी द्वादशी जन्म, आज थारी आरती उतारें... ।।4।।

जेठ वदी द्वादशी दीक्षा पाए, चैत अमावस ज्ञान जगाए।
चैत अमावस मोक्ष, आज थारी आरती उतारें... ।।5।।

श्री धर्मनाथ भगवान की आरती

(तर्ज– जीवन है पानी की बूँद)

धर्मनाथ के दर पे शुभ, दीप जलाए रे।
जिनवर हो– जिनवर, सब आरती गाए रे।। टेक

मात सुव्रता के जाये, पिता भानु नृप कहलाए।
रत्नपुरी में जन्म लिया, उस धरती को धन्य किया।।

वज्र चिह्न जिनवर की– हो – हो– पहिचान बताए रे।
जीवन है पानी की बूँद कब मिट जाए रे।।1।।

बैशाख सुदी आठे जानो, गर्भ में प्रभु आये मानो।
माघ सुदी तेरस आई, जन्म लिया प्रभु ने भाई।
दस लाख पूर्व की आयु, हो–हो जिनवर जी पाए रे।
जीवन है पानी की बूँद कब मिट जाए रे।।2।।

धनुष पैतालिस ऊँचाई, जिनवर के तन की गाई।
माघ सुदी तेरस भाई, प्रभु जी ने दीक्षा पाई।
समवशरण आकर के, हो–हो शुभ देव बनाए रे
जीवन है पानी की बूँद, कब मिट जाए रे।।3।।

पौष पूर्णिमा दिन आया, विशद ज्ञान प्रभु ने पाया।
अनन्त चतुष्टय प्रकटाए, देव इन्द्र सब सिर नाए।
सम्मेद शिखर पे जाके, हो–हो प्रभु ध्यान लगाए रे।
जीवन है पानी की बूँद कब मिट जाए रे।।4।।

ज्येष्ठ शुक्ल की चौथ अहा, मंगलमय दिन श्रेष्ठ कहा।
जिनवर ने शिवपद पाया, मुक्ति वधू को अपनाया।
जिन भक्ति से हमको, हो–हो शिव पद मिल जाए रे।
जीवन है पानी की बूँद कब मिट जाए रे।।5।।

श्री मल्लिनाथ भगवान की आरती

(तर्ज– मैं तो आरती उतारूँ रे..)

हम तो आरती उतारे जी, मल्लिनाथ जिनवर की– हो ऽ ऽ
जय–जय श्री मल्लिनाथ, जय–जय हो – हम..... ।। टेक

माँ प्रज्ञावती के लाल, कुंभ नृप के प्यारे।
प्रभु छोड़ के जग जंजाल, संयम को धारे।
लिए मिथिला नगर अवतार, स्वर्ग से चय कीन्हे।
आओ मंदिर में दौड़–दौड़, हाथो को जोड़–जोड़। हो...ऽऽ ।।1।।

प्रभु वीतराग जिनराज करुणा के धारी।
हम करें आरती आज, प्रभु की मनहारी।
मिले हमको सौख्य अपार, प्रभु की भक्ति से।
आओ भक्ति में डोल–डोल, हृदय के पट खोल–खोल। हो...ऽऽ ।।2।।

नई जीवन में आये बहार, जिन गुण गाने से।
मिले मुक्ति की शुभ राह, दर्शन पाने से।
'विशद' मिलता है आनन्द अपार, चरणों आने से।
आओ दर्शन को देख–देख, माथा को टेक–टेक। हो...ऽऽ ।।3।।

श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान की आरती

(तर्ज : मेरे मन मंदिर में आन पधारो...)

श्री मुनिसुव्रत भगवान, आज हम द्वारे आये हैं।
आरती करने को हे नाथ !, जलाकर दीपक लाए हैं।। टेक

मुनिव्रतों को तुमने पाया, वीतरागमय भेष बनाया।
कीन्हा आतम ध्यान, आपके द्वारा आए हैं।
आरती करने को हे नाथ !, जलाकर दीपक लाए हैं।। श्री मुनिसुव्रत.....

तुमने कर्म घातिया नाशे, निज में केवलज्ञान प्रकाशे।
प्रभु किया जगत् कल्याण, आपके दर्शन पाए हैं।।
आरती करने को हे नाथ !, जलाकर दीपक लाए हैं।। श्री मुनिसुव्रत.....

मुक्ति वधु के तुम भरतारी, सर्व जगत में मंगलकारी।
तुम हो कृपा सिन्धु भगवान, चरण हम शीश झुकाए हैं।
आरती करने को हे नाथ !, जलाकर दीपक लाए हैं।। श्री मुनिसुव्रत.....

तव चरणों में जो भी आया, उसने ही वैराग्य जगाया।
जग में केवल आप महान्, दर्श कर हम हर्षाए हैं।।
आरती करने को हे नाथ !, जलाकर दीपक लाए हैं।। श्री मुनिसुव्रत.....

हम भी शरण तुम्हारी आए, भक्ति भाव से प्रभु गुण गाए।
हो 'विशद' सर्व कल्याण, चरण में हम सिर नाए हैं।।
आरती करने को हे नाथ !, जलाकर दीपक लाए हैं।। श्री मुनिसुव्रत.....

श्री मुनिसुव्रतनाथ की आरती

(तर्ज– इह विधि मंगल आरती कीजे..)

मुनिसुव्रत की आरति कीजे, अपना जन्म सफल कर लीजे। इह.....
नृप सुमित्र के राजदुलारे, माँ श्यामा की आँख के तारे। इह.....
राजगृही के नृप कहलाए, कछुआ लक्षण पग में पाए। इह.....
तीस हजार वर्ष की भाई, श्री जिनवर ने आयु पाई। इह.....
श्रावण वदी दोज को स्वामी, गर्भ में आए अन्तर्यामी। इह.....
दशें वदी वैशाख को स्वामी, जन्म लिए त्रिभुवनपति नामी। इह.....
वैशाख वदी दसमी दिन आया, जिन प्रभु ने संयम को पाया। इह.....
वैशाख वदी नौमी दिन गाया, प्रभु ने केवलज्ञान उपाया। इह.....
फाल्गुण वदी बारस को भाई, कर्म नाशकर मुक्ति पाई। इह.....
गिरि सम्मेद शिखर शुभ गाया, 'विशद' मोक्षपद प्रभु ने पाया। इह.....

श्री अजितनाथ भगवान की आरती

ॐ जय अजितनाथ स्वामी, प्रभु अजितनाथ स्वामी।
आरति करके हम भी, बने मोक्षगामी।। ॐ जय...

माघ सुदी दशमी को, तुमने जन्म लिया। प्रभु तुमने जन्म लिया।
मात विजयसेना जितशत्रु-2, को भी धन्य किया, ॐ जय...

नगर अयोध्या जन्मे, गज लक्षणधारी, स्वामी- गज लक्षणधारी।
आयु लाख बहत्तर पूरब-2, पाये मनहारी। ॐ जय...

साढ़े चार सौ धनुष प्रभु का, तन ऊँचा गाया- स्वामी- ऊँचा तन गाया
माघ सुदी दशमी को प्रभु ने-2, उत्तम तप पाया। ॐ जय...

पौष सुदी दशमी को, विशद ज्ञान पाए, प्रभु-विशद ज्ञान पाए
इन्द्र सभी आकर के-2, चरणों सिर नाए- ॐ जय...

चैत सुदी पाँचें को, शिव पदवी पाए-प्रभु शिव पदवी पाए।
गिरि सम्मेद शिखर को-2, यह जग सिर नाए- ॐ जय...

श्री संभवनाथ भगवान की आरती

(तर्ज : आज मंगलवार है...)

संभवनाथ भगवान हैं, गुण अनन्त की खान हैं।
तीन लोक में मेरे स्वामी, अतिशय हुए महान् हैं।।

1. श्रावस्ती में जन्म लिए प्रभु, अतिशय मंगल छाया है-2
पिता जितारी मात सुसेना, ने सौभाग्य जगाया है-2 संभवनाथ....

2. साठ लाख पूरब की आयु, श्री जिनेन्द्र ने पाई जी-2
धनुष चार सौ मेरे प्रभु की, रही श्रेष्ठ ऊँचाई जी-2 संभवनाथ...

3. तप्त स्वर्ण सम रंग प्रभु का, छियालीस गुण के धारी हैं-2
गंधकुटी में दिव्य कमल पर, जिन रहते अविकारी हैं-2 संभवनाथ...

4. पञ्चकल्याणक पाने वाले, मुक्ति पथ के नेता हैं-2
अनन्त चतुष्टय के धारी प्रभु, अनुपम कर्म विजेता हैं-2 संभवनाथ...

5. आरती करने हेतु भगवन्, दीप जलाकर लाए हैं-
सुख-शांति सौभाग्य 'विशद' हो, तव चरणों में आए हैं-2 संभवनाथ...

श्री अभिनंदन भगवान की आरती

प्रभु अभिनंदन की करते हम, आरति मंगलकार।
विशद भाव से आरति लेकर, आये प्रभु के द्वार।।
हो प्रभु जी हम सब उतारे, मंगल आरती...

1. नगर अयोध्या जन्म लिए तब, हर्षे सब नर-नारी।
पन्द्रह माह पूर्व इन्द्रों ने, रत्न वृष्टि की भारी।। हो प्रभु....

2. माँ सिद्धार्था संवर के गृह, हुए आप अवतारी।
पाण्डुक शिला पे न्हवन कराए, इन्द्र सभी शुभकारी।। हो प्रभु....

3. साढ़े तीन सौ धनुष प्रभु के, तन की है ऊँचाई।
लाख पचास पूर्व की आयु, श्री जिनवर ने पाई।। हो प्रभु....

4. माघ सुदी बारस को प्रभु जी, उत्तम तप अपनाए।
पौष सुदी चौदस को अनुपम, केवलज्ञान जगाए।। हो प्रभु....

5. छठी शुक्ल वैशाख मोक्ष पद, गिरि सम्मेद से पाए।
'विशद' गुणों को पाने प्रभु के, आरति करने आए।। हो प्रभु....

***

श्री सुमतिनाथ भगवान की आरती

सुमतिनाथ की करते हैं हम, आरती मंगलकार।
भक्ति भाव से वन्दन करते–2, चरणों बारम्बार।।
कि आरती करते बारम्बार–2

1. मात मंगला के उर आये, मेघ प्रभु के लाल कहाए।
जन्म अयोध्या नगरी पाए, पद में चकवा चिह्न बताए।।
चार लाख पूरब की आयु, पाये अतिशयकार
कि आरती करते बारम्बार–2

2. अष्ट कर्म को प्रभु नशाए, क्षण में केवलज्ञान जगाए।
अनन्त चतुष्टय प्रभु ने पाए, छियालिस मूल गुणों को पाए।।
शत इन्द्रों ने आकर बोला, प्रभु का जय–जयकार।
कि आरती करते बारम्बार–2

3. दिव्य देशना प्रभु सुनाये, भव्य जीव सद्दर्शन पाए।
सम्यक् चरित्र प्राणी पाये, सम्यक् तप में चित्त लगाए।।
तीन लोकवर्ती जीवों का, किया बड़ा उपकार।
कि आरती करते बारम्बार–2

4. प्रभु की भक्ति करने आये, घृत कपूर के दीप जलाये।
'विशद' भाव से प्रभु गुण गाये, तीन योग से शीश झुकाये।।
चरण शरण में हम भी आये, कर दो प्रभु उद्धार।
कि आरती करते बारम्बार–2

श्री पद्मप्रभ भगवान की आरती

(तर्ज– धन्य–धन्य आज घड़ी...)

धन्य–धन्य आज घड़ी कैसी मंगलकार है।
पद्मप्रभ की आरती करके, होती जय–जयकार है।। टेक।।

भक्ति से भक्त सभी, नृत्यगान कर रहे।
दौलत से पुण्य की, झोलियाँ जो भर रहे।
जय–जय की चारों ओर, गूँजती झंकार है।
जिन चरणों की आरती करके... ।।1।।

गीत वाद्य की ध्वनि, से गूँजे आकाश है।
चरणों में आए जो, बन जाता दास है।
जागे सौभाग्य परम, होता उद्धार है।
जिन चरणों की आरती करके... ।।2।।

जिनवर के चरणों में, करते जो आरती।
करती कृपा उन पर, पूजनीय भारती।
महिमा का जिनवर की, दिखता न पार है।
जिन चरणों की आरती करके... ।।3।।

जिनवर की वाणी में, जीवन का सार है।
महिमा जिनेन्द्र की, जग में अपार है।
जिनवर की भक्ति से, आती बहार है।
जिन चरणों की आरती करके... ।।4।।

अनुपम खुशी आज, मंदिर में छाई है।
करके 'विशद' भक्ति, जनता हर्षाई है।
भक्ति का चारों ओर, दिखता संचार है।
जिन चरणों की आरती करके... ।।5।।

श्री सुपार्श्वनाथ भगवान की आरती

(तर्ज– आज करें हम.....)

जिन सुपार्श्व की करते हैं शुभ, आरति मंगलकारी।
दीप जलाकर लाए हैं हम, जिनवर के दरबार।।
हो जिनवर, हम सब उतारें तेरी आरति–2 ।।1।।

स्वर्ग लोक से इन्द्र अनेकों, नगर बनारस आए।
रत्न वृष्टि करके हर्षित हो, नगरी खूब सजाए।।
हो जिनवर, हम सब उतारें तेरी आरति–2 ।।2।।

पृथ्वीमति माता की कुक्षि, को प्रभु धन्य बनाए।
पिता प्रतिष्ठित सुनकर के तब, मन ही मन हरषाए।।
हो जिनवर, हम सब उतारें तेरी आरति–2 ।।3।।

षष्ठी शुक्ला भादो को प्रभु, स्वर्ग से चयकर आये।
ज्येष्ठ शुक्ल बारस को प्रभु का, जन्म कल्याण मनाये।।
हो जिनवर, हम सब उतारें तेरी आरति–2 ।।4।।

दो सौ धनुष की रही ऊँचाई, लक्षण स्वस्तिक जानो।
बीस लाख पूरब की आयु, जिन सुपार्श्व की मानो।।
हो जिनवर, हम सब उतारें तेरी आरति–2 ।।5।।

ज्येष्ठ सुदी बारस को प्रभु ने, उत्तम तप को पाया।
षष्ठी कृष्ण माह फाल्गुन को, केवलज्ञान जगाया।।
हो जिनवर, हम सब उतारें तेरी आरति–2 ।।6।।

करें आरती 'विशद' भाव से, वह सौभाग्य जगाएँ।
सुख–शान्ति आनन्द प्राप्त कर, अन्तिम शिवपद पाएँ।।
हो जिनवर, हम सब उतारें तेरी आरति–2 ।।7।।

श्री नमिनाथ भगवान की आरती

(तर्ज– प्रभु रथ में हुए सवार...)

प्रभु की आरती में आज, नगाड़े बाज रहे। टेक

सब ठुमुक–ठुमुक कर नाच रहे, कई वाद्य ध्वनि से बाज रहे।
श्री नमिनाथ जिनराज, नगाड़े बाज रहे।।1।।

कई भक्त आरती गाते हैं, ताली कई लोग बजाते हैं।
आते आरती के काज, नगाड़े बाज रहे।।2।।

शुभ घी की ज्योति जलाई है, आरति करने को आई है।
मिलकर के सकल समाज, नगाड़े बाज रहे।।3।।

प्रभु के यह भक्त निराले हैं, प्रभु भक्ति के मतवाले हैं।
प्रभु तारण तरण जहाज, नगाड़े बाज रहे।।4।।

क्या वीतराग छवि प्यारी है, नाशा दृष्टि मनहारी है।
हैं विशद धर्म के ताज, नगाड़े बाज रहे।।5।।

श्री नेमिनाथ भगवान की आरती

म्हारे नेमिनाथजी की सुन्दर प्रतिमा, मंगलकारी जी।
मंगलकारीजी जगमें, संकट हारी जी।। म्हारे नेमिनाथ... ।।1।।

गिरि गिरनार शिखर के ऊपर, प्रभु सम्यक् तप धारे जी।
होकर के निर्ग्रन्थ दिगम्बर, अपने वस्त्र उतारे जी।। म्हारे नेमिनाथ... ।।2।।

समुद्र विजय गृह सौरीपुर में, आप लिये अवतारे जी।
शिवा देवी को धन्य किया है, जागे भाग्य हमारे जी।। म्हारे नेमिनाथ... ।।3।।

पशुओं का आक्रन्दन सुनकर, जागा शुभ वैराग्य जी।
प्रभु दर्शन का अवसर पाया, जागा मम् सौभाग्य जी।। म्हारे नेमिनाथ... ।।4।।

होकर के निर्विक्त जहाँ से, आतम ध्यान लगाया जी।
कर्म घातिया नाश किये प्रभु, केवलज्ञान जगाया जी।। म्हारे नेमिनाथ... ।।5।।

दिव्य देशना आप सुनाए, किया जगत् कल्याण जी।
सर्व कर्म का नाश किए तव, पाये पद निर्वाण जी।। म्हारे नेमिनाथ... ।।6।।

मोक्ष महल में जाने का शुभ, हमने भाव बनाया जी।
'विशद' मुक्ति को पाने हेतु, चरण शरण में आया जी।। म्हारे नेमिनाथ... ।।7।।

श्री नेमिनाथ भगवान की आरती

(तर्ज–शांति अपरम्पार है....)

नेमिनाथ दरबार है, प्रभु की जय जयकार है।
आरति करने आये स्वामी, आज तुम्हारे द्वार हैं।। टेक

सौरीपुर में जन्म लिए प्रभु, घर–घर मंगल छाया जी।
इन्द्र सुरेन्द्र महेन्द्र सभी ने, प्रभु का न्हवन कराया जी।।
नेमिनाथ दरबार है... ।।1।।

नेमिकुंवर जी ब्याह रचाने, जूनागढ़ को आये जी।
पशुओं का आक्रन्दन लखकर, उनको तुरत छुड़ाए जी।।
नेमिनाथ दरबार है... ।।2।।

मन में तब वैराग्य समाया, देख दशा संसार की।
राह पकड़ ली तभी प्रभु ने, महाशैल गिरनार की।।
नेमिनाथ दरबार है...।।3।।

पञ्च मुष्टि से केशलुंच कर, भेष दिगम्बर धारे जी।
कठिन तपस्या के आगे सब, कर्म शत्रु भी हारे जी।।
नेमिनाथ दरबार है...।।4।।

केवलज्ञान जगाकर प्रभु ने, जग को राह दिखाई जी।
भवसागर का पार करूँ यह, 'विशद' भावना भाई जी।।
नेमिनाथ दरबार है...।।5।।

श्री चन्द्रप्रभु भगवान की आरती

ॐ (जय) चन्द्रप्रभु स्वामी, जय चन्द्रप्रभु स्वामी।
चन्द्रपुरी अवतारी, मुक्ति पथगामी।। ॐ जय.....

महासेन घर जन्मे, धर्म ध्वजाधारी।
स्वर्ग मोक्षपदवी के दाता, ऋषिवर अनगारी।। ॐ जय.....

आतमज्ञान जगाए, सद् दृष्टि धारी।
मोह महामदनाशी, स्व–पर उपकारी।। ॐ जय.....

पंच महाव्रत प्रभुजी, तुमने जो धारे।
समिति गुप्ति के द्वारा, कर्म शत्रु जारे।। ॐ जय.....

इन्द्रिय मन को जीता, आतम ध्यान किया।
केवलज्ञान जगाकर, पद निर्वाण लिया।। ॐ जय.....

तुमको ध्याने वाला, सुख–शांति पावे।
'विशद' आरती करके, मन में हर्षावे।। ॐ जय.....

प्रभु की महिमा सुनकर, द्वारे हम आये।
भाव सहित प्रभु तुमरे, हमने गुण गाये।। ॐ जय.....

तुम करुणा के सागर, हम पर कृपा करो।
भक्त खड़े चरणों में, सारे कष्ट हरो।। ॐ जय.....

श्री शीतलनाथ भगवान की आरती

ॐ जय शीतल नाथ प्रभो ! स्वामी शीतल नाथ प्रभो !
तुम शिवपुर के वासी, परमानन्द विभो...ॐ... ।
माहिलपुर में जन्में, दृढ़रथ के प्यारे-स्वामी-2
मात सुनन्दा की कुक्षी से, जिनवर अवतारे।।...ॐ...।।1।।
पाण्डुक शिला के ऊपर, इन्द्रों ने भारी-स्वामी-2
क्षीर नीर से न्हवन कराया, अति विस्मयकारी।।...ॐ...।।2।।
कल्पवृक्ष तव पद में लक्षण, इन्द्रों ने देखा-स्वामी-2
शीतलनाथ नाम देकर के, जय जयकार किया ।।...ॐ...।।3।।
पञ्च मुष्ठि से केश लुंचकर, संयम को धारा-स्वामी-2
अम्बर तजकर हुए दिगम्बर, आतम ध्यान किया ।।...ॐ...।।4।।
कर्म घातिया नाशे तुमने, 'विशद' ज्ञान पाया-स्वामी-2
ॐकार मय दिव्य देशना, दे उपकार किया ।।...ॐ...।।5।।
दिव्य ध्यान के द्वारा तुमने, सर्व कर्म नाशे-स्वामी-2
मुक्ति वधु को पाकर, शिवपुर वास किया ।।...ॐ...।।6।।
दर्श आपका करके, सम्यक् दर्श जगे-स्वामी-2
सुख शांति सौभाग्य पुण्य से, प्राणी प्राप्त करें ।।...ॐ...।।7।।

श्री श्रेयांसनाथ भगवान की आरती

ॐ जय श्रेयांस प्रभो, स्वामी जय श्रेयांस प्रभो।
भक्त आरती करने, आए यहाँ विभो।। ॐ जय.....
विमलसेन के सुत हो, विमला के प्यारे।
सिंहपुरी में जन्मे, गेण्डा चिह्न धारे।। ॐ जय.....।।1।।
लख चौरासी पूरब, आयु प्रभु पाए।
अस्सी धनुष ऊँचाई, तन की कहलाए।। ॐ जय.....।।2।।

गृह में रहकर प्रभु ने, राज्य सुपद पाया।
हृदय जगा वैराग्य प्रभु को, वह भी न भाया।। ॐ जय.....।।3।।
राज्य पाठ सब त्यागा, परिजन को छोड़ा।
विषय भोग से प्रभु ने, भी नाता तोड़ा।। ॐ जय.....।।4।।
केश लोंचकर प्रभु ने, शुभ दीक्षा धारी।
पञ्च महाव्रत धारे, होके अविकारी।। ॐ जय.....।।5।।
तीन योग से प्रभु ने, आतम को ध्याया।
कर्म घातिया नाशे, 'विशद' ज्ञान पाया।। ॐ जय.....।।6।।
हम सेवक तुम स्वामी, कृपा करो दाता।
हो समृद्धि प्रभु जी, पाएँ सुख साता।। ॐ जय.....।।7।।

श्री शांतिनाथ भगवान की आरती

(तर्ज – मारी मां जिनवाणी ...)

म्हारे शांति जिनवर, थारी तो जय जयकार।
हो ... थारे हम द्वारे आए, करने को आरती लाए ।।
दीपक ले मंगलकार .... थारी तो .... ।।1।।

मन वच तन तुमको ध्याऊँ, भावों से प्रभु गुण गाऊँ ।
कर दो मेरा उद्धार ... थारी ... ।।2।।

सुर नर गुण थारे गाते, भक्ति से शीश झुकाते।
अर्चा करें मनहार ... थारी तो ... ।।3।।

शांति के तुम हो दाता, जग के हो भाग्य विधाता।
महिमा है अपरम्पार ... थारी तो ... ।।4।।

महिमा जिन की जो गाते, अक्षय कारी हो जाते।
होते 'विशद' भव पार ... थारी तो ... ।।5।।

श्री कुन्थुनाथ भगवान की आरती

(तर्ज– शांति अपरम्पार है....)

कुन्थुनाथ भगवान हैं, जग में हुए महान् हैं।
विशद योग से आरति करके, करते हम यशगान हैं।। टेक

राजा शूरप्रभ श्री मति के, प्रभु जी लाल कहाए जी।
नगर हस्तिनापुर में जन्मे, अतिशय मंगल छाए जी।।1।।

पैंतिस धनुष रही ऊँचाई, स्वर्ण सा तन प्रभु पाए जी।
बकरा चिह्न दाहिने पग में, इन्द्र श्रेष्ठ बतलाए जी।।2।।

श्रावण कृष्ण दशे को स्वामी, गर्भकल्याणक पाए थे।
छह महिने पहले से धनपति, रत्न श्रेष्ठ बरसाए थे।।3।।

जन्म शुक्ल वैशाख सु एकम्, को जिनवर ने पाया था।
इसी तिथि को कुन्थुनाथ ने, मुक्ति पथ अपनाया था।।4।।

चैत्र सुदी तृतीया को स्वामी, केवलज्ञान जगाए थे।
वैशाख सुदी एकम् सम्मेद गिरि, से प्रभु मुक्ति पाए थे।।5।।

श्री अरहनाथ भगवान की आरती

(तर्ज– शांति अपरम्पार है....)

अरहनाथ भगवान हैं, गुण अनंत की खान हैं।
तीन लोक में मेरे स्वामी, अतिशय हुए महान् हैं।। टेक

हस्तिनापुर में जन्म लिया है, अतिशय मंगल छाया जी।
पिता सुदर्शन मित्रा माता, को प्रभु धन्य बनाया जी।। अरहनाथ ....

अस्सी हजार वर्ष की आयु, श्री जिनवर ने पाई जी।
तीन धनुष शुभ मेरे प्रभु की, रही श्रेष्ठ ऊँचाई जी।। अरहनाथ ....

जन्मोत्सव पर अरहनाथ के, तीन लोक हर्षाया जी।
पाण्डुक शिला पे इन्द्रों ने शुभ, प्रभु का न्हवन कराया जी।। अरहनाथ ....

मछली चिह्न प्रभु का जानो, छियालिस गुण प्रगटाए जी।
गिरि सम्मेद शिखर से प्रभु जी, मुक्ति वधू को पाए जी।। अरहनाथ ....

'विशद' मोक्ष न पाया जब तक, प्रभु के गुण हम गाएँ जी।
भव–भव में हम शरण प्रभु की, जैनधर्म शुभ पाएँ जी।। अरहनाथ ....

श्री पार्श्वनाथ भगवान की आरती

प्रभू पारसनाथ भगवान, आज थारी आरती उतारूँ।
आरती उतारूँ थारी मूरत निहारूँ।
प्रभु कर दो भव से पार आज थारी...टेक

अश्वसेन के राजदुलारे, वामा की आखों के तारे।
जन्मे है काशीराज– आज थारी..... ।।1।।

बाल ब्रह्मचारी हितकारी, विघ्नविनाशक मंगलकारी।
जैन धर्म के ताज– आज थारी आरती..... ।।2।।

नाग युगल को मंत्र सुनाया, देवगति को क्षण में पाया।
किया प्रभू उपकार– आज थारी आरती..... ।।3।।

दीन बन्धु हे ! केवलज्ञानी, भव दुःख हर्त्ता शिव सुख दानी।
करो जगत उद्धार– आज थारी..... ।।4।।

'विशद' आरती लेकर आये, भक्ति भाव से शीश झुकाये।
जन–जन के सुखकार– आज थारी आरती..... ।।5।।

श्री महावीर स्वामी की आरती

(तर्ज : कंचन की थाली लाया...)

रत्नों के दीप जलाए, चरणों में तेरे आए।
भावों से करने थारी आरती, हो वीरा हम सब...

कुण्डलपुर में जन्म लिए प्रभु, मात पिता हर्षाए।
धन कुबेर ने खुश होकर के, दिव्य रत्न वर्षाए।।
इन्द्र भी महिमा गावे, भक्ति से शीश झुकावे।
भवि जन करते हैं तेरी, आरती हो वीरा..... ।।1 ।।

चैत शुक्ल की त्रयोदशी को, जन्म जयन्ती आवे।
नगर–नगर के नर–नारी सब, मन में हर्ष बढ़ावें।।
प्रभु को रथ पे बैठावें, नाचे गावें हर्षावें।
सब मिल उतारे थारी आरती..... ।।2 ।।

मार्ग शीर्ष कृष्णा तिथि दशमी, तुमने दीक्षा धारी।
युवा अवस्था में संयम धर, हुए आप अनगारी।।
आतम का ध्यान लगाया, कर्मों को आप नशाया।
श्रावक करते है थारी आरती...हो वीरा।।3 ।।

दशें शुक्ल वैशाख माह में, केवल ज्ञान जगाये।
कार्तिक कृष्ण अमावश को प्रभु, 'विशद' मोक्ष पद पाए।।
पावापुर है मनहारी, सिद्ध भूमि है– प्यारी।
जिनबिम्बों की हम करते हम आरती.... ।।4 ।।

रचियता : आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज

श्री महावीर भगवान की आरती

(तर्ज : तुमसे लागी लगन...)

तुम हो तारण तरण, वीर संकट हरण ज्ञानधारी, हम तो आरती उतारें तुम्हारी।
भाव भक्ति करें, कष्ट सारे हरें – धर्मधारी, पार नैया लगाओ हमारी।। टेक।।

कुण्डलपुर में प्रभु जन्म पाये, तीनों लोकों में शुभ हर्ष छाये।
इन्द्र आये तभी, दर्श कीने सभी मंगलकारी।। हम तो आरती।।1 ।।

भोग जग के नहीं जिनको भाए, योग धारण में मन को लगाए।
आप त्यागी बने, वीतरागी बने, ब्रह्मचारी।।हम तो आरती.... ।।2 ।।

कर्म घाती सभी तुम नशाए, ज्ञान केवल प्रभुजी जगाए।
आए पावापुरी, पाए मुक्तिश्री, निर्विकारी।। हम तो आरती.... ।।3 ।।

भक्त आये हैं चरणों तुम्हारे, आशा लेकर के आये हैं द्वारे।
आशा पूरी करो, कर्म सारे हरो, संकटहारी।। हम तो आरती.... ।।4 ।।

शीश चरणों में सेवक झुकाए, 'विशद' आशीष पाने को आए।
वीर बन जाये हम, कोई होवे न गम, उम्र सारी।। हम तो आरती.... ।।5 ।।

समवशरण की आरती

आज करें हम समवशरण की, आरति मंगलकारी।
घृत के दीप जलाकर लाए, प्रभुवर के दरबार।।
हो जिनवर, हम सब उतारें तेरी आरती।

कर्म घातिया नाश किए प्रभु, केवलज्ञान जगाया।
अनन्त चतुष्टय पाए तुमने, सुख अनन्त को पाया।।
हो जिनवर, हम सब उतारें तेरी आरती ।।1 ।।

इन्द्र की आज्ञा पाकर भाई, धन कुबेर यहाँ आया।
स्वर्ण और रत्नों से सज्जित, समवशरण बनवाया।।
हो जिनवर, हम सब उतारें तेरी आरती।।2।।

स्वर्ग से आकर इन्द्रों ने शुभ, प्रातिहार्य प्रगटाए।
प्रभु की भक्ति अर्चा करके, सादर शीश झुकाए।।
हो जिनवर, हम सब उतारें तेरी आरती।।3।।

जिनबिम्बों से सज्जित अनुपम, अष्ट भूमियाँ जानो।
श्रेष्ठ सभाएँ सुर नर मुनि की, विस्मयकारी मानो।।
हो जिनवर, हम सब उतारें तेरी आरती।।4।।

ॐकारमय दिव्य देशना, अतिशय प्रभु सुनाए।
'विशद' पुण्य का योग मिला यह, प्रभु के दर्शन पाए।।
हो जिनवर, हम सब उतारें तेरी आरती।।5।।

चौबीस जिन की आरती (ग्रह निवारक)

(तर्ज–माई री माई...)

गाएँ जी गाएँ चौबिस जिन की, आरति मंगल गाएँ।
नवग्रह शान्ति करने हेतु, चरणों शीश झुकाएँ।।
जिनवर के चरणों में नमन्, भगवन् के चरणों में नमन्।

रवि अरिष्ट ग्रह शान्ती हेतु, पद्मप्रभु को ध्याएँ।
भक्ति भाव से दीप जलाकर, आरति मंगल गाएँ।।
चन्द्र अरिष्ट की शान्ति हेतु, चन्द्र प्रभु गुण गाएँ।
नवग्रह शांति करने हेतु, चरणों शीश झुकाएँ।।1।। जिनवर...

भौम अरिष्ट की शान्ति करने, वासुपूज्य को ध्याएँ।
चरण वन्दना करने हेतु, चम्पापुर को जाएँ।।
बुध अरिष्ट की शान्ति हेतु, वसु तीर्थंकर ध्याएँ।
नवग्रह शान्ति करने हेतु, चरणों शीश झुकाएँ।।2।।जिनवर...

गुरु अरिष्ट की शान्ति करने, वृषभादि गुण गाएँ।
अष्ट गुणों की सिद्धि हेतु, अष्ट जिनेश्वर ध्याएँ।।
शुक्र अरिष्ट की शान्ति करने, पुष्पदन्त सिर नाएँ।
नवग्रह शान्ति करने हेतु, चरणों शीश झुकाएँ।।3।। जिनवर...

शान्ति होवे शनि अरिष्ट की, मुनिसुव्रत को ध्याएँ।
राहु अरिष्ट ग्रह शांत होय मम्, नेमिनाथ गुण गाएँ।।
मुनिसुव्रत सम व्रत पाने की, 'विशद' भावना भाएँ।
नवग्रह शान्ति करने हेतु, चरणों शीश झुकाएँ।।4।। जिनवर...

केतु ग्रह हो शांत प्रभु हम, मल्लि पार्श्व जिन ध्याएँ।
चौबीसों तीर्थंकर जिनकी, आरति कर हर्षाएँ।।
सुख साता से जीवन जीकर, सिद्ध दशा को पाएँ।
नवग्रह शान्ति करने हेतु, चरणों शीश झुकाएँ।।5।।जिनवर...

नवदेवताओं की आरती

(तर्ज–इह विधि मंगल....)

नवदेवों की आरति कीजे, नर भव स्वयं सफल कर लीजे।
प्रथम आरती अर्हत्थारी, कर्म घातिया नाशनकारी। नवकोटि....
द्वितीय आरती सिद्ध अनंता, कर्म नाश होवें भगवंता। नवकोटि....
तृतीय आरती आचार्यों की, रत्नत्रय के सद् कार्यों की। नवकोटि....

चौथी आरती उपाध्याय की, वीतरागरत स्वाध्याय की। नवकोटि....
पाँचवीं आरती मुनिसंघ की, बाह्याभ्यंतर रहित संग की। नवकोटि....
छठवीं आरती जैन धरम की, 'विशद' अहिंसा मई परम की। नवकोटि....
सातवीं आरती जैनागम की, नाशक महामोह के तम की। नवकोटि....
आठवीं आरती चैत्य तिहारी, भवि जीवों की मंगलकारी। नवकोटि....
नौवीं आरती चैत्यालय की, दर्शन करते मिथ्याक्षय की। नवकोटि....
आरती करके वन्दन कीजे, शीश झुकाकर आशीष लीजे। नवकोटि....

बाहुबली स्वामी की आरती

ॐ जय बाहुबली स्वामी, प्रभु बाहुबली स्वामी।
रत्नत्रय को पाने वाले, बने मोक्षगामी।। ॐ जय ..... ।। टेक

तीर्थंकर के पुत्र कहाए, चक्री के भाई।
कामदेव पद तुमने पाया, शुभ मंगलदायी।। ॐ जय ..... ।।1 ।।

भ्रात भरत से युद्ध हुआ तब, विजय प्राप्त कीन्हें।
छह खण्डों का राज्य भरत को, आप सौप दीन्हें।। ॐ जय .....।।2 ।।

एक वर्ष तक खड्गासन में, तुमने ध्यान किया।
निराहार हो निजानन्द का, शुभ आनन्द लिया।। ॐ जय .....।।3 ।।

चक्रवर्ती ने चरणों आकर, संदेशा दीन्हा।
वसुधा काहू की न स्वामी, क्यों विकल्प कीन्हा।। ॐ जय .....।।4 ।।

निर्विकल्प हो तुमने स्वामी, अतिशय ध्यान किया।
विशद ज्ञान को पाया क्षण में, शिवपुर वास किया।। ॐ जय .....।।5 ।।

जिनवर की आरती

(तर्ज– धन्य–धन्य आज घड़ी कैसी सुखकार है..)

धन्य–धन्य आज घड़ी कैसी मंगलकार है।
जिन चरणों की आरती करके, होती जय–जयकार है।

भक्ति से भक्त सभी, नृत्यगान कर रहे।
दौलत से पुण्य की, झोलियाँ जो भर रहे।
जय–जय की चारों ओर, गूँजती झंकार है।। जिन... ।।1 ।।

गीत वाद्य की ध्वनि, से गूँजे आकाश है।
चरणों में आए जो, बन जाते दास है।
जागे सौभाग्य परम, होता उद्धार है।। जिन... ।।2 ।।

जिनवर के चरणों में, करते जो आरती।
करती कृपा उन पर, पूजनीय भारती।
महिमा का जिनवर की, दिखता न पार है।। जिन... ।।3 ।।

जिनवर की वाणी में, जीवन का सार है।
महिमा जिनेन्द्र की, जग में अपार है।
जिनवर की भक्ति से, आती बहार है।। जिन... ।।4 ।।

अनुपम खुशी आज, मंदिर में छाई है।
करके 'विशद' भक्ति, जनता हर्षाई है।
भक्ति का चारों ओर, दिखता संचार है।। जिन... ।।5 ।।

निर्वाण क्षेत्र की आरती

करूँ आरती तीर्थराज की, भव तारक पावन जहाज की।
तीर्थंकर जिनवर गणधर की, अगणित मुक्त हुए मुनिवर की।। करूँ आरती ..

भव-भव के दुःख मैटनहारी, बनते प्राणी संयमधारी।
तीर्थराज है मंगलकारी, जिसकी महिमा जग से न्यारी।। करूँ आरती ..

अष्टापद में आदि नाथ की, गिरनारी पर नेमिनाथ की।
चम्पापुर में वासुपूज्य की, पावापुर में वीर नाथ की।। करूँ आरती ..

ज्ञान कूट पर कुन्थुनाथ की, मित्र कूट पर नमीनाथ की।
नाट्य कूट पर अरहनाथ की, संवर कूट पर मल्लिनाथ की।। करूँ आरती ..

संकुल कूट पर श्री श्रेयांस की, सुप्रभ कूट पर पुष्पदंत की।
मोहन कूट पर पद्मप्रभु की, निर्जर कूट पर मुनिसुव्रत की।। करूँ आरती ..

ललित कूट पर चन्द्र प्रभु की, विद्युत कूट पर शीतल जिन की।
कूट स्वयंभू श्री अनंत की, धवल कूट पर संभव जिन की।। करूँ आरती ..

कूट सुदत्त पर धर्मनाथ की, आनंद कूट पर अभिनंदन की।
अविचल कूट पर सुमतिनाथ की, शांति कूट पर शांतिनाथ की।। करूँ आरती ..

कूट प्रभास पर श्री सुपार्श्व की, अरु सुवीर पर विमलनाथ की।
सिद्ध कूट पर अजितनाथ की, स्वर्णभद्र पर पार्श्वनाथ की।। करूँ आरती ..

चरण कमल में श्री जिनवर की, दिव्य दीप से सूर्य प्रखर की।
'विशद' भाव से श्री गिरवर की, सिद्ध क्षेत्र जो है उन हर की।। करूँ आरती ..

पञ्चमेरु की आरती

(तर्ज-...)

पञ्च मेरु की करते हैं हम, आरति मंगलकारी।
दीप जलाकर लाए अनुपम, जिनवर के दरबार।।
हो जिनवर.........

प्रथम सुदर्शन मेरु में शुभ, चैत्यालय शुभकारी।
चार-चार हैं चतुर्दिशा में, अनुपम मंगलकारी।।
हो जिनवर.........

पूर्व धातकी खण्ड में मेरु, विजय नाम शुभ गाया।
लाख चौरासी योजन ऊँचा, आगम में बतलाया।।
हो जिनवर.........

अचल मेरु है खण्ड धातकी, पश्चिम में शुभकारी।
स्वर्ण कांति कि आभा वाला, पूजें सब नर-नारी।।
हो जिनवर.........

पुष्करार्द्ध पूरब में मेरु, मन्दर नाम बताया।
जिनबिम्बों से युक्त जिनालय, कि है अनुपम माया।।
हो जिनवर.........

पश्चिम पुष्करार्द्ध में मेरु, विद्युन्माली जानो।
रत्नमयी हैं 'विशद' जिनालय, धर्म के आलय मानो।।
हो जिनवर.........

नन्दीश्वर की आरती

(तर्ज : शांति अपरम्पार है ..)

नन्दीश्वर अविराम है, बावन शुभ जिन धाम हैं,
जिन चरणों की आरति करके, करते विशद प्रणाम हैं।

प्रथम आरती अंजनगिरि की, चतुर्दिशा में सोहें जी–2
जिन चैत्यालय चैत्य हैं उन पर, सबके मन को मोहें जी–2
नन्दीश्वर................

अंजनगिरि के चतुर्दिशा में, बावड़िया शुभ जानो जी–2
स्वच्छ नीर से भरी हुई हैं, अतिशय कारी मानो जी।
नन्दीश्वर................

मध्य बावड़ी के हैं दधिमुख, अतिशय मंगलकारी जी–2
उनके ऊपर जिन चैत्यालय, प्रतिमाएँ मनहारी जी–2
नन्दीश्वर................

बावड़ियों के बाह्य कोण पर, रतिकर विस्यमकारी जी–2
उनके ऊपर जिन चैत्यालय, प्रतिमाएँ मनहारी जी–2
नन्दीश्वर................

शाश्वत जिनगृह जिनबिम्बों की, आरती करने आये हैं–2
'विशद' अर्चना के परोक्ष ही, हमने भाव बनाएँ हैं।
नन्दीश्वर................

पंच बालयति जिन की आरती

(तर्ज – इह विधि मंगल.....)

आरति कीजे श्री जिनवर की, पंच बालयति तीर्थंकर की।
वासुपूज्य की आरति कीजे, चरणों पुष्प समर्पित कीजे।।
प्रथम बालयति आप कहाए, चम्पापुर से मुक्ति पाए
आरति कीजे.......।। 1।।

मल्लिनाथ ने मल्ल हराए, कर्म घातिया सभी नशाए।
केवलज्ञान प्रभुजी पाए, जग को सद् सन्देश सुनाए।।
आरति कीजे.......।। 2।।

नेमिनाथ के गुण को गाएँ, भक्ति भाव से शीष झुकाएँ
ऊर्जयन्त से मोक्ष पधारे, तुमसे कर्म शत्रु सब हारे।।
आरति कीजे.......।। 3।।

पार्श्वनाथ से नाथ नहीं हैं, क्षमावान कोई वीर कहीं हैं।
कमठादि को क्षमा किया है, सबको सद्संदेश दिया है।।
आरति कीजे.......।। 4।।

महावीर से वीर न कोई, जग की सारी प्रभुता खोई।
"विशद" ज्ञान संयम से पाए, शिवनगरी के नाथ कहाए।।
आरति कीजे.......।। 5।।

पंचम गति पांचों प्रभु पाए, पंचम सम्यक् ज्ञान जगाए।
पंच महाव्रत को हम पाएँ, हम भी पंचम गति पा जाएँ।।
आरति कीजे.......।। 6।।

पंच बालयति को जो ध्यावें, सुख शांति धन वैभव पावें।
"विशद"भाव से आरति गावें, वह भी पंचम गति में जावे।।
आरति कीजे.......।। 7।।

गुरुवर की आरती

(तर्ज :– भक्ति हैं.....)

गुरुवर का दरबार है, जग में मंगलकार है।
जैन धर्म की आज यहाँ पर, होती जय–जयकार है।।

घृत का दीप जलाया, आज यहाँ पर लाए जी।
भक्ति भावना से भरकर, आरति करने आए जी।।1।।

दूर–दूर से लोग यहाँ पर, गुरु भक्ति को आते है।
भक्ति भाव से गुरु चरणों में, नत मस्तक हो जाते हैं।।2।।

वीतराग गुरुवर की मुद्रा, मोक्ष मार्ग दर्शाए जी।
भव्य जीव गुरु दर्शन करके, मन ही मन हर्षाए जी।।3।।

गुरु के चरणों का गंधोदक, जिनको भी मिल जाता।
जीवन में सौभाग्य परम तब, उनका भी खिल जाता है।।4।।

मोक्ष मार्ग दर्शाने वाली, श्री गुरुवर की वाणी है।
'विशद' ज्ञान प्रगटाने वाली, जग जन की कल्याणी है।।5।।

आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज की आरती

(तर्ज:– माई री माई मुंडेर पर तेरे बोल रहा कागा.....)

जय–जय गुरुवर भक्त पुकारे, आरति मंगल गावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.......

ग्राम कुपी में जन्म लिया है, धन्य है इन्दर माता।
नाथूराम जी पिता आपके, छोड़ा जग से नाता।।
सत्य अहिंसा महाव्रती की.....2, महिमा कहीं न जाये।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.......

सूरज सा है तेज आपका, नाम रमेश बताया।
बीता बचपन आयी जवानी, जग से मन अकुलाया।।
जग की माया को लखकर के.....2, मन वैराग्य समावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.......

जैन मुनि की दीक्षा लेकर, करते निज उद्धारा।
विशद सिंधु है नाम आपका, विशद मोक्ष का द्वारा।।
गुरु की भक्ति करने वाला.....2, उभय लोक सुख पावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.......

धन्य है जीवन धन्य है तन–मन, गुरुवर यहाँ पधारे।
सगे स्वजन सब छोड़ दिये हैं, आतम रहे निहारे।।
आशीर्वाद हमें दो स्वामी.....2, अनुगामी बन जायें।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्...4 मुनिवर के... जय...जय।।

रचयिता : श्रीमती इन्दुमती गुप्ता, श्योपुर

प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज द्वारा रचित साहित्य एवं विधान सूची

1. पंच जाप्य
2. जिन गुरु भक्ति संग्रह
3. धर्म की दस लहरें
4. विराग वंदन
5. बिन खिले मुरझा गये
6. जिंदगी क्या है ?
7. धर्म प्रवाह
8. भक्ति के फूल
9. विशद श्रमणचर्या (संकलित)
10. विशद पंचागम संग्रह-संकलित
11. रत्नकरण्ड श्रावकाचार चौपाई अनुवाद
12. इष्टोपदेश चौपाई अनुवाद
13. द्रव्य संग्रह चौपाई अनुवाद
14. लघु द्रव्य संग्रह चौपाई अनुवाद
15. समाधितंत्र चौपाई अनुवाद
16. सुभाषित रत्नावली पद्यानुवाद
17. संस्कार विज्ञान
18. विशद स्तोत्र संग्रह
19. भगवती आराधना संकलित
20. जरा सोचो तो !
21. विशद भक्ति पीयूष पद्यानुवाद
22. चिंतन सरोवर भाग-1, 2
23. जीवन की मनःस्थितियाँ
24. आराध्य अर्चना, संकलित
25. मूक उपदेश कहानी संग्रह
26. विशद मुक्तावली (मुक्तक)
27. संगीत प्रसून भाग-1, 2
28. विशद प्रवचन पर्व
29. विशद ज्ञान ज्योति (पत्रिका)
30. श्री विशद नवदेवता विधान
31. श्री वृहद् नवग्रह शांति विधान
32. श्री विघ्नहरण पार्श्वनाथ विधान
33. चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभु विधान
34. ऋद्धि-सिद्धी प्रदायक श्री पद्मप्रभु विधान
35. सर्व मंगलदायक श्री नेमिनाथ पूजन विधान
36. विघ्न विनाशक श्री महावीर विधान
37. शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ विधान
38. कर्मजयी श्री पंच बालयति विधान
39. सर्व सिद्धी प्रदायक श्री भक्तामर महामण्डल विधान
40. श्री पंचपरमेष्ठी विधान
41. श्री तीर्थंकर निर्वाण सम्मेदशिखर विधान
42. श्री श्रुत स्कंध विधान
43. श्री तत्त्वार्थ सूत्र मण्डल विधान
44. श्री परम शांति प्रदायक शान्तिनाथ विधान
45. परम पुण्डरीक श्री पुष्पदन्त विधान
46. परम ज्योति स्वरूप श्री वासुपूज्य विधान
47. श्री याग मण्डल विधान
48. श्री जिनबिम्ब पंच कल्याणक विधान
49. श्री त्रिकालवर्ती तीर्थंकर विधान
50. विशद पंच विधान संग्रह
51. कल्याणकारी कल्याण मंदिर विधान
52. विशद सुमतिनाथ विधान
53. विशद संभवनाथ विधान
54. विशद लघु समवशरण विधान
55. विशद सहस्रनाम विधान
56. विशद नंदीश्वर विधान
57. विशद महामृत्युंजय विधान
58. विशद सर्वदोष प्रायश्चित्त विधान
59. लघु पंचमेरु विधान एवं नंदीश्वर विधान
60. श्री चंवलेश्वर पार्श्वनाथ विधान
61. श्री दशलक्षण धर्म विधान
62. श्री रत्नत्रय आराधना विधान
63. श्री सिद्धचक्र विधान

क्र.सं. विवरण पृष्ठ संख्या

24. श्री सिद्ध यंत्र पूजा (विनायक यंत्र)
25. श्री सम्मेदशिखर पूजन अर्घ्य

19. श्री मल्लिनाथ पूजा
20. श्री मुनिसुव्रतनाथ पूजा
21. श्री नमिनाथ पूजा
22. श्री नेमिनाथ पूजा
23. श्री पार्श्वनाथ पूजा
24. श्री महावीर स्वामी पूजा

तृतीय खण्ड

1. श्री आदिनाथ पूजा
2. श्री अजितनाथ पूजा
3. श्री सम्भवनाथ पूजा
4. श्री अभिनन्दननाथ पूजा
5. श्री सुमतिनाथ पूजा
6. श्री पद्मप्रभ पूजा
7. श्री सुपार्श्वनाथ पूजा
8. श्री चन्द्रप्रभु पूजा
9. श्री पुष्पदंत पूजा
10. श्री शीतलनाथ पूजा
11. श्री श्रेयांसनाथ पूजा
12. श्री वासुपूज्य पूजा
13. श्री विमलनाथ पूजा
14. श्री अनंतनाथ पूजा
15. श्री धर्मनाथ पूजा
16. श्री शांतिनाथ पूजा
17. श्री कुंथुनाथ पूजा
18. श्री अरहनाथ पूजा

चतुर्थ खण्ड

श्री वीरेन्द्रकुमारजी जैन, जैना टैक्सटाईल्स (कपड़े के थोक व्यापारी)
कटरा लेश्वां, चाँदनी चौक, दिल्ली-110006 मो. 9873388706